गुएरमांटेस मार्ग
खोए हुए समय की खोज में - खंड III
मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
गुएरमांटेस मार्ग
अतीत की यादें - खंड III

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1925

Table of Contents

लेखक का समर्पण
अनुवादक का समर्पण
भाग I
मैं
द्वितीय
तृतीय
चतुर्थ

मैं
द्वितीय
तृतीय
चतुर्थ
वी

लेखक का समर्पण

लियोन दाउडेट को

लेखक को
शेक्सपियर की यात्रा, द शेयरिंग ऑफ द चाइल्ड, द ब्लैक स्टार, घोस्ट्स एंड द लिविंग, द वर्ल्ड ऑफ इमेजेज
और कई अन्य उत्कृष्ट कृतियों से लेकर अतुलनीय मित्र को, कृतज्ञता और प्रशंसा के प्रतीक के रूप में।
एम. पी.

अनुवादक का समर्पण

श्रीमती एच——— को --उनके जन्मदिन पर

एथेंस के मैदान में, कुशल टाइटेनिया की शक्ति से पराजित होकर, ओबेरॉन ने प्रकृति की सहायता के लिए कलाओं का आविष्कार किया और एक हिमखंड से एक फूल बनाया: प्रकृति ने उसे मात देने के लिए, मानव मिट्टी से एक जादुई फूल बनाया, जिसकी हम आज प्रशंसा करते हैं।

हेबे, उच्च ओलंपस में जन्मी, मृत्यु से अछूती, उम्र के अभिशाप से मुक्त, ज़ेरेस और पोर्टो, रात और सुबह, बहने दो, दिव्य प्यास बुझाने के लिए: ठीक वैसे ही, ईर्ष्यालु बीतते वर्षों से अछूती युवावस्था आज रात मेहमानों का स्वागत करती है और गिलास भर देती है।

हेसियोन को एक भयानक दावत के लिए, एक चट्टान से जंजीरों में बांधकर मरने के लिए छोड़ दिया गया था; युवा हर्कल्स आया, उसने उस जानवर को मार डाला, लेकिन उसे वीरता का पुरस्कार नहीं मिला: ई. एस. पी. एच., जिसे राक्षस भयभीत करते हैं, तुम्हें चोट से बचाए और कानून लागू करे!

सी. के. एस. एम.

ले कोटे डे गुएरमांटेस का फ्रेंच पाठ अत्यंत त्रुटिपूर्ण होने के कारण, अनुवाद प्रक्रिया में इसे सुधारने का पूरा ध्यान रखा गया है। इस खंड में तीन स्थानों पर अनुच्छेदों का क्रम बदल दिया गया है, जैसा कि पाठक फ्रेंच और अंग्रेजी पाठों की तुलना करके देख सकते हैं।

[सी. के. एस. एम.]

भाग I

डचेस डी गुएरमांटेस — सेंट-लूप एट डोन्सिएरेस — श्रीमती डी विलेपारिसिस घर पर — मेरी दादी की बीमारी — बर्गोट की बीमारी — ड्यूक और डॉक्टर — मेरी दादी का पतन और मृत्यु।

मैं

भोर में पक्षियों की चहचहाहट फ्रांस्वा को फीकी लग रही थी। ऊपर की नौकरानियों के हर शब्द से वह चौंक जाती; उनकी भागदौड़ से परेशान होकर वह बार-बार सोचती कि वे क्या कर रही होंगी। दूसरे शब्दों में, हम घर बदल चुके थे। बेशक, हमारे पुराने घर की अटारी में भी नौकरों का शोर कम नहीं होता था; लेकिन वह उन्हें जानती थी, उनके आने-जाने को उसने एक सामान्य घटना मान लिया था। अब तो वह खामोशी को भी बड़ी मुश्किल से देखती थी। और चूंकि हमारा नया पड़ोस उतना ही शांत लग रहा था जितना कि वह सड़क जहां हम अब तक रहते थे, शोरगुल भरी रहती थी, तभी राहगीर का गाना (दूर से साफ सुनाई दे रहा था, जब वह अभी भी बहुत धीमा था, किसी ऑर्केस्ट्रा की धुन की तरह) निर्वासन में रह रही फ्रांस्वा की आंखों में आंसू ला देता था। और इसलिए यदि मैं उस पर हंसने के लिए ललचा रहा होता, क्योंकि उसे उस घर को छोड़ना पड़ रहा था जिसमें उसका 'हर तरफ से इतना सम्मान था' और उसने कॉम्ब्रे के रीति-रिवाज के अनुसार, आंसुओं के साथ अपना सामान पैक किया था, यह कहते हुए कि हमारा घर सभी घरों से श्रेष्ठ था, तो दूसरी ओर मैं, जिसे नई परिस्थितियों को अपनाना उतना ही कठिन लगता था जितना पुरानी परिस्थितियों को छोड़ना आसान, मैं अपने पुराने नौकर की ओर आकर्षित हुआ जब मैंने देखा कि एक ऐसे भवन में बसने से, जहाँ उसे हॉल-पोर्टर से, जो हमें अभी तक नहीं जानता था, उसके नैतिक कल्याण के लिए आवश्यक सम्मान नहीं मिला था, वह सचमुच विघटन के कगार पर पहुँच गई थी। केवल वही मेरी भावनाओं को समझ सकती थी; निश्चित रूप से उसका युवा नौकर ऐसा करने वाला व्यक्ति नहीं था; क्योंकि वह, जो कॉम्ब्रे परिवार के लोगों से बिल्कुल अलग था, सामान पैक करना, स्थानांतरित होना, दूसरे जिले में रहना, ये सब उसके लिए छुट्टी मनाने जैसा था जिसमें परिवेश की नवीनता उसे वही ताजगी का एहसास देती थी मानो उसने वास्तव में यात्रा की हो; वह सोचता था कि वह गाँव में है; और सर्दी-जुकाम ने उसे ऐसा एहसास दिलाया, मानो वह किसी ठंडी रेलगाड़ी के डिब्बे में बैठा हो, मानो उसने दुनिया देख ली हो; हर छींक पर वह खुश होता कि उसे इतनी अच्छी जगह मिल गई है, क्योंकि वह हमेशा से ऐसे लोगों के साथ रहना चाहता था जो बहुत यात्रा करते हों। और इसलिए, उसके बारे में बिना सोचे-समझे, मैं सीधे फ्रांस्वा के

पास चला गया, जिसने मुझे ठंड लगने पर उसके आँसुओं पर हँसने के बदले में, अब मेरे दुख के प्रति बर्फीली उदासीनता दिखाई, लेकिन इसलिए कि वह भी मेरे दुख में शामिल थी। विक्षिप्त लोगों द्वारा दावा की जाने वाली 'संवेदनशीलता' उनके अहंकार से मेल खाती है; वे दूसरों द्वारा अपने उन कष्टों का प्रदर्शन बर्दाश्त नहीं कर सकते जिन पर वे खुद लगातार ध्यान देते रहते हैं। फ्रांस्वा, जो अपनी छोटी से छोटी बीमारी को भी अनदेखा नहीं होने देती थी, अगर मैं दर्द में होता तो मुझसे मुँह फेर लेती ताकि मुझे अपने कष्टों पर दया करने या उन्हें देखने की संतुष्टि न मिले। जैसे ही मैंने उससे हमारे नए घर के बारे में बात करने की कोशिश की, वही हाल हो गया। इसके अलावा, एक-दो दिन बाद, मुझे अपने पुराने घर में वापस जाना पड़ा, क्योंकि शिफ्टिंग के दौरान कुछ कपड़े छूट गए थे। इस दौरान मुझे बुखार भी था, और एक अजगर की तरह जिसने अभी-अभी एक बैल को निगल लिया हो, मुझे अपने पेट में एक लंबे धड़ को देखकर असहनीय पीड़ा हो रही थी जिसे मेरी आँखें अभी तक पचा नहीं पाई थीं। फ्रांकोइस ने अपनी स्वाभाविक स्त्री-सुलभ अस्थिरता के साथ वापस आकर कहा कि उसे लगा था कि वह हमारे पुराने बुलेवार्ड में घुट जाएगी, क्योंकि वह बहुत घुटन भरा था। वहाँ पहुँचने में उसे पूरा एक दिन लग गया था, उसने कभी ऐसी सीढ़ियाँ नहीं देखी थीं, और वह किसी भी कीमत पर वहाँ वापस नहीं जाएगी, चाहे आप उसे लाखों ही क्यों न दें—जो कि एक मात्र अनुमान है—और यह कि नए घर में सब कुछ (यानी रसोई और 'सामान्य कार्यालयों' से संबंधित सब कुछ) कहीं बेहतर ढंग से सुसज्जित है। अब समय आ गया है कि पाठक को यह बताया जाए—और यह भी बताया जाए कि हम इसमें इसलिए चले गए थे क्योंकि मेरी दादी की तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं थी (हालाँकि हमने इस कारण को उनसे छिपाए रखने का पूरा ध्यान रखा था), और उन्हें बेहतर हवा की ज़रूरत थी—यह फ्लैट होटल डी गुएरमांटेस का हिस्सा था।

उस उम्र में जब एक नाम, हमें उस अज्ञात की छवि प्रदान करता है जिसे हमने उसके सांचे में ढाला है, और साथ ही साथ वह हमारे लिए एक विद्यमान स्थान का भी संकेत देता है, तो हमें इस हद तक एक दूसरे के साथ पहचान बनाने के लिए विवश करता है कि हम एक शहर में उस आत्मा की तलाश करने लगते हैं जिसे वह समाहित नहीं कर सकता, लेकिन जिसे हम उसके नाम की ध्वनि से अब और नहीं निकाल सकते, तब नाम केवल कस्बों और नदियों को

ही व्यक्तित्व प्रदान नहीं करते, जैसे रूपक चित्र करते हैं; वे केवल भौतिक ब्रह्मांड को ही भिन्नताओं से, लोगों को चमत्कारों से नहीं चित्रित करते, बल्कि सामाजिक ब्रह्मांड को भी चित्रित करते हैं; और इसलिए शहर या गाँव में हर ऐतिहासिक घर की अपनी एक महिला या एक परी होती है, जैसे हर जंगल की अपनी आत्मा होती है, जैसे हर धारा के लिए एक अप्सरा होती है। कभी-कभी, अपने नाम के हृदय में छिपी हुई, परी हमारी कल्पना के जीवन के अनुरूप रूपांतरित हो जाती है जिसमें वह रहती है; इस प्रकार वह वातावरण था जिसमें श्रीमती... डी गुएरमांटेस का अस्तित्व मुझमें वर्षों तक एक जादुई लालटेन स्लाइड द्वारा डाली गई छाया या एक चित्रित खिड़की से गिरने वाली रोशनी से अधिक कुछ नहीं होने के बाद, धीरे-धीरे अपने रंग फीके पड़ने लगा जब बिल्कुल अलग सपनों ने इसे उसकी बहती धाराओं की शीतलता से भर दिया।

फिर भी, यदि हम उस वास्तविक व्यक्ति के संपर्क में आते हैं जिससे परी का नाम जुड़ा है, तो परी का नाश अवश्य हो जाता है, क्योंकि तब वह नाम उस व्यक्ति को प्रतिबिंबित करने लगता है, और उसमें परी का कोई अंश नहीं रह जाता; यदि हम उस व्यक्ति से दूर हो जाते हैं तो परी पुनर्जीवित हो सकती है, लेकिन यदि हम उसकी उपस्थिति में बने रहते हैं तो परी निश्चित रूप से मर जाती है और उसके साथ ही नाम भी, जैसा कि लुसिग्नन परिवार के साथ हुआ, जिसका भाग्य उस दिन विलुप्त होना था जिस दिन परी मेलुसीन गायब हो जाएगी। तब वह नाम, जिसके क्रमिक 'पुनर्निर्माण' के नीचे हमें अंततः एक अजनबी महिला का सुंदर चित्र मिलता है जिससे हम कभी नहीं मिलेंगे, पहचान के लिए ली गई एक मात्र तस्वीर से अधिक कुछ नहीं है, जिसका उपयोग हम यह तय करने के लिए करते हैं कि क्या हम जानते हैं, या हमें सड़क पर गुजरने वाले किसी व्यक्ति के सामने झुकना चाहिए या नहीं। लेकिन बीते वर्ष की कोई अनुभूति—ठीक वैसे ही जैसे वे रिकॉर्डिंग उपकरण जो विभिन्न कलाकारों के गायन या वादन की ध्वनि और शैली को संरक्षित रखते हैं—हमारी स्मृति को उस नाम को उसी विशिष्ट ध्वनि के साथ सुनने में सक्षम बना दें, जिस ध्वनि के साथ वह तब हमारे कानों में गूंजता था। तब, यद्यपि नाम स्वयं स्पष्ट रूप से अपरिवर्तित प्रतीत होता है, हम उस दूरी को महसूस करते हैं जो उन सपनों को अलग करती है जो अलग-अलग समय पर उसके उन्हीं अक्षरों का हमारे लिए अर्थ रहे हैं। एक क्षण के लिए, किसी दूर के वसंत में उसकी मधुर गुनगुनाहट की स्पष्ट

प्रतिध्वनि से, हम चित्रकला में उपयोग होने वाली छोटी नलियों की तरह, उन दिनों के सटीक, भूले हुए, रहस्यमय, ताज़े रंग को निकाल सकते हैं जिन्हें हम याद करने का प्रयास कर रहे थे, जब एक बुरे चित्रकार की तरह, हम अपने पूरे अतीत को, एक ही कैनवास पर फैलाकर, अपनी सहज स्मृति के पारंपरिक और एकसमान स्वर दे रहे थे। इसके विपरीत, इसे रचने वाले प्रत्येक क्षण ने एक मौलिक रचना के लिए, अद्वितीय सामंजस्य में, उन दिनों के रंग का उपयोग किया जिन्हें हम अब नहीं जानते, और जो, वास्तव में, मुझे आज भी अचानक मंत्रमुग्ध कर देंगे यदि किसी भी संयोग से 'गुएरमांटेस' नाम, इतने वर्षों बाद एक क्षण के लिए उस ध्वनि को पुनः प्रकट कर दे, जो आज की ध्वनि से कितनी भिन्न है, जो माइल परसेपीड के विवाह के दिन मेरे लिए थी। यह मुझे उस बैंगनी रंग की याद दिलाता है—इतना नाजुक, लगभग बहुत चमकीला, बहुत नया—जिससे युवा डचेस का लहराता हुआ स्कार्फ चमक रहा था, और दो पेरीविंकल फूलों की तरह, पहुँच से परे बढ़ते हुए और अब फिर से खिलते हुए, उसकी दोनों आँखें, एक नीली मुस्कान से सूर्य की रोशनी से जगमगा रही थीं। और उन दिनों का गुएरमांटेस नाम भी उन छोटे गुब्बारों में से एक की तरह है जो ऑक्सीजन या किसी ऐसी ही गैस से भरे हुए हैं; जब मैं इसे विस्फोटित करने आता हूँ, इससे इसके भीतर समाहित चीज़ों को बाहर निकालने के लिए, मैं उस वर्ष, उस दिन के कॉम्ब्रे की हवा में साँस लेता हूँ, जो चौक के कोने से हवा द्वारा उड़ाई गई नागफनी के फूलों की सुगंध से मिश्रित है, बारिश की अग्रदूत, जिसने अब सूरज को विदा कर दिया है, अब उसे पूजा कक्ष के लाल ऊनी कालीन पर फैलने दो, उसे चमकीले लाल गेरेनियम रंग में सराबोर कर दो, उस, एक तरह से, वैगनरियन सामंजस्य के साथ, अपनी उल्लास में जो विवाह समारोह को हमेशा प्रभावशाली बनाता है। लेकिन ऐसे दुर्लभ क्षणों के अलावा भी, जिनमें अचानक हम मूल सत्ता को कांपते और अपना रूप पुनः प्राप्त करते हुए महसूस करते हैं, स्वयं को उन अक्षरों से तराशते हुए जो अब ध्वनिहीन, मृत हैं; यदि दैनिक जीवन की भागदौड़ में, जिसमें नाम केवल सबसे व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, वे अपना सारा रंग खो चुके हैं, एक इंद्रधनुषी लट्टू की तरह जो बहुत तेजी से घूमता है और केवल धूसर दिखाई देता है, तो दूसरी ओर, जब हम अपने चिंतन में मनन करते हैं, अतीत में लौटने का प्रयास करते हैं, उस निरंतर गति को धीमा करने, रोकने का प्रयास करते हैं जिसके द्वारा हम आगे बढ़ते हैं, तो धीरे-धीरे हम एक बार फिर से उन रंगों को एक साथ, लेकिन एक

दूसरे से पूरी तरह अलग, प्रकट होते हुए देखते हैं जो हमारे अस्तित्व के दौरान एक ही नाम द्वारा क्रमिक रूप से हमारे सामने प्रस्तुत किए गए हैं।

जब मेरी पहली नर्स—शायद उन्हें भी उतना ही ज्ञान था जितना मुझे आज है—जिसके सम्मान में यह गीत रचा गया था—मुझे उस पुराने गीत, ग्लोइरे आ ला मार्किज़ डी गुएरमांटेस, से सुलाती थीं, तब मेरे मन में इस गुएरमांटेस नाम ने क्या रूप धारण किया था, या जब कुछ साल बाद, अनुभवी मार्शल डी गुएरमांटेस ने, मेरी आया को गर्व से भर दिया, चैंप्स-एलिसी में रुककर टिप्पणी की: "कितना प्यारा बच्चा है!" और मुझे अपने मिठाई के डिब्बे से एक चॉकलेट ड्रॉप दी, तो मैं अब निश्चित रूप से नहीं कह सकती। मेरे बचपन के वे शुरुआती साल अब मेरे जीवन का हिस्सा नहीं हैं; वे मुझसे अलग हैं; मैं उनके बारे में कुछ नहीं जान सकती, सिवाय इसके कि हम अपने जन्म से पहले घटी घटनाओं के बारे में दूसरों द्वारा दिए गए विवरणों से सीखते हैं। लेकिन हाल ही में, उस नाम के मेरे साथ जुड़े रहने के दौरान, मैंने इसके सात या आठ अलग-अलग रूप देखे हैं; शुरुआती रूप सबसे सुंदर थे; धीरे-धीरे मेरे विचार, वास्तविकता के दबाव में आकर एक ऐसी स्थिति को छोड़ने के लिए विवश हो गए जो अब टिकाऊ नहीं थी, और उन्होंने एक कम उन्नत स्थिति में नए सिरे से अपना स्थान बना लिया, जब तक कि उन्हें और भी पीछे हटना पड़ा। और, श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ ही, उनका निवास भी रूपांतरित हो गया, जो स्वयं उसी नाम की संतान था, जो वर्ष-दर-वर्ष मेरे कानों तक पहुँचने वाले किसी न किसी शब्द से पोषित होता था और मेरे विचारों के स्वर को बदलता था; उनका वह निवास अपने पत्थरों में ही मेरे विचारों को प्रतिबिंबित करता था, जो दर्पण बन गए थे, जैसे बादल या झील की सतह। एक विशाल कालकोठरी जैसा किला, जो वास्तव में नारंगी प्रकाश की एक पट्टी मात्र थी, जिसके शिखर से स्वामी और उनकी स्वामिनी अपने जागीरदारों को जीवन और मृत्यु का फैसला सुनाते थे, उस 'गुएरमांटेस मार्ग' के ठीक अंत में, जिस पर मैं कई गर्मियों की दोपहरों में अपने माता-पिता के साथ विवोन नदी के मार्ग का अनुसरण करता था, उस कलकल बहती धाराओं की भूमि में परिवर्तित हो गया था, जहां डचेस ने मुझे ट्राउट मछली पकड़ना सिखाया और उन फूलों के नाम जानना सिखाया जिनके लाल और बैंगनी गुच्छे पड़ोसी उद्यानों की दीवारों को सुशोभित करते थे; तब यह प्राचीन विरासत थी, जो गीतों और कहानियों में प्रसिद्ध थी, जिससे गुएरमांटेस का गौरवशाली वंश, युगों को पार करने वाले

एक नक्काशीदार और सुशोभित मीनार की तरह, फ्रांस पर तब उभरा था जब आकाश उन स्थानों पर अभी भी खाली था जहाँ बाद में पेरिस का नोट्रे डेम और चार्ट्रेस का नोट्रे डेम बनना था, जब लाओन की पहाड़ी की चोटी पर इसके गिरजाघर का मुख्य भाग अभी तक स्थिर नहीं हुआ था, जैसे माउंट अरारत की चोटी पर जलप्रलय का जहाज, कुलपतियों और न्यायाधीशों से भरा हुआ, जो उत्सुकता से इसकी खिड़कियों से झुककर यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि क्या ईश्वर का क्रोध अभी तक शांत हुआ है, अपने साथ उस वनस्पति के प्रतीक लिए हुए जो पृथ्वी पर बढ़ने वाली थी, जानवरों से भरा हुआ जो मीनारों से भी बच निकले थे, जहाँ छत पर शांति से चरते हुए बैल शैम्पेन के मैदानों को नीचे देखते हैं; जब दिन ढलने पर ब्यूवेस से निकलने वाले यात्री ने अपने पीछे आते हुए और अपनी राह बदलते हुए, पश्चिमी आकाश के सुनहरे पर्दे के सामने फैले हुए, गिरजाघर के काले, धारीदार पंखों को नहीं देखा। यह 'गुएरमांटेस' किसी उपन्यास के दृश्य की तरह था, एक काल्पनिक परिदृश्य जिसे मैं बड़ी मुश्किल से अपने मन में चित्रित कर पा रहा था और जिसे देखने की मेरी तीव्र इच्छा थी, वास्तविक भूमि और सड़कों के बीच स्थित, जो अचानक राजचिह्नों से जीवंत हो उठती थीं, एक रेलवे स्टेशन से कुछ ही मील की दूरी पर; मुझे इसके आसपास के स्थानों के नाम ऐसे याद आए मानो वे पर्नैसस या हेलिकॉन की तलहटी में स्थित हों, और वे मुझे अनमोल लगे, जैसे स्थलाकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक परिस्थितियाँ किसी अकथनीय घटना के निर्माण के लिए आवश्यक होती हैं। मैंने कॉम्ब्रे चर्च की खिड़कियों के नीचे अंकित प्रतीक चिन्हों को फिर से देखा; सदियों से उनके क्षेत्र उन सभी जागीरों से भरे हुए थे, जिन्हें विवाह या विजय के माध्यम से इस प्रतिष्ठित परिवार ने जर्मनी, इटली और फ्रांस के कोने-कोने से अपने साथ लाकर अपने कब्जे में ले लिया था; उत्तर में विशाल क्षेत्र, दक्षिण में मजबूत शहर, गुएरमांटेस में एकत्रित होकर, अपनी भौतिक गुणवत्ता को खोकर, प्रतीकात्मक रूप से अपने हरे रंग के तहखाने या चांदी के तीन मीनारों वाले महल को उसके नीले मैदान पर उकेरते थे। मैंने गुएरमांटेस की प्रसिद्ध टेपेस्ट्री के बारे में सुना था, मैं उन्हें देख सकता था, मध्ययुगीन और नीले रंग की, थोड़ी खुरदरी, एक तैरते बादल की तरह उस पौराणिक, अमर नाम से अलग होकर, उस प्राचीन जंगल की तलहटी में जहाँ चिल्डेबर्ट अक्सर शिकार करने जाता था; और उनकी भूमि की यह नाजुक, रहस्यमय पृष्ठभूमि, युगों का यह दृश्य, मुझे ऐसा लगा कि, उन्हें देखने के

लिए यात्रा करने के समान ही, मैं पेरिस में श्रीमती के साथ एक क्षण के लिए संपर्क में आकर उनके सभी रहस्यों को जान सकता हूँ। डी गुएरमांटेस, उस स्थान की सर्वोपरि राजकुमारी और झील की स्वामिनी, मानो उनके चेहरे और वाणी में वनों और झरनों का स्थानीय आकर्षण और उनके अभिलेखों में दर्ज प्राचीन रीति-रिवाजों जैसी धर्मनिरपेक्ष विशेषताएँ समाहित हों। लेकिन फिर मेरी मुलाकात सेंट-लूप से हुई; उन्होंने मुझे बताया कि इस महल का नाम गुएरमांटेस सत्रहवीं शताब्दी से ही पड़ा है, जब उस परिवार ने इसे प्राप्त किया था। वे तब तक आसपास के क्षेत्र में रहते थे, लेकिन उनका स्वामित्व उस क्षेत्र से नहीं लिया गया था। गुएरमांटेस गाँव का नाम उस महल से पड़ा जिसके चारों ओर यह बसा था, और ताकि महल से दिखने वाला दृश्य बाधित न हो, एक नियम, जो अभी भी लागू है, इसकी सड़कों की रेखा निर्धारित करता है और इसके घरों की ऊँचाई को सीमित करता है। टेपेस्ट्रीज़ की बात करें तो, वे बूशे द्वारा बनाई गई थीं, जिन्हें उन्नीसवीं शताब्दी में कला के शौकीन गुएरमांटेस ने खरीदा था और एड्रियानोपल और मखमली गद्दे वाले एक भद्दे ड्राइंग रूम में टांग दिया था। इन टेपेस्ट्रीज़ के बीच-बीच में उन्होंने खुद द्वारा बनाए गए कुछ घटिया खेल चित्रों को भी लगा दिया था। इन खुलासों से सेंट-लूप ने महल में गुएरमांटेस नाम से इतर तत्व शामिल कर दिए थे, जिससे मेरे लिए केवल अक्षरों की गूंज से ही उसकी दीवारों के पत्थर और गारे को समझना असंभव हो गया था। और इस तरह, नाम के केंद्र में, झील में प्रतिबिंबित महल का प्रतिबिंब मिट गया, और अब मुझे जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, वह श्रीमती डी गुएरमांटेस के निवास के रूप में उनके पेरिस स्थित घर, होटल डी गुएरमांटेस था, जो अपने नाम की तरह ही निर्मल था, क्योंकि कोई भी भौतिक और अपारदर्शी तत्व उसकी पारदर्शिता को बाधित या अवरुद्ध नहीं कर रहा था। चर्च शब्द का अर्थ केवल मंदिर ही नहीं बल्कि विश्वासियों का जमावड़ा भी होता है, उसी प्रकार यह होटल डी गुएरमांटेस उन सभी लोगों को समाहित करता था जिन्होंने डचेस के जीवन को साझा किया था, लेकिन ये घनिष्ठ मित्र जिन्हें मैंने कभी देखा नहीं था, मेरे लिए केवल प्रसिद्ध और काव्यात्मक नाम थे, और केवल उन व्यक्तियों को जानना जो स्वयं भी केवल नाम मात्र थे, डचेस के रहस्य को और भी बढ़ाता और संरक्षित करता था, उनके चारों ओर एक विशाल प्रभामंडल फैलाकर जो परिधि बढ़ने के साथ-साथ चमक में कम होता जाता था।

उनकी पार्टियों में, चूंकि मैं मेहमानों को किसी शरीर, मूंछों, जूतों वाले, या सामान्य या मानवीय एवं तर्कसंगत ढंग से मौलिक बातें करते हुए कल्पना भी नहीं कर सकता था, इसलिए नामों का यह भंवर, जो किसी प्रेत भोज या रहस्यमय नृत्य से भी कम भौतिक सार प्रस्तुत करता था, ड्रेस्डन चीनी मिट्टी के बर्तनों में बनी मैडम डी गुएरमांटेस की उस छोटी सी मूर्ति के चारों ओर, उनके कांच के महल को एक शोकेस की पारदर्शिता बनाए रखता था। फिर, सेंट-लूप द्वारा मुझे अपने चचेरे भाई के पादरी, उनके माली और अन्य लोगों के बारे में कई किस्से सुनाने के बाद, होटल डी गुएरमांटेस - जैसे पुराने समय में लूव्र रहा होगा - पेरिस के ठीक बीच में, अपने ही क्षेत्रों से घिरा हुआ एक प्रकार का महल बन गया था, जो विरासत में मिला था, एक प्राचीन अधिकार के बल पर जो विचित्र रूप से बचा हुआ था, जिस पर उन्हें अभी भी सामंती विशेषाधिकार प्राप्त थे। लेकिन यह अंतिम निवास भी तब गायब हो गया जब हम मैडम के बगल में रहने आए। डी विलेपारिस होटल के एक विंग में श्रीमती डी गुएरमांटेस के कब्जे वाले फ्लैट से सटे एक फ्लैट में रहते हैं। यह उन पुराने टाउन हाउसों में से एक था, जिनमें से कुछ शायद अभी भी मौजूद हैं, जिनमें सम्मान का दरबार - चाहे वे लोकतंत्र की बढ़ती लहर द्वारा वहां बहाकर लाए गए जलोढ़ निक्षेप हों, या एक अधिक आदिम समय की विरासत हों जब विभिन्न व्यापार अधिपति के चारों ओर एकत्रित होते थे - छोटी दुकानों और कार्यशालाओं से घिरा हुआ है, उदाहरण के लिए, एक मोची की, या एक दर्जी की, जैसा कि हम उन गिरजाघरों के बट्रेस के बीच बसे हुए देखते हैं जिन्हें जीर्णोद्धारकर्ता के सौंदर्य उत्साह ने ऐसे संचय से साफ नहीं किया है; एक कुली जो जूते बनाने का काम भी करता है, मुर्गियाँ पालता है, फूल उगाता है, और सबसे दूर, मुख्य भवन में, एक 'काउंटेस' रहती है, जो जब अपनी पुरानी गाड़ी में सवार होकर निकलती है, तो अपनी टोपी पर कुछ नास्टर्टियम के फूल दिखाती है जो कुली के लॉज के पास वाले प्लॉट से निकलकर इधर-उधर आ गए प्रतीत होते हैं (और कोचवान के बगल में डिब्बे पर एक नौकर बैठा होता है जो आस-पड़ोस के हर कुलीन घर में कार्ड छोड़ने के लिए नीचे उतरता है), वह अस्पष्ट सी मुस्कान बिखेरती है और कुली के बच्चों और अपने उन सम्मानित सह-किरायेदारों को हाथ हिलाकर अभिवादन करती है जो संयोगवश वहाँ से गुजर रहे होते हैं, जो उसकी तिरस्कारपूर्ण सौहार्दता और समतावादी अभिमान के कारण सभी एक समान प्रतीत होते हैं।

जिस घर में हम अब रहने आए थे, उसके आंगन के अंत में रहने वाली एक बड़ी महिला डचेस थीं, जो बुद्धिमान और अभी भी काफी युवा थीं। वास्तव में, वे श्रीमती डी गुएरमांटेस थीं और फ्रांस्वा की बदौलत मुझे जल्द ही उनके घर के बारे में सब कुछ पता चल गया। गुएरमांटेस परिवार (जिन्हें फ्रांस्वा अक्सर 'नीचे' या 'निचले तल' के लोग कहकर संबोधित करती थीं) उनकी सुबह से ही चिंता का विषय थे, जब वे माँ के बालों को संवारते हुए, आंगन में एक निषिद्ध, अनचाही, चोरी-छिपे नज़र डालते हुए कहती थीं: "देखो, अब; दो पवित्र बहनें; ये तो नीचे ही होंगी, पक्का;" या फिर, "अरे! रसोई की खिड़की में उन शानदार तीतरों को देखो; पूछने की ज़रूरत नहीं कि वे कहाँ से आए, ड्यूक तो अपनी बंदूक लेकर बाहर गए होंगे!"—रात के आखिरी पलों तक, जब मेरे रात के कपड़े सुखाते समय अगर उनके कान किसी गाने की कुछ धुनें सुन लेते, तो वे कहतीं: "नीचे कुछ लोग मजे कर रहे हैं; मुझे यकीन है कि खूब मौज-मस्ती हो रही होगी;" जिसके बाद, उनके सुडौल चेहरे पर, अब बर्फ जैसे सफेद बालों के मेहराब के नीचे, उनके जवानी के दिनों की एक चंचल लेकिन शालीन मुस्कान, एक पल के लिए उनके चेहरे की हर विशेषता को उसकी जगह पर स्थिर कर देती, उन्हें एक जटिल और विशेष क्रम में व्यवस्थित कर देती, मानो किसी देहाती नृत्य के लिए।

लेकिन गुएरमांटे परिवार के जीवन का वह क्षण जिसने फ्रांस्वा की सबसे अधिक रुचि जगाई, उसे सबसे अधिक संतुष्टि और साथ ही सबसे अधिक झुंझलाहट दी, वह था जब विशाल द्वार के दोनों हिस्सों को अलग करके डचेस अपनी गाड़ी में बैठीं। यह आमतौर पर हमारे नौकरों द्वारा दोपहर के भोजन के उस विशेष पर्व को समाप्त करने के कुछ ही समय बाद होता था, जिसे कोई भी बाधित नहीं कर सकता था। इस दौरान वे इतने वर्जित थे कि मेरे पिता को भी उनके लिए घंटी बजाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि वे जानते थे कि उनमें से कोई भी पाँचवीं घंटी पर पहली घंटी से अधिक ध्यान नहीं देगा, और इसलिए यह असभ्यता समय और परेशानी की सरासर बर्बादी होती, हालाँकि इससे उन्हें भी परेशानी हो सकती थी। फ्रांस्वा (जो बुढ़ापे में भी अपनी गरिमा बनाए रखने का कोई अवसर नहीं छोड़ती थीं) दिन भर उन्हें अपना चेहरा उन छोटे लाल कीलाकार चित्रलिपि से ढके हुए दिखाती रहतीं, जिनके द्वारा वे बाहरी दुनिया को अपने दुखों की लंबी कहानी और अपनी असंतुष्टि के गहरे कारणों को दिखातीं—भले ही वे उन्हें स्पष्ट रूप से पढ़ न पातीं। वे बीच-बीच में रुककर भी इन बातों को विस्तार से

बतातीं, लेकिन इस तरह नहीं कि हम उनके शब्दों को समझ सकें। वे इस प्रक्रिया को—जिसे वे अपने शब्दों में 'अत्यंत क्रोधित करने वाली' और 'हम लोगों को परेशान करने वाली' मानती थीं—'पूरे दिन धीमी प्रार्थना करना' कहती थीं।

अंतिम संस्कार संपन्न होने के बाद, फ्रांस्वा, जो आदिम चर्च की तरह ही एक ही समय में अनुष्ठानकर्ता और श्रद्धालुओं में से एक थी, ने अपने लिए एक अंतिम गिलास लिया, अपने गले से रुमाल हटाया, अपने होठों से पानी मिले हुए शराब और कॉफी के दाग पोंछने के बाद उसे मोड़कर उसकी अंगूठी में रख दिया, अपने युवा सेवक को धन्यवाद देने के लिए एक उदास नज़र डाली, जो उसकी सेवा में अपना उत्साह दिखाते हुए कह रहा था: "आइए, महोदया, अंगूर का रस थोड़ा और दीजिए; आज यह बहुत स्वादिष्ट है," और सीधे खिड़की की ओर चली गई, जिसे उसने यह कहते हुए खोल दिया कि 'इस बदकिस्मत रसोई' में सांस लेना बहुत मुश्किल है। कुंडी घुमाकर ताजी हवा अंदर आने देते हुए, उसने बड़ी कुशलता से नीचे आंगन की ओर एक सोची-समझी उदासीनता भरी नज़र डाली और चुपके से यह निष्कर्ष निकाला कि डचेस अभी जाने के लिए तैयार नहीं है। उसने प्रतीक्षा कर रही गाड़ी पर एक पल के लिए तिरस्कारपूर्ण, भावुक निगाहों से विचार किया और पृथ्वी की चीजों पर ध्यान देने के बाद, अपनी निगाहें आकाश की ओर उठाईं, जिसकी पवित्रता का अनुमान उसने हवा की मिठास और सूर्य की गर्मी से पहले ही लगा लिया था; और उन्हें छत के एक कोने पर टिका दिया, उस जगह पर जहाँ हर वसंत में, मेरे शयनकक्ष की चिमनी के ठीक ऊपर, कबूतरों का एक जोड़ा आकर घोंसला बनाता था, ठीक वैसे ही जैसे कबूतरों की गुटरगू वह कॉम्ब्रे स्थित अपने रसोईघर से सुनती थी।

"आह! कॉम्ब्रे, कॉम्ब्रे!" वह चिल्लाई। और जिस लगभग काव्यात्मक स्वर में उसने यह प्रार्थना की, उसके चेहरे की आर्लेसियन पवित्रता को देखते हुए, देखने वाले को यह संदेह हो सकता था कि वह दक्षिणी मूल की है और जिस खोई हुई भूमि के लिए वह विलाप कर रही थी, वह वास्तव में गोद ली हुई भूमि मात्र थी। यदि ऐसा होता, तो वह गलत होता, क्योंकि ऐसा लगता है कि शायद ही कोई प्रांत ऐसा हो जिसका अपना दक्षिणी-देश न हो; क्या हम वास्तव में लगातार सैवॉयर्ड और ब्रेटन लोगों से नहीं मिलते हैं जिनकी बोली में हमें लंबे और छोटे शब्दों के वे सभी मनमोहक रूपांतरण मिलते हैं जो दक्षिणी लोगों की विशेषता हैं? आह, कॉम्ब्रे, मैं तुम्हें

फिर कब देख पाऊँगी, बेचारी धरती! मैं कब तुम्हारे कंटीले पेड़ों के बीच, हमारे बेचारे लिली-ओक के नीचे, टिड्डियों के गीत सुनते हुए, और विवोन नदी की हल्की फुसफुसाहट सुनते हुए, उस मनहूस घंटी की आवाज़ के बजाय, अपना सुहावना दिन बिता पाऊँगी, जो हमारे उस युवा मालिक की घंटी बजाती रहती है, जो मुझे उस दुष्ट गलियारे में दौड़ाए बिना आधे घंटे भी चैन से नहीं बैठ सकता। और तब भी अगर मैं जल्दी नहीं आती, तो उसे पता चल जाता है; घंटी बजने से पहले ही तुम्हें उसे खींचने की आवाज़ सुननी होगी, और अगर तुम एक मिनट भी देर कर दो, तो वह भयंकर क्रोध में आ जाता है। हाय, बेचारा कॉम्ब्रे; शायद मैं तुम्हें केवल मृत्यु में ही देख पाऊँगी, जब वे मुझे एक पत्थर की तरह कब्र में गिरा देंगे। और फिर, मैं तुम्हारे प्यारे सफेद कंटीले पेड़ों की खुशबू फिर कभी नहीं सूंघ पाऊँगी। लेकिन मृत्यु की नींद में, मुझे यकीन है कि मैं उस घंटी की तीन आवाज़ें ज़रूर सुन पाऊँगी, जिसने मुझे इस दुनिया में नरक में धकेल दिया होगा।

नीचे जैकेट बनाने वाले की आवाज़ से उसकी एकालाप में खलल पड़ गया। वही जैकेट बनाने वाला जिसने बहुत समय पहले मेरी दादी को बहुत प्रसन्न किया था, जब वह श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने गई थीं, और अब फ्रैंचाइज़ के दिलों में भी उसका उतना ही खास स्थान था। हमारी खिड़की खुलने की आवाज़ सुनकर उसने अपना सिर उठाया और कुछ देर से अपनी पड़ोसी का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहा था, ताकि वह उसे शुभ दिन कह सके। फ्रांकोइस की वह चंचलता, जो कभी एम. जुपियन के लिए हुआ करती थी, अब नरम और परिष्कृत हो गई थी। हमारे बूढ़े रसोइए का चिड़चिड़ा चेहरा, उम्र, चिड़चिड़ापन और रसोई की आग की गर्मी से कुंद हो चुका था। उसने संयम, आत्मीयता और विनम्रता के आकर्षक मिश्रण के साथ जैकेट बनाने वाले को विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया, लेकिन बिना कोई मौखिक प्रतिक्रिया दिए, क्योंकि अगर वह आंगन में देखकर माँ के आदेशों का उल्लंघन करती, तो वह खिड़की से बात करने की हिम्मत कभी नहीं करती, जो (उसके अनुसार) मालकिन से 'पूरा अध्याय' सुनने के लिए काफी होता। उसने प्रतीक्षा कर रही गाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा, "वाह, क्या जोड़ी है!" हालाँकि वास्तव में वह बुदबुदाई थी: "कितनी पुरानी खटारा गाड़ी है!" लेकिन मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वह जानती थी कि वह

जवाब देने के लिए बाध्य होगा, और उसने बिना चिल्लाए सुनाई देने के लिए अपने होठों पर हाथ रख लिया।
"अगर आप चाहें तो आप भी एक ले सकते हैं, जो उनके पास मौजूद चीज़ों जितना ही अच्छा होगा और शायद उससे भी बेहतर, लेकिन आपको उस तरह की चीज़ों में दिलचस्पी नहीं है।" और फ्रांस्वा ने, प्रसन्नता का एक विनम्र, टालमटोल भरा इशारा करने के बाद, जिसका अर्थ कमोबेश यही था: "पसंद अलग-अलग होती है, तुम्हें पता है; इस घर में सादगी ही नियम है," खिड़की फिर से बंद कर दी, कहीं माँ अंदर न आ जाएँ। ये 'तुम' जिनके पास गुएरमांटे परिवार से भी ज़्यादा घोड़े हो सकते थे, हम खुद थे, लेकिन जुपियन का 'तुम' कहना सही था क्योंकि, कुछ विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत संतुष्टियों को छोड़कर, जैसे कि जब वह पूरे दिन बिना रुके खांसती रहती थी और घर में हर कोई उसके जुकाम से डरता था, तो वह चिढ़ाने वाली हल्की हंसी के साथ यह दिखावा करती थी कि उसे जुकाम नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे वे पौधे जिन्हें कोई जानवर, जिससे वे पूरी तरह से जुड़े होते हैं, भोजन से जीवित रखता है जिसे वह उनके लिए पकड़ता है, खाता है और पचाता है और जिसका अंतिम और आसानी से पचने योग्य अवशेष उन्हें देता है, फ्रांस्वा हमारे साथ पूर्ण समुदाय में रहती थी; यह हम ही थे, जिन्होंने अपने सद्गुणों, धन-दौलत और जीवनशैली के बल पर, उसकी आत्मसंतुष्टि के लिए वे छोटे-छोटे उपाय किए, जिनसे उसके जीवन का अपरिहार्य सुख साकार हुआ था। इन सुखों में दोपहर के भोजन की परंपरा का स्वतंत्र रूप से पालन करने का अधिकार भी शामिल था, जिसमें भोजन समाप्त होने पर खिड़की से बाहर ताज़ी हवा लेना, खरीदारी के लिए बाहर जाते समय गली में कुछ देर टहलना और रविवार को अपनी भतीजी से मिलने जाना शामिल था। इसलिए यह समझा जा सकता है कि हमारे प्रवास के शुरुआती दिनों में, एक ऐसे घर में जहाँ मेरे पिता की प्रतिष्ठा अभी तक ज्ञात नहीं थी, फ्रांकोइस शायद उस बीमारी का शिकार हो गई होगी जिसे उसने स्वयं 'थकान' कहा था, उस सक्रिय अर्थ में जिसमें कॉर्नेल ने 'उदासी' शब्द का प्रयोग किया है, या उन सैनिकों के अंतिम पत्रों में जो अपनी प्रेमिकाओं या अपने पैतृक गाँवों के लिए तड़पते हुए आत्महत्या कर लेते हैं। फ्रांस्वा की थकान जल्द ही जुपियन ने दूर कर दी, क्योंकि उसने तुरंत उसे उतना ही आनंद दिलाया जितना उसे तब मिलता जब हम एक घोड़ागाड़ी रखते। "ये जूलियन्स बहुत अच्छे खानदान के हैं," (क्योंकि फ्रांस्वा नए नामों

को उन नामों से आसानी से जोड़ लेती थी जिनसे वह पहले से परिचित थी) "बहुत ही नेक लोग; यह उनके चेहरों पर साफ दिखता है।" जुपियन वास्तव में समझ गया था, और उसने दुनिया को बता भी दिया कि अगर हम घोड़ागाड़ी नहीं रखते थे तो इसका कारण यह था कि हमें उसकी कोई इच्छा नहीं थी। फ्रांस्वा का यह नया दोस्त सरकारी दफ्तरों में नौकरी पाने के कारण घर पर ज्यादा सहज नहीं था। सबसे पहले तो वह एक वेस्टकोट बनाने वाला था, जिसकी दादी माँ उसे अपनी बेटी समझती थीं। लेकिन जब उसकी सहायक (जो अभी बच्ची ही थी, लेकिन दादी माँ के घर मैडम डी विलेपारिसिस के यहाँ आने पर फटी हुई स्कर्ट की मरम्मत में बड़ी कुशलता दिखाई थी) महिलाओं के फैशन की ओर मुड़ गई और दर्जी बन गई, तो उसने उस पेशे में सारी रुचि खो दी। शुरुआत में एक दर्जी की कार्यशाला में प्रशिक्षु के रूप में, उसे सिलाई करना, झालर लगाना, बटन लगाना या क्रीज को प्रेस करना, कमरबंद को हुक और आई से कसना सिखाया गया, लेकिन वह जल्दी ही दूसरी और फिर मुख्य सहायक बन गई। फैशनपरस्त महिलाओं के बीच अपना एक समूह बनाकर, वह अब घर पर, यानी हमारे आँगन में, आमतौर पर कार्यशाला से अपनी एक-दो युवा सहेलियों के साथ काम करती थी, जिन्हें उसने प्रशिक्षु के रूप में रखा था। इसके बाद, जुपियन की उपस्थिति का हमारे घर में कोई महत्व नहीं रह गया था। इसमें कोई शक नहीं कि छोटी बच्ची (जो अब तक बड़ी हो चुकी थी) को अक्सर वेस्टकोट काटने पड़ते थे। लेकिन दोस्तों की मदद से उसे किसी और की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए उसके चाचा जुपियन ने बाहर नौकरी ढूंढ ली। पहले तो उन्हें दोपहर तक घर लौटने की छूट थी, लेकिन जब उन्होंने उस व्यक्ति की जगह ले ली, जिसके बदले में उन्होंने काम शुरू किया था, तो उन्हें रात के खाने से पहले घर नहीं लौटना पड़ता था। सौभाग्य से, 'नियमित नौकरी' में उनकी नियुक्ति की घोषणा हमारे आने के कुछ हफ़्तों बाद तक नहीं हुई, जिससे उनकी विनम्रता का लाभ उठाकर फ्रांस्वा को पहले, सबसे कठिन दौर को बिना किसी ज़्यादा तकलीफ़ के पार करने में मदद मिल सकी। साथ ही, और फ्रांस्वा के लिए उनके महत्व को कम न आंकते हुए, एक तरह से संक्रमण काल में एक दवा की तरह, मैं यह कहने के लिए बाध्य हूँ कि जुपियन के बारे में मेरी पहली राय बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी। थोड़ी दूरी से देखने पर, उनके गोल-मटोल गालों और चटख रंग का जो प्रभाव होना चाहिए था, वह पूरी तरह से मिट जाता था। उनकी आँखों में करुणा, उदासी और स्वप्निल भाव भरे हुए थे,

जिन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो वे गंभीर रूप से बीमार हों या किसी बड़े दुख से गुज़रे हों। दरअसल, ऐसा कुछ भी नहीं था, और जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया (वैसे, उनकी वाणी बिल्कुल उत्तम थी), वे स्पष्ट रूप से व्यंग्यपूर्ण और ठंडे स्वभाव के हो गए। आँखों और होठों के इस असंगत भाव से एक बनावटीपन झलक रहा था, जो आकर्षक नहीं था। इससे वे ऐसे असहज प्रतीत हो रहे थे जैसे कोई अतिथि किसी पार्टी में सुबह के कपड़े पहनकर आ जाए जहाँ सभी लोग शाम के कपड़े पहने हों, या कोई आम आदमी जिसे किसी शाही व्यक्ति से बात करनी हो और उसे ठीक से पता न हो कि उसे कैसे संबोधित करना चाहिए, और इस समस्या से बचने के लिए वह अपने शब्दों को लगभग न के बराबर कर देता है। इसके विपरीत, जुपियन की आँखें (यहाँ तुलना समाप्त होती है) मनमोहक थीं। वास्तव में, शायद उनकी आँखों की उस अपार चमक के कारण (जिसे उन्हें जानने के बाद नज़रअंदाज़ करना मुश्किल हो जाता था), मैंने उनमें एक असाधारण बुद्धि देखी, और वे उन सबसे सहज साहित्यिक व्यक्तियों में से एक थे जिनसे मुझे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसका अर्थ यह था कि संभवतः बिना शिक्षा के, उन्होंने बचपन में कुछ किताबों को सरसरी तौर पर पढ़कर ही बोलने की सबसे अद्भुत कला सीख ली थी। मैंने जितने भी प्रतिभाशाली लोगों को जाना था, वे कम उम्र में ही दुनिया छोड़ गए थे। इसलिए मुझे विश्वास था कि जुपियन का जीवन भी जल्द ही समाप्त हो जाएगा। दयालुता उनके गुणों में से एक थी, और करुणा, दूसरों के लिए सबसे कोमल और उदार भावनाएँ थीं। लेकिन फ्रांस्वा के जीवन में उनकी भूमिका अब अपरिहार्य नहीं रह गई थी। फ्रांस्वा ने अपने अधीन लोगों के साथ काम चलाना सीख लिया था।

दरअसल, जब कोई व्यापारी या नौकर कोई पार्सल या संदेश लेकर हमारे दरवाजे पर आता, और मानो ध्यान न दे रहा हो और खाली कुर्सी की ओर इशारा कर रहा हो, तो फ्रांस्वा बड़ी कुशलता से रसोई में माँ के जवाब का इंतज़ार करते हुए उसके कुछ सेकंड का भरपूर फायदा उठाती थी। ऐसा बहुत कम ही होता था कि कोई अजनबी इस बात को पक्के तौर पर याद रखे बिना चला जाए कि अगर हमारे पास कोई खास चीज़ 'नहीं' है, तो इसका मतलब है कि हमें उसकी 'इच्छा ही नहीं' है। अगर वह इस बात पर इतना ज़ोर देती थी कि दूसरे लोग यह जान लें कि हमारे पास 'पैसा है' (क्योंकि वह सेंट-लूप द्वारा वर्णित 'विभाजनात्मक वस्तुओं' के बारे में कुछ नहीं जानती थी, और बस इतना कहती थी 'पैसा है', 'पानी लाओ'), कि वे समझ

लें कि हम अमीर हैं, तो इसका कारण यह नहीं था कि केवल धन-दौलत, बिना सद्गुण के धन, उसकी नज़र में जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य था; बल्कि धन के बिना सद्गुण भी उसका आदर्श नहीं था। उसके लिए धन-दौलत, एक तरह से, सद्गुण की एक अनिवार्य शर्त थी; इसके अभाव में सद्गुण स्वयं ही गुण और आकर्षण से रहित हो जाता। वह इन दोनों में इतना कम अंतर करती थी कि समय के साथ-साथ वह दोनों को एक-दूसरे के गुण प्रदान करने लगी थी, सद्गुण से कुछ भौतिक सुख की अपेक्षा करने लगी थी और धन-दौलत में कुछ शिक्षाप्रद खोजने लगी थी।

जैसे ही उसने खिड़की दोबारा बंद की, जो उसने जल्दी से किया—वरना ऐसा लग रहा था कि माँ उस पर 'हर तरह का अपमान' बरसा देती—फ्रांकोइस ने कई कराहों और आहों के साथ रसोई की मेज को सीधा करना शुरू कर दिया।

“रू डे ला चेज़ में कुछ गुएरमांटे परिवार के लोग रहते हैं,” मेरे पिता के नौकर ने बात शुरू की; “मेरा एक दोस्त उनके साथ काम करता था; वह उनका दूसरा कोचमैन था। और मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, मेरा पुराना दोस्त नहीं, बल्कि उसका साला, जिसने बैरन डे गुएरमांटे के घोड़ों की देखभाल करने वालों में से एक के साथ सेना में सेवा की थी। क्या आपकी माँ को पता है कि आप बाहर गए हैं?” नौकर ने आगे कहा, जिसे मौसम के लोकप्रिय गीतों को गुनगुनाने की आदत थी, और साथ ही अपनी बातचीत में नए-नए चुटकुलों का तड़का लगाने की भी।

फ्रांस्वा, एक उम्रदराज महिला की थकी हुई आँखों से, जो कॉम्ब्रे की धुंधली दूरी को भी देख रही थीं, शब्दों में छिपी चतुराई को तो नहीं समझ पाईं, लेकिन उन्हें यह जरूर लगा कि उनमें कुछ न कुछ चतुराई जरूर है, क्योंकि उनका कॉम्ब्रे के बाकी भाषण से कोई संबंध नहीं था और उन्होंने ये शब्द एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बड़े जोर से कहे थे जिसे वह एक मजाकिया इंसान के रूप में जानती थीं। इसलिए उन्होंने दयालु आश्चर्य के भाव से उनकी ओर मुस्कुराया, मानो कोई कहे: "हमेशा एक ही बात, विक्टर!" और वह सचमुच खुश थीं, यह जानते हुए कि इस तरह की चतुर बातें सुनना उन प्रतिष्ठित सामाजिक सुखों के समान था—भले ही कुछ हद तक —जिनके लिए समाज के हर वर्ग के लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनने की जल्दी करते हैं और सर्दी लगने का जोखिम उठाते हैं। इसके अलावा, वह नौकर को अपना सच्चा दोस्त

मानती थीं, क्योंकि वह गणतंत्र द्वारा पादरियों के खिलाफ लागू किए जाने वाले भयानक उपायों की घोर निंदा करने से कभी नहीं रुकता था। फ्रांस्वा को अभी तक यह समझ नहीं आया था कि हमारे सबसे क्रूर शत्रु वे नहीं हैं जो हमारा खंडन करते हैं और हमें समझाने की कोशिश करते हैं, बल्कि वे हैं जो ऐसी खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं या मनगढ़ंत कहानियां गढ़ते हैं जिनसे हम दुखी हो सकें, और इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि उनमें औचित्य का कोई भी अंश शामिल न हो, जिससे हमारी असुविधा कम हो सके, और शायद उस दल के प्रति हमारे मन में थोड़ी सी सहानुभूति पैदा हो सके जिसे वे हमें यह कहकर दिखाने का प्रयास करते हैं कि वह दल एक साथ भयानक और विजयी है, ताकि हमारी पीड़ा पूरी हो सके।

"डचेस का उन सभी से ज़रूर कोई न कोई संबंध होगा," फ्रांस्वा ने बातचीत को रू डे ला चेज़ के गुरमांटे परिवार की ओर मोड़ते हुए कहा, जैसे कोई एंडांटे गीत का कोई अंश बार-बार सुना रहा हो। "मुझे याद नहीं आ रहा कि किसने मुझे बताया था कि उनमें से एक ने ड्यूक के चचेरे भाई से शादी की है। खैर, ये तो एक ही परिवार है। अरे, गुरमांटे परिवार तो वाकई महान है!" उसने सम्मान भरे स्वर में कहा, जैसे पास्कल धर्म के सत्य को तर्क और शास्त्रों के अधिकार पर आधारित करते हैं, वैसे ही परिवार की महानता को उसकी शाखाओं की संख्या और उसके संबंधों की चमक पर आधारित करते हुए। क्योंकि 'महान' शब्द दोनों अर्थों को व्यक्त करने के लिए केवल एक ही शब्द था, इसलिए उसे लगा कि ये दोनों एक ही विचार का निर्माण करते हैं, उसकी शब्दावली, कभी-कभी तराशे हुए पत्थरों की तरह, अपने कुछ पहलुओं पर एक ऐसी खामी दिखाती है जो उसके मन की गहराइयों में अंधकार की एक किरण डालती है। "अब मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे ही लोग हैं जिनका किला गुएरमांटेस में है, जो कॉम्ब्रे से कुछ ही मील दूर है; तो वे अल्जीयर्स में रहने वाले उनके चचेरे भाई के भी रिश्तेदार होंगे।" मेरी माँ और मैं लंबे समय तक सोचते रहे कि अल्जीयर्स में रहने वाला यह चचेरा भाई कौन हो सकता है, जब तक कि आखिरकार हमें पता नहीं चला कि फ्रांस्वा 'अल्जीयर्स' नाम से एंगर्स शहर का जिक्र कर रही थी। दूर की चीज़ें पास की चीज़ों से ज़्यादा जानी-पहचानी लगती हैं। फ्रांस्वा, जो नए साल पर हमें दी जाने वाली कुछ अप्रिय तारीखों से 'अल्जीयर्स' नाम जानती थी, उसने एंगर्स के बारे में कभी नहीं सुना था। उसकी भाषा, फ्रेंच

भाषा की तरह ही, और खासकर जगहों के नामों की भाषा, गलतियों से भरी हुई थी। "मैं उनके बटलर से इस बारे में बात करने वाली थी। आप उसे क्या कहते हैं?" उसने बीच में ही टोकते हुए कहा, मानो वह सही प्रक्रिया के बारे में कोई औपचारिक प्रश्न पूछ रही हो, और फिर जवाब दिया: "ओह, बिल्कुल, आप उसे एंटोनी कहते हैं!" मानो एंटोनी कोई उपाधि हो। "वही मुझे बता सकते हैं, लेकिन वे बड़े ही सज्जन हैं, एक महान विद्वान हैं, ऐसा लगता है जैसे उनकी जीभ काट दी गई हो, या वे बोलना ही भूल गए हों। जब आप उनसे बात करते हैं तो वे कोई प्रतिक्रिया नहीं देते," फ्रांस्वा ने आगे कहा, जिन्होंने 'प्रतिक्रिया देना' शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में किया जैसा कि मैडम डी सेविग्ने ने किया था। "लेकिन," उन्होंने पूरी तरह से झूठ बोलते हुए कहा, "जब तक मुझे पता है कि मेरे बर्तन में क्या उबल रहा है, मुझे दूसरों के बारे में कोई परवाह नहीं है। वे जो भी हों, कैथोलिक नहीं हैं। इसके अलावा, वे साहसी व्यक्ति भी नहीं हैं।" (इस आलोचना से शायद यह अनुमान लगाया जा सकता था कि फ्रांस्वा ने शारीरिक वीरता के बारे में अपना विचार बदल लिया था, जिसके अनुसार, कॉम्ब्रे के दिनों में, यह पुरुषों को जंगली जानवरों के स्तर तक गिरा देती थी। लेकिन ऐसा नहीं था। 'साहसी' का अर्थ केवल मेहनती होना था।) "लोग यह भी कहते हैं कि वह एक मैना की तरह चोर है, लेकिन सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करना उचित नहीं है। नौकर उस लॉज के कारण वहाँ ज़्यादा देर नहीं रुकते; चौकीदार ईर्ष्यालु हैं और डचेस को उनके खिलाफ भड़काते हैं। लेकिन यह कहना सुरक्षित है कि वह एंटोनी एक असली बदमाश है, और उसकी एंटोनी भी उससे कम नहीं है," फ्रांस्वा ने निष्कर्ष निकाला, जिसने बटलर की पत्नी को दर्शाने के लिए 'एंटोनी' नाम में स्त्रीलिंग प्रत्यय जोड़ते समय, निस्संदेह, शब्द-निर्माण के अपने इस कार्य में चानोइन और चानोनीसे शब्दों की एक अचेतन स्मृति से प्रेरित थी। यदि ऐसा है, तो वह बहुत गलत नहीं थी। नोट्रे-डेम के पास आज भी एक गली है जिसका नाम रू चानोइनेस है। यह नाम शायद पुराने ज़माने के उन फ्रांसीसी लोगों ने रखा होगा (क्योंकि यहाँ केवल पुरुष कैनन ही रहते थे) जिनकी समकालीन फ्रांस्वा थीं। इसके अलावा, उन्होंने स्त्रीवाचक वाक्यों को जोड़ने के इस तरीके का एक और उदाहरण देते हुए आगे कहा: "लेकिन एक बात पक्की है कि गुरमांटेस महल डचेस का है। और वही उस इलाके की मेयर हैं। ये तो कमाल की बात है।"

"मुझे पूरा यकीन है कि इसमें कुछ तो बात है," नौकर ने पूरे विश्वास के साथ कहा, जिसे इस बात का व्यंग्य समझ नहीं आया था।
"तुम्हें ऐसा लगता है, मेरे बेटे, तुम्हें लगता है कि इसमें कुछ खास है? अरे, उनके जैसे लोगों का मेयर और मेयरस बनना तो सरासर बेकार है। अगर वह गुएरमांटेस महल मेरा होता, तो मैं पेरिस में कदम भी नहीं रखता, मैं तुम्हें बता सकता हूँ। मुझे यकीन है कि जिन परिवारों के पास कुछ करने को होता है, जैसे यहाँ श्रीमान और महोदया, उनके मन में इस बदहाल शहर में रहने के बजाय, जैसे ही उन्हें आज़ादी मिलती है और कोई उन्हें रोक नहीं रहा होता, तुरंत कॉम्ब्रे चले जाने के अजीब विचार होंगे। वे रिटायर होने में देरी क्यों करते हैं? उनके पास सब कुछ है जो वे चाहते हैं। मरने तक इंतज़ार क्यों करें? आह, अगर मुझे खाने के लिए सूखी रोटी का एक टुकड़ा और सर्दियों में गर्म रहने के लिए एक गट्ठा ही मिल जाए, तो मैं कॉम्ब्रे में अपने भाई के गरीब पुराने घर में कितना अच्छा समय बिताऊँगा। वहाँ आपको ज़िंदा होने का एहसास होता है; आपके सामने ये सारे घर नहीं होते, रात में इतना कम शोर होता है कि आप सुन सकते हैं..." पांच मील और उससे भी अधिक दूरी से मेंढकों की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं।"
“यह तो वाकई बहुत बढ़िया होगा!” युवा नौकर ने उत्साह से कहा, मानो यह नया आकर्षण कॉम्ब्रे के लिए उतना ही अनोखा हो जितना वेनिस के लिए गोंडोला। मेरे पिता के नौकर से भी हाल ही में घर में आया वह नौकर, फ्रांस्वा से उन चीजों के बारे में बात करता था जिनमें शायद उसे खुद से ज़्यादा फ्रांस्वा की दिलचस्पी होती थी। और फ्रांस्वा, जिसका चेहरा तब झुंझलाहट से सिकुड़ जाता था जब उसे महज़ एक रसोइया समझा जाता था, उस युवा नौकर के लिए, जो उसे हमेशा 'गृहस्वामी' कहकर पुकारता था, वह विशेष स्नेह रखती थी जो शाही खानदान से न आने वाले राजकुमार उन नेक नौजवानों के लिए महसूस करते हैं जो उन्हें 'महामहिम' कहकर सम्मान देते हैं।
"खैर, वहाँ तो इंसान को पता होता है कि वह क्या कर रहा है और साल का कौन सा समय है। यह यहाँ जैसा नहीं है, जहाँ ईस्टर पर भी एक भी बटरकप नहीं खिलता, ठीक वैसे ही जैसे क्रिसमस पर नहीं, और सुबह जब मैं अपने बूढ़े शरीर को बिस्तर से उठाता हूँ तो मुझे एंजेलस की हल्की सी भी घंटी सुनाई नहीं देती। वहाँ तो हर घंटे की आवाज़ सुनाई देती है; वहाँ बस एक ही घंटी है, लेकिन आप मन ही मन सोचते हैं: 'मेरा भाई अब खेत से आ रहा होगा,' और

आप दिन ढलते हुए देखते हैं, और घंटी धरती की फसलों को आशीर्वाद देने के लिए बजती है, और आपके पास दीपक जलाने से पहले थोड़ा समय होता है। लेकिन यहाँ दिन भी होता है और रात भी, और आप बिस्तर पर चले जाते हैं, और आप उन मूक जानवरों से ज़्यादा कुछ नहीं कह सकते कि आपने दिन भर क्या किया।"

"मुझे लगता है कि मेसेग्लिस भी एक बढ़िया जगह है, मैडम," युवा नौकर ने बीच में टोकते हुए कहा, जिसे लगा कि बातचीत उसकी पसंद के हिसाब से थोड़ी ज्यादा अमूर्त होती जा रही है, और उसे याद आया कि उसने हमें मेज पर मेसेग्लिस का जिक्र करते हुए सुना था।

"ओह! मेसेग्लिस, है ना?" फ्रांस्वा ने उस चौड़ी मुस्कान के साथ कहा जो इन नामों में से किसी का भी उच्चारण करते ही उसके होठों पर आ जाती थी—मेसेग्लिस, कॉम्ब्रे, टैनसनविल। ये नाम उसके जीवन का इतना अभिन्न हिस्सा थे कि जब वह उनसे जीवन के बाहर मिलती, या बातचीत में उनका ज़िक्र सुनती, तो उसे वैसी ही खुशी महसूस होती, जैसी किसी प्रोफेसर के अपनी कक्षा में किसी समकालीन हस्ती का ज़िक्र करने पर होती है, जिसका नाम छात्रों ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि अकादमिक कुर्सी की ऊँचाई से उनके कानों तक पहुँच सकता है। उसकी खुशी इस एहसास से भी उपजी कि ये स्थान उसके लिए कुछ खास थे, जो बाकी दुनिया के लिए नहीं थे—पुराने साथी जिनके साथ उसने कई खुशियाँ बाँटी थीं; और वह उन पर ऐसे मुस्कुराती जैसे उसे उनमें कुछ हास्य मिल गया हो, क्योंकि वास्तव में उसे उनमें अपना एक बड़ा हिस्सा नज़र आता था।

"हाँ, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो, बेटे, मेसेग्लिस एक बहुत ही सुंदर जगह है;" वह खिलखिलाती हंसी के साथ बोली, "लेकिन तुम्हें मेसेग्लिस के बारे में कैसे पता चला?"

"मुझे मेसेग्लिस के बारे में कैसे पता चला? लेकिन यह एक प्रसिद्ध जगह है; लोगों ने मुझे इसके बारे में बताया है—हाँ, बार-बार," उसने उस मुखबिर की आपराधिक अस्पष्टता के साथ उसे आश्वस्त किया, जो जब भी हम किसी ऐसी चीज़ के महत्व का निष्पक्ष आकलन करने का प्रयास करते हैं जो हमारे लिए मायने रखती है और दूसरों के लिए हो सकती है, तो हमें सफल होने से रोक देती है।

मैं आपको बता सकता हूँ, दिन भर आग के सामने खड़े रहने से बेहतर है कि आप चेरी के पेड़ों के नीचे बैठे रहें।

उसने उनसे यूलाली के बारे में भी एक अच्छे इंसान के रूप में बात की। क्योंकि यूलाली की मृत्यु के बाद से फ्रांस्वा यह पूरी तरह से भूल चुकी थी कि उसने अपने जीवनकाल में उससे उतना ही कम प्यार किया था जितना वह हर उस व्यक्ति से करती थी जिसका पेट खाली था, जो भूख से मर रहा था, और उसके बाद एक निकम्मे की तरह, अमीरों की उदारता के सहारे, 'अहंकार दिखाने' लगा था। अब उसे इस बात का कोई दुख नहीं होता था कि यूलाली ने हर रविवार को बड़ी चतुराई से मेरी चाची से अपना 'थोड़ा सा' पैसा हासिल कर लिया था। जहाँ तक मेरी चाची की बात है, फ्रांस्वा उसकी प्रशंसा करने से कभी नहीं रुकती थी।
"लेकिन आप तो निश्चित रूप से कॉम्ब्रे में ही मैडम के चचेरे भाई के साथ हुआ करती थीं?" युवा नौकर ने पूछा।
"हाँ, श्रीमती ऑक्टेव के साथ—ओह, एक प्यारी, नेक, पवित्र महिला, मेरे प्यारे दोस्तों, और एक ऐसा घर जहाँ हमेशा पर्याप्त और उससे भी अधिक होता था, और सब कुछ बेहतरीन होता था, एक अच्छी महिला, आप कह सकते हैं, जिन्हें तीतरों, या फ़ीज़ंटों, या किसी भी अन्य जानवर पर दया नहीं आती थी; आप पाँच या छह लोग रात के खाने पर आ सकते थे, मांस की कभी कमी नहीं होती थी, और वह भी सर्वोत्तम गुणवत्ता का, और सफेद शराब, और लाल शराब, और वह सब कुछ जो आप चाहते थे।" (फ्रांकोइस ने 'दया' शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में किया है जो लैब्रूयेर ने दिया है।) "वही हमेशा नुकसान की भरपाई करती थीं, चाहे परिवार महीनों और वर्षों तक ही क्यों न रहे।" (यह टिप्पणी वास्तव में हम पर कोई कलंक नहीं थी, क्योंकि फ्रांस्वा उस युग से थीं जब 'क्षतिपूर्ति' शब्द का प्रयोग केवल कानूनी संदर्भ तक सीमित नहीं था और इसका अर्थ केवल खर्च होता था।) "आह, मैं आपको बता सकती हूँ, लोग उस घर से खाली हाथ नहीं लौटते थे। जैसा कि आदरणीय पादरी ने हमें बताया है, कई बार, अगर कोई महिला सीधे ईश्वर के सिंहासन के समक्ष जाने की उम्मीद कर सकती थी, तो वह फ्रांस्वा ही थीं। बेचारी मैडम, मैं अब भी उन्हें उनकी धीमी आवाज़ में कहते हुए सुन सकती हूँ: 'जानती हो, फ्रांस्वा, मैं खुद कुछ नहीं खा सकती, लेकिन मैं चाहती हूँ कि दूसरों के लिए भी उतना ही अच्छा हो जितना कि अगर मैं खा सकती।' आप यकीन मानिए, वो खाना उसके लिए नहीं था। अगर आप उसे देखते, तो उसका वज़न चेरी की एक बोरी से ज़्यादा नहीं होता; वो इतनी दुबली-पतली थी। वो मेरी एक बात भी नहीं सुनती थी, कभी डॉक्टर को नहीं बुलाती थी। आह,

उस घर में आपको खाना जल्दी-जल्दी नहीं खाना पड़ता था। उसे अपने नौकरों को भरपेट खाना खिलाना पसंद था। यहाँ, आज भी वही हाल है; हमें रोटी का एक टुकड़ा भी तोड़ने का समय नहीं मिला; सब कुछ बेतहाशा चल रहा है।

सबसे ज़्यादा उसे मेरे पिता द्वारा खाए जाने वाले खींचे हुए ब्रेड के टुकड़े बहुत परेशान करते थे। उसे पूरा यकीन था कि वह उन्हें सिर्फ़ अपनी शान दिखाने और उसे खुश रखने के लिए खाते थे। "मैं आपको साफ़-साफ़ बता सकता हूँ," युवा नौकर ने उसे आश्वस्त किया, "कि मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।" उसने यह बात ऐसे कही जैसे उसने सब कुछ देख लिया हो, और जैसे उसके पास हज़ारों वर्षों का अनुभव हो और वह सभी देशों और उनकी परंपराओं को जानता हो, जिनमें से कहीं भी खींचे हुए ब्रेड खाने की प्रथा न हो। "हाँ, हाँ," नौकर ने बुदबुदाते हुए कहा, "लेकिन यह सब बदल जाएगा; कनाडा में लोग हड़ताल पर जा रहे हैं, और मंत्री जी ने पिछली शाम महाशय को बताया कि वह इससे दो लाख फ़्रैंक निकाल रहे हैं।" उसके लहजे में निंदा का कोई भाव नहीं था, ऐसा नहीं था कि वह खुद पूरी तरह ईमानदार नहीं था, लेकिन चूंकि वह सभी राजनेताओं को बेईमान मानता था, इसलिए गबन का अपराध उसे छोटी-मोटी चोरी से भी कम गंभीर लगता था। उन्होंने यह सोचने के लिए भी समय नहीं निकाला कि क्या उन्होंने इस ऐतिहासिक कथन को सही ढंग से सुना है, और उन्हें इस बात की असंभावना भी नहीं हुई कि दोषी व्यक्ति ने स्वयं मेरे पिता के सामने ऐसी बात स्वीकार की होगी और मेरे पिता ने उसे तुरंत घर से बाहर निकाल दिया होगा। लेकिन कॉम्ब्रे के दर्शन ने फ्रांस्वा के लिए यह उम्मीद करना असंभव बना दिया कि कनाडा में हड़तालों का पुल्ड ब्रेड के उपयोग पर कोई प्रभाव पड़ सकता है। "जब तक दुनिया घूमती रहेगी, देखो, हमें काम पर लगाए रखने के लिए मालिक होंगे, और उनके आदेशों का पालन करने के लिए नौकर होंगे।" इस शाश्वत गति के सिद्धांत का खंडन करते हुए, पिछले पंद्रह मिनट से मेरी माँ (जो शायद फ्रांस्वा के भोजन की अवधि की गणना करते समय समय के समान मापदंडों का उपयोग नहीं करती थीं) कह रही थीं:

"आखिर वे क्या कर रहे होंगे? वे कम से कम दो घंटे से खाना खा रहे हैं।"

और उसने दबी आवाज़ में तीन-चार बार घंटी बजाई। फ्रांस्वा, उसका नौकर, बटलर, घंटी की आवाज़ सुनकर चुप हो गया, मानो यह उनके लिए कोई बुलावा हो, और न ही उसने जवाब देने

के बारे में सोचा, बल्कि यह उस तरह थी जैसे किसी संगीत कार्यक्रम के अगले भाग के शुरू होने से पहले वाद्ययंत्रों की पहली ध्वनि सुनाई देती है, और तब पता चलता है कि अब कुछ ही मिनटों का अंतराल बचा है। और इसलिए, जब घंटियों की आवाज़ें दोहराई गईं और तेज़ होती गईं, तो हमारे नौकरों ने ध्यान देना शुरू कर दिया, और यह समझते हुए कि उनके पास ज़्यादा समय नहीं बचा है और काम फिर से शुरू होने वाला है, बाकी घंटियों से थोड़ी तेज़ आवाज़ पर सबने एक साथ आह भरी और अपने-अपने रास्ते चले गए। नौकर नीचे जाकर दरवाजे के बाहर सिगरेट पीने लगा, फ्रांस्वा, हमारे बारे में कई विचार करते हुए, जैसे: "आज तो ज़रूर उन्हें बहुत गुस्सा आ रहा होगा," ऊपर जाकर अटारी में अपना सामान ठीक से रखने लगी, जबकि बटलर ने पहले मेरे बेडरूम से नोट-पेपर लेकर अपने निजी पत्रों का बकाया निपटारा कर दिया।

उनके बटलर की स्पष्ट अकड़ के बावजूद, फ्रांस्वा ने शुरू से ही मुझे यह बताने की स्थिति में थी कि गुएरमांटे परिवार अपने महल में किसी प्राचीन अधिकार के आधार पर नहीं, बल्कि हाल ही के किरायेदारी समझौते के आधार पर रह रहा था, और जिस तरफ से वह महल दिखाई देता था, वह बगीचा, जिसे मैं नहीं जानता था, काफी छोटा था और सड़क के किनारे के सभी बगीचों जैसा ही था; और मुझे अंततः एहसास हुआ कि वहाँ न तो कोई गड्ढा, न फांसी का तख्ता, न ही कोई किलेबंद चक्की, न कोई गुप्त कक्ष, न ही कोई स्तंभों वाला कबूतरखाना, न ही कोई जागीरदार का बेकरी, न ही कोई कर भंडार, न ही कोई तहखाना, न ही कोई पुल, न ही कोई टोल-हाउस, न ही कोई शिखर, न ही कोई चार्टर, न ही कोई दस्तावेज, न ही कोई प्राचीर, न ही कोई स्मारक टीला था। लेकिन ठीक वैसे ही जैसे एल्स्टिर ने, जब बालबेक की खाड़ी अपना रहस्य खोकर मेरे लिए पृथ्वी की सतह पर फैले खारे पानी के कुल अंश का एक हिस्सा मात्र रह गई थी, जिसे किसी भी अन्य हिस्से से बदला जा सकता था, अचानक मुझे यह बताकर उसे एक अलग पहचान दी थी कि यह ओपल की खाड़ी है, जिसे व्हिस्लर ने अपनी 'हार्मनीज़ इन ब्लू एंड सिल्वर' में चित्रित किया था, उसी प्रकार गुएरमांटेस नाम ने फ्रांस्वा के हथौड़े की चोटों के नीचे अपने अक्षरों से निकले अंतिम आवास को नष्ट होते देखा था, जब एक दिन मेरे पिता के एक पुराने मित्र ने डचेस के बारे में बात करते हुए हमसे कहा: "वह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की प्रथम महिला हैं; उनका घर फाउबर्ग सेंट-जर्मेन का सबसे प्रमुख घर है।"

निस्संदेह, सबसे विशिष्ट ड्राइंग-रूम, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन का प्रमुख घर उन सभी अन्य हवेलियों के सामने कुछ भी नहीं था जिनका मैंने सपना देखा था। और फिर भी इस फिल्म में भी (और यह श्रृंखला की आखिरी फिल्म थी), कुछ ऐसा था, चाहे कितना भी मामूली क्यों न हो, जो इसके भौतिक घटकों से बिल्कुल अलग था, एक गुप्त विशिष्टता।

और यह और भी ज़रूरी हो गया कि मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम में, उनके दोस्तों के बीच, उनके नाम के रहस्य को खोज सकूँ, क्योंकि जब मैंने उन्हें सुबह पैदल घर से निकलते देखा या दोपहर में उनकी गाड़ी में जाते देखा, तो मुझे उनका नाम उनके व्यक्तित्व में नहीं दिखा। दरअसल, एक बार पहले, कॉम्ब्रे के चर्च में, वे मुझे एक चकाचौंध भरी चमक में प्रकट हुईं, मानो उनका रूपान्तरण हो गया हो, उनके गाल गुएरमांटेस नाम और विवोन नदी के किनारे बिताई गई दोपहरों के रंग से रंगे हुए थे, और मेरे टूटे हुए सपने को एक हंस या विलो वृक्ष की तरह समेटे हुए थे, जिसमें कोई देवता या अप्सरा समा गई हो, और जो अब से प्राकृतिक नियमों के अधीन होकर पानी पर तैरेगी या हवा से हिल जाएगी। और फिर भी, जब वह चमक गायब हो गई, तो मेरी नज़र से ओझल होने से पहले ही वह फिर से प्रकट हो गई, जैसे सूर्यास्त के बाद चप्पू की मार से बिखरी हुई हरी और गुलाबी आभा, और मेरे विचारों के एकांत में उस नाम ने चेहरे की मेरी छाप को तुरंत अपना लिया। लेकिन अब, मैं उसे अक्सर उसकी खिड़की पर, आँगन में, गली में देखता था, और कम से कम अपने लिए, अगर मैं उसमें गुएरमांटेस नाम को समाहित करने में सफल नहीं हुआ, तो मैंने इसका दोष अपने दिमाग की अक्षमता पर डाला, जो उस पूरे कार्य को पूरा करने में असमर्थ था जिसकी मुझे उससे अपेक्षा थी; लेकिन वह, हमारी पड़ोसी, ऐसा प्रतीत होता था कि वह भी वही गलती करती है, बल्कि उससे भी ज़्यादा बिना किसी झिझक के, बिना किसी संकोच के, यहाँ तक कि बिना यह सोचे कि यह एक गलती है। इस प्रकार श्रीमती... डी गुएरमांटेस अपने पहनावे में फैशन का अनुसरण करने की वही उत्सुकता दिखाती थीं, मानो खुद को बाकी सभी महिलाओं की तरह एक साधारण महिला मानकर, वह अपने पहनावे में उस भव्यता की आकांक्षा रखती हों जिसमें अन्य साधारण महिलाएं उनकी बराबरी कर सकें और शायद उनसे आगे भी निकल सकें; मैंने उन्हें सड़क पर एक सुसज्जित्त सजी अभिनेत्री को प्रशंसा भरी निगाहों से देखते हुए देखा था; और सुबह, पैदल निकलने से पहले, मानो राहगीरों की राय, जिनकी अशिष्टता को

वह उनके बीच अपने दुर्गम जीवन का सहज प्रदर्शन करके उजागर करती थीं, उन्हें आंकने के लिए एक सक्षम न्यायाधिकरण हो, मैं उन्हें शीशे के सामने बिना किसी दिखावे या व्यंग्य के, जुनून, चिड़चिड़ेपन और अहंकार के साथ, एक ऐसी रानी की तरह अभिनय करते हुए देखता था, जिसने दरबार में नाट्य प्रस्तुतियों में एक नौकरानी के रूप में अभिनय करने की सहमति दी हो, एक फैशनेबल महिला की यह भूमिका, जो उनके लिए इतनी अनुपयुक्त थी; और अपनी स्वाभाविक भव्यता के इस पौराणिक विस्मृति में, वह यह देखती रही कि उसका घूंघट ठीक से लटका है या नहीं, अपनी कलाई को संवारा, अपने लबादे को सीधा किया, जैसे दिव्य हंस अपनी पशु प्रजाति के सभी स्वाभाविक कार्यों को करता है, अपनी चोंच के दोनों ओर अपनी आँखों को बिना उनमें जीवन की कोई चमक डाले चित्रित रखता है, और अचानक किसी कली या छाते के पीछे झपट पड़ता है, जैसे कोई हंस करता है, बिना यह याद रखे कि वह एक देवता है। लेकिन जैसे कोई यात्री किसी अजनबी शहर के पहले दृश्य से निराश होकर खुद को याद दिलाता है कि यदि वह उसके संग्रहालयों और दीर्घाओं का दौरा करेगा तो वह निस्संदेह उसके आकर्षण में प्रवेश करने में सफल होगा, वैसे ही मैंने खुद को आश्वस्त किया कि यदि मुझे श्रीमती के संग्रहालय में प्रवेश का अधिकार दिया गया होता, तो मैं भी ऐसा ही करता। अगर मैं डी गुएरमांटेस के घर में, उसकी सहेलियों में से एक होती, अगर मैं उसके जीवन में झाँक पाती, तो मुझे पता चल जाता कि उसके चमकदार नारंगी-भूरे आवरण के भीतर, उसका नाम वास्तव में, वस्तुनिष्ठ रूप से अन्य लोगों के लिए क्या समाहित करता है, क्योंकि आखिरकार, मेरे पिता के दोस्त ने कहा था कि फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में गुएरमांटेस परिवार अपने आप में कुछ अनोखा था।

वहाँ उनके जीवन के बारे में मेरी जो धारणा थी, वह मेरे अनुभव से बिलकुल अलग थी, और मुझे ऐसा लगता था कि वह उस खास घर से इतनी गहराई से जुड़ी हुई थी कि मैं डचेस की पार्टियों में उन लोगों की मौजूदगी की कल्पना भी नहीं कर सकता था, जिनके साथ मैं खुद पहले ही रह चुका था, जो सचमुच मौजूद थे। क्योंकि वे अचानक अपना स्वभाव नहीं बदल सकते थे, इसलिए वे वहाँ उसी तरह की बातचीत करते होंगे जैसी मैं जानता था; उनके साथी शायद उन्हीं की तरह मानवीय भाषा में जवाब देते होंगे; और फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के उस प्रमुख घर में बिताई गई एक शाम में, ऐसे पल होते जो बिल्कुल वैसे ही होते जैसे मैंने पहले ही

जी लिए थे। जो कि असंभव था। इसी वजह से मेरा मन कुछ उलझनों में पड़ गया, और प्रभु के शरीर की उपस्थिति मुझे फाउबर्ग के उस प्रमुख घर से ज़्यादा रहस्यमय नहीं लगी, जो नदी के दाहिने किनारे पर स्थित था, और इतना नज़दीक था कि सुबह अपने बिस्तर से मैं उसके कालीनों की आवाज़ सुन सकता था। लेकिन फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से मुझे अलग करने वाली सीमा रेखा मुझे और भी वास्तविक प्रतीत होती थी क्योंकि वह विशुद्ध रूप से आदर्श थी। मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि यह पहले से ही फाउबर्ग का हिस्सा है, जब मैंने उस अदृश्य भूमध्य रेखा के पार फैली हुई गुएरमांटेस की डोरमैट देखी, जिसके बारे में मेरी माँ ने, मेरी ही तरह, एक दिन जब उनका दरवाजा खुला था, उसे देखने के बाद साहसपूर्वक कहा था कि यह एक दयनीय स्थिति है। इसके अलावा, उनका भोजन कक्ष, लाल मखमल से सजी उनकी धुंधली गैलरी, जिसमें मैं कभी-कभी हमारी रसोई की खिड़की से देख सकता था, मेरी दृष्टि में फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के रहस्यमय आकर्षण को कैसे धारण करने में विफल रही, उसका एक आवश्यक हिस्सा कैसे बनी, भौगोलिक रूप से उसके भीतर कैसे स्थित हुई, क्योंकि उस कमरे में रात के खाने पर आमंत्रित होना फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में प्रवेश करने जैसा था, उसकी हवा में सांस लेने जैसा था, क्योंकि जो लोग मेज पर जाने से पहले श्रीमती के बगल में बैठते थे... उस गैलरी में चमड़े से ढके सोफे पर बैठीं डी गुएरमांटेस की छवि में फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सभी लोग मौजूद थे। निस्संदेह, फाउबर्ग के अलावा अन्य जगहों पर, कुछ खास पार्टियों में, कभी-कभार फैशन की भीड़-भाड़ में शान से विराजमान उन पुरुषों में से किसी एक को देखा जा सकता था, जो महज नाम थे और जब कोई उनकी छवि बनाने की कोशिश करता, तो वे किसी टूर्नामेंट या शाही जंगल के रूप में दिखाई देते थे। लेकिन यहां, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सबसे प्रमुख घर में, ड्राइंग रूम में, धुंधली गैलरी में, केवल वे ही थे। वे कीमती सामग्रियों से बने थे, मानो मंदिर को सहारा देने वाले स्तंभ हों। वास्तव में, शांत पारिवारिक पार्टियों के लिए, श्रीमती डी गुएरमांटेस अपने मेहमानों का चयन केवल उन्हीं में से करती थीं, और बारह लोगों के भोज में, चमकदार नैपकिन और प्लेटों के चारों ओर एकत्रित होकर, वे सेंट-चैपल में प्रेरितों की सुनहरी मूर्तियों की तरह, पवित्र मेज के सामने प्रतीकात्मक, पवित्र स्तंभों की तरह प्रतीत होते थे। घर के पीछे ऊंची दीवारों के बीच फैले उस छोटे से बगीचे की बात करें, जहां गर्मियों की शामों में श्रीमती डी गुएरमांटेस रात के खाने के बाद शराब और संतरे का रस मंगवाती थीं,

तो मुझे यह महसूस किए बिना कैसे रह सकता था कि शाम को नौ से ग्यारह बजे के बीच, चमड़े के सोफे की तरह ही जादुई लोहे की कुर्सियों पर बैठना, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की खास हवाओं को महसूस किए बिना, उतना ही असंभव था जितना कि फिगुइग के नखलिस्तान में दोपहर की नींद लेना, मानो अफ्रीका में होने का एहसास दिलाए। केवल कल्पना और विश्वास ही कुछ वस्तुओं, कुछ लोगों को बाकी चीजों से अलग कर सकते हैं और एक वातावरण बना सकते हैं। अफसोस, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के वे सुरम्य स्थल, वे प्राकृतिक चमत्कार, वे स्थानीय अजूबे, वे कलाकृतियां, शायद मुझे कभी उनके बीच कदम रखने की अनुमति न मिले। और मुझे रोमांच की एक सिहरन से ही संतोष करना पड़ा जब मैंने गहरे समुद्र से (और वहाँ कभी उतरने की जरा भी उम्मीद के बिना) एक उत्कृष्ट मीनार की तरह, पहले ताड़ के पेड़ की तरह, किसी विदेशी उद्योग या वनस्पति के पहले संकेतों की तरह, उसके किनारे की अच्छी तरह से रौंदी हुई चटाई को देखा।

लेकिन अगर मेरे लिए होटल डी गुएरमांटेस की शुरुआत उसके हॉल के दरवाजे से होती थी, तो ड्यूक के अनुसार, उसके अधीन स्थित परिसर कहीं अधिक दूर तक फैले हुए माने जाने चाहिए। ड्यूक अन्य सभी किरायेदारों को किसान, मजदूर, ज़ब्त की गई जागीरों के खरीदार समझता था, जिनकी राय उसके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। वह हर सुबह खिड़की पर अपनी नाइटशर्ट में दाढ़ी बनाता था, दिन की गर्मी या ठंड के अनुसार, कभी आस्तीन ऊपर करके, कभी पजामा पहनकर, कभी चटख रंगों के चेकदार कोट में, कभी रोएँदार रोएँदार कोट में, कभी नीचे जैकेट से छोटे हल्के रंग के कोट में, आंगन में आता था और अपने एक नौकर से उस घोड़े को सरपट दौड़ाने को कहता था जिसे उसने अभी-अभी खरीदा था। वास्तव में, एक से अधिक बार घोड़े ने जुपियन की दुकान की खिड़की तोड़ दी, जिस पर जुपियन ने ड्यूक के गुस्से के बावजूद मुआवजे की मांग की। “अगर सिर्फ़ इस बात को ध्यान में रखा जाए कि मैडम ला डचेस ने घर में, यहाँ और पैरिश में कितना अच्छा काम किया है,” एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, “तो इस आदमी का हमसे एक पैसा माँगना सरासर अन्याय है।” लेकिन जुपियन अपनी बात पर अड़ा रहा, ज़ाहिर तौर पर उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि डचेस ने कभी कोई ‘अच्छा’ काम किया था। और फिर भी उसने अच्छा काम किया था, लेकिन —चूँकि कोई एक साथ सबका भला नहीं कर सकता—किसी एक व्यक्ति पर किए गए

उपकारों की याद हमें दूसरे की मदद न करने का एक वैध कारण देती है, जिससे हम उसकी नाराज़गी को और भी बढ़ा देते हैं। दान के अलावा अन्य दृष्टिकोणों से देखें तो ड्यूक को वह इलाका—और यह काफ़ी बड़ा क्षेत्र था—सिर्फ़ अपने आँगन का विस्तार, अपने घोड़ों के लिए एक लंबा रास्ता ही लगा। एक नए घोड़े को अपने आप चलते हुए देखकर, वह उसे जोतकर आस-पास की सभी गलियों में घुमाता था। घोड़ागाड़ी के बगल में लगाम पकड़े हुए उसका रखवाला दौड़ता था, और उसे ड्यूक के सामने आगे-पीछे घुमाता था। ड्यूक फुटपाथ पर सीधा, विशालकाय, चमकीले कपड़ों में खड़ा रहता था, उसके दाँतों के बीच एक सिगार होता था, उसका सिर हवा में होता था, और उसका चश्मा उसे बारीकी से देखता रहता था। फिर वह अचानक घोड़े पर चढ़ जाता, उसे थोड़ा आगे-पीछे चलाकर देखता, और फिर अपने नए घोड़े के साथ चैंप्स-एलिसीज़ में अपनी प्रेमिका को लेने के लिए निकल पड़ता। आँगन छोड़ने से पहले, एम. डी गुएरमांटेस ने दो दंपतियों को नमस्कार किया, जो कमोबेश उसकी दुनिया से जुड़े थे; पहला, उसके कुछ चचेरे भाई-बहन, जो मजदूर वर्ग के माता-पिता की तरह, अपने बच्चों की देखभाल के लिए कभी घर पर नहीं रहते थे, क्योंकि हर सुबह पत्नी स्कोला में काउंटरपॉइंट और फ्यूग का अध्ययन करने जाती थी, और पति अपने स्टूडियो में लकड़ी तराशने और चमड़ा पीटने जाता था। और उनके बाद बैरन और बैरोनेस डी नॉरपोइस, हमेशा काले वस्त्र पहने हुए, वह किसी चर्च में प्रवेश द्वार खोलने वाली की तरह और वह किसी अंतिम संस्कार में मूक व्यक्ति की तरह, चर्च जाते समय दिन में कई बार दिखाई देते थे। वे हमारे मित्र, पुराने राजदूत के भतीजे और भतीजी थे, जिनसे मेरे पिता वास्तव में सीढ़ियों के नीचे मिले थे, बिना यह जाने कि वे कहाँ से आए हैं; क्योंकि मेरे पिता का मानना था कि इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति, जो यूरोप के सबसे प्रतिष्ठित लोगों के संपर्क में रहा हो और संभवतः पद के खोखले भेदों के प्रति उदासीन हो, इन साधारण, पादरी और संकीर्ण मानसिकता वाले रईसों की संगति में शायद ही आता-जाता होगा। वे वहाँ ज़्यादा देर नहीं रुके थे; जुपियन, जो आँगन में पति से कुछ कहने के लिए बाहर आया था, जब वह एम. डी गुएरमांटेस का अभिवादन कर रहा था, उसने उनका नाम न जानते हुए उन्हें 'एम. नॉरपोइस' कहकर पुकारा।

"महाशय नॉरपोइस, सच में! ओह, यह तो बहुत बढ़िया है! बस थोड़ा इंतज़ार कीजिए! यह व्यक्ति आपको 'कॉमरेड नॉरपोइस' कहकर पुकारेगा!" एम. डी गुएरमांटेस ने बैरन की ओर

मुड़ते हुए कहा। अंततः उन्हें जुपियन पर अपना गुस्सा निकालने का मौका मिल गया, जिसने उन्हें 'महाशय ड्यूक' के बजाय 'महाशय' कहकर संबोधित किया था।

एक दिन जब एम. डी गुएरमांटेस को किसी ऐसे मामले में जानकारी की आवश्यकता हुई, जिसमें मेरे पिता को पेशेवर ज्ञान था, तो उन्होंने बड़े ही विनम्रतापूर्वक उनसे अपना परिचय दिया। उसके बाद, उन्हें अक्सर पड़ोसी के तौर पर मेरे पिता से कोई न कोई काम करवाना होता था और जैसे ही वे उन्हें नीचे आते देखते, अपने काम में मग्न और किसी भी तरह की रुकावट से बचने की चिंता में, ड्यूक अपने अस्तबल के नौकरों को छोड़कर आंगन में उनके पास आते, शाही सेवकों की पुरानी परंपरा से विरासत में मिली कुशलता से उनके ओवरकोट का कॉलर ठीक करते, उनका हाथ पकड़ते और उसे अपने हाथ में थामे, यहाँ तक कि उसे थपथपाते हुए, एक दरबारी या दरबारी की निर्लज्जता से यह साबित करते कि ड्यूक डी गुएरमांटेस मेरे पिता के शाही परिवार से मिलने के विशेषाधिकार के अधिकार के बारे में कोई समझौता नहीं करते, उन्हें एक तरह से पट्टे पर बांधकर, बेहद नाराज़ और केवल भागने का रास्ता सोचते हुए, गाड़ी के प्रवेश द्वार से बाहर सड़क पर ले जाते। एक दिन जब हम अंदर आए तो उन्होंने हमें झुककर अभिवादन किया, ठीक उसी समय जब वे अपनी पत्नी के साथ गाड़ी में बाहर जा रहे थे; उन्होंने मेरी पत्नी को मेरा नाम जरूर बताया होगा; लेकिन इस बात की क्या संभावना थी कि उन्हें मेरा नाम या मेरा चेहरा याद होगा? और इसके अलावा, सिर्फ उनके किराएदारों में से एक होने के नाते मेरा ज़िक्र करना कितना कमज़ोर सिफारिश का काम था! एक और, ज़्यादा मूल्यवान, मौका होता डचेस से मैडम डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में मिलने का, जिन्होंने संयोग से मेरी दादी के ज़रिए संदेश भेजा था कि मुझे उनसे मिलने जाना है, और यह याद रखते हुए कि मैं साहित्य में रुचि रखता था, उन्होंने यह भी लिखा था कि मुझे वहाँ कई लेखकों से मिलने का मौका मिलेगा। लेकिन मेरे पिता को लगा कि मैं अभी समाज में जाने के लिए थोड़ा छोटा हूँ, और मेरी सेहत की स्थिति उन्हें लगातार चिंतित कर रही थी, इसलिए उन्होंने मेरे लिए ऐसे उदाहरण स्थापित करने का कोई फायदा नहीं समझा जो मेरे लिए अच्छा न हो।

मैडम डी गुएरमांटेस के एक नौकर की फ्रांस्वा से बात करने की आदत थी, इसलिए मुझे उन कई घरों के नाम पता चले जहाँ वह अक्सर जाती थी, लेकिन उनमें से किसी के बारे में मेरे मन

में कोई खास धारणा नहीं बनी; जिस क्षण से वे उसके जीवन का हिस्सा बने, उस जीवन का जिसे मैंने केवल उसके नाम के पर्दे के पीछे से देखा, क्या वे मेरे लिए अकल्पनीय नहीं थे?
“आज रात प्रिंसेस डी पार्म के घर पर एक बड़ी पार्टी है जिसमें चीनी छाया नृत्य भी होगा,” नौकर ने कहा, “लेकिन हम नहीं जा रहे हैं, क्योंकि शाम पाँच बजे मैडम ट्रेन से शैंटिली जा रही हैं, ड्यूक डी औमाले के साथ कुछ दिन बिताने के लिए; लेकिन उनके साथ नौकरानी और नौकर जा रहे हैं। मुझे यहीं रुकना है। प्रिंसेस डी पार्म बिल्कुल भी खुश नहीं होंगी, उन्होंने मैडम ला डचेस को चार बार पत्र लिखा है।”
"तो क्या आप इस साल गुएरमांटेस कैसल नहीं जा रहे हैं?"
"यह पहली बार है जब हम वहां नहीं जा रहे हैं: ड्यूक के गठिया की वजह से, डॉक्टर का कहना है कि जब तक गर्म पानी के पाइप नहीं लग जाते, तब तक उन्हें वहां नहीं जाना चाहिए, लेकिन हम अब तक हर साल जनवरी तक वहां जाते रहे हैं। अगर गर्म पानी के पाइप तैयार नहीं हुए, तो शायद मैडम कुछ दिनों के लिए कान्स में डचेस डी गुइज़ से मिलने जाएंगी, लेकिन अभी कुछ तय नहीं हुआ है।"
"और क्या आप कभी-कभी थिएटर भी जाते हैं?"
"हम कभी-कभार ओपेरा जाते हैं, आमतौर पर उन शामों को जब प्रिंसेस डी पार्म का बॉक्स होता है, यानी हफ्ते में एक बार; लगता है वहाँ बढ़िया शो होते हैं, नाटक, ओपेरा, सब कुछ। मैडम ने खुद तो इसकी सदस्यता नहीं ली, लेकिन हम फिर भी मैडम की सहेलियों के बॉक्स में जाते हैं, एक रात एक, दूसरी रात दूसरी, अक्सर प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के साथ, जो ड्यूक के चचेरे भाई की पत्नी हैं। वह बवेरिया के ड्यूक की बहन हैं। तो अब आपको फिर से ऊपर जाना होगा, है ना?" नौकर ने आगे कहा, जो गुएरमांटेस परिवार से जुड़ा होने के बावजूद, आम तौर पर मालिकों को एक राजनीतिक संपत्ति मानता था, इसी नज़रिए से वह फ्रांस्वा के साथ उतना ही सम्मान से पेश आता था मानो वह भी किसी डचेस की सेवा में हो। "आप स्वस्थ रहें, महोदया।"
"काश, मेरी ये बदकिस्मत टांगें न होतीं! मैदान पर तो मैं आसानी से चल सकती हूँ" ('मैदान पर' का मतलब आंगन या गलियों से था, जहाँ फ्रांस्वा को चलने में कोई आपत्ति नहीं थी, दूसरे

शब्दों में 'समतल सतह पर') "लेकिन ये सीढ़ियाँ मेरी जान ले लेती हैं, धिक्कार है इन्हें। आपका दिन शुभ हो, महोदय, शायद आज शाम फिर मुलाकात हो।"

जब नौकर ने उसे बताया कि ड्यूक के बेटे अक्सर एक शाही उपाधि धारण करते हैं जो उनके पिता की मृत्यु तक उनके पास रहती है, तो वह उससे बातचीत जारी रखने के लिए और भी उत्सुक हो गई। जाहिर है, कुलीनता की संस्कृति, जो इसके विरुद्ध विद्रोह की भावना से मिश्रित और उसके अनुरूप ढली हुई है, फ्रांस की धरती से वंशानुगत रूप से उत्पन्न होकर, उसके लोगों में आज भी बहुत गहराई से समाई हुई है। फ्रांस्वा, जिससे आप नेपोलियन की प्रतिभा या वायरलेस टेलीग्राफी के बारे में बात करें, तो भी उसका ध्यान आकर्षित नहीं होगा, और न ही वह पल भर के लिए भी अपनी गति धीमी करेगी, चाहे वह अंगीठी से राख साफ कर रही हो या मेज सजा रही हो। अगर उसे केवल नामकरण की इन विशिष्टताओं के बारे में बताया जाए, और यह बताया जाए कि ड्यूक डी गुएरमांटेस के छोटे बेटे को आम तौर पर प्रिंस डी'ओलेरॉन कहा जाता है, तो वह तुरंत कह उठेगी: "वाह, यह तो कमाल है!" और चर्च की किसी रंगीन खिड़की को निहारती हुई स्तब्ध खड़ी रह जाएगी।

फ्रांस्वा को प्रिंस डी'एग्रीजेंट के नौकर से भी पता चला, जो डचेस के लिए अक्सर नोट्स लेकर घर आता था और इसी वजह से उसकी दोस्त बन गई थी, कि उसने समाज में मार्किस डी सेंट-लूप और मैडम डी'एम्ब्रेसाक की शादी के बारे में काफी चर्चा सुनी थी, और यह शादी लगभग तय हो चुकी थी।

वह विला, वह ओपेरा-बॉक्स, जिसमें श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने जीवन की धारा प्रवाहित की थी, मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि वे स्थान उनके घर से कम जादुई नहीं थे। गाइज़, पार्मे, गुएरमांटेस-बाविएर के नाम उन सभी संभावित अन्य अवकाश स्थलों को अलग करते थे जहाँ डचेस जाती थीं, उन दैनिक उत्सवों को जो उनके बॉलिंग व्हील के ट्रैक को रिबन की तरह उनके महल से बांधे रखते थे। यदि वे मुझे बताते कि उन छुट्टियों में, उन उत्सवों में, श्रीमती डी गुएरमांटेस का जीवन क्रमानुसार समाहित था, तो वे इस पर कोई और प्रकाश नहीं डालते। उनमें से प्रत्येक ने डचेस के जीवन को एक अलग अर्थ दिया, लेकिन केवल उसके रहस्य को बदलने में सफल हुए, उसके अपने रहस्य को बिना किसी चूक के, जो बस एक आवरण से सुरक्षित, एक घंटी में बंद, पूरी दुनिया के जीवन की लहरों में तैरता रहा। डचेस कार्निवल के

समय भूमध्य सागर के तट पर दोपहर का भोजन कर सकती थीं, लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस के विला में... डी गुइज़ में, पेरिसियन समाज की रानी, अपनी सफेद लिनेन की पोशाक में, अनगिनत राजकुमारियों के बीच, बाकी सभी मेहमानों की तरह एक अतिथि मात्र थी, और इसी कारण वह मुझे और भी अधिक भावुक कर देती है, इस तरह से नए रूप में ढलकर वह और भी अधिक स्वयं बन जाती है, जैसे बैले की कोई स्टार जो एक अद्भुत प्रदर्शन में अपनी सभी साधारण बहनों का स्थान बारी-बारी से लेती है; वह चीनी छाया शो देख सकती थी, लेकिन प्रिंसेस डी पार्म द्वारा दी गई पार्टी में, त्रासदी या ओपेरा सुन सकती थी, लेकिन प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के बॉक्स से।

जैसे ही हम किसी व्यक्ति के शरीर में उसके जीवन की सभी संभावनाओं को समाहित करते हैं, उन लोगों की हमारी यादें जो वह जानता है और जिनसे वह अभी मिला है या जिनसे मिलने जा रहा है, यदि, फ्रांकोइस से यह जानने के बाद कि श्रीमती डी गुएरमांटेस प्रिंसेस डी पार्म के साथ दोपहर के भोजन के लिए पैदल जा रही थीं, मैंने उन्हें दोपहर के आसपास अपने घर से मांस के रंग के साटन के गाउन में निकलते देखा, जिस पर उनका चेहरा उसी रंग का था, जैसे डूबते सूरज के ऊपर उठता हुआ बादल, तो मेरे सामने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सभी सुख थे, जो उस छोटे से दायरे में समाहित थे, जैसे एक सीप में, उसके दो वाल्वों के बीच जो गुलाबी मोती की तरह चमक रहे थे।

मेरे पिता का मंत्रालय में एक मित्र था, ए. जे. मोरो, जो अन्य मोरो लोगों से अलग दिखने के लिए हमेशा अपने नाम के आगे दोनों अक्षरों का पहला अक्षर लगाते थे, जिसके परिणामस्वरूप लोग उन्हें संक्षेप में 'ए.जे.' कहते थे। खैर, किसी न किसी तरह, इस ए. जे. को एक भव्य समारोह की रात ओपेरा-कॉमिक में एक सीट मिल गई, उन्होंने टिकट मेरे पिता को भेज दिया, और चूंकि बर्मा, जिनसे मैं अपनी पहली निराशा के बाद दोबारा नहीं मिल पाया था, फ्रेड्रे का एक अभिनय करने वाली थीं, इसलिए मेरी दादी ने मेरे पिता को वह टिकट मुझे देने के लिए मना लिया।

सच कहूँ तो, मैंने बर्मा को सुनने की इस संभावना को कोई महत्व नहीं दिया, जिसने कुछ साल पहले मुझे इतनी बेचैनी में डाल दिया था। और मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मैं उस चीज़ के प्रति उदासीन हो गया था जिसे मैंने कभी स्वास्थ्य, आराम, हर चीज़ से ऊपर रखा था। ऐसा

नहीं था कि वास्तविकता के उन अनमोल कणों को करीब से देखने की मेरी इच्छा कम हो गई थी, जिनकी एक झलक मेरी कल्पना को धुंधली सी दिखाई देती थी। लेकिन मेरी कल्पना अब उन्हें एक महान अभिनेत्री के शब्दों में नहीं ढाल पाती थी; एल्स्टर की यात्राओं के बाद से, कुछ खास टेपेस्ट्री, कुछ आधुनिक चित्रों में ही मैंने बर्मा के इस अभिनय, इस दुखद कला में कभी जो विश्वास रखा था, उसे साकार किया था; मेरा विश्वास, मेरी इच्छा, अब बर्मा के शब्दों, उनके हाव-भाव की निरंतर पूजा करने के लिए आगे नहीं आती थी; मेरे हृदय में जो उनका प्रतिबिंब था, वह धीरे-धीरे नष्ट हो गया था, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन मिस्र में मृतकों के उन अन्य प्रतिरूपों को निरंतर भोजन देना पड़ता था ताकि उनके मूल स्वरूप शाश्वत जीवन में बने रहें। यह कला एक कमजोर, भद्दी चीज बन गई थी। इसमें अब कोई गहरी आत्मा निवास नहीं करती थी।

उस शाम, जब मैं अपने पिता द्वारा अपने मित्र से प्राप्त टिकट लेकर ओपेरा की भव्य सीढ़ियों पर चढ़ रहा था, तभी मेरी नज़र एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसे मैंने पहले एम. डी चार्लस समझा, क्योंकि उसका हावभाव उन्हीं जैसा था। जब उसने किसी कर्मचारी से कुछ पूछने के लिए अपना सिर घुमाया, तब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ, लेकिन फिर भी मुझे उस अजनबी को उसी वर्ग का मानने में कोई झिझक नहीं हुई, न केवल उसके पहनावे से, बल्कि टिकट लेने वाले व्यक्ति और उसे इंतज़ार करा रहे बॉक्स-ओपनर्स से बात करने के तरीके से भी। क्योंकि, व्यक्तिगत समानताओं के अलावा, उस दौर में कुलीन वर्ग के किसी भी चतुर और धनी व्यक्ति और वित्त या 'बड़े व्यवसाय' की दुनिया के किसी भी चतुर और धनी व्यक्ति के बीच स्पष्ट अंतर था। जहां एक तरफ उनमें से कोई अपने से कमतर व्यक्ति से बात करते समय तीखा और घमंडी लहजा अपनाकर अपनी विशिष्टता साबित करने की कोशिश करता, वहीं दूसरी तरफ वह महान सज्जन, मिलनसार, प्रसन्न और मुस्कुराते हुए, विनम्रता और धैर्य का दिखावा करते हुए, मानो दर्शकों में से एक होने का ढोंग कर रहे हों, और इसे अपने अच्छे संस्कार का विशेषाधिकार मान रहे हों। यह पूरी तरह संभव है कि जब उस समय थिएटर में प्रवेश करने वाले एक से अधिक धनी बैंकर के बेटे ने उन्हें इस प्रकार अपनी सौम्य मुस्कान के पीछे छिपी उस छोटी सी अलग दुनिया की दहलीज को छिपाते हुए देखा, तो वे इस महान सज्जन को महत्वहीन ही समझते, अगर उन्होंने उनमें ऑस्ट्रियाई सम्राट के भतीजे, सैक्सोनी

के राजकुमार, जो उस समय पेरिस में थे, के हाल ही में सचित्र समाचार पत्रों में प्रकाशित चित्र से आश्चर्यजनक समानता न देखी होती। मैं उन्हें गुएरमांटे परिवार का घनिष्ठ मित्र जानता था। जैसे ही मैं परिचारक के पास पहुँचा, मैंने सैक्सोनी के राजकुमार (या उनके हमशक्ल) को मुस्कुराते हुए कहते सुना: "मुझे संख्या नहीं पता; मेरे चचेरे भाई ने मुझे बताया था कि मुझे बस उसका बक्सा माँगना है।"

वह शायद सैक्सोनी के राजकुमार रहे होंगे; संभवतः डचेस डी गुएरमांटेस (जिन्हें, उस स्थिति में, मैं उनकी चचेरी बहन के बक्से में उनके अकल्पनीय जीवन के उन क्षणों में से एक को जीते हुए देख पाता) की ही छवि उनके मन में बन गई थी जब उन्होंने 'मेरी चचेरी बहन जिसने मुझसे कहा था कि मुझे बस उसका बक्सा मांगना है' का जिक्र किया। उनकी वह मुस्कुराती हुई निगाहें, उनके वे सरल शब्द, मेरे हृदय को (किसी भी अमूर्त ध्यान से कहीं अधिक कोमलता से) एक संभावित खुशी और एक अस्पष्ट भेद के भावों से भर रहे थे। वह जो भी थे, परिचारक से यह वाक्य कहकर उन्होंने मेरे रोजमर्रा के जीवन की एक साधारण शाम को एक नई दुनिया में प्रवेश का द्वार खोल दिया; 'बक्सा' शब्द का उल्लेख करने के बाद जिस मार्ग की ओर उन्हें निर्देशित किया गया था और जिस पर वे अब आगे बढ़ रहे थे, वह नम और फफूंदयुक्त था और ऐसा प्रतीत होता था कि वह जलमग्न गुफाओं, जलपरियों के पौराणिक राज्य की ओर जाता है। मेरे सामने शाम की पोशाक पहने एक सज्जन थे जो मुझसे दूर जा रहे थे, लेकिन मैं उनके चारों ओर, मानो किसी दीपक पर लगे बेमेल परावर्तक से खेल रहा था, और कभी भी उन्हें पूरी तरह से अपने वश में करने में सफल नहीं हो पाया, यह विचार उनके मन में बना रहा कि वे सैक्सोनी के राजकुमार हैं और डचेस डी गुएरमांटेस से मिलने जा रहे हैं। और यद्यपि वे अकेले थे, फिर भी यह विचार, जो उनसे परे, अस्पष्ट, विशाल और किसी जादुई लालटेन से पड़ने वाली परछाई की तरह अस्थिर था, मानो उनके आगे-आगे चल रहा था और उनका मार्गदर्शन कर रहा था, मानो कोई देवता हो, जो बाकी मनुष्यों के लिए अदृश्य है और युद्ध के समय यूनानी योद्धा के साथ खड़ा होता है।

मैं अपनी जगह पर बैठ गया, लगातार फ्रेड्रे की एक पंक्ति को याद करने की कोशिश कर रहा था जो मुझे ठीक से याद नहीं आ रही थी। जिस रूप में मैं उसे दोहरा रहा था, उसमें छंदों की सही संख्या नहीं थी, लेकिन चूंकि मैंने उन्हें गिनने का प्रयास नहीं किया, इसलिए उसकी

जटिलता और कविता की एक शास्त्रीय पंक्ति के बीच ऐसा लग रहा था मानो कोई सामान्य माप हो ही नहीं सकता। मुझे आश्चर्य नहीं होता अगर मुझे पता चलता कि उस गंभीर वाक्यांश को सरल बनाने के लिए मुझे उसमें से कम से कम आधा दर्जन अक्षर घटाने होंगे। लेकिन अचानक मुझे वह याद आ गई, एक अमानवीय दुनिया की अपूरणीय कठोरता जादू से गायब हो गई; पंक्ति के अक्षर तुरंत आवश्यक माप में आ गए, जो भी अतिरिक्त था वह हवा के बुलबुले की तरह आसानी से, कुशलता से बह गया जो पानी के किनारे पर फूटने के लिए उठता है। और, आखिरकार, जिस उलझन से मैं जूझ रहा था, वह केवल एक ही छंद की थी।

कुछ ऑर्केस्ट्रा स्टॉल टिकट काउंटर पर बिक्री के लिए रखे गए थे और उन्हें उन लोगों ने खरीद लिया था, जो दिखावे या जिज्ञासावश उन लोगों की शक्ल-सूरत को करीब से देखना चाहते थे जिन्हें शायद दोबारा करीब से देखने का मौका न मिले। और यह वास्तव में उनके वास्तविक सामाजिक जीवन का एक अंश था, जिसे आमतौर पर गुप्त रखा जाता था, जिसे यहाँ सार्वजनिक रूप से देखा जा सकता था, क्योंकि प्रिंसेस डी पार्म ने स्वयं अपने दोस्तों में स्टॉल, बालकनी और बॉक्स में सीटें बाँट दी थीं, जिससे हॉल एक ड्राइंग रूम जैसा हो गया था जहाँ हर कोई अपनी जगह बदलता रहता था, जहाँ भी उसे कोई जानी-पहचानी महिला दिखती, वह वहाँ जाकर बैठ जाता था।

मेरे बगल में कुछ आम लोग बैठे थे, जो नियमित ग्राहकों को नहीं जानते थे और यह दिखाने के लिए उत्सुक थे कि वे उन्हें पहचान सकते हैं। उन्होंने ज़ोर से उनके नाम लिए। उन्होंने आगे कहा कि ये ग्राहक वहाँ ऐसे व्यवहार कर रहे थे जैसे वे अपने ड्राइंग रूम में हों, यानी वे जो कुछ भी चल रहा था उस पर ध्यान नहीं दे रहे थे। जबकि असलियत इसके बिल्कुल विपरीत थी। एक नवोदित प्रतिभावान व्यक्ति, जिसने बर्मा को सुनने के लिए एक स्टॉल लिया था, केवल अपने दस्तानों को गंदा न करने, किसी को परेशान न करने, संयोगवश अपने बगल में बैठे पड़ोसी से दोस्ती करने, और रुक-रुक कर मुस्कुराते हुए उस भगोड़े का पीछा करने के बारे में सोचता है—दर्शकों में मिले अपने एक परिचित व्यक्ति की तिरछी निगाहों से स्पष्ट रूप से अशिष्टता का प्रदर्शन करते हुए, जिससे वह हजारों दुविधाओं के बाद जाकर बात करने का फैसला करता है, ठीक उसी समय जब मंच से तीन हथौड़ों की जोरदार आवाजें, उसके दोस्त तक पहुँचने से पहले ही गूंज उठती हैं, उसे लाल सागर में यहूदियों की तरह भागने पर मजबूर

कर देती हैं, दर्शकों और दर्शकों की उमड़ती लहर के बीच से, जिन्हें उसने उठने के लिए मजबूर किया है और जिनके कपड़े उसके गुजरते समय फाड़ देते हैं, या उनके जूतों पर रौंद देते हैं। दूसरी ओर, यह इसलिए था कि समाज के लोग अपने-अपने बॉक्स में बैठे थे (बालकनी के सामान्य चबूतरे के पीछे, जैसे कि कई छोटे ड्राइंग रूम में, जिनकी चौथी दीवार हटा दी गई थी, या कई छोटे कैफे में, जहाँ कोई भी जलपान के लिए जा सकता था, बिना खुद को सुनहरे फ्रेम वाले दर्पणों या प्रतिष्ठान की नेपोलिटन शैली की लाल मखमली सीटों से भयभीत होने दिए), यह इसलिए था कि उन्होंने गीत कला के इस मंदिर को सहारा देने वाले स्तंभों के सुनहरे शाफ्ट पर अपना उदासीन हाथ रखा था, यह इसलिए था कि वे ताड़ और लॉरेल की शाखाओं को बॉक्स की ओर फैलाए हुए नक्काशीदार आकृतियों द्वारा उन्हें दिए जा रहे भव्य सम्मानों से अप्रभावित रहे, कि केवल उन्हीं के पास नाटक सुनने के लिए स्वतंत्र मन होता, यदि उनके पास मन होता।

पहले तो धुंधली परछाइयों के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, जिनमें अचानक किसी अदृश्य कीमती पत्थर की चमक की तरह, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की आँखों की दीप्ति दिखाई दी, या किसी अंधेरे पृष्ठभूमि पर हेनरी चतुर्थ के पदक की तरह, ड्यूक डी'औमाले का झुका हुआ चेहरा दिखाई दिया, जिनसे एक अदृश्य महिला कह रही थी, "महामहिम, मुझे उनका कोट लेने की अनुमति दें," जिस पर राजकुमार ने उत्तर दिया, "अरे, आइए, आइए! सचमुच, मैडम डी'अम्ब्रेसाक।" उन्होंने इस अस्पष्ट निषेध के बावजूद कोट ले लिया, और इस प्रकार सम्मानित होने पर सभी लोग उनसे ईर्ष्या करने लगे।

लेकिन अन्य कक्षों में, लगभग हर जगह, उन अंधकारमय आवासों में निवास करने वाले श्वेत देवता अपनी छायादार दीवारों के पीछे शरण लेकर अदृश्य हो गए थे। हालाँकि, जैसे-जैसे प्रदर्शन आगे बढ़ा, धीरे-धीरे उनके अस्पष्ट मानवीय रूप, एक-एक करके, उन अंधकारमय आकृतियों से अलग होते गए जिन्हें वे बुन रहे थे, और प्रकाश की ओर बढ़ते हुए, अपने अर्धनग्न शरीरों को प्रकट होने दिया, और ऊपर उठकर, अपने मार्ग की सीमा पर, उस चमकदार, छायादार सतह पर रुक गए, जिस पर उनके उज्ज्वल चेहरे उनके द्वारा फहराए और हल्के से लहराए जा रहे पंखों के झाग के पीछे दिखाई दिए, उनके मोतियों से जड़े जलकुंभी जैसे बालों के नीचे, जिन्हें मानो ज्वार की धारा ने पकड़ लिया और अपने साथ खींच लिया हो; उनके इस

तरफ, ऑर्केस्ट्रा के बैठने की जगह शुरू होती थी, जो मनुष्यों का निवास स्थान था, जो हमेशा उस पारदर्शी, छायादार क्षेत्र से अलग था, जिसकी सीमाओं के रूप में, यहाँ-वहाँ, उसकी भरी हुई सतह पर, जलपरियों की निर्मल, प्रतिबिंबित आँखें दिखाई देती थीं। इसके किनारे पर तह करने वाली सीटों के लिए, स्टॉलों में बैठे राक्षसों के रूप उन आँखों की सतह पर प्रकाशिकी के नियमों का सरल अनुपालन करते हुए और उनके आपतन कोण के अनुसार चित्रित किए गए थे, जैसा कि बाहरी वास्तविकता के उन दो वर्गों के साथ होता है, जिनके प्रति, यह जानते हुए कि उनमें कोई आत्मा नहीं है, चाहे वह कितनी भी प्रारंभिक क्यों न हो, जिसे हमारी अपनी आत्मा के समान माना जा सके, यदि हम मुस्कुराएँ या पहचान की एक झलक दिखाएँ तो हम स्वयं को पागल समझेंगे: अर्थात्, खनिज और वे लोग जिनसे हमारा परिचय नहीं हुआ है। इस सीमा से परे, अपने क्षेत्र की सीमा से पीछे हटते हुए, समुद्र की तेजस्वी पुत्रियाँ हर क्षण चट्टान की दरारों से चिपके दाढ़ी वाले ट्राइटनों की ओर, या किसी जलीय अर्ध-देवता की ओर मुस्कुराती रहती थीं, जिसका सिर एक पॉलिश किया हुआ पत्थर था जिस पर ज्वार ने समुद्री शैवाल की एक चिकनी परत चढ़ा दी थी, और उसकी दृष्टि चट्टानी क्रिस्टल की एक डिस्क थी। वे इन प्राणियों की ओर झुकती थीं, उन्हें मिठाई भेंट करती थीं; कभी-कभी बाढ़ का पानी हट जाता और एक नई नीरीड प्रकट होती, जो देर से, मुस्कुराती हुई, क्षमा मांगती हुई, अंधकारमय गहराइयों से खिलकर खिल उठी होती; फिर, यह दृश्य समाप्त हो जाता, धरती की मधुर ध्वनियों को सुनने की कोई आशा न रहते हुए, जिन्होंने उन्हें सतह पर खींचा था, और एक ही पल में सभी बहनें वापस पानी में डूबकर रात के अंधेरे में गायब हो जातीं। लेकिन इन सभी एकांत स्थानों में से, जिनकी दहलीज पर मनुष्य की रचनाओं को देखने की कोमल इच्छा ने उन जिज्ञासु देवियों को ला खड़ा किया था जो किसी को भी अपने पास नहीं आने देती थीं, सबसे प्रसिद्ध अर्ध-अंधकार का वह घनाकार स्थान था जिसे दुनिया प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के स्टेज बॉक्स के रूप में जानती है।

मानो कोई शक्तिशाली देवी बहुत ऊपर से छोटे देवताओं के खेल-कूद पर शासन करती हो, राजकुमारी जानबूझकर उस डिब्बे में तिरछे रखे सोफे पर थोड़ी पीछे बैठी थी, जो मूंगे की चट्टान की तरह लाल था। उसके बगल में एक बड़ा, चमकदार प्रतिबिंब था, जो शायद एक दर्पण था और ऐसा लग रहा था मानो सूर्य की किरण समुद्र के चमकते क्रिस्टल से होकर गुजर

रही हो, सीधी, साफ, तरल। एक साथ पंख और फूल की तरह, जैसे पानी के नीचे उगने वाले कुछ पौधे हों, एक बड़ा सफेद फूल, पक्षी के पंख की तरह मुलायम, राजकुमारी के माथे से उसके एक गाल पर गिरा, जिसकी वक्रता का वह कोमल, चंचल, प्रेमपूर्ण, जीवंत ढंग से अनुसरण कर रहा था और ऐसा लग रहा था मानो उसे किसी गुलाबी अंडे की तरह किसी शांत चिड़िया के घोंसले की कोमलता में लपेट रहा हो। उसके बालों पर, भौंहों तक पहुँचते हुए और गले तक नीचे की ओर मुड़ते हुए, एक जाल फैला हुआ था जिस पर दक्षिण सागर के किसी किनारे पर इकट्ठी की गई छोटी-छोटी सफेद सीपियाँ मोतियों के साथ बारी-बारी से सजी थीं, मानो समुद्री मोज़ेक लहरों से मुश्किल से उभर रहा हो और हर पल उस अंधेरे में डूब रहा हो जिसकी गहराई में भी राजकुमारी की आँखों की सर्वव्यापी चमक से मानवीय उपस्थिति प्रकट हो रही थी। वह सुंदरता जो उसे शाम की अन्य सभी शानदार बेटियों से कहीं ऊपर रखती थी, पूरी तरह से उसकी गर्दन, कंधों, बाहों और शरीर पर भौतिक रूप से अंकित नहीं थी। बल्कि शरीर की वह अधूरी, सुंदर रेखा ही सटीक आरंभ बिंदु थी, अदृश्य रेखाओं का अनिवार्य केंद्र बिंदु जिसे आँख अनमने ढंग से देखती रह जाती थी, अद्भुत रेखाएँ, जो उस स्त्री के चारों ओर इस तरह जीवंत हो उठती थीं मानो अंधेरे के पर्दे पर एक आदर्श रूप का स्पेक्ट्रम प्रक्षेपित हो रहा हो।

"ये तो प्रिंसेस डी गुएरमांटेस हैं," मेरी पड़ोसी ने अपने बगल में बैठे सज्जन से कहा, और 'प्रिंसेस' शब्द की शुरुआत में लगातार 'पी' लगाकर यह जताने की कोशिश की कि इस तरह की उपाधि बेतुकी है। "उन्होंने मोतियों का खूब इस्तेमाल किया है। मुझे यकीन है, अगर मेरे पास इतने मोती होते, तो मैं उन्हें इस तरह दिखावा नहीं करती; ये बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता, कम से कम मुझे तो नहीं।"

फिर भी, जब उनकी नज़र राजकुमारी पर पड़ी, तो जो लोग यह देखने के लिए इधर-उधर देख रहे थे कि कौन-कौन मौजूद है, उन सभी के दिलों में उनके लिए सौंदर्य का सही सिंहासन उठ खड़ा हुआ। वास्तव में, डचेस डी लक्ज़मबर्ग, श्रीमती डी मोरिएनवाल, श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे और कई अन्य महिलाओं के चेहरों को पहचानने का एकमात्र तरीका था उनकी बड़ी लाल नाक और कटे होंठ, या झुर्रीदार गाल और हल्की मूंछों का मेल। ये विशेषताएं अपने आप में ही ध्यान आकर्षित करने के लिए पर्याप्त थीं, क्योंकि एक लिखित दस्तावेज़ के रूप में मात्र

इनका उपयोग करके एक प्रसिद्ध और प्रभावशाली नाम पढ़ा जा सकता था; साथ ही, ये सामूहिक रूप से यह विचार भी देती थीं कि कुरूपता में भी कुछ कुलीनता होती है, और यह आवश्यक नहीं है कि एक महान महिला का चेहरा, यदि वह विशिष्ट हो, तो सुंदर भी हो। लेकिन कुछ कलाकारों की तरह, जो अपने नाम के अक्षरों के बजाय अपने कैनवास के निचले भाग में एक ऐसी आकृति बनाते हैं जो अपने आप में सुंदर होती है, जैसे तितली, छिपकली या फूल, ठीक उसी तरह राजकुमारी ने अपने बक्से के कोने में एक आकर्षक चेहरे और आकृति की आकृति बनाई थी, जिससे यह प्रदर्शित होता था कि सुंदरता सबसे श्रेष्ठ पहचान हो सकती है; क्योंकि श्रीमती डी गुएरमांटेस-बाविएर की उपस्थिति, जो रंगमंच पर केवल उन्हीं लोगों को लाती थीं जो अन्य समय में उनके घनिष्ठ मंडल का हिस्सा होते थे, अभिजात वर्ग के विशेषज्ञों की दृष्टि में उनके बक्से में प्रस्तुत चित्र की प्रामाणिकता का सर्वोत्तम संभव प्रमाण थी, जो म्यूनिख और पेरिस में स्थित उनके महलों में राजकुमारी के सामान्य निजी जीवन के एक दृश्य का एक प्रकार का स्मरण कराती थी।

हमारी कल्पना किसी खराब हो चुके ऑर्गन की तरह है, जो हमेशा कार्ड पर दिखाए गए सुर से अलग धुन बजाता है। जब भी मैंने प्रिंसेस डी गुएरमांटेस-बाविएर का नाम सुना, सोलहवीं सदी की कुछ उत्कृष्ट कृतियों की याद मेरे दिमाग में गूंजने लगी। अब जब मैंने उन्हें एक मोटे-ताज़े सज्जन को स्वैलोटेल कोट में क्रिस्टलीकृत फल भेंट करते देखा, तो मुझे इस धारणा से तुरंत छुटकारा पाना पड़ा। निश्चित रूप से मैं इस निष्कर्ष से बहुत दूर था कि वह और उनके मेहमान बाकी दर्शकों की तरह महज़ आम इंसान थे। मैं समझ गया कि वे वहाँ जो कुछ भी कर रहे थे, वह सब महज़ एक खेल था, और अपने वास्तविक जीवन की गतिविधियों की प्रस्तावना के रूप में (जिसका महत्वपूर्ण हिस्सा शायद वे यहाँ नहीं बिताते थे), उन्होंने एक अज्ञात अनुष्ठान के पालन में मिठाई देने और अस्वीकार करने का नाटक किया था। यह एक ऐसा हावभाव था जिसका सामान्य महत्व छीन लिया गया था और इसे पहले से ही इस तरह नियंत्रित किया गया था जैसे कोई नर्तकी बारी-बारी से अपने पैर की उंगलियों पर खड़ी होती है और ऊपर उठाए हुए स्कार्फ के चारों ओर चक्कर लगाती है। जहां तक मुझे पता है, शायद जब देवी उन्हें अपनी मिठाई भेंट कर रही थीं, तो उनकी आवाज़ में व्यंग्य का भाव था (क्योंकि मैंने उन्हें मुस्कुराते हुए देखा था): "एक खा लीजिए, है ना?" इससे मुझे क्या फर्क पड़ता था?

मुझे तो मेरिमी या मेलहाक की शैली में, एक देवी द्वारा एक अर्ध-देवता को संबोधित किए गए ऐसे शब्दों में जानबूझकर की गई रूखेपन में एक सुंदर परिष्कार देखना चाहिए था, जो स्वयं उन उदात्त विचारों से अवगत थे जो उन दोनों के मन में थे, निस्संदेह उस क्षण तक जब वे अपने वास्तविक जीवन को फिर से जीना शुरू करेंगे, खेल में शामिल होने के लिए सहमत होकर, उसी रहस्यमय कड़वाहट के साथ उत्तर दे रहे थे: "धन्यवाद; मुझे एक चेरी चाहिए।" और मुझे इस संवाद को उसी उत्सुकता से सुनना चाहिए था जैसे कि ले मारी डे ला डेब्यूटेंट के किसी दृश्य को, जहाँ कविता की अनुपस्थिति, उदात्त विचारों की अनुपस्थिति, ऐसी चीजें जो मेरे लिए इतनी परिचित हैं और जिन्हें, मेरा मानना है कि, मेइल्हाक ने यदि चाहा होता तो आसानी से हज़ार गुना अधिक इसमें शामिल कर सकते थे, मुझे अपने आप में एक परिष्कार, एक पारंपरिक परिष्कार और इसलिए और भी अधिक रहस्यमय और शिक्षाप्रद प्रतीत होती हैं।

"वह मोटा आदमी मार्क्विस डी गनानसे है," मेरे बगल में बैठे व्यक्ति ने एक समझदारी भरे लहजे में कहा, जिसने पीछे वाली पंक्ति में फुसफुसाए गए नाम को ठीक से नहीं सुना था।

मार्क्विस डी पलांससी, जिनका चेहरा उनकी लंबी गर्दन के अंत में नीचे की ओर झुका हुआ था, उनकी गोल उभरी हुई आंखें उनके एक आंख पर लगे चश्मे से चिपकी हुई थीं, पारदर्शी छाया में इत्मीनान से आगे बढ़ रहे थे और ऐसा लग रहा था मानो वे दर्शकों को देख ही नहीं रहे हों, मानो कोई मछली किसी मछलीघर की कांच की दीवार के पीछे उत्सुक निगाहों की भीड़ से बेखबर तैर रही हो। वे बीच-बीच में रुकते, मानो एक आदरणीय, हांफता हुआ स्मारक हों, और दर्शक यह नहीं बता सकते थे कि वे दर्द में थे, सो रहे थे, तैर रहे थे, अंडे देने वाले थे, या केवल सांस ले रहे थे। उनके अलावा किसी और ने मुझमें इतनी ईर्ष्या नहीं जगाई, क्योंकि वे इस डिब्बे से इतने परिचित थे और जिस उदासीनता से उन्होंने राजकुमारी को मिठाई का डिब्बा उनकी ओर बढ़ाने दिया; उसी क्षण, उसने अपनी सुंदर आँखों से उसे एक झलक दी, जो हीरे की तरह चमकती थीं और ऐसे क्षणों में बुद्धि और मित्रता मानो पिघल उठती थीं, जबकि शांत अवस्था में, अपनी विशुद्ध भौतिक सुंदरता, अपनी खनिज चमक में सिमट जाने पर, यदि जरा सी भी परावर्तित रोशनी उन्हें विचलित करती, तो वे अमानवीय क्षैतिज शानदार आग से अंधेरे को प्रज्वलित कर देतीं। लेकिन अब, क्योंकि फ्रेड्रे का वह नाटक जिसमें बर्मा

अभिनय कर रही थी, शुरू होने वाला था, राजकुमारी बॉक्स के सामने आ गई; जिसके बाद, मानो वह स्वयं एक नाट्य प्रस्तुति हो, प्रकाश के उस क्षेत्र में जहाँ से वह गुजरी, मैंने न केवल उसके आभूषणों का रंग बल्कि उनकी सामग्री भी बदलते हुए देखी। और बॉक्स में, जो अब सूखा था, उभरती हुई, अब जलमयी दुनिया का हिस्सा नहीं, राजकुमारी, एक नेरीड न रहकर, सफेद और नीले रंग की पगड़ी में किसी अद्भुत दुखद अभिनेत्री की तरह दिखाई दी, जैसे ज़ैरे या शायद ओरोस्मान की भूमिका के लिए सजी हो; अंततः, जब वह पहली पंक्ति में अपनी जगह पर बैठ गई, तो मैंने देखा कि उसके गालों की गुलाबी आभा को कोमलता से ढकने वाला कोमल हैल्सियन का घोंसला - मुलायम, चमकदार, मखमली, स्वर्ग के एक विशाल पक्षी जैसा था।

लेकिन अब मेरी निगाह प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के बॉक्स से हटकर एक छोटी महिला पर पड़ी, जो भद्दे कपड़े पहने, सादी सी, क्रोध से भरी आँखों के साथ अंदर आई, उसके पीछे दो युवक थे, और वह मुझसे कुछ दूरी पर बैठ गई। आखिरकार पर्दा उठा। मैं इस विचार से दुखी हुए बिना नहीं रह सका कि अब मेरे पुराने स्वभाव का कोई अंश नहीं बचा था, उस समय जब मैं उस असाधारण घटना का कोई भी अंश न चूकने के लिए, जिसे देखने के लिए मैं दुनिया के कोने-कोने तक चला जाता, अपना मन तैयार रखता था, ठीक वैसे ही जैसे खगोलविद अफ्रीका या वेस्ट इंडीज में धूमकेतु या ग्रहण का सटीक अवलोकन करने और उसे दर्ज करने के लिए संवेदनशील प्लेटों को ले जाते हैं; जब मैं इस डर से कांपता था कि कहीं कोई बादल (कलाकार की खराब मनोदशा या दर्शकों में कोई घटना) उस दृश्य को पूरी तीव्रता से प्रस्तुत होने से न रोक दे; अगर मैं उस रंगमंच पर न गया होता, जो उसके लिए एक वेदी की तरह समर्पित था, जहाँ मैं खुद को उसका एक हिस्सा महसूस कर रहा था, भले ही एक सहायक हिस्सा ही सही, तब भी मुझे यह विश्वास नहीं होता कि मैं इसे सबसे उत्तम परिस्थितियों में देख रहा हूँ। उसके द्वारा नियुक्त अधिकारी, जिनके पास सफेद कार्नेशन के फूल थे, फटेहाल कपड़ों में सजी भीड़ से भरे गड्ढे को ढकने वाली गुंबददार बालकनी, उसकी तस्वीर वाले कार्यक्रम बेचने वाली महिलाएं, बाहर चौक में शाहबलूत के पेड़, वे सभी साथी, उन दिनों की मेरी यादों के वे सभी विश्वासपात्र जो मुझे उनसे अविभाज्य लगते थे। फ्रेड्रे, 'घोषणा दृश्य', बर्मा, मेरे लिए उस समय एक तरह का पूर्ण अस्तित्व रखती थी। वर्तमान अनुभवों की दुनिया से

अलग, वे अपने आप में विद्यमान थीं, मुझे उनसे मिलने जाना था, मुझे उनमें जितना हो सके उतना प्रवेश करना था, और अगर मैं अपनी आँखों और आत्मा को पूरी तरह से खोल भी दूं, तब भी मैं उनमें से बहुत कम ही आत्मसात कर पाऊंगा। लेकिन मुझे जीवन कितना सुखद लग रहा था: मैं जिस रूप में जी रहा था, उसकी तुच्छता का कोई महत्व नहीं था, ठीक वैसे ही जैसे कपड़े पहनने और बाहर जाने के लिए तैयार होने में लगने वाला समय। क्योंकि इन सबसे परे, एक पूर्ण रूप में, सुंदर और जिसे पाना कठिन था, और जिसे पूरी तरह से पाना असंभव था, वो ठोस वास्तविकताएँ विद्यमान थीं - फ्रेड्रे और बर्मा का अपने किरदार को निभाने का तरीका। नाट्य कला में पूर्णता के इन सपनों में डूबा हुआ (जिसकी एक प्रबल खुराक उस समय मेरे मन का विश्लेषण करने वाला कोई भी व्यक्ति दिन या रात के किसी भी क्षण तैयार कर सकता था), मैं एक बैटरी की तरह था जो बिजली जमा करती रहती है। और एक समय आ गया था जब, बीमार होने के बावजूद, अगर मुझे यह विश्वास भी होता कि मैं इससे मर जाऊँगा, तब भी मैं बर्मा को सुनने के लिए विवश होता। लेकिन अब, दूर से देखने पर किसी पहाड़ी की तरह जो नीले आकाश के एक टुकड़े जैसी लगती है, लेकिन पास आने पर हमारी दृष्टि के सामान्य दायरे में लौट आती है, यह सब कुछ निरपेक्षता की दुनिया से निकलकर अन्य चीजों के समान ही रह गया था, जिसका मुझे संज्ञान इसलिए हुआ क्योंकि मैं वहाँ मौजूद था। वहाँ मौजूद लोग उन्हीं लोगों के समान थे जिन्हें मैं जानता था, और वे फ्रेड्रे की इन पंक्तियों को यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से बोलने का प्रयास कर रहे थे, जो स्वयं अब एक उदात्त और विशिष्ट सार नहीं थीं, जो बाकी सब चीजों से अलग हों, बल्कि वे केवल कमोबेश प्रभावी पंक्तियाँ थीं जो फ्रांसीसी कविता के विशाल भंडार में वापस समा जाने के लिए तैयार थीं, जिसका वे मात्र एक हिस्सा थीं। मुझे एक ऐसी निराशा का अनुभव हुआ जो और भी गहरी थी क्योंकि यदि मेरी दृढ़ और सक्रिय इच्छा का लक्ष्य अब अस्तित्व में नहीं था, तो दूसरी ओर, एक निरंतर स्वप्न में लीन रहने की वही प्रवृत्तियाँ, जो वर्ष-दर-वर्ष बदलती रहती थीं लेकिन मुझे हमेशा खतरे की परवाह किए बिना अचानक आवेगों की ओर ले जाती थीं, अभी भी बनी हुई थीं। जिस दिन मैं अपनी बीमारी के बिस्तर से उठा और किसी देहाती घर में एल्स्टिर की कोई पेंटिंग या मध्ययुगीन टेपेस्ट्री देखने के लिए निकला, वह दिन उस दिन जैसा ही था जब मुझे वेनिस के लिए निकलना चाहिए था, या जब मैं बर्मा को सुनने गया था, या बालबेक के लिए

निकला था। मुझे निकलने से पहले ही यह आभास हो गया था कि मेरे इस बलिदान का तात्कालिक लक्ष्य कुछ समय बाद मुझे उदासीन कर देगा, और तब मैं उस जगह से बिना रुके ही गुजर जाऊंगा, उस पेंटिंग या टेपेस्ट्री को देखे बिना, जिसके लिए मैंने इस समय इतनी रातों की नींद हराम की थी, इतने घंटों का दर्द सहा था। मैंने उसके विषय की अस्थिरता में अपने प्रयास की व्यर्थता और साथ ही उसकी विशालता को देखा, जिसे मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था, ठीक वैसे ही जैसे किसी न्यूरोस्टेनिक रोगी की थकावट को हम यह बताकर और बढ़ा देते हैं कि वह थका हुआ है। इस बीच, मेरे विचारों ने उन सभी चीजों को एक विशिष्टता प्रदान की जिनका उनसे कोई संबंध था। और यहाँ तक कि मेरी सबसे कामुक इच्छाओं में भी, जो हमेशा एक निश्चित दिशा में आकर्षित होती थीं, एक ही सपने पर केंद्रित होती थीं, मैं उनके प्राथमिक मकसद के रूप में एक विचार को पहचान सकता था, एक ऐसा विचार जिसके लिए मैं अपना जीवन न्योछावर कर देता, जिसके सबसे भीतरी हिस्से में, जैसा कि मेरे दिवास्वप्नों में होता था जब मैं कॉम्ब्रे के बगीचे में पूरी दोपहर बैठकर पढ़ता था, पूर्णता का विचार निहित था।
अब मुझे अरिसी, इस्मेने और हिप्पोलिटे के भाव-भंगिमाओं और बोलने के तरीके में दिखाई देने वाले स्नेह या क्रोध के जानबूझकर किए गए भावों के प्रति वैसी उदारता नहीं रही, जैसी पहले थी। ऐसा नहीं था कि कलाकार—वैसे तो वे वही थे—अब भी उसी बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयास से अपनी आवाज़ में कभी कोमल स्वर, कभी सोची-समझी अस्पष्टता, कभी अपने हाव-भाव में दुखद गहराई, कभी याचनापूर्ण नम्रता लाने की कोशिश नहीं कर रहे थे। उनके स्वर-लहरें आवाज़ को कह रही थीं: "कोमल हो जाओ, बुलबुल की तरह गाओ, दुलार करो और प्रेम जताओ"; या फिर, "अब क्रोधित हो जाओ," और फिर वे उस पर टूट पड़ते, अपने उन्मादी आवेग में उसे अपने साथ ले जाने की कोशिश करते। लेकिन यह विद्रोही, उनकी शब्दावली से स्वतंत्र, अपनी भौतिक कमियों या आकर्षणों, अपनी रोजमर्रा की अशिष्टता या बनावट के साथ अपरिवर्तनीय रूप से उनकी स्वाभाविक आवाज बनी रही, और इस प्रकार ध्वनिक या सामाजिक घटनाओं का एक ऐसा योग प्रस्तुत किया जिसे उन पंक्तियों में निहित भावना, जिन्हें वे दोहरा रहे थे, बदलने में असमर्थ थी।
इसी प्रकार खिलाड़ियों के हावभाव उनकी भुजाओं, उनके वस्त्रों से कह रहे थे: "शानदार बनो।" लेकिन इन सभी अवज्ञाकारी अंगों ने कंधे और कोहनी के बीच एक ऐसी बाइसेप्स को

प्रदर्शित होने दिया जो अपनी भूमिका से बेखबर थी; वे रोजमर्रा की जिंदगी की तुच्छता को व्यक्त करते रहे और रेसिनियन अर्थ की सूक्ष्म बारीकियों के बजाय, मात्र मांसपेशियों के जुड़ाव को प्रमुखता देते रहे; और उनके द्वारा थामे गए वस्त्र ऊर्ध्वाधर रेखाओं के साथ वापस गिर गए, जिसमें गिरते हुए शरीरों को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियम को केवल एक नीरस वस्त्र लचीलेपन द्वारा चुनौती दी गई थी। इस बिंदु पर मेरे पास बैठी छोटी महिला ने कहा:

"बिल्कुल नहीं! क्या आपने कभी ऐसा पहनावा देखा है? वह बहुत बूढ़ी है; वह यह भूमिका नहीं निभा सकती; उसे तो बहुत पहले ही सेवानिवृत्त हो जाना चाहिए था।"

पड़ोसियों के तीखे विरोध के बीच, उसके साथ मौजूद दोनों युवक उसे चुप कराने में कामयाब हो गए और अब उसका गुस्सा केवल उसकी आँखों में ही झलक रहा था। यह गुस्सा सफलता और प्रसिद्धि की चाहत से ही भड़क सकता था, क्योंकि बर्मा, जिसने बहुत पैसा कमाया था, कर्ज में डूबी हुई थी। वह हमेशा व्यावसायिक या सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल नहीं हो पाती थी, इसलिए पेरिस की हर गली में उसके दूत माफी माँगते फिरते थे। होटलों में पहले से ही कमरे बुक करवाए होते थे, जिनमें वह कभी नहीं ठहरती थी, अपने कुत्तों को नहलाने के लिए ढेरों इत्र का इस्तेमाल करती थी, अपने सभी प्रबंधकों के साथ अनुबंध तोड़ने पर भारी जुर्माना लगाती थी। अगर और कोई बड़ा खर्च न होता और क्लियोपेट्रा जितनी फिजूलखर्ची न होती, तो वह टेलीग्राम और नौकरी दिलाने वालों पर प्रांतों और राज्यों को लुटाने का भी इंतजाम कर लेती। लेकिन वह छोटी सी महिला एक अभिनेत्री थी जिसने कभी सफलता का स्वाद नहीं चखा था, और उसने बर्मा से जानलेवा नफरत करने की कसम खाई थी। बर्मा अभी-अभी मंच पर आई थी। और फिर—अरे वाह! चमत्कार—ठीक वैसे ही जैसे वो पाठ जिन्हें सीखने के लिए हमने रातोंरात व्यर्थ परिश्रम किया और अगली सुबह जागने पर वो हमें वैसे ही, कंठस्थ, याद हो गए, मिलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारे मृत मित्रों के वो चेहरे जिन्हें हमारी स्मृति के भावुक प्रयास बिना पुनः प्राप्त किए ही याद करने की कोशिश करते हैं, और जो, जब हम उनके बारे में सोचना बंद कर देते हैं, तब भी हमारी आँखों के सामने वैसे ही होते हैं जैसे वे जीवन में थे—बर्मा की प्रतिभा, जो मुझसे तब दूर रही जब मैंने उसके मूल गुण को पाने के लिए इतनी लालसा से प्रयास किया था, अब, विस्मृति के इन वर्षों के बाद, उदासीनता के इस क्षण में,

प्रत्यक्ष रूप से देखी गई किसी वस्तु की पूरी शक्ति के साथ, मेरी प्रशंसा पर हावी हो गई। पहले, प्रतिभा को अलग करने के अपने प्रयासों में, मैंने जो सुना, उसमें से एक प्रकार से उस भूमिका को ही अलग कर दिया, जो फ्रेड्रे के रूप में अभिनय करने वाली सभी अभिनेत्रियों में समान थी, जिसका मैंने स्वयं पहले से अध्ययन किया था ताकि मैं उसे अलग कर सकूँ, और बचे हुए अंश में केवल श्रीमती बर्मा की प्रतिभा को ही ग्रहण कर सकूँ। लेकिन जिस प्रतिभा को मैं वाद्य यंत्र से इतर खोज रहा था, वह उससे अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई थी। एक महान संगीतकार के मामले में भी ऐसा ही होता है (ऐसा लगता है कि विंटेइल के साथ भी ऐसा ही था जब वे पियानो बजाते थे), उनका वादन इतना निपुण होता है कि यह कहना भी मुश्किल हो जाता है कि कलाकार वास्तव में पियानोवादक है या नहीं, क्योंकि (मांसपेशियों के बल के उस तंत्र को हटाकर, जो कहीं-कहीं शानदार प्रभावों से परिपूर्ण होता है, स्वरों की उस बौछार को हटाकर जिसमें कम से कम वह श्रोता जो पूरी तरह से नहीं जानता कि वह कहाँ है, प्रतिभा को उसके भौतिक, मूर्त वस्तुनिष्ठता में देख सकता है) उनका वादन इतना पारदर्शी, इतना भावपूर्ण हो जाता है कि वे स्वयं को नहीं देख पाते और वे अब एक महान कलाकृति पर खुलने वाली खिड़की मात्र रह जाते हैं। अरीसी, इस्मेने या हिप्पोलिटे की आवाज़ और नकल को एक राजसी या नाजुक सीमा की तरह घेरने वाले इरादों को मैं पहचान सका था, लेकिन फ्रेड्रे ने उन्हें अपने भीतर समाहित कर लिया था, और मेरा मन उसके शब्दों और हाव-भाव से उन खजानों, उन प्रभावों को नहीं निकाल पाया, जिनका कोई संकेत नहीं उभरता था, क्योंकि वे पूरी तरह से समाहित हो गए थे। बर्मा की आवाज़, जिसमें मन के लिए अपघटित होने वाले निर्जीव पदार्थ का एक भी अणु अविघटित नहीं रहा, अपने चारों ओर उन आँसुओं के अतिप्रवाह का कोई संकेत नहीं देती थी, जिन्हें महसूस किया जा सकता था, क्योंकि वे अरीसी या इस्मेने की संगमरमर जैसी आवाज़ पर रिसते हुए, अपने भीतर समाहित नहीं कर पाए थे, बल्कि एक उस्ताद वायलिन वादक के वाद्य यंत्र की तरह, उसकी प्रत्येक छोटी से छोटी कोशिका में एक उत्कृष्ट पूर्णता तक पहुँच गए थे, जिसके संगीत की मधुर ध्वनि की प्रशंसा करने का तात्पर्य किसी शारीरिक विशेषता की नहीं, बल्कि आत्मा की श्रेष्ठता की प्रशंसा करना है; और, जैसे शास्त्रीय परिदृश्य में जहाँ एक लुप्त अप्सरा के स्थान पर एक निर्जीव जलप्रपात है, एक स्पष्ट और ठोस इरादा एक विशेष प्रकार के स्वर में परिवर्तित हो गया था, विचित्र रूप

से, उपयुक्त रूप से, शीतलता से निर्मल। बर्मा की भुजाएँ, जिन्हें स्वयं रेखाएँ, उसी गतिशील बल से, जिसने शब्दों को उसके होठों से निकाला, मानो पानी के तेज बहाव से विचलित पत्तों की तरह उसके सीने पर उठा रही थीं; मंच पर उसका हावभाव, जिसे उसने धीरे-धीरे विकसित किया था, जिसे उसे और भी संशोधित करना था, और जो उन तर्कों पर आधारित था जिनकी गहराई उसके साथी अभिनेताओं के हावभाव में देखी जा सकती थी, उनसे भिन्न थी, बल्कि उन तर्कों पर आधारित थी जिन्होंने अपना मूल विचार खो दिया था, और एक प्रकार की चमक में विलीन हो गए थे जिसमें वे नायिका के चारों ओर स्पंदित होते हुए समृद्ध और जटिल तत्वों को भेजते थे, लेकिन जिन्हें मंत्रमुग्ध दर्शक एक कलात्मक विजय के रूप में नहीं बल्कि एक प्राकृतिक उपहार के रूप में लेता था; वे सफेद घूंघट, जो नाजुक और चिपके हुए से प्रतीत होते थे, किसी जीवित पदार्थ के बने हुए थे और मानो किसी पीड़ित, आधे मूर्तिपूजक, आधे जैनसेनिस्ट द्वारा बुने गए हों, जिसके चारों ओर वे एक नाजुक, सिकुड़ते हुए प्यूपा की तरह कसकर लिपट जाते थे; ये सब, आवाज, हावभाव, इशारे, आवरण, एक विचार के इस मूर्त रूप के चारों ओर, जो कि कविता की एक पंक्ति है (एक ऐसा मूर्त रूप जो हमारे मानव शरीरों के विपरीत, आत्मा को किसी अपारदर्शी पर्दे से नहीं ढकता जो हमें उसे देखने से रोकता है, बल्कि एक शुद्ध, जीवंत वस्त्र से ढकता है जिसके माध्यम से आत्मा विलीन हो जाती है और हम उसे खोज लेते हैं), अतिरिक्त आवरणों से अधिक कुछ नहीं थे जो छिपाने के बजाय उस आत्मा को और अधिक वैभव में प्रकट करते थे जिसने उन्हें आत्मसात कर लिया था और उनके माध्यम से स्वयं को फैला दिया था, विभिन्न पदार्थों की परतों से अधिक, जो पारभासी हो गई हैं, जिनका अंतर्वेशन केवल उनमें से गुजरने वाली कैद, केंद्रीय किरण के समृद्ध अपवर्तन का कारण बनता है, और उस अग्नि से शुद्ध पदार्थ को अधिक विस्तृत, अधिक मूल्यवान और अधिक सुंदर बनाता है जिसमें इसे समाहित किया गया है। इस प्रकार, रेसीन के कार्य के चारों ओर बर्मा की व्याख्या एक दूसरा कार्य थी, जो प्रतिभा की सांस से भी जीवंत थी।

सच कहूँ तो, मेरा अपना अनुभव, पिछली बार की तुलना में ज़्यादा सुखद होते हुए भी, वास्तव में कुछ अलग नहीं था। बस, अब मैं इसे नाट्य प्रतिभा की पूर्व-स्थापित, अमूर्त और झूठी धारणा की कसौटी पर नहीं परख रहा था, और अब मैं समझ गया था कि नाट्य प्रतिभा वास्तव में यही है। मुझे अभी-अभी यह बात समझ में आई थी कि अगर मुझे बर्मा के बारे में पहली बार

सुनकर कोई आनंद नहीं मिला, तो इसका कारण यह था कि, ठीक वैसे ही जैसे पहले जब मैं चैंप्स-एलिसी में गिल्बर्ट से मिलता था, मैं उसके पास बहुत प्रबल इच्छा लेकर गया था। मेरी दोनों निराशाओं के बीच शायद न केवल यह समानता थी, बल्कि एक और भी गहरी समानता थी। किसी विशिष्ट व्यक्तित्व वाले व्यक्ति या कृति (या उसकी प्रस्तुति) से हमें मिलने वाला प्रभाव उस व्यक्ति या कृति के लिए विशिष्ट होता है। हम इसमें 'सौंदर्य', 'शैली की व्यापकता', 'करुणा' आदि के विचार लेकर आए हैं, जिन्हें हम, बेहतर विकल्प न मिलने पर, किसी 'सही' चेहरे या प्रतिभा के सामान्य प्रदर्शन में खोजने का भ्रम पाल सकते थे। लेकिन हमारी आलोचनात्मक भावना के सामने एक ऐसे रूप की निरंतर चुनौती है जिसका कोई बौद्धिक समकक्ष उसके पास नहीं है, जिसमें उसे अज्ञात तत्व को खोजना और अलग करना होगा। उसे एक तीखी आवाज़ सुनाई देती है, एक अजीबोगरीब प्रश्नवाचक स्वर। वह स्वयं से पूछती है: "क्या यह अच्छा है? क्या जो मैं अभी महसूस कर रहा हूँ वह प्रशंसा है? क्या यह रंगों की समृद्धि, बड़प्पन, शक्ति है?" और जो उत्तर उसे मिलता है वह फिर से एक तीखी आवाज़ है, एक विचित्र प्रश्नवाचक स्वर, एक ऐसे व्यक्ति द्वारा उत्पन्न निरंकुश प्रभाव जिसे हम नहीं जानते, पूरी तरह से भौतिक, जिसमें 'व्याख्या की व्यापकता' के लिए कोई जगह नहीं बची है। और इसी कारण से वास्तव में सुंदर रचनाएँ, यदि हम उन्हें ईमानदारी से सुनें, तो हमें सबसे अधिक निराश करती हैं, क्योंकि हमारे विचारों के भंडार में कोई भी ऐसा विचार नहीं है जो किसी व्यक्तिगत प्रभाव से मेल खाता हो।

यही बात बर्मा के अभिनय ने मुझे दिखाई। यही तो बड़प्पन और शब्द-चयन की बुद्धिमत्ता का अर्थ था। अब मैं एक व्यापक, काव्यात्मक, सशक्त व्याख्या के महत्व को समझ सका, या यूँ कहें कि ये विशेषण परंपरागत रूप से इसी के लिए प्रयोग किए जाते थे, लेकिन ठीक वैसे ही जैसे हम मंगल, शुक्र, शनि जैसे ग्रहों को नाम देते हैं जिनका शास्त्रीय पौराणिक कथाओं में कोई स्थान नहीं है। हम एक दुनिया में महसूस करते हैं, दूसरी दुनिया में सोचते हैं, दूसरी दुनिया में चीजों को नाम देते हैं; इन दोनों के बीच हम एक निश्चित संबंध स्थापित कर सकते हैं, लेकिन अंतर को पाट नहीं सकते। यह अंतर, यह कमी, मुझे उस दोपहर को पार करनी पड़ी जब मैं पहली बार बर्मा को सुनने गया था, हर शब्द को ध्यान से सुनने के बाद, मुझे 'व्याख्या के बड़प्पन' और 'मौलिकता' के अपने विचारों को जोड़ने में कुछ कठिनाई हुई थी, और एक क्षण

की अचेतनता के बाद ही मैंने तालियाँ बजाईं, मानो मेरी तालियाँ मेरे वास्तविक अनुभव से नहीं बल्कि मेरे पूर्वकल्पित विचारों से जुड़ी थीं, उस आनंद से जो मुझे खुद से यह कहते हुए मिला: "आखिरकार मैं बर्मा को सुन रहा हूँ।" और एक व्यक्ति या कलाकृति, जो अपने आप में विशिष्ट है, और सौंदर्य की अवधारणा के बीच जो अंतर होता है, वही अंतर उनके द्वारा हमारे मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं और प्रेम या प्रशंसा की भावना के बीच भी होता है। इसीलिए हम उन्हें पहचान नहीं पाते। मुझे बर्मा को सुनने में कोई आनंद नहीं मिला (ठीक वैसे ही जैसे पहले गिलबर्ट को देखने में नहीं मिला था)। मैंने मन ही मन कहा था: "ठीक है, मुझे इसमें कोई प्रशंसा नहीं है।" लेकिन तब मैं केवल बर्मा के अभिनय के रहस्य को समझने के बारे में सोच रहा था, मैं केवल उसी में लीन था, मैं अपने मन को यथासंभव खोलने की कोशिश कर रहा था ताकि उनके अभिनय में जो कुछ भी समाहित है, उसे ग्रहण कर सकूँ। अब मुझे समझ आया कि यह सब प्रशंसा के सिवा कुछ नहीं था।

क्या यह प्रतिभा, जिसका बर्मा द्वारा निभाया गया किरदार मात्र एक खुलासा था, वास्तव में केवल रेसीन की प्रतिभा थी और कुछ नहीं?

पहले तो मुझे ऐसा ही लगा। लेकिन जल्द ही मेरा भ्रम टूट गया जब फ्रेड्रे के नाटक का पर्दा गिरा और दर्शकों ने उत्साहपूर्वक तालियाँ बजाईं। इस दौरान, क्रोधित अभिनेत्री ने अपने छोटे से शरीर को सीधा करते हुए, अपनी सीट पर एक तरफ मुड़कर, चेहरे की मांसपेशियों को कस लिया और अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया, यह जताने के लिए कि वह दूसरों की तालियों में शामिल नहीं हो रही है, और अपने उस विरोध को और अधिक स्पष्ट करने के लिए जो उसे सनसनीखेज लग रहा था, हालांकि किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद जो प्रस्तुति हुई, वह उन नवीनताओं में से एक थी, जिनके बारे में मैंने एक समय सोचा था कि, चूंकि वे प्रसिद्ध नहीं थीं, इसलिए वे अनिवार्य रूप से तुच्छ और सामान्य उपयोग की नहीं होंगी, क्योंकि उनका उस समय चल रहे प्रदर्शन के बाहर कोई अस्तित्व नहीं था। लेकिन मुझे उनके साथ वैसी निराशा नहीं हुई जैसी किसी उत्कृष्ट कृति के साथ होती है, जब मंच की रोशनी की चौड़ाई और प्रदर्शन की लंबाई से अधिक स्थान या समय नहीं मिलता, जो उसे उस अवसर के लिए लिखे गए किसी नाटक की तरह प्रभावी ढंग से समाप्त कर देता है। इसके अलावा, हर उस नए अंश पर, जो मुझे लगता था कि दर्शकों को भा गया है और एक दिन प्रसिद्ध होगा,

अतीत में उसे मिली प्रसिद्धि के स्थान पर मैं भविष्य में मिलने वाली प्रसिद्धि को जोड़ देता था। यह एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया थी जो किसी उत्कृष्ट कृति की कल्पना करने की प्रक्रिया के विपरीत थी, जब उसका पहला प्रदर्शन असंभव सा लगता था। उस समय यह सोचना भी असंभव था कि एक ऐसा शीर्षक जिसे पहले कभी किसी ने नहीं सुना हो, एक दिन लेखक की अन्य रचनाओं के साथ उसी मधुर प्रकाश में नहाया हुआ स्थान पाएगा। और यह भूमिका एक दिन फ्रेड्रे के बाद उनकी सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों की सूची में शामिल हो जाएगी। ऐसा नहीं है कि इसमें साहित्यिक गुण बिल्कुल नहीं थे। लेकिन बर्मा दोनों भूमिकाओं में समान रूप से उत्कृष्ट थीं। तब मुझे अहसास हुआ कि नाटककार का काम अभिनेत्री के लिए महज सामग्री मात्र था, जिसकी प्रकृति तुलनात्मक रूप से महत्वहीन थी, ताकि वह अपनी व्याख्या की उत्कृष्ट कृति का निर्माण कर सके। ठीक वैसे ही जैसे बालबेक में मिले महान चित्रकार एल्स्टिर ने एक साधारण से स्कूल भवन और एक गिरजाघर, जो अपने आप में एक कलाकृति थी, से दो समान रूप से उत्कृष्ट चित्रों की प्रेरणा पाई थी। और जैसे चित्रकार घरों, गाड़ियों, लोगों को प्रकाश के एक व्यापक प्रभाव में इस तरह विलीन कर देता है कि वे सब एक समान दिखने लगते हैं, वैसे ही बर्मा ने भय या कोमलता की विशाल चादरें उन शब्दों पर फैला दीं जो एक ही साँचे में ढले हुए थे, एक ही स्तर पर उतारे या उठाए गए थे, जिन्हें एक कम कुशल कलाकार सावधानीपूर्वक एक-दूसरे से अलग कर देता। निस्संदेह उनमें से प्रत्येक का अपना एक भाव था, और बर्मा की भाषा शैली ने कविता की लय को समझने में कोई बाधा नहीं डाली। क्या यह व्यवस्थित जटिलता और सौंदर्य का पहला तत्व नहीं है, जब किसी तुकबंदी को सुनकर, यानी ऐसी कोई चीज़ जो पिछली तुकबंदी से मिलती-जुलती और भिन्न दोनों हो, जो उससे प्रेरित हो, लेकिन एक नए विचार की विविधता प्रस्तुत करती हो, तो व्यक्ति को दो प्रणालियों के एक-दूसरे पर आरोहण का अहसास होता है, एक बौद्धिक, दूसरी छंदबद्ध? लेकिन साथ ही, बर्मा ने अपने शब्दों, अपनी पंक्तियों, यहाँ तक कि अपने पूरे भाषणों को भी ध्वनि के विशाल सागरों में प्रवाहित कर दिया, जिनके किनारों पर उन्हें रुकते, विच्छेदित होते देखना आनंददायक था; इसी प्रकार एक कवि तुकबंदी बिंदु पर उस शब्द को क्षण भर के लिए विराम देने में आनंद लेता है जो फूटने वाला होता है, और एक संगीतकार अपने गीत के विभिन्न शब्दों को एक ही लय में विलीन करने में आनंद लेता है जो उनका विरोध करती है, उन्हें पकड़ती है और

नियंत्रित करती है। इस प्रकार, आधुनिक नाटककार के गद्य वाक्यों में, और रासीन बर्मा की कविता में, उन्होंने शोक, बड़प्पन और जुनून की उन विशाल छवियों को समाहित करने में कामयाबी हासिल की, जो उनकी अपनी व्यक्तिगत कला की उत्कृष्ट कृतियाँ थीं, और जिनमें उन्हें पहचाना जा सकता था, जैसे कि विभिन्न व्यक्तियों के उनके द्वारा बनाए गए चित्रों में, हम एक चित्रकार को पहचानते हैं।

पहले की तरह अब मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि मैं बरमा के हाव-भाव को कैद कर सकूँ और अमर कर सकूँ, उस सूक्ष्म रंग प्रभाव को जो क्षण भर के लिए प्रकाश की किरण में प्रकट होता था और फिर तुरंत गायब हो जाता था, न ही उसे एक ही पंक्ति को सौ बार दोहराने के लिए मजबूर कर सकूँ। मुझे एहसास हुआ कि मेरी मूल इच्छा कवि, अभिनेत्री, और उनके प्रस्तुतियों की देखरेख करने वाले महान सजावटी कलाकार के इरादों से कहीं अधिक कठिन थी, और वह आकर्षण जो बोलते समय एक पंक्ति पर तैरता था, वे अस्थिर मुद्राएँ जो लगातार एक से दूसरी में बदलती रहती थीं, वे क्रमिक चित्र क्षणिक परिणाम थे, क्षणिक वस्तु थे, नाट्य कला द्वारा रचित वह बदलती हुई उत्कृष्ट कृति थी जो एक अति-भावुक श्रोता द्वारा इसे हमेशा के लिए स्थिर करने के प्रयास से नष्ट हो जाएगी। मैंने किसी और दिन वापस आकर बरमा को फिर से सुनने का संकल्प भी नहीं लिया। मैं उससे संतुष्ट था; जब मैं गिलबर्ट या बर्मा, दोनों में से किसी एक की इतनी तीव्र प्रशंसा करता था कि मुझे उनसे निराशा न हो, तो मैं कल के अनुभव के बारे में पहले से ही अनुमान लगा लेता था, उस आनंद के बारे में जो मुझे कल के अनुभव से नहीं मिला था। अब जो आनंद मुझे महसूस होने लगा था, उसका विश्लेषण करने की कोशिश किए बिना, जिसे शायद मैं किसी अधिक उपयोगी काम में लगा सकता था, मैंने अपने आप से कहा, जैसे पुराने दिनों में मैं अपने किसी सहपाठी से कहता था: "निश्चित रूप से, मैं बर्मा को पहले स्थान पर रखता हूँ!" मन में एक उलझन भी थी कि बर्मा की प्रतिभा शायद मेरी इस पसंद की पुष्टि या उन्हें 'पहला' स्थान देने से सही ढंग से व्यक्त नहीं हो रही थी, चाहे इससे मुझे कितना भी सुकून क्यों न मिले।

जैसे ही इस दूसरे नाटक का पर्दा उठ रहा था, मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के बॉक्स की ओर देखा। राजकुमारी एक ऐसी हरकत कर रही थीं जिससे एक मनमोहक रेखा का जन्म हुआ जिसे मेरा मन अनंत तक खोजता रहा—उन्होंने अपना सिर बॉक्स के पीछे की ओर घुमाया;

उनके दल के सभी सदस्य खड़े थे, और पीछे की ओर मुड़ रहे थे, और इस प्रकार बनी दोहरी बाड़ के बीच, पूरे आत्मविश्वास और देवी जैसी भव्यता के साथ, लेकिन एक अजीब विनम्रता के साथ, जो इतनी देर से आने के कारण, जिससे बाकी सभी लोग प्रदर्शन के बीच में उठ गए थे, उनके सफेद मलमल के वस्त्रों में घुलमिल गई थी। ठीक उसी तरह जैसे सादगी, शर्म और उलझन का एक चतुराई से मिश्रित भाव उनकी विजयी मुस्कान को संयमित कर रहा था, डचेस डी गुएरमांटेस, जो उस समय बॉक्स में प्रवेश कर चुकी थीं, अपने चचेरे भाई की ओर आईं, पहली पंक्ति में बैठे सुनहरे बालों वाले एक युवक को गहरा प्रणाम किया, और फिर गुफा के भीतरी हिस्सों में तैर रहे उभयचर राक्षसों की ओर मुड़कर, जॉकी क्लब के इन अर्ध-देवताओं को - जो उस समय, और उनमें विशेष रूप से एम. डी पलांससी, वे लोग थे जिनके जैसा मैं सबसे अधिक होना चाहती थी - एक पुराने और घनिष्ठ मित्र की तरह परिचित 'शुभ संध्या' कहा, जो उनके साथ उनके दैनिक संबंधों का संकेत था। पिछले पंद्रह वर्षों के दौरान। मैंने रहस्य को महसूस किया, लेकिन उस मुस्कुराती हुई निगाह की पहेली को सुलझा नहीं सका जो उसने अपने दोस्तों को संबोधित की थी, उस नीले प्रकाश में जो चमक रहा था जब उसने अपना हाथ एक के बाद एक दूसरे को सौंपा, एक ऐसी निगाह जिसे अगर मैं उसके प्रिज्म को तोड़कर, उसके क्रिस्टलीकरण का विश्लेषण कर पाता, तो शायद मुझे उस अज्ञात जीवन रूप का सार प्रकट हो जाता जो उस क्षण उसमें प्रकट हुआ था। ड्यूक डी गुएरमांटेस अपनी पत्नी के पीछे-पीछे चल रहे थे, उनके एककोले की चमक, उनके दांतों की दमक, उनके कार्नेशन या उनकी प्लीटेड कमीज के सामने की सफेदी बिखर रही थी, ताकि उनकी रोशनी, उनकी भौहों, होंठों और कोट का अंधेरा उनके लिए जगह बना सके; अपने फैले हुए हाथ को उनके कंधों पर सीधा गिराते हुए, बिना सिर हिलाए, उन्होंने अपने लिए रास्ता बना रहे उन छोटे-मोटे लोगों को अपनी सीटों पर वापस बैठने का आदेश दिया, और उस सुंदर युवक को गहरा प्रणाम किया। ऐसा लगता था मानो डचेस को अंदाज़ा हो गया था कि उनकी चचेरी बहन, जिनके बारे में अफवाह थी कि वह उनकी 'अतिशयोक्ति' का मज़ाक उड़ाती थीं (एक ऐसा नाम जो उनके अपने नज़रिए से, जो कि विशिष्ट रूप से फ्रांसीसी और संयमित था, स्वाभाविक रूप से जर्मन महिला की कविता और उत्साह पर लागू होता था), आज शाम को उन्हीं पोशाकों में से एक पहने होंगी जिनमें डचेस उन्हें 'सजी-धजी' समझती थीं, और उन्होंने

उन्हें शालीनता का पाठ पढ़ाने का फैसला किया था। राजकुमारी के सिर के मुकुट से गिरकर उनके गले को छूने वाले अद्भुत मुलायम पंखों के बजाय, उनके सीपियों और मोतियों के जाल के बजाय, डचेस ने अपने बालों में केवल एक साधारण कलगी पहनी थी, जो उनकी धनुषाकार नाक और सीधी आँखों के ऊपर उठती हुई, किसी पक्षी के सिर पर बनी कलगी की याद दिलाती थी। बर्फ़ जैसे सफ़ेद मलमल के कपड़े से उसकी गर्दन और कंधे उभरे हुए थे, जिस पर हंस के पंखों का पंखा लहरा रहा था। लेकिन इसके नीचे उसका गाउन था, जिसके ऊपरी हिस्से पर अनगिनत झिलमिलाते मोती (या तो धातु की छोटी छड़ें और मनके, या शायद हीरे) जड़े हुए थे, जिसने उसके शरीर को इतनी खूबसूरती से तराशा था कि वह पूरी तरह से ब्रिटिश शैली को दर्शाता था। हालांकि दोनों के परिधान अलग-अलग थे, राजकुमारी द्वारा अपनी चचेरी बहन को वह कुर्सी देने के बाद जिस पर वह पहले बैठी थी, वे एक-दूसरे की ओर मुड़कर प्रशंसा भरी निगाहों से देखने लगीं।

अगले दिन जब श्रीमती डी गुएरमांटेस राजकुमारी के थोड़े जटिल सिर के आभूषण का जिक्र करेंगी, तो शायद उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ जाएगी, लेकिन निश्चित रूप से वे कहेंगी कि वह फिर भी बेहद सुंदर और अद्भुत ढंग से सजाया गया था। वहीं राजकुमारी, जिन्हें अपनी चचेरी बहन के पहनावे में कुछ ठंडापन, कुछ कठोरता और कुछ 'खास तौर पर सिलवाया हुआ' सा लगता था, इस सख्त सादगी में एक असाधारण परिष्कार पाएंगी। इसके अलावा, उनके बीच जो सामंजस्य था, उनकी परवरिश से उत्पन्न सार्वभौमिक और पूर्व-स्थापित आकर्षण, न केवल उनके पहनावे में बल्कि उनके व्यवहार में भी मौजूद विरोधाभासों को बेअसर कर देगा। उनके शिष्टाचार के परिष्कार द्वारा खींचे गए उन अदृश्य चुंबकीय रेखाओं के कारण राजकुमारी का विशाल स्वभाव रुक जाएगा, जबकि दूसरी ओर डचेस की औपचारिक शालीनता आकर्षित होकर शिथिल हो जाएगी और मधुरता और आकर्षण में बदल जाएगी। जिस प्रकार, वर्तमान में प्रदर्शित नाटक में, यह समझने के लिए कि बर्मा ने उसमें से कितनी व्यक्तिगत कविता निकाली थी, केवल उस भूमिका को सौंपना ही पर्याप्त था जिसे वह निभा रही थीं, और जिसे केवल वही निभा सकती थीं, चाहे कोई भी अन्य अभिनेत्री क्यों न हो, उसी प्रकार, जो दर्शक बालकनी की ओर अपनी नज़रें उठाएगा, वह वहाँ दो छोटे बॉक्सों में देख सकता है कि कैसे प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की पोशाक का आभास देने वाली एक

'व्यवस्था' ने बैरोनेस डी मोरिएनवाल को सनकी, आडंबरपूर्ण और असभ्य बना दिया, जबकि डचेस डी गुएरमांटेस के कपड़ों और शैली की नकल करने का प्रयास, चाहे वह कितना भी श्रमसाध्य और महंगा रहा हो, मैडम डी कैम्ब्रेमर को किसी देहाती स्कूली छात्रा की तरह दिखा रहा था, जो तारों पर टिकी हुई, कठोर, सीधी, रूखी, कोणीय, और बालों में कौवे के पंखों का एक गुच्छा लंबवत चिपकाए हुए हो। शायद इस महिला के लिए उचित स्थान वह रंगमंच नहीं था जहाँ केवल सीज़न के सबसे चमकीले सितारों से भरे बॉक्स (यहाँ तक कि सबसे ऊपरी पंक्ति के बॉक्स भी, जो नीचे से देखने पर मानव फूलों से भरे विशाल टोकरियों की तरह प्रतीत होते थे और अपनी मखमली दीवारों की लाल डोरियों से गैलरी से बंधे होते थे) एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते थे जिसे मृत्यु, घोटाले, बीमारियाँ, झगड़े जल्द ही बदल देंगे, लेकिन जो आज शाम ध्यान, गर्मी, चक्कर, धूल, चकाचौंध या ऊब से स्थिर था, उस एक प्रकार के शाश्वत क्षण में, अचेतन प्रतीक्षा और शांत सुस्ती में, जो पीछे मुड़कर देखने पर, हमेशा किसी बम विस्फोट या आग की पहली लौ से पहले आता हुआ प्रतीत होता है।

इस अवसर पर श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की उपस्थिति का कारण यह बताया गया कि राजकुमारी डी पार्म, जो अधिकांश वास्तविक शाही व्यक्तियों की तरह अभिमान से रहित थीं, और दान-पुण्य के प्रति अटूट प्रेम और लगन से परिपूर्ण थीं, जो कला के प्रति उनके प्रेम के समान ही उनके हृदय में स्थान रखता था, उन्होंने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर जैसी कुछ महिलाओं को उपहार स्वरूप कुछ बक्से दिए थे। ये महिलाएं उच्च कुलीन वर्ग में तो नहीं गिनी जाती थीं, लेकिन विभिन्न धर्मार्थ कार्यों में उनसे जुड़ी हुई थीं। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने डचेस और राजकुमारी डी गुएरमांटेस से अपनी निगाहें नहीं हटाईं, जो उनके लिए और भी आसान था क्योंकि वास्तव में उनसे परिचित न होने के कारण उन पर दिखावे की कोशिश करने का संदेह नहीं किया जा सकता था। फिर भी, इन दो महान महिलाओं की यात्रा सूची में शामिल होना ही उनका लक्ष्य था, जिसके लिए वे पिछले दस वर्षों से अथक धैर्य के साथ प्रयासरत थीं। उन्होंने अनुमान लगाया था कि वे संभवतः पाँच वर्षों में इसे प्राप्त कर लेंगी। लेकिन एक असाध्य रोग से ग्रसित होने के कारण, जिसके असाध्य स्वरूप को वह अच्छी तरह जानती थी (क्योंकि उसे अपने चिकित्सा ज्ञान पर गर्व था), उसे डर था कि वह शायद ज्यादा दिन तक जीवित न रह पाए। आज शाम वह कम से कम इस विचार से प्रसन्न थी कि जिन महिलाओं को वह मुश्किल से

जानती थी, वे सब उसकी संगति में एक ऐसे व्यक्ति को देखेंगी जो उन्हीं में से एक था, युवा मार्क्विस डी ब्यूसेर्जेंट, श्रीमती डी'आर्गेनकोर्ट का भाई, जो दोनों ही दुनियाओं में निष्पक्ष रूप से रहता था और जिसके साथ दूसरी दुनिया की महिलाएं पहली दुनिया की महिलाओं के सामने खुद को सजाने-संवारने में बेहद प्रसन्न होती थीं। वह श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के पीछे एक तिरछी कुर्सी पर बैठा था, ताकि वह अपने चश्मे से अन्य बक्सों को देख सके। वह घर में सभी को जानता था, और अपने मित्रों का अभिवादन करने के लिए, अपने सुडौल शरीर और सुंदर गोरे बालों के मोहक आकर्षण से, वह अपनी सीट से आधा उठ खड़ा होता, शरीर को समेटे हुए, उसकी नीली आँखों में एक मुस्कान चमक उठती, जिसमें आदर और अनासक्ति का मिश्रण होता, मानो वह आयताकार फ्रेम में दीवार पर तिरछे कोण पर रखी हुई किसी सुंदर नक्काशीदार तस्वीर में किसी महान रईस को उसके दरबारी गौरव में चित्रित करने वाले पुराने चित्रों की तरह दिखता हो। वह अक्सर श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के साथ नाटक देखने के निमंत्रण स्वीकार करता था। थिएटर में और बाहर निकलते समय लॉबी में, वह अपने आस-पास मौजूद प्रतिष्ठित मित्रों की भीड़ के बीच भी शान से उनके बगल में खड़ा रहता, जिनसे वह किसी भी तरह की असहजता से बचने के लिए बात करने से बचता था, मानो वह संदिग्ध संगति में हो। यदि ऐसे क्षणों में राजकुमारी डी गुएरमांटेस, डायना की तरह फुर्तीली और सुंदर, अपने पीछे एक अतुलनीय लबादे की तहें लहराती हुई, हर किसी के सिर के पीछे मुड़कर और हर किसी की निगाहों (और विशेष रूप से श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की) द्वारा अनुसरण करते हुए उनके पास से गुज़रतीं, तो एम. डी ब्यूसेर्जेंट अपने साथी के साथ बातचीत में मग्न हो जाते, राजकुमारी की मैत्रीपूर्ण और चकाचौंध भरी मुस्कान को केवल संयम से, विवशता से और एक सभ्य संयम, एक विचारशील शीतलता के साथ स्वीकार करते, जिसकी मित्रता उस क्षण असुविधाजनक हो सकती थी।

यदि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को पहले से यह पता न होता कि वह बॉक्स राजकुमारी का है, तब भी वह अपनी मेज़बान के प्रति शिष्टाचारवश मंच और दर्शकों के समूह के तमाशे को जिस उत्सुकता से देख रही थीं, उससे यह बता सकती थीं कि डचेस डी गुएरमांटेस ही अतिथि थीं। लेकिन इस अपकेंद्रीय बल के साथ-साथ, सामाजिक होने की उसी इच्छा से उत्पन्न एक समान और विपरीत बल ने उसका ध्यान वापस अपने पहनावे, अपने पंख, अपने हार, अपनी चोली

और साथ ही राजकुमारी के पहनावे की ओर खींच लिया, जिसकी प्रजा, जिसकी दासी, उसकी चचेरी बहन, मानो स्वयं को यह घोषित कर रही थी कि वह केवल उसे देखने आई है, और यदि बॉक्स में बैठे आधिकारिक व्यक्ति का मन उठकर जाने का करे तो वह उसके पीछे-पीछे कहीं और जाने को भी तैयार है, और घर के बाकी हिस्से को वह केवल अजनबियों से बना हुआ मानती है, जिन्हें वह केवल जिज्ञासावश देखने लायक समझती है। हालाँकि, घर में उसके कई मित्र थे जिनके बॉक्स में वह अन्य शामों को नियमित रूप से जाती थी और जिनके प्रति वह उन अवसरों पर भी ऐसी ही निष्ठा, अनन्य, सशर्त और साप्ताहिक, प्रदर्शित करने में कभी असफल नहीं होती थी। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर उसे उस शाम वहाँ देखकर आश्चर्यचकित रह गईं। वह जानती थीं कि डचेस गुएरमांटेस में बहुत देर तक रुकी हुई थीं, और उन्होंने सोचा था कि वह अभी भी वहीं होंगी। लेकिन उन्हें यह भी बताया गया था कि कभी-कभी, जब पेरिस में कोई विशेष समारोह होता था जिसमें श्रीमती डी गुएरमांटेस को लगता था कि उन्हें जाना चाहिए, तो वह तोपों के साथ चाय पीने के तुरंत बाद अपनी एक गाड़ी मंगवाती थीं और जैसे ही सूरज ढलने लगता था, वह घने अंधेरे में जंगल से होते हुए तेज़ गति से निकल पड़ती थीं, फिर मुख्य सड़क से होते हुए कॉम्ब्रे में ट्रेन पकड़ने के लिए निकल पड़ती थीं और उसी शाम पेरिस पहुँच जाती थीं। "शायद वह जानबूझकर बर्मा का भाषण सुनने के लिए गुएरमांटेस से आई हैं," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने सोचा और इस विचार पर आश्चर्यचकित हुईं। और उन्हें याद आया कि उन्होंने स्वान को उसी अस्पष्ट भाषा में कहते सुना था जो वह एम. डी चार्लस के साथ इस्तेमाल करते थे: "डचेस पेरिस की सबसे नेक आत्माओं में से एक हैं, सबसे परिष्कृत, सबसे चुनिंदा समाज की श्रेष्ठ हैं।" मैंने गुएरमांटेस, बवेरिया और कोंडे के नामों से उन दो चचेरे भाइयों के जीवन और विचारों की जो कल्पना की थी (उनके चेहरे देखने के बाद मैं उन्हें इस तरह याद नहीं कर सकता था), मुझे फ्रेड्रे के बारे में दुनिया के सबसे बड़े आलोचक की राय से ज़्यादा उनकी राय पसंद आती। क्योंकि उनकी राय में मुझे केवल बुद्धि ही मिलती, जो मेरी बुद्धि से श्रेष्ठ तो होती, लेकिन उसी प्रकार की होती। लेकिन डचेस और प्रिंसेस डी गुएरमांटेस क्या सोचतीं, एक ऐसी राय जो मुझे इन दो कवियों के स्वभाव का एक अमूल्य सुराग देती, मैंने उनके नामों की सहायता से कल्पना की, उसे एक अतार्किक आकर्षण से भर दिया, और बुखार से पीड़ित एक अभागे की प्यास और तड़प के साथ, मैं उनसे फ्रेड्रे के बारे में जो राय

चाहता था, वह उन गर्मियों की दोपहरों का आकर्षण था जो मैंने गुएरमांटेस के रास्ते पर घूमते हुए बिताई थीं।

श्रीमती डी कैम्ब्रेमर यह समझने की कोशिश कर रही थीं कि चचेरी बहनों ने वास्तव में कैसे कपड़े पहने थे। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे कभी संदेह नहीं हुआ कि उनके वस्त्र उन्हीं के लिए विशिष्ट थे, न केवल इस अर्थ में कि लाल कॉलर या नीले बॉर्डर वाली वर्दी कभी केवल गुएरमांटेस और कोंडे परिवारों की ही होती थी, बल्कि ठीक वैसे ही जैसे किसी पक्षी के पंख उसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं और उसके शरीर का ही विस्तार होते हैं। इन दोनों महिलाओं का श्रृंगार मुझे उनकी आंतरिक गतिविधि का साकार रूप प्रतीत हुआ, चाहे वह बर्फ़-सफ़ेद हो या रंगीन पैटर्न वाला, और राजकुमारी डी गुएरमांटेस के हाव-भाव की तरह, जिनके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं था कि वे उनके भीतर छिपे किसी विचार को दर्शाते थे, उनके माथे से नीचे की ओर लहराते पंख और उनकी चचेरी बहन की चमकीली झिलमिलाती चोली, दोनों का ही एक विशेष अर्थ प्रतीत होता था, मानो वे किसी एक महिला के लिए एक ऐसा गुण हों जो केवल उनका ही हो, और जिसका महत्व मैं उत्सुकता से जानना चाहती थी; स्वर्ग की चिड़िया अपने पहनने वाले से इस तरह अविभाज्य प्रतीत होती थी जैसे उसका मोर जूनो से अविभाज्य है, और मुझे विश्वास नहीं था कि कोई अन्य स्त्री उस चमकीले चोली को, मिनर्वा के झालरदार और चमकते कवच को, छीन सकती है। और जब मैंने अपनी नज़रें उनके बॉक्स पर डालीं, थिएटर की छत की तुलना में, जो ठंडे और निर्जीव प्रतीकों से चित्रित थी, ऐसा लगा मानो मैंने, सामान्यतः उसे ढकने वाले बादलों के चमत्कारिक रूप से फटने के कारण, देवताओं की सभा को मानव जाति के दृश्य का चिंतन करते हुए देखा हो, एक लाल चंदवा के नीचे, एक स्पष्ट प्रकाशमान स्थान में, स्वर्ग के दो स्तंभों के बीच। मैंने इस संक्षिप्त रूपांतरण को एक बेचैनी के साथ देखा, जो इस भावना से कुछ हद तक शांत हुई कि मैं स्वयं इन अमर लोगों के लिए अज्ञात थी; डचेस ने मुझे अपने पति के साथ एक बार देखा तो था, लेकिन निश्चित रूप से उन्हें वह बात याद नहीं रही होगी, और मुझे इस बात का कोई दुख नहीं हुआ कि बॉक्स में अपनी जगह के कारण वह स्टॉल्स में बैठे गुमनाम, सामूहिक दर्शकों की आँखों को निहारने की स्थिति में थीं, क्योंकि मुझे सुखद अनुभूति हो रही थी कि मेरा अपना व्यक्तित्व उनमें विलीन हो गया था, जब, कुछ प्रकाशीय नियमों के बल पर, मुझे लगता है, उन नीली आँखों की भावहीन

धारा पर एक प्रोटोजोआ की धुंधली रूपरेखा अंकित हो गई होगी, जो कि मैं ही था, मैंने एक किरण को उन्हें रोशन करते देखा; डचेस, देवी से स्त्री बनीं, और उस क्षण में हज़ार गुना अधिक सुंदर दिखाई दीं, उन्होंने बॉक्स की रेलिंग पर रखे सफेद दस्ताने वाले हाथ को उठाया, मेरी ओर इशारा किया, और मित्रता के प्रतीक के रूप में मुझे लहराया; मेरी निगाहें राजकुमारी की चमकती आंखों की सहज प्रज्वलन में फंस गईं, जिन्होंने अनजाने में ही अपनी आंखों को प्रज्वलित कर दिया था, केवल यह देखने के लिए कि उनकी चचेरी बहन किसका अभिवादन कर रही है, जबकि डचेस, जिन्हें मैं याद था, ने मुझ पर अपनी चमकदार और दिव्य मुस्कान की बौछार कर दी।

और अब हर सुबह, उसके आने के समय से बहुत पहले, मैं टेढ़े-मेढ़े रास्ते से उस गली के कोने पर पहुँच जाता जहाँ से वह अक्सर आती थी, और जब उसके आने का समय नज़दीक लगता, तो मैं किसी और चीज़ में मग्न होने का दिखावा करते हुए घर की ओर चल पड़ता, दूसरी तरफ देखता और उसके पास पहुँचते ही उसकी ओर देखता, मानो मुझे उसे देखने की ज़रा भी उम्मीद न हो। दरअसल, पहले कुछ सुबहों तक, ताकि मैं उसे देखने से चूक न जाऊँ, मैं घर के सामने ही इंतज़ार करता था। और हर बार जब गाड़ी का दरवाज़ा खुलता (और एक के बाद एक इतने सारे लोग बाहर निकलते जिनमें से कोई भी वह नहीं होता जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था), तो उसकी गड़गड़ाहट मेरे दिल में लगातार गूंजती रहती, जिसे शांत करने में मुझे बहुत समय लगता था। किसी प्रसिद्ध अभिनेत्री का ऐसा भक्त, जिसे वह जानता न हो, मंच के द्वार के बाहर फुटपाथ पर पहरा देने के लिए कभी नहीं बैठा था, न ही कोई क्रोधित या अंधभक्त भीड़, जो किसी दोषी हत्यारे या राष्ट्रीय नायक का अपमान करने या उसे सड़कों पर विजय जुलूस में ले जाने के लिए इकट्ठा होती है, जब भी जेल या महल के अंदर से कोई आवाज आती है, तो ऐसा ही कुछ होता है। ये लोग मेरी तरह इतने भावुक कभी नहीं हुए थे, जो इस महान महिला के आने का इंतजार कर रहे थे, जो अपने साधारण वस्त्रों में, अपनी चाल-ढाल की सुंदरता से (जो किसी ड्राइंग रूम या कमरे में प्रवेश करते समय उनकी चाल से बिल्कुल अलग थी), अपनी सुबह की सैर को - और मेरे लिए तो उस समय दुनिया में उनके सिवा कोई और नहीं था - सुरुचिपूर्ण सुंदरता और उत्तम आभूषण की एक पूरी कविता, मौसम के सबसे अनोखे फूल की तरह बना देती थीं। लेकिन तीसरे दिन के बाद, ताकि चौकीदार मेरी चाल का

पता न लगा ले, मैं डचेस के नियमित मार्ग पर स्थित किसी बिंदु पर चला गया। उस शाम थिएटर जाने से पहले, अक्सर मैं दोपहर के भोजन से पहले, जब मौसम सुहावना होता था, ऐसे ही छोटे-मोटे चक्कर लगा लेता था। अगर बारिश हो रही होती, तो सूरज की पहली किरण पड़ते ही मैं जल्दी से नीचे चला जाता, और अगर अचानक, सूरज की सुनहरी चमक से भीगी हुई गीली सड़क पर, धूल से भरी धुंध से ढके चौराहे पर, जिसे सूरज ने और भी चमकीला बना दिया था, मेरी ओर कोई स्कूली छात्रा अपनी देखभाल करने वाली के साथ या सफेद आस्तीन वाली कोई दूधवाली दिखाई देती, तो मैं वहीं स्तब्ध खड़ा रह जाता, मेरा हाथ मेरे दिल पर होता जो पहले से ही जीवन के एक अनछुए रूप की ओर उछल रहा होता; मैं उस गली, उस समय, उस दरवाजे के नंबर को याद रखने की कोशिश करता जिससे वह लड़की (जिसका मैं कभी-कभी पीछा करता था) गायब हो गई थी और फिर कभी दिखाई नहीं दी। सौभाग्य से, इन प्यारी यादों की क्षणभंगुर प्रकृति, जिन्हें मैंने फिर से देखने का वादा किया था, ने उन्हें मेरी स्मृति में जीवंतता से बसने से रोक दिया। खैर, अब मुझे अपनी खराब सेहत के बारे में सोचकर उतना दुख नहीं होता था, न ही इस बात का कि मैंने कभी काम शुरू करने, किताब लिखने का साहस नहीं जुटाया। अब दुनिया मुझे रहने के लिए एक सुखद जगह लगती थी, जीवन अब एक अधिक रोचक अनुभव लगता था क्योंकि मुझे पता चल गया था कि पेरिस की सड़कें, बालबेक के आसपास की सड़कों की तरह, उन अज्ञात सुंदरियों से सजी हुई थीं जिन्हें मैंने अक्सर मेसेग्लिस के जंगलों से याद करने की कोशिश की थी, जिनमें से प्रत्येक एक कामुक लालसा जगाती थी जिसे केवल वही शांत कर सकती थी।

ओपेरा-कॉमिक से घर लौटते समय, मैंने अगली सुबह के लिए उन लोगों की सूची में एक और नाम जोड़ लिया जिनसे मैं पिछले कुछ दिनों से फिर से मिलने की उम्मीद कर रहा था - श्रीमती डी गुएरमांटेस का रूप, लंबी कद-काठी वाली, रेशमी सुनहरे बालों के ऊंचे गुच्छे के साथ; और उनकी चचेरी बहन के बॉक्स से मेरी ओर मुस्कुराती हुई उनकी दयालुता, जिसका उन्होंने मुझे वादा किया था। मैं उस रास्ते पर चलूंगा जो फ्रांस्वा ने मुझे बताया था कि डचेस आमतौर पर अपनाती हैं, और साथ ही, कुछ दिन पहले देखी गई दो लड़कियों से मिलने की उम्मीद में, उनके संबंधित कक्षा और धार्मिक शिक्षा के समापन को न चूकने की कोशिश करूंगा। लेकिन इसी बीच, श्रीमती डी गुएरमांटेस की मनमोहक मुस्कान, उससे मिलने वाली

सुखद अनुभूति, बार-बार मेरे मन में लौट आती थी। और बिना ठीक से जाने कि मैं क्या कर रही थी, मैंने उन विचारों के लिए एक जगह खोजने की कोशिश की (जैसे कोई महिला अपने कपड़ों पर अभी-अभी मिले रत्नजड़ित बटनों के संभावित प्रभाव का अध्ययन करती है) उन रोमांटिक विचारों के साथ जो मेरे मन में लंबे समय से बसे हुए थे और जिन्हें अल्बर्टीन की शीतलता, गिज़ेल के असमय चले जाने, और उनसे पहले गिल्बर्ट से मेरे जानबूझकर और बहुत लंबे समय तक चले अलगाव ने मुक्त कर दिया था (उदाहरण के लिए, किसी महिला द्वारा प्यार किए जाने का विचार, उसके साथ जीवन बिताने का विचार); इसके बाद, सड़क पर देखी गई दो लड़कियों में से किसी एक की छवि को मैंने उन विचारों से जोड़ा, जिनके साथ मैं तुरंत बाद डचेस की अपनी स्मृति को ढालने की कोशिश कर रही थी। उन विचारों की तुलना में ओपेरा-कॉमिक में मैडम डी गुएरमांटेस की मेरी स्मृति बहुत छोटी थी, एक धधकते धूमकेतु की लंबी पूंछ के बगल में टिमटिमाते एक छोटे तारे की तरह; इसके अलावा, मैडम डी गुएरमांटेस को जानने से बहुत पहले ही मैं उन विचारों से अच्छी तरह परिचित थी। इसके विपरीत, उसकी स्मृति मेरे पास अपूर्ण रूप से ही थी; कभी-कभी वह मुझसे ओझल हो जाती थी; यह उन क्षणों के दौरान होता था जब, अन्य कई सुंदर महिलाओं की छवियों की तरह, यह मेरे मन में धुंधली सी तैरती रहती थी, और धीरे-धीरे एक अद्वितीय और निश्चित जुड़ाव में तब्दील हो जाती थी—अन्य सभी स्त्री रूपों से अलग—उन रोमांटिक विचारों के साथ जो इससे कहीं अधिक पुराने थे; यह उन कुछ घंटों के दौरान होता था जब मुझे यह सबसे स्पष्ट रूप से याद आती थी और मुझे यह पता लगाने के लिए कदम उठाने चाहिए थे कि यह वास्तव में क्या थी; लेकिन तब मुझे इसके महत्व का पता नहीं था; यह मेरे भीतर श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ पहली निजी मुलाकात के रूप में ही सुखद थी; यह पहला, एकमात्र सटीक रेखाचित्र था, जीवन से लिया गया एकमात्र रेखाचित्र, एकमात्र रेखाचित्र जो वास्तव में श्रीमती डी गुएरमांटेस थी; उन कुछ घंटों के दौरान, जब मैं सौभाग्यवश उस स्मृति को बिना ध्यान दिए अपने मन में संजोए रख सका, वह स्मृति निश्चित रूप से मनमोहक रही होगी, क्योंकि प्रेम के विचार हमेशा उसी स्मृति में, और वह भी पूरी स्वतंत्रता से, बिना किसी जल्दबाजी, बिना किसी तनाव, बिना किसी दबाव या चिंता के लौट आते थे; फिर, जैसे-जैसे वे विचार अधिक स्पष्ट होते गए, स्मृति को उनसे आनुपातिक रूप से अधिक शक्ति प्राप्त हुई,

लेकिन वह स्वयं अधिक धुंधली होती गई; कुछ समय बाद मैं उसे पुनः प्रकट नहीं कर सका; और अपने सपनों में मैंने शायद उसे पूरी तरह से बदल दिया, क्योंकि जब भी मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस को देखता था, मुझे वह अंतर स्पष्ट हो जाता था—जो कभी भी दो बार एक जैसा नहीं होता था—जो मैंने कल्पना की थी और जो मैंने देखा था। और अब हर सुबह, निश्चित रूप से उस क्षण जब श्रीमती डी गुएरमांटेस गली के शीर्ष पर स्थित अपने द्वार से निकलती थीं, मैं फिर से उनकी लंबी आकृति, उनकी चमकीली आँखों वाला चेहरा और रेशमी बालों का मुकुट देखता था—वे सभी चीजें जिनके लिए मैं वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था; लेकिन, दूसरी ओर, एक या दो मिनट बाद, जब मैंने पहले तो अपनी आँखें फेर लीं ताकि ऐसा लगे कि मैं उस मुलाकात का इंतज़ार नहीं कर रहा हूँ जिसके लिए मैं आया था, और फिर जब हम आमने-सामने आए तो मैंने डचेस को देखने के लिए अपनी आँखें उठाईं, तब मैंने एक उदास चेहरे पर लाल धब्बे देखे (मुझे नहीं पता था कि वे ताजी हवा के कारण थे या त्वचा की खराबी के कारण)। उस उदास चेहरे ने, फ्रेड्रे की शाम की सौहार्दता से बहुत दूर, एक संक्षिप्त इशारे से मेरे अभिवादन का जवाब दिया, जो मैं रोज़ाना आश्चर्य के भाव से उसे देता था, और जो उसे प्रसन्न नहीं करता प्रतीत होता था। फिर भी, कुछ दिनों के बाद, जिसके दौरान दोनों लड़कियों की याद मेरे प्रेम भावों पर हावी होने के लिए श्रीमती डी गुएरमांटेस की याद से जूझती रही, अंत में बाद वाली ही, मानो अपनी मर्जी से, हावी हो गई जबकि उसके प्रतिद्वंद्वी पीछे हट गए; अंततः मैंने जानबूझकर, और मानो अपनी पसंद और आनंद के लिए, अपने सारे प्रेम संबंधी विचारों को उसी ओर मोड़ दिया था। मैंने धर्म शिक्षा पूरी करके लौट रही छोटी बच्चियों या किसी दूधवाली के सपने देखना छोड़ दिया था; फिर भी, सड़क पर वह सब पाने की मेरी सारी उम्मीदें भी खत्म हो गई थीं, जिसकी तलाश में मैं निकला था - चाहे वह स्नेह हो जो मुझे रंगमंच पर एक मुस्कान में मिला था, या वह चेहरा, सुनहरे बालों के गुच्छे के नीचे छिपा वह चमकीला चेहरा जो दूर से ही चमकता था। अब तो मैं यह भी नहीं बता सकता था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस कैसी थीं, क्योंकि हर दिन, उनके द्वारा प्रस्तुत संपूर्ण चित्र में, उनका चेहरा, पोशाक और टोपी सब अलग-अलग होते थे।

एक सुबह, जब मैंने बैंगनी रंग के हुड के नीचे एक सुंदर, कोमल चेहरे को अपनी ओर आते देखा, जिसकी सुंदरता नीली आँखों के चारों ओर समरूप रूप से सजी थी, एक ऐसा चेहरा

जिसमें नाक का घुमाव मानो समाहित हो गया था, तो मेरे हृदय में उठी आनंदमय हलचल से मुझे यह क्यों एहसास हुआ कि मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस की एक झलक देखे बिना घर नहीं लौटूँगा; और अगले दिन भी मुझे वही बेचैनी क्यों हुई, मैंने वही उदासीनता क्यों दिखाई, और मैंने उसी लापरवाही से अपनी आँखें क्यों फेर लीं, जैसे पिछले दिन, जब मैंने एक गली से गुजरते हुए, गहरे नीले रंग की टोपी पहने, चोंच जैसी नाक वाले, लाल गालों पर भेदक आँख वाले उस आभास को देखा, जो किसी मिस्र की देवी जैसी लग रही थी? एक बार तो मैंने केवल एक पक्षी की चोंच वाली महिला को ही नहीं देखा, बल्कि लगभग स्वयं उस पक्षी को ही देखा; श्रीमती डी गुएरमांटेस के बाहरी वस्त्र, यहाँ तक कि उनकी टोपी भी। डी गुएरमांटेस के शरीर पर घने बाल थे, और चूंकि उसने कोई कपड़ा नहीं छोड़ा था, इसलिए वह स्वाभाविक रूप से घने बालों वाली प्रतीत होती थी, जैसे कुछ गिद्ध जिनके मोटे, चिकने, गहरे रंग के, रोएँदार पंख किसी जंगली जानवर की त्वचा का आभास कराते हैं। इन प्राकृतिक पंखों के बीच से, उसका छोटा सा सिर अपनी चोंच बाहर की ओर झुकाए हुए था और उसकी सतह पर मौजूद दोनों आँखें भेदक थीं—तेज और नीली।

एक दिन मैं घंटों तक गली में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा, लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस का कोई अता-पता नहीं था। तभी अचानक, इस कुलीन और आम लोगों के मोहल्ले की दो हवेलियों के बीच स्थित एक पेस्ट्री की दुकान में, एक फैशनेबल पोशाक पहने महिला का धुंधला और अपरिचित चेहरा दिखाई दिया, जो कुछ छोटे केक देखना चाहती थी। और इससे पहले कि मैं उसे ठीक से पहचान पाता, बिजली की चमक की तरह, गरज से भी पहले, डचेस की निगाह मुझ पर पड़ी; एक और बार, उनसे न मिल पाने पर और बारह बजने की आवाज सुनकर, मुझे एहसास हुआ कि अब उनका इंतजार करना व्यर्थ है। मैं दुखी मन से अपने घर की ओर चल पड़ा। और, अपनी ही निराशा में डूबे हुए, अनमने ढंग से उस गाड़ी को देखते हुए जो मुझसे आगे निकल गई थी, और उसे न देख पाने पर, मुझे अचानक एहसास हुआ कि गाड़ी की खिड़की से मैंने जिस महिला को सिर हिलाते देखा था, वह मेरे लिए ही था, और यह महिला, जिसके चेहरे पर कभी शांति और पीलापन था, तो कभी तनाव और जीवंतता, संयम, एक गोल टोपी के नीचे, जो एक ऊंचे पंख के नीचे टिकी हुई थी, एक अजनबी का चेहरा जिसे मैंने सोचा था कि मैं नहीं जानता, वह श्रीमती डी गुएरमांटेस थीं, जिनसे मैंने बिना उनके प्रणाम

का जवाब दिए ही अभिवादन स्वीकार कर लिया था। और कभी-कभी मैं उन्हें द्वार से प्रवेश करते समय, उस लॉज के बाहर खड़ी देख लेता था, जहाँ वह घृणित चौकीदार, जिसकी पैनी नज़र से मैं घृणा करता था और डरता था, उन्हें गहरा प्रणाम कर रहा होता था और साथ ही, निस्संदेह, अपनी दैनिक रिपोर्ट भी दे रहा होता था। गुएरमांटेस परिवार के सभी कर्मचारी, खिड़की के पर्दों के पीछे छिपे हुए, कांप रहे थे क्योंकि वे एक ऐसी बातचीत देख रहे थे जिसे वे सुन नहीं पा रहे थे, लेकिन जिसका मतलब वे अच्छी तरह जानते थे कि उनमें से किसी न किसी का 'दिन का भ्रमण' निश्चित रूप से उस डचेस द्वारा रद्द कर दिया जाएगा जिसके साथ यह सेर्बेरस उसे धोखा दे रहा था। श्रीमती गुएरमांटेस के एक के बाद एक बदलते चेहरों की पूरी श्रृंखला को देखते हुए, जो उनके व्यक्तित्व और पहनावे में एक सापेक्ष और परिवर्तनशील विस्तार को दर्शाते थे, एक दिन संकुचित तो अगले दिन विशाल, मेरा प्रेम उन परिवर्तनशील और निरंतर बदलते रहने वाले शरीर और वस्त्रों में से किसी से भी नहीं जुड़ा था जो दिन-प्रतिदिन एक दूसरे की जगह लेते रहते थे, और जिन्हें वह बदल सकती थीं, लगभग पूरी तरह से पुनर्निर्मित कर सकती थीं, फिर भी मेरी बेचैनी कम नहीं होती थी क्योंकि उनके नीचे, नए कॉलर और अजीब गाल के नीचे, मुझे लगता था कि वह अभी भी श्रीमती डी गुएरमांटेस ही थीं। मुझे सबसे ज़्यादा उस अदृश्य शख्स से प्यार था जिसने इस सारे दिखावे को जन्म दिया, जिसकी शत्रुता ने मुझे इतना परेशान किया, जिसके पास आने से मैं कांप उठता था, जिसका जीवन मैं अपना बनाना चाहता था और उसके दोस्तों को उससे दूर कर देना चाहता था। चाहे वह नीले पंख का प्रदर्शन करे या उग्र गाल दिखाए, उसके कार्यों का महत्व मेरे लिए कभी कम नहीं होता।

मुझे खुद यह महसूस नहीं होता कि श्रीमती डी गुएरमांटेस मुझसे दिन-प्रतिदिन मिलकर थक गई थीं, अगर मुझे यह अप्रत्यक्ष रूप से उस ठंडे, अस्वीकृति और दया से भरे चेहरे को पढ़कर पता न चलता जो फ्रांस्वा ने मुझे सुबह की सैर के लिए तैयार करते समय दिखाया था। जैसे ही मैंने उनसे अपने बाहर जाने के सामान मांगे, मुझे उनके थके-हारे चेहरे पर एक विपरीत हवा सी महसूस हुई। मैंने उनका विश्वास जीतने का कोई प्रयास नहीं किया, क्योंकि मैं जानता था कि मैं सफल नहीं हो पाऊंगा। मेरे माता-पिता या मेरे साथ घटी किसी भी अप्रिय घटना का तुरंत पता लगाने की उनमें एक ऐसी शक्ति थी जिसकी प्रकृति को मैं कभी समझ नहीं पाया।

शायद यह अलौकिक नहीं थी, बल्कि सूचना के उन स्रोतों से समझाई जा सकती थी जो केवल उन्हीं के लिए खुले थे: जैसे कि अक्सर किसी जंगली जनजाति तक डाक द्वारा यूरोपीय उपनिवेश तक पहुंचने से कई दिन पहले जो खबर पहुंचती है, वह वास्तव में टेलीपैथी से नहीं बल्कि एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक मशालों की श्रृंखला के माध्यम से उन तक पहुंचाई गई हो। इसलिए, मेरी सुबह की सैर के विशेष मामले में, संभवतः श्रीमती डी गुएरमांटेस ने... डी गुएरमांटेस के नौकरों ने अपनी मालकिन को यह कहते हुए सुना था कि वह हर रोज़ मुझसे बिना किसी चूक के मिलने से कितनी थक चुकी हैं, और उन्होंने उनकी यह बात फ्रांस्वा को भी बताई थी। यह सच है कि मेरे माता-पिता फ्रांस्वा के अलावा किसी और नौकर को भी मेरे साथ रख सकते थे, फिर भी मेरी हालत बेहतर नहीं होती। फ्रांस्वा एक तरह से बाकी नौकरानियों से कम नौकरानी थी। चीजों को महसूस करने के उसके तरीके में, दयालु और करुणामय होने में, कठोर और दूर रहने में, श्रेष्ठ और संकीर्ण होने में, गोरी त्वचा और लाल हाथों के मेल में, वह अभी भी उस गाँव की लड़की थी जिसके माता-पिता का अपना घर था, लेकिन दुःख के कारण उन्हें उसे काम पर रखना पड़ा था। हमारे घर में उसकी उपस्थिति पचास साल पहले के खेत के सामाजिक जीवन की ताज़ी हवा की तरह थी, मानो यात्रा के सामान्य क्रम के उलट, जहाँ स्थान व्यक्ति से मिलने आता है। जैसे स्थानीय संग्रहालय के काँच के बक्से उन अद्भुत हस्तकलाओं के नमूनों से भरे होते हैं जिन्हें किसान आज भी देश के कुछ हिस्सों में तराशते, कढ़ाई करते या अन्य प्रकार से बनाते हैं, ठीक वैसे ही पेरिस में हमारा फ्लैट फ्रांस्वा के शब्दों से सजा हुआ था, जो एक पारंपरिक स्थानीय भावना से प्रेरित थे और अत्यंत प्राचीन नियमों द्वारा शासित थे। और पेरिस में वह रंगीन धागों के संकेतों के सहारे अपने बचपन के गीत गाने वाले पक्षियों और चेरी के पेड़ों तक, अपनी माँ के मृत्युशय्या तक, जिसे वह आज भी स्पष्ट रूप से देख सकती थी, वापस लौट सकती थी। लेकिन इतनी समृद्ध पृष्ठभूमि के बावजूद, पेरिस आने और हमारी सेवा में शामिल होने के बाद, उसने—जैसा कि स्पष्ट रूप से, उसकी जगह आने वाला कोई भी व्यक्ति सीख लेता—अन्य मंजिलों के नौकरों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विचारों और व्याख्या प्रणाली को अपना लिया था। हमारे प्रति सम्मान दिखाने के लिए बाध्य होने के बावजूद, वह चौथी मंजिल की रसोइया द्वारा अपनी मालकिन के लिए इस्तेमाल किए गए अभद्र शब्दों को दोहराती थी, और उसे ऐसा करने में इतना आनंद आता था कि

अपने जीवन में पहली बार, चौथी मंजिल के फ्लैट में रहने वाली उस घृणित महिला के साथ एक प्रकार की एकजुटता महसूस करते हुए, हमने खुद से कहा कि शायद हम भी आखिरकार 'मालिक' ही हैं। फ्रांस्वा के चरित्र में यह परिवर्तन शायद अपरिहार्य था। जीवन के कुछ रूप इतने असामान्य होते हैं कि वे कुछ विशिष्ट दोषों को जन्म देने के लिए बाध्य होते हैं; वर्साय में राजा का अपने दरबारियों के बीच बिताया गया जीवन ऐसा ही था, एक फिरौन या डोगे के जीवन जितना ही विचित्र—और उससे भी कहीं अधिक, उसके दरबारियों का जीवन। हमारे नौकरों का जीवन शायद और भी अधिक विकराल विकृति से भरा है, जिसे हम केवल उनकी घनिष्ठता के कारण ही नहीं देख पाते। लेकिन वास्तव में, अगर मैंने फ्रांस्वा को बर्खास्त कर दिया होता, तो मुझे उसी नौकर को रखना पड़ता, क्योंकि कुछ और भी अंतरंग बातें थीं। क्योंकि आने वाले वर्षों में कई अन्य नौकर मेरी सेवा में आ सकते थे; सभी नौकरों में पाए जाने वाले दोषों से युक्त होने के बावजूद, वे मेरे साथ रहते हुए तेजी से बदल जाते। जैसे रणनीति के नियमों में, एक क्षेत्र में हमला दूसरे क्षेत्र में जवाबी हमले को मजबूर करता है, ताकि मेरे कठोर स्वभाव से आहत न हों, वैसे ही उन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में एक समान लचीलापन विकसित किया, हमेशा एक ही बिंदुओं पर, और इसकी भरपाई के लिए मेरी पंक्ति में मौजूद कमियों का फायदा उठाकर आगे की चौकियां तैनात कर दीं। इन कमियों के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, ठीक वैसे ही जैसे इनसे उत्पन्न होने वाले बिंदुओं के बारे में, क्योंकि वे वास्तव में कमियां थीं। लेकिन मेरे नौकरों ने धीरे-धीरे बिगड़ते हुए मुझे उनके अस्तित्व का ज्ञान कराया। उनकी उन कमियों से ही, जो उनमें हमेशा मौजूद रहती थीं, मैंने अपनी स्वाभाविक और अटल खामियों को जाना; उनका चरित्र मेरे लिए एक तरह से मेरे अपने चरित्र का नकारात्मक उदाहरण था। हम, मेरी माँ और मैं, हमेशा श्रीमती सज़ेरत पर हँसते थे, जो अपने नौकरों के बारे में बात करते समय 'निम्न वर्ग' या 'नौकर वर्ग' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करती थीं। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि फ्रांस्वा की जगह किसी और को नियुक्त करने का विचार व्यर्थ इसलिए था क्योंकि उनका उत्तराधिकारी भी अनिवार्य रूप से नौकरों की जाति और विशेष रूप से मेरे नौकरों के वर्ग से ही संबंधित होता।

फ्रांकोइस की बात पर लौटते हुए, मैंने अपने जीवन में कभी भी ऐसा अपमान नहीं सहा, जिसके लिए मैंने पहले से ही उसके चेहरे पर संवेदनाओं का भंडार तैयार और प्रतीक्षारत न

देखा हो; और अगर उस समय उसके द्वारा दया की भावना से प्रेरित होकर मैंने क्रोध में आकर यह जताने की कोशिश की कि इसके विपरीत मुझे स्पष्ट सफलता मिली है, तो भी उसके सम्मानजनक लेकिन स्पष्ट अविश्वास और अपनी अचूकता के प्रति उसके सचेत भाव के कारण मेरा झूठ कमजोर पड़ गया। क्योंकि वह सच जानती थी। उसने इसे कहने से परहेज किया, और अपने होठों को बस हल्का सा हिलाया, मानो उसका मुंह अभी भी भरा हो और वह कोई स्वादिष्ट निवाला खत्म कर रही हो। उसने इसे कहने से परहेज किया, या कम से कम लंबे समय तक मुझे यही लगता रहा, क्योंकि उस समय मैं यही मानता था कि शब्दों के माध्यम से ही सत्य दूसरों तक पहुंचाया जाता है। वास्तव में, लोगों द्वारा मुझसे कहे गए शब्दों ने मेरे मन की संवेदनशील सतह पर अपना अर्थ इतनी अमिट छाप छोड़ दी थी कि मैं इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकती थी कि जिसने मुझसे प्रेम करने का दावा किया हो, वह वास्तव में मुझसे प्रेम न करता हो, ठीक उसी तरह जैसे फ्रांस्वा को अखबार में यह पढ़कर संदेह नहीं हो सकता था कि कोई पादरी या सज्जन व्यक्ति एक मुहरबंद लिफाफा प्राप्त करने पर हमें हर ज्ञात बीमारी का अचूक इलाज या हमारी आय को सौ गुना बढ़ाने का साधन निःशुल्क प्रदान करने के लिए तैयार है। (दूसरी ओर, यदि हमारे डॉक्टर उसे सर्दी-जुकाम ठीक करने के लिए सबसे साधारण मरहम भी लिख दें, तो वह, जो असहनीय पीड़ा सहने को भी नहीं हारी थी, उस मरहम की कड़वी शिकायत करेगी, यह कहते हुए कि उससे उसकी नाक में गुदगुदी हो रही है और जीवन जीने लायक नहीं है।) लेकिन वह पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने अपने उदाहरण से मुझे यह सिद्ध किया (जिसे मैं बहुत बाद तक नहीं समझ पाया, जब मुझे यह बात फिर से और अधिक असुविधा के साथ समझाई गई, जैसा कि इस कृति के बाद के खंडों में मिलेगा, एक ऐसे व्यक्ति द्वारा जो मुझे फ्रांस्वा से भी अधिक प्रिय था) कि सत्य को प्रकट करने के लिए उसे कहने की आवश्यकता नहीं होती, और शायद इसे शब्दों की प्रतीक्षा किए बिना, यहाँ तक कि उनके बारे में सोचे बिना भी, हजारों बाहरी संकेतों से, यहाँ तक कि कुछ अदृश्य घटनाओं से भी, जो मानवीय स्वभाव के क्षेत्र में प्रकृति में वायुमंडलीय परिवर्तनों के समान हैं, अधिक निश्चितता के साथ समझा जा सकता है। शायद मुझे इसका संदेह हो सकता था। उस समय मुझे अक्सर ऐसा लगता था कि मैं ऐसी बातें कह देता था जिनमें सच्चाई का कोई अंश नहीं होता था, जबकि मैं अपने शरीर और हाव-भाव से अनजाने में ही सच्चाई को स्पष्ट कर देता था

(जिन्हें फ्रांस्वा तुरंत समझ लेती थी); शायद मुझे इस बात का शक होना चाहिए था, लेकिन ऐसा करने के लिए मुझे पहले यह समझना पड़ता कि मैं खुद कभी-कभी झूठ और बेईमान हो जाता था। अब झूठ और बेईमानी मुझमें भी थी, जैसे कि अधिकांश लोगों में होती है; यह इतनी तात्कालिक और आकस्मिक रूप से, और आत्मरक्षा में, किसी विशेष स्वार्थ के कारण उत्पन्न होती थी कि मेरा मन, किसी ऊँचे आदर्श पर टिका हुआ, मेरे चरित्र को नीचे के अंधकार में उन जरूरी, घिनौने कामों में लगा रहने देता था, और उन्हें देखने के लिए नीचे नहीं देखता था। जब शाम को फ्रांस्वा मुझसे विनम्रता से पेश आती थी और मेरे कमरे में बैठने से पहले मेरी अनुमति मांगती थी, तो ऐसा लगता था मानो उसका चेहरा पारदर्शी हो गया हो और मैं उसके नीचे छिपी अच्छाई और ईमानदारी को देख पा रहा हूँ। लेकिन जुपियन, जिसने कुछ ऐसी गलतियाँ की थीं जिनके बारे में मुझे बाद में ही पता चला, ने बाद में खुलासा किया कि उसने उससे कहा था कि मैं फांसी पर लटकाने के लिए रस्सी के बराबर भी लायक नहीं हूँ, और मैंने हर संभव तरीके से उसका अपमान करने की कोशिश की थी। जुपियन के इन शब्दों ने मेरी आँखों के सामने, नए और विचित्र रंगों में, फ्रांस्वा के साथ मेरे संबंधों की एक ऐसी तस्वीर उकेर दी जो उस तस्वीर से इतनी अलग थी जिस पर मैं अपनी नज़रें टिकाना पसंद करता था, और जिसमें, बिना किसी संदेह के, फ्रांस्वा मुझे पूजती थी और मेरी प्रशंसा करने का कोई अवसर नहीं छोड़ती थी, कि मुझे एहसास हुआ कि यह केवल भौतिक दुनिया ही नहीं है जो उस रूप से भिन्न है जिसमें हम इसे देखते हैं; बल्कि शायद सारी वास्तविकता उतनी ही भिन्न है जितना हम स्वयं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर रहे हैं। अगर वृक्ष, सूर्य और आकाश को ऐसे प्राणी देखते जिनकी आँखें हमसे भिन्न संरचना वाली होतीं, या उससे भी बेहतर, जिनके पास आँखों के अलावा अन्य अंग होते जो वृक्ष, आकाश और सूर्य के समतुल्य, भले ही दृश्य न हों, प्रदान करते, तो वे वैसे नहीं होते जैसे हम देखते हैं, तो वे वैसे नहीं होते जैसे हम देखते हैं। चाहे जो भी हो, जुपियन द्वारा मेरे लिए वास्तविक दुनिया का जो अचानक द्वार खोला गया, उसने मुझे भयभीत कर दिया। अभी तक केवल फ्रांस्वा ही प्रकट हुई थी, और उसके बारे में मैंने मुश्किल से ही सोचा था। क्या सभी सामाजिक संबंधों में ऐसा ही होता है? और अगर प्रेम में भी ऐसा ही होता, तो एक दिन यह मुझे कितनी गहरी निराशा में डुबो सकता था? यह भविष्य का रहस्य था। फिलहाल तो केवल फ्रांस्वा ही मायने रखती थी। क्या उसने जुपियन से जो कहा था,

उस पर उसे सचमुच विश्वास था? क्या उसने जुपियन को मेरे साथ उलझाने के लिए ऐसा कहा था, शायद इसलिए कि हम जुपियन की प्रेमिका को उसकी उत्तराधिकारी नियुक्त न करें? किसी भी हालत में, मुझे यह एहसास हो गया था कि फ्रांस्वा मुझसे प्रेम करती है या घृणा करती है, इसका प्रत्यक्ष और निश्चित ज्ञान प्राप्त करना असंभव था। और इस प्रकार, यह वही थीं जिन्होंने सबसे पहले मुझे यह विचार दिया कि कोई व्यक्ति (जैसा कि मैंने कल्पना की थी) हमारे सामने अपने गुणों, दोषों, योजनाओं, हमारे प्रति अपने इरादों को स्पष्ट रूप से उजागर करते हुए स्थिर और स्पष्ट रूप से खड़ा नहीं होता, जैसे कोई बगीचा जिसकी सभी सीमाएँ हमारे सामने फैली हों और हम रेलिंग के माध्यम से उसे निहारते हों, बल्कि वह एक छाया है जिसे हम कभी भेद नहीं सकते, जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान संभव नहीं है, जिसके संबंध में हम उसके शब्दों और कभी-कभी उसके कार्यों के आधार पर अनगिनत धारणाएँ बनाते हैं, हालाँकि न तो शब्द और न ही कार्य हमें अपर्याप्त और जैसा कि सिद्ध होता है, विरोधाभासी जानकारी के अलावा कुछ भी दे सकते हैं—एक छाया जिसके पीछे हम बारी-बारी से, समान औचित्य के साथ, यह कल्पना कर सकते हैं कि वहाँ घृणा और प्रेम की ज्वाला जल रही है।

मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से सचमुच प्यार करता था। ईश्वर से मैं यही सबसे बड़ी खुशी मांग सकता था कि वह उन्हें हर तरह की विपत्ति में डाल दे, और बर्बाद, तिरस्कृत, मुझसे अलग करने वाले सभी विशेषाधिकारों से वंचित, बिना किसी घर या ऐसे लोगों के जो उनसे बात करने की कृपा करें, वह मेरे पास शरण लेने आए। मैंने कल्पना की थी कि वह ऐसा ही करेंगी। और सचमुच, उन शामों में जब वातावरण में या मेरी अपनी स्थिति में कुछ परिवर्तन होने से मेरे मन में बीते दिनों की कुछ भूली हुई यादें उभर आती थीं, तो मुझमें उत्पन्न हुई ताजगी भरी शक्ति का लाभ उठाने के बजाय, उसका उपयोग अपने मन में उन विचारों को समझने के लिए करने के बजाय जो आमतौर पर मुझसे छूट जाते थे, और अंततः काम में लगने के बजाय, मैं जोर से सुनाना, तीसरे व्यक्ति में, कल्पना के प्रवाह के साथ, जो मेरे सुनाने जितना ही व्यर्थ था, एक रोमांच से भरपूर उपन्यास की योजना बनाना पसंद करता था, जिसमें दुर्भाग्य से घिरी डचेस मुझसे सहायता मांगने आती थी - मुझसे, जो परिस्थितियों के विपरीत परिवर्तन से धनी और शक्तिशाली बन गया था। और जब मैंने घंटों तक खुद को उन परिस्थितियों की कल्पना करने दिया, उन वाक्यों का अभ्यास करने दिया जिनसे मैं डचेस का अपने घर में स्वागत करता, तो

स्थिति अपरिवर्तित रही; अफसोस, वास्तव में मैंने उसी महिला से प्रेम करना चुना था, जो अपने व्यक्तित्व में शायद सबसे अधिक गुणों का संयोजन थी; इसलिए, मैं कभी भी उनकी नजरों में कोई स्थान हासिल करने की उम्मीद नहीं कर सकता था; क्योंकि वह सबसे अमीर आम आदमी जितनी ही अमीर थीं - और कुलीन भी; उस व्यक्तिगत आकर्षण को तो छोड़ ही दीजिए जिसने उन्हें फैशन के शिखर पर पहुँचा दिया था और उन्हें बाकी लोगों के बीच एक तरह की रानी बना दिया था।

मुझे लगता था कि हर सुबह इस तरह उसका रास्ता पार करके मैं उसे परेशान कर रहा हूँ; लेकिन अगर मुझमें लगातार दो-तीन दिन तक ऐसा न करने का साहस होता, तो शायद वह परहेज़, जो मेरे लिए इतना बड़ा त्याग होता, श्रीमती डी गुएरमांटेस को पता ही नहीं चलता, या वह इसे मेरे बस से बाहर की कोई बाधा मान लेतीं। और सच में, मैं खुद को उसका पीछा करने से रोकने में तभी सफल हो सकता था जब मैं ऐसा कोई उपाय करूँ जिससे ऐसा करना असंभव हो जाए, क्योंकि उससे मिलने की, एक पल के लिए उसका ध्यान आकर्षित करने की, वह व्यक्ति बनने की जिसे वह प्रणाम करे, की लगातार उठती हुई इच्छा, उसकी नाराज़गी के डर से कहीं ज़्यादा प्रबल थी। मुझे कुछ समय के लिए कहीं दूर जाना पड़ता; और इसके लिए मेरा मन नहीं था। मैंने इस बारे में एक से ज़्यादा बार सोचा। मैं तब फ्रांस्वा को अपने बक्से पैक करने के लिए कहता, और फिर तुरंत बाद उन्हें खोलने के लिए कहता। और जैसे-जैसे नकल करने की भावना, समय से पीछे न रहने की चाहत, व्यक्ति के सबसे स्वाभाविक और सकारात्मक स्वरूप को बदल देती है, वैसे ही फ्रांस्वा, अपनी बेटी की शब्दावली से एक मुहावरा उधार लेते हुए, मुझे 'बेवकूफ' कहा करती थीं। उन्हें यह पसंद नहीं था; वह कहती थीं कि मैं हमेशा 'संतुलन' बनाए रखती हूँ, क्योंकि जब वह आधुनिकतावादियों से प्रतिस्पर्धा करने की आकांक्षा नहीं रखती थीं, तो वह सेंट-साइमन की भाषा का प्रयोग करती थीं। यह सच है कि जब मैं उनसे मालिक-नौकर की तरह बात करती थी, तो उन्हें और भी कम पसंद आता था। वह जानती थीं कि यह मेरे लिए स्वाभाविक नहीं था, और मुझे शोभा नहीं देता था, जिसे उन्होंने शब्दों में 'जहाँ इच्छाशक्ति नहीं होती' कहा था। मेरे पास पेरिस छोड़ने का कभी साहस नहीं होता, सिवाय उस दिशा के जो मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस के करीब ले जाए। यह किसी भी तरह से असंभव नहीं था। क्या मैं वास्तव में सुबह की तुलना में उसके और करीब न हो

जाऊं, जब मैं सड़क पर अकेला, शर्मिंदा और इस भावना से ग्रस्त था कि मेरे मन में जो भी विचार थे, उनमें से एक भी उस तक नहीं पहुंचा, उस थका देने वाली सैर में जो दिन-ब-दिन, हमेशा के लिए बिना किसी लाभ के जारी रह सकती है, अगर मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से मीलों दूर चला जाऊं, बल्कि उसके किसी परिचित के पास जाऊं, किसी ऐसे व्यक्ति के पास जिसे वह अपने मित्रों के चयन में विवेकशील मानती हो और जो मेरे अच्छे गुणों की सराहना करता हो, जो मेरे बारे में उससे बात कर सके, और यदि उससे कुछ प्राप्त न भी कर सके तो कम से कम उसे यह बता सके कि मैं क्या चाहता हूं, किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से, कम से कम इसलिए कि मैं उससे इस या उस संदेश को उस तक पहुंचा सकता हूं या नहीं, मैं अपने एकाकी और मौन चिंतन को एक नया रूप दे सकूं, मौखिक, सक्रिय, जो एक प्रगति, लगभग एक प्राप्ति जैसा प्रतीत होगा। 'गुएरमांटेस' परिवार के रहस्यमय दैनिक जीवन में वह क्या करती थी—यही मेरे विचारों का निरंतर विषय था; और उस रहस्य को भेदने के लिए, भले ही अप्रत्यक्ष साधनों से, जैसे किसी लीवर की मदद से, किसी ऐसे व्यक्ति की सेवाएं लेकर जिसे डचेस के टाउन हाउस, उसकी पार्टियों, उससे बेरोकटोक बातचीत करने की मनाही न हो, क्या यह संपर्क मेरे द्वारा हर सुबह सड़क पर उसके अवलोकन से कहीं अधिक दूर का लेकिन साथ ही अधिक प्रभावी नहीं होगा?

सेंट-लूप की मेरे प्रति मित्रता और प्रशंसा मुझे अनुचित लगती थी और अब तक मुझ पर इसका कोई असर नहीं हुआ था। अचानक ही मुझे उनमें रुचि होने लगी, मैं चाहता था कि वह श्रीमती डी गुएरमांटेस को इसके बारे में बता दें, मैं तो उनसे ऐसा करने के लिए कहने को भी तैयार था। क्योंकि जब हम प्यार में होते हैं, तो हम अपने सभी छोटे-छोटे विशेषाधिकारों को उस स्त्री को बताना चाहते हैं जिसे हम प्यार करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वंचित लोग और अन्य प्रकार के उबाऊ लोग हमें रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बताते हैं। हमें इस बात से दुख होता है कि वह इन विशेषाधिकारों से अनभिज्ञ है; हम इस विचार में सांत्वना ढूंढते हैं कि शायद इसलिए कि ये विशेषाधिकार कभी दिखाई नहीं देते, उसने हमारे बारे में अपनी पहले से बनी राय में कुछ और ऐसे लाभों की संभावना जोड़ दी है जो अभी तक अज्ञात ही रहेंगे।

सेंट-लूप लंबे समय से पेरिस नहीं आ पा रहे थे, चाहे इसका कारण, जैसा कि उन्होंने खुद बताया, उनकी सैन्य जिम्मेदारियाँ हों, या फिर, जैसा कि अधिक संभावना थी, उनकी प्रेमिका

के साथ चल रही अनबन, जिसके साथ वे दो बार संबंध तोड़ने की कगार पर पहुँच चुके थे। उन्होंने मुझे अक्सर बताया था कि अगर मैं उस छावनी कस्बे में उनसे मिलने आऊँ तो उन्हें कितनी खुशी होगी, जिसका नाम, उनके बालबेक छोड़ने के कुछ दिनों बाद, मेरे मित्र से मिले पहले पत्र के लिफाफे पर पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई थी। यह (बालबेक से उतना दूर नहीं जितना कि इसके पूरी तरह से भीतरी इलाके से कोई सोच सकता है) उन छोटे किलेबंद कस्बों में से एक था, जो कुलीन और सैन्य प्रधान थे, और एक विशाल भूभाग में बसे थे, जहाँ सुहावने दिनों में अक्सर दूर तक एक तरह की रुक-रुक कर आने वाली ध्वनि की धुंध तैरती रहती थी, जो—जैसे चिनार के पेड़ों की घुमावदार आकृतियाँ किसी अदृश्य नदी के मार्ग को रेखांकित करती हैं—परेड पर निकले किसी रेजिमेंट की गतिविधियों का संकेत देती थी, जिससे इसकी सड़कों, रास्तों और चौकों का वातावरण धीरे-धीरे एक प्रकार के निरंतर कंपन में बदल गया था, जो संगीतमय और सैन्य था, जबकि बैलगाड़ी या ट्राम की सबसे साधारण ध्वनि भी अस्पष्ट तुरही की आवाज़ में बदल जाती थी, जो सन्नाटे के कारण, भ्रमित कानों को अनिश्चित काल तक दोहराई जाती थी। यह पेरिस से इतना दूर नहीं था कि मैं एक्सप्रेस ट्रेन लेकर वापस लौट सकूँ, अपनी माँ और दादी के पास जा सकूँ और अपने बिस्तर पर सो सकूँ। जैसे ही मुझे इस बात का एहसास हुआ, एक दर्द भरी तड़प से व्याकुल होकर, मुझमें पेरिस न लौटने का फैसला करने की इच्छाशक्ति इतनी कम थी कि मैं इसी शहर में रुक जाऊं; लेकिन साथ ही इतनी कम भी नहीं थी कि मैं कुली को मेरा सामान टैक्सी तक ले जाने से रोक सकूं और उसके पीछे चलते हुए, एक ऐसे यात्री का बेफिक्र मन न बना लूं जो अपने सामान की देखभाल कर रहा हो और जिसकी दादी घर पर कहीं इंतजार नहीं कर रही हों। मैं पूरी तरह से बेफिक्र होकर गाड़ी में बैठ गया, मानो उसने अपनी इच्छाओं के बारे में सोचना बंद कर दिया हो और मानो उसे पता हो कि वह क्या चाहता है, और मैंने ड्राइवर को घुड़सवार सेना की बैरक का पता बता दिया। मैंने सोचा कि शायद सेंट-लूप उस रात उसी होटल में सोने आ जाए जहां मैं ठहरने वाला था, ताकि इस अजनबी शहर से मेरा पहला सामना कम कष्टदायक हो। एक गार्ड उसे ढूंढने गया, और मैं बैरक के द्वार पर उस विशाल पत्थर के जहाज के सामने इंतजार करता रहा, जो नवंबर की हवा से गरज रहा था, जिसमें से हर पल, क्योंकि अब छह

बज चुके थे, लोग दो-दो के जोड़े में सड़क पर निकल रहे थे, लड़खड़ाते हुए मानो वे किसी विदेशी बंदरगाह पर किनारे आ रहे हों जहाँ वे अस्थायी रूप से लंगर डाले हुए थे।
सेंट-लूप बवंडर की तरह प्रकट हुए, उनके चश्मे हवा में घूम रहे थे; मैंने अपना नाम नहीं बताया था, मैं उनकी हैरानी और खुशी का आनंद लेने के लिए उत्सुक था। "ओह! कितना उबाऊ!" उन्होंने अचानक मुझे देखते हुए कहा और उनका चेहरा शर्म से लाल हो गया। "मुझे अभी एक हफ्ते की छुट्टी मिली है, और अगले हफ्ते तक मुझे फिर से छुट्टी नहीं मिलेगी।"
और, इस विचार से व्याकुल होकर कि मुझे यह पहली रात अकेले बितानी पड़ेगी, क्योंकि वह मेरी रात की पीड़ाओं को किसी और से बेहतर जानता था, जिनका उसने बालबेक में अक्सर जिक्र किया था और मुझे दिलासा दिया था, उसने अपना विलाप रोककर मेरी ओर मुड़कर देखा, छोटी-छोटी मुस्कानों से मुझे फुसलाया, कोमल लेकिन असममित निगाहों से, जिनमें से आधी उसकी आँखों से सीधी आ रही थीं, और आधी उसके चश्मे से, लेकिन दोनों ही तरह की निगाहें उस भावना का संकेत थीं जो उसने मुझे दोबारा देखकर महसूस की थी, और उस महत्वपूर्ण मामले का भी संकेत थीं जिसे मैं हमेशा नहीं समझ पाती थी लेकिन जो अब मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, हमारी दोस्ती।
अरे! आप कहाँ सोने वाले हैं? सच में, मैं उस होटल की सिफ़ारिश नहीं कर सकता जहाँ हम ठहरे हैं; वह प्रदर्शनी मैदान के बगल में है, जहाँ अभी-अभी एक शो शुरू हुआ है; आपको वहाँ बहुत भीड़ मिलेगी। नहीं, बेहतर होगा कि आप होटल डी फ्लैंड्रे जाएँ; यह अठारहवीं सदी का एक छोटा सा महल है जिसमें पुरानी टेपेस्ट्री लगी हैं। यह सचमुच एक 'पुराने ज़माने का निवास' जैसा लगता है।
सेंट-लूप ने हर संदर्भ में 'का आभास होता है' के स्थान पर 'का आभास होता है' शब्द का प्रयोग किया, क्योंकि लिखित भाषा की ही तरह बोली जाने वाली भाषा को भी समय-समय पर शब्दों के अर्थों में इन परिवर्तनों और अभिव्यक्ति में इन परिष्कार की आवश्यकता महसूस होती है। और जिस प्रकार पत्रकारों को अक्सर इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं होता कि वे जिन 'भाषण शैली' को अपनाते हैं, वे किस साहित्यिक विधा से आती हैं, उसी प्रकार सेंट-लूप की शब्दावली और स्वयं उनकी भाषा शैली तीन अलग-अलग कला प्रेमियों की नकल में विकसित हुई, जिनमें से किसी को भी वे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे, लेकिन जिनकी

बोलने की शैली अप्रत्यक्ष रूप से उनमें समाहित हो गई थी। “इसके अलावा,” उन्होंने निष्कर्ष निकाला, “जिस होटल की मैं बात कर रहा हूँ, वह आपकी सुनने की अति संवेदनशीलता के लिए लगभग अनुकूल है। आपके आस-पास कोई पड़ोसी नहीं होगा। मैं समझता हूँ कि यह मामूली फ़ायदा है, और चूंकि कल कोई और मेहमान आ सकता है, इसलिए इतने अनिश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उस विशेष होटल को चुनना आपके लिए उचित नहीं होगा। नहीं, मैं इसकी सुंदरता के कारण ही इसकी सिफ़ारिश कर रहा हूँ। कमरे काफ़ी आकर्षक हैं, सारा फ़र्नीचर पुराना और आरामदायक है; इसमें कुछ तसल्ली देने वाली बात है।” लेकिन मेरे लिए, जो सेंट-लूप की तुलना में कम कलाकार था, एक आकर्षक घर से मिलने वाला आनंद सतही, लगभग न के बराबर था, और मेरी बढ़ती हुई पीड़ा को शांत नहीं कर सका, उतनी ही पीड़ादायक जितनी मुझे बहुत पहले कॉम्ब्रे में तब होती थी जब मेरी माँ मुझे शुभ रात्रि कहने के लिए ऊपर नहीं आती थी, या वैसी पीड़ा जो मुझे बालबेक पहुँचने की शाम को उस कमरे में हुई थी जिसकी छत असामान्य रूप से ऊँची थी और जिसमें फूलों वाली घास की महक आ रही थी। सेंट-लूप ने मेरी टकटकी में यह सब पढ़ लिया।

"तुम्हें इस खूबसूरत महल की कितनी परवाह है, मेरे बेचारे; तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है; और मैं यहाँ एक बड़े जानवर की तरह तुमसे उन टेपेस्ट्री के बारे में बात कर रहा हूँ जिन्हें देखने की भी तुम्हारी हिम्मत नहीं होगी। मुझे पता है कि वे तुम्हें किस कमरे में रखेंगे; मुझे व्यक्तिगत रूप से वह कमरा बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हारे संवेदनशील स्वभाव के कारण तुम पर उसका उतना असर नहीं होगा। तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं नहीं समझता; मैं खुद भी ऐसा महसूस नहीं करता, लेकिन मैं खुद को तुम्हारी जगह रखकर देख सकता हूँ।"

उसी क्षण, एक सार्जेंट जो चौक पर घोड़े को दौड़ा रहा था, घोड़े को उछलाने में पूरी तरह मग्न था, गुजरते हुए सैनिकों के सलामों की परवाह किए बिना, बल्कि जो भी उसके रास्ते में आता उसे गालियों की बौछार करते हुए, सेंट-लूप की ओर मुस्कुराते हुए मुड़ा और यह देखकर कि उसके साथ उसका एक दोस्त है, उसने हमें सलाम किया। लेकिन तभी उसका घोड़ा उछल पड़ा। सेंट-लूप ने घोड़े के सिर पर छलांग लगाई, लगाम पकड़ी, उसे शांत करने में सफल हुआ और मेरे पास लौट आया।

"हाँ," उसने बोलना जारी रखा; "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी बात पूरी तरह समझता हूँ; मैं आपके लिए उतना ही दुखी हूँ जितना आप स्वयं हैं। मैं बहुत परेशान हूँ," उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर प्यार से रखते हुए कहा, "जब मैं सोचता हूँ कि अगर मैं आज रात आपके साथ रुक पाता, तो शायद सुबह तक बातें करके मैं आपके दुख को थोड़ा कम कर पाता। मैं आपको कितनी भी किताबें दे सकता हूँ, लेकिन अगर आप इस तरह महसूस कर रही हैं तो आप पढ़ना नहीं चाहेंगी। और मुझे यहाँ मेरी जगह कोई और नहीं मिलेगा; मेरी प्रेमिका मुझसे मिलने आई थी इसलिए मैं लगातार दो बार छुट्टी पर जा चुका हूँ।"
और उसने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, कुछ झुंझलाहट के कारण और कुछ डॉक्टर की तरह यह तय करने की कोशिश में कि मेरी बीमारी का सबसे अच्छा इलाज क्या हो सकता है।
"जाओ और मेरे क्वार्टर में आग जलाओ," उसने हमारे पास से गुजर रहे एक सैनिक को पुकारा। "जल्दी करो; जल्दी करो!"
इसके बाद वह एक बार फिर मेरी ओर मुड़ा, और उसके चश्मे और उसकी भेदक, संकीर्ण दृष्टि ने हमारी गहरी दोस्ती की ओर इशारा किया।
नहीं! तुम्हें यहाँ, इन बैरकों में देखकर, जहाँ मैंने तुम्हारे बारे में इतना सोचा है, मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा। मैं सपना देख रहा हूँ। और तुम कैसे हो? आशा है, बेहतर होगे। तुम्हें अभी अपने बारे में सब कुछ बताना होगा। चलो मेरे कमरे में चलते हैं; हमें चौक पर ज़्यादा देर नहीं रुकना चाहिए, वहाँ बहुत ठंडी हवा चल रही है; मुझे अभी तो नहीं लग रही, लेकिन तुम्हें इसकी आदत नहीं है, मुझे डर है कि तुम्हें सर्दी लग जाएगी। और तुम्हारे काम का क्या? क्या तुमने शुरू किया? नहीं? तुम तो बड़े अजीब हो! अगर मुझमें तुम्हारी प्रतिभा होती तो मैं सुबह-शाम लिखता रहता। तुम्हें कुछ न करना ज़्यादा अच्छा लगता है? कितनी अफ़सोस की बात है कि मेरे जैसे निकम्मे लोग हमेशा काम करने के लिए तैयार रहते हैं, और जो चाहकर भी कर सकते हैं, वो नहीं करते। और हाँ, मैं तुमसे तुम्हारी दादी के बारे में पूछना भूल ही गया। उनके प्राउडहॉन्स सुरक्षित रखे हैं। मैं उनसे कभी अलग नहीं होता।

द्वितीय

एक लंबा, सुंदर और राजसी अधिकारी सीढ़ियों के नीचे से धीमी और गंभीर चाल से निकला। सेंट-लूप ने उसे सलाम किया और अपनी टोपी के शिखर पर हाथ रखते हुए क्षण भर के लिए अपने शरीर की निरंतर अस्थिरता को रोक लिया। लेकिन उसने इतनी ताकत से खुद को सीधा किया था, इतनी तेज़ी से शरीर को संभाला था, और सलाम समाप्त होने के बाद इतनी अचानक ढीली मुद्रा में हाथ नीचे गिरा दिया था, जिससे उसके कंधे, पैर और चश्मे की सभी स्थितियाँ बदल गई थीं। यह क्षण स्थिरता का नहीं, बल्कि एक धड़कते तनाव का था, जिसमें उसकी अभी-अभी की गई और आगे की जाने वाली अत्यधिक हलचलें बेअसर हो गई थीं। इसी बीच, अधिकारी, हमारे पास आए बिना, शांत, दयालु, गरिमामय और शाही, संक्षेप में, सेंट-लूप के बिल्कुल विपरीत, उसने भी बिना किसी जल्दबाजी के अपना हाथ अपनी टोपी के शिखर पर उठाया।

"मुझे कप्तान से बस एक बात कहनी है," सेंट-लूप ने फुसफुसाते हुए कहा। "अच्छे आदमी बनो और मेरे कमरे में मेरा इंतज़ार करो। यह तीसरी मंज़िल पर दाहिनी ओर दूसरा कमरा है; मैं एक मिनट में तुम्हारे पास आ रहा हूँ।"

और अपनी तेज़ गति से चलते हुए, अपने चश्मे को चारों ओर लहराते हुए, वह सीधे उस धीमे और गरिमापूर्ण कप्तान की ओर बढ़ा, जिसका घोड़ा अभी-अभी लाया गया था और जो सवार होने से पहले, किसी ऐतिहासिक चित्र की तरह सधे हुए शाही अंदाज़ में आदेश दे रहा था, मानो वह प्रथम साम्राज्य के किसी युद्ध में भाग लेने जा रहा हो, जबकि वह बस घर जा रहा था, उस घर में जो उसने डोंसिएरेस में अपनी सेवा के दौरान लिया था, और जो एक ऐसे चौक में स्थित था जिसका नाम, मानो इस नेपोलियन युग के आगमन की व्यंग्यात्मक भविष्यवाणी में, प्लेस डे ला रिपब्लिक रखा गया था। मैं सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, हर कील जड़े पायदान पर लगभग फिसलते हुए, बैरक के कमरों की झलकियाँ देखता हुआ, जिनकी खाली दीवारों पर बिस्तरों और साज-सामान की दोहरी कतारें थीं। मुझे सेंट-लूप का कमरा दिखाया गया। मैं एक पल के लिए उसके बंद दरवाजे के बाहर खड़ा रहा, क्योंकि मुझे किसी के हिलने-डुलने की आवाज़ सुनाई दी; उसने कुछ हिलाया, कुछ गिरा दिया; मुझे लगा कि कमरा खाली नहीं है, वहाँ कोई

न कोई ज़रूर होगा। लेकिन यह तो बस नई जलाई हुई आग थी जो अभी-अभी जलनी शुरू हुई थी। वह शांत नहीं रह पा रही थी, लगातार अपनी लकड़ियों को इधर-उधर कर रही थी, और बहुत ही बेढंगे तरीके से। मैं कमरे में दाखिल हुआ; उसने एक लकड़ी को आग में लुढ़का दिया और दूसरी को जला दिया। और जब वह हिल भी नहीं रही थी, तब भी किसी बदतमीज़ की तरह लगातार आवाज़ें निकाल रही थी, जो लपटें उठते ही मुझे आग की आवाज़ें लगने लगीं, हालाँकि अगर मैं दीवार के दूसरी तरफ होता तो मुझे लगता कि कोई नाक पोंछते हुए इधर-उधर घूम रहा है। मैं कमरे में बैठ गया और इंतज़ार करने लगा। लिबर्टी हैंगिंग्स और अठारहवीं सदी के पुराने जर्मन कपड़ों ने उस बदबू को दूर कर दिया जो इमारत के बाकी हिस्सों से आ रही थी, एक भद्दी, बेस्वाद, फफूंदी लगी बदबू, बासी टोस्ट जैसी। इस एकांत कक्ष में ही मैं शांत और प्रसन्न मन से भोजन और नींद ले सकता था। सेंट-लूप लगभग उपस्थित प्रतीत हो रहे थे, क्योंकि उनकी मेज पर बिखरी हुई पाठ्यपुस्तकें, उनकी तस्वीरों के बीच, जिनमें मैं अपनी और डचेस डी गुएरमांटेस की तस्वीर पहचान सकता था, और अंगीठी की रोशनी, जो अंततः चूल्हे पर जल रही थी, और एक जानवर की तरह जो पूरी लगन से चुपचाप, सतर्कतापूर्वक बैठा हो, कभी-कभार सुलगती हुई लकड़ी गिराती थी जो चिंगारियों में बिखर जाती थी या चिमनी के किनारों को अपनी जीभ से चाटती थी। मैंने सेंट-लूप की घड़ी की टिक-टिक सुनी, जो पास ही कहीं थी। यह टिक-टिक हर पल अपनी जगह बदलती रहती थी, क्योंकि मैं घड़ी को देख नहीं सकता था; ऐसा लगता था जैसे यह मेरे पीछे से, मेरे सामने से, मेरे दाहिनी ओर से, मेरे बाईं ओर से आ रही हो, कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे बहुत दूर से गायब हो जाती हो। अचानक मेरी नज़र मेज पर रखी घड़ी पर पड़ी। फिर मैंने उसकी टिक-टिक एक ही जगह पर सुनी, जहाँ से वह फिर कभी नहीं हिली। कहने का तात्पर्य यह है कि मुझे लगा कि मैंने इसे इस स्थान पर सुना; मैंने इसे वहाँ नहीं सुना; मैंने इसे वहाँ देखा, क्योंकि ध्वनियों की अंतरिक्ष में कोई स्थिति नहीं होती। या यूँ कहें कि हम उन्हें गतियों से जोड़ते हैं, और इस तरह वे हमें उन गतियों के बारे में सचेत करने, उन्हें आवश्यक और स्वाभाविक प्रतीत कराने का काम करती हैं। निश्चित रूप से ऐसा अक्सर होता है कि एक बीमार व्यक्ति जिसके कानों में रुई ठूँसी हो, वह सेंट-लूप के चूल्हे में उस समय जल रही आग की चटकने की आवाज़ नहीं सुन पाता, जो अंगारे और राख बना रही होती है और फिर उन्हें फेंडर में

गिरने देती है, न ही वह ट्राम के डिब्बों के गुजरने की आवाज़ सुन पाता है, जिनका संगीत नियमित अंतराल पर ग्रैंडप्लेस ऑफ डोन्सिएरेस के ऊपर से गुजरता है। फिर उस बीमार व्यक्ति को एक किताब पढ़ने दें, और पन्ने उसके सामने चुपचाप पलटते रहेंगे, मानो उन्हें किसी देवता की उंगलियों से हिलाया जा रहा हो। भरते हुए बाथटब की धीमी गड़गड़ाहट आकाश में पक्षियों की चहचहाहट की तरह पतली, धुंधली और दूर की लगने लगती है। ध्वनि का कम होना, उसका क्षीण होना, उसकी हमें चोट पहुँचाने की सारी शक्ति छीन लेता है; कुछ क्षण पहले ही हथौड़े की चोटों से मानो हमारे सिर के ऊपर की छत चकनाचूर हो रही थी, अब हम उनकी ध्वनि को शांत आनंद के साथ ग्रहण करते हैं, प्रकाश, दुलार, दूर से आती हुई, जैसे सड़क किनारे बहती हवा के साथ पत्तों की सरसराहट। हम उन कार्डों के साथ धैर्य का खेल खेलते हैं जिन्हें हम सुनते नहीं, जब तक कि हम यह कल्पना नहीं कर लेते कि हमने उन्हें छुआ ही नहीं है, कि वे अपने आप चल रहे हैं, और हमारे साथ खेलने की इच्छा को भांपते हुए, हमारे साथ खेलना शुरू कर दिया है। और इस संदर्भ में हम स्वयं से पूछ सकते हैं कि क्या प्रेम के मामले में (जिसमें हम जीवन के प्रेम और प्रसिद्धि के प्रेम को भी जोड़ सकते हैं, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ लोग इन बाद की भावनाओं से परिचित हैं), हमें उन लोगों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए जो शोर से परेशान होने पर, उसके बंद होने की प्रार्थना करने के बजाय, अपने कान बंद कर लेते हैं; और, उन्हें अपना आदर्श मानकर, अपना ध्यान, अपनी रक्षात्मक शक्ति स्वयं पर केंद्रित करें, स्वयं को एक लक्ष्य बनाएं ताकि हम उस 'दूसरे व्यक्ति' को न पकड़ें जिससे हम प्यार करते हैं, बल्कि उस व्यक्ति के हाथों पीड़ा सहने की अपनी क्षमता को पकड़ें।

ध्वनियों की समस्या पर लौटते हुए, हमें केवल श्रवण मार्गों को बंद करने वाले गट्ठों को मोटा करना होता है, और वे ऊपर शोर मचा रही लड़की की आवाज़ को एकदम धीमी कर देते हैं; यदि हम और आगे बढ़ें, और गट्ठे को ग्रीस में डुबो दें, तो तुरंत पूरा घर इसके निरंकुश शासन का पालन करने के लिए मजबूर हो जाता है; इसके नियम हमारे दरवाजों से भी आगे तक फैल जाते हैं। धीमी आवाज़ पर्याप्त नहीं है; गट्ठा तुरंत पियानो को बंद करने का आदेश देता है, और संगीत का पाठ अचानक समाप्त हो जाता है; ऊपर के कमरे में इधर-उधर टहल रहे सज्जन अपनी धुन के बीच में ही रुक जाते हैं; गाड़ियों और ट्रामों की आवाजाही इस प्रकार बाधित हो

जाती है मानो किसी सम्राट के आने की उम्मीद हो। और वास्तव में ध्वनियों का यह क्षीणन कभी-कभी हमारी नींद की रक्षा करने के बजाय उसे भंग कर देता है। कल ही हमारे कानों में लगातार शोर, गली और घर में जो कुछ हो रहा था उसका निरंतर वर्णन करते हुए, अंततः हमें एक उबाऊ किताब की तरह सुलाने में सफल रहा; आज रात, हमारी नींद पर छाई खामोशी की चादर को चीरते हुए, एक झटका, बाकी सब से कहीं ज़्यादा तेज़, सुनाई देता है, आह की तरह कोमल, किसी और आवाज़ से अलग, रहस्यमय; और इससे निकलने वाली व्याख्या की पुकार हमें जगाने के लिए काफी है। पल भर के लिए बीमार आदमी के कानों पर से रुई हटा दो और पलक झपकते ही पूरा दिन का उजाला, आवाज़ का सूरज फिर से उग आता है, उसे चकाचौंध कर देता है, उसके ब्रह्मांड में फिर से जन्म लेता है; निर्वासित आवाज़ों का समूह तेज़ी से लौट आता है; हम वहाँ मौजूद हैं, मानो स्वर्गदूतों के समूह का गायन हो, आवाज़ के पुनरुत्थान के समय। खाली सड़कें पल भर के लिए गाती हुई ट्राम-कारों के तेज़, लगातार पंखों की सरसराहट से भर जाती हैं। खुद बेडरूम में, बीमार आदमी ने प्रोमेथियस की तरह आग नहीं, बल्कि आग की आवाज़ पैदा की है। और जब हम रुई के गट्ठों को बढ़ाते या घटाते हैं, तो ऐसा लगता है मानो हम बारी-बारी से उन दो पैडलों में से एक को दबा रहे हों, जिनके द्वारा हमने बाहरी दुनिया के अनुनादी दायरे को विस्तारित किया है।

कुछ ध्वनि अवरोध अस्थायी नहीं होते। जो व्यक्ति पूरी तरह बहरा हो चुका है, वह अपने बिस्तर के पास दूध का बर्तन भी गर्म नहीं कर सकता, बल्कि उसे झुके हुए ढक्कन पर सफेद, बर्फीली परछाईं को देखना ही होगा, जो आने वाले हिमपात की तरह होती है। यह एक चेतावनी का संकेत है, जिसका पालन करना उसके लिए बुद्धिमानी है, और उसे (जैसे प्रभु ने लहरों को शांत रहने का आदेश दिया था) बिजली काट देनी चाहिए; क्योंकि उबलते दूध की परत, जो ऊपर की ओर तेज़ी से बढ़ती है, कई अगल-बगल की गतियों में अपने चरम पर पहुँच रही है, और मलाई से ढकी हुई लटकती हुई पाल को फुलाकर फुला रही है, और अचानक आए तूफान में मोती जैसी चमकती हुई एक फुहार समुद्र में उड़ जाती है—ये पालें, बिजली काट देने पर, यदि बिजली का तूफान समय पर शांत हो जाए, तो वापस मुड़ जाएँगी और घटते ज्वार के साथ गिर जाएँगी, अब वे मैग्नोलिया की पंखुड़ियों में बदल चुकी होंगी। लेकिन अगर बीमार आदमी ज़रूरी सावधानियां बरतने में जल्दबाज़ी न करे, तो जब उसकी

डूबी हुई किताबें और घड़ी दूधिया लहरों से मुश्किल से उभरती हुई दिखाई देंगी, तो उसे बूढ़ी नर्स को बुलाना पड़ेगा, जो चाहे खुद एक प्रख्यात राजनेता हो या मशहूर लेखक, उसे बताएगी कि उसकी समझ पांच साल के बच्चे से ज़्यादा नहीं है। कभी-कभी उस जादुई कमरे में, हमारे और बंद दरवाज़े के बीच, एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो कुछ पल पहले वहां नहीं था; यह एक आगंतुक है जिसके आने की आवाज़ हमें सुनाई नहीं दी, और जो केवल इशारे करता है, जैसे उन छोटे कठपुतली थिएटरों में से किसी एक में कोई आकृति हो, जो उन लोगों के लिए बहुत सुकून देने वाले होते हैं जिन्हें बोली जाने वाली भाषा से नफ़रत हो गई है। और इस पूरी तरह बहरे आदमी के लिए, क्योंकि किसी इंद्रिय का खोना दुनिया में उतनी ही सुंदरता जोड़ता है जितनी उसका बढ़ना, वह अब उस धरती पर परमानंद के साथ चलता है जो लगभग स्वर्ग बन चुकी है, जहां अभी तक ध्वनि का निर्माण नहीं हुआ है। सबसे ऊंचे झरने केवल उसकी आंखों के लिए क्रिस्टल की अपनी धाराएं फैलाते हैं, कांच जैसे समुद्र से भी शांत, स्वर्ग के झरनों की तरह। बहरेपन से पहले ध्वनि उनके लिए किसी गति के कारण का प्रत्यक्ष रूप थी, और अब ध्वनि के बिना गतिमान वस्तुएँ भी बिना किसी कारण के गतिमान प्रतीत होती हैं; अनुनादी गुणों से रहित होकर, वे सहज सक्रियता प्रदर्शित करती हैं, सजीव प्रतीत होती हैं। वे स्वतः गति करती हैं, रुकती हैं, और प्रकाशमान हो उठती हैं। वे स्वतः ही प्रागैतिहासिक काल के पंख वाले राक्षसों की तरह हवा में गायब हो जाती हैं। बहरे व्यक्ति के एकांत और एकांत घर में, जो सेवा उनकी दुर्बलता पूरी होने से पहले ही अधिक विवेकपूर्ण ढंग से मौन में की जा रही थी, अब मूक लोगों द्वारा एक प्रकार की गुप्त कुशलता से सुनिश्चित की जाती है, मानो किसी परीकथा के राजा के दरबार में हो। और, जैसे रंगमंच पर, बहरे व्यक्ति की खिड़की से दिखाई देने वाली इमारत—चाहे वह बैरक हो, चर्च हो या टाउन हॉल—केवल एक दृश्य है। यदि एक दिन वह गिर जाए, तो वह धूल का बादल उड़ा सकती है और दृश्यमान खंडहर छोड़ सकती है; लेकिन, मंच पर मौजूद महल की तुलना में भी कम भौतिक होने के बावजूद, हालांकि इसमें उतनी ही कमी है, यह जादुई ब्रह्मांड में इस तरह समाहित हो जाएगा कि इसके भारी पत्थर के टुकड़ों के गिरने से ध्वनि जैसी किसी भी अशिष्ट चीज से, व्याप्त मौन की पवित्रता धूमिल न हो।

जिस छोटे से बैरक-कमरे में मैं इंतज़ार कर रहा था, वहाँ जो सन्नाटा छाया हुआ था, हालाँकि वह केवल कुछ समय के लिए ही था, अब वह टूट गया। दरवाज़ा खुला और सेंट-लूप अपना चश्मा गिराकर अंदर आ गया।

"आह, मेरे प्यारे रॉबर्ट, आप यहाँ बड़े आराम से बैठे हैं," मैंने उनसे कहा; "कितना अच्छा होता अगर किसी को यहाँ खाने और सोने की अनुमति मिल जाती।"

और निश्चित रूप से, यदि यह नियमों के विरुद्ध न होता, तो मैं वहाँ कितना निर्मल और शांत विश्राम पा सकता था, उस शांति, सतर्कता और उल्लास के वातावरण में, जो हजारों नियंत्रित और चिंतामुक्त इच्छाओं, हजारों बेफिक्र आत्माओं द्वारा बनाए रखा जाता था, उस विशाल समुदाय में जिसे बैरक कहा जाता था, जहाँ समय ने क्रिया का रूप धारण कर लिया था, बाहर घंटे बजाने वाली उदास घंटी की जगह उन्हीं युद्धघोषों की आनंदमयी ध्वनि गूंजती थी, जिसकी गूंजती स्मृति शहर की पक्की सड़कों पर हमेशा जीवित रहती थी, जैसे धूल सूर्य की किरण में उड़ती है;—एक ऐसी आवाज जिसे सुना जाना निश्चित था, और संगीतमय इसलिए थी क्योंकि यह न केवल अधिकार का आज्ञापालन का आदेश था बल्कि ज्ञान का सुख का आदेश भी था।

"तो आप अकेले होटल जाने के बजाय मेरे साथ रुकना और यहीं सोना पसंद करेंगे, है ना?" सेंट-लूप ने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा।

"ओह, रॉबर्ट, इस बारे में व्यंग्य करना आपकी क्रूरता है," मैंने विनती की; "आप जानते हैं कि यह संभव नहीं है, और आप जानते हैं कि मैं वहां कितनी दयनीय स्थिति में रहूंगी।"

"बहुत खूब! आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं!" उसने जवाब दिया। "मुझे अभी-अभी याद आया कि आप आज रात यहीं रुकना चाहेंगे। और यही बात पूछने के लिए मैं कप्तान के पास रुका था।"

"और उसने तुम्हें छुट्टी दे दी?" मैंने हैरानी से पूछा।

उन्हें जरा भी आपत्ति नहीं थी।

"ओह! मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूँ!"

"नहीं; यह तो हद हो जाएगी। लेकिन अभी, मैं अपने बैटमैन को बुलाकर उसे हमारे खाने का इंतज़ाम करने को कह देता हूँ," वह बोलता रहा, जबकि मैं अपने आँसू छिपाने के लिए मुँह फेर लिया।

कई बार सेंट-लूप के दोस्तों के आने से हमारी बातचीत में बाधा उत्पन्न हुई। उसने उन सभी को फिर से बाहर निकाल दिया।

"यहाँ से चले जाओ। दफ़ा हो जाओ!"

मैंने उनसे विनती की कि उन्हें यहीं रहने दें।

नहीं, सच में; वे आपको बुरी तरह से बोर कर देंगे; वे बिल्कुल असभ्य हैं; वे सिर्फ घुड़दौड़ या अस्तबल की दुकान के बारे में ही बात कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं उन्हें यहाँ भी नहीं चाहता; वे मेरे उन अनमोल पलों को बर्बाद कर देंगे जिनका मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ। लेकिन जब मैं कहता हूँ कि ये लोग बुद्धिहीन हैं, तो यह मत सोचिए कि सैन्य क्षेत्र में बौद्धिकता का अभाव है। बिलकुल नहीं। हमारे यहाँ एक मेजर हैं जो बहुत ही शानदार व्यक्ति हैं। उन्होंने हमें एक ऐसा पाठ्यक्रम पढ़ाया है जिसमें सैन्य इतिहास को एक प्रदर्शन की तरह, बीजगणित की एक समस्या की तरह समझाया गया है। यहाँ तक कि सौंदर्य की दृष्टि से भी इसमें एक अनोखी सुंदरता है, जो कभी आगमनात्मक तो कभी निगमनात्मक है, जिसकी आप सराहना किए बिना नहीं रह सकते।

"क्या यह वही अधिकारी नहीं है जिसने मुझे आज रात यहाँ रुकने की अनुमति दी है?"

नहीं; भगवान का शुक्र है! जिस आदमी की आप इतनी मामूली सेवा के लिए इतनी 'पूजा' करते हैं, वह धरती पर चलने वाला सबसे बड़ा मूर्ख है। वह भोजन की देखभाल और किट निरीक्षण में माहिर है; वह सार्जेंट मेजर और मास्टर टेलर के साथ घंटों बिताता है। यही है उसकी मानसिकता। इसके अलावा, यहाँ मौजूद हर किसी की तरह, वह उस उत्कृष्ट मेजर के प्रति घोर तिरस्कार रखता है जिसके बारे में मैं आपको बता रहा था। कोई उससे बात नहीं करता क्योंकि वह एक फ्रीमेसन है और पाप स्वीकार नहीं करता। प्रिंस डी बोरोडिनो अपने घर में ऐसे किसी बाहरी व्यक्ति को कभी नहीं रखेंगे। यह तो सरासर धृष्टता है, उस आदमी के लिए जिसके परदादा एक छोटे किसान थे, और जो नेपोलियन युद्धों के कारण ही ऐसा नहीं कर पाया, अगर वह खुद भी छोटा किसान होता। ऐसा नहीं है कि उसे समाज में अपनी अस्पष्ट स्थिति का एहसास नहीं है, जहाँ वह न तो इंसान है और न ही जानवर। वह जॉकी के सामने शायद ही कभी आता है, उसे वहाँ बहुत असहज महसूस होता है। "तथाकथित राजकुमार," रॉबर्ट ने आगे कहा, जो अनुकरण की उसी भावना से प्रेरित होकर अपने शिक्षकों के

सामाजिक सिद्धांतों और अपने रिश्तेदारों के सांसारिक पूर्वाग्रहों को अपनाकर, अनजाने में मानवता के लोकतांत्रिक प्रेम को साम्राज्य के कुलीन वर्ग के प्रति तिरस्कार से जोड़ चुका था। मैं उनकी चाची की तस्वीर देख रहा था, और यह सोचकर कि चूंकि सेंट-लूप के पास यह तस्वीर है, शायद वह इसे मुझे दे दें, मेरे मन में उनके प्रति स्नेह और भी बढ़ गया और मैंने उनके लिए हज़ारो सेवाएँ करने की इच्छा जताई, जो मुझे इसके बदले में बहुत छोटी सी बात लगी। क्योंकि यह तस्वीर मेरे लिए श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ पहले से हुई सभी मुलाकातों में एक और मुलाकात की तरह थी; बल्कि, एक लंबी मुलाकात की तरह, मानो हमारे रिश्तों में अचानक कोई बदलाव आया हो और वह मेरे बगल में एक बगीचे की टोपी पहने रुक गई हों, और मुझे पहली बार आराम से उनके गोल-मटोल गाल, उनकी धनुषाकार गर्दन, उनकी नुकीली भौंहों को निहारने का मौका दिया हो (जो अब तक उनके तेज़ी से गुज़रने, मेरी धुंधली यादों और मेरी अपूर्ण स्मृति के कारण मुझसे छिपी हुई थीं); और उन रेखाओं का, साथ ही उस स्त्री के नंगे सीने और बाहों का, जिसे मैंने ऊँची गर्दन और लंबी आस्तीन वाली चोली के अलावा कभी नहीं देखा था, चिंतन करना मेरे लिए एक मोहक खोज, एक अनमोल अनुग्रह था। वे रेखाएँ, जो मुझे लगभग एक वर्जित दृश्य लगती थीं, मैं वहाँ उनका अध्ययन कर सकता था, मानो किसी ऐसी ज्यामिति की पाठ्यपुस्तक में, जिसका मेरे लिए कोई महत्व था। बाद में, जब मैंने रॉबर्ट को देखा, तो मैंने पाया कि वह भी अपनी चाची की तस्वीर से थोड़ा मिलता-जुलता था, और एक रहस्यमय प्रक्रिया से, जो मुझे लगभग उतनी ही मार्मिक लगी, क्योंकि भले ही उसका चेहरा सीधे तौर पर उसकी चाची के चेहरे से न बना हो, फिर भी दोनों का एक ही मूल था। कॉम्ब्रे की छवि में डचेस डी गुएरमांटेस की जो विशेषताएं उभर कर सामने आईं - बाज़ की चोंच जैसी नाक, भेदक आंखें - वे रॉबर्ट के चेहरे की हूबहू नकल बनाने के लिए एक आधार के रूप में काम करती प्रतीत हुईं - एक दूसरी मिलती-जुलती, पतली और बेहद कोमल त्वचा वाली प्रतिकृति में - जो लगभग उसकी चाची के चेहरे पर ही अंकित थी। मैंने उसमें एक तीव्र लालसा के साथ गुएरमांटेस की उन विशिष्ट विशेषताओं को देखा, उस जाति की जो एक ऐसी दुनिया के बीच भी इतनी अनूठी बनी रही जिससे वह घुलमिल नहीं पाई, जिसमें वह एक पक्षी रूपी देवत्व की महिमा में एकांत में रही, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि पौराणिक कथाओं के युग में वह एक देवी और एक पक्षी के मिलन की संतान थी।

रॉबर्ट, बिना कारण जाने, मेरे स्पष्ट स्नेह से प्रभावित हुआ। आग की गर्मी और शैम्पेन से मुझे जो सुकून मिला, उससे यह भावना और भी बढ़ गई। शैम्पेन ने मेरे माथे पर पसीने की बूँदें और गालों पर आँसू ला दिए; इसने तीतरों को पचाने में मदद की; मैंने अपना भोजन उसी विस्मय के साथ खाया, जैसे कोई आम इंसान किसी अपरिचित जीवन शैली में वह चीज़ पाता है जिसे वह उस जीवन शैली से वर्जित मानता है—उदाहरण के लिए, एक नास्तिक का विस्मय, जो किसी पादरी के मठ में स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने बैठता है। और अगली सुबह, जब मैं जागा, तो मैं उठा और सेंट-लूप की खिड़की से, जो बहुत ऊँचाई पर होने के कारण पूरे ग्रामीण इलाके को देखती थी, उत्सुकता से अपने नए पड़ोसी से परिचित होने के लिए उस परिदृश्य का अवलोकन किया, जिसे मैं कल देर से पहुँचने के कारण नहीं देख पाया था, जब वह रात के फैले हुए आवरण में सो रहा था। फिर भी, नींद से जागते ही, खिड़की खोलकर बाहर देखने पर मुझे ज़मीन ठीक वैसे ही दिखाई दी जैसे किसी देहाती घर की खिड़की से झील के किनारे दिखाई देती है। ज़मीन अभी भी धुंध की हल्की सफेद चादर में लिपटी हुई थी, जिससे कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन मुझे पता था कि चौक में अपने घोड़ों की देखभाल में व्यस्त सैनिकों के उन्हें संवारने से पहले ही धुंध अपनी चादर उतार देगी। इस बीच, मुझे केवल एक छोटी सी पहाड़ी दिखाई दी, जो बैरक की दीवार से सटी हुई थी, जिसकी पीठ पहले ही अंधेरे से साफ हो चुकी थी, खुरदरी और झुर्रीदार। पाले के पारदर्शी पर्दे के पार से मैं इस अजनबी से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था, जो मुझे भी पहली बार देख रहा था। लेकिन जब मुझे बैरक में आने की आदत पड़ गई, तो मेरी चेतना कि वह पहाड़ी वहाँ मौजूद है, इतनी वास्तविक हो गई, यहाँ तक कि तब भी जब मैं उसे देख नहीं पाता था, जितनी बालबेक के होटल से, पेरिस में हमारे घर से, जिसके बारे में मैं अनुपस्थित—या मृत—मित्रों की तरह सोचता था, यानी उनके अस्तित्व में कोई दृढ़ विश्वास नहीं था। इसी चेतना के कारण, भले ही मैं स्वयं इससे अवगत नहीं था, इसकी परछाई डोनसिएरेस में मेरे द्वारा बनाई गई सूक्ष्म छापों पर खुद को रेखांकित करती रही, और उनमें से, सबसे पहले इस पहली सुबह, सेंट-लूप के कर्मचारी द्वारा इस आरामदायक कमरे में तैयार किए गए चॉकलेट के प्याले से मिली सुखद गर्माहट की छाप पर, जो एक ऐसे प्रकाश केंद्र का प्रभाव पैदा कर रही थी जहाँ से पहाड़ी को देखा जा सकता था—इसे निहारने के अलावा कुछ और करने का विचार, वास्तव में इस पर

चढ़ने का विचार, इसी धुंध के कारण असंभव हो गया था। उस पहाड़ी की आकृति को अपने अंदर समाहित करते हुए, गर्म चॉकलेट के स्वाद और उस विशेष समय में मेरी कल्पनाओं के ताने-बाने से जुड़कर, यह धुंध, बिना मेरे सोचे-समझे, उस दौर से जुड़े मेरे सभी विचारों को नम करने में सफल रही, ठीक वैसे ही जैसे सोने का एक विशाल और न पिघलने वाला टुकड़ा बालबेक की मेरी यादों से जुड़ा रहा था, या जैसे काले बलुआ पत्थर की बाहरी सीढ़ियों की निकटता ने कॉम्ब्रे की मेरी यादों को एक धूसर पृष्ठभूमि प्रदान की थी। हालाँकि, यह धुंध देर तक नहीं टिकी; सूरज ने पहले तो व्यर्थ ही इस पर कुछ तीर चलाए, जिन्होंने इस पर हीरे बिखेरे, अंततः इसे अपने वश में कर लिया। पहाड़ी की भूरी चोटी सूरज की किरणों के सामने खुल सकती थी, जो एक घंटे बाद, जब मैं कस्बे की ओर नीचे गया, तो शरद ऋतु के पत्तों के भूरे रंग और दीवारों पर चिपके चुनावी पोस्टरों के लाल और नीले रंगों को एक ऐसा उत्साह प्रदान कर रही थी जिसने मेरे मन को भी प्रसन्न कर दिया और मुझे फुटपाथ पर पैर पटकने और गाते हुए चलने के लिए प्रेरित किया, जहाँ से मैं खुशी से उछलने से खुद को मुश्किल से रोक पा रहा था।

लेकिन उस पहली रात के बाद मुझे होटल में सोना पड़ा। और मुझे पहले से ही पता था कि वहाँ मुझे दुख ही मिलेगा। यह एक ऐसी असहनीय गंध थी जो मेरे जीवन भर हर नए कमरे से, यानी हर कमरे से निकलती रही थी; जिस कमरे में मैं आमतौर पर सोता था, वहाँ मैं मौजूद नहीं होता था, मेरा मन कहीं और रहता था, और उसकी जगह केवल परिचितता का एहसास ही आता था। लेकिन मैं इस नौकर को, जो मुझसे कम संवेदनशील था, एक नई जगह पर मेरे लिए चीजों की देखभाल करने के लिए नहीं रख सकता था, जहाँ मैं उससे पहले पहुँचा था, जहाँ मैं अकेला पहुँचा था, जहाँ मुझे उस 'स्व' को उसके वातावरण के संपर्क में लाना था जिसे मैं केवल साल भर के अंतराल पर फिर से पाता था, लेकिन हमेशा एक जैसा, कॉम्ब्रे के बाद से, बालबेक में अपने पहले आगमन के बाद से, बिना किसी सांत्वना की संभावना के, एक खुले हुए संदूक के किनारे पर रोते हुए, बिल्कुल भी विकसित नहीं हुआ था।

हुआ यूं कि मैं गलत था। मुझे उदास होने का समय ही नहीं मिला, क्योंकि मैं एक पल के लिए भी अकेला नहीं रहा। असल बात यह थी कि पुराने महल में बनावट और सजावट की एक अनावश्यक भव्यता बची हुई थी, जो एक आधुनिक होटल में बेमेल लगती थी। व्यावहारिक

उपयोग से मुक्त होकर, इस होटल ने अपने लंबे अवकाश काल में एक तरह का जीवन प्राप्त कर लिया था: चारों दिशाओं में घुमावदार गलियारे, जिनमें भटकते हुए व्यक्ति लगातार चलता रहता था; गलियारे जितने लंबे और ड्राइंग रूम जितने अलंकृत लॉबी, जो किसी घर का हिस्सा होने के बजाय स्वयं वहां रहने वालों की तरह प्रतीत होते थे; जो किसी भी कमरे में प्रवेश करके बस नहीं सकते थे, बल्कि मेरे कमरे के बाहर घूमते रहते थे और तुरंत मुझे अपना साथ देने आ जाते थे—एक तरह के पड़ोसी, आलसी लेकिन कभी शोर न मचाने वाले, अतीत के साधारण भूत जिन्हें आगंतुकों के लिए किराए पर दिए गए कमरों के दरवाजों पर चुप रहने की शर्त पर रहने का विशेषाधिकार दिया गया था, और जो हर बार जब मैं उनसे मिलता था, तो मौन सम्मान के साथ मेरा अभिवादन करते थे। संक्षेप में, एक ऐसे आवास का विचार, जो मात्र हमारे दैनिक जीवनयापन के लिए एक आवरण मात्र हो और हमें ठंड से और दूसरों द्वारा उपेक्षित किए जाने से बचाए, इस घर पर बिलकुल लागू नहीं होता था। यह घर कमरों का एक ऐसा समूह था जो किसी बस्ती की तरह वास्तविक था, जहाँ लोग मौन में रहते थे, लेकिन अंदर आते ही उनसे मिलना, उनसे बचना और उनकी सराहना करना अनिवार्य हो जाता था। हम उन्हें परेशान न करने की कोशिश करते थे, और उस विशाल ड्राइंग रूम को बिना आदर के नहीं देख सकते थे, जिसने अठारहवीं शताब्दी में ही अपने पुराने सुनहरे पर्दों और रंगीन छत के बादलों के नीचे सहजता से फैले होने की आदत बना ली थी। और छोटे कमरों के बारे में एक अधिक व्यक्तिगत जिज्ञासा उत्पन्न होती थी, जो समरूपता का कोई ध्यान रखे बिना, उसके चारों ओर असंख्य रूप से फैले हुए थे, अव्यवस्थित रूप से बगीचे तक भागते हुए, जहाँ तीन टूटी हुई सीढ़ियों से आसानी से पहुँचा जा सकता था।

अगर मैं लिफ्ट लिए बिना या मुख्य सीढ़ी से किसी की नज़र में आए बिना बाहर जाना या अंदर आना चाहता, तो एक छोटी निजी सीढ़ी, जो अब इस्तेमाल में नहीं थी, मुझे अपने ऐसे सधे हुए क्रम का सहारा देती थी, जिसमें सीढ़ियाँ एक के ऊपर एक इस तरह व्यवस्थित थीं कि ऐसा लगता था मानो उनमें एक ऐसा सटीक अनुपात मौजूद हो, जैसा रंगों, खुशबुओं और स्वादों में अक्सर हमें एक विशेष, इंद्रिय सुख का अनुभव कराता है। लेकिन ऊपर-नीचे जाने में मिलने वाले इस आनंद को सीखने के लिए मुझे यहाँ आना पड़ा, जैसा कि एक बार पहले आल्प्स के एक स्वास्थ्य केंद्र में जाकर पता चला था कि साँस लेने की क्रिया—जिस पर आमतौर पर ध्यान

नहीं दिया जाता—भी एक निरंतर आनंद हो सकती है। जब मैंने पहली बार उन सीढ़ियों पर कदम रखा, जो मुझे जानने से पहले ही परिचित थीं, मानो उनमें उन आदतों का भावी आकर्षण समाहित हो, जिन्हें मैंने अभी तक नहीं अपनाया था और जो वास्तव में मेरी अपनी बन जाने के बाद कमजोर ही पड़ सकती थीं, तब मुझे उस प्रयास से मुक्ति मिली जो हमें केवल उन चीजों से मिलती है जिनसे लंबे समय तक अभ्यास करने से हम अभ्यस्त हो जाते हैं। मैंने एक कमरे में झाँका; दोहरे दरवाजे मेरे पीछे बंद हो गए, पर्दों ने एक ऐसी खामोशी को अंदर आने दिया जिसमें मैंने खुद को एक प्रकार के उत्साहपूर्ण राजसी ठाठ से परिपूर्ण महसूस किया; पीतल के आभूषणों से सजी संगमरमर की एक शेल्फ—जिसके बारे में यह सोचना गलत होगा कि इसका एकमात्र उद्देश्य डायरेक्टरी की कला का प्रतिनिधित्व करना था—ने मुझे आग की गर्माहट दी, और छोटे पैरों वाली एक छोटी सी आरामकुर्सी ने मुझे इतनी आराम से गर्माहट दी मानो मैं चूल्हे की चटाई पर बैठा हूँ। कमरे की दीवारें उसे दुनिया से अलग करते हुए, एक गहरे आलिंगन में जकड़े हुए थीं, और उसे संपूर्ण बनाने के लिए, दीवारों ने किताबों की अलमारी के लिए जगह बनाई, बिस्तर के लिए एक स्थान आरक्षित किया, जिसके दोनों ओर एक स्तंभ ने अलकोव की ऊँची छत को हवादार ढंग से सहारा दिया। और कमरे की गहराई दो विशाल अलमारियों से बढ़ गई थी, जिनमें से दूसरी की दीवार पर, जब भी कोई इसका उपयोग करे, सुगंध से महकने के लिए, ऑरिस की जड़ों की एक मनमोहक माला लटकी हुई थी; यदि मैं इस अंतर्देशीय एकांत में जाते समय दरवाजों को खुला छोड़ देता, तो वे कमरे के आकार को तीन गुना बढ़ा देते, फिर भी उसका सुगठित आकार बरकरार रहता, और न केवल मेरी आँखों को एकाग्रता के बाद विस्तार का आनंद लेने देते, बल्कि मेरे एकांत के आनंद को और भी बढ़ा देते, जो कि अब भी अटूट था, लेकिन अब बंद नहीं था, और स्वतंत्रता की भावना प्रदान करते। यह कोठरी एक आंगन की ओर खुलती थी, एक सुंदर, एकांतप्रिय अजनबी जिसे पड़ोसी के रूप में पाकर मुझे खुशी हुई, जब अगली सुबह मेरी नजर उस पर पड़ी, अपनी ऊंची दीवारों के बीच कैद, जिसमें कोई और खिड़की नहीं खुलती थी, और ऊपर के साफ आसमान को गुलाबी कोमलता प्रदान करने के लिए केवल दो पीले पड़ते पेड़ ही काफी थे।

सोने से पहले मैंने अपने जादुई राज्य को देखने के लिए कमरे से बाहर निकलने का फैसला किया। मैं एक लंबी गैलरी में चली गई, जो मुझे नींद न आने पर कई चीज़ें दिखा रही थी - एक कोने में रखी आरामकुर्सी, दीवार से लगी मेज पर रखा एक छोटा बर्तन, नीले रंग के बर्तनों में सिनेरिया से भरा एक कटोरा, और एक पुराने फ्रेम में, बहुत पहले की एक महिला की परछाई, जिसके पाउडर लगे बालों में नीले फूल जड़े थे और हाथ में कार्नेशन का एक गुच्छा था। जब मैं अंत तक पहुँचा, तो वह खाली दीवार, जिसमें कोई दरवाजा नहीं खुलता था, मुझसे बस इतना कह रही थी, "अब तुम्हें मुड़कर वापस जाना होगा, लेकिन देखो, तुम यहाँ घर पर हो, यह घर तुम्हारा है।" वहीं, नरम कालीन ने भी अपना महत्व दिखाते हुए कहा कि अगर मैं उस रात नहीं सोया, तो मैं नंगे पैर आसानी से अंदर आ सकता हूँ। खुले मैदान की ओर खुलती खिड़कियों ने मुझे आश्वस्त किया कि वे मेरी निश्चिंत होकर निगरानी रखेंगी और मैं जिस भी समय अंदर आना चाहूँ, मुझे किसी को परेशान करने का डर नहीं है। और एक लटकते पर्दे के पीछे मुझे बस एक छोटी सी कोठरी दिखाई दी, जो दीवार से सटकर, आगे न बढ़ पाने के कारण, दोषी अंतरात्मा के साथ वहीं छिपी हुई थी और चाँदनी में नीली चमकती अपनी छोटी गोल खिड़की से मुझे भयभीत निगाहों से देख रही थी। मैं बिस्तर पर चला गया, लेकिन रजाई, खंभों और साफ-सुथरी चिमनी की मौजूदगी ने मेरा ध्यान पेरिस से भी कहीं अधिक केंद्रित कर दिया और मुझे अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खो जाने से रोक दिया। और चूंकि ध्यान केंद्रित करने की यही विशेष अवस्था हमारी नींद को घेर लेती है, उस पर प्रभाव डालती है, उसे संशोधित करती है, उसे अतीत की किसी न किसी छाप के अनुरूप ढालती है, इसलिए उस पहली रात मेरे सपनों में जो छवियां थीं, वे उस स्मृति से बिल्कुल अलग थीं जिस पर मैं आमतौर पर निर्भर रहता था। अगर सोते समय मैं अपनी सामान्य यादों की धारा में बह जाने के लिए प्रलोभित होता, तो वह बिस्तर, जिसका मुझे अभ्यस्त नहीं था, और करवट बदलते समय अपने विभिन्न अंगों की स्थिति पर जो आरामदायक ध्यान देना पड़ता था, वह मेरी गलती को सुधारने, उलझन सुलझाने और मेरे सपनों के नए धागे को चलाने के लिए पर्याप्त था। नींद के साथ भी ऐसा ही होता है, जैसे बाहरी दुनिया के प्रति हमारी धारणा के साथ। इसे काव्यात्मक बनाने के लिए केवल हमारी आदतों में थोड़ा सा बदलाव ही काफी है; इतना ही काफी है कि कपड़े उतारते समय हम अनजाने में बिस्तर पर सो जाएं, ताकि हमारे स्वप्नलोक के आयाम बदल

जाएं और उसकी सुंदरता का अनुभव हो। हम जागते हैं, अपनी घड़ी देखते हैं, 'चार बजे' देखते हैं; सुबह के केवल चार बजे हैं, लेकिन हमें ऐसा लगता है जैसे पूरा दिन बीत गया हो। कुछ मिनटों की यह झपकी, जो हमने चाही भी नहीं थी, इतनी जीवंतता से हम पर उतरी प्रतीत होती है मानो किसी दैवीय अधिकार से, पूर्ण, विशाल, किसी सम्राट के स्वर्ण-राज के समान। सुबह, इस सोच में डूबे हुए कि मेरे दादाजी तैयार हैं और मेसेग्लिस मार्ग पर हमारी सैर शुरू करने के लिए मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, मैं एक रेजिमेंटल बैंड के शोर से जाग गया जो हर दिन मेरी खिड़कियों के नीचे से गुजरता था। लेकिन कई बार—और मैं इनका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मानव जीवन का सही वर्णन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक उसे उस नींद में डूबा हुआ न दिखाया जाए जिसमें वह डूब जाता है, जो रात-दर-रात उसे इस तरह घेर लेती है जैसे कोई चट्टान समुद्र से घिरी होती है—नींद की बीच वाली परत संगीत के झटके को सहने के लिए काफी मजबूत थी और मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। अन्य सुबहों में यह एक पल के लिए टूट जाती थी; लेकिन, नींद की ताजगी से अभी भी मखमली सी मेरी चेतना (उन अंगों की तरह, जिन्हें स्थानीय एनेस्थेटिक के बाद, दागने पर, पहले तो कुछ महसूस नहीं होता, लेकिन अंत में एक हल्की जलन के रूप में महसूस होता है) को बांसुरी की तीखी आवाज़ों ने धीरे से छुआ, जो एक अस्पष्ट, ठंडी, सुबह की मधुर गुनगुनाहट से उसे सहला रही थीं; और इस संक्षिप्त रुकावट के बाद, जिसमें सन्नाटा संगीत में बदल गया था, ड्रैगून सैनिकों के गुजरने से पहले ही मैं फिर से नींद में डूब गया, और मुझे उस झिलमिलाते, झनझनाते गुलदस्ते की खिलती हुई कलियों से वंचित कर दिया। और मेरी चेतना का वह क्षेत्र, जिसे उसकी खिलती हुई शाखाओं ने छुआ था, इतना संकरा, नींद से इतना घिरा हुआ था कि बाद में, जब सेंट-लूप ने मुझसे पूछा कि क्या मैंने बैंड की आवाज़ सुनी थी, तो मुझे अब यकीन नहीं था कि उसके पीतल के वाद्ययंत्रों की आवाज़ उतनी ही काल्पनिक नहीं थी जितनी कि दिन के दौरान शहर की पक्की सड़कों से हल्की सी भी आवाज़ के बाद गूंजती हुई सुनाई देती थी। शायद मैंने इसे सपने में ही सुना था, शायद जागने के डर से, या फिर न जागने और रेजिमेंट को मार्च करते हुए न देख पाने के डर से। अक्सर, जब मैं उस समय सो रहा होता था जब मुझे लगता था कि शोर मुझे जगा देगा, तो अगले एक घंटे तक मैं कल्पना करता था कि मैं जाग रहा हूँ, जबकि नींद में ही रहता था, और मैं अपने मन में नींद के पर्दे पर धुंधली परछाइयों के ज़रिए उन विभिन्न दृश्यों

को देखता रहता था जिन्हें देखने का भ्रम मुझे होता था, जबकि नींद मुझे उनसे वंचित रखती थी।

दिन भर जो करने का इरादा होता है, नींद के कारण वह केवल सपनों में ही पूरा हो पाता है, यानी नींद के कारण उसका स्वरूप बदल जाता है और वह जागते समय चुने गए मार्ग से अलग दिशा में मुड़ जाता है। वही कहानी अलग मोड़ लेती है और उसका अंत भी अलग होता है। अंततः, सोते समय हम जिस दुनिया में रहते हैं वह इतनी अलग होती है कि जिन लोगों को सोने में कठिनाई होती है, वे सबसे पहले जागृति की दुनिया से बचने का प्रयास करते हैं। घंटों तक आँखें बंद करके, वे उन विचारों को मन में दोहराते रहते हैं जो खुली आँखों से आते। फिर उन्हें यह देखकर थोड़ी राहत मिलती है कि अंतिम क्षण विचार के नियमों के विपरीत एक तर्क के बोझ तले दब रहा है। इस बात का एहसास और इससे उत्पन्न संक्षिप्त 'अनुपस्थिति' यह संकेत देती है कि अब वह द्वार खुल गया है जिसके माध्यम से वे शायद जल्द ही वास्तविकता की अनुभूति से बच निकलेंगे, और दूसरी ओर किसी दूरस्थ विश्राम स्थल पर पहुँच जाएँगे, जिसका अर्थ होगा उनकी एक अच्छी रात। लेकिन हम तब एक बड़ी छलांग लगा चुके होते हैं जब हम वास्तविकता से मुंह मोड़ लेते हैं, जब हम उस गुफा में पहुँच जाते हैं जिसमें 'स्वयं-सुझाव' चुड़ैलों की तरह काल्पनिक बीमारियों या तंत्रिका संबंधी विकारों की पुनरावृत्ति का नरक-कोश तैयार करते हैं, और उस घड़ी की प्रतीक्षा करते हैं जब हमारी अचेतन नींद के दौरान इकट्ठा हुआ तूफान इतनी ताकत से टूटेगा कि नींद टूट जाएगी।

वहाँ से कुछ ही दूरी पर एक गुप्त उद्यान है, जिसमें विचित्र फूलों की तरह कई प्रकार की नींदें पनपती हैं, जो एक-दूसरे से इतनी भिन्न हैं: धतूरे से प्रेरित नींद, ईथर के विभिन्न अर्क से प्रेरित नींद, बेलाडोना से प्रेरित नींद, अफीम से प्रेरित नींद, वेलेरियन से प्रेरित नींद। इन फूलों की पंखुड़ियाँ उस दिन तक बंद रहती हैं जब तक कि नियति का दूत आकर उन्हें स्पर्श करके खोल न दे और घंटों तक उनके अनोखे सपनों की सुगंध को विस्मित और हैरान मन में समाहित न कर ले। उद्यान के अंत में मठ है जिसकी खिड़कियाँ खुली रहती हैं, जिनसे हमें सोने से पहले सीखे गए पाठों की आवाज़ें सुनाई देती हैं, जिन्हें हम जागने के क्षण में ही जान पाएंगे; वहीं, उस क्षण का पूर्वाभास देते हुए, हमारे भीतर के उस अलार्म की गूंजती हुई टिक-टिक सुनाई देती है जिसे हमारी व्यस्तता ने इतनी प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर लिया है कि जब

हमारी गृहणी यह चेतावनी लेकर आती है: "सात बज गए हैं," तो वह हमें जागा हुआ और तैयार पाएगी। हमारे सपनों के द्वार खोलने वाले उस धुंधले कक्ष की दीवारों पर, जिसके भीतर प्रेम के दुखों की विस्मृति निरंतर परिश्रम करती है, जिसका कार्य, कभी-कभी स्मृतियों से भरे दुःस्वप्न द्वारा बाधित और समाप्त हो जाता है, लेकिन फिर शीघ्र ही पुनः आरंभ हो जाता है, जागने के बाद भी हमारे सपनों की यादें टिकी रहती हैं, लेकिन इतनी धुंधली कि अक्सर हम उन्हें पहली बार दोपहर के उजाले में ही देख पाते हैं जब संयोगवश किसी समान विचार की किरण उन पर पड़ती है; उनमें से कुछ सोते समय उज्ज्वल और सुरीले थे, लेकिन अब इतने विकृत हो चुके हैं कि उन्हें पहचानने में असफल होने पर, हम उन्हें जल्दी से धरती में दफनाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते, ठीक वैसे ही जैसे बहुत जल्दी सड़ चुके शव या इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त अवशेष, जो लगभग धूल में मिल चुके हैं कि सबसे कुशल पुनर्स्थापक भी उन्हें उनके मूल रूप में वापस नहीं ला सकता या उनसे कुछ भी नहीं बना सकता। द्वार के पास ही वह खदान है जहाँ हमारी गहरी नींदें उन पदार्थों की खोज में जाती हैं जो मस्तिष्क को इतनी अटूट परत से ढक देते हैं कि, सोने वाले को जगाने के लिए, यहाँ तक कि सुनहरी सुबह में भी, उसकी अपनी इच्छाशक्ति को उसे युवा सिगफ्रीड की तरह ज़ोरदार प्रहार करने पड़ते हैं। इसके आगे, फिर आते हैं वे बुरे सपने जिनके बारे में डॉक्टर मूर्खतापूर्ण ढंग से दावा करते हैं कि वे हमें अनिद्रा से भी ज़्यादा थका देते हैं, जबकि इसके विपरीत वे विचारक को विचारों के तनाव से मुक्ति दिलाते हैं; वे बुरे सपने जिनमें हमारे मृत रिश्तेदार किसी गंभीर दुर्घटना का शिकार होते हुए दिखाए जाते हैं, लेकिन साथ ही साथ उनके शीघ्र स्वस्थ होने की संभावना भी बनी रहती है। तब तक हम उन्हें एक छोटे से चूहे के पिंजरे में रखते हैं, जिसमें वे सफेद चूहों से भी छोटे होते हैं और बड़े-बड़े लाल धब्बों से ढके होते हैं, जिनमें से प्रत्येक से एक पंख निकलता है, और हमें सिसरोनियन संवादों में उलझाए रखते हैं। इस चित्र-पुस्तक के बगल में जागृति की घूमती हुई डिस्क है, जिसके बल पर हम क्षण भर के लिए उस नीरसता के आगे झुक जाते हैं जब हमें पचास साल पहले ध्वस्त हो चुके एक घर में वापस लौटना पड़ता है, जिसकी स्मृति धीरे-धीरे धुंधली होती जाती है क्योंकि नींद कई अन्य यादों से दूर होती जाती है, जब तक कि हम उस स्मृति तक नहीं पहुँच जाते जिसे डिस्क केवल तभी प्रस्तुत करती है जब वह घूमना बंद कर देती है और जो उस दृश्य से मेल खाती है जिसे हम खुली आँखों से देखेंगे।

कभी-कभी मुझे कुछ सुनाई नहीं देता था, मैं उन गहरी नींदों में से एक में डूबा रहता था जिनमें हम एक गड्ढे में गिर जाते हैं, जिससे थोड़ी देर बाद हमें बाहर निकाले जाने पर बहुत खुशी होती है, भारी, अधिक खाया हुआ, उन सभी चीजों को पचाते हुए जो हमारे लिए लाई गई हैं (जैसे अप्सराओं ने शिशु हरक्यूलिस को खिलाया था) उन फुर्तीली, वनस्पति शक्तियों द्वारा जिनकी गतिविधि हमारे सोते समय दोगुनी हो जाती है।

उस तरह की नींद को 'सीसे जैसी गहरी नींद' कहा जाता है, और ऐसा लगता है मानो व्यक्ति स्वयं में विलीन हो गया हो, और ऐसी नींद के टूटने के बाद कुछ क्षणों के लिए बस एक सीसे की छवि बनकर रह जाता है। व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। फिर, अपने मन, अपने व्यक्तित्व की खोज करते हुए, जैसे कोई खोई हुई वस्तु की खोज करता है, वैसे ही कोई अपने आप को ही क्यों पुनः प्राप्त करता है, किसी और को नहीं? जब कोई पुनः सोचना शुरू करता है, तो कल के व्यक्तित्व से भिन्न व्यक्तित्व ही क्यों उसमें अवतरित नहीं होता? यह समझ से परे है कि इस चुनाव को कौन निर्देशित करता है, या लाखों मनुष्यों में से, जिनमें से कोई भी व्यक्ति हो सकता है, वही व्यक्ति क्यों अचूक रूप से उस पर अपना हाथ रखता है जो रातोंरात बन चुका था? जब वास्तव में कोई व्यवधान उत्पन्न हो जाता है—चाहे वह हमारी अचेतन अवस्था पूर्ण हो या हमारे सपने हमसे बिल्कुल भिन्न हों—तो हमें कौन मार्गदर्शन देता है? वास्तव में मृत्यु हो चुकी होती है, जैसे जब हृदय धड़कना बंद कर देता है और जीभ की लयबद्ध रगड़ हमें पुनर्जीवित करती है। इसमें कोई शक नहीं कि यह कमरा, भले ही हमने इसे पहले सिर्फ एक बार देखा हो, उन यादों को जगाता है जिनसे दूसरी, पुरानी यादें जुड़ी होती हैं। या क्या हमारे भीतर कुछ यादें भी दबी हुई थीं जिनके बारे में अब हमें होश आ रहा है? नींद के उस मानसिक अलगाव के उपचारात्मक हमले के बाद जागने पर होने वाला पुनरुत्थान, आखिरकार, उस स्थिति के समान ही होना चाहिए जब हम किसी भूले हुए नाम, पंक्ति या वाक्यांश को याद करते हैं। और शायद मृत्यु के बाद आत्मा के पुनरुत्थान को स्मृति की एक घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।

जब मेरी नींद खुली, तो शरद ऋतु की उन आखिरी सुबहों के धूप से जगमगाते आसमान ने मुझे ललचाया—पर ठंड ने मुझे हतोत्साहित किया—वे सुबहें इतनी चमकदार और इतनी ठंडी थीं, जिनमें सर्दियाँ शुरू होती हैं। मेरा मन करता था कि उठकर उन पेड़ों को देखूँ जिन

पर पत्तियाँ अब केवल कुछ सुनहरे या गुलाबी रंग की लकीरों से ही दिखाई दे रही थीं, जो मानो हवा में किसी अदृश्य जाल पर लटकी हुई थीं। मैंने तकिए से अपना सिर उठाया और गर्दन फैलाई, जबकि मेरा शरीर अभी भी चादर के नीचे छिपा हुआ था; एक बदलते हुए कोकून की तरह मैं एक दोहरा प्राणी था, जिसके विभिन्न अंग एक ही वातावरण में सहज नहीं थे; मेरी आँखों के लिए रंग पर्याप्त था, बिना गर्माहट के; दूसरी ओर मेरा सीना गर्माहट के लिए बेचैन था, रंग के लिए नहीं। मैं तभी उठा जब मेरी आग जल चुकी थी, और मैंने गुलाबी और सुनहरी सुबह के उस नाजुक और पारदर्शी दृश्य को निहारा, जिसमें मैंने कृत्रिम रूप से उस गर्माहट का तत्व जोड़ दिया था जिसकी उसमें कमी थी। मैं अपनी आग को कुरेदता रहा जो एक अच्छे पाइप की तरह जलती और धुआँ छोड़ती रही और मुझे वही आनंद देती रही जो एक पाइप देता है - एक ऐसा आनंद जो भौतिक सुख पर आधारित होने के कारण थोड़ा कठोर था और साथ ही उस आनंद से परे एक शुद्ध कल्पना से ओतप्रोत था। मेरे ड्रेसिंग रूम की दीवारें एक ऐसे कागज से ढकी थीं जिस पर चटख लाल रंग की पृष्ठभूमि पर काले और सफेद फूलों के पैटर्न बने थे, जिनसे अभ्यस्त होने में मुझे कुछ कठिनाई होनी चाहिए थी। लेकिन वे मुझे केवल नवीनता का एहसास कराने में सफल रहीं, मुझे उनसे संघर्ष करने के बजाय संपर्क स्थापित करने के लिए मजबूर करने में, मेरी सुबह की रस्मों की उमंग और लय को नियंत्रित करने में, वे मुझे एक प्रकार के अफीम के फूल के बीच कैद करने में सफल रहीं, जहाँ से मैं एक ऐसी दुनिया को देख सकता था जिसे मैंने पेरिस से बिल्कुल अलग देखा था, उस रंगीन पर्दे से जो मेरा यह नया निवास स्थान था, मेरे माता-पिता के घर से बिल्कुल अलग, और जिसमें एक शुद्ध हवा बहती थी। कुछ दिनों मैं अपनी दादी को फिर से देखने की तीव्र इच्छा से बेचैन हो जाता था, या इस डर से कि कहीं वह बीमार न हों, या फिर पेरिस में अधूरा छोड़े गए किसी काम की याद से, जिसमें कोई प्रगति नहीं हुई थी; कभी-कभी यहाँ भी किसी मुश्किल में फँस जाने का डर मुझे सताता रहता था। इन्हीं चिंताओं में से किसी एक ने मुझे सोने नहीं दिया था, और मैं अपने उस दुख का सामना करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था जो पल भर में मेरे पूरे अस्तित्व को घेर लेता था। तभी मैंने होटल से बैरक में एक संदेशवाहक भेजा, और सेंट-लूप को एक संदेश दिया: मैंने उनसे कहा कि अगर संभव हो—मैं जानता था कि उनके लिए यह बहुत मुश्किल था—तो मैं बहुत आभारी रहूँगा अगर वे एक मिनट के लिए वहाँ आ जाएँ। एक

घंटे बाद वे आ गए; और दरवाजे पर उनकी घंटी सुनकर मैंने खुद को अपनी चिंताओं से मुक्त महसूस किया। मैं जानता था कि अगर वे मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली हैं, तो वे उनसे ज़्यादा शक्तिशाली हैं, और मेरा ध्यान उनसे हटकर उन पर केंद्रित हो गया जिन्हें उन्हें सुलझाना था। वह कमरे में आया और उसने मुझे ताजी हवा के झोंके से घेर लिया, जिसमें वह भोर से पहले से ही इतनी सक्रियता दिखा रहा था, एक जीवंत वातावरण जो मेरे कमरे के वातावरण से बहुत अलग था, जिसके लिए मैंने तुरंत उचित प्रतिक्रियाओं के साथ खुद को अनुकूलित कर लिया।
"मुझे उम्मीद है कि आपको परेशान करने के लिए आप मुझसे नाराज नहीं हुए होंगे; जैसा कि आपने शायद अनुमान लगा लिया होगा, कोई बात मुझे परेशान कर रही है।"
"बिल्कुल नहीं; मुझे लगा कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं, और मुझे यह बहुत अच्छा लगा। मुझे खुशी हुई कि आपने मुझे बुलवाया। लेकिन क्या परेशानी है? क्या सब ठीक नहीं चल रहा? मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?"
उन्होंने मेरी बातें ध्यान से सुनीं और सावधानीपूर्वक उत्तर दिए; लेकिन एक शब्द भी बोलने से पहले ही उन्होंने मुझे अपने जैसा बना दिया था; जिन महत्वपूर्ण कार्यों में वे इतने व्यस्त, सतर्क और प्रसन्न रहते थे, उनकी तुलना में वे चिंताएँ, जिन्हें मैं एक पल पहले तक सहन नहीं कर पा रहा था, मुझे उनके समान ही नगण्य लगने लगीं; मैं उस व्यक्ति के समान था जो कई दिनों से आँखें नहीं खोल पा रहा था, और फिर डॉक्टर को बुलाता है, जो बड़ी सफाई और कोमलता से उसकी पलक उठाता है, उसके नीचे से रेत का एक कण निकालता है और उसे दिखाता है; पीड़ित ठीक हो जाता है और उसे आराम मिलता है। मेरी सारी चिंताएँ एक टेलीग्राम में समाहित हो गईं जिसे सेंट-लूप ने भेजने का जिम्मा लिया। जीवन मुझे इतना अलग, इतना आनंददायक लगने लगा; मुझमें इतनी शक्ति भर गई थी कि मैं कुछ करने के लिए तरस रहा था।
मैंने उससे पूछा, "तुम अभी क्या कर रहे हो?"
मुझे खेद है कि मुझे आपसे विदा लेनी होगी; हमें पौने घंटे में एक रूट मार्च पर जाना है, और मुझे परेड में शामिल होना है।
"तो फिर यहां आना आपके लिए बहुत परेशानी का कारण रहा है?"

"नहीं, कोई परेशानी नहीं है, कप्तान बहुत अच्छे थे; उन्होंने मुझसे कहा कि अगर यह आपके लिए है तो मुझे तुरंत जाना होगा; लेकिन आप समझते हैं, मैं विशेषाधिकार का दुरुपयोग करते हुए दिखना पसंद नहीं करता।"
"लेकिन अगर मैं जल्दी से उठकर तैयार हो जाऊं और अकेले ही उस जगह पर जाऊं जहां आप प्रशिक्षण ले रहे होंगे, तो मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी होगी, और शायद मैं ब्रेक के दौरान आपसे बात कर सकूं।"
"मैं आपको ऐसा करने की सलाह नहीं दूंगा; आप रात भर जागकर एक ऐसी बात को लेकर परेशान होते रहे हैं, जिसका, मैं आपको यकीन दिलाता हूं, जरा भी महत्व नहीं है, लेकिन अब जब यह बात आपको परेशान करना बंद कर चुकी है, तो तकिए पर सिर रखकर सो जाइए, जो आपके तंत्रिका-कोशिकाओं के खनिज-विहीन होने का एक बेहतरीन इलाज साबित होगा; बस जल्दी मत सो जाना, क्योंकि हमारे बैंड के लड़के आपकी खिड़कियों के नीचे से गुजरेंगे; लेकिन जैसे ही वे गुजर जाएंगे, मुझे लगता है कि आपको शांति मिल जाएगी, और हम आज शाम खाने पर फिर मिलेंगे।"
लेकिन जल्द ही मैं लगातार रेजिमेंट को फील्ड ऑपरेशन में प्रशिक्षण लेते देखने जाने लगा, तभी मुझे उन सैन्य सिद्धांतों में रुचि होने लगी जो सेंट-लूप के मित्र खाने की मेज पर समझाया करते थे, और तभी मेरे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा बन गई कि मैं उनके विभिन्न नेताओं को करीब से देखूं, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति जो संगीत को अपना मुख्य अध्ययन बनाता है और अपना जीवन कॉन्सर्ट हॉल में बिताता है, उसे उन कैफे में जाना अच्छा लगता है जहाँ वह ऑर्केस्ट्रा के सदस्यों के जीवन से घुलमिल जाता है। प्रशिक्षण मैदान तक पहुँचने के लिए मुझे बहुत लंबी पैदल यात्रा करनी पड़ती थी। शाम को खाने के बाद नींद की तीव्र इच्छा से मेरा सिर बार-बार बेहोशी की तरह झुक जाता था। अगली सुबह मुझे एहसास हुआ कि मैंने बैंड को उतना ही नहीं सुना जितना कि बालबेक में, उन शामों के बाद जब सेंट-लूप मुझे रिवेबेल में रात के खाने पर ले जाते थे, मैं समुद्र तट पर संगीत कार्यक्रम सुनता था। और जिस क्षण मैं उठना चाहता था, मुझे अक्षमता का एक सुखद एहसास होता था; मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी गहरी, अदृश्य ज़मीन से जकड़ा हुआ हूँ, उन मज़बूत और पौष्टिक जड़ों के जोड़ों से (जिनका एहसास मुझे थकान से हो रहा था)। मैं शक्ति से भरपूर महसूस कर रहा था; जीवन

मेरे सामने और भी विस्तृत प्रतीत हो रहा था; ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं कॉम्ब्रे में अपने बचपन की उस सुखद थकान में लौट आया था, जो मुझे उन दिनों के बाद की सुबहों में महसूस होती थी जब हम गुएरमांटेस की सैर पर जाते थे। कवि बताते हैं कि जब हम किसी ऐसे घर या बगीचे में प्रवेश करते हैं जहाँ हम अपनी जवानी में रहते थे, तो हम एक पल के लिए उस स्वरूप को पुनः प्राप्त कर लेते हैं जो हम बहुत पहले थे। लेकिन ये अत्यंत जोखिम भरी तीर्थयात्राएँ हैं, जो अक्सर सफलता के साथ-साथ निराशा में भी समाप्त होती हैं। विभिन्न वर्षों के समकालीन स्थिर स्थानों को तो हमें अपने भीतर ही खोजना चाहिए। यहीं पर अत्यधिक थकावट के बाद अच्छी नींद का कुछ हद तक लाभ मिलता है। शुभ रात्रि, जो हमें नींद की सबसे गहरी परतों में ले जाती है, जहाँ रात भर की कोई परछाई नहीं, स्मृति की कोई चमक हमारे अंतर्मन के संवाद को रोशन नहीं करती (यदि वह भी न रुके), हमारे शरीर की सतह को इतनी प्रभावी ढंग से पलट देती है और पत्थर की परतों को तोड़ देती है कि हम वहाँ पाते हैं, जहाँ हमारी मांसपेशियाँ नीचे उतरती हैं और अपनी मुड़ी हुई जड़ों को फैलाती हैं और नए जीवन की हवा में साँस लेती हैं, वह बगीचा जिसमें हम बचपन में खेला करते थे। इसे फिर से देखने के लिए यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है; इसे खोजने के लिए हमें भीतर की गहराई में उतरना होगा। जो कभी धरती को ढके हुए था, वह अब उस पर नहीं, बल्कि नीचे है; केवल सैर करना मृत नगर की यात्रा के लिए पर्याप्त नहीं है, खुदाई भी आवश्यक है। लेकिन हम देखेंगे कि कैसे कुछ क्षणभंगुर और आकस्मिक छापें हमें अतीत में और भी अधिक प्रभावी ढंग से वापस ले जाती हैं, अधिक सूक्ष्म सटीकता के साथ, अधिक हल्के पंखों वाली उड़ान के साथ, अधिक अमूर्त, अधिक तीव्र, अधिक अचूक, इन जैविक विस्थापनों से कहीं अधिक अमर।

कभी-कभी मेरी थकान और भी बढ़ जाती थी; मुझे सोने का ज़रा भी मौका नहीं मिला था और मैं कई दिनों से लगातार ऑपरेशन देख रही थी। ऐसे में होटल लौटना कितना सुखद था! बिस्तर पर लेटते ही मुझे ऐसा लगा मानो मैं आखिरकार जादूगरों के चंगुल से निकल आई हूँ, उन तांत्रिकों से जो सत्रहवीं शताब्दी में हमारे पूर्वजों के प्रिय उपन्यासों में दिखाई देते थे। उस रात की नींद और उसके बाद की सुस्त सुबह किसी मनमोहक परी कथा से कम नहीं थी। मनमोहक; शायद सुखदायक भी। मैंने खुद को याद दिलाया कि सबसे तीव्र पीड़ाओं का भी

अपना आश्रय होता है, कि जब सब कुछ विफल हो जाए, तब भी आराम मिल सकता है। इन विचारों ने मुझे बहुत सुकून दिया।

जिन दिनों कोई परेड नहीं होती थी, फिर भी सेंट-लूप को बैरक में रहना पड़ता था, मैं अक्सर उनसे मिलने जाया करता था। यह काफी लंबा रास्ता था; मुझे शहर छोड़कर पुल पार करना पड़ता था, जिसके दोनों ओर से मुझे एक विशाल दृश्य दिखाई देता था। इस ऊँची जगह पर लगभग हमेशा तेज़ हवा चलती रहती थी, और बैरक चौक के तीनों ओर बनी सभी इमारतें हवा से भर जाती थीं, जो किसी गुफा की तरह लगातार गरजती रहती थीं। जब मैं रॉबर्ट का इंतज़ार कर रहा था—वह किसी न किसी काम में व्यस्त था—उसके कमरे के दरवाजे के बाहर या मेस में, उसके कुछ दोस्तों से बात कर रहा था जिनसे उसने मेरा परिचय कराया था (और जिनसे बाद में मैं कभी-कभी मिलने जाता था, तब भी जब वह वहाँ नहीं होता था), खिड़की से तीन सौ फीट नीचे देश को देख रहा था, जो अब खाली था सिवाय उन जगहों के जहाँ हाल ही में बोए गए खेत, जो अक्सर अभी भी बारिश से भीगे हुए और सूरज की रोशनी में चमक रहे थे, हरे रंग की कुछ धारियाँ दिखा रहे थे, जो चमकदार और पारदर्शी थीं जैसे एनामेल। मैं दूसरों को उसके बारे में बात करते हुए सुन सकता था, और मुझे जल्द ही पता चल गया कि वह कितना लोकप्रिय था। अन्य टुकड़ियों से संबंधित कई स्वयंसेवकों में, जो धनी व्यापारियों या पेशेवर पुरुषों के पुत्र थे और उच्च अभिजात वर्ग को केवल बाहर से ही देखते थे और उसके भीतर प्रवेश नहीं करते थे, सेंट-लूप के चरित्र के बारे में जो कुछ भी वे जानते थे, उसके प्रति जो आकर्षण वे स्वाभाविक रूप से महसूस करते थे, वह उस युवक के प्रति उनकी दृष्टि में मौजूद विशिष्टता से और भी मजबूत हो गया था, जिसे उन्होंने शनिवार की शाम को, जब वे पेरिस की छुट्टी पर जाते थे, तो ड्यूक डी'उज़ेस और प्रिंस डी'ऑरलियन्स के साथ कैफे डे ला पैक्स में भोजन करते हुए देखा था। और इसी कारण, उनके सुंदर चेहरे, उनके सहज चलने और अधिकारियों को सलाम करने के तरीके, उनके चश्मे के लगातार हिलने-डुलने, उनकी सेवा वर्दी की बनावट में दिखाई देने वाले दिखावे—हमेशा बहुत ऊँची टोपी, बहुत महीन कपड़े और बहुत गुलाबी रंग की पतलून—के कारण उन्होंने एक ऐसे 'उच्चतम स्तर' का विचार पैदा कर दिया था, जिसके बारे में उनका दृढ़ विश्वास था कि रेजिमेंट के सबसे सुसज्जित अधिकारियों में भी इसकी कमी थी, यहाँ तक कि उस राजसी कप्तान में भी, जिनके कारण

मुझे बैरक में सोने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जो तुलनात्मक रूप से बहुत आडंबरपूर्ण और लगभग साधारण प्रतीत होते थे।

उनमें से एक ने कहा कि कप्तान ने एक नया घोड़ा खरीदा है। “वह जितने चाहे उतने घोड़े खरीद सकता है। मैं रविवार की सुबह एली डेस अकेशियास में सेंट-लूप के पास से गुजरा; अब देखो, उसका घोड़ा कितना शानदार है!” उसके साथी ने जवाब दिया, और वह जानता था कि वह क्या कह रहा है, क्योंकि ये युवक उस वर्ग से थे जो भले ही एक ही घरों में न जाते हों और एक ही लोगों को न जानते हों, फिर भी धन और फुर्सत के कारण, जीवन की उन सभी सुख-सुविधाओं के अनुभव में कुलीन वर्ग से कम नहीं थे जो धन से प्राप्त की जा सकती हैं। कम से कम, उदाहरण के लिए, कपड़ों के मामले में उनकी शालीनता उस लापरवाह रवैये से कहीं अधिक सधी हुई और त्रुटिहीन थी जिसने सेंट-लूप में मेरी दादी को इतना प्रसन्न किया था। बड़े स्टॉकब्रोकरों या बैंकरों के इन बेटों को, थिएटर के बाद सीप खाते हुए, बगल की मेज पर सार्जेंट सेंट-लूप को देखकर बहुत रोमांच हुआ। और सोमवार की रात को, सप्ताहांत की छुट्टी के बाद, बैरक में सुनाने के लिए एक अनोखी कहानी थी। उनमें से एक रॉबर्ट की स्क्वाड्रन में था, जिससे रॉबर्ट ने 'अत्यंत विनम्रता से' पूछा था, जबकि दूसरा, जो उसी स्क्वाड्रन में नहीं था, पूरी तरह आश्वस्त था कि इसके बावजूद, सेंट-लूप ने उसे पहचान लिया था, क्योंकि उसने दो-तीन बार अपना चश्मा ऊपर उठाया और बोलने वाले की दिशा में घूर कर देखा था।

"हां, मेरे भाई ने उसे पैक्स में देखा था," एक अन्य व्यक्ति ने कहा, जो अपना दिन अपनी प्रेमिका के साथ बिता रहा था; "मेरे भाई का कहना है कि उसका ड्रेस कोट बहुत ढीला था और उसे फिट नहीं आया।"

"वो जैकेट कैसी थी?"

"उसने सफेद जैकेट नहीं पहनी थी; वह बैंगनी रंग की थी, जिस पर ताड़ के पेड़ जैसे निशान बने थे; बेहद खूबसूरत!"

पुराने सैनिकों (जहाँ के निवासी, जिन्होंने जॉकी क्लब के बारे में कभी सुना भी नहीं था और सेंट-लूप को अति-धनी गैर-कमीशन अधिकारियों की श्रेणी में रखते थे, जिसमें वे सभी शामिल थे जो दिवालिया हों या न हों, एक विशेष ठाठ-बाठ से रहते थे, जिनकी आय या ऋण कई अंकों में होते थे और जो अपने सैनिकों के प्रति उदार थे) के लिए, सेंट-लूप की चाल, चश्मा, पैंट और

टोपी, भले ही उन्हें उनमें कुछ भी विशेष रूप से कुलीनतापूर्ण न दिखता हो, फिर भी उतना ही दिलचस्प और अर्थपूर्ण था। उन्होंने इन विशिष्टताओं में उस चरित्र, उस शैली को पहचाना जो उन्होंने रेजिमेंट के इस सबसे लोकप्रिय अधिकारी को हमेशा के लिए दे दी थी, एक ऐसा व्यवहार जो किसी और जैसा नहीं था, अपने वरिष्ठ अधिकारियों की राय के प्रति उनकी तिरस्कारपूर्ण उदासीनता, जो उन्हें अपने अधीनस्थों के प्रति उनकी अच्छाई का स्वाभाविक परिणाम प्रतीत होती थी। कैंटीन में सुबह की एक कप कॉफी, बैरक के कमरे में दोपहर का आराम, किसी तरह अधिक सुखद लगता था, जब कोई बूढ़ा सैनिक भूखे, आलसी दस्ते को सेंट-लूप द्वारा परेड में पहनी गई टोपी के बारे में कोई स्वादिष्ट जानकारी देता था।
"यह मेरे पैक की सबसे ऊंची चोटी थी।"
"बस करो यार, तुम हमसे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हम इस पर विश्वास कर लेंगे; यह तुम्हारे झुंड की ऊंचाई तो हो ही नहीं सकती थी," एक युवा कॉलेज स्नातक ने बीच में ही टोकते हुए कहा, जो इन बोलचाल की भाषा का प्रयोग करके 'पढ़ा-लिखा भिखारी' न दिखना चाहता था और इस विरोधाभास का सहारा लेकर उस तथ्य की पुष्टि प्राप्त करना चाहता था जिसका विचार उसे मंत्रमुग्ध कर रहा था।
"ओह, तो ये मेरे बैग की ऊंचाई नहीं थी, है ना? मुझे लगता है तुमने नापा होगा! मैं तुम्हें इतना बता दूं, कमांडिंग ऑफिसर ने उसे ऐसे घूरा जैसे उसे जेल में डाल देना चाहता हो। लेकिन तुम्हें ये सोचने की ज़रूरत नहीं है कि महान सेंट-लूप को घुटन महसूस हुई होगी; नहीं, वो इधर-उधर हिलता रहा, कभी सिर झुकाता तो कभी ऊपर उठाता, और वो चमकता हुआ शीशा हर समय उसकी आंख में लगा रहा। देखते हैं 'कैपस्टन' क्या कहता है जब वो सुनेगा। ओह, बहुत मुमकिन है कि वो कुछ नहीं कहेगा, लेकिन तुम यकीन मानो कि वो खुश नहीं होगा। लेकिन उस टोपी में कुछ भी खास नहीं है। मैंने सुना है कि उसके पास तीस से ज़्यादा टोपियां हैं, शहर वाले घर में।"
"यह बात तुमने कहाँ से सुनी, बूढ़े आदमी? हमारे उस बदमाश कॉर्पोरल-कुत्ते से?" युवा स्नातक ने नए-नए बोलने के तरीकों का प्रदर्शन करते हुए पूछा, जिन्हें उसने हाल ही में सीखा था और जिनका इस्तेमाल वह अपनी बातचीत को सजाने में गर्व से करता था।
मैंने यह कहाँ सुना? उसके बैटमैन से; आपको क्या लगता है?

"अहा! अब बात बनी। ये तो वाकई वो आदमी है जिसे पता है कि वह कितना समृद्ध है!"
"मुझे तो यही कहना चाहिए! उसके पास मुझसे कहीं ज़्यादा पैसा है, इसमें कोई शक नहीं! और तो और, वह उसे अपनी सारी चीज़ें देता है, और सब कुछ। उसका कहना है कि उसे ठीक से खाना नहीं मिल रहा था। तभी डी सेंट-लूप आता है और खूब हंगामा मचाता है: 'मैं चाहता हूँ कि उसे ठीक से खाना मिले, समझे?' वह कहता है, 'और मुझे इस बात की परवाह नहीं कि इसमें कितना खर्च आएगा।'"
बूढ़े सैनिक ने वक्ता की एक कमजोर नकल करते हुए, अपने लहजे में जोर देकर उद्धृत शब्दों की तुच्छता की भरपाई की, जो बेहद सफल रही।
बैरक से निकलते ही मैं टहलने निकल जाता, और फिर, हर शाम की तरह, सेंट-लूप के साथ उस होटल में भोजन करने जाने से पहले, जहाँ उसने और उसके दोस्तों ने अपना भोजनालय स्थापित किया था, समय बिताने के लिए, सूरज ढलते ही मैं अपने कमरे में लौट आता, ताकि मुझे आराम करने और पढ़ने के लिए कुछ घंटे मिल सकें। चौक में, शाम की रोशनी ने किले के छोटे-छोटे गुंबदों को गुलाबी बादलों से सजा दिया था, जो ईंटों के रंग से मेल खाते थे, और जहाँ भी रोशनी उन पर पड़ती थी, ईंटों के रंग को हल्का करके सामंजस्य को पूरा करते थे। मेरे शरीर में इतनी ऊर्जा का प्रवाह था कि मेरी कोई भी हरकत उसे कम नहीं कर सकती थी; फुटपाथ के किसी पत्थर को छूते ही मेरा हर कदम उससे टकराकर वापस उछल जाता था। ऐसा लगता था मानो मेरी एड़ियों पर बुध के पंख उग आए हों। एक फव्वारा लालिमा से जगमगा रहा था, जबकि दूसरे में चाँदनी ने पानी को दूधिया रंग में रंगना शुरू कर दिया था। उनके बीच बच्चे खेल रहे थे, तीखी आवाज़ें निकाल रहे थे, गोल-गोल घूम रहे थे, मानो किसी तात्कालिक आवश्यकता का पालन कर रहे हों, जैसे चिड़िया या चमगादड़। होटल के बगल में, पुराने राष्ट्रीय न्यायालय और लुई सोलहवीं शताब्दी का संतराघर, जिसमें अब बचत बैंक और सेना कोर का मुख्यालय स्थापित था, अंदर से अपने गैस-जेट के हल्के सुनहरे गोलों से रोशन थे, जो बाहर के अभी भी साफ दिन के उजाले में दिखाई दे रहे थे, उन विशाल, ऊँची, अठारहवीं शताब्दी की खिड़कियों के साथ मेल खा रहे थे, जिनसे डूबते सूरज की अंतिम किरणें अभी तक विलीन नहीं हुई थीं, जैसे रूज से निखरे रंग के चेहरे पर पीले कछुए की खोल का मुकुट जँचता, और मुझे अपने चूल्हे और उस दीपक को खोजने के लिए प्रेरित कर

रहे थे, जो मेरे होटल के छायादार अग्रभाग में अकेला ही बढ़ते अंधेरे का मुकाबला करने की कोशिश कर रहा था, और जिसके लिए मैं पूरी तरह अंधेरा होने से पहले ही अंदर चला गया, आनंद के लिए, जैसे किसी स्वादिष्ट भोजन के लिए। अपने कमरे में रहते हुए भी, मैंने वही गहन अनुभूति महसूस की जो मैंने बाहर की थी। इसने उन चीजों को भी एक स्पष्ट उत्तल सतह प्रदान कर दी जो आम तौर पर सपाट और खाली लगती हैं, जैसे आग की पीली लौ, छत पर लगा मोटा नीला कागज जिस पर डूबते सूरज ने लाल चाक से किसी स्कूली बच्चे की तरह घुमावदार आकृतियाँ बना दी थीं, गोल मेज पर बिछा अनोखा पैटर्न वाला कपड़ा जिस पर निबंध लेखन के लिए कागज का एक बंडल और एक स्याही की दवात मेरे लिए तैयार रखी थी, साथ में बर्गोट का एक उपन्यास भी। तब से ये चीजें मुझे एक संपूर्ण अस्तित्व से समृद्ध प्रतीत होती हैं, जिसे मैं महसूस करता हूँ कि अगर मुझे इन्हें फिर से देखने का मौका मिले तो मैं उनसे प्राप्त कर सकूँगा। मैंने खुशी से उन बैरकों के बारे में सोचा जिन्हें मैं अभी-अभी छोड़कर आया था और हवा के हर झोंके के साथ उनके घूमने वाले तार के बारे में। जैसे कोई गोताखोर पानी की सतह से ऊपर उठने वाली पाइप के माध्यम से सांस लेता है, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं एक तरह से स्वस्थ, खुले वातावरण वाले जीवन के साथ संपर्क बनाए रख रहा था, जब मैंने उन बैरकों, उस विशाल वेधशाला को, जो हरे रंग की नहरों से घिरे ग्रामीण इलाकों पर हावी थी, एक चारागाह के रूप में रखा था, जिसकी विभिन्न इमारतों में जाना मैं एक अमूल्य विशेषाधिकार मानता था, जिसकी मैं आशा करता था कि वह कायम रहेगा, मेरी जब चाहे जाने की स्वतंत्रता, हमेशा स्वागत की निश्चितता के साथ।

सात बजे मैंने कपड़े पहने और सेंट-लूप के साथ उनके होटल में भोजन करने के लिए निकल पड़ा, जहाँ वे अक्सर भोजन करते थे। मुझे वहाँ पैदल जाना अच्छा लगता था। अब तक घना अंधेरा हो चुका था, और मेरी यात्रा के तीसरे दिन के बाद, रात होते ही बर्फीली हवा चलने लगी, जो मानो बर्फ गिरने का संकेत थी। चलते हुए, सच कहूँ तो, मुझे एक पल के लिए भी श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में सोचना नहीं रोकना चाहिए था; मैं तो बस उनके करीब आने की कोशिश में रॉबर्ट की चौकी पर आया था। लेकिन यादें, दुख, क्षणभंगुर चीजें हैं। ऐसे दिन होते हैं जब वे इतनी दूर चले जाते हैं कि हमें उनका एहसास भी नहीं होता, हम सोचते हैं कि वे हमेशा के लिए चले गए हैं। तब हम दूसरी चीजों पर ध्यान देते हैं। और इस कस्बे की गलियाँ

अभी तक मेरे लिए वैसी नहीं बनी थीं जैसी उस जगह की गलियाँ होती हैं जहाँ हम रहने के आदी होते हैं, बस एक हिस्से से दूसरे हिस्से को जोड़ने का साधन। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस अज्ञात संसार के निवासियों का जीवन अद्भुत होगा, और अक्सर किसी घर की रोशन खिड़कियाँ मुझे अँधेरे में काफी देर तक स्थिर खड़ा रखती थीं, मानो वे मेरे सामने उस जीवन के वास्तविक और रहस्यमय दृश्य प्रस्तुत कर रही हों, जिसमें मैं प्रवेश नहीं कर सकता था। यहाँ अग्नि-आत्मा ने मुझे बैंगनी रंग में एक शाहबलूत विक्रेता का स्टॉल दिखाया, जिसमें दो सार्जेंट, अपनी बेल्ट कुर्सियों की पीठ पर लटकाए, ताश खेल रहे थे, और उन्हें सपने में भी नहीं पता था कि एक जादूगर की छड़ी उन्हें रात के अंधेरे से प्रकट कर रही है, जैसे मंच पर कोई पारदर्शी वस्तु, और ठीक उसी क्षण उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में एक राहगीर की आँखों के सामने प्रस्तुत कर रही है - जिसे वे देख नहीं सकते थे। एक छोटी सी अनोखी दुकान में, लगभग पूरी तरह जल चुकी एक मोमबत्ती, एक उत्कीर्ण चित्र पर अपनी गर्म रोशनी बिखेर रही थी, मानो उसे सुनहरे रंगों में पुनर्मुद्रित किया गया हो। वहीं, अंधेरे से जूझते हुए, बड़े दीपक की रोशनी चमड़े के एक टुकड़े को चमका रही थी, उस पर आग की लपटों से जड़े खंजर को सजा रही थी, और उन चित्रों पर, जो केवल खराब प्रतियां थीं, समय की चमक या किसी उस्ताद द्वारा इस्तेमाल किए गए वार्निश की तरह सोने की एक अनमोल परत फैला रही थी। वास्तव में, वह पूरी झोपड़ी, जिसमें केवल पिंचबेक का कूड़ा-करकट था, रेम्ब्रांट की एक अद्भुत रचना लग रही थी। कभी-कभी मैं अपनी नज़र किसी विशाल पुराने मकान पर उठाता, जिसके शटर बंद नहीं थे और जिसमें जलमग्न पुरुष और महिलाएं रात ढलने के बाद लगातार दीपों के कुओं से उठने वाले उस समृद्ध तरल में धीरे-धीरे इधर-उधर तैर रहे थे, जो कमरों को पत्थर और कांच की बाहरी दीवारों के किनारे तक भर देता था, और उनके शरीर की गति से उसमें लंबी, चिकनी सुनहरी लहरें उठती थीं। मैं अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा, और अक्सर, गिरजाघर के पास से गुज़रने वाली उस अंधेरी गली में, ठीक वैसे ही जैसे बहुत पहले मेसेग्लिस जाने वाली सड़क पर, मेरी इच्छा की प्रबलता मुझे जकड़ लेती थी; ऐसा लगता था कि कोई स्त्री अवश्य प्रकट होने वाली है, ताकि मेरी इच्छा पूरी हो सके; अगर अंधेरे में, अचानक मुझे किसी की स्कर्ट छूती हुई महसूस होती, तो उस समय मुझे जो आनंद मिलता, उसकी तीव्रता इतनी तीव्र होती कि मेरे लिए यह मानना असंभव हो जाता कि यह संपर्क

आकस्मिक था और मैं उस भयभीत अजनबी को अपनी बाहों में भर लेने का प्रयास करता। यह गोथिक गली मेरे लिए इतनी वास्तविक थी कि अगर मैं वहाँ किसी स्त्री को आकर्षित करने और उसके साथ आनंद लेने में सफल हो जाता, तो मेरे लिए यह मानना असंभव नहीं होता कि यह उस स्थान का प्राचीन आकर्षण ही था जो हमें एक साथ ला रहा था, और भले ही वह वहाँ हर शाम खड़ी रहने वाली एक आम राहगीर ही क्यों न होती, फिर भी सर्द रात, वह अजीब जगह, वह अंधेरा, वह मध्ययुगीन वातावरण उसे अपना रहस्यमय आकर्षण प्रदान कर देता। मैंने सोचा कि मेरे लिए आगे क्या हो सकता है; मैडम को भूलने की कोशिश करना। डी गुएरमांटेस मुझे एक भयानक चीज़ लगी, लेकिन तर्कसंगत भी, और पहली बार संभव, शायद आसान भी। इस मोहल्ले की पूर्ण शांति में, मुझे अपने आगे से चिल्लाने और हँसने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जो नशे में धुत जश्न मनाने वालों की लड़खड़ाती हुई घर वापसी की आवाज़ें होनी चाहिए थीं। मैं उन्हें देखने के लिए इंतज़ार करता रहा, मैं उस दिशा में टकटकी लगाए देखता रहा जहाँ से मैंने आवाज़ सुनी थी। लेकिन मुझे कुछ देर इंतज़ार करना पड़ा, क्योंकि आसपास का सन्नाटा इतना गहरा था कि दूर से आ रही आवाज़ें भी पूरी स्पष्टता और तीव्रता के साथ सुनाई दे रही थीं। आखिरकार जश्न मनाने वाले दिखाई दिए; जैसा मैंने सोचा था, मेरे सामने नहीं, बल्कि बहुत पीछे। चाहे गलियों के चौराहे या इमारतों के बीच में होने के कारण प्रतिध्वनि से यह ध्वनिक त्रुटि हुई हो, या फिर इसलिए कि जब आवाज़ का स्रोत ज्ञात न हो तो उसका पता लगाना बहुत मुश्किल होता है, मैं दिशा और दूरी दोनों के बारे में उतना ही गलत था।

हवा तेज़ हो गई। आसमान घना था और बर्फ़बारी की आशंका से भरा हुआ था। मैं मुख्य सड़क पर लौटा और उस छोटी ट्राम-कार में सवार हो गया, जिसके प्लेटफार्म से एक अधिकारी, बिना देखे ही, फुटपाथ पर धीरे-धीरे चल रहे असभ्य सैनिकों के अभिवादन का जवाब दे रहा था। ठंड से उनके चेहरे लाल हो गए थे, और इस छोटे से कस्बे में, जो शरद ऋतु से अचानक शीत ऋतु में बदल जाने के कारण उत्तर की ओर कहीं और चला गया प्रतीत होता था, मुझे ब्रूगेल द्वारा चित्रित उन हंसमुख, मौज-मस्ती करने वाले, ठंड से जमे हुए किसानों के लाल चेहरों की याद आ गई।

और वाकई, जिस होटल में मुझे सेंट-लूप और उनके दोस्तों से मिलना था और जहाँ अब शुरू हो रहे मेले ने दूर-दूर से कई लोगों को आकर्षित किया था, वहाँ मैंने देखा कि जैसे ही मैं आँगन से तेज़ी से गुज़रा, जहाँ चमकती रसोई की झलकियाँ दिख रही थीं जिनमें मुर्गियाँ सीखों पर घूम रही थीं, सूअर भुन रहे थे, और लॉबस्टर को ज़िंदा ही उस आग में फेंका जा रहा था जिसे मकान मालिक 'शाश्वत अग्नि' कहता था, वहाँ नए आने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी थी (जैसे बेथलहम के सामने लोगों की गिनती का चित्र, जैसा कि पुराने फ्लेमिश चित्रकार किया करते थे)। वे समूह बनाकर वहाँ जमा हो गए और मकान मालिक या उसके किसी कर्मचारी से (जो अगर उन्हें पसंद नहीं करता था, तो शहर में कहीं और ठहरने की सलाह देता था) पूछ रहे थे कि क्या उन्हें रात का खाना और बिस्तर मिल सकता है, जबकि एक रसोइया गर्दन से एक तड़पती हुई मुर्गी को पकड़े हुए तेज़ी से निकल गया। और इसी तरह, उस बड़े भोजन कक्ष में, जिसे मैंने पहले दिन पार किया था, छोटे कमरे में आने से पहले जहाँ मेरा दोस्त मेरा इंतज़ार कर रहा था, ऐसा लग रहा था मानो यह किसी सुसमाचार में वर्णित दावत हो, जिसे मध्ययुगीन सादगी और विशिष्ट फ्लेमिश अतिशयोक्ति के साथ चित्रित किया गया हो। मछलियों, मुर्गियों, तीतरों, वुडकॉक, कबूतरों की प्रचुरता देखकर मन को याद आ गया, जिन्हें सजे-धजे और गरमागरम लाया गया था। ये सभी वेटर पॉलिश किए हुए फर्श पर तेज़ी से फिसलते हुए लाए गए थे और उन्हें विशाल नक्काशी की मेज पर रख दिया गया था, जहाँ उन्हें तुरंत काटा गया था, लेकिन चूंकि मेरे आने तक अधिकांश लोग लगभग खाना खा चुके थे, इसलिए वे वहाँ बिना छुए पड़े रहे, मानो उनकी प्रचुरता और उन्हें लाने वालों की जल्दबाजी भोजन करने वालों की आवश्यकताओं के कारण नहीं, बल्कि पवित्र ग्रंथ के प्रति सम्मान के कारण थी, जिसका अक्षरशः पालन किया गया था, लेकिन स्थानीय रीति-रिवाजों से लिए गए वास्तविक विवरणों द्वारा विचित्र रूप से चित्रित किया गया था, और भोजन की प्रचुरता और साज-सज्जा के माध्यम से दावत की गंभीरता को स्पष्ट करने के लिए एक सौंदर्यपरक और धार्मिक संशय के कारण थी। सेवकों की लगन। इनमें से एक सेवक कमरे के दूसरे छोर पर एक साइडबोर्ड के पास सोच में डूबा खड़ा था; और यह जानने के लिए कि हमारी मेज किस कमरे में लगाई गई थी, मैं उस व्यक्ति से आगे बढ़ा, जो मुझे उत्तर देने के लिए पर्याप्त शांत प्रतीत हो रहा था, और मैं उन गर्म तवे के बीच से रास्ता बना रहा था जो देर से आने वालों की प्लेटों को ठंडा होने से बचाने के

लिए इधर-उधर जलाए गए थे (हालाँकि, इससे कमरे के बीच में रखी मिठाई को एक विशाल पुतले के फैले हुए हाथों पर ढेर होने से नहीं रोका जा सका, जो कभी-कभी एक बत्तख के पंखों पर टिका होता था, जो देखने में क्रिस्टल का लगता था, लेकिन वास्तव में बर्फ का था, जिसे एक मूर्तिकार-रसोइया द्वारा हर दिन गर्म लोहे से फ्लेमिश शैली में नए सिरे से तराशा जाता था)। मैं अपने सहयोगियों द्वारा धक्का दिए जाने के जोखिम के बावजूद सीधे उस सेवक की ओर बढ़ा, जिसमें मुझे लगा कि मैंने एक ऐसे चरित्र को पहचाना है जो पारंपरिक रूप से इन सभी पवित्र विषयों में मौजूद होता है, क्योंकि उसने बड़ी सटीकता से उन कुंद, मूर्ख और खराब ढंग से चित्रित चेहरों, चिंतनशील भावों को दोहराया, जो पहले से ही उस दिव्य उपस्थिति के चमत्कार से आधा अवगत थे, जिसका दूसरों को अभी तक संदेह भी नहीं हुआ था। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि शायद आगामी मेले को ध्यान में रखते हुए, इस प्रस्तुति को देवदूतों और फरिश्तों के एक विशाल समूह द्वारा और भी सशक्त बनाया गया था। एक युवा देवदूत संगीतकार, जिसके सुनहरे बाल चौदह वर्ष के चेहरे को घेरे हुए थे, वास्तव में कोई वाद्य यंत्र नहीं बजा रहा था, बल्कि किसी घंटे या थालियों के ढेर के सामने ध्यानमग्न खड़ा था, जबकि अन्य कम शिशु देवदूत कमरे के विशाल विस्तार में तेज़ी से उड़ रहे थे, और अपने शरीर की रेखाओं के साथ लटकते रुमालों को लगातार फड़फड़ाते हुए हवा में थपथपा रहे थे, जो उनके शरीर पर नुकीले सिरों वाले पंखों की तरह लटक रहे थे। ताड़ के पेड़ों की बाड़ से घिरे उन अस्पष्ट क्षेत्रों से बचते हुए, जिनके बीच से देवदूत सेवक दूर से ऐसे दिख रहे थे मानो वे स्वर्ग से नीचे उतरे हों, मैं उस छोटे कमरे की ओर बढ़ा जहाँ सेंट-लूप की मेज सजी थी। वहाँ मुझे उनके कई मित्र मिले जो उनके साथ नियमित रूप से भोजन करते थे, एक-दो को छोड़कर सभी कुलीन थे। इन आम लोगों में युवा कुलीनों ने अपने स्कूली दिनों में संभावित मित्र देखे थे और उनके साथ वे सहजता से मेलजोल रखते थे, जिससे यह सिद्ध होता था कि वे सिद्धांत रूप से मध्यम वर्ग के शत्रु नहीं थे, भले ही वह गणतंत्रवादी हो, बशर्ते कि वह साफ-सुथरा हो और चर्च में प्रार्थना करता हो। ऐसी ही एक शाम को, भोजन के लिए बैठने से पहले, मैंने सेंट-लूप को एक कोने में बुलाया और सबके सामने, लेकिन इस तरह से कि कोई मुझे सुन न सके, उनसे कहा:

"रॉबर्ट, मैं जो कहने जा रही हूँ उसके लिए यह न तो सही समय है और न ही सही जगह, लेकिन मैं एक पल भी नहीं रुकूँगी। मैं बैरक में रहते हुए आपसे पूछना भूल जाती हूँ; क्या वह तस्वीर श्रीमती डी गुएरमांटेस की नहीं है जो आपकी मेज पर है?"
"जी हां, मेरी प्यारी चाची।"
"हाँ, बिल्कुल; मैं कितना मूर्ख हूँ; तुमने मुझे पहले ही बताया था कि वो तुम्हारी चाची है; मैं तो भूल ही गया था कि वो तुम्हारी चाची है। खैर, तुम्हारे दोस्त अधीर हो रहे होंगे, हमें जल्दी करनी होगी, वे हमें देख रहे हैं; कोई और समय चलेगा; यह बिल्कुल भी ज़रूरी नहीं है।"
"कोई बात नहीं; आप जितनी देर चाहें उतनी देर तक जारी रख सकते हैं। वे इंतजार कर सकते हैं।"
"नहीं, नहीं; मैं उनके प्रति विनम्र रहना चाहता हूँ; वे बहुत अच्छे हैं; इसके अलावा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।"
"तो क्या आप उस योग्य ओरियान को जानते हैं?"
यह 'योग्य ओरियान,' जैसा कि उन्होंने कहा होगा, 'वह अच्छी ओरियान,' का यह अर्थ नहीं था कि सेंट-लूप श्रीमती डी गुएरमांटेस को विशेष रूप से अच्छी मानते थे। इस संदर्भ में 'अच्छी,' 'उत्कृष्ट,' 'योग्य' शब्द केवल संकेतवाचक 'वह' को सुदृढ़ करने के लिए प्रयोग किए गए हैं, जो एक ऐसे व्यक्ति को इंगित करते हैं जिसे दोनों पक्ष जानते हैं और जिसके बारे में वक्ता को अपने करीबी दायरे से बाहर के किसी व्यक्ति से ठीक से बात करने का तरीका नहीं पता। 'अच्छी' शब्द एक अस्थायी समाधान के रूप में कार्य करता है और बातचीत को कुछ क्षण के लिए जारी रखता है जब तक कि वक्ता "क्या आप उनसे अक्सर मिलते हैं?" या "मैंने उन्हें महीनों से नहीं देखा है," या "मैं उनसे मंगलवार को मिलूंगा," या "अब उनकी उम्र बढ़ रही होगी, आप जानते हैं।" जैसे वाक्यों पर नहीं पहुंच जाता।
"मैं आपको बता नहीं सकती कि यह कितना अजीब है कि यह उसकी तस्वीर है, क्योंकि हम अभी पेरिस में उसके घर में रह रहे हैं, और मैंने उसके बारे में सबसे चौंकाने वाली बातें सुनी हैं" (मुझे बताना मुश्किल होगा कि क्या) "जिसने मुझे उसमें बहुत दिलचस्पी दिलाई है, केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से, आप जानते हैं, एक—मैं इसे कैसे कहूँ—बाल्ज़ाक के दृष्टिकोण से; लेकिन आप इतने समझदार हैं कि आप समझ सकते हैं कि मेरा क्या मतलब है; मुझे आपको

कुछ समझाने की ज़रूरत नहीं है; लेकिन हमें जल्दी करनी चाहिए; आपके दोस्त मेरे व्यवहार के बारे में क्या सोचेंगे?"
"वे बिल्कुल भी कुछ नहीं सोचेंगे; मैंने उन्हें बताया है कि आप महान हैं, और वे आपसे कहीं ज्यादा चिंतित हैं।"
"आप बहुत दयालु हैं। लेकिन सुनिए, मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है: मुझे लगता है कि श्रीमती डी गुएरमांटेस को इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि मैं आपको जानता हूँ, है ना?"
"मैं कुछ नहीं कह सकता; मैंने उसे गर्मियों के बाद से नहीं देखा है, क्योंकि जब से वह शहर में आई है, मुझे कोई छुट्टी नहीं मिली है।"
मैं जो कहना चाह रहा था वह यह है: मुझे बताया गया है कि वह मुझे बिलकुल बेवकूफ समझती है।
"मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है; ओरियान बिल्कुल बाज जैसी तो नहीं है, लेकिन फिर भी वह किसी भी तरह से मूर्ख नहीं है।"
"आप जानते हैं कि आम तौर पर मुझे इस बात की परवाह नहीं होती कि आप मेरे बारे में जो अच्छी राय रखते हैं, उसका प्रचार करें; मैं घमंडी नहीं हूँ। इसीलिए मुझे खेद है कि आपने यहाँ अपने दोस्तों के सामने मेरे बारे में तारीफ की (हम दो सेकंड में इस पर फिर बात करेंगे)। लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस अलग हैं; अगर आप उन्हें बता दें—अगर आप थोड़ा सा भी बढ़ा-चढ़ाकर बता दें—कि आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, तो मुझे बहुत खुशी होगी।"
"क्यों न मानूँ, अगर आप बस इतना ही चाहते हैं तो मैं कर दूँगी; यह ज़्यादा मुश्किल नहीं है; लेकिन इससे आपको क्या फ़र्क पड़ता है कि वह आपके बारे में क्या सोचती है? मुझे लगता है कि आप उसे बिल्कुल मज़ाक समझते हैं; खैर, अगर आप बस इतना ही चाहते हैं तो हम इस बारे में दूसरों के सामने या अकेले में बात कर सकते हैं; मुझे डर है कि अगर आप खड़े-खड़े बात करते रहेंगे तो आप थक जाएँगे, और यह बहुत असुविधाजनक भी है, जबकि हमारे पास अकेले में साथ रहने के बहुत सारे मौके हैं।"
यही असुविधा थी जिसने मुझे रॉबर्ट से संपर्क करने का साहस दिया; दूसरों की उपस्थिति मेरे लिए एक बहाना थी जिसने मुझे अपनी बात को संक्षिप्त और असंगत रूप देने का औचित्य प्रदान किया, जिसकी आड़ में मैं अपने मित्र से यह झूठ छिपा सका कि मैं डचेस के साथ

उसके संबंध को भूल गया था, और साथ ही मैंने उसे यह सोचने का समय भी नहीं दिया कि मैं क्यों चाहता था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस को पता चले कि मैं उसका मित्र हूँ, वह चतुर है, इत्यादि - ऐसे प्रश्न जो और भी अधिक परेशान करने वाले होते क्योंकि मैं उनका उत्तर नहीं दे पाता।

"रॉबर्ट, मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को यह समझ नहीं आता कि दोस्तों को प्रसन्न करने वाली बातों पर चर्चा नहीं की जाती, बल्कि उन्हें किया जाता है। अब, अगर आप मुझसे कुछ भी करने को कहें, और वास्तव में मैं तो यही चाहता हूँ कि आप मुझसे कुछ करने को कहें, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होगी। हो सकता है मैं आपसे अपनी इच्छा से अधिक माँग लूँ; मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस को जानने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन केवल आपकी परीक्षा लेने के लिए मुझे यह कहना चाहिए था कि मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ भोजन करने के लिए उत्सुक हूँ; मुझे यकीन है कि आप ऐसा कभी नहीं करते।"

"मुझे न केवल ऐसा करना चाहिए था, बल्कि मैं ऐसा करूंगा।"

"कब?"

"अगली बार जब मैं पेरिस में आऊंगा, तीन हफ्ते बाद, मुझे उम्मीद है।"

"देखते हैं; मुझे लगता है कि वह मुझसे मिलना नहीं चाहेगी। मैं आपको बता नहीं सकता कि मैं कितना आभारी हूं।"

"बिल्कुल नहीं; यह कुछ भी नहीं है।"

"ऐसा मत कहो; यह दुनिया की सबसे बड़ी बात है, क्योंकि अब मुझे पता चल गया है कि तुम किस तरह के दोस्त हो; चाहे मैं तुमसे जो करने को कहूँ वह ज़रूरी हो या नहीं, अप्रिय हो या नहीं, चाहे मैं सचमुच उत्सुक हूँ या सिर्फ़ परीक्षा के लिए कह रहा हूँ, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता; तुम कहते हो कि तुम करोगे, और यहीं तुम्हारे मन और हृदय की अच्छाई झलकती है। एक मूर्ख दोस्त तो बहस शुरू कर देता।"

ठीक यही तो वो अभी कर रहा था; लेकिन शायद मैं उसके आत्मसम्मान को बढ़ाना चाहती थी; शायद मैं ईमानदार भी थी, क्योंकि मेरे लिए योग्यता का एकमात्र मापदंड यही था कि एक मित्र उस एक चीज़ के संबंध में कितना उपयोगी हो सकता है जो मुझे सबसे महत्वपूर्ण लगती

थी, अर्थात् मेरा प्रेम। फिर मैं आगे बढ़ी, शायद चालाकी से, या शायद कृतज्ञता, उम्मीद और श्रीमती डी गुएरमांटेस के चेहरे की हूबहू नकल, जो प्रकृति ने उनके भतीजे रॉबर्ट को जन्म देते समय बनाई थी, से प्रेरित स्नेह में वास्तविक वृद्धि से: "लेकिन, मैं कहती हूँ, हमें उन्हें और इंतज़ार नहीं कराना चाहिए, और मैंने आपसे जो दो बातें पूछनी थीं, उनमें से केवल एक का ही ज़िक्र किया है, जो कम महत्वपूर्ण है; दूसरी मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन मुझे डर है कि आप कभी सहमत नहीं होंगे। क्या आपको बुरा लगेगा अगर हम एक-दूसरे को 'तू' कहकर पुकारें?"

"मुझे बोर कर दिया? मेरे प्यारे दोस्त! आनंद! खुशी के आंसू! अकल्पनीय खुशी!"

"धन्यवाद—मेरा मतलब है, आपका; आपने ही शुरुआत की—बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि अगर आप चाहें तो आपको श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है, मेरे लिए इतना ही काफी है।"

मैं दोनों काम कर सकता हूँ।

"अरे रॉबर्ट! मेरी बात एक मिनट सुनो," मैंने बाद में रात के खाने के दौरान उससे कहा। "अरे, हमारी बातचीत का बार-बार बाधित होना वाकई बहुत अजीब है, मुझे समझ नहीं आ रहा क्यों —तुम्हें याद है ना वो महिला जिसके बारे में मैं अभी तुमसे बात कर रही थी?"

"हाँ।"

"क्या आपको पूरा यकीन है कि आप जानते हैं कि मेरा मतलब किससे है?"

"अरे, तुम मुझे समझते क्या हो, कोई गांव का बेवकूफ?"

"मुझे लगता है कि आप मुझे उसकी तस्वीर देना नहीं चाहेंगे?"

मेरा इरादा तो उससे सिर्फ इसे उधार मांगने का था। लेकिन जब बोलने का समय आया तो मुझे शर्म आ गई, मैंने सोचा कि यह अनुरोध करना अनुचित होगा, और अपनी झिझक छिपाने के लिए मैंने सवाल को और सीधे तरीके से पूछा और अपनी मांग बढ़ा दी, मानो यह बिल्कुल स्वाभाविक हो।

"नहीं; मुझे पहले उसकी अनुमति लेनी होगी," उसने जवाब दिया।

बोलते समय उसका चेहरा लाल हो गया। मैं समझ गई कि उसके मन में कुछ शंका थी, कि वह मेरे बारे में भी यही सोचता था, कि वह कुछ नैतिक सिद्धांतों के बंधन में रहकर मेरे प्रेम को केवल आंशिक रूप से ही संतुष्ट कर पाएगा, और इसी कारण मुझे उससे घृणा हुई।
साथ ही, मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि सेंट-लूप का व्यवहार मेरे प्रति कितना बदल गया था, क्योंकि अब मैं उनके साथ अकेली नहीं थी और उनके दोस्त भी मौजूद थे। उनकी बढ़ी हुई आत्मीयता मुझे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं करती अगर मुझे लगता कि यह जानबूझकर किया गया व्यवहार है; लेकिन मैं महसूस कर सकती थी कि यह स्वाभाविक थी और इसमें केवल वही बातें शामिल थीं जो वह मेरी अनुपस्थिति में मेरे बारे में कहते थे और आमतौर पर जब हम अकेले होते थे तो कहने से बचते थे। हमारी निजी बातचीत में, मैं निश्चित रूप से यह अनुमान लगा सकती थी कि उन्हें मुझसे बात करने में आनंद आता था, लेकिन वह उस आनंद को लगभग हमेशा ही व्यक्त नहीं करते थे। अब, मेरी उन्हीं बातों पर, जिनका वह आमतौर पर बिना दिखाए आनंद लेते थे, वह तिरछी निगाहों से देखते थे कि क्या उनका उनके दोस्तों पर वह प्रभाव पड़ता है जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी, यानी वह प्रभाव जो उन्होंने उनसे पहले वादा किया था। अपने पहले सीज़न में एक लड़की की माँ अपनी बेटी की प्रतिक्रियाओं और जनता के रवैये पर इससे अधिक सतर्क नहीं हो सकती थी। अगर मैंने कोई ऐसी बात कह दी होती जिस पर अकेले में वह सिर्फ मुस्कुरा देता, तो उसे डर लगता कि बाकी लोग शायद उस बात को न समझ पाएं, इसलिए वह बीच में "क्या कहा?" बोल देता ताकि मैं अपनी बात दोहराऊं, सबका ध्यान अपनी ओर खींचे, और फिर तुरंत अपने दोस्तों की ओर मुड़कर, उनके सामने खुलकर हंसते हुए, उनकी हंसी का केंद्र बन जाता, और इस तरह पहली बार मुझे अपने उस विचार से अवगत कराता जो वह वास्तव में मेरे बारे में रखता था और जिसे वह अक्सर उनसे कहता होगा। इस तरह मुझे अचानक खुद को बाहर से देखने का मौका मिला, जैसे कोई व्यक्ति अखबार में अपना नाम पढ़ता है या आईने में खुद को देखता है।
एक शाम मेरे मन में आया कि मैं श्रीमती ब्लैंडाइस के बारे में एक हल्की-फुल्की मनोरंजक कहानी सुनाऊँ, लेकिन मैं तुरंत रुक गया, क्योंकि मुझे याद आया कि सेंट-लूप को यह कहानी पहले से ही पता थी, और जब मैंने अपने आगमन के अगले दिन उन्हें यह कहानी सुनाने की

कोशिश की थी, तो उन्होंने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा था: "आपने मुझे यह कहानी पहले बालबेक में सुनाई थी।" इसलिए मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि वह मुझसे कहानी जारी रखने की विनती कर रहे थे और मुझे विश्वास दिला रहे थे कि उन्हें यह कहानी नहीं पता और इससे उन्हें बहुत मज़ा आएगा। मैंने उनसे कहा, "आप अभी भूल गए हैं, लेकिन जैसे-जैसे मैं कहानी सुनाता जाऊँगा, आपको याद आ जाएगा।" "नहीं, सच में; मैं कसम खाता हूँ कि आप गलत हैं। आपने मुझे कभी नहीं सुनाई। जारी रखिए।" और पूरी कहानी के दौरान वह एक जोशीली और मंत्रमुग्ध निगाह से बारी-बारी से मुझ पर और अपने दोस्तों पर टिके रहे। कहानी खत्म होने के बाद, जब सब हंसने लगे, तब मुझे एहसास हुआ कि उन्हें यह बात समझ में आ गई थी कि इस कहानी से उनके दोस्तों को मेरी चतुराई का अच्छा अंदाजा लग जाएगा, और शायद इसी वजह से उन्होंने यह नाटक किया था कि उन्हें यह कहानी नहीं पता। दोस्ती का सार यही है।

तीसरी शाम को, उनके एक मित्र, जिनसे मुझे पहले कभी बात करने का अवसर नहीं मिला था, ने मुझसे बहुत देर तक बातचीत की; और मैंने उन्हें सेंट-लूप को यह बताते हुए सुना कि उन्हें कितना आनंद आ रहा था। और सचमुच, हम लगभग पूरी शाम साथ बैठे बातें करते रहे, अपने सॉटरन के गिलासों को मेज पर बिना छुए रखे रहे, एकांत में, मनुष्य और मनुष्य के बीच की उस सहज सहानुभूति के भव्य पर्दों से ढके हुए, जो किसी शारीरिक आकर्षण पर आधारित न होने पर, एकमात्र ऐसी सहानुभूति होती है जो पूरी तरह से रहस्यमय होती है। बालबेक में, सेंट-लूप की मेरे प्रति भावना भी मुझे कुछ इसी तरह की रहस्यमय लगी थी, जिसे हमारी बातचीत की रुचि से भ्रमित नहीं किया जा सकता था, एक ऐसी भावना जो किसी भौतिक जुड़ाव से मुक्त थी, अदृश्य, अमूर्त, और फिर भी एक ऐसी चीज जिसकी उपस्थिति के प्रति वह स्वयं में, एक ज्वलनशील गैस की तरह, इतना सचेत था कि उसने मुस्कुराते हुए इसका उल्लेख किया था। फिर भी, इस शाम में पनपी इस सहानुभूति में शायद कुछ और भी आश्चर्यजनक था, मानो कोई फूल इस छोटे से कमरे की गर्माहट में कुछ ही मिनटों में खिल उठा हो। जब रॉबर्ट मुझसे बालबेक के बारे में बात कर रहा था, तो मैं उससे पूछे बिना नहीं रह सकी कि क्या यह सचमुच तय हो गया था कि उसकी शादी मैडम डी'अम्ब्रेसैक से होगी। उसने मुझे आश्वस्त किया कि न केवल यह तय नहीं हुआ था, बल्कि ऐसी शादी का कभी कोई

विचार भी नहीं था, उसने उसे कभी देखा भी नहीं था, वह नहीं जानता था कि वह कौन है। अगर उस समय मेरी मुलाकात उन गपशप करने वालों में से किसी से हो जाती, जिन्होंने मुझे इस आने वाली घटना के बारे में बताया था, तो वे तुरंत मैडम डी'अम्ब्रेसैक की सगाई किसी ऐसे व्यक्ति से होने की घोषणा कर देते जो सेंट-लूप नहीं था और सेंट-लूप की सगाई किसी ऐसे व्यक्ति से होने की घोषणा कर देते जो मैडम डी'अम्ब्रेसैक नहीं थी। अगर मैंने उन्हें उनकी बेमेल और अभी-अभी की भविष्यवाणियों की याद दिला दी होती, तो मैं उन्हें बहुत आश्चर्यचकित कर देती। ताकि यह छोटा सा खेल जारी रह सके, और हर नाम के साथ बारी-बारी से अधिकतम संभव संख्या जोड़कर झूठी रिपोर्टों को बढ़ाया जा सके, प्रकृति ने इसे खेलने वालों को उनकी भोली प्रवृत्ति की तरह ही छोटी स्मृति प्रदान की है।

सेंट-लूप ने मुझसे अपने एक और मित्र के बारे में बात की थी जो वहां मौजूद था और जिसके साथ उनके उस समय विशेष रूप से अच्छे संबंध थे, क्योंकि वे ड्रेफस के पुनर्विचार की सुनवाई में शामिल दो ही वकील थे।

सेंट-लूप के इस मित्र के भाई, जिन्होंने स्कोला कैंटोरम में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, हर नए संगीत कार्य के बारे में अपने पिता, माता, चचेरे भाइयों, क्लब के मित्रों की राय से बिलकुल अलग सोचते थे, बल्कि ठीक वही सोचते थे जो स्कोला के अन्य छात्र सोचते थे। ठीक उसी तरह, इस गैर-नियुक्त कुलीन व्यक्ति (जिसके बारे में ब्लोच ने मेरे द्वारा बताए जाने पर एक असाधारण राय बनाई थी, क्योंकि यह सुनकर वह भावुक हो गए थे कि वह उन्हीं के दल से संबंधित हैं, फिर भी उन्होंने उनकी कुलीन जन्म और धार्मिक और सैन्य परवरिश के कारण उन्हें यथासंभव अलग माना, और उन्हें एक दूर देश के मूल निवासी के समान ही रोमांटिक आकर्षण से संपन्न समझा) की 'मानसिकता', जैसा कि लोग अब कहने लगे थे, सामान्य रूप से पूरे ड्रेफसार्ड समुदाय और विशेष रूप से ब्लोच की मानसिकता के समान थी, जिस पर उनके परिवार की परंपराओं और उनके करियर के हितों का कोई प्रभाव नहीं रह सकता था। इसी प्रकार, सेंट-लूप के चचेरे भाइयों में से एक ने एक युवा पूर्वी राजकुमारी से विवाह किया था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह विक्टर ह्यूगो या अल्फ्रेड डी विग्नी की कविताओं के समान ही उत्कृष्ट कविताएँ लिखती थी। इसके बावजूद, माना जाता था कि उसका दिमाग उस तरह का नहीं था जैसा कोई स्वाभाविक रूप से उम्मीद करता है - एक ऐसी पूर्वी राजकुमारी

का दिमाग जो अरेबियन नाइट्स के महल में कैद हो। जिन लेखकों को उससे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन्हें निराशा या बल्कि आनंद का अनुभव हुआ, क्योंकि उसकी बातचीत से ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह शेहेरज़ादे नहीं बल्कि अल्फ्रेड डी विग्नी या विक्टर ह्यूगो जैसी प्रतिभा की धनी हो।

"वो आदमी? अरे, वो सेंट-लूप जैसा नहीं है, वो तो बिलकुल शैतान है," मेरे नए दोस्त ने मुझे बताया; "वो इस बारे में बिल्कुल भी स्पष्टवादी नहीं है। पहले तो वो कहता था: 'बस थोड़ा इंतज़ार करो, मैं एक आदमी को अच्छी तरह जानता हूँ, एक चतुर, दयालु व्यक्ति, जनरल डी बोइसडेफ्रे; तुम्हें उसके फैसले को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए।'" लेकिन जैसे ही बोइसडेफ्रे ने सुना कि ड्रेफस को दोषी ठहराया है, बोइसडेफ्रे ने गिनती करना बंद कर दिया: पादरीवाद, कर्मचारियों के पूर्वाग्रहों ने उन्हें निष्पक्ष राय बनाने से रोक दिया, हालांकि दुनिया में कोई भी (या यूं कहें कि ड्रेफस के इस मामले से पहले) हमारे मित्र जितना पादरीवादी नहीं था। फिर उन्होंने हमें बताया कि अब हमें सच्चाई जरूर मिलेगी, मामला सौसियर के हाथों में सौंप दिया गया है, और वह, गणतंत्र का एक सिपाही (हमारा मित्र एक अति-राजशाही परिवार से आता है), एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति था, एक अटल और अडिग अंतरात्मा वाला। लेकिन जब सौसियर ने एस्टरहाज़ी को निर्दोष घोषित किया, तो उन्होंने इस फैसले के लिए नए कारण ढूंढ लिए, ऐसे कारण जो ड्रेफस के लिए नहीं बल्कि जनरल सौसियर के लिए हानिकारक थे। यह सैन्यवादी भावना ही थी जिसने सौसियर को अंधा कर दिया था (और मुझे आपको यह समझाना होगा कि हमारा मित्र जितना पादरीवादी है उतना ही सैन्यवादी भी है, या कम से कम था; मुझे नहीं पता कि अब उसके बारे में क्या सोचूं)। उसका पूरा परिवार उसे ऐसे विचारों से ग्रस्त देखकर मेरा दिल टूट गया।

मैंने सेंट-लूप की ओर आधा मुड़ते हुए सुझाव दिया, ताकि ऐसा न लगे कि मैं उनसे और उनके मित्र से अलग हो रहा हूँ, और ताकि हम तीनों बातचीत में शामिल हो सकें, "क्या आपको नहीं लगता कि परिवेश का जो प्रभाव हम मानते हैं, वह बौद्धिक परिवेश के लिए विशेष रूप से सत्य है। व्यक्ति अपने विचारों के अनुरूप होता है। विचारों की संख्या मनुष्यों से कहीं कम है, इसलिए समान विचार रखने वाले सभी मनुष्य एक समान होते हैं। जैसे विचार में कुछ भी

भौतिक नहीं होता, वैसे ही जो लोग केवल भौतिक रूप से किसी विचारक के पड़ोसी होते हैं, वे उस विचार को बदलने के लिए कुछ नहीं कर सकते।"

इसी बीच सेंट-लूप ने मेरी बात काट दी, क्योंकि एक और युवक मुस्कुराते हुए उसकी ओर झुका और मेरी ओर इशारा करते हुए बोला: "ड्यूरोक! हर जगह ड्यूरोक!" मुझे समझ नहीं आया कि इसका क्या मतलब है, लेकिन उस शर्मीले युवक के चेहरे पर जो भाव थे, वे मुझे बहुत दोस्ताना लगे। जब मैं बोल रहा था, सेंट-लूप को लगा कि समूह की सराहना अनावश्यक है; उन्होंने चुप्पी बनाए रखने पर ज़ोर दिया। और जैसे कोई कंडक्टर दर्शकों में किसी के शोर मचाने पर अपनी छड़ी से ऑर्केस्ट्रा को रोक देता है, वैसे ही उन्होंने शोर मचाने वाले को फटकारा: "गिबर्ग, जब लोग बोल रहे हों तो तुम्हें चुप रहना चाहिए। इसके बारे में तुम हमें बाद में बता सकते हो।" और मुझसे कहा: "कृपया बोलते रहिए।"

मैंने राहत की सांस ली, क्योंकि मुझे डर था कि वह मुझे सब कुछ फिर से शुरू करने के लिए मजबूर कर देगा।

मैंने आगे कहा, "और चूंकि एक विचार ऐसी चीज है जो मानवीय हितों में भाग नहीं ले सकती और उनसे कोई लाभ प्राप्त करने में असमर्थ होगी, इसलिए जो लोग किसी विचार से प्रेरित होते हैं वे भौतिक विचारों से प्रभावित नहीं होते हैं।"

जब मैंने अपनी बात खत्म की, तो सेंट-लूप ने कहा, "ये तो तुम्हारे लिए करारा जवाब है, मेरे लड़कों!" वह मुझे उसी चिंता और सतर्कता से देख रहा था मानो मैं किसी पतली रस्सी पर चल रहा हूँ। "तुम क्या कहने वाले थे, गिबर्ग?"

मैं बस यही कह रहा था कि आपके दोस्त ने मुझे मेजर डुरोक की याद दिला दी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उन्हें बोलते हुए सुन रहा हूँ।

"क्यों, मैंने भी अक्सर ऐसा ही सोचा है," सेंट-लूप ने उत्तर दिया; "उनमें कई समानताएं हैं, लेकिन आपको पता चलेगा कि इस व्यक्ति में ऐसी हज़ार चीज़ें हैं जो ड्यूरोक में नहीं हैं।"

सेंट-लूप इस तुलना से संतुष्ट नहीं हुए। अत्यधिक प्रसन्नता से भरे स्वर में, जिसमें निस्संदेह मुझे अपने मित्रों के सामने चमकाने की खुशी भी शामिल थी, उन्होंने बड़ी वाक्पटुता से, मुझे ऐसे सहलाते हुए जैसे किसी दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले घोड़े को दुलार रहे हों, दोहराया: "तुम मेरे जानने वाले सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हो, समझे?" उन्होंने स्वयं को सुधारा और जोड़ा:

"तुम और एल्स्टर... मुझे आशा है कि तुम्हें मेरे द्वारा उन्हें तुम्हारे साथ जोड़ने में कोई आपत्ति नहीं होगी। तुम समझते हो - बारीकी। यह इस प्रकार है: मैं तुमसे यह ऐसे कह रहा हूँ जैसे कोई बाल्ज़ाक से कहता: 'तुम इस शताब्दी के सबसे महान उपन्यासकार हो - तुम और स्टेंडहल।' अत्यधिक बारीकी, क्या तुम नहीं जानते, और हृदय में अपार प्रशंसा। नहीं? तुम स्टेंडहल को नहीं मानते?" वे मेरे निर्णय पर भोलेपन से विश्वास करते हुए बोलते रहे, जो उनकी हरी आँखों से एक आकर्षक, मुस्कुराती हुई, लगभग बचकानी प्रश्नवाचक दृष्टि में प्रकट हुआ। "ओह, अच्छा! मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरी बात से सहमत हो; ब्लोच को स्टेंडहल बिल्कुल पसंद नहीं। मुझे लगता है कि यह उसकी बेवकूफी है। चार्टरिस आखिर एक विशाल रचना है, है ना? मुझे बहुत खुशी है कि तुम मुझसे सहमत हो। चार्टरिस में तुम्हें सबसे ज्यादा क्या पसंद है, बताओ?" उसने बचकाने उत्साह से मुझसे पूछा। और उसकी शारीरिक शक्ति के दबदबे ने सवाल को लगभग डरावना बना दिया। "मोस्का? फैब्रिस?" मैंने दबी आवाज़ में जवाब दिया कि मोस्का मुझे कुछ-कुछ एम. डी नॉरपोइस की याद दिलाता है। इस पर युवा सिगफ्रीड सेंट-लूप ज़ोर से हँस पड़ा। और जब मैं आगे समझाने लगा: "लेकिन मोस्का कहीं ज्यादा बुद्धिमान है, इतना किताबी नहीं," तभी मैंने रॉबर्ट को चिल्लाते हुए सुना: "वाह!" सचमुच ताली बजाते हुए, और हँसी से बेहाल होकर हाँफते हुए बोला: "ओह, एकदम सही! प्रशंसनीय! तुम सच में कमाल हो।"

मुझे इस नौजवान से, और सच कहूँ तो रॉबर्ट के सभी दोस्तों और खुद रॉबर्ट से भी, उनकी बैरकों, गैरीसन के अधिकारियों और सेना के बारे में बात करने में बहुत आनंद आता था। हम जिन चीजों को देखते हैं, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों, जिनके बीच हम खाते-पीते, बातें करते और अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वे हमें बहुत बड़े पैमाने पर दिखाई देती हैं; उनका इतना विशाल विस्तार होता है कि बाकी दुनिया, वहाँ मौजूद न होने के कारण, उनसे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती और तुलना में एक सपने की तरह अस्थिर हो जाती है। इसी वजह से बैरकों के विभिन्न व्यक्तित्वों में, उन अधिकारियों में, जिन्हें मैं सेंट-लूप से मिलने जाते समय चौक में देखता था, या अगर मैं उस समय जागा होता था, तो जब रेजिमेंट मेरी खिड़कियों के नीचे से गुजरती थी, तो मुझे दिलचस्पी होने लगी थी। मैं उस मेजर के बारे में और अधिक जानना चाहता था, जिनकी सेंट-लूप बहुत प्रशंसा करते थे, और सैन्य इतिहास के उस घटनाक्रम के

बारे में भी, जो मुझे "सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी" आकर्षित करता। मैं जानता था कि रॉबर्ट के शब्दों में अक्सर कुछ खोखलापन होता था, लेकिन कभी-कभी उनमें मूल्यवान विचारों का समावेश होता था जिन्हें वह पूरी तरह से समझने में सक्षम था। दुर्भाग्य से, सैन्य दृष्टिकोण से रॉबर्ट इस समय पूरी तरह से ड्रेफस के मामले में व्यस्त था। वह इस बारे में बहुत कम बोलता था, क्योंकि मेज पर बैठे लोगों में से केवल वही ड्रेफस का समर्थक था; बाकी सभी लोग नए सिरे से मुकदमे के विचार के घोर विरोधी थे, सिवाय मेरे दूसरे पड़ोसी, मेरे नए मित्र के, और उसके विचार कुछ अस्पष्ट प्रतीत होते थे। कर्नल का एक कट्टर प्रशंसक, जिसे एक असाधारण रूप से सक्षम अधिकारी माना जाता था और जिसने अपने कई रेजिमेंटल आदेशों में सेना के खिलाफ चल रहे आंदोलन की निंदा की थी, जिससे उसे ड्रेफस विरोधी होने की प्रतिष्ठा मिली थी, मेरे पड़ोसी ने सुना था कि उसके कमांडिंग ऑफिसर ने कुछ ऐसी टिप्पणियां की थीं जिनसे यह अनुमान लगाया गया था कि उन्हें ड्रेफस के अपराध के बारे में संदेह था और वे पिक्कार्ट के प्रति अपनी प्रशंसा बरकरार रखते थे। कम से कम बाद वाले संदर्भ में, कर्नल पर ड्रेफसवाद का आरोप लगाना उतना ही निराधार था जितना कि किसी भी बड़े घोटाले के इर्द-गिर्द फैलने वाली सभी अफवाहें, जो न जाने कहाँ से उत्पन्न होती हैं। दरअसल, कुछ ही समय बाद, इस कर्नल को खुफिया शाखा के पूर्व प्रमुख से पूछताछ करने का काम सौंपा गया था, और उन्होंने उनके साथ ऐसी क्रूरता और तिरस्कार का व्यवहार किया था जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। हालांकि, चाहे जो भी हो (और स्वाभाविक रूप से उन्होंने जानकारी के लिए सीधे कर्नल से संपर्क करने की स्वतंत्रता नहीं ली थी), मेरे पड़ोसी ने सेंट-लूप को यह कहकर सम्मान दिया - उसी लहजे में जैसे कोई कैथोलिक महिला किसी यहूदी महिला को बताती है कि उसके पादरी ने रूस में हुए नरसंहारों की निंदा की और कुछ इस्राइलियों की उदारता की खुलेआम प्रशंसा की - कि ड्रेफसवाद के संबंध में - कम से कम एक निश्चित प्रकार के ड्रेफसवाद के संबंध में - उनका कर्नल वह कट्टर, संकीर्ण विरोधी नहीं था जैसा उसे बताया गया था।

"मुझे आश्चर्य नहीं है," सेंट-लूप ने टिप्पणी की; "क्योंकि वह एक समझदार आदमी है। लेकिन इसके बावजूद वह अपनी जाति के पूर्वाग्रहों और सबसे बढ़कर अपने पादरीवाद से अंधा हो गया है। अब," वह मेरी ओर मुड़ा, "मेजर ड्यूरोक, सैन्य इतिहास के व्याख्याता जिनके बारे में

मैं आपको बता रहा था; वह एक ऐसा व्यक्ति है जो हमारे विचारों का पूरी तरह से समर्थन करता है, या कम से कम मुझे यही बताया गया है। और मुझे यह सुनकर आश्चर्य होता कि वह ऐसा नहीं करता, क्योंकि वह न केवल एक बेहद बुद्धिमान व्यक्ति है, बल्कि एक कट्टरपंथी समाजवादी और एक फ्रीमेसन भी है।"

अपने दोस्तों के प्रति शिष्टाचारवश, जिन्हें सेंट-लूप की ड्रेफस में आस्था की ये अभिव्यक्तियाँ असहज कर रही थीं, और साथ ही इसलिए भी कि यह विषय मेरे लिए अधिक रुचिकर था, मैंने अपने पड़ोसी से पूछा कि क्या यह सच है कि इस मेजर ने सैन्य इतिहास का ऐसा प्रदर्शन किया जिसमें वास्तव में एक कलात्मक सुंदरता थी। "यह बिलकुल सच है।"

"लेकिन आपका इससे क्या मतलब है?"

"मान लीजिए, आप किसी सैन्य इतिहासकार के वृत्तांत में जो कुछ भी पढ़ते हैं, चाहे वो छोटे से छोटे तथ्य हों या मामूली घटनाएँ, वे सब एक विचार के बाहरी संकेत मात्र हैं, जिसका विश्लेषण किया जाना आवश्यक है, और जो अक्सर अन्य विचारों को उजागर करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक पैलिम्पेस्ट (पुरानी परतों की एक परत) में होता है। इस प्रकार, आपके पास अध्ययन का एक ऐसा क्षेत्र है जो किसी भी विज्ञान या कला के समान बौद्धिक है, और जो मन को संतुष्टि प्रदान करता है।"

"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मुझे एक-दो उदाहरण दीजिए।"

"इसे समझाना इतना आसान नहीं है," सेंट-लूप ने बीच में ही कहा। "मान लीजिए, आप पढ़ते हैं कि इस या उस कोर ने कोशिश की है... लेकिन आगे बढ़ने से पहले, कोर का सीरियल नंबर और उसकी युद्ध व्यवस्था का अपना महत्व है। अगर यह ऑपरेशन पहली बार नहीं किया जा रहा है, और अगर उसी ऑपरेशन के लिए कोई दूसरी कोर बुलाई जा रही है, तो शायद यह संकेत है कि पिछली कोर या तो पूरी तरह नष्ट हो गई है या उसे उस ऑपरेशन में भारी नुकसान हुआ है; कि अब वह उसे सफलतापूर्वक अंजाम देने की स्थिति में नहीं है। इसके बाद, हमें खुद से यह पूछना होगा कि यह कोर कौन सी थी जो अब निष्क्रिय है; अगर इसमें शॉक ट्रूप्स थे, जिन्हें बड़े हमलों के लिए रिजर्व में रखा गया था, तो कम गुणवत्ता वाली एक नई कोर के सफल होने की संभावना बहुत कम होगी जहाँ पहली कोर विफल रही है। इसके अलावा, अगर हम किसी अभियान की शुरुआत में नहीं हैं, तो यह नई कोर खुद अन्य कोर से

निकाली गई अलग-अलग टुकड़ियों का एक मिश्रित गठन हो सकती है, जो युद्धरत पक्ष के पास अभी भी मौजूद बलों की ताकत और उस क्षण की निकटता पर प्रकाश डालती है जब उसकी सेनाएँ निश्चित रूप से हमसे कमज़ोर पड़ जाएँगी। दुश्मन की मौजूदगी, उस ऑपरेशन को एक अलग ही अर्थ देती है जिसमें यह कोर शामिल होने वाली है, क्योंकि अगर यह अपने नुकसान की भरपाई करने की स्थिति में नहीं है, तो इसकी सफलताएँ भी गणितीय रूप से इसे इसके अंतिम विनाश के और करीब ले जाएँगी। और फिर, इसके सामने वाली कोर का क्रम संख्या भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि यह एक बहुत कमजोर इकाई है, जिसने पहले ही हमलावर बल की कई महत्वपूर्ण इकाइयों को नष्ट कर दिया है, तो ऑपरेशन का पूरा स्वरूप बदल जाता है, क्योंकि भले ही इसका अंत उस स्थिति के नुकसान में हो जिसे रक्षा बल ने अपने कब्जे में रखा हुआ है, लेकिन किसी भी समय तक उस स्थिति को अपने कब्जे में रखना ही एक बड़ी सफलता हो सकती है यदि एक बहुत छोटी रक्षा सेना दूसरी तरफ की महत्वपूर्ण सेनाओं को निष्क्रिय करने के लिए पर्याप्त रही हो। आप समझ सकते हैं कि यदि दोनों पक्षों में शामिल कोर के विश्लेषण में ये सभी महत्वपूर्ण बिंदु हैं, तो स्वयं स्थिति का अध्ययन, सड़कों का, रेलवे का, संचार लाइनों का, जिनकी वह रक्षा करती है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें उस पूरे भौगोलिक संदर्भ का अध्ययन करना चाहिए," उन्होंने आगे कहा। एक हंसी। और वास्तव में वह इस अभिव्यक्ति से इतना प्रसन्न होता था कि जब भी वह इसका प्रयोग करता, महीनों बाद भी, हमेशा उसी हंसी के साथ करता था। "जब एक पक्ष किसी अभियान की तैयारी कर रहा हो और आपको पता चले कि दूसरे पक्ष ने उसकी गश्ती टुकड़ी को उसके स्थान के आसपास के इलाके में पूरी तरह नष्ट कर दिया है, तो आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक पक्ष दूसरे पक्ष द्वारा अपने हमले का मुकाबला करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रक्षात्मक कार्यों की जानकारी जुटाने की कोशिश कर रहा था। किसी विशेष स्थान पर अचानक बढ़ी हुई गतिविधि उस स्थान पर कब्जा करने की इच्छा का संकेत दे सकती है, लेकिन साथ ही यह दुश्मन को वहीं रोके रखने की इच्छा का भी संकेत दे सकती है, न कि उस स्थान पर जवाबी कार्रवाई करने की जहां उसने आप पर हमला किया है; या यह वास्तव में केवल एक छल हो सकता है, जिसका उद्देश्य उस क्षेत्र में सैनिकों की राहत को छिपाने के लिए बढ़ी हुई गतिविधि का बहाना बनाना हो। (जो नेपोलियन के युद्धों में एक

क्लासिक छल था।) दूसरी ओर, किसी भी गतिविधि के महत्व, उसके संभावित उद्देश्य और परिणामस्वरूप, अन्य गतिविधियों को समझने के लिए, जिनके द्वारा यह गतिविधि साथ दी जाएगी या इसके बाद होगी, उच्च कमान द्वारा जारी की गई घोषणाओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है, जिनका उद्देश्य दुश्मन को धोखा देना या संभावित रोक को छुपाना हो सकता है।" संबंधित देश में प्रचलित क्षेत्रीय अभियानों की नियमावली के अनुसार, हम हमेशा यह मान सकते हैं कि किसी सेना द्वारा किया गया युद्धाभ्यास उन परिस्थितियों पर लागू नियमों द्वारा निर्धारित है। उदाहरण के लिए, यदि नियम यह कहता है कि प्रत्यक्ष हमले के साथ पार्श्व हमला भी होना चाहिए; यदि पार्श्व हमला विफल हो जाता है और उच्च कमान यह कहती है कि इसका मुख्य हमले से कोई संबंध नहीं था और यह केवल ध्यान भटकाने के लिए किया गया था, तो प्रबल संभावना है कि सच्चाई मुख्यालय से जारी रिपोर्टों के बजाय नियमों का अध्ययन करके ही पता चलेगी। और केवल प्रत्येक सेना को नियंत्रित करने वाले नियमों पर ही विचार नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनकी परंपराओं, उनकी आदतों, उनके सिद्धांतों पर भी विचार किया जाना चाहिए; सैन्य गतिविधियों पर उनके निरंतर प्रभाव और प्रतिक्रिया के साथ कूटनीतिक गतिविधियों के अध्ययन को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। प्रतीत होने वाली महत्वहीन घटनाएं, जो उस समय समझ में नहीं आतीं, आपको यह समझा देंगी कि कैसे दुश्मन, उन घटनाओं से पता चलने वाले समर्थन पर भरोसा करते हुए, जो रोक दिया गया था, अपनी रणनीतिक योजना का केवल एक हिस्सा ही पूरा कर पाया। इसलिए, यदि आप सैन्य इतिहास की बारीकियों को समझ सकते हैं, तो जो एक उलझा हुआ गड्ढा है, वह स्पष्ट हो जाएगा। आम पाठक के लिए यह तर्क की एक ऐसी श्रृंखला बन जाती है जो किसी चित्र प्रेमी के लिए उतनी ही सरल होती है जितनी कि चित्र में चित्रित व्यक्ति के पहनावे और हाथों में पकड़ी वस्तुओं को देखकर समझ में आ जाती है, जबकि गैलरी से जल्दी-जल्दी गुजरने वाला आगंतुक रंगों के धुंधलेपन से भ्रमित हो जाता है जिससे उसे सिरदर्द होने लगता है। लेकिन ठीक वैसे ही जैसे कुछ चित्रों में, केवल यह देखना पर्याप्त नहीं होता कि आकृति ने एक प्याला पकड़ा हुआ है, बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि चित्रकार ने उसके हाथों में प्याला क्यों रखा है, इसका क्या प्रतीक है, ठीक उसी तरह ये सैन्य अभियान, अपने तात्कालिक उद्देश्य के अलावा, अभियान के लिए जिम्मेदार सेनापति के मन में, पूर्व युद्धों की योजनाओं से नियमित

रूप से जुड़े होते हैं, जिन्हें हम आज के युद्धों का अतीत का अनुभव, साहित्य, ज्ञान, व्युत्पत्ति, अभिजात वर्ग (जो भी आप चाहें) कह सकते हैं। ध्यान दें कि मैं वर्तमान में युद्धों की स्थानीय, (मैं इसे क्या कहूँ?) स्थानिक पहचान की बात नहीं कर रहा हूँ। वह भी मौजूद है। युद्धक्षेत्र कभी भी, और सदियों से कभी भी, केवल वह भूमि नहीं रहा है जिस पर कोई विशेष युद्ध लड़ा गया हो। लड़ाई लड़ी गई। अगर यह युद्धक्षेत्र रहा है, तो इसका कारण भौगोलिक स्थिति, भूवैज्ञानिक संरचना और कुछ बाधाओं का संयोजन था, जो दुश्मन को रोक सकती थीं (उदाहरण के लिए, एक नदी जो उसकी सेना को दो भागों में बांट देती थी), जिसने इसे युद्ध का एक अच्छा मैदान बना दिया। और इसलिए यह जैसा रहा है, वैसा ही रहेगा। एक चित्रकार किसी भी पुराने कमरे को स्टूडियो नहीं बना देता; उसी तरह आप किसी भी पुराने जमीन के टुकड़े को युद्धक्षेत्र नहीं बना देते। इसके लिए विशेष स्थान निर्धारित होते हैं। लेकिन, एक बार फिर, मैं आपको इसके बारे में नहीं बता रहा था; मैं उस प्रकार की लड़ाई के बारे में बता रहा था जिसका एक रणनीतिक अनुसरण किया जाता है, एक सामरिक अनुकरण, अगर आप चाहें तो। उल्म, लोदी, लीपज़िग, कैने जैसी लड़ाइयाँ। मैं यह नहीं कह सकता कि कभी कोई और युद्ध होगा या नहीं, या उसमें कौन से राष्ट्र लड़ेंगे, लेकिन, अगर युद्ध होता है, तो आप निश्चित रूप से मान सकते हैं कि इसमें (और कमांडर की ओर से जानबूझकर) कैने, ऑस्टरलिट्ज़, रोसबैक जैसी लड़ाइयाँ शामिल होंगी। वाटरलू। हमारे कुछ लोग खुलेआम कहते हैं कि मार्शल वॉन शिफर और जनरल फाल्केनहॉसन ने फ्रांस के खिलाफ हैनिबल शैली में कैने की लड़ाई की तैयारी की है, जिसमें दुश्मन को उसके पूरे मोर्चे पर रोककर दोनों किनारों से, खासकर बेल्जियम के रास्ते, आगे बढ़ना है। वहीं बर्नहार्डी फ्रेडरिक द ग्रेट की तरह, कैने के बजाय लेंथेन की लड़ाई को प्राथमिकता देते हैं। दूसरे लोग अपने विचार इतने सीधे-सादे तरीके से नहीं रखते, लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता सकता हूँ, मेरे दोस्त, कि ब्यूकॉन्सिल, स्काड्रन कमांडर जिससे मैंने तुम्हें कुछ दिन पहले मिलवाया था, जो एक बहुत उज्ज्वल भविष्य वाला अधिकारी है, उसने खुद एक छोटा सा प्रैटजेन हमला तैयार किया है; वह इसे अच्छी तरह जानता है, उसने इसे गुप्त रखा है, और अगर उसे कभी इसे अमल में लाने का मौका मिला, तो वह इसे बखूबी अंजाम देगा और हमें बड़े पैमाने पर इसका सामना करवाएगा। रिवोली में केंद्र में सेंधमारी भी; अगर कभी कोई और युद्ध हुआ तो यह बात सामने

आएगी। यह उससे ज़्यादा अप्रचलित नहीं है जितना कि... इलियड। मुझे यह भी कहना होगा कि हम व्यावहारिक रूप से सीधे हमले करने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि हम सत्तर में की गई गलती को दोहराने का जोखिम नहीं उठा सकते; हमें आक्रमण करना ही होगा, और कुछ नहीं। मुझे केवल इस बात की चिंता है कि यदि मैं देखता हूँ कि हमारे बीच केवल धीमे, पुराने विचारों वाले लोग ही इस शानदार सिद्धांत का विरोध कर रहे हैं, तब भी मेरे सबसे युवा गुरुओं में से एक, जो एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, मेरा मतलब मैंगिन से है, चाहते हैं कि हम अस्थायी रूप से रक्षात्मक रणनीति के लिए गुंजाइश रखें। जब वे ऑस्टरलिट्ज़ का उदाहरण देते हैं, जहाँ रक्षा केवल आक्रमण और विजय की प्रस्तावना थी, तो उन्हें जवाब देना आसान नहीं है।
सेंट-लूप द्वारा इन सिद्धांतों का प्रतिपादन सुनकर मुझे खुशी हुई। इनसे मुझे उम्मीद जगी कि शायद मैं डोंसिएरेस में अपने जीवन में उन अधिकारियों के बारे में गलत रास्ते पर नहीं जा रहा था, जिनके बारे में मैं अक्सर चर्चा सुनता था, जब मैं सॉटरने पीता था, जो अपनी मनमोहक सुनहरी चमक में उन्हें उसी आवर्धक शक्ति से नहला देता था, जो बालबेक में रहते हुए मेरी आँखों में इतनी विशाल हो गई थी - दक्षिण सागर द्वीप के राजा और रानी, चार भोगियों का छोटा समूह, युवा जुआरी, लेग्रैंडिन का बहनोई - अब मेरी दृष्टि में इतने सिकुड़ गए थे कि मानो अस्तित्वहीन हो गए हों। जो बात मुझे आज आनंद दे रही है, वह शायद कल मुझे उदासीन न छोड़े, जैसा कि अब तक हमेशा होता आया है; उस क्षण मुझमें जो भी भावना थी, शायद वह तुरंत नष्ट होने वाली नहीं थी, क्योंकि सैन्य जीवन से जुड़ी हर चीज़ के लिए इन कुछ शामों में मेरे अंदर जो तीव्र और क्षणिक जुनून जागा था, उसे सेंट-लूप ने युद्ध कला के विषय में मुझसे जो कुछ कहा था, उससे एक स्थायी बौद्धिक आधार प्रदान किया, जो मुझे इतनी दृढ़ता से अपने साथ बांधे रखने में सक्षम था कि मैं बिना किसी भ्रम के यह आश्वस्त हो सकता था कि डोंसिएरेस छोड़ने के बाद भी मैं वहां अपने मित्रों के कार्यों में रुचि लेता रहूंगा और उनसे दोबारा मिलने में देर नहीं करूंगा। साथ ही, यह सुनिश्चित करने के लिए कि युद्ध कला वास्तव में शब्द के सही अर्थों में एक कला है:
"आप मुझे दिलचस्प लगते हैं—माफ़ कीजिएगा, आप मुझे बहुत दिलचस्प लगते हैं," मैंने सेंट-लूप से कहा, "लेकिन बताइए, एक बात मुझे उलझन में डाल रही है। मुझे लगता है कि रणनीति की कला मुझे बहुत रोमांचित कर सकती है, लेकिन अगर ऐसा है तो मुझे पहले यह

सुनिश्चित करना होगा कि यह अन्य कलाओं से बहुत अलग नहीं है, कि नियमों को जानना ही सब कुछ नहीं है। आप कहते हैं कि युद्ध योजनाओं की नकल की जाती है। जैसा कि आपने कहा, मुझे आधुनिक युद्ध के पीछे पुराने युद्ध की योजना देखने में कुछ सौंदर्यबोध मिलता है, मैं आपको बता नहीं सकता कि यह कितना आकर्षक लगता है। लेकिन फिर, क्या सेनापति की प्रतिभा का कोई महत्व नहीं है? क्या वह वास्तव में नियमों का पालन करने के अलावा और कुछ नहीं करता? या, विज्ञान के दृष्टिकोण से, क्या महान सेनापति भी महान सर्जनों की तरह होते हैं, जो जब दो बीमारियों के लक्षण बाहरी रूप से एक जैसे दिखते हैं, तब भी किसी सूक्ष्म कारण से, शायद अपने अनुभव के आधार पर, लेकिन नए सिरे से व्याख्या किए गए, यह महसूस करते हैं कि एक मामले में उन्हें कुछ करना चाहिए, दूसरे मामले में कुछ और; कि एक मामले में कुछ और करना बेहतर है। संचालन करना है, या किसी और को प्रतीक्षा करनी है?"

मुझे तो यही कहना चाहिए! आप देखेंगे कि नेपोलियन तब भी हमला नहीं करता जब सभी नियमों के अनुसार उसे हमला करना चाहिए था, लेकिन किसी रहस्यमय भविष्यवाणी ने उसे ऐसा न करने की चेतावनी दी थी। उदाहरण के लिए, ऑस्टरलिट्ज़ को देखिए, या 1806 में लैनेस को दिए गए उसके निर्देशों को देखिए। लेकिन आप पाएंगे कि कुछ सेनापति नेपोलियन की किसी एक चाल का अंधाधुंध अनुकरण करते हैं और बिल्कुल विपरीत परिणाम पर पहुँचते हैं। 1870 में इसके एक दर्जन उदाहरण मिलते हैं। लेकिन दुश्मन क्या कर सकता है, इसकी व्याख्या के लिए भी, वह वास्तव में क्या करता है, यह केवल एक लक्षण है जिसका अर्थ कई अलग-अलग चीजें हो सकता है। यदि कोई केवल तर्क और विज्ञान को देखे, तो उनमें से प्रत्येक के सही होने की समान संभावना है, ठीक वैसे ही जैसे कुछ कठिन मामलों में दुनिया का सारा चिकित्सा विज्ञान यह तय करने में असमर्थ होगा कि अदृश्य ट्यूमर घातक है या नहीं, ऑपरेशन किया जाना चाहिए या नहीं। यह उसकी सहज प्रवृत्ति, उसकी भविष्यवाणी है - जैसे मैडम डी थेब्स (क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?) - जो महान सेनापति और महान चिकित्सक दोनों में निर्णय लेती है। मैंने आपको बताया है कि एक उदाहरण के तौर पर, युद्ध की पूर्व संध्या पर की जाने वाली टोही का क्या अर्थ हो सकता है। लेकिन इसका अर्थ दर्जनों अन्य चीजें भी हो सकती हैं, जैसे कि दुश्मन को यह सोचने पर मजबूर करना कि आप उस पर

एक बिंदु से हमला करने वाले हैं जबकि आपका इरादा दूसरे बिंदु से हमला करने का है, एक ऐसा पर्दा डालना जो उसे आपके वास्तविक अभियान की तैयारियों को देखने से रोके, उसे नए सैनिक बुलाने के लिए मजबूर करना, उन्हें रोके रखना, उन्हें उस स्थान से अलग किसी अन्य स्थान पर निष्क्रिय करना जहां उनकी आवश्यकता है, उसकी उपलब्ध सेनाओं का अनुमान लगाना, उसे परखना, और उसे अपनी रणनीति उजागर करने के लिए मजबूर करना। वास्तव में, कभी-कभी किसी अभियान में भारी संख्या में सैनिकों का उपयोग करना इस बात का प्रमाण नहीं है कि यही आपका वास्तविक उद्देश्य है; क्योंकि आप इसे अंजाम देने में उचित हो सकते हैं, भले ही यह केवल एक छल हो, ताकि आपके छल से दुश्मन को धोखा देने की संभावना बढ़ जाए। यदि मेरे पास अब नेपोलियन युद्धों का इस दृष्टिकोण से विश्लेषण करने का समय होता, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ये सरल शास्त्रीय गतिविधियां जिनका हम यहां अध्ययन करते हैं, और जिन्हें आप आगे आकर देखेंगे, हमें बहुत अच्छी तरह समझा देंगी। मैदान में अभ्यास करना, महज़ सैर के आनंद के लिए, हे नौजवान! नहीं, मुझे पता है तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, माफ़ी चाहता हूँ! युद्ध में, जब तुम अपने पीछे उच्च कमान की सतर्कता, विवेक और गहन अध्ययन को महसूस करते हो, तो तुम उनसे उतना ही प्रभावित होते हो जितना किसी प्रकाशस्तंभ के साधारण दीपकों से। ये केवल भौतिक दहन नहीं, बल्कि आत्मा का प्रकाश हैं, जो अंतरिक्ष में फैलकर जहाजों को खतरे से आगाह करते हैं। शायद मैं तुमसे केवल युद्ध साहित्य के बारे में बात करके गलत था। वास्तव में, जैसे मिट्टी की बनावट, हवा और प्रकाश की दिशा हमें बताती है कि पेड़ किस दिशा में उगेगा, वैसे ही युद्ध की परिस्थितियाँ, जिस देश से होकर तुम गुज़रते हो, उसकी विशेषताएँ, एक हद तक, उन योजनाओं की संख्या निर्धारित और सीमित करती हैं जिनमें से सेनापति को चुनना होता है। इसका अर्थ यह है कि किसी पर्वत श्रृंखला, घाटियों के जाल और मैदानों पर, हिमस्खलन की अनिवार्यता और अद्भुत सुंदरता के साथ ही तुम मार्च करती हुई सेना की दिशा का अनुमान लगा सकते हो।

"अब आप मुझे कमांडर के रूप में चुनाव की वह स्वतंत्रता, दुश्मन की उस योजना का पता लगाने की वह शक्ति, जो आपने मुझे कुछ क्षण पहले ही दी थी, से वंचित कर रहे हैं।"

बिल्कुल नहीं। आपको वह दर्शनशास्त्र की किताब याद है जो हमने बालबेक में साथ पढ़ी थी, जिसमें संभावनाओं की दुनिया की तुलना वास्तविक दुनिया से की गई थी। ठीक है। रणनीति की कला में भी यही बात लागू होती है। किसी भी परिस्थिति में चार योजनाएँ सामने आती हैं, जिनमें से सेनापति को एक को चुनना होता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बीमारी कई चरणों से गुजरती है और डॉक्टर को उस पर नज़र रखनी पड़ती है। और यहाँ भी मानवीय तत्वों की कमजोरी और महानता अनिश्चितता के नए कारण बनते हैं। मान लीजिए कि इन चार योजनाओं में से आकस्मिक कारणों (जैसे कि छोटे उद्देश्यों की प्राप्ति, या समय की कमी, या उसकी प्रभावी शक्ति की कमी और राशन की कमी) के कारण सेनापति पहली योजना को चुनता है, जो कम परिपूर्ण है, लेकिन उसे लागू करने में कम खर्चीला है, अधिक तीव्र है, और उसके क्षेत्र में सैनिकों को खिलाने के लिए अधिक उपजाऊ भूमि उपलब्ध है। इस योजना को शुरू करने के बाद, जिसे दुश्मन, जो पहले अनिश्चित है, जल्द ही पहचान लेगा, सेनापति को पता चल सकता है कि सफलता उसकी पहुँच से बाहर है, कठिनाइयाँ बहुत अधिक हैं (जिसे मैं मानवीय कमजोरी का तत्व कहता हूँ), और वह इसे छोड़ सकता है और दूसरी या तीसरी योजना को आज़मा सकता है। चौथा। लेकिन यह भी उतना ही संभव है कि उसने पहली योजना (और इसे ही मैं मानवीय महानता कहता हूँ) को केवल दुश्मन को घेरने के लिए एक छल के रूप में आजमाया हो, ताकि बाद में उसे उस बिंदु पर आश्चर्यचकित किया जा सके जहाँ वह हमले की उम्मीद नहीं कर रहा था। इस प्रकार उल्म में, मैक, जिसने पश्चिम से दुश्मन के आगे बढ़ने की उम्मीद की थी, उत्तर से घिर गया जहाँ वह खुद को पूरी तरह सुरक्षित समझ रहा था। वास्तव में, मेरा उदाहरण बहुत अच्छा नहीं है। और उल्म घेराबंदी युद्ध का एक बेहतर प्रकार है, जिसे भविष्य में दोहराया जाएगा, क्योंकि यह न केवल एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिससे सेनापति प्रेरणा लेंगे, बल्कि एक ऐसा रूप है जो कुछ हद तक आवश्यक है (कई आवश्यकताओं में से एक, जो पसंद और विविधता के लिए जगह छोड़ती है) एक प्रकार के क्रिस्टलीकरण की तरह। लेकिन वास्तव में इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि ये स्थितियाँ आखिरकार कृत्रिम हैं। अपनी दर्शनशास्त्र की पुस्तक पर वापस जाएँ; यह तर्क के नियमों या वैज्ञानिक नियमों की तरह है, वास्तविकता कमोबेश इसके अनुरूप होती है, लेकिन ध्यान रखें कि महान गणितज्ञ पोइंकेयर को इस बात का बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि गणित पूरी तरह

से सटीक है। जिन नियमों का मैंने आपसे ज़िक्र किया, वे वास्तव में गौण महत्व के हैं, और इसके अलावा उनमें समय-समय पर बदलाव भी होते रहते हैं। उदाहरण के लिए, हम घुड़सवार सैनिकों को 1895 की फील्ड सर्विस का पालन करना पड़ता है, जिसे आप कह सकते हैं कि यह अप्रचलित है क्योंकि यह उस पुराने और अप्रचलित सिद्धांत पर आधारित है जो मानता है कि घुड़सवार युद्ध का प्रभाव दुश्मन में आक्रमण से उत्पन्न होने वाली दहशत के अलावा नैतिक प्रभाव से अधिक कुछ नहीं होता। जबकि हमारे अधिक बुद्धिमान शिक्षक, घुड़सवार सेना के सभी सर्वश्रेष्ठ दिमाग, और विशेष रूप से वह मेजर जिसके बारे में मैं आपको बता रहा था, इसके विपरीत यह मानते हैं कि निर्णायक विजय वास्तविक आमने-सामने की लड़ाई में प्राप्त होगी जिसमें हमारे हथियार कृपाण और भाला होंगे और जो पक्ष अधिक समय तक टिके रह सकता है, वह न केवल नैतिक रूप से और दहशत पैदा करके, बल्कि भौतिक रूप से भी जीतेगा।

"सेंट-लूप बिल्कुल सही हैं, और यह संभव है कि अगली फील्ड सर्विस इस विकास के संकेत दिखाएगी," मेरे दूसरे पड़ोसी ने कहा।

"मैं आपके समर्थन के लिए आभारी हूं, क्योंकि आपके विचार मेरे मित्र पर मेरे विचारों से कहीं अधिक प्रभाव डालते हैं," सेंट-लूप ने मुस्कुराते हुए कहा, शायद इसलिए कि मेरे और उनके साथी के बीच बढ़ते आकर्षण ने उन्हें थोड़ा परेशान किया था या इसलिए कि उन्होंने इसे इस आधिकारिक पुष्टि के साथ औपचारिक रूप देना उचित समझा। "शायद मैंने नियमों के महत्व को कम आंका हो; मुझे नहीं पता। यह स्वीकार करना होगा कि वे बदलते रहते हैं। लेकिन फिलहाल वे सैन्य स्थिति, अभियान और संकेंद्रण की योजनाओं को नियंत्रित करते हैं। यदि वे रणनीति की गलत धारणा को दर्शाते हैं तो वे हार का मुख्य कारण बन सकते हैं। यह सब आपके लिए थोड़ा अधिक तकनीकी है," उन्होंने मुझसे कहा। "आखिरकार, आप कह सकते हैं कि युद्ध कला के विकास को सबसे अधिक गति देने वाला कारक स्वयं युद्ध ही हैं। किसी अभियान के दौरान, यदि वह लंबा चलता है, तो आप देखेंगे कि एक पक्ष दूसरे पक्ष की सफलताओं और गलतियों से सीख लेकर, उसकी विधियों को परिष्कृत करता है, और दूसरा पक्ष भी बदले में उससे बेहतर हो जाता है। लेकिन यह सब अतीत की बात है। तोपखाने की भयानक प्रगति के साथ, भविष्य के युद्ध, यदि और युद्ध हुए, तो इतने कम समय में समाप्त हो

जाएंगे कि हमें अपने सीखे हुए सबक को व्यवहार में लाने के बारे में सोचने का भी समय नहीं मिलेगा, और शांति संधि पर हस्ताक्षर हो चुके होंगे।"

"इतने संवेदनशील मत बनो," मैंने सेंट-लूप से कहा, और अपने भाषण के पहले शब्दों को दोहराया। "मैं तुम्हें बड़ी उत्सुकता से सुन रहा था।"

“अगर आप कृपया क्रोधित न हों और मुझे बोलने दें,” उनके मित्र ने आगे कहा, “मैं आपकी कही हुई बात में कुछ जोड़ना चाहूँगा कि अगर युद्ध एक-दूसरे से मिलते-जुलते और मेल खाते हैं, तो यह केवल कमांडर की सोच के कारण नहीं होता। ऐसा हो सकता है कि उनकी किसी गलती (उदाहरण के लिए, दुश्मन की ताकत को न समझ पाना) के कारण वे अपने सैनिकों से असाधारण बलिदान देने का आह्वान करें, ऐसे बलिदान जो कुछ इकाइयाँ इतने महान समर्पण के साथ करती हैं कि युद्ध में उनकी भूमिका किसी अन्य युद्ध में किसी अन्य इकाई द्वारा निभाई गई भूमिका के समान हो जाती है, और इन्हें इतिहास में एक दूसरे के समान उदाहरणों के रूप में उद्धृत किया जाता है: 1870 की बात करें तो, हमारे पास सेंट-प्रिवेट में प्रशियाई गार्ड और फ्रॉशविलर और विसेम्बर्ग में तुर्को हैं।”

"वाह! अदला-बदली करने योग्य; बहुत बढ़िया! शानदार! लड़का बुद्धिमान है," सेंट-लूप की टिप्पणी थी।

इन अंतिम उदाहरणों से मैं अप्रभावित नहीं रहा, जैसा कि हमेशा होता है जब विशिष्ट उदाहरण के पीछे मुझे सामान्य नियम की झलक मिलती है। फिर भी, सेनापति की प्रतिभा, यही वह चीज़ थी जिसमें मेरी रुचि थी, मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि इसमें क्या निहित है, दी गई परिस्थितियों में, जब प्रतिभाहीन सेनापति शत्रु का सामना नहीं कर पाता, तो एक प्रेरित नेता अपनी संकटग्रस्त स्थिति को पुनः स्थापित करने के लिए क्या कदम उठाएगा, जो सेंट-लूप के अनुसार बिल्कुल संभव था और नेपोलियन ने एक से अधिक बार किया था। और सैन्य योग्यता का अर्थ समझने के लिए मैंने उन विभिन्न जनरलों के बीच तुलना करने को कहा जिन्हें मैं नाम से जानता था, कि उनमें से किसमें एक नेता का चरित्र और एक रणनीतिकार की प्रतिभा सबसे अधिक स्पष्ट रूप से थी; अपने नए मित्रों को ऊबाने के जोखिम पर भी, जिन्होंने हालांकि ऊब का कोई संकेत नहीं दिखाया, बल्कि अटूट सौहार्द के साथ मुझे उत्तर देना जारी रखा।

मैंने खुद को अलग-थलग महसूस किया, न केवल उस भीषण, बर्फीली रात से जो हमारे चारों ओर दूर तक फैली हुई थी और जिसमें हमें समय-समय पर ट्रेन की सीटी सुनाई देती थी, जिससे हमारे यहाँ होने का आनंद और भी बढ़ जाता था, या घंटे की घंटी की आवाज़, जो सौभाग्य से अभी भी उस समय से बहुत दूर थी जब इन युवकों को अपनी तलवारें बांधकर जाना पड़ता, बल्कि अपने सभी बाहरी जुनूनों से भी, लगभग श्रीमती डी गुएरमांटेस की स्मृति से, सेंट-लूप के आतिथ्य से, जिसे उनके दोस्तों ने और भी मजबूत बना दिया था; इस छोटे से भोजन कक्ष की गर्माहट से, और हमारे सामने परोसे गए चुनिंदा व्यंजनों के स्वाद से। उन्होंने मेरी कल्पना को उतना ही आनंद दिया जितना मेरी भूख को। कभी-कभी, जिस छोटे से स्थिर चित्र से उन्हें लिया गया था, वह सीप का खुरदरा पवित्र जल पात्र जिसमें खारे पानी की कुछ बूँदें बची थीं, या अंगूर के गुच्छे का गाँठदार तना, पीले पत्ते अभी भी उन्हें घेरे हुए थे - अखाद्य, किसी परिदृश्य की तरह काव्यात्मक और दूरस्थ, और भोजन के दौरान विभिन्न बिंदुओं पर, किसी बेल की छाया में विश्राम और समुद्र की सैर की छाप उत्पन्न करते थे; अन्य शामों में, केवल रसोइया ही हमारे भोजन के इन मूल गुणों को उजागर करता था, जिसे वह कलाकृति की तरह, उसके प्राकृतिक परिवेश में प्रस्तुत करता था; और शराब में पकी हुई मछली एक लंबी मिट्टी की थाली में लाई जाती थी, जिस पर, नीली जड़ी-बूटियों के बिस्तर पर उभरी हुई, अब अटूट लेकिन उबलते पानी में जीवित गिराए जाने के कारण अभी भी मुड़ी हुई, अपने खोल में उपग्रह जीवों, केकड़ों, झींगों और सीपियों के घेरे से घिरी हुई, यह बर्नार्ड पैलिसी द्वारा डिजाइन की गई एक सिरेमिक कृति का हिस्सा प्रतीत होती थी।

"मैं ईर्ष्यालु हूँ, क्रोधित हूँ," सेंट-लूप ने मुझ पर हमला किया, आधा मुस्कुराते हुए, आधा गंभीरता से, मेरे और उसके दोस्त के बीच चल रही अंतहीन बातचीत का जिक्र करते हुए। "क्या इसलिए कि तुम उसे मुझसे ज़्यादा बुद्धिमान समझते हो? क्या तुम उसे मुझसे ज़्यादा पसंद करते हो? खैर, मुझे लगता है कि अब वही सब कुछ है, और किसी और को देखने का हक नहीं है!" जो पुरुष किसी स्त्री से बेहद प्यार करते हैं, जो स्त्री-प्रेमियों की संगति में रहते हैं, वे ऐसी बातें करने की हिम्मत कर लेते हैं जो दूसरे, जो उनमें कम मासूमियत देखते हैं, कभी नहीं करेंगे।

जब बातचीत सामान्य हो गई, तो उन्होंने सेंट-लूप को नाराज़ करने के डर से ड्रेफस का ज़िक्र करने से परहेज़ किया। हालाँकि, अगले सप्ताह, उनके दो मित्र टिप्पणी कर रहे थे कि यह कितनी अजीब बात है कि इतने सैन्य वातावरण में रहते हुए भी वे ड्रेफस के इतने कट्टर समर्थक, लगभग सैन्य-विरोधी थे। मैंने विस्तार में न जाते हुए सुझाव दिया, "कारण यह है कि परिवेश का प्रभाव उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना लोग सोचते हैं..." मेरा इरादा यहीं रुकने का था, और सेंट-लूप से कुछ दिन पहले कही गई बातों को दोहराने का नहीं। हालाँकि, मैंने इन शब्दों को लगभग हूबहू दोहरा दिया था, इसलिए मैंने यह कहकर अपनी बात समाप्त की: "जैसा कि वास्तव में मैं उस दिन कह रहा था..." लेकिन मैंने रॉबर्ट की मेरे और कुछ अन्य व्यक्तियों के प्रति विनम्र प्रशंसा के दूसरे पहलू को नज़रअंदाज़ कर दिया था। वह प्रशंसा उनके विचारों को इतनी गहराई से आत्मसात करने में परिणत हुई कि एक-दो दिनों में वे पूरी तरह से भूल गए होंगे कि वे विचार उनके अपने नहीं थे। और इसलिए, मेरे इस मामूली सिद्धांत के मामले में, सेंट-लूप ने मानो मानो यह हमेशा से उनके दिमाग में ही रहा हो, और मानो मैं केवल उनके संरक्षित क्षेत्र पर अतिक्रमण कर रहा हूँ, मेरी खोज का गर्मजोशी से स्वागत करना अपना कर्तव्य समझा।

"जी हां, पर्यावरण का कोई महत्व नहीं है।"

और इतनी तीव्रता से जैसे कि उसे डर हो कि मैं बीच में टोकना बंद कर दूँगी या उसे समझ नहीं पाऊँगी:

"वास्तविक प्रभाव तो व्यक्ति के बौद्धिक परिवेश का ही होता है! व्यक्ति अपने विचारों का ही सूचक होता है!"

वह एक पल के लिए रुका, मानो उसने अपना खाना पचा लिया हो, उसके चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान थी, उसने अपना चश्मा नीचे रखा और मुझे तीखी निगाहों से घूरने लगा:

"एक जैसे विचार रखने वाले सभी लोग एक समान होते हैं," उन्होंने मुझे चुनौती भरे लहजे में बताया। शायद वे पूरी तरह से भूल गए थे कि मैंने खुद उनसे कुछ ही दिन पहले वही बात कही थी जो उन्हें इतनी अच्छी तरह याद थी।

मैं हर शाम एक ही मनोदशा में सेंट-लूप के रेस्तरां नहीं पहुँचता था। अगर कोई स्मृति, कोई दुःख जो हम पर बोझ बन जाता है, हमें इतनी प्रभावी ढंग से छोड़ देता है कि हम उसका

एहसास भी नहीं कर पाते, तो वह लौट भी सकता है और कभी-कभी लंबे समय तक हमारे साथ रह सकता है। ऐसी भी शामें थीं जब रेस्तरां जाते समय कस्बे से गुजरते हुए मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस की इतनी तीव्र याद आती थी कि मेरी साँसें रुक जाती थीं; ऐसा लगता था मानो किसी कुशल शरीर रचना विशेषज्ञ ने मेरे सीने का एक हिस्सा चीरकर निकाल लिया हो और उसकी जगह उतना ही बड़ा हिस्सा निराकार पीड़ा, उतनी ही तीव्र लालसा और प्रेम से भर दिया हो। और चाहे घाव को कितनी ही सफाई से सिल दिया गया हो, जीवन में तब कोई सुकून नहीं मिलता जब किसी दूसरे व्यक्ति के खोने का पछतावा हमारे भीतर के अंगों की जगह ले लेता है, ऐसा लगता है जैसे वह उनसे भी ज़्यादा जगह घेर रहा हो, हम उसे लगातार महसूस करते हैं, और वैसे भी, अपने शरीर के एक अंग के बारे में सोचने के लिए मजबूर होना कितना विरोधाभासी है। बस ऐसा लगता है कि हम किसी न किसी तरह ज़्यादा मूल्यवान हैं। हवा की सरसराहट पर हम आह भरते हैं, घुटन से भी और थकान से भी। मैं आकाश की ओर देखता। अगर आसमान साफ होता, तो मैं मन ही मन कहता: "शायद वह गाँव में है; वह भी उन्हीं तारों को देख रही है; और क्या पता, जब मैं रेस्तरां पहुँचूँ तो रॉबर्ट मुझसे कहे: 'अच्छी खबर! मुझे अभी अपनी चाची का संदेश मिला है; वह तुमसे मिलना चाहती है; वह यहाँ आ रही है।'" श्रीमती डी गुएरमांटेस का ख्याल सिर्फ आकाश में ही नहीं बसा था, हवा का एक झोंका, बाकी सब से कहीं अधिक सुगंधित, मानो उनके द्वारा भेजा गया संदेश हो, जैसे बहुत पहले मेसेग्लिस के खेतों में गिल्बर्ट से आया था। हम बदलते नहीं; हम किसी व्यक्ति के प्रति अपने भाव में कई सुप्त तत्वों को शामिल कर लेते हैं, जिन्हें वह भाव पुनर्जीवित तो कर देता है, लेकिन जो उससे पराक्रमी होते हैं। इसके अलावा, कुछ खास लोगों के प्रति इन भावनाओं के साथ, हमारे भीतर हमेशा कुछ ऐसा होता है जो उन्हें सत्य के करीब लाने की कोशिश करता है, यानी उन्हें एक व्यापक भावना में समाहित करने की कोशिश करता है, जो पूरी मानवता के लिए समान है, जिसके साथ लोग और उनके द्वारा हमें पहुँचाया गया दुख केवल संवाद स्थापित करने का एक साधन मात्र हैं। मेरे दुःख में एक प्रकार का सुख इस बात से मिला कि मैं जानता था कि यह सार्वभौमिक प्रेम का एक छोटा सा अंश है। केवल इसलिए कि मुझे लगा कि मैं उन दुःखों को पहचान रहा हूँ जो मैंने गिल्बर्ट के कारण महसूस किए थे, या फिर जब शाम को कॉम्ब्रे में माँ किसी भी कमरे में नहीं रुकती थीं, और बर्गोट की कुछ किताबों की याद भी, उस पीड़ा में जो

मैं अब महसूस कर रहा था, जिससे श्रीमती डी गुएरमांटेस, उनकी शीतलता, उनकी अनुपस्थिति स्पष्ट रूप से जुड़ी नहीं थीं, जैसे एक दार्शनिक के मन में कारण और प्रभाव जुड़े होते हैं, मैंने यह निष्कर्ष नहीं निकाला कि श्रीमती डी गुएरमांटेस उस पीड़ा का कारण नहीं थीं। क्या ऐसा कोई दर्द नहीं होता जो शरीर में फैलता हुआ, दूसरे हिस्सों तक पहुँचता हुआ, लेकिन चिकित्सक के उंगली से उसके मूल स्थान को छूते ही पूरी तरह गायब हो जाता है? फिर भी, उस क्षण तक, उसका फैलाव हमें इतना अस्पष्ट, इतना घातक प्रतीत होता था कि हम उसे न तो समझा पाते थे और न ही उसका पता लगा पाते थे, इसलिए हमने सोचा कि उसके ठीक होने की कोई संभावना ही नहीं है। रेस्तरां जाते समय मैंने मन ही मन कहा: "श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिले हुए दो सप्ताह बीत चुके हैं।" दो सप्ताह का यह अंतराल मेरे अलावा किसी और को इतना लंबा नहीं लगा, क्योंकि श्रीमती डी गुएरमांटेस के मामले में मैं समय को मिनटों में गिनता था। मेरे लिए अब केवल तारे और हवा ही नहीं, बल्कि समय के गणितीय विभाजन भी एक दुखद और काव्यात्मक रूप धारण कर चुके थे। अब हर दिन एक ढहते पहाड़ की ढीली चोटी की तरह था, जिसके एक तरफ मुझे लगता था कि मैं विस्मृति में डूब जाऊँगा, लेकिन दूसरी तरफ डचेस को फिर से देखने की आवश्यकता मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। और मैं लगातार एक या दूसरी तरफ झुकता रहता था, मेरा कोई स्थिर संतुलन नहीं था। एक दिन मैंने खुद से कहा: "शायद आज रात कोई पत्र आएगा;" और भोजन कक्ष में प्रवेश करते ही मैंने सेंट-लूप से पूछने का साहस जुटाया:

"क्या आपको पेरिस से कोई खबर मिली है?"

"हां," उसने उदास स्वर में उत्तर दिया; "बुरी खबर है।"

मुझे यह जानकर राहत मिली कि केवल वही दुखी था और यह खबर उसकी प्रेमिका से आई थी। लेकिन जल्द ही मुझे समझ आ गया कि इसका एक परिणाम यह होगा कि रॉबर्ट मुझे हमेशा के लिए अपनी चाची से मिलने नहीं ले जा पाएगा।

मुझे पता चला कि उसके और उसकी प्रेमिका के बीच झगड़ा हो गया था, शायद डाक के ज़रिए, या फिर अगर वह ट्रेन के बीच में उससे मिलने आई होती तो बात अलग होती। और उनके बीच पहले जो झगड़े होते थे, चाहे वे कितने भी मामूली क्यों न हों, हमेशा ऐसे लगते थे जैसे उनका कोई हल ही न निकलेगा। क्योंकि वह बहुत गुस्सैल स्वभाव की लड़की थी, जो पैर

पटकती और ऐसे रोने लगती थी जैसे बच्चे किसी अंधेरी कोठरी में खुद को बंद कर लेते हैं, रात के खाने के लिए बाहर नहीं आते, कोई स्पष्टीकरण देने से इनकार कर देते हैं, और जब हमारा सब्र टूट जाता है और हम उन्हें कोड़े मारते हैं तो उनका रोना और भी बढ़ जाता है। यह कहना कि सेंट-लूप को इस अलगाव से बहुत तकलीफ हुई, सच्चाई को कम करके आंकना होगा, जिससे पाठक को उसके दुख का गलत अंदाजा लगेगा। जब उसने खुद को अकेला पाया, तो उसके मन में केवल यही तस्वीर थी कि उसकी प्रेमिका उससे विदा ले रही है, उसके ऊर्जावान व्यक्तित्व को देखकर उसके मन में जो सम्मान जागा था, उसे दर्शाते हुए। उसकी शुरुआती चिंताएँ अपूरणीय क्षति के सामने फीकी पड़ गईं, और किसी चिंता का अंत इतना सुखद होता है कि एक बार यह निश्चित हो जाने पर, यह अलगाव उसके लिए सुलह के समान ही आकर्षक लगने लगा। कुछ समय बाद, उसे एक और आकस्मिक और अप्रत्याशित दुःख सताने लगा, जिसकी लहर उसके हृदय से निरंतर उमड़ती रही। उसे यह सोचकर दुःख होता था कि शायद वह उससे सुलह करने को तैयार हो, कि यह असंभव नहीं कि वह उसके संदेश का इंतज़ार कर रही हो, कि इस बीच, उससे बदला लेने के लिए, शायद किसी शाम, किसी जगह, कोई काम करे, और उसे बस उसे टेलीग्राम करके सूचित करना हो कि वह आ रहा है, और ऐसा न हो। शायद दूसरे लोग उसके समय का फायदा उठा रहे हों, और कुछ दिनों में उसे वापस पाना असंभव हो जाए, क्योंकि तब तक उसकी सगाई हो चुकी होगी। इन सभी संभावनाओं में से उसे किसी भी बात का यकीन नहीं था; उसकी प्रेमिका ने चुप्पी साध रखी थी, जिससे वह दुःख से इतना व्याकुल हो गया कि वह खुद से पूछने लगा कि कहीं वह डोनसिएरेस में कहीं छिपी तो नहीं है, या फिर इंडीज के लिए रवाना तो नहीं हो गई है।

कहा जाता है कि मौन एक शक्ति है; एक दूसरे और बिल्कुल अलग अर्थ में, यह उन लोगों के हाथों में एक जबरदस्त शक्ति है जिन्हें प्यार किया जाता है। यह प्रतीक्षा करने वाले प्रेमी की बेचैनी को बढ़ा देता है। हमें किसी दूसरे व्यक्ति के करीब आने के लिए सबसे ज्यादा उकसाने वाली चीज वही होती है जो हमें अलग रखती है; और मौन से बड़ी बाधा और क्या हो सकती है? यह भी कहा जाता है कि मौन एक यातना है, जो जेल की कोठरी में इसे सहने वाले को पागल कर सकती है। लेकिन चुप रहने की यातना से भी कहीं ज्यादा तीव्र यातना है उस व्यक्ति के मौन को सहना जिसे आप प्यार करते हैं! रॉबर्ट ने खुद से पूछा: "वह क्या कर रही

होगी, मुझे एक शब्द भी नहीं भेज रही? शायद वह मुझसे नफरत करती है, और हमेशा करती रहेगी।" और उसने खुद को कोसा। इस प्रकार, उसके मौन ने वास्तव में उसे ईर्ष्या और पश्चाताप से पागल कर दिया। इसके अलावा, जेल के मौन से भी ज्यादा क्रूर, इस तरह का मौन अपने आप में एक जेल है। मैं मानता हूँ कि यह एक अमूर्त घेरा है, पर अभेद्य, यह खाली वातावरण का एक टुकड़ा है जिसके खालीपन के बावजूद, परित्यक्त प्रेमी की दृष्टि किरणें पार नहीं हो सकतीं। क्या मौन के उस प्रकाश से अधिक भयानक कोई प्रकाश हो सकता है जो हमें एक नहीं बल्कि हजारों अनुपस्थित प्रेम दिखाता है, और उनमें से प्रत्येक को किसी नए विश्वासघात में लिप्त दिखाता है? कभी-कभी, तनाव में अचानक ढील देते हुए, रॉबर्ट कल्पना करता कि मौन का यह दौर बस समाप्त होने वाला है, कि लंबे समय से प्रतीक्षित पत्र आ रहा है। उसने उसे देखा, वह आ गया, वह हर आवाज पर चौंक गया, उसकी प्यास पहले ही बुझ चुकी थी, वह बुदबुदाया: "पत्र! पत्र!" स्नेह के इस काल्पनिक नखलिस्तान की एक झलक के बाद, उसने खुद को एक बार फिर अंतहीन मौन के वास्तविक रेगिस्तान में संघर्ष करते हुए पाया।

वह बिना किसी चूक के, उस अलगाव के सभी दुखों और पीड़ाओं को पहले से ही सह रहा था, जिन्हें वह कभी-कभी टालने का प्रयास करता हुआ प्रतीत होता था। ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जो विदेश प्रवास की योजना बनाकर अपने सारे काम निपटा लेते हैं, लेकिन कभी जा नहीं पाते, जिनका मन, यह अनिश्चित होकर कि वे कल कहाँ रहेंगे, असहाय रूप से कुछ समय के लिए उनसे अलग होकर फड़फड़ाता रहता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी मरते हुए व्यक्ति के शरीर से निकाला गया हृदय, भले ही उसके बाकी शरीर से अलग हो गया हो, धड़कता रहता है। फिर भी, अपनी प्रेमिका के लौटने की इस आशा ने उसे इस अलगाव को सहने का साहस दिया, जैसे युद्ध से जीवित लौटने का विश्वास मृत्यु का सामना करने में सहायक होता है। और चूंकि आदत, मानव विकास के सभी पौधों में से, वह है जिसे जीवित रहने के लिए सबसे कम पोषक मिट्टी की आवश्यकता होती है, और जो सबसे बंजर दिखने वाली चट्टान पर सबसे पहले उगती है, शायद अगर उसने शुरुआत में इस अलगाव को एक दिखावा बनाकर किया होता, तो अंत में वह वास्तव में इसका आदी हो जाता। लेकिन उसकी अनिश्चितता ने उसे एक ऐसी भावनात्मक अवस्था में रखा, जो उस महिला की याद से जुड़ी होने के कारण प्रेम के

समान थी। फिर भी, उसने खुद को उसे पत्र न लिखने के लिए बाध्य किया, शायद यह सोचकर कि कुछ परिस्थितियों में अपनी प्रेमिका के साथ रहने की तुलना में उसके बिना रहना कम कष्टदायक होगा, या फिर जिस तरह से उनका अलगाव हुआ था, उसके बाद उससे माफी का इंतजार करना आवश्यक था, यदि वह उसके लिए अपने मन में मौजूद भावनाओं को, प्रेम के रूप में नहीं तो कम से कम सम्मान और आदर के रूप में बनाए रखना चाहती थी। उसने डोनसिएरेस में हाल ही में स्थापित टेलीफोन पर जाकर, अपने मित्र के यहाँ रखी एक नौकरानी से समाचार पूछने या उसे निर्देश देने में ही संतोष किया। ये बातचीत, जैसा कि बाद में पता चला, जटिल थी और रॉबर्ट का बहुत समय लेती थी, क्योंकि राजधानी की कुरूपता के बारे में अपने साहित्यिक मित्रों के उपदेशों से प्रभावित होकर, लेकिन मुख्य रूप से अपने जानवरों - अपने कुत्तों, अपने बंदर, अपनी कैनरी और अपने तोते - की खातिर, जिनके लगातार शोर को पेरिस में रहने वाला उसका मकान मालिक अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता था, रॉबर्ट की प्रेमिका ने वर्साय के पड़ोस में एक छोटा सा घर ले लिया था। इस बीच, डोनसिएरेस में, वह रात भर एक पल भी नहीं सो पाता था। एक बार, मेरे कमरे में, थकान से चूर होकर, वह थोड़ी देर के लिए सो गया। लेकिन अचानक वह बोलने लगा, उठकर भागने की कोशिश करने लगा, कुछ होने से रोकने की कोशिश करने लगा, बोला: "मैं उसकी आवाज़ सुन रहा हूँ; तुम ऐसा नहीं करोगे... तुम ऐसा नहीं करोगे..." वह जाग गया। उसने मुझे बताया कि वह सपना देख रहा था कि वह सार्जेंट-मेजर के साथ गाँव में है। उसके मेज़बान ने उसे घर के एक खास हिस्से से दूर रखने की कोशिश की थी। सेंट-लूप को पता चला था कि सार्जेंट-मेजर के साथ एक अधीनस्थ अधिकारी ठहरा हुआ है, जो बेहद अमीर और बेहद दुष्ट है, और वह जानता था कि वह अपनी प्रेमिका के प्रति बेहद आसक्त है। अचानक सपने में उसने अपनी प्रेमिका की चरम सुख के क्षणों में निकलने वाली रुक-रुक कर होने वाली चीखें स्पष्ट रूप से सुनीं। उसने सार्जेंट-मेजर को उस कमरे में ले जाने के लिए मजबूर करने की कोशिश की जहाँ वह थी। लेकिन दूसरे ने उसे रोक लिया, और मेहमान की इस अविवेकी हरकत पर नाराज़गी ज़ाहिर की, जिसे रॉबर्ट के अनुसार वह कभी नहीं भूल पाएगा।

"यह एक मूर्खतापूर्ण सपना था," उसने हांफते हुए कहा।

फिर भी, मैं देख सकता था कि अगले एक घंटे के दौरान, वह एक से अधिक बार अपनी प्रेमिका को फ़ोन करके सुलह की भीख मांगने ही वाला था। मेरे पिता के पास अब कुछ समय से घर पर टेलीफ़ोन था, लेकिन मुझे संदेह है कि सेंट-लूप के लिए यह कितना उपयोगी होता। इसके अलावा, मुझे यह बिल्कुल भी उचित नहीं लगा कि मेरे माता-पिता, या यहाँ तक कि उनके घर में स्थापित एक यंत्र, सेंट-लूप और उसकी प्रेमिका के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाए, चाहे वह कितनी भी शालीन और उच्च विचारों वाली क्यों न हो। उसका बुरा सपना उसकी स्मृति से धुंधलाने लगा। एक स्थिर और खोई हुई निगाहों से, वह उन सभी क्रूर दिनों में मुझसे मिलने आता था, जो मेरे मन में एक के बाद एक धातु से बनी उस भव्य सीढ़ी की तरह दिखाई देते थे, जिस पर रॉबर्ट खड़ा होकर खुद से पूछता था कि उसका दोस्त क्या फैसला लेने वाला है।

अंततः उसने पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह उसे क्षमा कर देगा। जैसे ही उसे एहसास हुआ कि एक बड़ा टकराव टल गया है, उसे सुलह के सारे नुकसान नज़र आने लगे। इसके अलावा, उसका दुख पहले से कम तीव्र होने लगा था, और उसने उस दुःख को लगभग स्वीकार कर लिया था जिसका तीखा दर्द उसे शायद कुछ महीनों में फिर से महसूस करना पड़ता अगर उनका अंतरंग संबंध फिर से शुरू हो जाता। उसने ज़्यादा देर तक संकोच नहीं किया। और शायद उसने केवल इसलिए संकोच किया क्योंकि अब उसे अपनी प्रेमिका को पुनः प्राप्त करने का पूरा विश्वास था, कि वह ऐसा कर सकता है और इसलिए ऐसा करेगा। केवल उसने उससे कहा कि ताकि उसे अपने मन को शांत करने का समय मिल सके, वह नए साल पर पेरिस न आए। अब उसका मन उसे देखे बिना पेरिस जाने का नहीं कर रहा था। दूसरी ओर, उसने उसके साथ विदेश जाने की इच्छा व्यक्त की थी, लेकिन इसके लिए उसे छुट्टी के लिए औपचारिक आवेदन करना होगा, जिसे कैप्टन डी बोरोडिनो देने को तैयार नहीं थे।

मुझे खेद है, क्योंकि मेरी चाची के साथ आपकी मुलाकात स्थगित करनी पड़ेगी। मुझे लगता है कि मैं ईस्टर पर पेरिस में रहूंगा।

"तब हम श्रीमती डी गुएरमांटेस से नहीं मिल पाएंगे, क्योंकि मैं बालबेक जा चुका होऊंगा। लेकिन, सच कहूं तो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं आपको यकीन दिलाता हूं।"

"बालबेक? लेकिन आप तो अगस्त तक वहां गए ही नहीं थे।"

"मुझे पता है; लेकिन अगले साल वे मुझे मेरी सेहत के लिए वहां जल्दी भेजेंगे।"
उन्हें बस यही डर था कि उनकी प्रेमिका के बारे में मेरी राय गलत न बन जाए, जो उन्होंने मुझे बताया था। "वह हिंसक इसलिए हैं क्योंकि वह बहुत स्पष्टवादी हैं, अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करती हैं। लेकिन वह एक महान व्यक्तित्व हैं। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि उनमें कितनी उत्कृष्ट कविता समाई हुई है। वह हर साल 'संस डे' मनाने ब्रुग्स जाती हैं। कितनी अच्छी बात है, है ना? अगर आप कभी उनसे मिलें तो आप समझ जाएंगे कि मेरा क्या मतलब है; उनमें एक अलग ही महानता है..." और, क्योंकि वह उस साहित्यिक मंडली की कुछ आदतों से प्रभावित थे जिसमें वह महिला रहती थीं: "उनमें कुछ अलौकिक सा है, वास्तव में कुछ कवि जैसा; आप समझ रहे हैं ना, कवि का पुजारी में विलीन हो जाना।"
मैं रात के खाने के दौरान एक बहाना ढूंढ रहा था जिससे सेंट-लूप अपनी चाची से मुझे मिलने के लिए कह सकें, और मुझे उनके पेरिस आने का इंतजार न करना पड़े। अब मुझे यह बहाना मिल गया कि मैं एल्स्टिर की कुछ और तस्वीरें देखना चाहता था, जो एक प्रसिद्ध चित्रकार थे जिनसे सेंट-लूप और मैं बालबेक में मिले थे। एक बहाना जिसके पीछे सच्चाई का भी अंश था, क्योंकि अगर एल्स्टिर की मेरी यात्राओं के दौरान, मैंने उनकी पेंटिंग से यह अपेक्षा की होती कि वह मुझे खुद से बेहतर चीजों की समझ और प्रेम की ओर ले जाए, जैसे कि एक वास्तविक पिघलाव, किसी ग्रामीण कस्बे का एक प्रामाणिक चौक, समुद्र तट पर जीवंत महिलाएं (तो मैं उनसे उन वास्तविकताओं के चित्र बनवाने का और भी अधिक आग्रह करता जिन्हें मैं समझ नहीं पाया था, जैसे कि नागफनी के फूलों की एक गली, इसलिए नहीं कि वह मेरे लिए उनकी सुंदरता को अमर कर दे, बल्कि इसलिए कि वह मुझे उस सुंदरता को प्रकट करे), अब, दूसरी ओर, उन चित्रों की मौलिकता, उनका मोहक आकर्षण ही मेरी इच्छा को जगाता था, और मैं सबसे बढ़कर एल्स्टिर के अन्य चित्रों को देखना चाहता था।
मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि उनकी साधारण सी तस्वीर भी उनसे कहीं अधिक महान चित्रकारों की उत्कृष्ट कृतियों से बिल्कुल भिन्न थी। उनका काम एक अलग ही दुनिया जैसा था, जिसकी सीमाएँ पार करना असंभव था, और सार में अद्वितीय था। उनके और उनके काम पर छपे लेखों वाली कभी-कभार प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं को उत्सुकतापूर्वक इकट्ठा करते हुए, मैंने जाना कि उन्होंने हाल ही में भूदृश्य और स्थिर चित्र बनाना शुरू किया था, और

उन्होंने पौराणिक विषयों से शुरुआत की थी (मैंने उनके स्टूडियो में इनमें से दो चित्रों की तस्वीरें देखी थीं), और फिर लंबे समय तक जापानी कला से प्रभावित रहे थे।
उनकी विभिन्न शैलियों की विशिष्ट कृतियों में से कई प्रांतों में बिखरी हुई थीं। लेस एंडेलिस में एक घर, जिसमें उनका एक बेहतरीन भूदृश्य चित्र था, मुझे उतना ही अनमोल लगा, और उसे देखने की मेरी उतनी ही तीव्र इच्छा हुई जितनी कि चार्ट्रेस जिले के एक गाँव की, जिसकी चक्की के पत्थरों से बनी दीवारों के बीच एक शानदार चित्रित खिड़की थी; और इस खजाने के मालिक के प्रति, उस व्यक्ति के प्रति जो मुख्य सड़क पर अपने बदसूरत घर के अंदर, एक ज्योतिषी की तरह एकांत में बैठा, एल्स्टिर के चित्रों के उन दर्पणों में से एक पर सवाल उठा रहा था, जो दुनिया के दर्पण थे, और जिसने शायद इसे कई हज़ार फ़्रैंक में खरीदा था, मुझे वह सहज सहानुभूति महसूस हुई जो एक महत्वपूर्ण विषय पर समान रूप से सोचने वालों के दिलों, अंतर्मन को जोड़ती है। अब मेरे पसंदीदा चित्रकार की तीन महत्वपूर्ण कृतियों का वर्णन इन्हीं लेखों में से एक में श्रीमती डी गुएरमांटेस की संपत्ति के रूप में किया गया था। इसलिए, आखिरकार, जिस शाम सेंट-लूप ने मुझे अपनी पत्नी की ब्रुग्स यात्रा की योजना के बारे में बताया, उस शाम खाने के दौरान, मैं पूरी ईमानदारी से, मानो अचानक ही, ये बात कह बैठा:
"सुनिए, अगर आपको कोई आपत्ति न हो। जिस महिला के बारे में हम बात कर रहे थे, उस विषय पर बस एक आखिरी बात। आपको एल्स्टिर याद है, वह चित्रकार जिससे मैं बालबेक में मिला था?"
"क्यों नहीं, बिल्कुल करता हूँ।"
"आपको याद है कि मैं उनके काम की कितनी प्रशंसा करता था?"
"हाँ, बिल्कुल; और वह पत्र जो हमने उसे भेजा था।"
"बहुत अच्छा, एक कारण—मुख्य कारण नहीं, एक गौण कारण—जिसकी वजह से मैं उस महिला से मिलना चाहूंगा—आप जानते हैं ना कि मेरा मतलब किससे है?"
"बिल्कुल, मुझे पता है। आप इसमें कितना शामिल हो रहे हैं।"
"उसके घर में कम से कम एल्स्टिर की एक बहुत ही सुंदर पेंटिंग तो है ही।"
"मैं कहता हूं, मुझे तो यह बात कभी पता ही नहीं थी।"

"ईस्टर के समय एल्स्टिर शायद बालबेक में होंगे; आप जानते हैं कि वे अब लगभग पूरे साल वहीं रहते हैं। पेरिस छोड़ने से पहले मैं यह फिल्म देखना चाहता हूँ। मुझे नहीं पता कि आपकी अपनी चाची से कितनी अच्छी जान-पहचान है: लेकिन क्या आप किसी तरह उन्हें मेरे बारे में इतनी अच्छी राय नहीं दे सकते कि वे मना न करें, और फिर उनसे पूछ सकते हैं कि क्या वे मुझे आपके बिना फिल्म देखने की अनुमति देंगी, क्योंकि आप वहाँ नहीं होंगे?"
"कोई बात नहीं। मैं उसकी तरफ से जवाब दूंगा; मैं इस बात का विशेष ध्यान रखूंगा।"
"ओह, रॉबर्ट, तुम एक फरिश्ता हो; मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।"
"यह बहुत अच्छी बात है कि तुम मुझसे प्यार करते हो, लेकिन यह उतना ही अच्छा होगा यदि तुम मुझे 'तू' कहकर बुलाओ, जैसा कि तुमने वादा किया था और जैसा कि तुमने करना शुरू कर दिया था।"
“मुझे उम्मीद है कि तुम दोनों मिलकर तुम्हारे जाने की साजिश नहीं रच रहे हो,” रॉबर्ट के एक दोस्त ने मुझसे कहा। “तुम्हें पता है, अगर सेंट-लूप छुट्टी पर चला भी जाता है, तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा, हम तो यहीं रहेंगे। शायद तुम्हारे लिए थोड़ा कम मजेदार होगा, लेकिन हम पूरी कोशिश करेंगे कि तुम उसकी गैरमौजूदगी को भूल जाओ।” दरअसल, जैसे ही हमने तय किया कि रॉबर्ट की प्रेमिका को अकेले ब्रुग्स जाना होगा, खबर आई कि कैप्टन डी बोरोडिनो, जो अब तक अड़े हुए थे, ने सार्जेंट सेंट-लूप को ब्रुग्स में लंबी छुट्टी पर जाने की अनुमति दे दी है। हुआ ये था कि राजकुमार, जिन्हें अपने घने बालों पर बहुत गर्व था, शहर के मुख्य नाई के नियमित ग्राहक थे, जिन्होंने नेपोलियन तृतीय के नाई के यहाँ बचपन बिताया था। कैप्टन डी बोरोडिनो के नाई के साथ अच्छे संबंध थे, क्योंकि अपने रुतबे के बावजूद, वे अपने अधीनस्थों के साथ बहुत ही सरल व्यवहार करते थे। लेकिन नाई, जिसके खाते में राजकुमार का कम से कम पाँच वर्षों से बकाया था और जिसमें शैंपू, बाल कटवाने आदि के सामान्य शुल्कों के अलावा पुर्तगाल की शराब की बोतलें, इस्त्री, रेज़र और स्ट्रॉप का भी भारी खर्चा शामिल था, सेंट-लूप का अधिक सम्मान करता था, क्योंकि सेंट-लूप हमेशा समय पर भुगतान करता था और उसके पास कई गाड़ियाँ और घोड़े थे। सेंट-लूप को अपनी प्रेमिका के साथ न जा पाने की झुंझलाहट के बारे में पता चलने पर, उसने राजकुमार से इस बारे में तीखे शब्दों में बात की, उस समय जब राजकुमार सफेद चोगे में जकड़ा हुआ था, उसका सिर कुर्सी के पीछे मजबूती

से टिका हुआ था और उसकी गर्दन पर रेज़र से वार करने की धमकी दी जा रही थी। एक नौजवान के इन साहसिक कारनामों की कहानी सुनकर राजकुमार ने बोनापार्ट शैली में मुस्कुरा दिया। यह शायद ही संभव है कि उसने अपने बकाया बिल के बारे में सोचा हो, लेकिन नाई की सिफारिश ने उसे इतना खुश कर दिया जितना किसी ड्यूक की सिफारिश उसे खराब कर देती। उसकी ठुड्डी अभी भी साबुन से ढकी हुई थी कि उसे छुट्टी मिल गई और उसी शाम वारंट पर हस्ताक्षर कर दिए गए। जहाँ तक नाई की बात है, जो दिन भर अपनी उपलब्धियों का बखान करता रहता था और ऐसा करने के लिए, झूठ बोलने की अपनी अद्भुत क्षमता का प्रदर्शन करते हुए, अपने लिए ऐसे पुरस्कार हासिल करने का दावा करता था जो पूरी तरह से मनगढ़ंत थे, सेंट-लूप की इस महत्वपूर्ण सेवा को एक बार करने के बाद, उसने न केवल इसे सार्वजनिक रूप से प्रकाशित करने से परहेज किया, बल्कि मानो घमंड झूठ बोलने के लिए बाध्य हो, और जब झूठ बोलने की कोई गुंजाइश नहीं बची तो विनम्रता ने उसे झूठ बोलने का रास्ता दिखाया, उसने रॉबर्ट से इस मामले का फिर कभी जिक्र नहीं किया।

उनके सभी दोस्तों ने मुझे आश्वस्त किया कि जब तक मैं डोंसिएरेस में रहूंगा, या यदि मैं कभी भी वहां दोबारा आऊं, भले ही रॉबर्ट अनुपस्थित हों, उनके घोड़े, उनका आवास, उनका समय मेरे लिए उपलब्ध रहेगा, और मुझे यह महसूस हुआ कि इन युवकों ने अत्यंत सौहार्द के साथ अपनी सुविधा, युवावस्था और शक्ति को मेरी कमजोरी की सेवा में लगा दिया।

मुझे रुकने के लिए ज़ोर देने के बाद, वे आगे बोले, "आखिर क्यों न आप हर साल यहाँ आते हैं; देखिए आपको हमारा शांत जीवन कितना पसंद आता है! इसके अलावा, रेजिमेंट में होने वाली हर गतिविधि के बारे में आप इतने उत्सुक रहते हैं; बिल्कुल एक पुराने सिपाही की तरह।"

मैं लगातार यही ज़िद करता रहा कि वे उन अलग-अलग अधिकारियों को, जिनके नाम मुझे पता थे, उनकी प्रशंसा के योग्य श्रेणी में बाँट दें, ठीक वैसे ही जैसे मैं अपने स्कूली दिनों में दूसरे लड़कों से थिएटर-फ्रांसे के अभिनेताओं को श्रेणी में बाँटने को कहता था। अगर गैलिफ़ेट या नेग्रियर जैसे उन जनरलों की जगह, जिनका नाम मैंने हमेशा सूची में सबसे ऊपर सुना था, सेंट-लूप के किसी दोस्त ने तिरस्कारपूर्वक कहा होता: "लेकिन नेग्रियर तो हमारे सबसे कमज़ोर जनरल अधिकारियों में से एक है," और उसकी जगह पाउ या गेस्लिन डी बरगंडी का

नया, अखंड और आकर्षक नाम रख दिया जाता, तो मुझे वही आनंदमय आश्चर्य होता, जैसा बहुत पहले तब हुआ था जब थिरोन या फेब्रे जैसे पुराने नाम अचानक अमाउरी के अपरिचित नाम के सामने उड़ गए थे। "क्या वह नेग्रियर से भी बेहतर है? लेकिन किस लिहाज़ से; मुझे एक उदाहरण दीजिए?" मैं चाहता था कि रेजिमेंट के कनिष्ठ अधिकारियों के बीच भी गहरे मतभेद हों, और मुझे उम्मीद थी कि इन मतभेदों के पीछे छिपे सैन्य श्रेष्ठता के मूल गुण को मैं समझ सकूँ। जिस व्यक्ति के बारे में मैं सबसे अधिक जानना चाहता था, क्योंकि वह वही था जिसे मैंने सबसे अधिक बार देखा था, वह था प्रिंस डी बोरोडिनो। लेकिन न तो सेंट-लूप और न ही उनके मित्र, यदि वे उस उत्कृष्ट अधिकारी के साथ न्याय करते थे जिसने अपनी स्क्वाड्रन को सर्वोच्च दक्षता के स्तर पर बनाए रखा था, तो वे उस व्यक्ति को पसंद करते थे। स्वाभाविक रूप से, उनके बारे में उसी लहजे में बात किए बिना, जैसा कि वे कुछ अन्य अधिकारियों, रैंक के सैनिकों और फ्रीमेसन के बारे में करते थे, जो बाकी लोगों से ज्यादा मेलजोल नहीं रखते थे और तुलनात्मक रूप से असभ्य, बैरक-कक्ष जैसे व्यवहार वाले थे, वे एम. डी बोरोडिनो को कुलीन वंश के अधिकारियों में शामिल नहीं करते थे, जिनसे, यह स्वीकार करना होगा, सेंट-लूप के प्रति भी उनका रवैया काफी भिन्न था। अन्य लोगों ने इस बात का फायदा उठाया कि रॉबर्ट केवल एक गैर-कमीशन अधिकारी था, और इसलिए उसके प्रभावशाली रिश्तेदार शायद उसे उन उच्च अधिकारियों के घरों में आमंत्रित किए जाने पर प्रसन्न होंगे, जिन पर वे आम तौर पर तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। इसलिए, जब भी कोई प्रभावशाली व्यक्ति आने वाला होता, जो एक युवा घुड़सवार सार्जेंट के लिए उपयोगी हो सकता था, तो उसे भोजन पर आमंत्रित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा गया। केवल कैप्टन डी बोरोडिनो ने ही रॉबर्ट के साथ अपने आधिकारिक संबंधों (जो वैसे भी हमेशा उत्कृष्ट थे) को सीमित रखा। वास्तव में, राजकुमार, जिसके दादा को सम्राट द्वारा मार्शल और राजकुमार-ड्यूक बनाया गया था, जिसके परिवार के साथ उसने बाद में विवाह द्वारा संबंध स्थापित किया था, जबकि उसके पिता ने नेपोलियन तृतीय की एक चचेरी बहन से विवाह किया था और तख्तापलट के बाद दो बार मंत्री रह चुके थे, महसूस करते थे कि इन सबके बावजूद सेंट-लूप और गुएरमांटेस समूह के लिए उनका कोई खास महत्व नहीं था, और बदले में, चूंकि वह चीजों को उनके समान दृष्टिकोण से नहीं देखता था, इसलिए उनका भी उसके लिए कोई खास महत्व नहीं था। उन्हें

संदेह था कि सेंट-लूप के लिए, वह स्वयं - होहेनज़ोलर्न के एक रिश्तेदार के रूप में - एक सच्चा कुलीन नहीं बल्कि एक किसान का पोता था, लेकिन साथ ही उन्होंने सेंट-लूप को एक ऐसे व्यक्ति का पुत्र माना जिसकी काउंटीशिप सम्राट द्वारा पुष्टि की गई थी - जिन्हें फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में 'संशोधित' काउंट के रूप में जाना जाता था - और जिसने पहले उनसे एक प्रीफेक्चर के लिए, फिर महामहिम प्रिंस डी बोरोडिनो, राज्य मंत्री, जो अपने पत्रों में 'मोनसिग्नोर' के रूप में जाने जाते थे और संप्रभु के भतीजे थे, के अधीनस्थों की सूची में काफी नीचे किसी अन्य पद के लिए विनती की थी।

शायद भतीजे से भी बढ़कर कुछ। कहा जाता है कि पहली राजकुमारी डी बोरोडिनो ने नेपोलियन प्रथम पर अपना स्नेह बरसाया था, जिनके साथ वह एल्बा द्वीप तक गईं थीं, और दूसरी राजकुमारी ने नेपोलियन तृतीय पर। और यदि कप्तान के शांत चेहरे में नेपोलियन प्रथम की झलक दिखाई देती थी—यदि उनके स्वाभाविक चेहरे में नहीं, तो कम से कम मुखौटे की सधी हुई भव्यता में—तो अधिकारी में, विशेष रूप से उनकी उदास और दयालु दृष्टि में, उनकी झुकी हुई मूंछों में, कुछ ऐसा था जो नेपोलियन तृतीय की याद दिलाता था; और यह इतनी स्पष्ट रूप से था कि सेडान के बाद, सम्राट के साथ कैद में शामिल होने की अनुमति मांगने पर, और बिस्मार्क द्वारा, जिनके सामने उन्हें लाया गया था, वापस भेज दिए जाने पर, बिस्मार्क ने कमरे से बाहर जाने की तैयारी कर रहे उस युवक को देखा और तुरंत उसकी समानता से प्रभावित हुए और अपने निर्णय पर पुनर्विचार करते हुए, उन्हें वापस बुला लिया और उन्हें वह अनुमति दे दी जो उन्हें, बाकी सभी की तरह, अभी-अभी देने से इनकार कर दिया गया था।

यदि प्रिंस डी बोरोडिनो सेंट-लूप या फाउबर्ग सेंट-जर्मेन समाज के अन्य प्रतिनिधियों से मेलजोल बढ़ाने के लिए तैयार नहीं थे (जबकि वे अक्सर दो साधारण मूल के अधिकारियों को आमंत्रित करते थे जो सुखद साथी थे), तो इसका कारण यह था कि अपनी शाही शान के शिखर से उन सभी को नीचा देखते हुए, उन्होंने इन दो वर्गों के अधीनस्थों के बीच यह अंतर किया कि एक वर्ग में वे अधीनस्थ शामिल थे जो स्वयं को अधीनस्थ समझते थे और जिनके साथ उन्हें समय बिताना अच्छा लगता था, क्योंकि वे उनके सरल, हंसमुख स्वभाव के बाहरी वैभव के अधीन थे, और दूसरा वर्ग उन अधीनस्थों का था जो स्वयं को उनसे श्रेष्ठ समझते थे,

एक ऐसा दावा जिसे वे स्वीकार नहीं कर सकते थे। और इसलिए, जहाँ रेजिमेंट के अन्य सभी अधिकारी सेंट-लूप की बहुत प्रशंसा करते थे, वहीं प्रिंस डी बोरोडिनो, जिनकी देखरेख में मार्शल X—— ने उस नौजवान को नियुक्त किया था, ने सेंट-लूप के सैन्य कर्तव्यों के प्रति केवल विनम्रता दिखाई, जिन्हें सेंट-लूप हमेशा अनुकरणीय ढंग से निभाते थे। उन्होंने सेंट-लूप को अपने घर कभी नहीं बुलाया, सिवाय एक विशेष अवसर के जब उन्हें उसे आमंत्रित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। और जब, जैसा कि मेरे डोंसिएरेस में रहने के दौरान हुआ, उन्होंने सेंट-लूप से मुझे भी रात के खाने पर लाने का अनुरोध किया। उस शाम, जब मैंने सेंट-लूप को अपने कप्तान की मेज पर बैठे देखा, तो मुझे उनके शिष्टाचार और शालीनता में दो कुलीन वर्गों के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया: पुराना कुलीन वर्ग और साम्राज्य का कुलीन वर्ग। एक ऐसी जाति का वंशज, जिसके दोष, भले ही वह अपनी बुद्धि की पूरी शक्ति से उनका खंडन करता, उसके रक्त में समाहित हो चुके थे; एक ऐसी जाति, जिसने कम से कम एक शताब्दी से कोई वास्तविक अधिकार नहीं रखा था, अब अपनी नियमित शिक्षा का हिस्सा रही सुरक्षात्मक सौहार्दता में घुड़सवारी या तलवारबाजी जैसी किसी गतिविधि से अधिक कुछ नहीं देखती थी, जिसे बिना किसी गंभीर उद्देश्य के, एक खेल के रूप में किया जाता था; उस मध्यम वर्ग के प्रतिनिधियों से मिलने पर, जिसे पुराने कुलीन वर्ग इतना नीचा समझते थे कि वे उसकी आत्मीयता से प्रभावित होते थे और उसके अनौपचारिक लहजे से सम्मानित महसूस करते थे, सेंट-लूप किसी भी व्यक्ति का हाथ थाम लेता था, चाहे उसे किसी अजनबी से मिलवाया जाए, भले ही वह शायद उसका नाम न जान पाया हो, और उससे बात करते समय (लगातार अपने पैरों को क्रॉस करते और खोलते हुए, पूरी तरह से बेफिक्र होकर अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते हुए, एक पैर हथेली पर रखकर) उसे 'मेरे प्रिय मित्र' कहकर पुकारता था। दूसरी ओर, एक ऐसे कुलीन वर्ग से संबंध रखने वाले, जिनके खिताबों ने अभी भी अपना मूल अर्थ बरकरार रखा था, बशर्ते कि उनके धारकों के पास अभी भी गौरवशाली सेवाओं के पुरस्कार के रूप में दिए गए शानदार वेतन हों, और उन उच्च पदों की याद दिलाते हुए जिनमें व्यक्ति असंख्य लोगों का नेतृत्व करता है और लोगों से व्यवहार करना जानता है, राजकुमार डी बोरोडिनो - शायद बहुत स्पष्ट रूप से या किसी स्पष्ट व्यक्तिगत श्रेष्ठता की भावना के साथ नहीं, लेकिन कम से कम अपने शरीर में, जो उसके सामान्य रवैये और व्यवहार से प्रकट होता

था - अपने पद को एक विशेषाधिकार मानते थे जो अभी भी प्रभावी था; उन्हीं आम लोगों से, जिन्हें सेंट-लूप कंधे पर थपथपाते और बांह पकड़कर ले जाते, उन्होंने राजसी सौहार्द के साथ बात की, जिसमें भव्यता के साथ एक आरक्षित प्रवृत्ति ने उनके स्वाभाविक रूप से आने वाले मुस्कुराते हुए सौहार्द को संतुलित किया, एक ऐसे स्वर में जो एक साथ वास्तविक दयालुता और जानबूझकर अपनाई गई कठोरता से चिह्नित था। इसका कारण निस्संदेह यह था कि वह महान दूतावासों और दरबार से बहुत दूर नहीं थे, जहाँ उनके पिता ने सर्वोच्च पदों पर आसीन रहे थे, जबकि सेंट-लूप के तौर-तरीके, जैसे मेज पर कोहनी रखना और हाथ में पैर रखना, वहाँ स्वीकार्य नहीं होते; लेकिन मुख्य रूप से इसका कारण यह था कि वह मध्यम वर्ग को कमतर नहीं समझते थे क्योंकि वे ही वह अटूट स्रोत थे जहाँ से प्रथम सम्राट ने अपने मार्शल और रईसों का चयन किया था और जहाँ से दूसरे सम्राट को रूहर और फाउल्ड जैसे लोग मिले थे। निस्संदेह, वह एक सम्राट का पुत्र या पोता था, जिसके पास एक स्क्वाड्रन की कमान संभालने से अधिक महत्वपूर्ण कोई काम नहीं था। उसके कथित पिता और दादा की चिंताएँ, किसी ठोस आधार के अभाव में, एम. डी बोरोडिनो के मन में वास्तविक रूप से जीवित नहीं रह सकीं। लेकिन जिस प्रकार एक कलाकार की आत्मा, उसकी मृत्यु के कई वर्षों बाद भी, उसके द्वारा गढ़ी गई मूर्ति को आकार देती रहती है, उसी प्रकार वे चिंताएँ उसमें समाहित हो गईं, साकार हो गईं, उसमें अवतरित हो गईं, और उन्हीं चिंताओं का प्रतिबिंब उसके चेहरे पर दिखाई देता था। प्रथम सम्राट की जीवंतता से भरी आवाज में उसने एक कॉर्पोरल को फटकार लगाई, और दूसरे सम्राट की स्वप्निल उदासी से सिगरेट का धुआँ उड़ाया। जब वह सादे कपड़ों में डोंसिएरेस की गलियों से गुजरा, तो उसकी आँखों की एक विशेष चमक, बॉलर हैट के नीचे से निकलती हुई, इस घुड़सवार सेना के कप्तान के चारों ओर एक शाही गुप्त छवि बिखेरती थी; जब वह सार्जेंट-मेजर के कार्यालय में दाखिल हुआ, तो लोग कांप उठे। उसके पीछे एडजुटेंट और क्वार्टरमास्टर थे, मानो बर्थियर और मैसेना भी उनके पीछे-पीछे आ रहे हों। जब वह अपनी टुकड़ी की पतलून के लिए कपड़ा चुनता, तो वह दर्जी पर ऐसी निगाहें गड़ा देता जो टैलीरैंड को भी चकित कर देती और अलेक्जेंडर को भी धोखा दे देती; और कभी-कभी, निरीक्षण के बीच में ही, वह रुक जाता, अपनी सुंदर नीली आँखों में सपनों की चमक आने देता, अपनी मूंछें मरोड़ता, मानो वह एक नया प्रशिया और एक नया इटली बना

रहा हो। लेकिन एक पल बाद, नेपोलियन तृतीय से नेपोलियन प्रथम के रूप में लौटते हुए, वह बताता कि साजो-सामान ठीक से पॉलिश नहीं किया गया है, और सैनिकों के राशन का स्वाद चखने पर जोर देता। और घर पर, अपने निजी जीवन में, वह मध्यम वर्ग के अधिकारियों की पत्नियों के लिए (बशर्ते कि उनके पति फ्रीमेसन न हों) न केवल शाही नीले रंग के सेवरस के डिनर सेट को निकालते थे, जो किसी राजदूत के लिए उपयुक्त था (जो उनके पिता को नेपोलियन ने दिया था, और उस साधारण से घर में और भी अनमोल प्रतीत होता था, जो एक प्रांतीय गली में स्थित था और जिसमें वह रह रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे वे दुर्लभ चीनी मिट्टी के बर्तन जिन्हें पर्यटक किसी पुराने हवेली के देहाती चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी में विशेष आनंद के साथ देखते हैं, जिसे एक आरामदायक और समृद्ध फार्महाउस में बदल दिया गया है), बल्कि सम्राट के अन्य उपहार भी: वे नेक और आकर्षक शिष्टाचार, जो विदेश में किसी राजनयिक पद पर भी प्रशंसा प्राप्त कर सकते थे, यदि कुछ पुरुषों के लिए, केवल उच्च कुल में जन्म लेने के कारण, इसका अर्थ सबसे अन्यायपूर्ण बहिष्कार का आजीवन दंड न होता; उनके सहज हावभाव, उनकी दयालुता, उनका अनुग्रह, और शाही नीले रंग के तामचीनी के नीचे समाहित, शानदार छवियां, उनकी दृष्टि का रहस्यमय, प्रकाशित, जीवंत अवशेष। और, डोनसिएरेस में राजकुमार के मध्यम वर्ग के साथ सामाजिक संबंधों के बारे में बात करते हुए, इन कुछ शब्दों को जोड़ना उचित होगा। लेफ्टिनेंट-कर्नल बहुत ही सुंदर पियानो बजाते थे; वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी की पत्नी किसी संगीत विद्यालय की पदक विजेता की तरह गाती थीं। यह दंपति, लेफ्टिनेंट-कर्नल और उनकी पत्नी, हर हफ्ते एम. डी बोरोडिनो के साथ भोजन करते थे। वे निस्संदेह प्रसन्न होते थे, यह जानकर कि जब राजकुमार छुट्टी पर पेरिस जाते थे तो वे श्रीमती डी पोर्टालेस, मुरात परिवार और ऐसे ही अन्य लोगों के साथ भोजन करते थे। "लेकिन," उन्होंने मन ही मन सोचा, "आखिरकार, वह सिर्फ एक कप्तान हैं; उन्हें हमें यहाँ बुलाकर बहुत खुशी होती है। फिर भी, वह एक सच्चे मित्र हैं, आप जानते हैं।" लेकिन जब एम. डी बोरोडिनो, जो लंबे समय से पेरिस के पास अपने लिए नियुक्ति सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे, का तबादला बोवेस में हो गया, तो उन्होंने अपना सामान पैक किया और चले गए। वे दोनों संगीतकारों के दंपत्तियों को उसी तरह पूरी तरह भूल गए जैसे वे डोंसिएरेस थिएटर और उस छोटे से रेस्तरां को भूल गए थे जहाँ वे अक्सर दोपहर का भोजन

मंगवाते थे। उनके घोर आक्रोश के बावजूद, लेफ्टिनेंट-कर्नल और वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, जो अक्सर उनकी मेज पर बैठते थे, ने अपने शेष जीवन में कभी भी उनसे एक शब्द तक नहीं सुना। एक सुबह, सेंट-लूप ने मुझसे स्वीकार किया कि उन्होंने मेरी दादी को मेरे बारे में खबर देने के लिए पत्र लिखा था, और सुझाव दिया था कि चूंकि पेरिस और डोंसिएरेस के बीच टेलीफोन संपर्क था, इसलिए वे इसका उपयोग मुझसे बात करने के लिए कर सकती हैं। संक्षेप में, उसी दिन उन्हें मुझे फोन करना था, और उन्होंने मुझे लगभग पौने चार बजे डाकघर में रहने की सलाह दी। उस समय टेलीफोन का उपयोग आज की तरह आम नहीं था। फिर भी, आदत उन पवित्र शक्तियों के रहस्य को मिटाने में बहुत कम समय लेती है जिनके साथ हमारा संपर्क होता है, और जब मुझे तुरंत बुलावा नहीं आया, तो मेरे मन में बस यही ख्याल आया कि यह बहुत धीमा और अव्यवस्थित था, और मैंने लगभग शिकायत दर्ज कराने का फैसला कर लिया था। आजकल हम सभी की तरह, मुझे भी इसके अचानक बदलावों में वह अद्भुत जादू अपनी पसंद के अनुसार तेज़ नहीं लगा, जिसके लिए कुछ ही पल काफी होते हैं, हमारे सामने, अदृश्य लेकिन उपस्थित, उस व्यक्ति को लाने के लिए जिससे हम बात करना चाहते हैं, और जो अभी भी अपनी मेज पर बैठा है, अपने शहर में जहाँ वह रहता है (मेरी दादी के मामले में, पेरिस), हमारे आसमान से अलग आसमान के नीचे, ऐसे मौसम में जो जरूरी नहीं कि हमारे जैसा ही हो, उन परिस्थितियों और चिंताओं के बीच जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते, लेकिन जिनके बारे में वह हमें बताने वाला है, अचानक खुद को सैकड़ों मील दूर (वह और उसका सारा परिवेश जिसमें वह घिरा हुआ है) हमारे कानों की पहुँच में, ठीक उसी क्षण पहुँच जाता है, जिस क्षण हमारी कल्पना ने तय किया है। और हम उस परीकथा के पात्र की तरह हैं, जिसके मन में इच्छा प्रकट होने पर जादूगरनी उसे अलौकिक स्पष्टता से उसकी दादी या मंगेतर को किताब पलटते, आंसू बहाते, फूल तोड़ते हुए प्रकट कर देती है, जो दर्शक के बिल्कुल करीब होती हैं, फिर भी उतनी ही दूर, ठीक उसी स्थान पर जहां वह उस क्षण वास्तव में मौजूद होती हैं। चमत्कार को साकार करने के लिए हमें केवल इतना करना होता है कि अपने होठों को उस जादुई छिद्र पर लगाएं और आह्वान करें—कभी-कभी, मैं स्वीकार करता हूं, आवश्यकता से अधिक समय तक—उन सतर्क कन्याओं का, जिनकी आवाज़ हम प्रतिदिन सुनते हैं, बिना उनके चेहरे जाने, और जो अंधकार के उस मायावी क्षेत्र में हमारी

संरक्षक देवदूत हैं, जिनके द्वारों की वे अत्यंत सावधानी से रक्षा करती हैं; सर्वशक्तिमान, जिनके हस्तक्षेप से अनुपस्थित आत्माएं हमारे पास आ उठती हैं, बिना हमें उन्हें देखने की अनुमति दिए; अदृश्य की दानी, जो निरंतर ध्वनि के कलशों को खाली करती, भरती और संचारित करती रहती हैं। व्यंग्यपूर्ण क्रोधी देवियाँ, जो ठीक उसी समय जब हम किसी मित्र से कोई गुप्त बात फुसफुसा रहे थे, इस उम्मीद में कि कोई सुन नहीं रहा है, निर्दयता से चिल्लाती हैं: "मैं तुम्हें सुन रही हूँ!"; रहस्य के सदा क्रोधित सेवक, अदृश्य की क्रोधित पुजारिनें, टेलीफोन की युवतियाँ।

और, जिस क्षण हमारी पुकार सुनाई देती है, प्रेतों से भरी उस रात में, जिसके लिए केवल हमारे कान ही खुले हैं, एक छोटी सी ध्वनि, एक अमूर्त ध्वनि—दूरी पर विजय की ध्वनि—और प्रियजन की आवाज हमसे बात करती है।

यह वही है, यह उसी की आवाज़ है जो बोल रही है, जो वहाँ मौजूद है। लेकिन कितनी दूर है! कितनी बार मैं बिना पीड़ा के उसकी आवाज़ नहीं सुन पाया, मानो लंबे सफर के बाद ही उसे देख पाने की असंभवता का सामना कर रहा हूँ, जिसकी आवाज़ मेरे कानों के इतने करीब रही है। मुझे उन मुलाकातों का दिखावा और भ्रम और भी स्पष्ट रूप से महसूस हुआ जो देखने में बेहद सुखद लगती थीं, और हम अपने प्रियजनों से उस पल कितनी दूर हो जाते हैं जब ऐसा लगता है कि हमें बस अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें थाम लेना है। सचमुच, इतनी नज़दीक से आती वह आवाज़ एक वास्तविक उपस्थिति है—वास्तविक अलगाव में। लेकिन एक शाश्वत अलगाव का पूर्वाभास भी! बार-बार, जब मैं इस तरह सुनता रहा, उस दूर से मुझसे बात करने वाली को देखे बिना, मुझे ऐसा लगा कि वह आवाज़ मुझे उन गहराइयों से पुकार रही है जहाँ से कोई फिर कभी नहीं उठता, और मैंने उस चिंता को जाना है जो एक दिन मेरे दिल को निचोड़ देगी जब वह आवाज़ इस तरह लौटेगी (अकेली, और उस शरीर से जुड़ी नहीं जिसे मैं फिर कभी नहीं देख पाऊंगा), मेरे कान में ऐसे शब्द फुसफुसाएगी जिन्हें मैं चूमना चाहता, उन होठों से जो हमेशा के लिए धूल में मिल गए।

आज दोपहर, अफसोस, डोनसिएरेस में चमत्कार नहीं हुआ। जब मैं डाकघर पहुँचा, तो मेरी दादी का फोन पहले ही लग चुका था; मैं बॉक्स में घुसा; लाइन व्यस्त थी; कोई बात कर रहा था जिसे शायद यह एहसास नहीं था कि जवाब देने वाला कोई नहीं है, क्योंकि जब मैंने रिसीवर

कान से लगाया, तो वह बेजान सा यंत्र पंचिनेलो की तरह चीखने लगा; मैंने उसे चुप कराया, जैसे कोई कठपुतली को चुप कराता है, उसे वापस हुक पर रखकर, लेकिन पंचिनेलो की तरह, जैसे ही मैंने उसे फिर से हाथ में लिया, वह फिर से बड़बड़ाने लगा। अंत में, इसे बेकार समझकर, रिसीवर हमेशा के लिए रख दिया, मैंने उस शोर मचाने वाले यंत्र की सिसकियों को दबाया जो आखिरी क्षण तक बड़बड़ाता रहा, और ऑपरेटर की तलाश में गया, जिसने मुझे थोड़ा इंतजार करने को कहा; फिर मैंने बात की, और कुछ सेकंड की चुप्पी के बाद, अचानक मैंने वह आवाज सुनी जिसे मैं गलती से बहुत अच्छी तरह जानता था; तब तक, जब भी मेरी दादी मुझसे बात करतीं, मैं उनके चेहरे के भावों को ध्यान से सुनता था, जिनमें उनकी आँखें प्रमुखता से झलकती थीं; लेकिन उनकी आवाज़ मैं आज दोपहर पहली बार सुन रहा था। और क्योंकि वह आवाज़ मुझे उस पल से बदली हुई सी लगी जब वह पूरी तरह से मेरे पास पहुँची, और केवल उनके चेहरे के भावों के बिना, मैंने पहली बार जाना कि वह आवाज़ कितनी मधुर थी; शायद, वह पहले कभी इतनी मधुर नहीं थी, क्योंकि मेरी दादी, मुझे अकेला और दुखी जानते हुए, अपने स्नेह को खुलकर व्यक्त करना चाहती थीं, जिसे वह अपनी शिक्षा के सिद्धांत के अनुसार आमतौर पर रोक कर रखती थीं। वह आवाज़ मधुर थी, लेकिन साथ ही कितनी दुखद भी थी, सबसे पहले तो उसकी मधुरता के कारण, एक ऐसी मधुरता जिसमें दूसरों के प्रति प्रतिरोध और स्वार्थ का लगभग कोई अंश नहीं था—ऐसा शायद ही किसी इंसान की आवाज़ में होता है। अपनी कोमलता के कारण वह इतनी नाजुक थी कि हर पल टूटने और आंसुओं के शुद्ध प्रवाह में विलीन होने के लिए तैयार प्रतीत होती थी; फिर, जब वह मेरे पास अकेली थी, और मैंने उसे बिना मुखौटे के देखा, तो मुझे पहली बार उन दुखों का एहसास हुआ जिन्होंने उसके जीवन भर में उसे दागदार कर दिया था।

लेकिन क्या यह केवल आवाज़ ही थी, जिसने अकेलेपन के कारण मुझे यह नया अहसास दिया जिसने मेरे दिल को चीर दिया? बिलकुल नहीं; बल्कि आवाज़ का यह अकेलापन एक प्रतीक, एक प्रस्तुति, एक और अकेलेपन का सीधा परिणाम था, मेरी दादी का अकेलापन, जो मेरे जीवन में पहली बार मुझसे अलग हो गई थीं। मेरे जीवन के सामान्य क्रम में हर पल वह मुझे जो आदेश या निषेध देती थीं, आज्ञाकारिता की नीरसता या विद्रोह की आग जिसने उनके प्रति मेरे स्नेह को निष्क्रिय कर दिया था, उस क्षण समाप्त हो गई थी, और वास्तव में हमेशा के लिए

समाप्त हो सकती थी (क्योंकि मेरी दादी अब मुझे अपने नियंत्रण में रखने पर जोर नहीं दे रही थीं, बल्कि यह आशा व्यक्त कर रही थीं कि मैं डोनसिएरेस में ही रहूँगी, या कम से कम अपनी यात्रा को यथासंभव बढ़ाऊँगी, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि इस बदलाव से मेरे स्वास्थ्य और मेरे काम दोनों को लाभ होगा); और, मेरे कान में बज रही उस छोटी सी घंटी में जो भावना दबी हुई थी, वह अब तक हर दिन उसे संतुलित रखने वाले परस्पर विरोधी दबावों से मुक्त होकर, इस क्षण से अदम्य होकर, मुझे पूरी तरह से अपने साथ बहा ले गई - हमारा आपसी स्नेह। मेरी दादी ने मुझे रुकने के लिए कहकर, मेरे अंदर लौटने की एक बेचैन, एक असंवेदनशील लालसा भर दी। भविष्य के लिए उन्होंने मुझे जो स्वतंत्रता दी थी और जिसके लिए मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह राजी होंगी, वह अचानक मुझे उतनी ही उदास लगी जितनी उनकी मृत्यु के बाद मेरी स्वतंत्रता होगी (जब मैं उनसे प्यार करती रहूंगी और वह मुझे हमेशा के लिए छोड़ देंगी)। "दादी!" मैं उन्हें पुकारती रही, "दादी!" और उन्हें चूमना चाहती थी, लेकिन मेरे पास केवल वह आवाज थी, एक प्रेत, उतनी ही अस्पष्ट जितनी वह आवाज जो शायद मेरी दादी की मृत्यु के बाद मुझसे मिलने आएगी। "मुझसे बात करो!" लेकिन फिर ऐसा हुआ कि और भी अधिक अकेला पड़ जाने पर, मुझे उनकी आवाज सुनाई देना बंद हो गई। मेरी दादी अब मुझे सुन नहीं सकती थीं; अब उसका मुझसे कोई संपर्क नहीं था; हम आमने-सामने नहीं खड़े हो सकते थे, एक-दूसरे की आवाज़ नहीं सुन सकते थे; मैं उसे पुकारता रहा, उस खाली रात में, जिसमें मुझे लग रहा था कि उसकी पुकार भी कहीं खो रही होगी। मैं उसी पीड़ा से कांप रहा था, जो बहुत पहले, एक दिन मैंने महसूस की थी, जब एक छोटा बच्चा, भीड़ में, उसे खो बैठा था; यह पीड़ा उसे न पाने से ज़्यादा इस विचार से थी कि वह मुझे ढूंढ रही होगी, मन ही मन कह रही होगी कि मैं उसे ढूंढ रहा हूँ; यह पीड़ा उस पीड़ा के समान थी जो मुझे उस दिन महसूस होगी जब हम उन लोगों से बात करेंगे जो अब जवाब नहीं दे सकते और जिन्हें हम चाहते हैं कि वे हमारी अनकही बातें सुनें, और हमें यकीन दिलाएं कि हम दुखी नहीं हैं। ऐसा लग रहा था मानो वह कोई प्रिय भूत हो जिसे मैंने भूतों की दुनिया में खो जाने दिया हो, और अकेले उस यंत्र के सामने खड़े होकर, मैं व्यर्थ ही दोहराता रहा: "दादी, दादी!" ओर्फियस, अकेला रह जाने पर, अपनी मृत पत्नी का नाम दोहराता है और डाकघर छोड़ने का फैसला करता है, ताकि रॉबर्ट को उसके रेस्तरां में जाकर बता सके कि मुझे एक

टेलीग्राम मिलने की आधी उम्मीद थी जो मुझे पेरिस लौटने के लिए बाध्य करेगा, इसलिए मैं हर हाल में यह जानना चाहता था कि ट्रेनें किस समय चलती हैं। फिर भी, इस निर्णय पर पहुँचने से पहले, मुझे लगा कि मुझे रात्रि की देवियों, वचन के दूतों, निराकार और रूपहीन देवियों से एक बार फिर प्रार्थना करनी चाहिए; लेकिन निंदनीय रक्षकों ने चमत्कारी द्वार खोलने की कृपा नहीं की, या शायद वे ऐसा कर ही नहीं पाए; वे अपनी प्रथा के अनुसार, मुद्रण के आदरणीय आविष्कारक और युवा राजकुमार, प्रभाववादी चित्रों के संग्रहकर्ता और मोटर-कारों के चालक (जो कैप्टन डी बोरोडिनो के भतीजे थे) से अथक अपील करते रहे, लेकिन व्यर्थ। गुटेनबर्ग और वैग्राम ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया, और मैं यह महसूस करते हुए चला गया कि अदृश्य शक्ति मेरी अनसुनी करती रहेगी।

जब मैं रॉबर्ट और उसके दोस्तों के बीच आया, तो मैंने यह बात छुपा ली कि मेरा दिल अब उनके साथ नहीं है, कि मेरा जाना अब अटल है। सेंट-लूप को लगा कि उसने मेरी बात मान ली है, लेकिन बाद में मुझे पता चला कि उसे पहले ही पल से समझ आ गया था कि मेरी अनिश्चितता बनावटी है और वह मुझे अगले दिन फिर नहीं देख पाएगा। और जब उसके दोस्त अपनी थालियों को ठंडा होने दे रहे थे और मेरे लिए पेरिस ले जाने वाली ट्रेन का समय-सारणी देख रहे थे, और जब हम ठंडी, तारों भरी रात में रेल की पटरियों पर इंजनों की सीटी सुन रहे थे, तो मुझे यकीनन वह मानसिक शांति नहीं मिल रही थी जो मुझे पिछली सभी शामों में रॉबर्ट की दोस्ती और रॉबर्ट के बिछड़ने से मिलती थी। फिर भी, आज शाम उन्होंने मेरा साथ नहीं छोड़ा, बल्कि अलग तरीके से वही काम किया। जब मुझे अपने जाने के बारे में अकेले सोचने की ज़रूरत नहीं रही, तो मेरा जाना मुझे उतना विचलित नहीं कर पाया। जब मुझे यह महसूस हुआ कि मेरे मेहनती दोस्तों, रॉबर्ट के साथियों और उन अन्य शक्तिशाली प्राणियों, ट्रेनों की सामान्य और स्वस्थ गतिविधियाँ अब केंद्रित थीं, जिनका डोंसिएरेस और पेरिस के बीच रात-सुबह आना-जाना, मेरी दादी से लंबे समय तक अलग रहने के दौरान जो कुछ बहुत सघन और असहनीय लग रहा था, उसे पीछे मुड़कर देखने पर लौटने की दैनिक संभावनाओं में बदल देता था।

"मुझे आपकी बातों की सच्चाई पर कोई शक नहीं है, और न ही इस बात पर कि आप अभी हमें छोड़कर जाने का इरादा नहीं रखते," सेंट-लूप मुस्कुराते हुए बोला; "लेकिन मान लीजिए

कि आप जा रहे हैं, और कल सुबह मुझसे मिलने आ जाइए; जल्दी आ जाइए, नहीं तो हो सकता है कि मैं आपसे मिल न पाऊं; मैं दोपहर के भोजन के लिए बाहर जा रहा हूं, मुझे कप्तान से छुट्टी मिल गई है; मुझे दो बजे तक बैरक में वापस आना होगा, क्योंकि हमें दोपहर भर पैदल चलना है। मुझे लगता है कि जिस आदमी के घर मैं जा रहा हूं, जो कुछ मील दूर है, वह मुझे समय पर वापस लाने का इंतजाम कर देगा।"

उसके ये शब्द कहते ही थे कि मेरे होटल से एक संदेशवाहक मुझे लेने आ गया; टेलीफोन ऑपरेटर ने मुझे ढूंढने के लिए भेजा था। मैं डाकघर की ओर भागी, क्योंकि बंद होने का समय हो चुका था। अधिकारियों के जवाबों में बार-बार 'ट्रंक्स' शब्द आ रहा था। मैं बहुत चिंतित थी, क्योंकि मेरी दादी ने ही मुझे बुलाया था। डाकघर रात के लिए बंद हो रहा था। आखिरकार मेरा फोन लग गया। "क्या आप हैं, दादी?" एक महिला की आवाज़, जिसमें अंग्रेज़ी लहजा साफ था, सुनाई दी: "हाँ, लेकिन मैं आपकी आवाज़ नहीं पहचानती।" मैं भी बोलने वाली की आवाज़ नहीं पहचान पाई; वैसे भी, मेरी दादी मुझे 'तू' कहती थीं, 'वौस' नहीं। और फिर सब कुछ स्पष्ट हो गया। जिस युवक के लिए उसकी दादी ने फोन किया था, उसका नाम लगभग मेरे नाम जैसा ही था, और वह मेरे होटल के एक कमरे में ठहरा हुआ था। यह फोन उसी दिन आया जिस दिन मैं अपनी दादी को फोन कर रही थी, इसलिए मुझे एक पल के लिए भी शक नहीं हुआ कि वही मुझे बुला रही थीं। जबकि यह महज संयोग था कि डाकघर और होटल ने मिलकर दोहरी गलती की थी।

अगली सुबह मैं देर से उठा और सेंट-लूप को पकड़ने में नाकाम रहा, जो पहले ही उस कंट्री हाउस के लिए निकल चुका था जहाँ उसे दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया गया था। लगभग डेढ़ बजे, मैंने किसी भी हालत में बैरक जाने का फैसला किया ताकि उसके आने से पहले मैं वहाँ पहुँच जाऊँ। तभी, रास्ते में एक गली पार करते हुए, मैंने देखा कि मेरे पीछे उसी दिशा में एक टिलबरी (घोड़ागाड़ी) आ रही है। जैसे ही वह मेरे पास पहुँची, मुझे उसके रास्ते से हटना पड़ा; एक गैर-कमीशन अधिकारी (एन.सी.ओ.) उसे चला रहा था, जिसने चश्मा पहना हुआ था; वह सेंट-लूप था। उसके बगल में वह दोस्त था जिसके मेहमान के रूप में वह दोपहर के भोजन पर आया था, और जिससे मैं पहले एक बार उस होटल में मिल चुका था जहाँ हमने भोजन किया था। रॉबर्ट को आवाज़ देने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि वह अकेला

नहीं था, लेकिन इस उम्मीद में कि वह रुककर मुझे उठा लेगा, मैंने अपनी टोपी को लहराकर उसका ध्यान आकर्षित किया, जो एक अजनबी की उपस्थिति में उचित माना जा सकता है। मैं जानता था कि रॉबर्ट को कम दिखाई देता है; फिर भी, मुझे लगा था कि अगर उसने मुझे देखा भी होता, तो वह मुझे पहचान ही लेता; उसने सचमुच मेरा सलाम देखा और जवाब में सलाम किया, लेकिन बिना रुके; पूरी रफ्तार से गाड़ी चलाते हुए, बिना मुस्कुराए, बिना चेहरे की कोई हरकत किए, वह एक मिनट तक अपना हाथ अपनी टोपी के शिखर तक उठाए रहा, मानो वह किसी ऐसे सैनिक के सलाम का जवाब दे रहा हो जिसे वह व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था। मैं बैरक की ओर भागा, लेकिन वह बहुत दूर था; जब मैं पहुँचा, तो रेजिमेंट चौक पर परेड कर रही थी, जहाँ मुझे खड़े होने की अनुमति नहीं थी, और सेंट-लूप को अलविदा न कह पाने से मेरा दिल टूट गया था; मैं उसके कमरे में गया, लेकिन वह जा चुका था; मुझे बीमार सैनिकों के एक समूह से पूछताछ करनी पड़ी, जिनमें वे रंगरूट थे जिन्हें मार्च से छूट दी गई थी, एक युवा स्नातक, और 'पुराने सैनिकों' में से एक, जो रेजिमेंट की परेड देख रहे थे।

"क्या आपने कभी सार्जेंट सेंट-लूप को देखा है?" मैंने पूछा।

"वह परेड में गए हैं, महोदय," बूढ़े सैनिक ने कहा।

स्नातक ने कहा, "मैंने उसे कभी नहीं देखा।"

"तुमने उसे कभी नहीं देखा," बूढ़े सिपाही ने मुझमें सारी दिलचस्पी खोते हुए कहा, "तुमने हमारे मशहूर सेंट-लूप को कभी नहीं देखा, वो अपनी नई पैंट में कितना शानदार दिख रहा है! जब कैपस्टन उसे देखेगा, तो अधिकारी की वर्दी, वाह!"

“अरे वाह, आप तो कमाल के हैं! अधिकारी की वर्दी!” युवा स्नातक ने जवाब दिया, जिसे ‘क्वार्टर में बीमार’ बताया गया था, इसलिए उसे मार्चिंग से छूट मिल गई थी और उसने कुछ हिचकिचाहट के साथ, अनुभवी सैनिकों के साथ सहज संबंध बनाने की कोशिश की। “आप जिस अधिकारी की वर्दी की बात कर रहे हैं, क्या वह इसी तरह की है?”

"महाराज?" बूढ़े सिपाही ने गुस्से से पूछा।

उन्हें इस बात पर गुस्सा आया कि युवा स्नातक ने अधिकारी के कपड़े से बनी पतलून पर संदेह जताया, लेकिन ब्रेटन होने के नाते, पेंगुएर्न-स्टेरेडेन नामक गाँव से आने के कारण, उन्होंने फ्रेंच उतनी ही कठिनाई से सीखी थी जितनी कि अंग्रेजी या जर्मन सीखने में। जब भी वे भावुक हो

जाते, वे खुद को शब्द खोजने का समय देने के लिए बार-बार 'सर?' कहते रहते, फिर इस तैयारी के बाद, अपनी वाक्पटुता का प्रदर्शन करते, केवल कुछ शब्दों को दोहराते जिन्हें वे दूसरों की तुलना में बेहतर जानते थे, लेकिन बिना जल्दबाजी के, उच्चारण से अपनी अपरिचितता को छिपाने के लिए हर संभव सावधानी बरतते हुए।

"आह! यह तो वैसा ही कपड़ा है," वह गुस्से से भड़क उठा, उसकी बोलने की गति धीमी होते-होते उसकी तीव्रता बढ़ती गई। "आह! यह तो वैसा ही कपड़ा है; जब मैं तुमसे कहता हूँ कि यह अधिकारी का कपड़ा है, जब मैं तुमसे कुछ कहता हूँ, अगर मैं तुमसे कुछ कहता हूँ, तो इसका मतलब है कि मैं जानता हूँ, मुझे ऐसा लगता है।"

“बहुत खूब, तो फिर,” इस तर्क की शक्ति से अभिभूत होकर युवा स्नातक ने उत्तर दिया। “शांत रहो, दोस्त।”

"देखो, वो कैपस्टन आ रहा है। नहीं, लेकिन सेंट-लूप को देखो; जिस तरह से वो अपना पैर बाहर फेंकता है; और उसका सिर। क्या तुम इसे नॉन-कॉम कहोगे? और उसका चश्मा; ओह, वो तो कमाल का है।"

मैंने उन सैनिकों से पूछा, जो मेरी उपस्थिति से ज़रा भी असहज नहीं लग रहे थे, कि क्या मैं भी खिड़की से बाहर देख सकता हूँ। उन्होंने न तो मुझे ऐसा करने से रोका और न ही मेरे लिए जगह छोड़ी। मैंने कैप्टन डी बोरोडिनो को शान से जाते देखा, अपने घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए, और ऐसा लग रहा था मानो वे ऑस्टरलिट्ज़ की लड़ाई में हिस्सा ले रहे हों। कुछ आवारा लोग रेजिमेंट को निकलते देखने के लिए द्वार पर रुक गए थे। अपने घोड़े पर सीधा खड़ा, उसका चेहरा थोड़ा गोल-मटोल, उसके गाल शाही अंदाज़ से भरे हुए, उसकी आँखें बेदाग, राजकुमार किसी मतिभ्रम का शिकार रहा होगा, जैसा कि मैं खुद तब होता था जब ट्राम का डिब्बा गुजर जाने के बाद, उसके बाद की खामोशी मुझे एक अस्पष्ट संगीतमय धड़कन के साथ गूंजती हुई प्रतीत होती थी। मुझे सेंट-लूप को अलविदा न कह पाने का बहुत दुख था, लेकिन फिर भी मैं चला गया, क्योंकि मेरी एकमात्र चिंता अपनी दादी के पास लौटना थी; तब तक, इस छोटे से कस्बे में, जब भी मैं सोचती थी कि मेरी दादी अकेले क्या कर रही होंगी, तो मैं उनकी छवि वैसी ही बनाती थी जैसी वे मेरे साथ होती थीं, अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को दबाते हुए, लेकिन इस दमन के प्रभावों पर ध्यान दिए बिना; अब, मुझे पहले संभव क्षण में,

उनकी बाहों में, उस भ्रम से खुद को मुक्त करना था, जो अब तक अनपेक्षित था और अचानक उनकी आवाज से प्रकट हुआ था, एक ऐसी दादी की छवि जो वास्तव में मुझसे अलग हो गई थीं, शांत थीं, जिनकी एक निश्चित उम्र थी, जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था, जिन्होंने अभी-अभी एक खाली घर में मेरा पत्र प्राप्त किया था, जैसा कि मैंने एक बार माँ को अकेले घर में कल्पना की थी, जब मैं उन्हें छोड़कर बालबेक गई थी।

अफसोस, यह वही प्रेत था जिसे मैंने सचमुच देखा जब मैं अपनी दादी को अपने लौटने की सूचना दिए बिना ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ और उन्हें वहाँ पढ़ते हुए पाया। मैं कमरे में था, या यूँ कहूँ कि मैं अभी कमरे में नहीं था क्योंकि उन्हें मेरी उपस्थिति का एहसास नहीं था, और उस स्त्री की तरह जिसे कोई अचानक अपने काम में लगा हुआ देखकर चौंका देता है और जिसे वह किसी के आने पर किनारे रख देती है, वह अपने विचारों में खोई हुई थीं, जिन्हें उन्होंने मुझे कभी देखने नहीं दिया था। मेरे लिए—उस विशेषाधिकार के कारण जो क्षणिक है लेकिन जो वापसी के संक्षिप्त क्षण में प्राप्त होता है, यानी अपनी अनुपस्थिति का एक दर्शक होने की क्षमता—वहाँ केवल एक साक्षी, एक प्रेक्षक, एक टोपी और यात्रा कोट पहने हुए, एक अजनबी जो घर का नहीं है, एक फोटोग्राफर जो उन जगहों की तस्वीर लेने आया है जिन्हें मैं फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, मौजूद था। मेरी दादी को देखते ही मेरी आँखों में जो प्रक्रिया स्वतः ही घटी, वह वास्तव में एक तस्वीर थी। हम अपने प्रियजनों को केवल अपने निरंतर प्रेम की उस जीवंत प्रक्रिया में ही देख पाते हैं, जो उनके चेहरों की छवियों को हम तक पहुँचने देने से पहले ही उन्हें अपने भंवर में जकड़ लेती है, उन्हें उस विचार पर वापस ले जाती है जो हमने हमेशा उनके बारे में रखा है, उन्हें उससे जोड़ देती है, उससे मेल खाने पर मजबूर कर देती है। कैसे, जब से मैं अपनी दादी के माथे और गालों में उनके मन के सबसे कोमल, सबसे स्थायी गुणों को पढ़ने का आदी था; कैसे, जब से हर आकस्मिक नज़र एक जादू-टोना है, हर वह चेहरा जिसे हम प्यार करते हैं अतीत का दर्पण है, कैसे मैं उनमें मंद पड़ चुके और बदल चुके भावों को अनदेखा कर सकता था, यह देखते हुए कि हमारे दैनिक जीवन के सबसे तुच्छ दृश्यों में भी, विचारों से भरी हमारी आँख, एक शास्त्रीय त्रासदी की तरह, हर उस छवि को अनदेखा कर देती है जो नाटक की क्रिया में सहायक नहीं होती और केवल उन्हीं को धारण करती है जो उसके उद्देश्य को समझने में मदद कर सकती हैं। लेकिन अगर हमारी आँख की जगह

कोई भौतिक वस्तु, जैसे कोई फोटोग्राफिक प्लेट, उस घटना को देख रही हो, तो उदाहरण के लिए, संस्थान के प्रांगण में हम जो देखेंगे, वह किसी टैक्सी का इंतज़ार कर रहे शिक्षाविद के गरिमापूर्ण आगमन के बजाय, उनकी लड़खड़ाती चाल, पीठ के बल गिरने से बचने के लिए बरती गई सावधानियाँ, और उनके गिरने का परवलयिक आकार होगा, मानो वे नशे में हों या ज़मीन जमी हुई हो। ऐसा ही तब होता है जब संयोग का कोई आकस्मिक खेल हमारी बुद्धि और पवित्र भावनाओं को समय रहते आगे आने से रोकता है, ताकि हमारी आँखों से वह सब कुछ न छिपाया जा सके जिसे उन्हें कभी नहीं देखना चाहिए। जब हमारी आँखें उसे पहले ही देख लेती हैं, और वे सबसे पहले मैदान में पहुँचकर, उस दृश्य को अकेले ही देख लेती हैं, तो वे फिल्म की तरह यंत्रवत काम करने लगती हैं, और हमें उस प्रिय मित्र के स्थान पर, जो बहुत पहले इस दुनिया से चला गया है लेकिन जिसकी मृत्यु को हमारी भावनाओं ने अब तक हमसे छिपाए रखा है, उस नए व्यक्ति को दिखाती हैं जिसे हमारी भावना ने दिन में सौ बार एक प्यारे और धोखे भरे रूप में प्रस्तुत किया है। और, एक बीमार व्यक्ति की तरह, जिसने लंबे समय से अपनी परछाई नहीं देखी है, और अपने मन में बसी आदर्श छवि से कभी ताज़ा न हुए चेहरे की स्मृति को सहेज कर रखा है, शीशे में, सूखे गालों के बीच, मिस्र के पिरामिडों में से एक जितनी विशाल, ढलानदार लाल नाक को देखकर सिहर उठता है, मैं, जिसके लिए मेरी दादी अभी भी मैं ही थी, मैं जिसने उसे अपनी आत्मा के सिवा कभी नहीं देखा था, हमेशा अतीत में उसी स्थान पर, आसन्न, अतिव्यापी यादों की पारदर्शी परतों के माध्यम से, अचानक हमारे ड्राइंग रूम में, जो एक नई दुनिया का हिस्सा था, समय की दुनिया, जिसमें वे अजनबी रहते हैं जिनके बारे में हम कहते हैं "वह काफी बूढ़ा हो गया है," पहली बार और केवल एक क्षण के लिए, जब से वह अचानक गायब हो गई, मैंने सोफे पर, दीपक के नीचे बैठी, लाल चेहरे वाली, भारी और साधारण, बीमार, विचारों में डूबी हुई, मुश्किल से समझदार लगने वाली आँखों से एक किताब की पंक्तियों का अनुसरण करती हुई, एक उदास बूढ़ी औरत को देखा जिसे मैं नहीं जानती थी।

श्रीमती डी गुएरमांटेस के संग्रह में मौजूद एल्स्टर की कलाकृतियों का निरीक्षण करने की मेरी विनती का सेंट-लूप ने यह कहकर जवाब दिया: "मैं उनकी ओर से जवाब दूंगा।" और दुर्भाग्यवश, जवाब देने वाला वही था, और केवल वही। हम दूसरों के लिए बड़ी आसानी से

जवाब दे देते हैं, जब हम उनके प्रतिनिधित्व करने वाली छोटी-छोटी कठपुतलियों से अपना मानसिक मंच तैयार करते हैं और उन्हें अपनी कल्पना के अनुरूप संचालित करते हैं। निस्संदेह, तब भी हम दूसरे व्यक्ति के स्वभाव के हमारे स्वभाव से भिन्न होने के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हैं, और हम उस स्वभाव को प्रभावित करने के लिए किसी न किसी कार्य योजना का सहारा लेने से नहीं चूकते, जैसे कि उसके भौतिक हितों का आह्वान करना, उसे मनाना, उसकी भावनाओं को भड़काना, जिससे उसकी ओर से विपरीत प्रवृत्तियों को निष्क्रिय किया जा सके। लेकिन हमारे अपने स्वभाव से ये भिन्नताएँ, इन्हें तो हमारा अपना स्वभाव ही कल्पना करता है; इन कठिनाइयों को, इन्हें हम ही उत्पन्न करते हैं; इन बाध्यकारी उद्देश्यों को, इन्हें हम ही लागू करते हैं। और यही बात उन कार्यों पर भी लागू होती है जिन्हें हम अपने मन में दूसरे व्यक्ति को करने के लिए प्रेरित करते हैं, और जो उसे हमारी इच्छानुसार कार्य करने के लिए बाध्य करते हैं; जब हम उन्हें वास्तविक जीवन में उन प्रदर्शनों को करते हुए देखना चाहते हैं, तो मामला बदल जाता है, हमें अनदेखे प्रतिरोधों का सामना करना पड़ता है जो शायद दुर्गम साबित हों। इनमें से एक प्रबल प्रतिरोध निस्संदेह वह है जो उस स्त्री में विकसित हो सकता है जो उससे प्रेम नहीं करती, उस पुरुष के प्रति घृणा से जो उससे प्रेम करता है; उन लंबे हफ्तों के दौरान जब तक सेंट-लूप पेरिस नहीं आए, उनकी चाची, जिन्हें उन्होंने आने की विनती करते हुए पत्र लिखा होगा, ने मुझे कभी भी एल्स्टर परिवार को देखने के लिए अपने घर आने के लिए नहीं कहा।

मुझे इमारत में रहने वाले एक अन्य व्यक्ति के व्यवहार में कुछ रूखापन सा महसूस हुआ। ये जुपियन था। क्या उसे लगा कि मुझे डोंसिएरेस से लौटने पर, अपने फ्लैट में ऊपर जाने से पहले ही, उससे हालचाल पूछना चाहिए था? मेरी माँ ने कहा कि इसमें कुछ भी असामान्य नहीं था। फ्रांस्वा ने उन्हें बताया था कि वह ऐसा ही है, बिना किसी कारण के अचानक चिड़चिड़ा हो जाता है। और ये चिड़चिड़ापन थोड़ी देर बाद शांत हो जाता है।

इस बीच, सर्दी का मौसम समाप्त हो रहा था। कई हफ़्तों की बारिश और तूफ़ानों के बाद, एक सुबह मैंने अपनी चिमनी में हवा की आवाज़ सुनी—उस हवा की जगह, जो आकारहीन, लचीली और उदास थी और मुझे समुद्र पर जाने की तीव्र इच्छा जगा रही थी—बाहर की दीवार में घोंसला बनाए कबूतरों की गुटरगू सुनाई दी; झिलमिलाती हुई, अप्रत्याशित, जैसे कोई

पहला जलकुंभी का फूल धीरे से अपने कोमल हृदय को खोल रहा हो ताकि उसमें से बैंगनी और रेशमी मुलायम ध्वनि का फूल खिल सके, और मेरे अभी भी बंद और अंधेरे शयनकक्ष में खुली खिड़की की तरह गर्मी, चकाचौंध भरी चमक और पहले सुहावने दिन की थकान को अंदर आने दे रहा हो। उस सुबह, मैं खुद को एक संगीत-हॉल की धुन गुनगुनाते हुए पाकर हैरान रह गया, जो फ्लोरेंस और वेनिस जाने के बाद से मेरे दिमाग में कभी नहीं आई थी। वातावरण इतना गहरा प्रभाव डालता है कि अच्छे और बुरे दिन बार-बार आते हैं और उन धुंधली अलमारियों से, जिन्हें हम भूल चुके थे, उन धुनों को बाहर निकाल लाता है जिन्हें हमारी स्मृति समझ नहीं पाती। वर्तमान में एक अधिक सचेत स्वप्नद्रष्टा उस संगीतकार के साथ था जिसे मैं अपने भीतर सुन रहा था, हालांकि मैंने पहले यह नहीं पहचाना था कि वह क्या बजा रहा था।

मुझे यह अच्छी तरह से समझ आ गया था कि बालबेक पहुँचने पर मुझे वहाँ के चर्च में वह आकर्षण नहीं मिला जो मुझे पहले से ही आकर्षित करता था; यह कोई विशेष कारण नहीं था कि फ्लोरेंस, परमा या वेनिस में भी मेरी कल्पना मेरी आँखों की जगह नहीं ले सकती थी। मुझे यह एहसास हो गया था। इसी तरह, नए साल की एक दोपहर, जब रात होने लगी, नाटक के विज्ञापनों की कतार के सामने खड़े होकर, मैंने उस भ्रम को महसूस किया जो हमारी सोच में छिपा होता है कि कुछ विशेष त्यौहार कैलेंडर के बाकी दिनों से बिल्कुल अलग होते हैं। फिर भी, फ्लोरेंस में ईस्टर मनाने की मेरी उत्सुकता भरी यादें उस त्योहार को, मानो, फूलों के शहर का माहौल दे रही थीं, ईस्टर के दिन को फ्लोरेंस की झलक और फ्लोरेंस को ईस्टर की झलक दे रही थीं। ईस्टर अभी बहुत दूर था; लेकिन मेरे सामने फैले दिनों की श्रृंखला में, पवित्र सप्ताह के दिन उन दिनों के अंत में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे जो बस उनके बीच में आते थे। दूर से आती हुई एक किरण से स्पर्शित होकर, जैसे किसी गांव के कुछ घर जो दूर से दिखाई देते हैं जब बाकी घर छाया में होते हैं, उन्होंने सूर्य की सारी रोशनी को पकड़ लिया था और उसे अपने पास रखा था।

मौसम अब सुहावना हो गया था। और मेरे माता-पिता ने मुझे ज़्यादा व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित करके मुझे सुबह की सैर फिर से शुरू करने का बहाना दे दिया। मैंने तो सैर छोड़ देने का सोचा था, क्योंकि सैर के दौरान ही मेरी मुलाकात श्रीमती डी गुएरमांटेस से होनी थी।

लेकिन इसी वजह से मैं हर पल उन सैरों के बारे में सोचता रहता था, और हर पल मुझे सैर पर जाने का एक नया कारण मिल जाता था, एक ऐसा कारण जिसका श्रीमती डी गुएरमांटेस से कोई संबंध नहीं था और मुझे यह यकीन दिलाने में कोई मुश्किल नहीं थी कि अगर वह कभी थीं ही नहीं, तो भी मैं हर सुबह उसी समय ज़रूर सैर पर जाता।

अफसोस, अगर मेरे लिए उसके सिवा किसी और से मिलना कोई मायने नहीं रखता, तो मुझे लगता है कि उसके लिए दुनिया में मुझसे सिवा किसी से भी मिलना सहनीय होता। हुआ यूं कि अपनी सुबह की सैर के दौरान, उसे कई मूर्खों का अभिवादन मिला, जिन्हें वह मूर्ख ही समझती थी। लेकिन उसके रास्ते में उनका दिखना, अगर किसी सुख का वादा न भी करे, तो कम से कम महज एक संयोग ही लगता था। और वह कभी-कभी उन्हें रोक देती थी, क्योंकि ऐसे क्षण होते हैं जब इंसान खुद से भागना चाहता है, किसी दूसरे व्यक्ति की आत्मा द्वारा दी गई मेहमाननवाजी को स्वीकार करना चाहता है, बशर्ते कि दूसरा व्यक्ति, चाहे कितना भी विनम्र और साधारण क्यों न हो, एक अलग आत्मा हो, जबकि मेरे दिल में वह इस बात से चिढ़ जाती थी कि उसे जो मिलता वह खुद ही होती। और इसलिए, भले ही मेरे पास, उसी रास्ते से जाने का, उसे देखने की इच्छा के अलावा कोई और कारण था, फिर भी जब वह मेरे पास से गुज़री तो मैं एक दोषी व्यक्ति की तरह कांप उठा; और कभी-कभी, मेरे द्वारा किए गए किसी भी अतिरंजित व्यवहार को बेअसर करने के लिए, मैं उसके अभिवादन का मुश्किल से ही जवाब देता था, या अपनी टोपी उठाए बिना उसकी ओर देखता रहता था, और इससे वह पहले से कहीं अधिक क्रोधित हो जाती थी, और मुझे उद्दंड और असभ्य समझने लगती थी।

अब उसने हल्के, या कम से कम चमकीले, कपड़े पहने हुए थे, और वह उस गली में टहलती हुई आती थी जहाँ पहले से ही, मानो वसंत ऋतु आ गई हो, पुरानी कुलीन हवेलियों के विशाल अग्रभागों के बीच दबी संकरी दुकानों के सामने, मक्खन बेचने वाली, फल बेचने वाली और सब्जी बेचने वाली की दुकानों के ऊपर, धूप से बचाव के लिए शामियाने फैले हुए थे। मैंने मन ही मन कहा कि वह स्त्री जिसे मैं दूर से चलते हुए, अपना सनशेड खोलते हुए, गली पार करते हुए देख रहा था, वह उन लोगों की राय में, जो सबसे योग्य न्यायाधीश हैं, उन गतिविधियों को करने और उनसे कुछ अत्यंत सुंदर बनाने की कला की सबसे महान जीवित प्रतिपादक थी। इस बीच वह मेरी ओर बढ़ रही थी, इस व्यापक ख्याति से अनभिज्ञ, उसका पतला, जिद्दी

शरीर, जिसने इसे जरा भी आत्मसात नहीं किया था, बैंगनी रेशम के दुपट्टे के नीचे अकड़ा हुआ आगे की ओर झुका हुआ था; उसकी साफ, उदास आँखें अनमने ढंग से सामने देख रही थीं, और शायद उसने मुझे देख लिया था; वह अपने होंठ काट रही थी; मैंने उन्हें अपना मफ ठीक करते, एक भिखारी को दान देते, एक फूलवाले से वायलेट का गुच्छा खरीदते देखा, ठीक उसी जिज्ञासा से जैसे मैं किसी महान चित्रकार के ब्रश की स्ट्रोक को देखता। और जब वे मेरे पास पहुँचकर मुझे प्रणाम करतीं, कभी-कभी हल्की मुस्कान के साथ, तो ऐसा लगता मानो उन्होंने मेरे लिए रंगों से एक रेखाचित्र बनाया हो, मुझ पर एक व्यक्तिगत संदेश लिखा हो, एक ऐसी चित्रकारी जो कला की उत्कृष्ट कृति हो। उनके हर गाउन मुझे उनके लिए स्वाभाविक, आवश्यक परिवेश प्रतीत होते थे, मानो उनकी आत्मा के किसी विशेष पहलू का प्रतिबिंब हों। उपवास की ऐसी ही एक सुबह, जब वे दोपहर के भोजन के लिए बाहर जा रही थीं, तो मेरी मुलाकात उनसे हुई। उन्होंने चमकीले लाल मखमल का गाउन पहना हुआ था, जो गले से थोड़ा खुला हुआ था। श्रीमती डी गुएरमांटेस का चेहरा सुनहरे बालों के गुच्छे के नीचे मानो स्वप्न देख रहा हो। मैं सामान्य से कम उदास था क्योंकि उसके चेहरे की उदासी, उसके गाउन के चटख रंग से उपजे अलगाव ने उसे बाकी दुनिया से अलग कर दिया था, जिससे वह किसी तरह अकेली और दुखी लग रही थी, और इससे मुझे सुकून मिला। गाउन मुझे ऐसा लगा मानो उसके चारों ओर एक ऐसे हृदय की लाल किरणों का साकार रूप हो जिसे मैं उसका नहीं पहचानता था और शायद उसे सांत्वना दे सकता था; कोमल बहने वाली तहों वाले उस रहस्यमयी वस्त्र के प्रकाश में आश्रय लिए हुए, उसने मुझे ईसाई धर्म के प्रारंभिक युग के किसी संत की याद दिला दी। इसके बाद मुझे इस पवित्र शहीद को अपने दर्शन से पीड़ित करने पर शर्म महसूस हुई। "लेकिन, आखिर सड़कें तो सार्वजनिक हैं।"

मैंने खुद को याद दिलाया कि सड़कें सार्वजनिक हैं, शब्दों को एक नया अर्थ देते हुए, और यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि वास्तव में बारिश से भीगी हुई भीड़भाड़ वाली सड़क पर, जो इसे इटली के पुराने शहरों की सड़कों की तरह सुंदर और अनमोल बनाती थी, डचेस डी गुएरमांटेस अपने निजी जीवन के क्षणों को दुनिया के सार्वजनिक जीवन के साथ मिलाती थीं, हर राहगीर से टकराती हुई, कला की महानतम कृतियों की भव्य निःस्वार्थता के साथ, खुद को सभी के सामने प्रकट करती थीं। चूंकि मैं सुबह पूरी रात जागने के बाद बाहर गया था, इसलिए

दोपहर में मेरे माता-पिता मुझे थोड़ी देर लेटने और सोने की कोशिश करने के लिए कहते थे। जब कोई नींद पाने की कोशिश कर रहा होता है, तो इस खोज के बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं होती, लेकिन आदत बहुत उपयोगी होती है, और यहां तक कि विचारों से मुक्ति भी। लेकिन दोपहर के इन घंटों में दोनों की कमी थी। सोने से पहले, मैंने इतना समय इस बारे में सोचने में बिताया कि मुझे नींद नहीं आएगी, कि सोने के बाद भी मेरे कुछ विचार बाकी रह गए। लगभग घोर अंधेरे में वह एक हल्की सी चमक मात्र थी, लेकिन इतनी तेज़ कि मेरी नींद में उसका प्रतिबिंब दिखाई दिया। पहले तो मुझे लगा कि मैं सो नहीं पा रहा हूँ, फिर उसी प्रतिबिंब का प्रतिबिंब दिखाई दिया कि नींद में ही मुझे यह ख्याल आया कि मैं सोया नहीं हूँ। फिर एक और प्रतिबिंब के ज़रिए मेरी जागृति हुई... एक नई नींद में, जिसमें मैं अपने कमरे में आए कुछ दोस्तों को यह बताने की कोशिश कर रहा था कि कुछ पल पहले, जब मैं सो रहा था, तो मैंने कल्पना की थी कि मैं सोया नहीं हूँ। ये धुंधलेपन मुश्किल से ही पहचाने जा सकते थे; इन सबको समझने के लिए गहरी और बिल्कुल बेकार सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता होती। इसी प्रकार, बाद के वर्षों में, वेनिस में, सूरज डूबने के बहुत बाद, जब चारों ओर घना अंधेरा छा जाता था, तब मैंने नहरों की सतह पर प्रकाश की अंतिम किरण की सूक्ष्म प्रतिध्वनि के कारण, मानो किसी प्रकाशीय पेडल को दबाया जा रहा हो, महलों का प्रतिबिंब देखा, मानो हमेशा के लिए गहरे मखमली आवरण में, पानी के धुंधले भूरे रंग पर फैला हुआ हो। मेरे सपनों में से एक सपना उस चीज़ का सार था जिसे मेरी कल्पना अक्सर जागते समय, समुद्र से घिरे एक स्थान और उसके मध्ययुगीन अतीत को चित्रित करने का प्रयास करती थी। सपने में मैंने एक गोथिक किले को समुद्र से उठते हुए देखा, जिसकी लहरें किसी चित्रित खिड़की की तरह शांत थीं। समुद्र की एक शाखा ने शहर को दो भागों में बाँट दिया; हरा पानी मेरे पैरों तक फैला हुआ था; यह विपरीत किनारे पर एक प्राच्य चर्च की नींव को भिगो रहा था, और उसके आगे चौदहवीं शताब्दी में बने घर थे, इसलिए उन तक जाना समय की धारा में ऊपर चढ़ने जैसा होता। यह सपना जिसमें प्रकृति ने कला से सीखा था, जिसमें समुद्र गॉथिक रूप धारण कर चुका था, यह सपना जिसमें मैं कुछ पाने की लालसा रखता था, जिसमें मुझे विश्वास था कि मैं असंभव को पा रहा हूँ, मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने इसे पहले भी कई बार देखा है। लेकिन जैसा कि हमारी नींद में कल्पना की गई चीज़ों का अतीत में पुनरावर्तन होना और यहाँ तक कि

नवीन होने पर भी परिचित प्रतीत होना स्वाभाविक है, मुझे लगा कि मैं गलत था। हालाँकि, मैंने गौर किया कि मुझे यह सपना अक्सर आता था।

नींद की वे सीमाएँ जो सभी नींदों में आम होती हैं, मेरी नींद में भी प्रतीकात्मक रूप से झलक रही थीं; अँधेरे में मैं कमरे में मौजूद दोस्तों के चेहरे नहीं देख पा रही थी, क्योंकि हम आँखें बंद करके सोते हैं। मैं, जो सपने में खुद से अंतहीन बहस कर सकती थी, जैसे ही मैंने इन दोस्तों से बात करने की कोशिश की, शब्द मेरे गले में अटक गए, क्योंकि हम नींद में स्पष्ट रूप से नहीं बोलते; मैं उनके पास जाना चाहती थी, लेकिन अपने अंगों को हिला नहीं पा रही थी, क्योंकि हम सोते समय चलते भी नहीं हैं; और अचानक मुझे उनके सामने शर्मिंदा होना पड़ा, क्योंकि हम बिना कपड़ों के सोते हैं। इस प्रकार, मेरी आँखें अंधी, मेरे होंठ बंद, मेरे अंग जकड़े हुए, मेरा शरीर नंगा, नींद की वह आकृति जो मेरी नींद ने खुद बनाई थी, उन महान प्रतीकात्मक आकृतियों (जिनमें से एक में जियोटो ने ईर्ष्या को मुँह में साँप लिए हुए चित्रित किया है) के समान लग रही थी जिनकी तस्वीरें स्वान ने मुझे दी थीं।

सेंट-लूप कुछ घंटों के लिए ही पेरिस आए थे। उन्होंने आश्वासन दिया कि उन्हें अपनी चाची से मेरे बारे में बात करने का कोई मौका नहीं मिला। "ओरियान आजकल बिल्कुल भी अच्छी नहीं है," उन्होंने मासूमियत से खुद को धोखा देते हुए समझाया। "वह अब मेरी पुरानी ओरियान नहीं रही, उन्होंने उसे बदल दिया है। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, उसके बारे में ज़्यादा सोचने का कोई फ़ायदा नहीं है। आप उसकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ कर रहे हैं। क्या आप मेरे चचेरे भाई पोइटियर्स से मिलना चाहेंगे?" उन्होंने बिना सोचे-समझे आगे कहा कि इससे मुझे कोई खुशी नहीं होगी। "वह बहुत ही समझदार युवती है; आपको पसंद आएगी। उसकी शादी मेरे चचेरे भाई, ड्यूक डी पोइटियर्स से हुई है, जो एक अच्छा इंसान है, लेकिन उसके लिए थोड़ा धीमा है। मैंने उसे आपके बारे में बताया है। उसने कहा कि मैं आपको उससे मिलवाने ले जाऊँ। वह ओरियान से कहीं ज़्यादा सुंदर और उम्र में भी छोटी है। सच में बहुत अच्छी इंसान है, है ना? बहुत ही नेक इंसान।" ये वो बातें थीं जिन्हें रॉबर्ट ने हाल ही में और भी जोश से दोहराया था, जिससे पता चलता था कि वह महिला स्वभाव से संवेदनशील थी। "मैं ये तो नहीं कहूँगा कि वो ड्रेफसवादी है, आपको याद रखना चाहिए कि वो किन लोगों के बीच रहती है; फिर भी, उसने मुझसे कहा था: 'अगर वो निर्दोष है, तो शैतान के द्वीप पर उसे कैद रखना

कितना भयानक होगा।' आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब? और फिर वो ऐसी महिला है जो अपनी बूढ़ी नौकरानियों का बहुत ख्याल रखती है; उसने आदेश दिया है कि जब वे घर आएँ तो उन्हें कभी भी नौकरों की सीढ़ी से अंदर न भेजा जाए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि वो बहुत अच्छी महिला है। ओरियन के उसे नापसंद करने का असली कारण ये है कि उसे लगता है कि वो दोनों में ज़्यादा चालाक है।"

हालांकि फ्रांस्वा को गुएरमांटे परिवार के एक नौकर के लिए बहुत दया आ रही थी—जिसे डचेस के बाहर होने पर भी अपनी प्रेमिका से मिलने का कोई मौका नहीं मिलता था, क्योंकि लॉज से तुरंत खबर उसे मिल जाती—फिर भी सेंट-लूप के आने के समय घर में न होने से उसका दिल टूट गया था, लेकिन इसका कारण यह था कि अब वह खुद भी मिलने जाती थी। वह उन दिनों में कभी नहीं चूकती थी जब मुझे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती थी। वह हमेशा अपने भाई, अपनी भतीजी और विशेष रूप से अपनी बेटी से मिलने जाती थी, जो हाल ही में पेरिस में रहने आई थी। इन मुलाकातों की अंतरंगता ने ही मुझे उसकी सेवाओं से वंचित होने पर और भी ज़्यादा परेशान कर दिया, क्योंकि मुझे आशंका थी कि वह इन्हें उन कर्तव्यों में से एक बताएगी जिनसे सेंट-आंद्रे-डेस-चैंप्स में निर्धारित कानूनों के अनुसार कोई छूट नहीं है। और इसलिए मैं उसके बहाने बिना चिढ़े कभी नहीं सुनता था, जो उसके साथ घोर अन्याय था, और यह चिढ़ तब चरम पर पहुँच जाती थी जब फ्रांस्वा कहती थी: "मैं अपने भाई से मिलने गई थी," या "मैं अपनी भतीजी से मिलने गई थी," बल्कि "मैं भाई से मिलने गई थी," "मैं बस गुजरते हुए भतीजी को नमस्कार करने के लिए अंदर गई थी" (या "मेरी कसाई भतीजी को नमस्कार करने के लिए")। जहाँ तक उसकी बेटी की बात है, फ्रांस्वा उसे कॉम्ब्रे लौटते देखकर बहुत खुश होती। लेकिन यह नई पेरिसवासी, फैशनपरस्त महिलाओं की तरह, संक्षिप्ताक्षरों का इस्तेमाल करते हुए, हालाँकि उसके संक्षिप्ताक्षर भद्दे थे, यह कहती रही कि वह जो एक सप्ताह कॉम्ब्रे में बिताने जा रही है, वह "इंट्रान" को देखे बिना भी काफी लंबा लगेगा। वह फ्रांस की बहन के पास जाने के लिए और भी कम इच्छुक थी, जो एक पहाड़ी देश में रहती थी, क्योंकि बेटी ने विशेषण को एक नया और भयानक अर्थ देते हुए कहा, "पहाड़ वास्तव में दिलचस्प नहीं होते।" वह मेसेग्लिस वापस जाने का मन नहीं बना पा रही थी, जहाँ "लोग बहुत मूर्ख हैं," जहाँ बाज़ार में स्टॉल पर गपशप करने वाले लोग उसे चचेरी बहनें

कहकर बुलाते थे और कहते थे, "अरे, यह बेचारे बाज़िरो की बेटी क्यों नहीं है?" वह वापस जाकर वहाँ दफ़न होने के बजाय मरना पसंद करती, अब जब उसने "पेरिस के जीवन का स्वाद चख लिया था।" और फ्रांस, अपनी परंपरावादी प्रवृत्ति के बावजूद, इस नई पेरिसवासी में समाहित नवाचार की भावना पर संतुष्ट भाव से मुस्कुराई जब उसने कहा: "ठीक है माँ, अगर आपको अपनी छुट्टी नहीं मिलती है, तो आप मुझे बस एक टायर भेज दीजिएगी।"

मौसम फिर से सर्द हो गया था। "बाहर जाऊं? किसलिए? ठंड से मरने के लिए?" फ्रांस्वा ने कहा, जो उस सप्ताह घर में ही रहना पसंद करती थी जब उसकी बेटी, भाई और कसाई भतीजी कॉम्ब्रे घूमने गए थे। इसके अलावा, मेरी चाची लियोनी - एक प्रकृतिवादी दार्शनिक - के सिद्धांतों का पालन करने वाले संप्रदाय की अंतिम जीवित अनुयायी होने के नाते, फ्रांस्वा इस बेमौसम मौसम के बारे में बात करते हुए कहती: "यह ईश्वर के क्रोध का अवशेष है!" लेकिन मैंने उसकी शिकायतों का जवाब केवल एक सुस्त मुस्कान से दिया; इन भविष्यवाणियों से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि जो भी हो, मेरे लिए अच्छा ही होगा; मैं पहले ही फिएसोले की ढलान पर सुबह की धूप चमकती देख सकती थी, मैं उसकी किरणों में खुद को गर्म कर रही थी; उनकी तीव्रता ने मुझे अपनी पलकें आधी खोलकर आधी बंद करने पर मजबूर कर दिया, मैं मुस्कुरा रही थी, और मेरी पलकें, संगमरमर के दीयों की तरह, गुलाबी चमक से भर गई थीं। इटली से केवल घंटियाँ ही नहीं आई थीं, इटली उनके साथ आया था। मेरे निष्ठावान हाथों में उस तीर्थयात्रा की वर्षगांठ मनाने के लिए फूलों की कमी नहीं होगी, जो मुझे बहुत पहले कर लेनी चाहिए थी, क्योंकि पेरिस में मौसम फिर से ठंडा हो गया था, जैसा कि पिछले साल लेंट के अंत में प्रस्थान की हमारी तैयारियों के समय हुआ था। बुलेवार्ड पर शाहबलूत और प्लेन के पेड़ों को भिगोने वाली ठंडी हवा में, हमारे घर के आंगन में लगे पेड़ पर, पोंटे वेकियो के नरगिस, जॉनक्विल और एनीमोन के फूल शुद्ध पानी के कटोरे में रखे फूलों की तरह खिल रहे थे।

मेरे पिता ने हमें बताया था कि अब उन्हें अपने मित्र ए. जे. से पता चल गया था कि एम. डी नॉरपोइस कहाँ जा रहे थे, जब वे उनसे उस जगह के आसपास मिले थे।

"मैं श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने जा रहा हूँ, वे बहुत अच्छी दोस्त हैं; मुझे इसके बारे में कुछ पता ही नहीं था। लगता है वह एक बहुत ही प्यारी इंसान हैं, एक बेहद श्रेष्ठ महिला हैं।

आपको उनसे मिलने जरूर जाना चाहिए," उन्होंने मुझे बताया। एक और बात जिसने मुझे बहुत आश्चर्यचकित किया। उन्होंने मुझे एम. डी गुएरमांटेस के बारे में बताया कि वे एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं; मैंने तो हमेशा उन्हें एक गंवार समझा था। लगता है, उन्हें बहुत ज्ञान है और उनकी रुचि भी उत्तम है, बस उन्हें अपने नाम और संपर्कों पर बहुत गर्व है। लेकिन नॉरपोइस के अनुसार, उनका रुतबा न केवल यहाँ बल्कि पूरे यूरोप में बहुत ऊँचा है। ऐसा लगता है, ऑस्ट्रियाई सम्राट और ज़ार उन्हें अपने ही एक सदस्य की तरह मानते हैं। बूढ़े नॉरपोइस ने मुझे बताया कि श्रीमती डी विलेपारिसिस आप पर बहुत मोहित हो गई हैं और उनके घर में आपको कई दिलचस्प लोगों से मिलने का मौका मिलेगा। उन्होंने आपकी बहुत प्रशंसा की; अगर आप वहाँ जाएँगे तो आप उनसे मिलेंगे और अगर आप लेखक बनने जा रहे हैं तो भी वे आपको कुछ अच्छी सलाह दे सकते हैं। क्योंकि मुझे लगता है कि आप इसके अलावा कुछ और नहीं करेंगे। यह एक अच्छा करियर साबित हो सकता है; यह वह नहीं है जो मैं आपके लिए चुनता; लेकिन आप जल्द ही एक आदमी बन जाएँगे, हम हमेशा आपकी देखभाल के लिए यहाँ नहीं रहेंगे। आप, और हमें आपको अपने पेशे का पालन करने से नहीं रोकना चाहिए।"

काश, मैं लिखना शुरू कर पाता! लेकिन चाहे मैंने इस काम को जिन भी परिस्थितियों में किया हो (और अफसोस, शराब को हाथ न लगाने, जल्दी सोने, सोने और स्वस्थ रहने के संकल्पों को भी), चाहे उत्साह से, विधिपूर्वक, आनंद से, सैर से खुद को वंचित करके, या सैर को स्थगित करके और उसे मेहनत के इनाम के रूप में बचाकर, अच्छे स्वास्थ्य के एक घंटे का लाभ उठाकर, या बीमारी के कारण मिले निष्क्रियता का उपयोग करके, अंत में मेरे सभी प्रयासों से हमेशा एक खाली पन्ना ही सामने आता था, जिस पर कोई लिखावट नहीं होती थी, ठीक वैसे ही जैसे कुछ खेलों में मजबूरी में मिलने वाला पत्ता, जिसे चाहे कितनी भी सावधानी से फेंटा जाए। मैं बस काम न करने, बिस्तर पर न जाने, नींद न आने की आदतों का एक साधन मात्र था, जिन्हें किसी न किसी तरह व्यक्त होना ही था, चाहे इसकी कितनी भी कीमत चुकानी पड़े; अगर मैंने उनका विरोध नहीं किया, अगर मैंने उस बहाने को मान लिया जिसका उन्होंने दिन के पहले अवसर पर ही फायदा उठाकर अपनी मनमानी की, तो मैं गंभीर चोट से बच गया, आखिरकार मैं सुबह के समय कुछ घंटों के लिए सो गया, मैंने थोड़ा पढ़ा, मैंने खुद पर ज्यादा

ज़ोर नहीं डाला; लेकिन अगर मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की, अगर मैंने जल्दी सोने का बहाना किया, सिर्फ पानी पिया, काम किया, तो वे बेचैन हो गए, उन्होंने सख्त कदम उठाए, उन्होंने मुझे सचमुच बीमार कर दिया, मुझे शराब की खुराक दोगुनी करनी पड़ी, लगातार दो दिन और दो रात बिस्तर पर नहीं लेटा, पढ़ भी नहीं सका, और मैंने कसम खाई कि अगली बार मैं ज्यादा समझदार बनूंगा, यानी कम बुद्धिमान, उस हमले के शिकार की तरह जो डर के मारे लूटे जाने देता है, क्योंकि अगर उसने विरोध किया तो उसे मार दिया जाएगा।

इस बीच, मेरे पिता एम. डी गुएरमांटेस से एक-दो बार मिल चुके थे, और अब जब एम. डी नॉरपोइस ने उन्हें बताया था कि ड्यूक एक असाधारण व्यक्ति हैं, तो उन्होंने उनकी बातों पर अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया था। संयोग से, वे आंगन में मिले और श्रीमती डी विलेपारिसिस के बारे में चर्चा की। "उन्होंने मुझे बताया कि वह उनकी चाची हैं; 'विपारिसी' वह उच्चारण करते हैं। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि वह एक असाधारण रूप से प्रतिभाशाली महिला हैं। वास्तव में उन्होंने कहा कि वह बुद्धि-विद्या का एक स्कूल चलाती थीं," मेरे पिता ने हमें बताया, इस अभिव्यक्ति की अस्पष्टता से प्रभावित होकर, जिसे उन्होंने संस्मरणों की पुस्तकों में कई बार पढ़ा था, लेकिन इसका कोई निश्चित अर्थ नहीं समझा था। मेरी माँ, उनके प्रति अपने गहरे सम्मान के कारण, जब उन्होंने देखा कि उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा बुद्धि-विद्या का स्कूल चलाने की बात को महत्वहीन नहीं माना, तो उन्होंने निर्णय लिया कि यह अवश्य ही महत्वपूर्ण है। हालाँकि मेरी दादी से उन्हें मार्किज़ की बौद्धिक क्षमता का पूर्ण ज्ञान हमेशा से था, फिर भी उनकी नज़र में यह और भी बढ़ गया। मेरी दादी, जिनकी तबीयत उस समय कुछ ठीक नहीं थी, पहले तो इस प्रस्तावित मुलाक़ात के पक्ष में नहीं थीं, और बाद में उनकी रुचि भी कम हो गई। जब से हम अपने नए फ्लैट में आए थे, श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कई बार मेरी दादी को उनसे मिलने के लिए कहा था। और हर बार मेरी दादी ने जवाब दिया कि वह अभी बाहर नहीं जा सकतीं, उन पत्रों में से एक में, जिन्हें वह अपनी एक नई आदत के तहत, जिसे हम समझ नहीं पाए, अब खुद सील नहीं करती थीं, बल्कि फ्रांस्वा से लिफाफे चाटवाती थीं। जहाँ तक मेरी बात है, इस बुद्धि-विद्या के स्कूल के बारे में मेरे मन में कोई स्पष्ट छवि न होने के कारण, मुझे बालबेक की उस बुज़ुर्ग महिला को डेस्क के पीछे बैठे देखकर ज़्यादा आश्चर्य नहीं होता, जैसा कि मैंने अंततः देखा भी।

मेरे पिता यह जानकर प्रसन्न होते कि क्या राजदूत का समर्थन उन्हें संस्थान में कई वोट दिला पाएगा, जहाँ वे एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने की सोच रहे थे। सच कहूँ तो, हालाँकि उन्हें एम. डी नॉरपोइस के समर्थन पर संदेह नहीं था, लेकिन वे इस बात को लेकर बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं थे। जब मंत्रालय में उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि एम. डी नॉरपोइस संस्थान के एकमात्र प्रतिनिधि बनना चाहते हैं और मेरे पिता की उम्मीदवारी में हर संभव बाधा डालेंगे, तो उन्होंने इसे केवल दुर्भावनापूर्ण अफवाह समझा था। इसके अलावा, उस समय मेरे पिता के लिए यह स्थिति और भी असुविधाजनक होती, क्योंकि वे पहले से ही किसी अन्य उम्मीदवार का समर्थन कर रहे थे। फिर भी, जब एम. लेरॉय-ब्यूलियू ने उन्हें चुनाव लड़ने की सलाह दी और उनके अवसरों का आकलन किया, तो मेरे पिता इस बात से चकित रह गए कि जिन सहयोगियों से वे समर्थन की उम्मीद कर सकते थे, उनमें उस प्रख्यात अर्थशास्त्री ने एम. डी नॉरपोइस का नाम तक नहीं लिया था। उन्होंने राजदूत से सीधे तौर पर पूछने की हिम्मत नहीं की, लेकिन आशा की कि मैं श्रीमती से मिलने के बाद वापस आ जाऊँगा। डी विलेपारिस का चुनाव लगभग पक्का हो चुका था। अब यह फ़ोन आने ही वाला था। उन्हें लग रहा था कि एम. डी नॉरपोइस प्रचार-प्रसार करके मेरे पिता को अकादमी के कम से कम दो-तिहाई सदस्यों के वोट दिलवा देंगे, और यह संभावना और भी बढ़ गई थी क्योंकि राजदूत की मदद करने की तत्परता जगजाहिर थी; यहाँ तक कि जो लोग उन्हें नापसंद करते थे, वे भी मानते थे कि सेवा करने में इतना आनंद किसी और को नहीं आता था। इसके अलावा, मंत्रालय में उनका सुरक्षात्मक प्रभाव मेरे पिता पर किसी भी अन्य अधिकारी की तुलना में कहीं अधिक था।

इसी समय मेरे पिता का एक और अनुभव हुआ, लेकिन इस बार उनका आश्चर्य उतनी ही तीव्र नाराजगी में बदल गया। एक दिन सड़क पर उनकी मुलाकात श्रीमती सज़ेरत से हुई, जो पेरिस में अपनी अपेक्षाकृत गरीबी के कारण कभी-कभार ही किसी मित्र से मिलने जाती थीं। श्रीमती सज़ेरत से ज्यादा मेरे पिता को कोई और इतना ऊबता नहीं था कि माँ को साल में एक बार उनसे मीठे और विनम्र स्वर में विनती करनी पड़ती थी: "मेरे प्यारे, मुझे श्रीमती सज़ेरत को एक बार घर बुलाना ही होगा; वह ज्यादा देर नहीं रुकेंगी;" और यहाँ तक कि: "सुनो, प्यारे, मैं तुमसे एक बड़ा त्याग करने को कह रही हूँ; जाओ और श्रीमती सज़ेरत से मिलो। तुम जानते

हो कि मुझे तुम्हें परेशान करना अच्छा नहीं लगता, लेकिन अगर तुम ऐसा करो तो बहुत अच्छा होगा।" वह हँसते, तरह-तरह के विरोध करते और उनसे मिलने चले जाते। और इसलिए, भले ही श्रीमती सज़ेरत उन्हें पसंद नहीं थीं, सड़क पर उन्हें देखते ही मेरे पिता टोपी हाथ में लिए उनकी ओर चल पड़े; लेकिन मेरे पिता को गहरा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने श्रीमती सज़ेरत का अभिवादन केवल औपचारिक विनम्रता से झुककर किया, जो किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति दिखाई जाती है जिसने कोई घिनौना काम किया हो या जिसे भविष्य के लिए किसी दूसरे गोलार्ध में रहने की सजा मिली हो। मेरे पिता क्रोध से अवाक होकर घर लौटे। अगले दिन मेरी माँ किसी के घर में श्रीमती सज़ेरत से मिलीं। उन्होंने मेरी माँ से हाथ नहीं मिलाया, बल्कि केवल एक अस्पष्ट और उदास मुस्कान के साथ मुस्कुराईं, जैसे कोई उस व्यक्ति को देखकर मुस्कुराता है जिसके साथ वह बचपन में खेला करता था, लेकिन जिसके साथ अब सारे रिश्ते तोड़ दिए हैं क्योंकि उसने एक पथभ्रष्ट जीवन व्यतीत किया है, किसी अपराधी से शादी की है या (इससे भी बुरा) किसी सह-प्रतिवादी से। मेरे माता-पिता हमेशा से ही श्रीमती सज़ेरत का बहुत सम्मान करते थे और उनके मन में भी यह सम्मान था। लेकिन (और इस बात से मेरी माँ अनभिज्ञ थीं) कॉम्ब्रे में अपने जैसे लोगों में से अकेली श्रीमती सज़ेरत एक ड्रेफुसार्ड थीं। मेरे पिता, जो एम. मेलिन के मित्र थे, इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थे कि ड्रेफस दोषी है। उन्होंने अपने कुछ सहयोगियों की बात मानने से साफ इनकार कर दिया था, जिन्होंने उनसे नए सिरे से सुनवाई की मांग वाली याचिका पर हस्ताक्षर करने को कहा था। जब उन्हें पता चला कि मैंने उनसे अलग रुख अपनाया है, तो उन्होंने एक हफ्ते तक मुझसे बात नहीं की। उनके विचार सर्वविदित थे। उन्हें लगभग राष्ट्रवादी समझा जाने लगा था। मेरी दादी, जो परिवार में अकेली ऐसी थीं जिनके मन में ड्रेफस के निर्दोष होने की आशंका थी, जब भी कोई उनसे ड्रेफस की संभावित निर्दोषता के बारे में बात करता, तो वे अपना सिर हिला देतीं, जिसका अर्थ हम उस समय नहीं समझ पाते थे, लेकिन यह किसी ऐसे व्यक्ति का हावभाव था जो किसी गंभीर बात पर सोचते-सोचते अचानक रुक गया हो। मेरी माँ, मेरे पिता के प्रति अपने प्रेम और इस आशा के बीच फंसी हुई थीं कि शायद मैं बुद्धिमान बनूँ, उन्होंने एक तटस्थता बनाए रखी जिसे उन्होंने मौन रहकर व्यक्त किया। अंततः मेरे दादाजी, जो सेना से बेहद प्रेम करते थे (हालाँकि नेशनल गार्ड में उनकी ड्यूटी उनके बुढ़ापे में हमेशा एक चुभने वाली बात रही थी),

कॉम्ब्रे में कभी भी किसी रेजिमेंट को बगीचे की रेलिंग के पास से गुजरते हुए देखे बिना अपना सिर झुकाए नहीं रह पाते थे, जब कर्नल और झंडा उनके सामने से गुजरते थे। यह सब श्रीमती सज़ेरत के लिए काफी था, जो मेरे पिता और दादाजी के निस्वार्थ और सम्मानजनक जीवन के हर पहलू से वाकिफ थीं, कि वे उन्हें अन्याय का प्रतीक मानें। हम व्यक्तियों के अपराधों को क्षमा कर देते हैं, लेकिन सामूहिक अपराध में उनकी भागीदारी को नहीं। जैसे ही उन्हें पता चला कि मेरे पिता ड्रेफस विरोधी हैं, उन्होंने अपने और उनके बीच महाद्वीपों और सदियों का फासला खड़ा कर दिया। यही कारण है कि इतने लंबे समय और स्थान के अंतराल में, उनका प्रणाम मेरे पिता को दिखाई नहीं दिया, और उन्हें अपना हाथ आगे बढ़ाने या कुछ शब्द कहने का ख्याल भी नहीं आया, जो उनके बीच की दुनिया को पार नहीं कर पाते।

सेंट-लूप, जो किसी भी हालत में पेरिस आ रहे थे, ने मुझे श्रीमती डी विलेपारिसिस के घर ले जाने का वादा किया था, जहाँ मुझे उम्मीद थी (हालाँकि मैंने उनसे यह बात कही नहीं थी) कि हम श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिल सकते हैं। उन्होंने मुझे अपनी प्रेमिका के साथ एक रेस्तरां में दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया, जिनके साथ हमें बाद में एक रिहर्सल में जाना था। हमें सुबह निकलकर पेरिस के बाहरी इलाके में स्थित उनके घर पर उनसे मिलना था।

मैंने सेंट-लूप से पूछा था कि जिस रेस्तरां में हम दोपहर के भोजन के लिए गए थे (पैसा खर्च करने वाले युवा रईसों के जीवन में रेस्तरां का उतना ही महत्व होता है जितना अरबी कहानियों में माल के गट्ठों का), क्या संभव है कि वह वही रेस्तरां हो जहाँ ऐमे ने मुझे बताया था कि वह बालबेक सीज़न शुरू होने तक मुख्य वेटर के रूप में काम करेगा। मेरे लिए, जिसने इतने सारे अभियानों के सपने देखे और बहुत कम पूरे किए, उस व्यक्ति को फिर से देखना बहुत ही आकर्षक था जो न केवल बालबेक की मेरी यादों का हिस्सा था, बल्कि स्वयं बालबेक का भी हिस्सा था, जो हर साल वहाँ जाता था, जो जब खराब स्वास्थ्य या मेरी पढ़ाई ने मुझे पेरिस में रहने के लिए मजबूर किया, तब भी जुलाई की लंबी दोपहरों में, जब वह रात के खाने के लिए मेहमानों के आने का इंतजार करता था, उसी तरह विशाल भोजन कक्ष के कांच के पैनलों से सूरज को आकाश में धीरे-धीरे ढलते और समुद्र में डूबते हुए देखता था, जिसके पीछे, जब उजाला थम जाता था, दूर से धुंधले नीले रंग के जहाजों के स्थिर पंख, किसी शोकेस में विदेशी और रात्रिचर पतंगों की तरह दिखते थे। बालबेक के प्रबल आकर्षण से स्वयं प्रभावित होकर,

यह मुख्य वेटर मेरे लिए भी एक चुंबक बन गया। मुझे उम्मीद थी कि उससे बात करके मैं बालबेक से तुरंत जुड़ पाऊंगा, और पेरिस में ही यात्रा के आनंद का कुछ अनुभव कर पाऊंगा।

मैं सुबह जल्दी घर से निकल गया, और फ्रांस्वा बहुत शिकायत कर रही थी क्योंकि शादी करने वाले नौकर को पिछली शाम फिर से अपनी प्रेमिका से मिलने जाने से रोक दिया गया था। फ्रांस्वा ने उसे रोते हुए पाया था; वह चौकीदार को पीटने के लिए उतावला था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया क्योंकि वह अपनी पदवी का सम्मान करता था।

सेंट-लूप्स पहुँचने से पहले, जहाँ वह दरवाज़े पर मेरा इंतज़ार कर रहा था, मेरी मुलाक़ात लेग्रैंडिन से हो गई, जिससे हमारी कॉम्ब्रे के दिनों से ही मुलाक़ात नहीं हुई थी, और जो अब काफ़ी बूढ़ा हो चुका था, फिर भी उसमें जवानी की बेबाकी बरकरार थी। मुझे देखकर वह रुक गया:

"आह! तो ये आप हैं," उसने कहा, "एक फैशनेबल आदमी, और वो भी फ्रॉक कोट में! ये वो पहनावा है जिसमें मेरा स्वतंत्र मन असहज महसूस करेगा। मुझे लगता है कि आप दुनियादारी जानते हैं और बाहर घूमने जाते हैं! मेरी तरह किसी अधखंडी कब्र के सामने जाकर सपने देखने के लिए, मेरी लहराती टाई और जैकेट बिल्कुल सही हैं। आप जानते हैं कि मैं आपकी आत्मा के आकर्षक गुण की कितनी प्रशंसा करता हूँ; इसीलिए मैं आपको बता रहा हूँ कि मुझे कितना गहरा अफसोस है कि आप बाहर जाकर गैर-यहूदियों के बीच इसे नकार रहे हैं। ड्राइंग रूम के उस घिनौने वातावरण में एक पल भी रहने की क्षमता से—जिसमें मैं सांस भी नहीं ले सकता—आप अपने भविष्य पर पैगंबर की निंदा, उस शाप का ऐलान कर रहे हैं। मैं सब देख सकता हूँ, आप 'हल्के दिल वालों' के घरों में, बड़े लोगों के घरों में जाते हैं, यही आज हमारे मध्यम वर्ग का दुराचार है। आह! वे अभिजात वर्ग! आतंक का बहुत बड़ा दोष था कि उसने उन सभी के सिर नहीं काट दिए। वे सभी दुष्ट व्यभिचारी हैं, जब वे सिर्फ़ नीरस मूर्ख नहीं हैं। फिर भी, मेरे बेचारे लड़के, अगर इस तरह की चीज़ें तुम्हें मज़ेदार लगती हैं! जब तुम अपनी चाय पार्टी के लिए जा रहे होगे, तुम्हारा पुराना दोस्त तुमसे ज़्यादा भाग्यशाली होगा, क्योंकि वह किसी दूरदराज के उपनगर में अकेला बैंगनी आकाश में गुलाबी चाँद को उगते हुए देख रहा होगा। सच तो यह है कि मैं इस धरती का हिस्सा नहीं हूँ, जिस पर मैं खुद को एक निर्वासित

महसूस करता हूँ; मुझे यहाँ रोके रखने के लिए, मुझे किसी दूसरे लोक में भागने से रोकने के लिए गुरुत्वाकर्षण के नियम की पूरी शक्ति लगती है। मैं किसी दूसरे ग्रह का हूँ। अलविदा; विवोन के किसान की पुरानी बेबाकी को बुरा मत मानना, जो डेन्यूब का किसान भी बना रहा। तुम्हें यह साबित करने के लिए कि मैं तुम्हारा सच्चा शुभचिंतक हूँ, मैं तुम्हें अपना आखिरी उपन्यास भेज रहा हूँ। लेकिन तुम्हें यह पसंद नहीं आएगा; यह तुम्हारे लिए उतना भावुक नहीं है, उतना सदी के अंत का नहीं है; यह बहुत ज़्यादा स्पष्ट, बहुत ज़्यादा ईमानदार है; तुम्हें बर्गोट चाहिए, तुमने स्वीकार किया है, मेरे लिए एक बड़ा आकर्षण। सुख-सुविधाओं के शौकीनों की घिसी-पिटी सोच। मुझे लगता है कि आप लोग मुझे एक अनुभवी लेखक समझते हैं; मैं जो लिखता हूँ उसमें दिल लगाता हूँ, वह गलत है; ऐसा अब नहीं होता; इसके अलावा, आम लोगों का जीवन इतना खास नहीं है कि आप जैसे छोटे-मोटे घमंडी लोगों को उसमें दिलचस्पी हो। जाओ, चले जाओ, कभी-कभी ईसा मसीह के शब्दों को याद करने की कोशिश करो: 'ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे।' अलविदा, दोस्त।

लेग्रैंडिन से विदा लेते समय मेरे मन में उनसे कोई विशेष द्वेष नहीं था। कुछ यादें साझा मित्रों की तरह होती हैं, वे सुलह करा सकती हैं; बटरकप से सजे खेतों के बीच, जिन पर सामंती वैभव के खंडहर दबे थे, वह छोटा सा लकड़ी का पुल आज भी हमें, लेग्रैंडिन और मुझे, उसी तरह जोड़ता था जैसे वह विवोन नदी के दोनों किनारों को जोड़ता था।

पेरिस से निकलने के बाद, जहाँ वसंत ऋतु शुरू तो हो चुकी थी, लेकिन सड़कों पर लगे पेड़ों पर अभी-अभी पहली पत्तियाँ आई थीं, सेंट-लूप और मैं उस उपनगरीय गाँव में पहुँचे जहाँ उनकी प्रेमिका रहती थी। वहाँ पहुँचकर हमें आश्चर्य हुआ जब हर कुटीर का बगीचा खिले हुए फलों के पेड़ों की विशाल वेदी से सजा हुआ था। यह उन अनोखे, काव्यात्मक, क्षणभंगुर, स्थानीय त्योहारों जैसा था, जिनमें लोग कुछ निश्चित अवसरों पर शामिल होने के लिए दूर-दूर से यात्रा करते हैं, बस फर्क इतना था कि यह त्योहार प्रकृति द्वारा आयोजित किया गया था। चेरी के पेड़ के फूल उसकी शाखाओं से इस कदर चिपके हुए थे, मानो एक सफेद आवरण हो, कि दूर से, उन अन्य पेड़ों के बीच, जिन पर अभी तक मुश्किल से एक भी फूल या पत्ती दिखाई दी थी, इस धूप भरे लेकिन फिर भी ठंडे दिन में, कोई उसे ही पहचान सकता था, क्योंकि बर्फ, जो हर जगह पिघल रही थी, अभी भी झाड़ियों से चिपकी हुई थी। लेकिन ऊंचे नाशपाती के

पेड़ों ने हर घर, हर साधारण आंगन को एक ऐसी सफेदी में लपेट लिया था जो अधिक विशाल, अधिक एकसमान, अधिक चकाचौंध भरी थी, मानो गांव के सभी आवास, सभी बंद स्थान एक पवित्र तिथि पर अपना पहला मिलन करने के लिए जा रहे हों।

यह एक देहाती गाँव हुआ करता था, और इसने अपने पुराने महापौर के कार्यालय को धूप से झुलसा हुआ और भूरा बनाए रखा था, जिसके सामने, मेपोल और झंडों के स्थान पर, तीन ऊँचे नाशपाती के पेड़, मानो किसी स्थानीय उत्सव के लिए, सफेद साटन के झंडों से सजे हुए थे। पेरिस के आसपास के इन गाँवों के द्वारों पर आज भी सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के पार्क हैं, जो बड़े लोगों के दरबारियों और चहेतों की 'सनक' हुआ करते थे। एक फल उत्पादक ने इनमें से एक पार्क का उपयोग, जो सड़क के नीचे धँसा हुआ था, अपने पेड़ों के लिए किया था, या शायद उसने पुराने समय के एक विशाल बाग की योजना को संरक्षित रखा था। पाँच-पाँच के आकार में लगाए गए ये नाशपाती के पेड़, जो मैंने देखे थे उनसे कम घने और दूर-दूर तक फैले हुए नहीं थे, बर्फीले फूलों के बड़े चतुर्भुज बनाते थे - नीची दीवारों से अलग किए गए - जिनके प्रत्येक तरफ प्रकाश अलग-अलग तरह से पड़ता था, जिससे ये सभी हवादार, छतविहीन कक्ष किसी सूर्य महल के प्रतीत होते थे, जैसा कि क्रेते या कहीं और खोजा जा सकता है; और इससे जलाशय के विभिन्न तालाबों या समुद्र के उन हिस्सों की भी याद आती है जिन्हें मनुष्य ने किसी मत्स्य पालन या सीप के बिस्तर लगाने के लिए उपविभाजित किया है, जब कोई शाखाओं के अभिविन्यास के अनुसार प्रकाश को उनकी प्रशिक्षित शाखाओं पर ऐसे पड़ते और खेलते हुए देखता है जैसे वसंत ऋतु में गर्म पानी पर, और शाखाओं के खुले, नीले रंग के पैनल वाले जाली के बीच चमकते हुए, एक मलाईदार, धूप से जगमगाते फूल की झागदार सफेदी को यहाँ-वहाँ खिलने के लिए प्रेरित करता है।

इस सैर के दौरान रॉबर्ट ने अपने दोस्त के बारे में मुझसे जितनी कोमलता से बात की, उतनी कोमलता से उसने पहले कभी नहीं की थी। केवल वही उसके दिल में बस गई थी; सेना में उसका भविष्य, समाज में उसकी प्रतिष्ठा, उसका परिवार - बेशक, वह इन सब बातों से पूरी तरह बेपरवाह नहीं था, लेकिन ये सब उसकी प्रेमिका से जुड़ी छोटी-छोटी बातों के सामने कुछ भी नहीं थे। उसकी नज़रों में केवल वही एक चीज़ महत्वपूर्ण थी, गुएरमांटेस और धरती के सभी राजाओं से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण। मुझे नहीं पता कि उसने यह सिद्धांत बना लिया था

कि वह किसी और से श्रेष्ठ है, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि वह केवल उसी से जुड़ी बातों पर ध्यान देता था, उसी की परवाह करता था। उसी के लिए और उसी के कारण वह दुख सह सकता था, खुश हो सकता था, शायद हत्या भी कर सकता था। वास्तव में, उसकी प्रेमिका की इच्छाओं, उसके इरादों, उसके आस-पास की घटनाओं के अलावा और कुछ भी उसे आकर्षित नहीं करता था, जो उसके चेहरे के भावों में क्षणिक बदलावों, उसके चेहरे की संकीर्ण बनावट और उसकी खास भौंहों के पीछे ही दिखाई देती थीं। अन्य सभी मामलों में इतने नेक दिल होने के बावजूद, वह एक शानदार शादी की उम्मीद में सिर्फ इसलिए तरस रहा था ताकि वह उसे हमेशा अपने पास रख सके, उसका भरण-पोषण कर सके। अगर कोई खुद से पूछता कि वह उसे कितना महत्व देता था, तो मुझे संदेह है कि कोई भी उस मूल्य की कल्पना कर पाता जो उसके लिए पर्याप्त होता। अगर उसने उससे शादी नहीं की, तो इसका कारण यह था कि उसकी व्यावहारिक प्रवृत्ति ने उसे आगाह किया कि जैसे ही उसे उससे कोई उम्मीद नहीं रहेगी, वह उसे छोड़ देगी, या कम से कम अपनी मर्जी से जिएगी, और उसे हर दिन उसे अनिश्चितता में रखकर उस पर अपना अधिकार बनाए रखना होगा। क्योंकि उसने इस संभावना को स्वीकार किया कि वह उससे प्यार नहीं करती। निस्संदेह, प्रेम नामक सामान्य भावना ने उसे—जैसा कि वह सभी पुरुषों को मजबूर करता है—कभी-कभी यह मानने पर मजबूर कर दिया होगा कि वह उससे प्यार करती है। लेकिन अपने मन ही मन में वह महसूस करता था कि उसके लिए उसका यह प्यार इस संभावना को खत्म नहीं करता कि वह केवल उसके पैसे के कारण उसके साथ रहेगी, और जिस दिन उसे उससे कुछ भी उम्मीद नहीं रहेगी, वह उसे छोड़कर जाने की जल्दी करेगी (अपने दोस्तों और उनके साहित्यिक सिद्धांतों के झांसे में आकर, और वास्तव में हमेशा उससे प्यार करती हुई - उसने सोचा)। "अगर वो आज मेरे साथ अच्छा बर्ताव करे," उसने मुझसे कहा, "तो मैं उसे कुछ ऐसा दूँगा जो उसे पसंद आएगा। ये एक हार है जो उसने बूशेरॉन की दुकान पर देखा था। अभी तो ये मेरे लिए बहुत महंगा है—तीस हज़ार फ्रैंक। लेकिन बेचारी, उसे ज़िंदगी में बहुत कम आनंद मिलता है। मुझे पता है, उसे ये बहुत पसंद आएगा। उसने मुझे इसके बारे में बताया था और कहा था कि वो किसी ऐसे व्यक्ति को जानती है जो शायद उसे ये दे दे। मुझे यकीन नहीं है कि ये सच है, लेकिन मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था, इसलिए मैंने बूशेरॉन से, जो हमारे

पारिवारिक जौहरी हैं, इसे मेरे लिए रखने का इंतज़ाम कर लिया है। मुझे ये सोचकर खुशी हो रही है कि तुम उससे मिलने वाले हो; तुम्हें पता है, वो देखने में कुछ खास खूबसूरत नहीं है," (मैं समझ गया था कि उसका विचार बिल्कुल उल्टा था और उसने ये सिर्फ इसलिए कहा था ताकि जब मैं उससे मिलूँ तो उसकी और भी ज़्यादा तारीफ़ करूँ) "उसके पास जो है वो है उसकी अद्भुत समझ; शायद वो तुम्हारे सामने ज़्यादा बोलने से डरेगी।" लेकिन हे भगवान! वो तुम्हारे बारे में मुझसे जो बातें कहेगी, तुम्हें पता है वो ऐसी बातें कहती है जिनके बारे में घंटों सोचा जा सकता है; उसमें सचमुच कुछ ऐसा है जो बिल्कुल पाइथियन जैसा है।"

उसके घर जाते समय हम छोटे-छोटे बगीचों की एक कतार के पास से गुजरे, और मुझे रुकना पड़ा, क्योंकि वे सभी नाशपाती और चेरी के फूलों से खिले हुए थे; निस्संदेह, कल तक वे उतने ही खाली और निर्जीव थे जितने कि कोई ऐसा घर जिसमें कोई किराएदार नहीं रहता, लेकिन अचानक रात के दौरान आए इन नए लोगों ने उन्हें आबाद और सुशोभित कर दिया था, जिनके सुंदर सफेद वस्त्र हमें बगीचे के रास्तों पर लगी रेलिंग के माध्यम से दिखाई दे रहे थे।

"सुनो; मुझे लगता है कि तुम रुककर उन चीजों को देखना चाहोगी और उनके बारे में काव्यात्मक बातें करना चाहोगी," रॉबर्ट ने कहा, "तो बस यहीं मेरा इंतजार करो; मेरी दोस्त का घर काफी पास है, मैं जाकर उसे बुला लाऊंगा।"

प्रतीक्षा करते हुए मैं सड़क पर इधर-उधर टहलती रही, इन छोटे-छोटे बगीचों के पास से गुज़रती रही। अगर मैं सिर उठाती तो कभी-कभार खिड़कियाँ खिड़कियों में बैठी नज़र आतीं, लेकिन बाहर, खुली हवा में, और एक चबूतरे की ऊँचाई पर, इधर-उधर, हल्के और लचीले, अपने ताज़े गुलाबी गाउन में, पत्तियों के बीच लटके हुए, नन्हे-मुन्ने लिली के गुच्छे हवा के झोंकों में झूल रहे थे, राहगीर की परवाह किए बिना, जो अपनी नज़रें उनके हरे-भरे बगीचों की ओर मोड़ रहा था। मैंने उनमें बैंगनी वर्दी में तैनात सैनिकों की टुकड़ियाँ देखीं, जो वसंत की गर्म दोपहरों में, छोटी सफेद बाड़ के पार, एम. स्वान के पार्क के प्रवेश द्वार पर तैनात थीं, मानो किसी मनमोहक देहाती टेपेस्ट्री की तरह लग रही हों। मैंने एक रास्ता पकड़ा जो मुझे एक घास के मैदान में ले गया। कॉम्ब्रे की तरह ही वहां ठंडी हवा तेज़ी से बह रही थी, लेकिन उपजाऊ, नम, ग्रामीण मिट्टी के बीच से, जो शायद विवोन नदी के किनारे पर स्थित थी, अपने सभी साथियों की तरह ही, मिलन स्थल पर समय पर पहुंचा एक विशाल सफेद नाशपाती का

पेड़ उग आया था, जो सूर्य के सामने मुस्कुराते हुए लहरा रहा था, मानो प्रकाश का एक पर्दा साकार होकर दिखाई दे रहा हो, उसके फूल हवा से हिल रहे थे लेकिन सूर्य की किरणों से चांदी की तरह चमकीले और चमकदार हो गए थे।

अचानक सेंट-लूप अपनी प्रेमिका के साथ प्रकट हुए, और फिर, उस स्त्री में, जो उनके लिए प्रेम का भंडार, जीवन का हर संभव आनंद थी, जिसका व्यक्तित्व, एक पवित्र शरीर में रहस्यमय ढंग से समाहित था, वह विषय था जो मेरे मित्र की कल्पना को निरंतर घेरे हुए था, जिसे वह कभी सचमुच नहीं जान पाएगा, जिसके बारे में वह निरंतर स्वयं से पूछता रहता था कि उसकी आँखों और शरीर के पर्दे के पीछे उसका गुप्त स्वरूप क्या हो सकता है, उस स्त्री में मैंने तुरंत 'प्रभु से आई राहेल' को पहचान लिया, वही जो कुछ ही साल पहले—उस दुनिया में महिलाओं की स्थिति इतनी तेजी से बदलती है, जब वे बदलती हैं—दलाल से कहा करती थी: "तो कल शाम, अगर आपको किसी के लिए मेरी ज़रूरत हो, तो आप मुझे भेज देंगी, है ना?"

और जब वे उसे बुलाने के लिए आए और उसने खुद को उस कमरे में उस 'किसी' के साथ अकेला पाया, तो वह अच्छी तरह जानती थी कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है, इसलिए दरवाजा बंद करने के बाद, एक समझदार महिला की सावधानी या एक रस्म के तौर पर, वह अपने सारे कपड़े उतारना शुरू कर देती थी, जैसा कि कोई डॉक्टर के सामने करता है जो उसकी छाती की जांच करने वाला होता है, और तब तक नहीं रुकती थी जब तक कि वह 'कोई', नग्नता की परवाह न करते हुए, उसे यह न कह दे कि वह अपना काम जारी रख सकती है, जैसा कि विशेषज्ञ कभी-कभी करते हैं, जिनके कान बेहद संवेदनशील होते हैं और अपने मरीज को ठंड लगने के डर से, वे उसकी कमीज के ऊपर से ही उसकी सांस और दिल की धड़कन सुनकर संतुष्ट हो जाते हैं। इस स्त्री के बारे में, जिसका पूरा जीवन, उसके सारे विचार, उसका सारा अतीत, वे सभी पुरुष जो कभी न कभी उसके साथ रहे थे, मेरे लिए इतने महत्वहीन थे कि अगर वह मुझे उनके बारे में बताना शुरू कर देती, तो मैं केवल शिष्टाचारवश ही सुनता और उसकी बातें मुश्किल से ही सुन पाता। मुझे लगा कि चिंता, पीड़ा और सेंट-लूप का प्रेम इस प्रकार केंद्रित हो गया था कि मेरे लिए एक साधारण से खिलौने जैसी स्त्री को अंतहीन पीड़ा का कारण, अस्तित्व का उद्देश्य और प्रतिफल बना दिया था। इन दोनों तत्वों को

अलग-अलग देखते हुए (क्योंकि मैं 'राहेल को प्रभु से विमुख होने पर' एक बदनाम घर में जानता था), मुझे एहसास हुआ कि कई स्त्रियाँ जिनके लिए पुरुष जीते हैं, कष्ट सहते हैं, अपनी जान दे देते हैं, वे स्वयं में या दूसरों के लिए वही हो सकती हैं जो राहेल मेरे लिए थी। यह विचार कि कोई उसके जीवन के बारे में जिज्ञासा से व्याकुल हो सकता है, मुझे स्तब्ध कर देता था। मैं रॉबर्ट को उसकी अनगिनत अपवित्रताओं के बारे में बता सकता था, जो मुझे दुनिया की सबसे नीरस बातें लगती थीं। और उन्हें कितना दुख होता! और उसने उन्हें सीखने के लिए क्या-क्या नहीं किया, सब व्यर्थ!

तब मुझे यह भी अहसास हुआ कि मानवीय कल्पना किसी छोटे से चेहरे, जैसे कि इस लड़की का चेहरा, के पीछे कितना कुछ गढ़ सकती है, यदि कल्पना ही उसे सबसे पहले जान ले; और इसके विपरीत, अनगिनत सपनों की प्रेरणा रही कोई चीज़, अगर ज़रा सी भी वास्तविक जान-पहचान से ही उलट जाए, तो वह कितने तुच्छ, निरर्थक और मूल्यहीन तत्वों में तब्दील हो सकती है। मैंने देखा कि जो चीज़ मुझे बदनामी के अड्डे में बीस फ़्रैंक में पेश की गई थी, जहाँ वह मेरे लिए महज़ बीस फ़्रैंक कमाने की इच्छुक एक औरत थी, वह दस लाख से भी ज़्यादा, अपने परिवार से भी ज़्यादा, जीवन के सभी सबसे प्रतिष्ठित पदों से भी ज़्यादा मूल्यवान हो सकती है, यदि कोई उसे एक विचित्र प्राणी के रूप में कल्पना करे, जिसे जानना दिलचस्प हो, जिसे पाना और थामना मुश्किल हो। इसमें कोई शक नहीं कि वह वही पतला और दुबला चेहरा था जिसे हमने, रॉबर्ट और मैंने, देखा था। लेकिन हम उस तक दो विपरीत रास्तों से पहुँचे थे, जिनके बीच कोई संपर्क नहीं था, और हम दोनों उसे कभी एक ही तरफ से नहीं देख सकते थे। उस चेहरे को, उसकी निगाहों, उसकी मुस्कानों, उसके होठों की हरकतों से, मैंने बाहर से ही पहचान लिया था कि वह बस एक ऐसी औरत का चेहरा है जो बीस फ़्रैंक के लिए मेरी हर बात मान लेगी। इसलिए उसकी निगाहें, उसकी मुस्कानें, उसके होठों की हरकतें मुझे एक ऐसे वर्ग की सामान्य हरकतों का संकेत मात्र लगीं जिनमें कोई खास गुण नहीं था। और उनके नीचे मुझे किसी व्यक्ति को खोजने की जिज्ञासा नहीं थी। लेकिन जो मुझे शुरुआत में एक तरह से पेश किया गया था, वह सहमति देने वाला चेहरा, रॉबर्ट के लिए एक अंतिम लक्ष्य था जिसकी ओर उसने अनगिनत आशाओं, शंकाओं, संदेहों और सपनों के बीच अपना रास्ता बनाया था। उसने दस लाख फ़्रैंक से अधिक इसलिए दिए ताकि वह उसे पा सके, ताकि दूसरों

को वह न मिले जो मुझे, और सभी को, बीस फ्रैंक के बदले दिया गया था। शायद उसे भी कम कीमत पर इसका आनंद न मिल पाने का कारण एक क्षणिक संयोग था, वह पल जब वह स्त्री, जो मानो खुद को समर्पित करने को तैयार लग रही थी, अचानक चली गई, शायद कहीं और मिलने के लिए, या किसी ऐसे कारण से जिससे उस दिन उससे मिलना मुश्किल हो गया हो। अगर वह पुरुष भावुक है, तो भले ही उसने इसे न देखा हो, लेकिन अगर उसने देख लिया है तो स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। अपनी निराशा को सहन न कर पाने और उस स्त्री को भुला न पाने के कारण, वह फिर से उसका पीछा करने लगता है, वह उससे दूर भागती रहती है, और अंत में एक मुस्कान, जिसकी उसे अब उम्मीद भी नहीं थी, उसे उस आखिरी, सबसे अंतरंग स्पर्श की कीमत से हज़ार गुना अधिक दाम में खरीद लिया जाता है। कभी-कभी ऐसे मामलों में भी, जब कोई व्यक्ति अपने सरल निर्णय और पीड़ा के सामने कायरता के मिश्रण से प्रेरित होकर किसी लड़की को पहुंच से बाहर की मूर्ति बनाकर सबसे बड़ी मूर्खता कर बैठता है, तो ये अंतिम प्रेम निवेदन, या यहाँ तक कि पहला चुंबन भी, जो उसे कभी प्राप्त नहीं हो सकता, निवेदन करने का साहस भी नहीं करता, क्योंकि उसे निवेदन-प्रदत्त प्रेम की संभावना नष्ट होने का डर रहता है। और तब उस स्त्री के आलिंगन का अनुभव किए बिना संसार को छोड़ना एक कड़वी पीड़ा होती है, जिसे आपने अपने जीवन में सबसे अधिक प्रेम किया हो। हालाँकि, राहेल के प्रेम निवेदन की बात करें, तो सेंट-लूप ने महज़ संयोग से ही उन सभी को प्राप्त कर लिया था। निश्चित रूप से, यदि उसे अब पता चल जाता कि उन्हें एक लुई के बदले पूरी दुनिया को पेश किया गया था, तो वह बेशक बहुत दुखी होता, लेकिन फिर भी उन्हें अपने पास रखने के अधिकार के लिए दस लाख फ्रैंक दे देता, क्योंकि जो कुछ भी वह जान लेता, उससे वह उस रास्ते से नहीं हट सकता था जिस पर वह चल रहा था—क्योंकि यह मानवीय नियंत्रण से परे है और केवल किसी महान प्राकृतिक नियम की क्रिया से ही संभव है—जिससे वह चेहरा उसे केवल अपने बुने हुए सपनों के जाल के माध्यम से ही दिखाई दे सकता था। उस पतले चेहरे की स्थिरता, जैसे दो वायुमंडलों के भारी दबाव में कागज की एक शीट की, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो दो अनंतों द्वारा कायम रखी जा रही हो जो उससे टकराए बिना ही उस पर टिकी हुई थीं, क्योंकि वह उन्हें अलग रखती थी। और वास्तव में, जब रॉबर्ट और मैं दोनों उसे देख रहे थे, तो हम दोनों उसे रहस्य के एक ही पहलू से नहीं देख रहे थे।

यह 'राहेल जब प्रभु से दूर हो गई' वाली बात नहीं थी—जो मुझे मामूली सी लग रही थी—यह मानवीय कल्पना की शक्ति थी, वह भ्रम जिस पर प्रेम की पीड़ाएँ आधारित थीं; ये पीड़ाएँ मुझे बहुत विशाल लगीं। रॉबर्ट ने देखा कि मैं भावुक हो गई थी। मैंने अपनी नज़रें सामने वाले बगीचे के नाशपाती और चेरी के पेड़ों की ओर घुमा लीं, ताकि वह सोचे कि उनकी सुंदरता ने मुझे छू लिया है। और सच में, इसने मुझे कुछ हद तक उसी तरह छुआ; इसने मुझे उन चीजों के करीब ला दिया जिन्हें हम न केवल अपनी आँखों से देखते हैं बल्कि अपने दिल में भी महसूस करते हैं। बगीचे में मैंने जिन पेड़ों को देखा था, उन्हें अपने मन में अजीब देवताओं के समान समझते हुए, क्या मेरी गलती मैरी मैग्डलीन जैसी नहीं थी, जब उसने दूसरे बगीचे में एक मानव आकृति देखी और 'उसे माली समझा'? स्वर्ण युग की हमारी स्मृतियों के संजोए, इस वादे के रक्षक कि वास्तविकता वह नहीं है जो हम सोचते हैं, कि कविता की भव्यता, मासूमियत की अद्भुत चमक उसमें जगमगा सकती है और वह प्रतिफल हो सकती है जिसे हम अर्जित करने का प्रयास करते हैं, ये विशाल श्वेत प्राणी, विश्राम, मछली पकड़ने या पढ़ने के लिए अनुकूल छाया के ऊपर एक अद्भुत ढंग से झुके हुए, क्या वे वास्तव में देवदूत नहीं थे? मैंने सेंट-लूप की मालकिन से कुछ शब्द कहे। हम गाँव से होकर गुजरे। उसके घर जर्जर थे। लेकिन सबसे दयनीय घरों में से प्रत्येक के पास, जो ऐसे दिखते थे मानो गंधक की वर्षा से झुलस गए हों और दाग लग गए हों, एक रहस्यमय यात्री, शापित शहर में एक दिन के लिए रुका हो, एक तेजस्वी देवदूत सीधा खड़ा था, उस पर खिलती मासूमियत के पंखों की चकाचौंध भरी सुरक्षा फैलाए हुए: वह एक नाशपाती का पेड़ था। सेंट-लूप ने मुझे समझाने के लिए थोड़ा आगे खींच लिया।

"काश हम दोनों अकेले होते, सच कहूँ तो मैं तुम्हारे साथ ही दोपहर का भोजन करना चाहती और अपनी चाची के घर जाने का समय होने तक तुम्हारे साथ रहना चाहती। लेकिन मेरी ये बेचारी लड़की, उसे तो बहुत खुशी है, और वो मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती है, तुम्हें पता है, मेरा उसे मना करने का मन ही नहीं हुआ। वैसे तुम्हें वो पसंद आएगी, वो साहित्य में रुचि रखती है, उसका स्वभाव बहुत ही संवेदनशील है, और वैसे भी उसके साथ रेस्टोरेंट में समय बिताना बहुत सुखद होता है, वो बहुत ही प्यारी, सरल और हर बात से खुश रहती है।"

फिर भी मुझे लगता है कि उसी सुबह, और शायद पहली और आखिरी बार, रॉबर्ट ने कुछ पल के लिए उस महिला से खुद को अलग कर लिया, जिसके प्रति स्नेह की क्रमिक परतों से उसने धीरे-धीरे अपना प्रेम विकसित किया था, और अचानक कुछ दूरी पर एक और राहेल को देखा, जो बाहरी रूप से उसकी हमशक्ल थी लेकिन पूरी तरह से अलग थी, जो प्रेम की एक छोटी सी रोशनी से ज्यादा कुछ नहीं थी। हम खिले हुए बगीचे से निकलकर पेरिस जाने वाली ट्रेन की ओर बढ़ रहे थे कि स्टेशन पर अकेली चल रही राहेल को उसी की तरह दिखने वाली दो साधारण-सी दिखने वाली लड़कियों ने पहचान लिया और उससे बात करने लगीं। सबसे पहले तो उन्हें लगा कि राहेल अकेली है, इसलिए उन्होंने पुकारा: "हेलो राहेल, हमारे साथ चलो; लुसिएन और जर्मेन ट्रेन में हैं, और एक और के लिए जगह है। चलो। हम सब रिंक जा रहे हैं।" वे राहेल को उनके साथ चल रहे दो काउंटर-जम्परों और उनके प्रेमियों से मिलवाने ही वाली थीं कि राहेल को थोड़ा असहज देखकर उन्होंने ऊपर देखा और हमें देख लिया। उन्होंने माफी मांगते हुए राहेल को अलविदा कहा, जिस पर राहेल ने कुछ शर्मिंदा, लेकिन फिर भी दोस्ताना लहजे में जवाब दिया। वे नकली ऊदबिलाव की खाल के कॉलर पहने दो बेचारी छोटी-सी दिखने वाली लड़कियां थीं, जो लगभग वैसी ही दिखती होंगी जैसी राहेल तब दिखती होगी जब सेंट-लूप उससे पहली बार मिला था। वह उन्हें जानता नहीं था, यहाँ तक कि उनके नाम भी नहीं जानता था, और यह देखकर कि वे उसकी प्रेमिका के साथ बेहद घनिष्ठ प्रतीत हो रही थीं, वह सोचने लगा कि क्या उसने भी कभी उस जीवन में कोई स्थान पाया होगा, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जो उसके साथ बिताए जीवन से बिल्कुल अलग था, एक ऐसा जीवन जिसमें एक महिला एक लुई में मिल जाती थी, जबकि वह राहेल को सालाना एक लाख फ्रैंक से अधिक दे रहा था। उसने उस जीवन की एक झलक मात्र देखी, लेकिन उसमें उसे एक ऐसी राहेल भी दिखाई दी जो उसकी जानी-पहचानी राहेल से भिन्न थी, ट्रेन में बैठी उन दो छोटी 'वेश्याओं' जैसी राहेल, बीस फ्रैंक वाली राहेल। संक्षेप में, राहेल ने क्षण भर के लिए उसकी आँखों में स्वयं को दोहरा लिया था, उसने अपनी राहेल से कुछ दूरी पर उस छोटी 'वेश्या' राहेल को देखा था, असली राहेल को, यह मानते हुए कि वह 'वेश्या' राहेल दूसरी राहेल से अधिक वास्तविक थी। तब शायद रॉबर्ट के मन में यह विचार आया होगा कि जिस नरक में वह जी रहा था, उससे एक अमीर शादी की उम्मीद, अपना नाम बेचकर हर साल

रैचल को एक लाख फ्रैंक देने की संभावना से, वह आसानी से बच सकता था और अपनी प्रेमिका का आनंद उठा सकता था, जैसे वे दोनों काउंटर-जम्पर अपनी प्रेमिकाओं का आनंद उठाते थे, लगभग मुफ्त में। लेकिन यह कैसे संभव था? उसने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे रॉबर्ट का स्नेह कम हो। कम उदारता से पुरस्कृत होने पर वह उसके प्रति कम दयालु होती, वे बातें कहना और लिखना बंद कर देती जो उसे इतना प्रभावित करती थीं, वे बातें जिन्हें वह अपने दोस्तों के सामने बड़े ही दिखावे के साथ उद्धृत करता था, यह बताते हुए कि रैचल का ऐसा कहना कितना अच्छा था, लेकिन यह उल्लेख करना भूल जाता था कि वह उसे बेहद शान-शौकत से पाल रहा था, या यहाँ तक कि उसने उसे कभी कुछ दिया भी था, कि तस्वीरों पर लिखे ये संदेश या टेलीग्राम के अंत में भेजे गए शुभकामना संदेश मात्र एक लाख फ्रैंक की सबसे कम, सबसे कीमती मुद्रा में परिवर्तित होने के बराबर थे। यदि उसने यह स्वीकार न करने का ध्यान रखा कि राहेल की ओर से की गई इन दुर्लभ दयालुताओं के लिए उसने स्वयं भारी कीमत चुकाई थी, तो यह कहना गलत होगा—और फिर भी, एक भद्दी तर्कशक्ति से, हम हर उस प्रेमी के बारे में, जो अपने सुख के लिए नकद भुगतान करता है, और बहुत से पतियों के बारे में, यह बेतुके ढंग से कहते हैं—कि यह आत्मसम्मान या घमंड से प्रेरित था। सेंट-लूप में इतनी समझ थी कि वह यह जान सके कि घमंड को आकर्षित करने वाले सभी सुख वह अपने ऐतिहासिक नाम और सुंदर चेहरे के बल पर समाज में आसानी से और बिना किसी लागत के प्राप्त कर सकता था, और राहेल के साथ उसके संबंध ने, यदि कुछ किया भी, तो उसे समाज से अलग-थलग कर दिया, उसे कम लोकप्रिय बना दिया। नहीं; यह आत्मसम्मान, जो अपने प्रिय व्यक्ति के स्नेह के बाहरी संकेतों को निःशुल्क प्राप्त करने का दिखावा करता है, वास्तव में प्रेम का ही परिणाम है, स्वयं की और दूसरों की नज़रों में उस व्यक्ति द्वारा बदले में प्रेम किए जाने की आवश्यकता है जिससे आप इतना प्रेम करते हैं। राहेल हमारे पास वापस आ गई, और उन दोनों 'लड़कियों' को उनके डिब्बे में जाने के लिए छोड़ दिया; लेकिन, उनके नकली ऊदबिलाव की खाल और उनके युवकों के आत्म-सचेत रूप से दिखने के साथ-साथ, लुसिएन और जर्मेन के नामों ने नई राहेल को कुछ पल के लिए जीवित रखा। एक पल के लिए रॉबर्ट ने प्लेस पिगाले में अनजान साथियों, घिनौने प्रेम प्रसंगों, साधारण मनोरंजन, सैर-सपाटे या आनंद-पार्टियों में बिताई जाने वाली दोपहरों के साथ एक जीवन की कल्पना की, उस पेरिस में

जहाँ बुलेवार्ड डी क्लिची से आगे की सड़कों की धूप भरी चमक उस सूर्य की चमक जैसी नहीं लग रही थी जिसमें वह अपनी प्रेमिका के साथ टहलता था, बल्कि कुछ अलग ही होनी चाहिए, क्योंकि प्रेम और प्रेम से जुड़ा दुख, नशे की तरह, हमारे लिए निर्जीव वस्तुओं को भी बदलने की शक्ति रखते हैं। पेरिस के केंद्र में स्थित वह पेरिस लगभग अनजान सा था, जिस पर उसे शक था। उसका यह संबंध उसे एक विचित्र जीवन शैली की खोज जैसा लग रहा था, क्योंकि भले ही राहेल उसके साथ रहते हुए कुछ हद तक उसी जैसी थी, फिर भी यह उसके वास्तविक जीवन का ही एक हिस्सा था, वास्तव में सबसे अनमोल हिस्सा, क्योंकि वह उस पर बेहिसाब खर्च करता था। यही वह हिस्सा था जिसके कारण उसके दोस्त उससे ईर्ष्या करते थे और जो उसे एक दिन गाँव में जाकर बसने या खूब पैसा कमाने के बाद प्रमुख थिएटरों में अपनी पहचान बनाने में सक्षम बनाता। रॉबर्ट उससे पूछना चाहता था कि लुसिएन और जर्मेन कौन थीं, अगर वह उनके साथ उनके कमरे में होती तो वे उससे क्या कहतीं, और वे सब मिलकर एक दिन कैसे बितातीं, जो शायद रिंक के मजे के बाद ओलंपिया टैवर्न में एक शानदार मनोरंजन के रूप में समाप्त होता, अगर रॉबर्ट और मैं वहाँ न होते। एक पल के लिए ओलंपिया के आसपास का इलाका, जो अब तक उसे केवल नीरस और उबाऊ लगता था, उसके मन में जिज्ञासा और पीड़ा दोनों जगा गया। बसंत के इस दिन की धूप, जो रू काउमार्टिन पर पड़ रही थी, जहाँ शायद अगर राहेल रॉबर्ट को न जानती तो शाम को जाती और कुछ कमा लेती, उसके मन में एक अस्पष्ट लालसा भर गई। लेकिन राहेल से सवाल पूछने का क्या फायदा, जब वह पहले से ही जानता था कि उसका जवाब या तो मौन होगा, या झूठ, या कुछ ऐसा जो उसके लिए बेहद कष्टदायक होगा और जिससे कुछ भी स्पष्ट नहीं होगा। कुली दरवाजे बंद कर रहे थे; हम प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ गए; राहेल के शानदार मोतियों ने रॉबर्ट को याद दिलाया कि वह एक अनमोल स्त्री थी। उसने उसे प्यार से छुआ, उसे अपने दिल में उसकी जगह वापस दे दी जहाँ वह हमेशा की तरह उसे अपने भीतर समाहित कर सकता था—सिवाय उस संक्षिप्त क्षण के जब उसने उसे प्लेस पिगाले में एक प्रभाववादी चित्रकार के चित्र में देखा था—और ट्रेन चलने लगी।

वैसे, यह बात बिल्कुल सच थी कि वह 'साहित्यिक' थीं। वह मुझसे किताबों, नई कला और टॉलस्टॉयवाद के बारे में बात करना कभी बंद नहीं करती थीं, सिवाय इसके कि वह सेंट-लूप को इतनी अधिक शराब पीने के लिए फटकार लगाती थीं।

"आह! अगर तुम मेरे साथ एक साल रह सको, तो हम एक अच्छा बदलाव देखेंगे। मुझे तुम्हें सिर्फ पानी पिलाना चाहिए और तुम बहुत बेहतर हो जाओगे।"

"बिल्कुल सही। चलिए अब शुरू करते हैं।"

"लेकिन आप तो अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे सारा दिन काम करना पड़ता है!" क्योंकि वह अपनी कला को बहुत गंभीरता से लेती थी। "वैसे भी, आपके लोग क्या कहेंगे?"

और उसने मेरे सामने उसके परिवार को कोसना शुरू कर दिया, और उसकी बातें मुझे काफी हद तक तर्कसंगत लगीं। सेंट-लूप ने शैम्पेन के मामले में उसके आदेशों का उल्लंघन करते हुए भी उसका पूरा समर्थन किया। मैं, जो उस पर शराब के असर से बहुत डरती थी और उसकी प्रेमिका के अच्छे प्रभाव को महसूस करती थी, उसे अपने परिवार को फांसी पर लटका देने की सलाह देने के लिए पूरी तरह तैयार थी। उस युवती की आँखों में आँसू आ गए; मैंने ड्रेफस का ज़िक्र करके बहुत बड़ी गलती कर दी थी।

"बेचारा शहीद!" वह लगभग सिसकते हुए बोली; "उस भयानक जगह पर उसकी मौत होगी।"

"खुद को परेशान मत करो, ज़ेज़ेट, वह वापस आएगा, उसे बरी कर दिया जाएगा, वे अपनी गलती मान लेंगे।"

लेकिन उससे बहुत पहले ही उसकी मौत हो जाएगी! खैर, कोई बात नहीं, उसके बच्चे बेदाग नाम रखेंगे। लेकिन ज़रा सोचो उसे कितनी पीड़ा हो रही होगी; यही बात मेरे दिल को दहला देती है। और क्या आप विश्वास करेंगे कि रॉबर्ट की माँ, जो एक धर्मपरायण महिला है, कहती है कि उसे शैतान के द्वीप पर छोड़ देना चाहिए, भले ही वह निर्दोष हो; क्या यह भयावह नहीं है?

"हां, यह बिल्कुल सच है, वह ऐसा कहती है," रॉबर्ट ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा। "वह मेरी मां है, मुझे उसमें कोई कमी नहीं दिखती, लेकिन यह स्पष्ट है कि उसका स्वभाव ज़ेज़ेट की तरह संवेदनशील नहीं है।"

दरअसल, ये दोपहर के भोजन, जिन्हें 'बेहद आनंददायक' कहा जाता था, हमेशा मुसीबत में ही समाप्त होते थे। क्योंकि जैसे ही सेंट-लूप अपनी प्रेमिका के साथ किसी सार्वजनिक स्थान पर पहुँचता, वह कल्पना करता कि वह कमरे में मौजूद हर दूसरे पुरुष को देख रही है, और उसका माथा तन जाता; वह उसके चिड़चिड़ेपन को भांप लेती, जिसे वह शायद बढ़ावा देना मनोरंजक समझती हो, या, जैसा कि अधिक संभावना थी, किसी मूर्खतापूर्ण कल्पना के तहत, उसके लहजे से आहत होकर, उसे शांत करने की कोशिश न करने का दिखावा करती; और किसी न किसी पुरुष से अपनी नज़रें हटाने में असमर्थ होने का नाटक करती, हालाँकि यह हमेशा केवल एक दिखावा नहीं होता था। वास्तव में, थिएटर या कैफ़े में जो सज्जन उनके बगल में बैठ जाता, या, इससे आगे न कहें, जिस टैक्सी को उन्होंने किराए पर लिया था, उसका ड्राइवर, बस उसमें कुछ आकर्षक होना चाहिए, चाहे कुछ भी हो, और ईर्ष्या से तेज हुई रॉबर्ट, अपनी प्रेमिका से पहले ही उसे देख लेता; वह उसमें तुरंत उन घिनौने प्राणियों में से एक को देख लेता था जिनकी उसने बालबेक में मुझसे निंदा की थी, जो अपने मनोरंजन के लिए महिलाओं को भ्रष्ट और अपमानित करते थे। वह अपनी प्रेमिका से उस आदमी से नज़रें हटाने की विनती करता, जिससे उसका ध्यान उस आदमी की ओर आकर्षित हो जाता। और कभी-कभी उसे लगता कि रॉबर्ट ने अपने संदेह में इतनी समझदारी दिखाई है कि थोड़ी देर बाद वह उसे चिढ़ाना भी बंद कर देती ताकि वह शांत हो जाए और किसी काम से अकेले जाने के लिए राज़ी हो जाए, जिससे उसे उस अजनबी से बातचीत शुरू करने का समय मिल जाए, अक्सर मुलाकात तय करने के लिए, और कभी-कभी तो बात को जल्दबाज़ी में आगे बढ़ाने के लिए भी। रेस्तरां में प्रवेश करते ही मैं समझ गया था कि रॉबर्ट परेशान दिख रहा था। असल बात यह थी कि उन्होंने तुरंत उस बात पर ध्यान दिया, जो बालबेक में हमारी नजरों से छूट गई थी, यानी कि अपने असभ्य सहकर्मियों के बीच खड़े होकर, ऐमे, एक विनम्र चमक के साथ, बिल्कुल अनजाने में ही, उस रोमांटिक आभा को बिखेर रहे थे जो जीवन के एक निश्चित काल तक उनके सुडौल बालों और यूनानी नाक से उत्पन्न होती है, ये वो विशेषताएं थीं जिनकी बदौलत वे वेटरों की भीड़ में अलग दिखते थे। बाकी लोग, जिनमें से लगभग सभी काफी उम्रदराज थे, कई तरह के चरित्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे - बेहद बदसूरत और अपराधी, पाखंडी पादरी, उपदेशक पादरी, और पुराने जमाने के हास्य कलाकार, जिनके चपटे माथे

आजकल छोटे, पुराने थिएटरों के साधारण ऐतिहासिक ग्रीन-रूम में टंगी तस्वीरों के संग्रह के बाहर शायद ही कहीं दिखाई देते हैं, जहाँ उन्हें नौकरों या पुजारियों की भूमिकाओं में दिखाया जाता है। हालांकि, ऐसा लगता था कि इस रेस्तरां ने चयनात्मक भर्ती प्रक्रिया और शायद वंशानुगत नामांकन प्रणाली के कारण, उनके गंभीर चरित्र को भविष्यवक्ताओं के एक कॉलेज की तरह संरक्षित रखा था। दुर्भाग्य से, ऐमे ने हमें पहचान लिया और वही हमारा ऑर्डर लेने आया, जबकि ओपेरा कलाकारों का जुलूस हमारे पास से गुजरते हुए दूसरी मेजों की ओर चला गया। ऐमे ने मेरी दादी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा; मैंने उनकी पत्नी और बच्चों के बारे में जानकारी मांगी। एक पारिवारिक व्यक्ति होने के नाते उन्होंने भावुक होकर बताया। उनका व्यक्तित्व बुद्धिमान, ऊर्जावान, लेकिन सम्मानजनक था। रॉबर्ट की प्रेमिका उसे अजीब सी एकाग्रता से देखने लगी। लेकिन ऐमे की धँसी हुई आँखें, जिनमें हल्की सी कमज़ोरी के कारण गहराई का आभास होता था, उसके शांत चेहरे पर चेतना का कोई संकेत नहीं दिखा रही थीं। बालबेक आने से पहले जिस प्रांतीय होटल में उसने कई वर्षों तक सेवा की थी, वहाँ उसका आकर्षक चेहरा, जो अब थोड़ा फीका और धुंधला पड़ चुका था, और जो इतने वर्षों तक राजकुमार यूजीन के किसी उत्कीर्ण चित्र की तरह, लगभग हमेशा खाली रहने वाले भोजन कक्ष के एक कोने में हमेशा एक ही जगह पर दिखाई देता था, किसी की उत्सुक निगाहों को आकर्षित नहीं कर सकता था। इस प्रकार, वह लंबे समय तक, निस्संदेह सहानुभूति रखने वाले प्रशंसकों की कमी के कारण, अपने चेहरे के कलात्मक मूल्य से अनभिज्ञ रहा था, और इस मामले में उस पर ध्यान आकर्षित करने के लिए भी उसका कोई खास झुकाव नहीं था, क्योंकि वह स्वभाव से ठंडा था। ज़्यादा से ज़्यादा, किसी राहगीर पेरिसवासी ने, किसी कारणवश शहर में रुककर, उसकी ओर देखा होगा, शायद उससे स्टेशन जाने से पहले अपने कमरे में कुछ लाने को कहा होगा, और एक देहाती कस्बे में एक वफ़ादार पति और नौकर के रूप में उसके जीवन के उस निर्मल, नीरस, गहरे शून्य में एक ऐसी सनक का राज़ छिपा दिया होगा जिसका कोई अंत नहीं होगा और जिसे कोई कभी उजागर नहीं करेगा। फिर भी, ऐमे को इस बात का एहसास ज़रूर रहा होगा कि उस युवा अभिनेत्री की निगाहें अब उस पर कितनी ज़ोर से टिकी हुई थीं। खैर, यह बात रॉबर्ट से नहीं छिपी, जिसकी त्वचा के नीचे मैंने

एक लाली उभरती देखी, वैसी तेज़ नहीं जैसी अचानक किसी भावना के आने पर उसके गालों पर जल उठती है, बल्कि हल्की, फैली हुई।
ऐमे को तीखी फटकार लगाने के बाद उसने पूछा, "क्या उस वेटर, ज़ेज़ेट के बारे में कुछ खास दिलचस्प है?" "ऐसा लगता है जैसे तुम उस किरदार की तैयारी कर रही हो।"
"लो, तुम फिर से शुरुआत कर रहे हो; मुझे पता था कि ऐसा होने वाला है।"
"क्या शुरू कर रहे हो, मेरी प्यारी बच्ची? शायद मुझसे गलती हुई हो; मुझे यकीन है कि मैंने कुछ कहा नहीं है। लेकिन मुझे कम से कम उस आदमी से सावधान रहने का तो हक है, क्योंकि मैं उसे बालबेक में जानता था (वरना मुझे कोई परवाह नहीं होती), और उससे बड़ा बदमाश दुनिया में कहीं नहीं मिलता।"
वह रॉबर्ट को शांत करने के लिए उत्सुक लग रही थी और मुझसे साहित्यिक चर्चा में उलझने लगी, जिसमें रॉबर्ट भी शामिल हो गया। मुझे उससे बात करने में बिल्कुल भी बोरियत नहीं हुई, क्योंकि उसे उन किताबों का पूरा ज्ञान था जिनकी मैं सबसे ज़्यादा प्रशंसा करता था, और उन किताबों के बारे में उसकी राय कमोबेश मेरी राय से मिलती-जुलती थी; लेकिन जैसा कि मैंने श्रीमती डी विलेपारिसिस को यह कहते सुना था कि उनमें कोई प्रतिभा नहीं है, इसलिए मैंने संस्कृति के इस प्रमाण को ज़्यादा महत्व नहीं दिया। वह हर तरह के विषयों पर चतुराई से बात करती थी, और अगर वह सेट और स्टूडियो की भाषा का ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल न करती, तो वह सचमुच मनोरंजक होती। इसके अलावा, वह इसे हर चीज़ पर लागू करती थी; उदाहरण के लिए, उसे किसी फिल्म के बारे में, अगर वह इंप्रेशनिस्ट होती, या किसी ओपेरा के बारे में, अगर वह वैगनरियन होता, तो "आह! यह अच्छा है!" कहने की आदत पड़ गई थी। एक दिन जब एक युवक ने उसके कान पर चुंबन किया, और उसके रोमांचित होने के दिखावे से प्रभावित होकर, उसने विनम्रता का नाटक किया, तो उसने कहा: "हाँ, एक अनुभूति के रूप में मैं इसे निश्चित रूप से अच्छा कहती हूँ।" लेकिन मुझे इससे भी ज्यादा आश्चर्य इस बात पर हुआ कि रॉबर्ट की विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ (जो शायद उसे उन साहित्यिक पुरुषों से मिली थीं जिन्हें वह जानती थी) वह उसके लिए और रॉबर्ट उसके लिए इस तरह इस्तेमाल करता था मानो वे भाषण का एक आवश्यक रूप हों, और उस मौलिकता की निरर्थकता की कोई कल्पना किए बिना जो सार्वभौमिक है।

खाना खाते समय, वह अपने हाथों को इतनी अनाड़ीपन से संभालती थी कि देखकर लगता था कि वह मंच पर बेहद असहज दिखती होगी। उसकी कुशलता केवल प्रेम करते समय ही वापस आती थी, उस स्पर्शनीय पूर्वज्ञान के साथ जो उन महिलाओं में निहित होता है जो पुरुष शरीर से इतना प्रेम करती हैं कि वे तुरंत समझ जाती हैं कि उस शरीर को सबसे अधिक आनंद किससे मिलेगा, जो उनके अपने शरीर से कितना भिन्न है।

जब बातचीत रंगमंच पर आ गई तो मैंने उसमें हिस्सा लेना बंद कर दिया, क्योंकि उस विषय पर राहेल का रवैया मुझे कुछ ज़्यादा ही द्वेषपूर्ण लगा। यह सच था कि उसने सहानुभूति भरे लहजे में सेंट-लूप के खिलाफ़ बर्मा का बचाव किया—जिससे यह साबित हुआ कि सेंट-लूप को राहेल के हमले सुनने की आदत थी—और कहा: "अरे नहीं, वह सचमुच एक अद्भुत इंसान हैं। बेशक, उनके काम अब हमें पसंद नहीं आते, वे हमारी अपेक्षाओं से मेल नहीं खाते, लेकिन हमें उन्हें उस दौर के संदर्भ में देखना चाहिए जिससे वह संबंधित हैं; हम उनके बहुत ऋणी हैं। उन्होंने अच्छा काम किया है, आप जानते हैं। और इसके अलावा, वह एक बहुत ही अच्छी महिला हैं, उनका दिल बहुत अच्छा है; स्वाभाविक रूप से उन्हें उन चीज़ों की परवाह नहीं है जिनमें हमारी रुचि है, लेकिन अपने समय में, एक प्रभावशाली चेहरे के साथ, उनके पास एक आकर्षक व्यक्तित्व था।" (वैसे, हमारे घंटियाँ बजाने वाले सभी हमारे सौंदर्य संबंधी निर्णयों के लिए एक समान संगत नहीं देते। यदि किसी चित्र पर चर्चा हो रही हो, तो यह दिखाने के लिए कि यह रंगों से भरपूर एक उत्कृष्ट कृति है, अंगूठा दिखाना ही काफी है। लेकिन 'मन की आकर्षक गुणवत्ता' अधिक सटीक है। इसके लिए दो उंगलियाँ, या यूँ कहें कि दो नाखून चाहिए, मानो कोई धूल का कण झाड़ने की कोशिश कर रहा हो।) लेकिन, इस एक अपवाद को छोड़कर, सेंट-लूप की प्रेमिका ने सबसे प्रसिद्ध अभिनेत्रियों का उल्लेख व्यंग्यात्मक श्रेष्ठता के लहजे में किया, जिससे मुझे चिढ़ हुई क्योंकि मेरा मानना था—जो कि बिल्कुल गलत था—कि वह उनसे हीन थी। वह स्पष्ट रूप से जानती थी कि मैं उसे एक साधारण अभिनेत्री मानता हूँ, और दूसरी ओर उन अभिनेत्रियों के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है जिन्हें वह तुच्छ समझती थी। लेकिन उन्होंने कोई नाराजगी नहीं दिखाई, क्योंकि जब तक उनकी प्रतिभा, उस समय की तरह, पहचानी नहीं जाती, तब तक हर महान प्रतिभा में, चाहे वह कितनी भी आत्मविश्वासी क्यों न हो, विनम्रता का भाव होता है, और क्योंकि हम

दूसरों से जो सम्मान की अपेक्षा करते हैं, वह हमारी छिपी हुई क्षमताओं के अनुरूप नहीं, बल्कि उस मुकाम के अनुरूप होती है जिस पर हम पहुँच चुके होते हैं। (लगभग एक घंटे बाद, मैं थिएटर में था, जहाँ मैंने सेंट-लूप की मालकिन को उन्हीं कलाकारों के प्रति बहुत सम्मान दिखाते हुए देखा, जिनके खिलाफ वह अब इतना कठोर निर्णय सुना रही थीं।) और इसलिए, भले ही मेरी चुप्पी ने उनके मन में कोई संदेह न छोड़ा हो, फिर भी उन्होंने उस शाम हमारे साथ भोजन करने पर जोर दिया, और मुझे आश्वासन दिया कि किसी की भी बातचीत ने उन्हें मेरी बातचीत जितनी प्रसन्न नहीं की थी। अगर हम अभी थिएटर में नहीं पहुँचे थे, जहाँ हमें दोपहर के भोजन के बाद जाना था, तो भी हमें ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी ग्रीन-रूम में हैं, जहाँ कंपनी के पुराने सदस्यों के चित्र लगे हुए थे, क्योंकि वेटर्स के चेहरे इतने स्पष्ट रूप से उन चेहरों जैसे थे, जो किसी के भी साथ पैलेस-रॉयल के गुमनाम अभिनेताओं की पूरी पीढ़ी के साथ लुप्त हो गए थे; उनमें शिक्षाविदों की झलक भी थी; एक साइड टेबल के सामने रुककर उनमें से एक व्यक्ति नाशपाती की एक थाली को ऐसे निश्चिंत जिज्ञासा से देख रहा था जैसे एम. डी जुसियू का चेहरा होता था। उसके दोनों ओर बैठे अन्य लोग कमरे में उस जिज्ञासा और शीतलता से भरी निगाहों से देख रहे थे जो संस्थान के वे सदस्य, जो जल्दी आ गए हैं, जनता पर डालते हैं, जबकि वे कुछ फुसफुसाते हुए शब्द आपस में कह रहे थे जिन्हें कोई समझ नहीं पा रहा था। वे सभी नियमित मेहमानों के लिए जाने-पहचाने चेहरे थे। हालाँकि, उनमें से एक की ओर इशारा किया जा रहा था, एक नवागंतुक जिसकी नाक फूली हुई थी और होंठ अकड़े हुए थे, जो किसी पादरी जैसा दिखता था; वह वहाँ पहली बार अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा था, और हर कोई इस नव निर्वाचित उम्मीदवार को उत्सुकता से देख रहा था। लेकिन तभी, शायद रॉबर्ट को दूर भगाने के लिए ताकि वह ऐमे के साथ अकेली रह सके, राहेल ने एक युवा छात्र पर नज़रें गड़ा दीं, जो पास की मेज पर एक अन्य व्यक्ति के साथ भोजन कर रहा था।

"ज़ेज़ेट, मैं आपसे विनती करता हूँ कि उस युवक को उस तरह मत देखिए," सेंट-लूप ने कहा, जिनके चेहरे पर कुछ क्षण पहले की झिझक भरी लाली अब एक गहरे लाल रंग में बदल गई थी, जिससे उनके सूजे हुए चेहरे के भाव और भी गहरे हो गए थे, "अगर आपको यहाँ तमाशा

करना ही है, तो मैं अकेले ही खाना खत्म कर लूँगा और बाद में थिएटर में आपके साथ आ जाऊँगा।"

इसी समय एक संदेशवाहक ऐमे को यह बताने आया कि उसे बाहर एक गाड़ी में बैठे एक सज्जन से बात करनी है। सेंट-लूप, जो हमेशा बेचैन रहता था और अब इस बात से भयभीत था कि कहीं उसकी प्रेमिका को प्रेम से संबंधित कोई संदेश न भेजा जाए, खिड़की से बाहर देखा और वहाँ अपनी बग्घी में बैठे, काले किनारों वाले सफेद दस्तानों में हाथ कसकर बंद किए, बटनहोल में एक फूल लगाए, श्री डी चार्लस को देखा।

"देखो! मैंने देखा!" उसने धीमी आवाज़ में मुझसे कहा, "मेरा परिवार यहाँ भी मेरा पीछा कर रहा है। क्या तुम—मैं खुद तो नहीं कर सकता, लेकिन तुम कर सकते हो, क्योंकि तुम मुख्य वेटर को अच्छी तरह जानते हो और वो हमें ज़रूर पकड़वा देगा—उससे कहो कि वो गाड़ी के पास न जाए। वो किसी दूसरे वेटर को भेज सकता है जो मुझे न जानता हो। मैं अपने चाचा को जानता हूँ; अगर उन्हें पता चल गया कि मुझे यहाँ कोई नहीं जानता, तो वो मुझे ढूंढने कभी अंदर नहीं आएंगे, उन्हें ऐसी जगहें बिल्कुल पसंद नहीं हैं। सच में, ये बहुत घिनौना है कि उसके जैसा बूढ़ा, जो अभी भी वही काम कर रहा है, मुझे लगातार उपदेश देता रहे और मेरी जासूसी करता रहे!"

मेरे निर्देश मिलते ही ऐमे ने अपने एक अधीनस्थ को यह समझाने के लिए भेजा कि वह व्यस्त है और इस समय नहीं आ सकता, और (यदि महोदय मार्किस डी सेंट-लूप के बारे में पूछें तो) वे ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानते। लेकिन सेंट-लूप की प्रेमिका, जो हमारी दबी हुई बातचीत को नहीं सुन पाई और सोच रही थी कि यह अभी भी उसी युवक के बारे में है जिस पर रॉबर्ट ने उसे आँख मारने के लिए ताना मारा था, क्रोध से भड़क उठी।

"ओह, बिल्कुल! तो वो वही नौजवान है, है ना? बताने के लिए शुक्रिया; खाने के साथ ऐसी चीज़ें मिलना वाकई बहुत अच्छा लगता है! उसकी बात मत सुनो, प्लीज़; वो आज थोड़ा चिड़चिड़ा है, और, तुम्हें पता है," उसने मेरी तरफ मुड़ते हुए कहा, "वो बस इसलिए ऐसा कहता है क्योंकि उसे लगता है कि हमेशा ईर्ष्या दिखाना एक सभ्य बात है।"

और उसने घबराहट भरी चिड़चिड़ाहट के लक्षण दिखाने के लिए अपने पैरों और उंगलियों से शुरुआत की।

"लेकिन, ज़ेज़ेट, मुझे यह अप्रिय लग रहा है। तुम हम सबको उस सज्जन के सामने हास्यास्पद बना रही हो, जो यह सोचने लगेगा कि तुम उससे संबंध बनाने की कोशिश कर रही हो, और वह एक असंभव बदमाश भी लग रहा है।"
"अरे नहीं, मुझे लगता है कि वह आकर्षक है; एक तो उसकी आंखें बेहद प्यारी हैं, और महिलाओं को देखने का उसका तरीका—आप महसूस कर सकते हैं कि वह उनसे प्यार करता होगा।"
“अगर तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, तो कम से कम मेरे कमरे से बाहर जाने तक चुप तो रहो,” रॉबर्ट चिल्लाया। “वेटर, मेरा सामान लाओ।”
मुझे नहीं पता था कि मुझसे उसके पीछे जाने की उम्मीद की जा रही थी या नहीं।
“नहीं, मैं अकेला रहना चाहता हूँ,” उसने मुझसे उसी लहजे में कहा, जिस लहजे में वह अभी अपनी प्रेमिका से बात कर रहा था, और मानो वह मुझसे बहुत नाराज़ हो। उसका गुस्सा किसी ओपेरा के एक ही संगीत की धुन जैसा था, जिस पर कई पंक्तियाँ गाई जाती हैं, जो शब्दों के अर्थ और स्वरूप में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग होती हैं, लेकिन संगीत उन्हें एक समान भावना से जोड़ देता है। रॉबर्ट के जाने के बाद, उसकी प्रेमिका ने ऐमे को बुलाया और उससे कई सवाल पूछे। फिर वह जानना चाहती थी कि मैं उसके बारे में क्या सोचती हूँ।
"ये तो बड़ा ही मजेदार है, है ना? जानते हो मुझे क्या अच्छा लगेगा? मैं जानना चाहूँगी कि वो असल में क्या सोचता है, वो मेरी अक्सर सेवा करे, मैं उसे सैर पर ले जाऊँ। बस इतना ही। अगर हमसे ये उम्मीद की जाए कि हम हर उस इंसान से प्यार करें जो हमें आकर्षित करता है, तो ज़िंदगी कितनी नीरस हो जाएगी, है ना? रॉबर्ट का ऐसे विचार रखना बेवकूफी है। ये सब बातें तो बस मेरे दिमाग में आती हैं, बस इतना ही; रॉबर्ट को चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।" वह अब भी ऐमे को निहार रही थी। "देखो, उसकी आँखें कितनी गहरी हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि उनके पीछे क्या है।"
तभी मुझे संदेश मिला कि रॉबर्ट एक निजी कमरे में उसका इंतज़ार कर रहा है, जहाँ वह अपना दोपहर का भोजन पूरा करने के लिए दूसरे दरवाज़े से गया था, ताकि उसे रेस्तरां से दोबारा न गुज़रना पड़े। इस तरह मैं अकेला रह गया, जब तक कि रॉबर्ट ने मुझे भी नहीं बुलाया। मैंने उसकी प्रेमिका को सोफे पर लेटे हुए पाया, वह रॉबर्ट के चुंबनों और दुलार के

बीच हंस रही थी। वे शैम्पेन पी रहे थे। "हैलो, तुम!" उसने रॉबर्ट को पुकारा, क्योंकि उसने हाल ही में यह तरीका अपनाया था, जो उसे चंचलता और हास्य का चरम लगता था। मैंने ठीक से खाना नहीं खाया था, मैं बहुत असहज था, और हालाँकि लेग्रैंडिन के शब्दों का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ था, मुझे यह सोचकर दुख हो रहा था कि मैं एक रेस्तरां के पिछले कमरे से शुरुआत कर रहा हूँ और वसंत की इस पहली दोपहर को एक थिएटर के विंग में खत्म कर रहा हूँ। पहले समय देखकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसे देर न हो जाए, उसने मुझे शैम्पेन का एक गिलास दिया, अपनी एक तुर्की सिगरेट मुझे थमा दी और अपनी चोली से मेरे लिए एक गुलाब निकाला। तब मैंने मन ही मन कहा: "आखिरकार मुझे पछताने की कोई खास वजह नहीं है; इस युवती के साथ बिताए ये घंटे व्यर्थ नहीं गए, क्योंकि उसने मुझे ऐसे मनमोहक उपहार दिए हैं जिन्हें बहुत महंगा भी नहीं खरीदा जा सकता - एक गुलाब, एक सुगंधित सिगरेट और एक गिलास शैंपेन।" मैंने खुद से ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मुझे लगा कि इससे एक कलात्मक भाव जुड़ जाता है और इस तरह मेरे उबाऊपन के ये घंटे जायज साबित होते हैं। शायद मुझे यह सोचना चाहिए था कि मुझे अपने उबाऊपन को दूर करने के लिए जिस कारण की ज़रूरत महसूस हो रही थी, वही इस बात का सबूत था कि मुझे कोई कलात्मक अनुभूति नहीं हो रही थी। जहाँ तक रॉबर्ट और उसकी प्रेमिका की बात है, उन्हें कुछ मिनट पहले उनके बीच हुए झगड़े की कोई याद नहीं थी, न ही इस बात की कि मैं उसका गवाह था। उन्होंने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया, न ही इसके लिए कोई बहाना ढूंढा, और न ही अपने वर्तमान व्यवहार के विपरीत इसे छिपाने की कोशिश की। उनके साथ शैंपेन पीने से मुझे थोड़ा-थोड़ा नशा महसूस होने लगा, जैसा कि रिवेबेल में होता था, हालांकि शायद बिल्कुल वैसा नहीं। न केवल हर प्रकार का नशा, चाहे वह सूर्य की गर्मी से हो या यात्रा से, या थकावट या शराब से, बल्कि नशे की हर अवस्था—और हर अवस्था का एक अलग माप होता है, जैसे मानचित्र पर गहराई के माप—हमारे भीतर उस गहराई को उजागर करती है जहाँ तक वह पहुँचती है, और एक अलग प्रकार के मनुष्य को प्रकट करती है। सेंट-लूप ने जो कमरा लिया था वह छोटा था, लेकिन उसमें लगा एकमात्र आभूषण दर्पण ऐसा था कि वह एक अंतहीन दृश्य में तीस अन्य दर्पणों को प्रतिबिंबित करता हुआ प्रतीत होता था; और फ्रेम के शीर्ष पर लगा बिजली का बल्ब, रात में जब रोशनी जलती थी, तो अपनी ही तरह की तीस

चमकों की एक श्रृंखला के साथ, पीने वाले को, अकेले होने पर भी, यह आभास देता था कि आसपास का स्थान नशे से बढ़ी उसकी संवेदनाओं के साथ-साथ कई गुना बढ़ रहा है, और यह कि, इस छोटी सी कोठरी में अकेले बंद होकर भी, वह पेरिस गार्डन के एक मार्ग से कहीं अधिक विशाल, अनिश्चित चमकदार वक्र में किसी चीज पर राज कर रहा है। उस समय मैं स्वयं वही शराबी था, अचानक गिलास में उसे ढूंढते हुए, मेरी नज़र उस भयानक, अजनबी पर पड़ी, जो मुझे घूर रहा था। नशे का आनंद मेरी घृणा से कहीं अधिक प्रबल था; उत्साह या साहस के कारण मैंने उस पर मुस्कुरा दिया, और साथ ही उसने भी मेरी ओर मुस्कुरा दिया। और मैं उस क्षणिक और शक्तिशाली प्रभाव में इतना डूब गया था, जिसमें हमारी संवेदनाएँ इतनी प्रबल होती हैं, कि मुझे यकीन नहीं है कि मेरा एकमात्र अफ़सोस इस विचार पर था कि गिलास में अभी-अभी मैंने जिस भयानक रूप को देखा था, वह शायद पृथ्वी पर मेरा अंतिम दर्शन था, और मैं अपने पूरे जीवन में उस अजनबी से फिर कभी नहीं मिल पाऊँगा।

रॉबर्ट सिर्फ इसलिए नाराज था क्योंकि मैं उसकी प्रेमिका के सामने और अधिक प्रतिभाशाली नहीं दिख रहा था।

"उस आदमी के बारे में क्या कहूँ जिससे तुम आज सुबह मिली थी, जो खगोल विज्ञान के साथ-साथ घमंड भी दिखाता है; उसे उसके बारे में बताओ, मैं कहानी भूल गया हूँ," और उसने छुपकर उसे देखा।

"लेकिन, मेरे प्यारे बेटे, तुमने अभी जो कहा है उससे ज्यादा कुछ नहीं है।"

"तुम कितने उबाऊ हो। तो उसे चैंप्स-एलिसी में फ्रांस्वा के बारे में बताओ। उसे यह अच्छा लगेगा।"

"अरे हाँ! बॉबी हमेशा फ्रांस्वा के बारे में बात करता रहता है।" और सेंट-लूप की ठुड्डी पकड़कर, कुछ और नया न सूझने पर, उसने ठुड्डी को रोशनी के करीब लाते हुए दोहराया: "हैलो, तुम!"

चूंकि अभिनेता अब मेरे लिए केवल कलात्मक सत्य के भंडार नहीं रह गए थे, बल्कि वे स्वयं में ही मेरी रुचि जगाने लगे थे; मैं यह सोचकर अपना मनोरंजन करता था कि मेरे सामने जो पात्र हैं वे किसी पुराने हास्य उपन्यास के पात्र हैं। मैं अभी-अभी मंच पर आए युवक के ताज़गी भरे चेहरे से मंत्रमुग्ध होकर देखता था कि नायिका उस युवा नायक द्वारा किए जा रहे प्रेम के

इज़हार को बड़ी बेसुध होकर सुन रही है, जबकि वह अपने जोशीले भाषण के बीच भी मंच के एक बॉक्स में बैठी एक बूढ़ी महिला पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए था, जिसके शानदार मोतियों ने उसका ध्यान आकर्षित किया था; और इस प्रकार, विशेष रूप से सेंट-लूप द्वारा अभिनेताओं के निजी जीवन के बारे में दी गई जानकारी के कारण, मैंने एक और नाटक देखा, मूक लेकिन अभिव्यंजक, जो बोले गए नाटक के शब्दों के नीचे प्रदर्शित किया जा रहा था, जो स्वयं में, यद्यपि कोई विशेष गुण नहीं रखता था, फिर भी मेरी रुचि जगाता था। क्योंकि मैं उसमें महसूस कर सकता था कि एक घंटे तक फुटलाइट की चकाचौंध में अंकुर फूट रहे थे और खिल रहे थे, एक अभिनेता के चेहरे पर ग्रीस पेंट और गत्ते से बने दूसरे चेहरे के जमाव से, उसकी अपनी मानवीय आत्मा पर एक भूमिका के शब्द अंकित हो रहे थे।

नाटक के पात्र, जो एक मनोरंजक नाटक भी है, क्षणभंगुर और जीवंत व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हैं। हम उनसे प्रेम करते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं, उन पर दया करते हैं, रंगमंच छोड़ने के बाद हम उन्हें फिर से देखना चाहते हैं, लेकिन तब तक वे एक ऐसे हास्य कलाकार में विलीन हो चुके होते हैं जो नाटक में अपनी भूमिका में नहीं होता, एक ऐसे पाठ में विलीन हो चुके होते हैं जिसमें हास्य कलाकार का चेहरा नहीं दिखता, एक ऐसे रंगीन पाउडर में विलीन हो चुके होते हैं जिसे रुमाल से पोंछा जा सकता है। संक्षेप में, वे ऐसे तत्वों में विलीन हो चुके होते हैं जिनमें उनका कोई अंश नहीं होता, क्योंकि नाटक समाप्त होने के तुरंत बाद उनका विलीन होना हमें—किसी प्रिय मित्र के विलीन होने की तरह—अपने अहंकार की वास्तविकता पर संदेह करने और मृत्यु के रहस्य पर चिंतन करने के लिए विवश करता है।

कार्यक्रम में एक प्रस्तुति मुझे बेहद परेशान करने वाली लगी। एक युवती, जिसे राहेल और उसके कुछ दोस्त नापसंद करते थे, पुराने गीतों के एक समूह के साथ पहली बार प्रस्तुति देने वाली थी, जिस पर उसने अपने और अपने परिवार के भविष्य की सारी उम्मीदें टिका रखी थीं। इस युवती के कूल्हे ज़रूरत से ज़्यादा उभरे हुए थे, लगभग भद्दे से, और उसकी आवाज़ सुरीली तो थी, पर बहुत पतली थी, जो उसकी उत्तेजना के कारण और भी कमज़ोर हो गई थी, और उसके शारीरिक विकास के बिल्कुल विपरीत थी। राहेल ने दर्शकों के बीच अपने कुछ दोस्तों (पुरुष और महिला) को बिठा रखा था, जिनका काम व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों से उस नौसिखिया को, जो शर्मीली मानी जाती थी, अपमानित करना था, ताकि वह अपना आपा खो दे

और उसकी प्रस्तुति पूरी तरह असफल हो जाए, जिसके बाद प्रबंधक उसे अनुबंध देने से इनकार कर दे। उस अभागी स्त्री के पहले स्वर सुनते ही, उस उद्देश्य से बुलाए गए कई पुरुष श्रोताओं ने मज़ाकिया टिप्पणियों के साथ उसकी ओर इशारा करना शुरू कर दिया। कथानक में शामिल कई महिलाएं भी ज़ोर से हंस पड़ीं। मंच से आती बांसुरी जैसी हर ध्वनि ने जानबूझकर पैदा की गई हंसी को और बढ़ा दिया, जो एक सार्वजनिक विवाद में बदल गई। दुख से पसीने से तरबतर, मेकअप में लिपटी वह दुखी स्त्री थोड़ी देर और सहने की कोशिश करती रही, फिर रुक गई और दर्शकों की ओर दुख और क्रोध से भरी एक अपील भरी नज़र से देखा, जिससे केवल हंगामा और बढ़ गया। दूसरों की नकल करने की प्रवृत्ति, अपनी चतुराई और साहस दिखाने की इच्छा ने उस पार्टी में कई खूबसूरत अभिनेत्रियों को भी शामिल कर दिया, जिन्हें पहले से चेतावनी नहीं दी गई थी, लेकिन अब वे एक-दूसरे पर दुर्भावनापूर्ण मिलीभगत से भरी निगाहें डाल रही थीं और ठहाकों से लोटपोट हो रही थीं। उनकी हंसी इतनी ज़ोरदार थी कि दूसरे गाने के अंत में, हालांकि कार्यक्रम में अभी पांच और गाने बाकी थे, स्टेज मैनेजर ने पर्दा गिरा दिया। मैंने इस घटना पर उतना ही ध्यान न देने की कोशिश की जितना मैंने अपनी दादी के कष्टों पर दिया था, जब मेरी बड़ी चाची उन्हें चिढ़ाने के लिए मेरे दादाजी को ब्रांडी पिलाती थीं, क्योंकि जानबूझकर की गई दुष्टता का विचार मेरे लिए असहनीय था। फिर भी, जिस प्रकार दुर्भाग्य के प्रति हमारी दया शायद उतनी सटीक नहीं होती, क्योंकि हमारी कल्पना में हम दुःख का एक पूरा संसार रच लेते हैं, जिससे पीड़ित व्यक्ति को आत्म-दया के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिलता, उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति के मन में शायद वह शुद्ध और कामुक क्रूरता नहीं होती जिसकी कल्पना करना हमारे लिए इतना कष्टदायी होता है। घृणा उसे प्रेरित करती है, क्रोध उसे एक जोश देता है, एक ऐसी गतिविधि जिसमें कोई बड़ा आनंद नहीं होता; उसे इससे कोई आनंद प्राप्त करने के लिए एक क्रूर व्यक्ति होना चाहिए; आमतौर पर, दुष्ट व्यक्ति स्वयं को अपने शिकार की दुष्टता को दंडित करने वाला मानता है; राहेल को पूरा यकीन था कि जिस अभिनेत्री को वह परेशान कर रही थी, उसमें किसी की कोई दिलचस्पी नहीं थी, और वैसे भी, उसे मंच से बाहर निकलवाकर वह अच्छे स्वाद के अपमान का बदला ले रही थी और एक नालायक साथी को सबक सिखा रही थी। फिर भी, मैंने इस घटना के बारे में बात न करना ही बेहतर समझा, क्योंकि इसे रोकने का

न तो मुझमें साहस था और न ही शक्ति, और उनके पीड़ित के बारे में कुछ भी अच्छा कहना मेरे लिए बहुत कष्टदायक होता, क्योंकि ऐसा करके मैं उन लोगों की क्रूरता की लालसा को संतुष्ट करने की कोशिश करती, जिन्होंने इस अभिनेत्री के करियर को उसके शुरुआती दौर में ही खत्म कर दिया था।

लेकिन आज दोपहर के प्रदर्शन का शुरुआती दृश्य मुझे एक अलग ही तरीके से आकर्षित कर गया। इसने मुझे उस भ्रम की प्रकृति का कुछ हद तक एहसास कराया जिसका सेंट-लूप राहेल के संबंध में शिकार था, और जिसने उसकी प्रेमिका की उन छवियों के बीच एक खाई पैदा कर दी थी जो उसके और मेरे मन में क्रमशः उस सुबह खिलते हुए नाशपाती के पेड़ों के बीच उसे देखने पर बनी थीं। राहेल एक ऐसी भूमिका निभा रही थी जिसमें छोटे से नाटक में बस उसका मंच पर आना ही शामिल था। लेकिन इस तरह देखने पर वह एक अलग ही स्त्री लग रही थी। उसका चेहरा उन चेहरों में से एक था जिसे दूरी—और जरूरी नहीं कि यह सिर्फ दर्शकों और मंच के बीच की दूरी हो, क्योंकि इस लिहाज से दुनिया सिर्फ एक बड़ा रंगमंच है —आकार और रूपरेखा देती है, और जो पास से देखने पर धूल में मिल जाता है। उसके बगल में खड़े होकर केवल एक धुंधली सी आकृति, छोटे-छोटे धब्बों की एक आकाशगंगा दिखाई देती थी, इससे ज्यादा कुछ नहीं। उचित दूरी से देखने पर यह सब कुछ अदृश्य हो जाता था और, पीछे हटते गालों से, जो उसके चेहरे में समाहित हो जाते थे, एक अर्धचंद्र की तरह उभरती हुई नाक, इतनी सुंदर, इतनी पवित्र कि हर कोई राहेल का ध्यान आकर्षित करना चाहेगा, उसे जितनी बार चाहे उतनी बार देखना चाहेगा, उसके करीब आना चाहेगा, बशर्ते कि उसे पहले किसी और रूप में और करीब से न देखा हो। यह मेरे साथ नहीं हुआ था, लेकिन सेंट-लूप के साथ हुआ था जब उसने उसे पहली बार मंच पर देखा था। तब उसने खुद से पूछा था कि वह उसके पास कैसे जाए, उसे कैसे जाने, उसके भीतर एक पूरा जादुई संसार खुल गया था - वह जिसमें वह रहती थी - जिससे एक अद्भुत चमक निकलती थी, लेकिन जिसमें वह प्रवेश नहीं कर सकता था। थिएटर से निकलते समय उसने मन ही मन सोचा कि उसे पत्र लिखना मूर्खता होगी, वह उसके पत्र का उत्तर नहीं देगी। वह अपने भीतर पल रही उस प्राणी के लिए अपना धन-दौलत और नाम देने को भी तैयार था, जो उन जानी-पहचानी वास्तविकताओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ संसार में जी रही थी, एक ऐसा संसार जो इच्छाओं और

सुख के सपनों से सुंदर बना था। तभी थिएटर के पीछे, एक छोटी सी पुरानी इमारत में, जो किसी दृश्यावली का हिस्सा लग रही थी, उसने मंच के दरवाजे से सुंदर और आकर्षक टोपी पहने अभिनेत्रियों के समूह को बाहर आते देखा, जो अभी-अभी प्रस्तुति देकर लौटी थीं। उन्हें जानने वाले युवक बाहर उनका इंतजार कर रहे थे। मानव शतरंज की बिसात पर मोहरों की संख्या उनके द्वारा बनाई जा सकने वाली संयोजनों की संख्या से कम होती है। एक रंगमंच में, जहाँ से हमारे सभी परिचित और अपेक्षित लोग अनुपस्थित हैं, वहाँ एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जिसे हमने कभी दोबारा देखने की कल्पना भी नहीं की थी। वह इतने संयोगवश प्रकट होता है कि यह संयोग हमें ईश्वरीय प्रतीत होता है, यद्यपि यदि हम उस स्थान पर न होकर किसी अन्य स्थान पर होते, तो निस्संदेह कोई और संयोग घटित हो जाता, जहाँ अन्य इच्छाएँ जागृत होतीं और हमें कोई पुराना परिचित मिल जाता जो उन्हें पूरा करने में हमारी सहायता करता। सेंट-लूप के राहेल को रंगमंच से बाहर निकलते देखने से पहले ही स्वप्नलोक के सुनहरे द्वार उसके लिए फिर से बंद हो चुके थे, इसलिए उसके चेहरे पर मौजूद झाइयाँ और दाग-धब्बे अब कोई मायने नहीं रखते थे। फिर भी वे उसे परेशान करते रहे, विशेष रूप से इसलिए कि अब वह अकेला नहीं था, और उसे रंगमंच की तरह सपने देखने का अवसर नहीं मिल रहा था। लेकिन वह, भले ही अब उसे देख नहीं सकता था, उसके कार्यों को निर्देशित करती रही, ठीक उन तारों की तरह जो हमें अपने आकर्षण से तब भी प्रभावित करते हैं जब वे हमारी आँखों से दिखाई नहीं देते। और इसलिए उस खूबसूरत चेहरे वाली अभिनेत्री के लिए उसकी चाहत, जिसका अब रॉबर्ट की यादों में भी कोई स्थान नहीं था, का नतीजा यह हुआ कि संयोग से वहाँ आए अपने पुराने दोस्त की ओर दौड़ते हुए, उसने उस चेहरे पर झुर्रियों वाली और बिना चेहरे वाली महिला से परिचय कराने पर ज़ोर दिया, क्योंकि वह उसे वही व्यक्ति समझ रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि बाद में वह पता लगा लेगा कि वास्तव में वह वही व्यक्ति कौन है। वह जल्दी में थी, उसने इस बार सेंट-लूप से एक शब्द भी नहीं कहा, और कुछ दिनों बाद ही उसने उसे अपने साथियों से विदा करवाकर घर तक पहुँचाने का प्रबंध किया। वह उससे पहले ही प्यार करने लगा था। सपनों की ज़रूरत, उस व्यक्ति से खुश होने की इच्छा, जिसके बारे में हमने सपने देखे हैं, ऐसा कर देती है कि जल्द ही हम अपनी सारी

खुशियाँ उस व्यक्ति को सौंप देते हैं जो कुछ दिन पहले तक रंगमंच के मंच पर एक आकस्मिक, अज्ञात, महत्वहीन उपस्थिति मात्र थी।

पर्दा गिरने के बाद जब हम मंच पर गए, तो पहली बार वहाँ होने के कारण थोड़ा घबराकर, मुझे सेंट-लूप के साथ एक जोशीली बातचीत शुरू करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस तरह, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि एक अपरिचित वातावरण में क्या व्यवहार करना चाहिए, मेरा रवैया पूरी तरह से हमारी बातचीत पर केंद्रित होगा, और लोग सोचेंगे कि मैं बातचीत में इतना मग्न हूँ, अपने आसपास के माहौल से इतना बेखबर हूँ, कि यह स्वाभाविक ही था कि मैं उस स्थान के लिए उपयुक्त चेहरे के भाव न दिखाऊँ जहाँ, मेरी बातों से ऐसा प्रतीत होता था कि मैं मुश्किल से ही खड़ा हूँ; और बातचीत शुरू करने के लिए, मैंने सबसे पहले जो विषय मेरे दिमाग में आया, उसे ही पकड़ लिया:

मैंने कहा, "आपको पता है, जिस दिन मैंने डोंसिएरेस छोड़ा था, उस दिन मैं आपसे अलविदा कहने आया था; मुझे इसका जिक्र करने का मौका ही नहीं मिला। मैंने सड़क पर आपको हाथ हिलाकर अभिवादन किया था।"

"इस बारे में बात मत करो," उसने जवाब दिया, "मुझे बहुत अफ़सोस है। मैं बैरक के ठीक बाहर से गुज़रा था, लेकिन देर हो जाने के कारण मैं रुक नहीं सका। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मुझे इस बात का बहुत बुरा लगा।"

तो उसने मुझे पहचान लिया था! मुझे फिर से वह भावहीन अभिवादन याद आ गया जो उसने मुझे दिया था, अपना हाथ अपनी टोपी तक उठाते हुए, बिना मेरी ओर देखे, बिना यह जताए कि वह मुझे जानता है, बिना किसी हावभाव के कि उसे रुकने का अफसोस है। जाहिर है, उस क्षण उसने जो यह दिखावा किया था कि वह मुझे नहीं जानता, उससे उसके लिए मामला काफी आसान हो गया होगा। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी जल्दी और बिना किसी सहज हरकत के, जिससे उसकी मूल धारणा का पता चले, खुद को संभाल पाया। मैंने बालबेक में पहले ही देखा था कि उसके चेहरे की उस मासूमियत भरी ईमानदारी के साथ-साथ, जिसकी पारदर्शिता से कुछ भावनाओं का अचानक ज्वार दिखाई देता था, उसका शरीर कई तरह के सभ्य दिखावे करने में माहिर था, और एक कुशल अभिनेता की तरह, वह अपने औपचारिक और सामाजिक जीवन में बारी-बारी से बिल्कुल अलग-अलग भूमिकाएँ

निभा सकता था। अपनी एक भूमिका में वह मुझसे कोमल प्रेम करता था, वह मेरे साथ लगभग ऐसा व्यवहार करता था जैसे वह मेरा भाई हो; वह मेरा भाई था, और अब फिर से वही है, लेकिन उस दिन एक पल के लिए वह एक ऐसा व्यक्ति बन गया था जो मुझे नहीं जानता था और जिसने लगाम थामे हुए, अपनी आंखों पर चश्मा लगाए, बिना किसी भाव या मुस्कान के, अपने खाली हाथ को अपनी टोपी के शिखर तक उठाकर मुझे सही ढंग से सैन्य सलामी दी थी।

मंच की सजावट, जो अभी भी अपनी जगह पर थी और जिसके बीच से मैं गुज़र रहा था, इतनी नज़दीक से देखने पर, प्रकाश और दूरी के उन प्रभावों के बिना, जिनका ध्यान उस प्रख्यात कलाकार ने रखा था जिसने इसे चित्रित किया था, एक निराशाजनक दृश्य था। और जब मैं राहेल के पास पहुँचा, तो वह भी कुछ कम विनाशकारी प्रभाव से नहीं गुज़री। उसकी मनमोहक नाक की वक्रता, स्टॉल्स और मंच के बीच, दृश्य की उभरी हुई आकृति की तरह उभर रही थी। वह अब पहले जैसी नहीं रही थी; मैं उसे केवल उसकी आँखों की बदौलत पहचान पाया, जिनमें उसकी पहचान छिपी थी। इस युवा सितारे का रूप, उसकी चमक, जो कुछ क्षण पहले इतनी उज्ज्वल थी, गायब हो गई थी। दूसरी ओर—जैसे हम चाँद के करीब आ गए हों और वह गुलाबी सुनहरे रंग की डिस्क जैसा दिखना बंद हो गया हो—उस चेहरे पर, जो अब तक इतना चिकना था, मैं केवल उभार, रंगहीनता और गड्ढे ही देख पा रहा था। हालांकि करीब से देखने पर न केवल स्त्री की विशेषताएं बल्कि चित्रित कैनवास भी असंगत प्रतीत होते थे, फिर भी मुझे वहां के दृश्यों के बीच घूमने में खुशी हो रही थी, वह सारा परिवेश जिसे कभी प्रकृति के प्रति मेरे प्रेम ने मुझे उबाऊ और कृत्रिम मानकर खारिज करने के लिए प्रेरित किया था, जब तक कि गोएथे द्वारा विल्हेम मिस्टर में इसका वर्णन करने से मेरी नजरों में इसे एक प्रकार की सुंदरता नहीं मिल गई थी; और मैंने पहले ही अभिनेत्रियों के पत्रकारों या मित्रों की भीड़ के बीच, जो एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे, बातें कर रहे थे, धूम्रपान कर रहे थे, मानो किसी सार्वजनिक सड़क पर हों, एक युवक को काले मखमली टोपी और हॉर्टेंसिया रंग की स्कर्ट पहने हुए, जिसके गाल वाटो एल्बम के पन्ने की तरह लाल रंग से रंगे हुए थे, मुस्कुराते होठों और छत की ओर उठी आँखों के साथ, जैसे ही वह हल्के से हवा में उछला, वह रोजमर्रा के कपड़ों में तर्कसंगत लोगों से बिल्कुल अलग प्रजाति का प्रतीत हुआ, जिनके बीच वह एक

पागल की तरह अपने परमानंदमय सपने के मार्ग का अनुसरण कर रहा था, उनके जीवन की चिंताओं से इतना अलग, उनकी सभ्यता की आदतों से इतना पूर्व, प्रकृति के सभी नियमों से इतना मुक्त, कि यह उतना ही सुकून देने वाला और ताजगी भरा दृश्य था जितना कि किसी भीड़ भरी सड़क पर भटकती हुई तितली को देखना, कैनवास की पट्टियों के बीच, उसके पंखों के मनमौजी चित्रित दोलनों द्वारा खींची गई प्राकृतिक अरबी आकृतियों का अपनी आँखों से अनुसरण करना। लेकिन उसी क्षण सेंट-लूप के मन में यह विचार आया कि उसकी प्रेमिका उस नर्तक पर अनुचित ध्यान दे रही है, जो अब उस हास्यास्पद आकृति का अंतिम बार अभ्यास कर रहा था जिसके साथ वह मंच पर जाने वाला था, और उसका चेहरा उदास हो गया।

"तुम शायद दूसरी तरफ देख लो," उसने उदास स्वर में उसे चेतावनी दी। "तुम जानती हो कि उन नर्तकों में से कोई भी उस रस्सी के लायक नहीं है जिससे वे गिरकर अपनी गर्दन तोड़ सकते हैं, और वे ऐसे लोग हैं जो बाद में शेखी बघारते फिरते हैं कि तुमने उन पर ध्यान दिया है। इसके अलावा, तुम अच्छी तरह जानती हो कि तुम्हें अपने ड्रेसिंग रूम में जाकर कपड़े बदलने के लिए कहा गया है। तुम फिर से अपना कार्यक्रम चूक जाओगी।"

कुछ पत्रकार सेंट-लूप के चेहरे पर गुस्से का भाव देखकर मजे से हमारी बातें सुनने के लिए पास आ गए। और चूंकि स्टेज के कर्मचारी हमारे दूसरी तरफ कुछ सजावट कर रहे थे, इसलिए हमें उनके बिल्कुल करीब आना पड़ा।

"अरे, मैं तो उसे जानती हूँ; वह मेरा दोस्त है," सेंट-लूप की मालकिन ने नर्तक पर टकटकी लगाए हुए कहा। "देखो वह कितना सुगठित है, उसके नन्हे-मुन्ने हाथों को देखो जो उसके पूरे शरीर की तरह अपने आप नाच रहे हैं!"

नर्तक ने उसकी ओर अपना सिर घुमाया, और जिस अप्सरा बनने का वह प्रयास कर रहा था, उसके नीचे उसका वास्तविक मानव रूप प्रकट हुआ; उसकी आँखों की स्पष्ट धूसर जेली रंग की चमक, रंग से सजी पलकों के बीच काँप उठी और उसके होंठों के कोनों से लाली से सने गालों तक एक मुस्कान फैल गई; फिर, लड़की का मनोरंजन करने के लिए, एक गायक की तरह जो हमें उस गीत की धुन गुनगुनाता है जिसमें हमने उसकी गायकी की प्रशंसा की है,

उसने अपने हाथों की गति को दोहराना शुरू कर दिया, एक पैरोडिस्ट की कुशलता और एक बच्चे के हंसमुख स्वभाव के साथ खुद की नकल करते हुए।
"ओह, यह तो बहुत प्यारा है, जिस तरह से वह खुद की नकल करता है," उसने ताली बजाते हुए कहा।
"मेरी प्यारी बच्ची, मैं तुमसे विनती करता हूँ," सेंट-लूप ने अत्यंत दुखी स्वर में बीच में ही कहा, "यहाँ तमाशा मत करो, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता; मैं कसम खाता हूँ, अगर तुमने एक और शब्द भी कहा तो मैं तुम्हारे कमरे तक तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, मैं सीधे बाहर चला जाऊँगा; आओ, इतनी शरारत मत करो... तुम्हें सिगार के धुएँ में इस तरह खड़े नहीं रहना चाहिए, इससे तुम बीमार पड़ जाओगी," उसने मुझसे उसी चिंता के साथ कहा, जो उसने बालबेक के दिनों में मेरे लिए दिखाई थी।
"ओह! अगर तुम चले जाओ तो कितना अच्छा होगा।"
मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, अगर मैंने ऐसा किया तो मैं वापस नहीं आऊँगा।
"यह मेरी उम्मीद से कहीं अधिक है।"
"सुनो; तुम्हें पता है, मैंने तुमसे वादा किया था कि अगर तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करोगी तो मैं तुम्हें हार दे दूंगी, लेकिन जिस पल तुम मेरे साथ ऐसा बर्ताव करोगी..."
"अरे! खैर, इसमें मुझे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। तुमने मुझसे वादा किया था; मुझे पता होना चाहिए था कि तुम उसे कभी नहीं निभाओगे। तुम पूरी दुनिया को दिखाना चाहते हो कि तुम पैसे वाले हो, लेकिन मैं तुम्हारी तरह पैसे का लालची नहीं हूँ। तुम अपना वो घटिया हार अपने पास रखो; मैं किसी और को जानता हूँ जो इसे मुझे दे देगा।"
"कोई और इसे आपको नहीं दे सकता; मैंने बूचेरॉन से कहा है कि वह इसे मेरे लिए संभाल कर रखे, और मैंने उससे वादा लिया है कि वह इसे किसी और को नहीं देगा।"
"देखो, तुम मुझे ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहे हो, सब कुछ तुमने ही तय किया है, मैं समझ गई। मारसेंटेस, मातेर सेमिटा से उनका यही मतलब है, इसमें नस्ल की बू आ रही है," राहेल ने पलटवार करते हुए एक शब्द-व्युत्पत्ति का हवाला दिया जो एक गलत व्याख्या पर आधारित थी, क्योंकि सेमिटा का अर्थ 'मार्ग' होता है, न कि 'सेमाइट', लेकिन राष्ट्रवादियों ने सेंट-लूप पर यह शब्द इसलिए लागू किया क्योंकि उनके ड्रेफुसार्ड विचार थे, जिनके लिए वे

अभिनेत्री के ऋणी थे। श्रीमती डी मारसेंटेस को 'यहूदी' कहना किसी और से कम उचित था, क्योंकि समाज के नृवंशविज्ञानियों को उनमें लेवी-मिरेपोइक्स परिवार से संबंध के अलावा यहूदी धर्म का कोई निशान नहीं मिला। "लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती, मैं आपको बता दूं। ऐसा समझौता बाध्यकारी नहीं होता। आपने मेरे साथ विश्वासघात किया है। बूचेरोन को इसकी सूचना दी जाएगी और उसे उसके हार के लिए दुगुना भुगतान किया जाएगा। आपको जल्द ही मेरी ओर से सूचना मिलेगी; चिंता न करें।"

रॉबर्ट सौ बार सही था। लेकिन परिस्थितियाँ हमेशा इतनी उलझी हुई होती हैं कि जो व्यक्ति सौ बार सही साबित होता है, वह भी कभी न कभी गलत रहा हो सकता है। और मुझे बालबेक में कही गई उसकी वह अप्रिय, फिर भी काफी मासूम सी बात याद आ गई: "इस तरह मैं उस पर अपना नियंत्रण बनाए रखता हूँ।"

"तुम हार के बारे में मेरी बात नहीं समझ रही हो। मैंने कोई औपचारिक वादा नहीं किया था: जब तुम मुझे छोड़ने के लिए हर संभव कोशिश करने लगती हो, तो यह स्वाभाविक ही है कि मैं तुम्हें हार न दूं; मुझे समझ नहीं आता कि इसमें तुम्हें क्या छल दिखता है, या मेरा असली मकसद क्या है। तुम यह नहीं कह सकती कि मैं अपने पैसे का घमंड करता हूं, मैं हमेशा तुमसे कहता हूं कि मैं एक गरीब इंसान हूं जिसके पास एक पैसा भी नहीं है। मेरी प्यारी, तुम इसे इस तरह समझ रही हो, यह मूर्खता है। तुम्हें दुख पहुंचाने में मेरा क्या हित हो सकता है? तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरी जिंदगी में एकमात्र रुचि तुम ही हो।"

"ओह, हाँ, हाँ, कृपया जारी रखिए," उसने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया, जैसे कोई नाई अपना रेज़र लहरा रहा हो। और नर्तकी को देखने के लिए मुड़ गई:

"क्या वह अपने हाथों से कमाल का काम नहीं करता? मुझ जैसी औरत वो सब नहीं कर सकती जो वो अभी कर रहा है।" वह उसके करीब गई और रॉबर्ट के गुस्से से भरे चेहरे की ओर इशारा करते हुए बोली, "देखो, उसे चोट लगी है।" सेंट-लूप के प्रति उसके सच्चे स्नेह के विपरीत, उस क्रूर आवेग के क्षणिक उल्लास में उसने कहा।

"सुनो, आखिरी बार, मैं तुमसे कसम खाकर कहता हूँ कि तुम कुछ भी कर लो—एक हफ्ते में तुम मुझे वापस पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाओगे—मैं नहीं आऊँगा; यह एक

स्पष्ट फैसला है, समझे, यह अटल है; तुम्हें एक दिन पछतावा होगा, जब बहुत देर हो चुकी होगी।"
शायद उसने यह बात ईमानदारी से कही हो, और कुछ परिस्थितियों में अपनी प्रेमिका को छोड़ने की पीड़ा उसे उसके साथ रहने की पीड़ा से कम क्रूर लगी हो।
"लेकिन, मेरे प्यारे बेटे," उसने मुझसे आगे कहा, "तुम्हें यहाँ खड़े नहीं रहना चाहिए, मैं तुम्हें बता रहा हूँ, इससे तुम्हें खांसी आ जाएगी।"
मैंने अपने रास्ते में आ रहे दृश्य की ओर इशारा किया। उन्होंने अपनी टोपी को छुआ और एक पत्रकार से कहा:
"क्या आप कृपया अपनी सिगार फेंक देंगे, महोदय? इसका धुआं मेरे मित्र के लिए हानिकारक है।"
उसकी प्रेमिका ने उसके साथ आने का इंतजार नहीं किया; अपने ड्रेसिंग रूम की ओर जाते समय वह मुड़ी और:
"क्या वे महिलाओं के साथ भी ये चालें चलते हैं, वो प्यारे-प्यारे छोटे हाथ?" उसने मंच के पीछे से नर्तकी की ओर झट से चिल्लाते हुए, बनावटी मासूमियत भरे मधुर स्वर में कहा। "तुम खुद भी बिल्कुल वैसी ही दिखती हो, मुझे यकीन है कि मैं तुम्हारे साथ और अपनी किसी परिचित लड़की के साथ बहुत अच्छा समय बिता सकती हूँ।"
पत्रकार ने कहा, "जहां तक मुझे पता है, धूम्रपान के खिलाफ कोई नियम नहीं है; अगर लोग अस्वस्थ हैं, तो उन्हें बस घर पर रहना होगा।"
नर्तकी ने अभिनेत्री की ओर रहस्यमय ढंग से मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
"अरे! रुक जाओ! तुम मुझे बहुत गुस्सा दिला दोगे," उसने उससे चिल्लाकर कहा। "फिर मुसीबत हो जाएगी।"
"खैर, महोदय, आप बहुत सभ्य नहीं हैं," सेंट-लूप ने पत्रकार से विनम्रतापूर्वक कहा, मानो वह किसी समाप्त हो चुकी घटना के सही-गलत का पूर्वव्यापी मूल्यांकन कर रहा हो।
उसी क्षण मैंने सेंट-लूप को अपना हाथ अपने सिर के ऊपर सीधा उठाते हुए देखा, मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति को संकेत दे रहे हों जिसे मैं देख नहीं पा रहा था, या किसी ऑर्केस्ट्रा के कंडक्टर की तरह। और वास्तव में—सिम्फनी या बैले में, जब एक साधारण छड़ी के इशारे पर

एक सुंदर लय के बाद हिंसक लय आती है, तो उससे भी अधिक सहजता से—अपने विनम्र शब्दों के तुरंत बाद उन्होंने पत्रकार के गाल पर जोरदार थप्पड़ मारा।

अब जबकि राजनयिकों की संयमित बातचीत और शांति की मुस्कुराती कलाओं की जगह युद्ध का भयंकर आक्रमण आ गया था, क्योंकि प्रहार से प्रहार होता है, तो मुझे युद्धरत लोगों को एक-दूसरे के खून में लथपथ देखकर आश्चर्य नहीं होता। लेकिन जो बात मेरी समझ से परे थी (उन लोगों की तरह जो मानते हैं कि किसी सीमा के निर्धारण जैसे मामूली विवाद पर दो देशों के बीच युद्ध छिड़ जाना नियमों के अनुसार नहीं है, या जब कोई बीमार व्यक्ति जिगर में सूजन जैसी मामूली बात पर मर जाता है) वह यह थी कि सेंट-लूप ने उन शब्दों का, जिनमें मित्रता का स्पष्ट आभास था, ऐसे कृत्य से कैसे अनुसरण किया जो किसी भी तरह से उनसे उत्पन्न नहीं हुआ था, जिसकी उन्होंने घोषणा भी नहीं की थी, वह कार्रवाई जो न केवल मानव अधिकारों बल्कि कारण और प्रभाव के नियम की अवहेलना करते हुए उठाई गई थी, वह क्रिया जो शून्य से उत्पन्न हुई थी। सौभाग्य से, प्रहार की हिंसा से पीछे हटते हुए पत्रकार का चेहरा पीला पड़ गया था और वह एक पल के लिए हिचकिचाया था, लेकिन उसने पलटवार नहीं किया। उसके दोस्तों की बात करें तो, उनमें से एक ने तुरंत अपना सिर घुमा लिया और किसी ऐसे व्यक्ति को टकटकी लगाकर देखने लगा जो स्पष्ट रूप से वहाँ नहीं था; दूसरे ने बहाना बनाया कि उसकी आँख में धूल का एक कण चला गया है, और दर्द के भाव से अपनी पलक को रगड़ने और दबाने लगा; जबकि तीसरा चिल्लाते हुए भाग गया: "हे भगवान, मुझे लगता है पर्दा उठने वाला है; हम अपनी सीटों पर नहीं बैठ पाएंगे।"

मैं सेंट-लूप से बात करना चाहता था, लेकिन नर्तकी के प्रति उनका आक्रोश इतना तीव्र था कि वह उनकी आँखों की सतह पर साफ झलक रहा था; त्वचा के नीचे की किसी संरचना की तरह, इसने उनके गालों को फुला दिया था, जिसके परिणामस्वरूप, उनकी आंतरिक बेचैनी पूरी तरह से गतिहीनता के रूप में प्रकट हो रही थी, उनमें आराम करने की शक्ति तक नहीं थी, यहाँ तक कि मुझसे एक शब्द सुनने और उसका उत्तर देने के लिए आवश्यक 'विवेक' भी नहीं था। पत्रकार के मित्र, घटना समाप्त होते देख, कांपते हुए फिर से उनके चारों ओर जमा हो गए। लेकिन, उन्हें अकेला छोड़ने के लिए शर्मिंदा होकर, वे पूरी तरह से दृढ़ थे कि उन्हें यह विश्वास दिलाया जाए कि उन्होंने कुछ भी नहीं देखा। और इसलिए उन्होंने अपनी बात को

फैलाया, एक ने उनकी आँख में धूल के कण पर, दूसरे ने उनके उस झूठे डर पर जब उन्होंने सोचा था कि पर्दा उठ रहा है, और तीसरे ने अभी-अभी गुजरे एक व्यक्ति और वक्ता के भाई के बीच आश्चर्यजनक समानता पर। वास्तव में, वे अपने मित्र के उनके अलग-अलग भावों को साझा न करने से काफी नाराज लग रहे थे।

"क्या, तुम्हें यह बात समझ नहीं आई? तुम ज़रूर अंधे हो रहे हो।"

"मैं तो यही कहता हूँ कि तुम सब कुत्तों का झुंड हो," उस पत्रकार ने गुर्राते हुए कहा जिसे सेंट-लूप ने दंडित किया था।

अपने द्वारा अपनाए गए हाव-भाव को भूलकर, जिसके अनुरूप उन्हें यह दिखावा करना चाहिए था कि वे उसकी बात नहीं समझ रहे हैं—लेकिन उन्होंने इस बारे में सोचा ही नहीं—वे उस परिस्थिति में प्रचलित कुछ अभिव्यक्तियों पर लौट आए: "इतनी उत्तेजना क्यों? शांत रहो, दोस्त। इतना उत्तेजित मत हो।"

उस सुबह नाशपाती के फूलों के नीचे मुझे एहसास हुआ कि रॉबर्ट का 'राहेल के लिए, जब वह प्रभु से दूर थी' वाला प्रेम कितना भ्रामक था; अब मुझे यह स्वीकार करना ही पड़ा कि उस प्रेम से उत्पन्न पीड़ाएँ कितनी वास्तविक थीं। धीरे-धीरे वह भावना जो पिछले एक घंटे से लगातार उसे व्याकुल रखे हुए थी, कम होने लगी, उसके भीतर समा गई, उसकी आँखों में एक खाली, लचीला क्षेत्र दिखाई देने लगा। मैं एवेन्यू गैब्रियल के एक कोने पर एक पल के लिए रुका, जहाँ से मैंने पहले अक्सर गिल्बर्ट को आते देखा था। मैंने कुछ सेकंड के लिए उन धुंधली यादों को याद करने की कोशिश की, और सेंट-लूप को पकड़ने के लिए एक तेज गति से दौड़ रहा था, तभी मैंने देखा कि एक सज्जन, कुछ फटे-पुराने कपड़े पहने हुए, उससे गोपनीय रूप से बात कर रहे थे। मैंने अनुमान लगाया कि यह रॉबर्ट का कोई निजी मित्र था; साथ ही वे एक-दूसरे के और भी करीब आते प्रतीत हुए; अचानक, जैसे कोई उल्कापिंड आकाश में चमकता है, मैंने देखा कि कई अंडाकार आकृतियाँ तेज़ी से वे सभी स्थितियाँ धारण कर रही थीं जो सेंट-लूप के चेहरे और शरीर के सामने एक टिमटिमाते तारामंडल का रूप ले रही थीं। गुलेल से फेंके गए पत्थरों की तरह, वे मुझे कम से कम सात प्रतीत हुईं। हालाँकि, वे केवल सेंट-लूप की मुट्ठियाँ थीं, जो इस आदर्श और सजावटी दिखने वाली व्यवस्था में तेज़ी से अपनी जगह बदल रही थीं। लेकिन यह विस्तृत प्रदर्शन सेंट-लूप द्वारा दी जा रही एक तरह की पिटाई मात्र थी, जिसका

वास्तविक स्वरूप, कलात्मक के बजाय आक्रामक, मुझे सबसे पहले उस फटेहाल कपड़े पहने सज्जन के चेहरे से पता चला, जो मानो अपना आत्म-नियंत्रण, अपना जबड़ा और काफी खून खो रहा था। जो लोग उससे सवाल करने आए, उन्हें उसने मनगढ़ंत जवाब दिए, अपना सिर घुमाया और जब उसने देखा कि सेंट-लूप भाग गया है और जल्दी से मेरे पास आ रहा है, तो वह उसे देखता रह गया। उसके चेहरे पर नाराज़गी, हताशा, लेकिन ज़रा भी गुस्से का भाव नहीं था। दूसरी ओर, सेंट-लूप गुस्से से भरा हुआ था, हालाँकि उसे कोई चोट नहीं लगी थी, और जब वह मेरे पास पहुँचा तो उसकी आँखों में अभी भी क्रोध की आग जल रही थी। यह घटना (जैसा मैंने सोचा था) थिएटर में हुए हमले से बिल्कुल भी संबंधित नहीं थी। यह एक उत्तेजित आवारा था जिसने सेंट-लूप जैसे सुंदर दिखने वाले युवा सैनिक को देखकर उससे संबंध बनाने की कोशिश की थी। मेरा दोस्त इस 'गुट' की धृष्टता से हैरान था, जो अब अपने कामों को छिपाने के लिए रात के अंधेरे का भी इंतज़ार नहीं करते थे, और उसने उस सुझाव के बारे में उसी आक्रोश से बात की, जैसे अखबार पेरिस के केंद्र में दिन दहाड़े हुए सशस्त्र हमले और लूट की खबर छापते समय दिखाते हैं। फिर भी, उसके प्रहार का शिकार एक लिहाज़ से क्षमायोग्य था, क्योंकि ढलान की प्रवृत्ति इच्छा को इतनी तेज़ी से आनंद के बिंदु तक ले जाती है कि सुंदरता अपने आप में सहमति का संकेत देने लगती है। अब, यह निर्विवाद था कि सेंट-लूप सुंदर था। उसने जो दंड दिया था, उसका उन लोगों के लिए, जिन्होंने उसका सामना किया था, यह मूल्य था कि यह उन्हें अपने आचरण पर गंभीरता से सोचने पर मजबूर करता था, हालांकि इतना लंबा नहीं कि वे अपने तरीके सुधार सकें और इस प्रकार कानून के हाथों दंड से बच सकें। और इसलिए, यद्यपि सेंट-लूप का हाथ बिना किसी पूर्व विचार के सहज रूप से चला था, ऐसे सभी दंड, भले ही वे कानून को सुदृढ़ करें, नैतिकता में किसी भी प्रकार की एकरूपता लाने में असमर्थ हैं।

इन घटनाओं, विशेषकर उस घटना से जो उनके मन पर सबसे अधिक हावी थी, रॉबर्ट के मन में कुछ देर अकेले रहने की इच्छा जागृत हुई। कुछ क्षण की चुप्पी के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हें छोड़कर श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने अकेले चली जाऊं। वे वहां मुझसे मिलेंगे, लेकिन उन्होंने यह बेहतर समझा कि हम कमरे में एक साथ प्रवेश न करें, ताकि ऐसा लगे कि वे अभी-अभी पेरिस पहुंचे हैं, न कि उन्होंने आधा दिन मेरे साथ बिताया है।

तृतीय

जैसा कि मैंने बालबेक में श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने से पहले अनुमान लगाया था, उनकी और श्रीमती डी गुएरमांटेस की दुनिया में बहुत बड़ा अंतर था। श्रीमती डी विलेपारिसिस उन महिलाओं में से एक थीं, जो एक प्रसिद्ध परिवार में जन्म लेकर, विवाह के माध्यम से एक और उतने ही प्रसिद्ध परिवार में प्रवेश करती हैं, फिर भी सामाजिक जगत में कोई खास स्थान नहीं रखतीं। कुछ डचेस (जो उनकी भतीजियाँ या भाभी हैं), शायद एक-दो शाही परिवार की सदस्य और पुराने पारिवारिक मित्र, को छोड़कर, उनके ड्राइंग रूम में केवल मध्यम वर्ग या किसी प्रांतीय या किसी न किसी तरह से कलंकित कुलीन वर्ग के लोग ही दिखाई देते हैं, जिनकी उपस्थिति ने उन सभी चालाक और घमंडी लोगों को लंबे समय से दूर भगा दिया है, जो रक्त संबंधों या इतनी पुरानी दोस्ती के कारण घर आने के लिए बाध्य नहीं हैं। निश्चित रूप से, मुझे पहले कुछ मिनटों के बाद ही यह समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि श्रीमती डी विलेपारिसिस किस प्रकार व्यवहार करती थीं। बालबेक में रहने वाली डी विलेपारिसिस को स्पेन के उस दौरे की छोटी से छोटी जानकारी भी हो गई थी, जो मेरे पिता उस समय एम. डी नॉरपोइस के साथ कर रहे थे। यहाँ तक कि इससे भी इस बात से संतुष्ट होना संभव नहीं था कि श्रीमती डी विलेपारिसिस और राजदूत के बीच बीस साल से अधिक पुरानी घनिष्ठता ही उस महिला के सामाजिक रुतबे में गिरावट का कारण हो सकती है, जहाँ सबसे बुद्धिमान महिलाएं भी उनसे कहीं कम सम्मानजनक प्रेमियों के साथ संबंध होने का दावा करती थीं, और यह भी कि मार्किज़ के लिए राजदूत शायद कई सालों से एक पुराने दोस्त से बढ़कर कुछ नहीं रहे थे। क्या श्रीमती डी विलेपारिसिस के अतीत में और भी कई रोमांचक अनुभव रहे थे? उस समय उनका स्वभाव अब की तुलना में अधिक भावुक था, और वे शांत और धार्मिक वृद्धावस्था में थीं, जिसमें उन जोशीले, बीते वर्षों की कुछ सौम्यता भी झलकती थी। क्या वे किसी तरह उस ग्रामीण इलाके में, जहाँ वे इतने लंबे समय से रह रही थीं, कुछ ऐसे घोटालों से बच नहीं पाईं जो युवा पीढ़ी को अज्ञात थे, जिन्होंने केवल उनके प्रभाव को एक असमान और दोषपूर्ण अतिथि सूची में देखा, जो अन्यथा किसी भी तरह के साधारणता के दाग से मुक्त होनी चाहिए थी? क्या उनके भतीजे द्वारा उन्हें दी गई 'तेज जुबान' ने उन पुराने दिनों

में उनके दुश्मन बना दिए थे? क्या इसने उन्हें पुरुषों के साथ कुछ सफलताओं का फायदा उठाकर महिलाओं से बदला लेने के लिए प्रेरित किया था? यह सब संभव था; और न ही श्रीमती डी विलेपारिसिस की विनम्रता या उदारता के बारे में बोलने का वह अत्यंत संवेदनशील तरीका—जो न केवल उनके शब्दों बल्कि उनके उच्चारण को भी इतनी सूक्ष्मता देता था—इस धारणा को अमान्य कर सकता था। जो लोग न केवल कुछ सद्गुणों की प्रशंसा करते हैं, बल्कि वास्तव में उनके आकर्षण को महसूस करते हैं और उन्हें अद्भुत ढंग से समझते हैं (वास्तव में वे लोग जो अपने संस्मरण लिखते समय उन सद्गुणों का एक सार्थक चित्रण प्रस्तुत करेंगे), वे अक्सर उस शांत, सरल, निष्कपट पीढ़ी से उत्पन्न होते हैं, जिसने उन सद्गुणों का अभ्यास किया था, लेकिन वास्तव में उसका हिस्सा नहीं होते। उस पीढ़ी की झलक उनमें दिखाई देती है, लेकिन वह निरंतरता उनमें नहीं है। उस पीढ़ी के चरित्र के स्थान पर हमें ऐसी संवेदनशीलता और बुद्धि मिलती है जो कर्म के अनुकूल नहीं है। और चाहे श्रीमती डी विलेपारिस के जीवन में कोई घोटाला हुआ हो या न हुआ हो, जो (यदि हुआ होता) तो उनके नाम की चमक को धूमिल कर देता, यह उनकी बुद्धि ही थी, जो एक प्रतिष्ठित महिला की बुद्धि की तुलना में एक साधारण लेखक की बुद्धि से अधिक मिलती-जुलती थी, जो निस्संदेह उनके सामाजिक पतन का कारण बनी।

यह सच है कि संतुलन और संयम जैसे गुण, जिनकी श्रीमती डी विलेपारिसिस ने विशेष रूप से प्रशंसा की थी, वे कोई उत्कृष्ट गुण नहीं थे; लेकिन संयम की बात पूरी तरह से करने के लिए, केवल 'संयम' शब्द पर्याप्त नहीं है; हमें रचनाकार के उन गुणों की आवश्यकता है जो पूर्णतः अनियंत्रित प्रशंसा को दर्शाते हैं। मैंने बालबेक में देखा था कि कुछ महान कलाकारों की प्रतिभा श्रीमती डी विलेपारिसिस के लिए पूरी तरह से समझ से परे थी; और वह केवल उनका सूक्ष्म उपहास कर सकती थीं और अपनी समझ की कमी को सुंदर और विनोदी ढंग से व्यक्त कर सकती थीं। लेकिन यह विनोद और सुंदरता, जिस स्तर तक उन्होंने इसे पहुँचाया, वहाँ स्वयं—एक अलग स्तर पर—और भले ही इनका उपयोग उत्कृष्ट कृतियों को कमतर आंकने के लिए किया गया हो—सच्चे कलात्मक गुण बन गए। अब ऐसे गुणों का किसी भी सामाजिक स्थिति पर प्रभाव एक विकृत गतिविधि है जिसे चिकित्सक 'चुनावी' कहते हैं, और यह इतना विघटनकारी होता है कि समाज के सबसे दृढ़ स्तंभ भी लंबे समय तक टिक नहीं पाते।

कलाकार जिसे बुद्धि कहते हैं, वह फैशनेबल दुनिया को कोरी धृष्टता लगती है, क्योंकि कलाकार जिस एकमात्र दृष्टिकोण से चीजों को देखते और परखते हैं, उसे न समझ पाने के कारण, और जब वे किसी अभिव्यक्ति का चुनाव करते हैं या किसी से मित्रता शुरू करते हैं, तो कलाकारों के प्रति विशेष आकर्षण को न समझ पाने के कारण, उनकी संगति में थकावट और चिड़चिड़ाहट महसूस होती है, जिससे शीघ्र ही घृणा उत्पन्न हो जाती है। फिर भी, अपनी बातचीत में, और यही बात उनके द्वारा बाद में प्रकाशित संस्मरणों के बारे में भी कही जा सकती है, श्रीमती डी विलेपारिसिस ने एक विशिष्ट प्रकार की सामाजिक शालीनता का प्रदर्शन किया। महान कृतियों को बिना समझे, कभी-कभी तो बिना ध्यान दिए ही, उन्होंने अपने जीवनकाल से, और जिसे उन्होंने बड़ी कुशलता और आकर्षण के साथ वर्णित किया, उन उपहारों में से केवल सबसे तुच्छ चीजों को ही सहेज कर रखा था जो उन्हें प्राप्त हुए थे। लेकिन इस तरह का वर्णन, भले ही वह केवल गैर-बौद्धिक विषयों पर ही क्यों न हो, फिर भी बौद्धिक रचना ही है, और किसी पुस्तक या बातचीत में, जो लगभग एक ही बात है, जानबूझकर हल्केपन का आभास देने के लिए एक गंभीर स्पर्श की आवश्यकता होती है, जो विशुद्ध रूप से हल्के-फुल्के व्यक्ति के लिए संभव नहीं होगा। एक महिला द्वारा लिखित और उत्कृष्ट कृति मानी जाने वाली संस्मरणों की एक पुस्तक में, जिस वाक्यांश को लोग सहजता और सुंदरता के आदर्श के रूप में उद्धृत करते हैं, उसने मुझे हमेशा यह संदेह करने पर मजबूर किया है कि इस तरह के हल्केपन के स्तर तक पहुँचने के लिए, लेखिका की शिक्षा नीरस रही होगी, उनका परिवेश उबाऊ रहा होगा, और एक लड़की के रूप में वह शायद अपने दोस्तों को एक असहनीय अभिमानी लगी होंगी। और कुछ साहित्यिक गुणों और सामाजिक विफलता के बीच यह संबंध इतना अपरिहार्य है कि जब हम मैडम... आज डी विलेपारिसिस के संस्मरणों में, किसी भी पृष्ठ पर एक उपयुक्त विशेषण या उपमाओं की एक श्रृंखला पाठक को उस गहरे लेकिन बर्फीले सम्मान की कल्पना करने में सक्षम बनाएगी जो दूतावासों की सीढ़ियों पर श्रीमती लेरोई जैसी अभिमानी महिला द्वारा वृद्ध मार्क्विज़ को दिया गया होगा। शायद लेरोई ने गुएरमांटे परिवार से मिलने जाते समय उनके लिए एक कार्ड छोड़ा होगा, लेकिन डॉक्टरों या वकीलों की पत्नियों के बीच अपनी प्रतिष्ठा खोने के डर से कभी उनके घर में कदम नहीं रखा होगा। शायद अपनी युवावस्था में, ज्ञान के नशे में चूर श्रीमती डी विलेपारिसिस यह नहीं समझ

पाई थीं कि समाज में अपने से कम बुद्धिमान और कम शिक्षित लोगों पर ऐसे तीखे प्रहार करना कितना महत्वपूर्ण है, जिन्हें पीड़ित व्यक्ति कभी नहीं भूलता।

इसके अलावा, प्रतिभा कोई अलग वस्तु नहीं है जिसे सामाजिक सफलता दिलाने वाले गुणों के साथ कृत्रिम रूप से जोड़कर समाज में 'संपूर्ण स्त्री' का निर्माण किया जाता है। यह एक विशिष्ट नैतिक स्वभाव का जीवंत परिणाम है, जिसमें आमतौर पर कई नैतिक गुणों की कमी होती है और जिसमें एक ऐसी संवेदनशीलता प्रबल होती है जिसके अन्य प्रकटीकरण, जैसे कि किताबों में दिखाई न देने वाली अभिव्यक्तियाँ, जीवन के दौरान स्पष्ट रूप से प्रकट हो सकती हैं, उदाहरण के लिए कुछ जिज्ञासाएँ, कुछ सनक, अपने मनोरंजन के लिए इधर-उधर जाने की इच्छा, न कि अपने सामाजिक संबंधों को बढ़ाने, बनाए रखने या मात्र अभ्यास करने के उद्देश्य से। मैंने बालबेक में श्रीमती डी विलेपारिसिस को अपने नौकरों के अंगरक्षकों से घिरे हुए देखा था, और होटल के हॉल में बैठे लोगों की ओर देखे बिना ही वह वहाँ से गुज़र गईं। लेकिन मुझे पूर्वाभास हो गया था कि यह संयम उदासीनता के कारण नहीं था, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह हमेशा से इसी तक सीमित नहीं थीं। उसे अचानक किसी न किसी से मिलने की तीव्र इच्छा हो जाती थी, क्योंकि उसने उसे देखा होता था और उसे सुंदर समझा होता था, या केवल इसलिए कि उसे बताया गया होता था कि वह मनोरंजक है, या इसलिए कि वह उसे अपने परिचित लोगों से अलग लगा होता था, जो उस समय, जब उसने अभी तक उनकी कद्र करना शुरू नहीं किया था क्योंकि वह सोचती थी कि वे उसे कभी निराश नहीं करेंगे, सभी फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सबसे उच्च वर्ग से थे। उस बोहेमियन, विनम्र मध्यमवर्गीय सज्जन को, जिसे उसने अपना स्नेह दिया था, उसे निमंत्रण भेजने पड़ते थे, जिनके महत्व को वह समझ नहीं पाता था, और यह आग्रह धीरे-धीरे उन संशयवादियों की नजरों में उसे नीचा दिखाने लगा, जो किसी घर की शान-शौकत का आकलन उन लोगों से करते थे जिन्हें उसकी मालकिन ने आमंत्रित नहीं किया था, न कि उन लोगों से जिन्हें वह आमंत्रित करती थी। निश्चित रूप से, यदि अपनी युवावस्था के किसी क्षण में श्रीमती... डी विलेपारिसिस, कुलीन वर्ग के उच्च वर्ग से संबंधित होने की संतुष्टि से तृप्त होकर, अपने आस-पास के लोगों को अपमानित करने में एक प्रकार का आनंद पाती थी। जानबूझकर समाज में अपनी स्थिति को कमजोर करते हुए, उसने उस स्थिति को पूरी तरह से महत्व देना शुरू कर दिया था, जब वह निश्चित रूप से खो गई थी।

वह डचेसों को यह दिखाना चाहती थी कि वह उनसे बेहतर है, उन सभी बातों को कहकर और करके जो वे कहने या करने की हिम्मत नहीं करती थीं। लेकिन अब जब उसके करीबी रिश्तेदारों को छोड़कर बाकी सभी ने उससे मिलना बंद कर दिया था, तो उसने खुद को छोटा महसूस किया और एक बार फिर शासन करने की कोशिश की, लेकिन बुद्धि के बजाय किसी और शक्ति से। वह उन सभी महिलाओं को अपने घर वापस लाना चाहती थी जिन्हें उसने इतनी मेहनत से दूर भगाया था। कितनी ही महिलाओं के जीवन, जिनके बारे में बहुत कम जानकारी है (क्योंकि हम सभी अपनी उम्र के अनुसार अलग-अलग दुनिया में रहते हैं, और बड़ों की समझदारी युवाओं को अतीत का कोई स्पष्ट विचार बनाने और इस चक्र को पूरा करने से रोकती है), इस तरह विपरीत अवधियों में विभाजित हुए हैं, जिनमें से अंतिम अवधि पूरी तरह से उस चीज़ को पुनः प्राप्त करने के लिए समर्पित है जिसे दूसरी अवधि में इतनी लापरवाही से हवा में उड़ा दिया गया है। किस तरह से हवा में उड़ा दिया गया? युवा लोग इसकी कल्पना करने में और भी कम सक्षम हैं, क्योंकि वे अपने सामने एक वृद्ध और सम्मानित मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस को देखते हैं और उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि आज की गंभीर डायरी लेखिका, अपने बर्फीले बालों के ढेर के नीचे इतनी गरिमामय, कभी एक ऐसी मौज-मस्ती करने वाली महिला रही होगी जो शायद उन दिनों की पसंदीदा थी, और शायद उन पुरुषों की दौलत उड़ाती थी जो अब अपनी कब्रों में सो रहे हैं; कि उसने भी अपनी उच्च जन्म के कारण प्राप्त स्थिति को नष्ट करने के लिए एक दृढ़ और स्वाभाविक परिश्रम के साथ काम किया, इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि उस सुदूर काल में भी श्रीमती... डी विलेपारिसिस अपनी पदवी को अधिक महत्व नहीं देती थीं। ठीक उसी प्रकार, एक न्यूरोस्टेनिक व्यक्ति जिस एकांत और निष्क्रियता के जाल में फंसा रहता है, वह उसे सुबह से शाम तक बुने बिना भी असहनीय प्रतीत हो सकता है, और जब वह अपने बंदी जाल में एक और जाल जोड़ने की जल्दी में होता है, तो संभव है कि वह केवल नृत्य, खेल और यात्रा के सपने देख रहा हो। हम हर क्षण अपने जीवन को आकार देने में लगे रहते हैं, लेकिन अनजाने में, जैसे किसी पुस्तक में दिए गए उदाहरण की नकल करते हैं, हम उस व्यक्ति की विशेषताओं को अपनाते हैं जो हम हैं, न कि उस व्यक्ति की जो हम बनना चाहते हैं। श्रीमती

लेरोई का तिरस्कारपूर्ण प्रणाम कुछ हद तक श्रीमती डी विलेपारिसिस के वास्तविक स्वभाव को व्यक्त करता है; यह उनकी महत्वाकांक्षा से बिल्कुल मेल नहीं खाता था।

निस्संदेह, जिस क्षण श्रीमती लेरोई—श्रीमती स्वान के प्रिय मुहावरे का प्रयोग करें तो—मार्क्विस को 'नज़रअंदाज़' कर रही थीं, उसी समय मार्क्विस को यह याद करके सांत्वना मिल सकती थी कि महारानी मैरी-एमिली ने एक बार उनसे कहा था: "तुम मेरे लिए बेटी जैसी हो।" लेकिन शाही मित्रता के ऐसे निशान, गुप्त और दुनिया से अनजान, केवल मार्क्विस के लिए ही मौजूद थे, जैसे किसी पुराने संगीत विद्यालय के पदक विजेता की डिग्री पर धूल जमी हो। सच्चे सामाजिक लाभ केवल वे होते हैं जो जीवन का सृजन करते हैं, जो बिना किसी को उन्हें सहेजने या सार्वजनिक करने की कोशिश किए ही गायब हो सकते हैं, क्योंकि उसी दिन सौ अन्य उनकी जगह ले लेंगे। और भले ही उन्हें महारानी के वे शब्द याद हों, फिर भी वे उन्हें खुशी-खुशी इस बात के लिए बदल देतीं कि उनसे हर जगह यह पूछा जाता रहे कि कौन सी श्रीमती लेरोई... लेरोई, मानो किसी रेस्तरां में बैठे किसी महान लेकिन अज्ञात कलाकार की तरह हो, जिसकी प्रतिभा न तो उसके शर्मीले चेहरे की रेखाओं में झलकती है और न ही उसके पुराने, फटेहाल कोट की शैली में, वह खुशी-खुशी समाज के सबसे निचले तबके के उस युवा मजदूर की भूमिका भी निभाना चाहेगा, जो बगल की मेज पर दो अभिनेत्रियों के साथ बैठा है, जिसके पास एक चापलूसी भरी और निरंतर कतार में प्रबंधक, मुख्य वेटर, नौकर और यहां तक कि रसोई के नौकर भी उसे प्रणाम करने के लिए रसोई से बाहर आते हैं, मानो परियों की कहानियों में होता है, जबकि शराब परोसने वाला, अपनी बोतलों की तरह धूल से सना हुआ, लंगड़ाता और स्तब्ध होकर आगे बढ़ता है, मानो तहखाने से ऊपर आते समय दिन के उजाले में आने से पहले उसका पैर मुड़ गया हो।

हालांकि, यह उल्लेखनीय है कि श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में श्रीमती लेरोई की अनुपस्थिति, यदि घर की मालकिन को परेशान करती भी थी, तो उनके अधिकांश मेहमानों को इसका एहसास नहीं हुआ। वे श्रीमती लेरोई की उस विशेष स्थिति से पूरी तरह अनभिज्ञ थे, जो केवल संभ्रांत वर्ग को ही ज्ञात थी, और उन्हें इस बात पर कभी संदेह नहीं हुआ कि श्रीमती डी विलेपारिसिस के स्वागत समारोह, जैसा कि आज उनके संस्मरणों के पाठक आश्वस्त हैं, पेरिस में सबसे शानदार रहे होंगे।

सेंट-लूप छोड़ने के बाद, जब मैं अपने पिता को एम. डी नॉरपोइस द्वारा दी गई सलाह पर श्रीमती विलेपारिसिस से मिलने गया, तो मैंने उन्हें उनके ड्राइंग रूम में पाया, जो पीले रेशम से सजा हुआ था। उस ड्राइंग रूम में सोफे और शानदार आर्मचेयर, जिन पर ब्यूवेस टेपेस्ट्री की गद्दी लगी थी, पके हुए रसभरी के लगभग बैंगनी लाल रंग की तरह चमक रहे थे। गुएरमांटेस और विलेपारिसिस के चित्रों के साथ-साथ, रानी मैरी-एमिली, बेल्जियम की रानी, प्रिंस डी जॉइनविले और ऑस्ट्रिया की महारानी के चित्र भी थे - जो स्वयं उनके द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए थे। खुद डी विलेपारिसिस, काले फीते की एक पुराने ज़माने की टोपी पहने (जिसे उन्होंने स्थानीय या ऐतिहासिक रंग की उसी सहज समझ के साथ सहेज कर रखा था, जैसे कोई ब्रेटन सराय मालिक, जिसके ग्राहक चाहे कितने भी पेरिसवासी हो गए हों, फिर भी अपनी नौकरानियों को चौड़ी आस्तीन वाली पोशाक पहनाना ज़्यादा उचित समझता है), एक छोटी सी मेज पर बैठी थीं, जिसके सामने उनके ब्रश, पैलेट और जलरंगों में बनी एक अधूरी फूलों की पेंटिंग के साथ-साथ गिलासों, तश्तरियों और प्यालों में मॉस-रोज़, ज़िनिया और मेडनहेयर फर्न सजे हुए थे। अचानक आने वाले लोगों की भीड़ के कारण उन्होंने इन फूलों को बनाना अधूरा छोड़ दिया था, और ये फूल किसी अठारहवीं सदी की मेज़ोटिंट पेंटिंग की तरह किसी फूलवाले की दुकान के काउंटर पर ढेर लगे हुए लग रहे थे। इस ड्राइंग रूम को जानबूझकर थोड़ा गर्म किया गया था क्योंकि मार्क्विज़ को अपने गाँव के घर से यात्रा के दौरान सर्दी लग गई थी। जब मैं वहाँ पहुँचा, तब वहाँ पहले से ही एक लाइब्रेरियन मौजूद थीं, जिनके साथ श्रीमती डी विलेपारिसिस... डी विलेपारिसिस ने सुबह का समय विभिन्न ऐतिहासिक हस्तियों द्वारा स्वयं को लिखे गए हस्तलिखित पत्रों को चुनने में बिताया था, जिन्हें वे अपने संस्मरणों में दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में प्रतिकृति के रूप में प्रस्तुत करने वाली थीं, जिन्हें वे प्रकाशन के लिए तैयार कर रही थीं। एक गंभीर और मौन इतिहासकार, जिसने यह सुनकर कि उन्हें डचेस डी मोंटमोरेंसी का चित्र विरासत में मिला है और अभी भी उनके पास है, उनसे फ्रोंडे पर अपने काम में इसे एक प्लेट के रूप में पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति मांगने आया था; इस समूह में जल्द ही मेरे पुराने मित्र ब्लोच, जो अब एक उभरते हुए नाटककार थे, के शामिल होने से और भी मजबूती आ गई, जिन पर वे अपनी अगली दोपहर की पार्टियों में अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की निःशुल्क सेवाएं प्राप्त करने के लिए निर्भर थीं। यह सच था

कि सामाजिक परिदृश्य बदल रहा था और ड्रेफस मामला जल्द ही यहूदियों को सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर धकेलने वाला था। लेकिन, एक बात तो तय है, ड्रेफस विरोधी चक्रवात चाहे जितना भी उग्र हो, तूफ़ान के पहले घंटे में लहरें सबसे ऊंची नहीं होतीं। दूसरी बात, श्रीमती... डी विलेपारिसिस ने अपने परिवार के एक बड़े हिस्से को यहूदियों के खिलाफ़ ज़बरदस्त विरोध करने के लिए छोड़ दिया था और अब तक वह इस मामले से पूरी तरह अलग रही थी और उसने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया था। अंत में, ब्लोच जैसा एक युवक, जिसे कोई नहीं जानता था, शायद किसी की नज़र में न आए, जबकि प्रमुख यहूदी, उनकी पार्टी के प्रतिनिधि, पहले से ही खतरे में थे। उसकी ठुड्डी अब बकरी जैसी दाढ़ी से नुकीली थी, उसने दोहरे चश्मे और एक लंबा फ्रॉक कोट पहना हुआ था, और उसके हाथ में पपाइरस के रोल जैसा दस्ताना था। रोमानियाई, मिस्रवासी, तुर्क यहूदियों से नफ़रत कर सकते हैं। लेकिन एक फ्रांसीसी ड्राइंग रूम में उन लोगों के बीच का अंतर इतना स्पष्ट नहीं होता, और एक इस्राइली का प्रवेश, मानो वह रेगिस्तान के बीच से निकल रहा हो, उसका शरीर लकड़बग्घे की तरह झुका हुआ हो, उसकी गर्दन तिरछी आगे की ओर निकली हो, और वह गहरे 'सलाम' में खुद को फैलाए, पूर्वी संस्कृति के प्रति एक विशेष रुचि को पूरी तरह संतुष्ट करता है। यह आवश्यक है कि यहूदी वास्तव में समाज में न हो, अन्यथा वह आसानी से एक सरदार का रूप धारण कर लेगा और उसके तौर-तरीके इतने फ्रांसीसी हो जाएंगे कि उसके चेहरे पर एक विद्रोही नाक, जो नास्टर्टियम की तरह टेढ़ी-मेढ़ी बढ़ती है, सुलेमान की नाक की बजाय मस्केरिल की नाक की याद दिलाएगी। लेकिन ब्लोच, फाउबर्ग के व्यायामों से न तो लचीला हुआ था और न ही इंग्लैंड या स्पेन के साथ मेलजोल से सम्मानित हुआ था, इसलिए विदेशी संस्कृति के प्रेमी के लिए, अपने यूरोपीय पहनावे के बावजूद, वह डेकैम्प्स के यहूदियों की तरह ही विचित्र और आकर्षक दृश्य बना रहा। अद्भुत नस्लीय शक्ति जो समय के आरंभ से ही, आधुनिक पेरिस में भी, हमारे थिएटरों के मंचों पर, हमारे सरकारी कार्यालयों के गुप्त कक्षों में, किसी अंत्येष्टि में, सड़कों पर, एक ठोस समूह के रूप में उभरती है, हमारे आधुनिक केशविन्यास के तरीकों पर अपनी छाप छोड़ती है, उन्हें आत्मसात करती है, हमें भुला देती है, उस फ्रॉक कोट को अनुशासित करती है जो उन पर लगभग वैसा ही दिखता है जैसा असीरियाई लेखकों को सूसा में दारियस के महल के द्वार के सामने एक स्मारक की पट्टी पर

औपचारिक पोशाक में चित्रित किया गया है। (बाद में दोपहर में ब्लोच ने शायद सोचा होगा कि एम. डी चार्लस ने यहूदी-विरोधी द्वेष से यह पूछा था कि क्या उनका पहला नाम यहूदी है, जबकि वास्तव में यह केवल सौंदर्यबोध और स्थानीय रंग के प्रति प्रेम से प्रेरित था।) लेकिन, एक क्षण के लिए, जब हम नस्लीय दृढ़ता की बात करते हैं तो हम यहूदियों, यूनानियों, फारसियों, उन सभी लोगों से प्राप्त होने वाली धारणा को सटीक रूप से व्यक्त नहीं करते हैं, जिनके बीच के अंतरों को नज़रअंदाज़ करना ही बेहतर है। शास्त्रीय चित्रों से हम प्राचीन यूनानियों के चेहरों को जानते हैं, सूसा के एक महल की दीवारों पर हमने असीरियन लोगों को देखा है। और इसलिए, पेरिस के एक ड्राइंग रूम में किसी न किसी समूह से संबंधित प्राच्य लोगों को देखकर हमें ऐसा लगता है मानो हम ऐसे प्राणियों के सामने हैं जिन्हें जादू-टोने की शक्तियों ने जीवित किया हो। अब तक हम केवल एक सतही छवि को जानते थे; देखो, इसने गहराई प्राप्त कर ली है, यह तीन आयामों में फैल गई है, यह गतिमान है। धनी बैंकर की बेटी और समाज की नवीनतम चहेती, वह युवती बिल्कुल उन नर्तकियों में से एक जैसी दिखती है जो एक ऐतिहासिक और कलात्मक बैले के कोरस में हेलास की कला को साक्षात रूप में प्रस्तुत करती हैं; फिर भी रंगमंच में यह दृश्य इन छवियों को कुछ हद तक नीरस बना देता है; दूसरी ओर, एक तुर्की महिला या एक यहूदी सज्जन के ड्राइंग रूम में प्रवेश करने पर जो दृश्य हमें देखने को मिलता है, वह उनके चेहरे को जीवंत कर देता है और उन्हें और भी विचित्र बना देता है, मानो वे वास्तव में किसी माध्यम के प्रयास से प्रकट हुए प्राणी हों। यह आत्मा है (या यों कहें कि वह बौना पदार्थ जिसमें—कम से कम अब तक—आत्मा को इस प्रकार के भौतिकीकरण में सिमट कर देखा गया है), यह वह आत्मा है जिसकी झलक हमें अब तक केवल संग्रहालयों में ही मिली है, प्राचीन यूनानियों की आत्मा, प्राचीन यहूदियों की आत्मा, जो एक साथ महत्वहीन और पारलौकिक जीवन से अलग हो गई है, जो हमारी आँखों के सामने यह विचलित करने वाला मूक अभिनय करती प्रतीत होती है। कमरे से बाहर जा रही उस युवती यूनानी महिला में हम व्यर्थ ही उस आकृति को गले लगाने का प्रयास करते हैं जिसकी प्रशंसा बहुत पहले एक फूलदान के किनारे पर की गई थी। मुझे लगा कि यदि मैंने श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम की रोशनी में ब्लोच की तस्वीरें ली होतीं, तो वे इज़राइल की वही छवि प्रस्तुत करतीं—इतनी विचलित करने वाली क्योंकि यह मानवता से उत्पन्न होती हुई

प्रतीत नहीं होती, इतनी भ्रामक क्योंकि फिर भी यह मानवता के समान ही विचित्र रूप से है—जो हमें आत्मा की तस्वीरों में मिलती है। अधिक व्यापक रूप से कहें तो, हमारे रोजमर्रा के जीवन में, उन लोगों की तुच्छ टिप्पणियाँ भी हमें अलौकिक का आभास कराती हैं जिनके बीच हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यहाँ तक कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति, जिससे हम मानो किसी घूमते हुए मेज के चारों ओर बैठकर अनंत के रहस्य को जानने की अपेक्षा करते हैं, केवल यही शब्द कहता है—वही शब्द जो अभी-अभी ब्लोच के मुख से निकले थे: "मेरी टोपी का ध्यान रखना।"

"ओह, मंत्रियों, मेरे प्रिय महोदय," श्रीमती। डी विलेपारिसिस, विशेष रूप से मेरे मित्र को संबोधित करते हुए, उस बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कह रही थीं जो मेरे आने से रुक गई थी: "कोई भी उन्हें देखना नहीं चाहता था। मैं उस समय केवल एक बच्ची थी, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि राजा मेरे दादाजी से विनती कर रहे थे कि वे एम. डेकाज़ेस को उस भोज में आमंत्रित करें जिसमें मेरे पिता डचेस डी बेरी के साथ नृत्य करने वाले थे। 'मुझे खुशी होगी, फ्लोरिमोंड,' राजा ने कहा। मेरे दादाजी, जो थोड़े बहरे थे, ने सोचा कि उन्होंने एम. डी कास्ट्रीज़ कहा है, जो पूछना बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था। जब उन्हें पता चला कि यह एम. डेकाज़ेस हैं, तो वे पहले तो क्रोधित हुए, लेकिन फिर मान गए, और उसी शाम एम. डेकाज़ेस को एक पत्र लिखकर उनसे विनती की कि वे मेरे दादाजी का सम्मान करें और उन्हें अगले सप्ताह आयोजित होने वाले भोज में अपनी उपस्थिति का गौरव प्रदान करें। क्योंकि हम उन दिनों में बहुत शिष्ट थे, महोदय, और कोई भी मेज़बान केवल अपना कार्ड भेजकर उस पर 'चाय' या 'नृत्य' या 'संगीत' लिखकर देने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी।" लेकिन अगर हम शिष्टाचार समझते थे तो हम अभद्रता करने से भी नहीं कतराते थे। श्री डेकाज़ेस ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया, लेकिन भोज से एक दिन पहले यह खबर फैली कि मेरे दादाजी अस्वस्थ हैं और उन्होंने अपना निमंत्रण रद्द कर दिया है। उन्होंने राजा की आज्ञा का पालन तो किया, लेकिन श्री डेकाज़ेस उनके भोज में नहीं आए... जी हाँ, महोदय, मुझे श्री मोले अच्छी तरह याद हैं, वे एक चतुर व्यक्ति थे—उन्होंने अकादमी में श्री डी विग्नी के स्वागत में यह साबित कर दिया था—लेकिन वे बहुत आडंबरपूर्ण थे, और मैं उन्हें अब भी अपने घर में भोजन के लिए नीचे आते हुए देख सकता हूँ, उनके हाथ में उनकी लंबी टोपी है।

"आह! यह तो उस युग की भयावहता को दर्शाता है, जो निश्चित रूप से बेहद संकीर्ण सोच वाला रहा होगा, क्योंकि अपने ही घर में टोपी हाथ में लेकर चलना एक सर्वमान्य रिवाज था," ब्लोच ने कहा, जो एक प्रत्यक्षदर्शी से उस दौर के कुलीन जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के इस दुर्लभ अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहता था। वहीं, पुस्तकालयाध्यक्ष, जो मार्क्विज़ का एक तरह से अस्थायी सचिव था, उसे स्नेहपूर्वक निहार रहा था मानो वह हम सभी से कह रहा हो: "देखो, वह कैसी है, उसे सब कुछ पता है, वह सबसे मिल चुकी है, तुम उससे कुछ भी पूछ सकते हो, वह वाकई अद्भुत है।"

"अरे नहीं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने जवाब दिया, बोलते हुए उसके करीब आते हुए, उस गिलास की ओर इशारा करते हुए जिसमें कुंवारी लड़की के बाल रखे थे और जिसे वह जल्द ही फिर से चित्रित करना शुरू करने वाली थी, "यह श्री मोले की एक आदत थी; बस इतना ही। मैंने अपने पिता को घर में कभी टोपी ले जाते नहीं देखा, सिवाय तब जब राजा आते थे, क्योंकि राजा जहाँ भी होते हैं, घर के मालिक उनके ड्राइंग रूम में केवल एक मेहमान होते हैं।"

"अरस्तू हमें अपने ग्रंथ के दूसरे अध्याय में बताते हैं...", फ्रोंडे के इतिहासकार एम. पियरे ने बड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा, लेकिन इतनी धीमी आवाज़ में कि किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। कुछ हफ़्तों से उन्हें तंत्रिका संबंधी अनिद्रा थी, जिसका इलाज हर तरह से कारगर नहीं हो रहा था। उन्होंने सोना छोड़ दिया था और लगभग बेहाल होकर, केवल तभी बाहर निकलते थे जब काम की वजह से ज़रूरी हो जाता था। इन यात्राओं को बार-बार दोहराना उनके लिए नामुमकिन था, जो दूसरों के लिए तो आसान थीं, लेकिन उन्हें करने में उतना ही समय लगता था मानो वे चाँद से उतरे हों। उन्हें इस बात पर हैरानी होती थी कि दूसरों का जीवन इतना स्थिर और स्थायी नहीं होता कि उनकी अपनी अचानक की इच्छाओं को पूरा किया जा सके। कभी-कभी उन्हें पुस्तकालय के दरवाज़े बंद मिलते थे, जहाँ वे बड़ी मुश्किल से खड़े होकर और मिस्टर वेल्स की कहानी के किसी रोबोट की तरह फ्रॉक कोट पहनकर पहुँचे थे। सौभाग्य से उन्हें मैडम डी विलेपारिसिस घर पर मिल गईं और वे उनसे चित्र देखने वाले थे।

इसी बीच ब्लोच ने उनकी बात काट दी। "सचमुच," ब्लोच ने कहा, श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा शाही यात्राओं के शिष्टाचार के बारे में कही गई बातों का जिक्र करते हुए। "क्या आप

जानते हैं, मुझे तो यह कभी पता ही नहीं था," मानो यह अजीब बात हो कि उन्हें यह हमेशा से पता न हो।

"उस तरह की मुलाकात की बात करें तो, क्या आपने कल सुबह मेरे भतीजे बेसिन द्वारा मेरे साथ किए गए उस मूर्खतापूर्ण मजाक के बारे में सुना?" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने पुस्तकालयाध्यक्ष से पूछा। "उसने मेरे लोगों से कहा कि उसका नाम बताने के बजाय, यह कहें कि स्वीडन की रानी मुझसे मिलने आई हैं।"

"क्या! उसने उनसे तुम्हें ठीक ऐसे ही कहलवा दिया! मुझे लगता है, उसमें कितनी हिम्मत है!" ब्लोच ने हंसते हुए कहा, जबकि इतिहासकार ने गरिमापूर्ण संकोच के साथ मुस्कुरा दिया।

"मैं काफी हैरान थी, क्योंकि मैं कुछ ही दिन पहले देश से लौटी थी; मैंने कुछ देर शांति से रहने के लिए खास तौर पर यह व्यवस्था की थी कि किसी को भी पता न चले कि मैं पेरिस में हूँ, और मैंने खुद से पूछा कि स्वीडन की रानी को इतनी जल्दी कैसे पता चल गया," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने आगे कहा, जिससे उनके मेहमान यह जानकर आश्चर्यचकित रह गए कि स्वीडन की रानी का आना उनकी मेज़बान के लिए कोई असामान्य बात नहीं थी।

दिन के आरंभ में श्रीमती डी विलेपारिसिस शायद लाइब्रेरियन के साथ मिलकर अपने संस्मरणों के चित्रों को व्यवस्थित कर रही थीं; अब वे, बिल्कुल अचेतन रूप से, उन चित्रों का प्रभाव एक आम जनता पर परखने का प्रयास कर रही थीं, जो अंततः उनके पाठकों का आधार बनेगी। उनका कमरा कई मायनों में एक वास्तव में फैशनेबल ड्राइंग-रूम से भिन्न हो सकता है, जहाँ आपको कई मध्यमवर्गीय महिलाओं की अनुपस्थिति से आश्चर्य होता, जिनके साथ श्रीमती डी विलेपारिसिस का गहरा जुड़ाव था, और इसके बजाय आपको फैशन की उन प्रतिभाशाली हस्तियों पर ध्यान जाता, जिन्हें श्रीमती लेरोई ने समय के साथ हासिल कर लिया था, लेकिन यह अंतर उनके संस्मरणों में स्पष्ट नहीं है, जिनसे लेखिका की कुछ महत्वहीन मित्रताएँ गायब हो गई हैं क्योंकि उनका उल्लेख करने का कभी कोई अवसर नहीं आता है। जो लोग उनसे मिलने नहीं आए, उनकी अनुपस्थिति से कोई कमी नहीं रह जाती, क्योंकि लेखक के पास सीमित स्थान होने के कारण केवल कुछ ही व्यक्तियों का उल्लेख संभव है, और यदि ये व्यक्ति शाही हस्तियाँ या ऐतिहासिक व्यक्तित्व हों, तो किसी भी संस्मरण संग्रह द्वारा जनता को दी जाने वाली विशिष्टता की अधिकतम छाप प्राप्त हो जाती है। श्रीमती लेरोई

की राय में, श्रीमती डी विलेपारिसिस की पार्टियाँ घटिया थीं; और श्रीमती डी विलेपारिसिस को श्रीमती लेरोई की राय से ठेस पहुँची। लेकिन आज शायद ही कोई श्रीमती लेरोई को याद करता है, उनकी राय हवा में गुम हो गई है, और यह श्रीमती डी विलेपारिसिस का ड्राइंग रूम है, जहाँ स्वीडन की रानी, ड्यूक डी औमाले, ड्यूक डी ब्रोगली, थियर्स, मोंटालेम्बर्ट, मोनसिग्नोर आदि अक्सर आते थे। डुपानलूप, जिसे होमर और पिंडार के समय से अपरिवर्तित रहने वाली उस भावी पीढ़ी द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी की सबसे प्रतिभाशाली रचनाओं में से एक माना जाएगा, और जिसके लिए ईर्ष्या करने योग्य बातें उच्च जन्म, शाही या अर्ध-शाही, और राजाओं, जनता के नेताओं और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की मित्रता हैं।

अब इन सबमें श्रीमती डी विलेपारिसिस का भी हिस्सा था, उन लोगों में जो अब भी उनके घर आते थे और उन यादों में—कभी-कभी थोड़ा-बहुत 'संशोधित'—जिनके ज़रिए वे अपनी सामाजिक गतिविधियों को अतीत तक बढ़ाती थीं। फिर थे एम. डी नॉरपोइस, जो अपने मित्र को समाज में कोई महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में तो असमर्थ रहे, लेकिन उनके घर ऐसे विदेशी या फ्रांसीसी राजनेताओं को ज़रूर लाते थे जिन्हें उनकी सेवाओं की आवश्यकता हो सकती थी और वे जानते थे कि उन्हें प्राप्त करने का एकमात्र प्रभावी तरीका श्रीमती डी विलेपारिसिस की चापलूसी करना था। संभवतः श्रीमती लेरोई भी इन यूरोपीय हस्तियों को जानती थीं। लेकिन, एक सुसंस्कृत महिला होने के नाते, जो किसी भी तरह की बौद्धिकता से दूर रहती थीं, वे अपने प्रधानमंत्रियों के सामने पूर्वी मुद्दे का ज़िक्र करने के बारे में उतना ही कम सोचती थीं जितना कि अपने उपन्यासकारों और दार्शनिकों के साथ प्रेम की प्रकृति पर चर्चा करने के बारे में। "प्रेम?" उन्होंने एक बार एक उत्सुक महिला को जवाब दिया था जिसने उनसे पूछा था: "प्रेम के बारे में आपके क्या विचार हैं?"—"प्रेम? मैं इसे लगातार लिखती हूँ, लेकिन मैं इसके बारे में कभी बात नहीं करती।" जब भी उनके घर में कोई साहित्यिक या राजनीतिक दिग्गज आता, तो वे डचेस डी गुएरमांटेस की तरह ही उन्हें पोकर खेलने के लिए बिठाकर संतुष्ट हो जातीं। वे अक्सर गंभीर चर्चाओं के बजाय पोकर खेलना पसंद करते, जिनमें श्रीमती डी विलेपारिसिस उन्हें शामिल होने के लिए मजबूर करती थीं। लेकिन ये चर्चाएँ, भले ही सामाजिक दृष्टि से हास्यास्पद रही हों, श्रीमती डी विलेपारिसिस के संस्मरणों को उन प्रशंसनीय अंशों, राजनीति पर उन निबंधों से परिपूर्ण करती हैं, जो आत्मकथाओं में उतने ही सहज लगते हैं, जितने

कॉर्नेल की त्रासदियों में। इसके अलावा, इस दुनिया के विलेपारिसिस परिवार के लोग ही भावी पीढ़ियों तक पहुँचने के लिए नियत हैं, क्योंकि इस दुनिया के लेरोइस परिवार के लोग लिख नहीं सकते, और अगर लिख भी सकते, तो उनके पास समय नहीं होता। और यदि विलेपारिसी परिवार की साहित्यिक रुचि ही लेरोइस परिवार की अवहेलना का कारण है, तो लेरोइस की यह अवहेलना बदले में विलेपारिसी परिवार की साहित्यिक रुचि को एक अनूठी सेवा प्रदान करती है, क्योंकि इससे उन विद्वान महिलाओं को वह अवकाश मिल जाता है जिसकी साहित्यिक पेशे को आवश्यकता होती है। ईश्वर, जिसकी इच्छा है कि संसार में कुछ ही पुस्तकें सुगठित हों, इसी उद्देश्य से लेरोइस परिवार के हृदयों में ऐसी अवहेलना भरता है, क्योंकि वह जानता है कि यदि ये पुस्तकें विलेपारिसी परिवार को भोजन पर आमंत्रित करें, तो वे तुरंत अपनी लेखन मेजों से उठकर आठ बजे अपनी गाड़ियों को आने का आदेश दे देंगे।

तभी कमरे में धीमी और गंभीर चाल से एक लंबी कद-काठी की बुजुर्ग महिला दाखिल हुई, जिसने अपने भूसे के हैट के उठे किनारे के नीचे मैरी-एंटोनेट की शैली में अपने बर्फीले बालों का विशाल गुच्छा दिखाया। तब मुझे नहीं पता था कि वह उन तीन महिलाओं में से एक थीं जो अभी भी पेरिस के समाज में देखी जाती थीं और जो, श्रीमती डी विलेपारिसिस की तरह, उच्च कुल की होते हुए भी, कुछ ऐसे कारणों से जो समय के अंधकार में खो गए थे और जिन्हें केवल उनके समय के किसी पुराने रईस द्वारा ही बताया जा सकता था, समाज के केवल उन निचले तबके के लोगों का ही स्वागत करने के लिए विवश हो गई थीं जिन्हें कहीं और पसंद नहीं किया जाता था। इन तीनों महिलाओं में से प्रत्येक की अपनी-अपनी 'ड्यूचेस डी गुएरमांटेस' थी, प्रतिभाशाली भतीजी जो नियमित रूप से उनसे मिलने आती थी, लेकिन उनमें से कोई भी दूसरी महिला की 'ड्यूचेस डी गुएरमांटेस' को अपने घर लाने में सफल नहीं हो सकी। श्रीमती डी विलेपारिसिस के इन तीनों महिलाओं के साथ अच्छे संबंध थे, लेकिन वह उन्हें पसंद नहीं करती थीं। शायद उनकी और अपनी सामाजिक स्थिति में समानता के कारण उनके बारे में उनकी धारणा सुखद नहीं थी। इसके अलावा, वे दोनों ही रूढ़िवादी और रूढ़िवादी महिलाएँ थीं, जो अपने घरों में लगातार और बार-बार होने वाले नाटकों के ज़रिए खुद को एक नियमित सैलून का भ्रम देने की कोशिश करती थीं। उनके बीच एक तरह की प्रतिद्वंद्विता पनप गई थी, जिसे उनके कुछ हद तक तूफानी जीवन के दौरान उनकी संपत्ति के पतन ने, पेशेवर

अभिनेता या अभिनेत्री की सहायता प्राप्त करने के मामले में, उनमें से प्रत्येक के लिए जीवन-मरण के संघर्ष में बदल दिया था। इसके अलावा, मार्क-एंटोनेट जैसे बालों वाली महिला, जब भी श्रीमती डी विलेपारिसिस को देखती, तो उसे यह याद आ जाता कि डचेस डी गुएरमांटेस शुक्रवार को उनके यहाँ नहीं आती थीं। उनका संतोष इस बात में था कि इन्हीं शुक्रवार को, खून का रिश्ता पानी के रिश्ते से गहरा होता है, तो उन्हें हमेशा प्रिंसेस डी पोइक्स मिल जाती थीं, जो उनकी निजी गुएरमांटेस थीं और जो कभी भी श्रीमती डी विलेपारिसिस के पास नहीं जाती थीं, हालाँकि श्रीमती... डी पोइक्स डचेस की घनिष्ठ मित्र थीं।

फिर भी, क्वाई मालाक्वेस के महल से लेकर रू डे टूरनॉन, रू डे ला चेज़ और फाउबर्ग सेंट-होनोरे के ड्राइंग रूम तक, एक ऐसा बंधन था जो जितना आकर्षक था उतना ही घृणास्पद भी था, इन तीनों पतित देवियों को एक साथ जोड़े रखता था। मैं इनके बारे में सामाजिक मिथकों के किसी शब्दकोश में खोजकर यह जानना चाहता था कि किस वीरतापूर्ण साहसिक कार्य या किस अपवित्र दुस्साहस के कारण उन्हें यह दंड मिला। उनकी समान प्रतिभा और उनकी वर्तमान स्थिति का समान पतन, निस्संदेह, उस आवश्यकता का एक बड़ा कारण था जिसने उन्हें एक-दूसरे से घृणा करते हुए भी एक-दूसरे के समाज में आने-जाने के लिए विवश किया। इसके अलावा, उनमें से प्रत्येक को दूसरों में अपने मेहमानों के प्रति विनम्र होने का एक सुविधाजनक तरीका मिल गया। भला ये मेहमान कैसे यह न समझें कि उन्होंने फाउबर्ग की सबसे दुर्गम चोटी को छू लिया है जब उनका परिचय एक ऐसी महिला से कराया गया जिसके पास कई उपाधियाँ थीं और जिसकी बहन का विवाह ड्यूक डे सागन या प्रिंस डे लिग्ने से हुआ था? खासकर तब जब अखबारों में इन दिखावटी समारोहों के बारे में असली समारोहों की तुलना में कहीं अधिक खबरें छपती थीं। सचमुच, इन बूढ़ी महिलाओं के 'शहर के चहेते' भतीजे—और उनमें सबसे आगे सेंट-लूप—जब किसी मित्र द्वारा लोगों से परिचय कराने के लिए कहा जाता, तो वे तुरंत जवाब देते, "मैं तुम्हें अपनी चाची विलेपारिसिस से मिलवा दूँगा," (या जो भी हो) "वहाँ तुम्हें दिलचस्प लोग मिलेंगे।" वे अच्छी तरह जानते थे कि यह उनके लिए इन महिलाओं की होशियार भतीजियों या भाभीयों से अपने मित्रों का परिचय करवाने की कोशिश करने से कहीं कम झंझट भरा होगा। कुछ बहुत बूढ़े पुरुषों और युवतियों ने, जिन्होंने यह बात उन पुरुषों से सुनी थी, मुझे बताया कि अगर इन महिलाओं को अब समाज में

स्वीकार नहीं किया जाता, तो इसका कारण उनके आचरण की असाधारण अनियमितता थी। जब मैंने आपत्ति जताई कि अनियमित आचरण सामाजिक सफलता में बाधा नहीं है, तो मुझे बताया गया कि यह आज के समय से कहीं अधिक गंभीर था। इन गंभीर महिलाओं का दुराचार, जो हमेशा खुद को इतना संभला रखती थीं, उन लोगों के मुख से निकलने वाले शब्दों में कुछ ऐसा था जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था, प्रागैतिहासिक काल के समान, विशालकाय जानवरों के युग के समान। संक्षेप में कहें तो, सफेद, नीले या लाल बालों वाली इन तीन पारकाओं ने अनगिनत सज्जनों के घातक धागे बुने थे। मुझे लगता है कि आज के लोग उन काल्पनिक युगों के दुर्गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यूनानियों ने इकारस, थीसियस और हेराक्लेस जैसे पात्रों को उन लोगों से गढ़ा था जो बाद में उन्हें देवता का दर्जा देने वालों से कुछ ही भिन्न थे। लेकिन किसी व्यक्ति के दुर्गुणों का कुल योग तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि वह उन्हें करने की स्थिति में न रह जाए। उस समय, उसके सामाजिक दंड की भयावहता, जो लगभग समाप्त होने वाली होती है और जिसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है, को देखकर ही व्यक्ति किए गए अपराध की भयावहता का आकलन करता है, कल्पना करता है और उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताता है। प्रतीकात्मक आकृतियों की उस गैलरी में, जो 'समाज' है, वास्तव में उज्ज्वल महिलाएं, सच्ची मेसालिनास, हमेशा कम से कम सत्तर वर्ष की एक महिला का गंभीर रूप प्रस्तुत करती हैं, जिनमें उच्च कोटि की गरिमा होती है, जो हर किसी का स्वागत करती हैं, लेकिन हर किसी का नहीं, जिनके घर वे महिलाएं कभी नहीं जाना चाहेंगी जिनका आचरण किसी भी तरह से पूर्णता से कम हो, जिन्हें पोप नियमित रूप से अपना स्वर्ण गुलाब भेजते हैं, और जिन्होंने अक्सर लामार्टिन के प्रारंभिक दिनों पर एक निबंध लिखा है जिसे फ्रांसीसी अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है। "कैसी हो, एलिक्स?" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मैरी-एंटोनेट महिला का अभिवादन किया, जिसने सभा में चारों ओर एक पैनी नज़र डाली यह देखने के लिए कि क्या इस ड्राइंग रूम में कोई ऐसी वस्तु तो नहीं है जो उसके अपने संग्रह में एक मूल्यवान वस्तु हो सकती है, ऐसी स्थिति में उसे इसे स्वयं खोजना होगा, क्योंकि श्रीमती डी विलेपारिसिस, उसे यकीन था, इसे उससे छिपाने के लिए पर्याप्त द्वेषपूर्ण होंगी। इस प्रकार श्रीमती... डी विलेपारिसिस ने बड़ी सावधानी बरती कि वह ब्लोच का परिचय उस बुज़ुर्ग महिला से न

करवाएं, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं ब्लोच को वही नाटक प्रस्तुत करने के लिए न कहा जाए जो वह क्काई मालाक्रेस के ड्राइंग रूम में उस बुज़ुर्ग महिला के लिए आयोजित कर रहे थे। वैसे भी, यह तो जैसे को तैसा ही था। दरअसल, पिछली शाम उस बुज़ुर्ग महिला के यहाँ श्रीमती रिस्टोरी आई थीं, जिन्होंने कविता पाठ किया था, और उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि श्रीमती डी विलेपारिसिस, जिनसे उन्होंने इतालवी कलाकार को अपने यहाँ लाया था, को इस कार्यक्रम के समाप्त होने तक इसकी जानकारी न मिले। ताकि वह इसे पहले अखबारों में न पढ़ें और नाराज़ न हों, बुज़ुर्ग महिला स्वयं आकर उन्हें इसके बारे में बताया, और उन्होंने ज़रा भी अपराधबोध नहीं दिखाया। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने यह सोचकर कि मेरा परिचय करवाने से ब्लोच के परिचय की तरह अप्रिय परिणाम नहीं होंगे, क्काई मालाक्रेस की उस बुज़ुर्ग महिला से मेरा परिचय करवा दिया। बाद वाली, जो बुढ़ापे में भी अपनी उन आकर्षक पंक्तियों को, जो वर्षों पहले फैशनेबल नौजवानों को मोहित कर लेती थीं और जिन्हें नकली कवि आज भी तुकबंदी वाली कविताओं में गाते हैं, कम से कम हरकतें करके संरक्षित रखना चाहती थी —और जिसने एक ऊंचे और दिखावटी कठोर रवैये की आदत डाल ली थी, जो उन सभी में आम है जिन्हें व्यक्तिगत अपमान के कारण लगातार आगे बढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है —उसने बड़ी ही सहजता से अपना सिर एक ठंडे वैभव के साथ नीचे झुकाया और दूसरी तरफ मुड़कर मेरी ओर ऐसे अनदेखा कर दिया जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही न हो। इस चालाक रवैये से वह श्रीमती डी विलेपारिसिस को आश्वस्त करती हुई प्रतीत हो रही थी: "देखिए, मैं उसके आस-पास भी नहीं हूँ; कृपया समझिए कि मुझे—किसी भी मायने में, बुढ़िया—लड़कों में कोई दिलचस्पी नहीं है।" लेकिन जब बीस मिनट बाद वह कमरे से बाहर निकली, तो आम बातचीत का फायदा उठाते हुए उसने मेरे कान में फुसफुसाकर मुझे अगले शुक्रवार को अपने बॉक्स में आने का निमंत्रण दिया, साथ में उन तीनों में से एक और भी थी, जिसका भव्य नाम - वह चोइसुल परिवार में पैदा हुई थी - ने मुझ पर जबरदस्त प्रभाव डाला।

"मुझे पता चला है, महोदय, कि आप श्रीमती ला डचेस डी मोंटमोरेंसी के बारे में कुछ लिखने की सोच रहे हैं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने फ्रोंडे के इतिहासकार से उस चिड़चिड़े स्वर में कहा, जिसे उन्होंने अनजाने में ही अपनी महान और सच्ची दयालुता के प्रभाव को बिगाड़ने दिया था। यह स्वर बढ़ती उम्र के साथ आने वाली झुंझलाहट, शिकायत की भावना और साथ

ही पुराने कुलीन वर्ग की लगभग देहाती बोली की नकल करने के दिखावे के कारण था: "मैं आपको उनका चित्र दिखाने जा रही हूँ, लूव्र में रखी प्रति का मूल चित्र।"
वह उठीं, अपने ब्रश फूलों के पास रख दिए, और उनकी कमर पर दिखाई देने वाला छोटा एप्रन, जिसे उन्होंने अपने कपड़ों पर रंग के दाग न लगने देने के लिए पहना था, उनके बोनट और बड़े चश्मे से एक बूढ़ी किसान महिला का आभास और भी पुख्ता कर रहा था, और उनके आलीशान साज-सामान से बिल्कुल विपरीत था - चाय और केक लाने वाला बटलर, और वर्दीधारी नौकर जिसे उन्होंने अब पूर्वी फ्रांस के सबसे प्रसिद्ध चैटर्स में से एक की मठाध्यक्षा, डचेस डी मोंटमोरेंसी के चित्र को रोशन करने के लिए बुलाया था। सभी लोग उठ खड़े हुए थे। "यह तो काफी मजेदार है," हमारी मेज़बान ने कहा, "कि इन चैटर्स में, जहाँ हमारी परदादी अक्सर मठाध्यक्षा बनती थीं, फ्रांस के राजा की बेटियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था। वे बहुत ही गुप्त संस्थाएँ थीं।" "राजा की बेटियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था," ब्लोच ने आश्चर्य से कहा, "क्यों नहीं?" "क्यों, क्योंकि उस नीच विवाह के बाद फ्रांस के राजघराने के पास पर्याप्त आवास नहीं बचा था।" ब्लोच की हैरानी और बढ़ गई। "एक निम्न वर्ग में विवाह? फ्रांस का राजघराना? यह कब हुआ था?" "जब उन्होंने मेडिसी परिवार में विवाह किया था," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने अत्यंत स्वाभाविक ढंग से उत्तर दिया। "यह एक सुंदर तस्वीर है, है ना, और एकदम सही स्थिति में संरक्षित है," उन्होंने आगे कहा।
"मेरी प्यारी," मैरी-एंटोनेट नाम की महिला ने कहा, "आपको अवश्य याद होगा कि जब मैं लिस्ज़्ट को आपसे मिलने लाई थी, तो उन्होंने कहा था कि यही वह प्रति है।"
"संगीत के बारे में लिस्ज़्ट की किसी भी राय को मैं स्वीकार कर लूँगा, लेकिन चित्रकला के बारे में नहीं। वैसे भी, उस समय उनका मानसिक संतुलन बिल्कुल बिगड़ा हुआ था, और मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी इस तरह की कोई बात कही हो। लेकिन उन्हें यहाँ लाने वाले आप नहीं थे। मैं उनसे राजकुमारी सायन-विटजेनस्टीन के यहाँ रात्रिभोज में कई बार मिल चुका था।"
एलिक्स का निशाना चूक गया था; वह चुपचाप, सीधी और स्थिर खड़ी थी। बारूद की कई परतों से ढका उसका चेहरा पत्थर जैसा लग रहा था। और, चूंकि उसका चेहरा गरिमामय था, वह अपने लबादे से छिपे एक त्रिकोणीय और काई से ढके चबूतरे पर, किसी पार्क की समय से जर्जर प्लास्टर की देवी जैसी प्रतीत हो रही थी।

"आह, मुझे एक और शानदार चित्र दिखाई दे रहा है," इतिहासकार ने कहना शुरू किया।
दरवाजा खुला और डचेस डी गुएरमांटेस कमरे में दाखिल हुईं।
"आप कैसी हैं?" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने बिना सिर हिलाए उनका अभिवादन किया, और अपने एप्रन की जेब से हाथ निकालकर नवोदित की ओर बढ़ाया; फिर अपनी भतीजी पर ध्यान देना बंद कर दिया और इतिहासकार की ओर लौटते हुए बोलीं, "यह डचेस डी ला रोशेफौकॉल्ड का चित्र है...।"
एक युवा नौकरानी, जिसका व्यवहार साहसी था और चेहरा आकर्षक था (लेकिन इतनी बारीकी से तराशा गया था कि उसकी सुंदरता सुनिश्चित हो सके, जिससे नाक थोड़ी लाल थी और बाकी की त्वचा थोड़ी लाल थी मानो हाल ही में किए गए उस कलात्मक चीरे से अभी भी दर्द हो रहा हो), एक थाली में एक कार्ड लेकर अंदर आई।
"ये वही सज्जन हैं जो श्रीमती ला मार्क्विज़ से कई बार मिलने आ चुके हैं।"
"क्या तुमने उसे बताया कि मैं घर पर हूँ?"
"उसे आवाजें सुनाई दे रही थीं।"
"अच्छा, तो ठीक है, उन्हें अंदर आने दीजिए। ये वो व्यक्ति हैं जिनसे मेरा परिचय कराया गया था," उन्होंने समझाया। "उन्होंने मुझे बताया कि वे घर आने के लिए बहुत उत्सुक थे। मैंने तो कभी ऐसा नहीं कहा था। लेकिन देखिए, उन्होंने पांच बार आने की जहमत उठाई; किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना ठीक नहीं है। महोदय," उन्होंने मुझसे कहा, "और आप, महोदय," फ्रोंडे के इतिहासकार से, "मुझे अपनी भतीजी, डचेस डी गुएरमांटेस से मिलवाने दीजिए।"
इतिहासकार ने झुककर अभिवादन किया, जैसा कि मैंने भी किया, और चूंकि उन्हें लगा कि इस अभिवादन के बाद कुछ दोस्ताना टिप्पणी होनी चाहिए, उनकी आंखें चमक उठीं और वे कुछ बोलने ही वाले थे कि श्रीमती डी गुएरमांटेस को देखकर वे एक बार फिर स्तब्ध रह गए।
श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने शरीर की स्वतंत्रता का लाभ उठाते हुए उसे अतिशय विनम्रता से आगे की ओर झुकाया और फिर बड़ी कुशलता से वापस आराम की स्थिति में ले आईं, मानो उनके चेहरे या आंखों ने यह दिखाया हो कि उन्हें किसी के सामने खड़े होने का एहसास ही नहीं हुआ हो; एक हल्की सी आह भरने के बाद उन्होंने इतिहासकार और मुझे देखकर अपने

ऊपर पड़े प्रभाव की निरर्थकता को अपनी नाक के नथुनों की कुछ ऐसी हरकतों से प्रकट किया, जो उनकी पूर्ण निष्क्रियता को दर्शाती थीं।
वह उद्दंड आगंतुक कमरे में दाखिल हुआ और भोलेपन और उत्साह के साथ सीधे श्रीमती डी विलेपारिसिस की ओर बढ़ा: वह लेग्रैंडिन था।
“आपसे मिलने का मौका देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,” उन्होंने ‘बहुत’ शब्द पर ज़ोर देते हुए कहना शुरू किया। “एक वृद्ध एकांतवासी को आपने जो सुख दिया है, वह अत्यंत दुर्लभ और सूक्ष्म है; मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसका प्रभाव...” मेरी नज़र पड़ते ही वे रुक गए।
"मैं अभी इस सज्जन को ड्यूशेस डे ला रोशेफौकॉल्ड का एक शानदार चित्र दिखा रहा था, जो मैक्सिम्स के लेखक की पत्नी थीं; यह एक पारिवारिक तस्वीर है।"
इसी बीच, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एलिक्स का अभिवादन किया और पिछले हर साल की तरह इस साल भी उनसे मिलने न आ पाने के लिए क्षमा मांगी। उन्होंने आगे कहा, "मैं मैडेलीन से तुम्हारे बारे में सब कुछ सुनती हूँ।"
"वह आज मेरे साथ दोपहर के भोजन पर थीं," क्काई मालाक्काइस की मार्क्विज़ ने इस संतोषजनक विचार के साथ कहा कि श्रीमती डी विलेपारिसिस ऐसा कभी नहीं कह सकती थीं।
इसी बीच मैं ब्लोच से बात कर रहा था, और उसके पिता के उसके प्रति बदले हुए रवैये के बारे में सुनकर मुझे डर लग रहा था कि कहीं वह मेरे जीवन से ईर्ष्या न करने लगे। इसलिए मैंने उससे कहा कि उसका जीवन हम दोनों में से ज़्यादा सुखमय होगा। मेरी यह बात केवल मित्रता दिखाने की इच्छा से प्रेरित थी। लेकिन ऐसी मित्रता उन लोगों को आसानी से आश्वस्त कर देती है जो खुद को बहुत भाग्यशाली समझते हैं, या उन्हें दूसरों को भी आश्वस्त करने की इच्छा जगा देती है। "हाँ, मैं सचमुच एक सुखद जीवन जी रहा हूँ," ब्लोच ने एक दिव्य मुस्कान के साथ मुझे आश्वस्त किया। "मेरे तीन सच्चे मित्र हैं; मुझे एक और की इच्छा नहीं है; एक प्यारी प्रेमिका है; मैं असीम रूप से खुश हूँ। ऐसा कोई नश्वर प्राणी दुर्लभ है जिसे पिता ज़्यूस इतना सुख प्रदान करते हैं।" मुझे लगता है कि वह मुख्य रूप से अपनी प्रशंसा करना और मुझे ईर्ष्या दिलाना चाहता था। शायद अपने आशावाद में मौलिकता दिखाने की भी कुछ इच्छा थी। यह

स्पष्ट था कि वह उन आम बोलचाल की भाषा में जवाब नहीं देना चाहते थे जो हर कोई इस्तेमाल करता है: "अरे, कुछ खास नहीं था," वगैरह। जब मैंने उनसे पूछा, "क्या यह एक अच्छा कार्यक्रम था?" यह सवाल उनके घर पर दोपहर के नृत्य के बारे में था जिसमें मैं नहीं जा सका था, तो उन्होंने एक सपाट, बेपरवाह लहजे में जवाब दिया, मानो नृत्य किसी और ने किया हो: "हाँ, बिल्कुल, यह बहुत अच्छा कार्यक्रम था, इससे बेहतर हो ही नहीं सकता था। यह सचमुच मनमोहक था!"

"आपने अभी जो बताया, उसमें मेरी बहुत रुचि है," लेग्रैंडिन ने श्रीमती डी विलेपारिसिस से कहा, "क्योंकि मैं कुछ दिन पहले ही सोच रहा था कि आपकी स्पष्ट और सटीक वाणी में उनसे कितनी समानता है, एक ऐसा गुण जिसे मैं दो विरोधाभासी शब्दों में व्यक्त करने का साहस करूंगा - असाधारण तीव्रता और अमर तात्कालिकता। आज दोपहर मैं आपकी कही हुई सारी बातें लिख लेना चाहता था; लेकिन मैं उन्हें याद रखूंगा। ये बातें, जैसा कि मुझे लगता है कि जुबर्ट ने कहा था, स्मृति के मित्र हैं। आपने जुबर्ट को कभी नहीं पढ़ा? ओह! वह तो आपकी बहुत प्रशंसा करते! मैं आज शाम आपको उनकी कुछ रचनाएँ भेज रहा हूँ, उनके विचारों का उपहार देना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उनमें आपकी जैसी शक्ति नहीं थी। लेकिन फिर भी उनमें बहुत आकर्षण था।"

मैं तुरंत लेग्रैंडिन के पास जाकर उनसे बात करना चाहता था, लेकिन वह मुझसे यथासंभव दूर रहे, निस्संदेह इस उम्मीद में कि मैं उनकी चापलूसी की उस धारा को न सुन लूँ, जिसे वह किसी भी विषय पर, अभिव्यक्ति की असाधारण कुशलता के साथ, श्रीमती डी विलेपारिसिस के सामने प्रस्तुत करते रहते थे।

उसने मुस्कुराते हुए अपने कंधे उचका दिए, मानो वह उसका मजाक उड़ाने की कोशिश कर रहा हो, और इतिहासकार की ओर मुड़ गई।

"और ये हैं प्रसिद्ध मैरी डी रोहन, डचेस डी शेवरूज़, जिनकी शादी सबसे पहले एम. डी लुयनेस से हुई थी।"

"मेरी प्यारी, श्रीमती डी लुयनेस की बात सुनकर मुझे योलैंड की याद आ गई; वह कल शाम मुझसे मिलने आई थी, और अगर मुझे पता होता कि तुम व्यस्त नहीं हो तो मैं तुम्हें भी बुलाने के

लिए कह देती। श्रीमती रिस्टोरी बिल्कुल संयोग से आ गईं और उन्होंने लेखिका की उपस्थिति में रानी कारमेन सिल्वा की कुछ कविताएँ सुनाईं। यह बहुत ही सुंदर था!"

"यह कैसा विश्वासघात है!" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने सोचा। "बेशक, यही तो वो कुछ दिन पहले श्रीमती डी ब्यूलेनकोर्ट और श्रीमती डी चैपोने से फुसफुसा रही थीं। मेरा कोई कार्यक्रम नहीं था," उन्होंने जवाब दिया, "लेकिन मुझे आना ही नहीं चाहिए था। मैंने रिस्टोरी को उनके सुनहरे दिनों में सुना है, अब तो वो बिल्कुल बर्बाद हो चुकी हैं। इसके अलावा, मुझे कारमेन सिल्वा की कविताएँ बिल्कुल पसंद नहीं हैं। रिस्टोरी एक बार यहाँ आई थीं, डचेस ऑफ आओस्टा उन्हें लाई थीं, दांते के 'इन्फर्नो' का एक सर्ग सुनाने के लिए। इस तरह की रचनाओं में उनका कोई सानी नहीं है।"

एलिक्स ने बिना पलक झपकाए वार सहा। वह पत्थर की तरह स्थिर रही। उसकी निगाहें तीखी और भावहीन थीं, नाक गर्व से उठी हुई थी। लेकिन उसके एक गाल पर पपड़ी जम रही थी। उसकी ठुड्डी पर एक हल्की, अजीब सी हरी और गुलाबी वनस्पति उग रही थी। शायद एक और सर्दी उसे धूल में मिला देगी।

"अब, महोदय, यदि आपको चित्रकला का शौक है, तो श्रीमती डी मोंटमोरेंसी का चित्र देखिए," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने लेग्रैंडिन से कहा, ताकि प्रशंसाओं का वह सिलसिला रुक जाए जो फिर से शुरू हो रहा था।

जब उसकी पीठ मुड़ी हुई थी, तब इस अवसर का लाभ उठाते हुए, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने व्यंग्यपूर्ण और प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी चाची की ओर इशारा किया।

"ये एम. लेग्रैंडिन हैं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने धीरे से कहा, "उनकी एक बहन है जिसका नाम श्रीमती डी कैम्ब्रेमर है, हालांकि इससे आपको मुझसे ज्यादा कुछ पता नहीं चलता।"

“क्या! अरे, मैं तो उसे अच्छी तरह जानती हूँ!” श्रीमती डी गुएरमांटेस ने हैरानी से कहा और अपने होठों पर हाथ रख लिया। “कहने का मतलब है, मैं उसे जानती नहीं, लेकिन पता नहीं बेसिन, जो अपने पति से न जाने कहाँ मिला था, ने उस अभागी औरत से कहा कि वह मुझसे मिलने आ सकती है। और वह आई भी। मैं आपको बता नहीं सकती कि क्या हुआ था। उसने मुझे बताया कि वह लंदन गई थी और मुझे ब्रिटिश संग्रहालय की सारी चीज़ों की पूरी सूची दे दी। और आज ही, जैसे ही मैं आपके घर से निकलूँगी, मैं ठीक वैसे ही जा रही हूँ जैसे आप मुझे

अभी देख रहे हैं, उस राक्षस को एक कार्ड देने। और एक पल के लिए भी यह मत सोचिए कि यह करना आसान है। वह किसी बीमारी से मरने का बहाना बनाकर हमेशा घर पर रहती है, चाहे आप रात सात बजे पहुँचें या सुबह नौ बजे, वह स्ट्रॉबेरी टार्ट्स की थाली लेकर आपका इंतज़ार कर रही होती है।"

"नहीं, लेकिन सच में, आप जानती हैं, वह एक विकराल इंसान है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपनी चाची की सवालिया निगाहों का जवाब दिया। "वह एक असंभव व्यक्ति है, वह 'प्लमिटिव' और ऐसी ही बातों के बारे में बात करती है।" "प्लमिटिव' का क्या मतलब है?" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने पूछा। "मुझे ज़रा भी पता नहीं!" डचेस ने बनावटी गुस्से में कहा। "मैं जानना भी नहीं चाहती। मैं इस तरह की भाषा नहीं बोलती।" और यह देखकर कि उनकी चाची को सचमुच नहीं पता था कि प्लमिटिव क्या होता है, खुद को यह दिखाने की संतुष्टि के लिए कि वह एक विद्वान होने के साथ-साथ शुद्धतावादी भी हैं, और श्रीमती डी गुएरमांटेस का मज़ाक उड़ाने के बाद, अब अपनी चाची का मज़ाक उड़ाने के लिए... डी कैम्ब्रेमर: "क्यों नहीं, बिल्कुल," उसने अपनी बनावटी चिड़चिड़ी मनोदशा को दबाते हुए हल्की हंसी के साथ कहा, "हर कोई जानता है कि इसका क्या मतलब है; प्लमिटिव एक लेखक होता है, एक ऐसा व्यक्ति जो कलम पकड़ता है। लेकिन यह एक भयानक शब्द है। इसे सुनकर तो अक्ल दाढ़ भी गिर सकती है। मैं कभी भी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं करूंगी।"

"तो ये उसका भाई है, है ना? मुझे अभी तक इसका एहसास नहीं हुआ था। लेकिन फिर भी ये नामुमकिन नहीं है। उसमें भी वही दब्बूपन और ज्ञान का भंडार है, मानो कोई चलता-फिरता पुस्तकालय हो। वो भी उसकी तरह ही चापलूसी करती है और उतनी ही उबाऊ भी। हाँ, अब मुझे परिवार की समानता साफ़-साफ़ दिखने लगी है।"

"बैठ जाओ, हम चाय का एक कटोरा लेंगे," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने अपनी भतीजी से कहा। "खुद ही ले लो; तुम अपनी परदादी की तस्वीरें नहीं देखना चाहोगी, तुम उन्हें उतना ही अच्छी तरह जानती हो जितना मैं जानती हूँ।"

कुछ देर बाद श्रीमती डी विलेपारिसिस अपनी मेज पर फिर से बैठ गईं और अपनी चित्रकारी जारी रखी। बाकी लोग उनके चारों ओर जमा हो गए, और मैंने इस अवसर का लाभ उठाकर लेग्रैंडिन के पास जाकर, श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में उनकी उपस्थिति में खुद

को निर्दोष समझते हुए और यह जरा भी कल्पना न करते हुए कि मेरे शब्द उन्हें कितना आहत करेंगे और उन्हें यह विश्वास दिला देंगे कि मैंने जानबूझकर उन्हें चोट पहुँचाने का इरादा किया था, कहा: "खैर, महोदय, जब मैं आपको भी यहाँ पाता हूँ तो चाय पार्टी में आने के लिए मुझे लगभग माफ़ कर दिया गया है।" श्री लेग्रैंडिन ने इस बात से यह निष्कर्ष निकाला (कम से कम यही राय उन्होंने मेरे बारे में कुछ दिनों बाद व्यक्त की) कि मैं एक बेहद द्वेषपूर्ण छोटा बदमाश हूँ जिसे केवल शरारत करने में आनंद आता है।

“कम से कम इतनी तो तमीज़ रखिए कि पहले मेरा हालचाल पूछ लीजिए,” उसने मुझसे हाथ मिलाए बिना और एक कर्कश और गुस्से भरी आवाज़ में जवाब दिया, जिसकी मैंने उससे कभी उम्मीद नहीं की थी। यह आवाज़ उसकी सामान्य बातों से बिल्कुल अलग थी, बल्कि उसके उस पल के किसी गहरे और मार्मिक भाव को बयां कर रही थी। होता ये है कि हम अपनी भावनाओं को हमेशा अपने तक ही सीमित रखने के लिए दृढ़ संकल्पित रहते हैं, इसलिए हमने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि हमें उन्हें कैसे व्यक्त करना चाहिए। और अचानक हमारे भीतर एक अजीब और घिनौना जानवर अपनी आवाज़ बुलंद करने लगता है, जिसकी आवाज़ सुनने वाले को उतना ही भयभीत कर सकती है जितना कि किसी अपराधी द्वारा अचानक, अप्रत्यक्ष और असभ्य तरीके से कबूल किए गए उस अपराध को, जिसके लिए किसी ने कभी उसके दोषी होने की कल्पना भी नहीं की थी। मैं यह तो जानता ही था कि आदर्शवाद, यहाँ तक कि व्यक्तिपरक आदर्शवाद भी, महान दार्शनिकों को अपनी प्रबल इच्छाओं को पूरा करने या अकादमी में चुने जाने के लिए अथक परिश्रम करने से नहीं रोकता। लेकिन वास्तव में लेग्रैंडिन को लोगों को बार-बार यह याद दिलाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी कि वे किसी दूसरे ग्रह से आए हैं, क्योंकि उनके क्रोध या सौम्यता के सभी आवेग इस ग्रह पर एक अच्छा स्थान प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित थे।

"स्वाभाविक रूप से, जब लोग मुझे कहीं भी जाने के लिए लगातार बीस बार परेशान करते हैं," उन्होंने धीमी आवाज़ में आगे कहा, "हालांकि मुझे अपनी पसंद का कुछ भी करने की पूरी आज़ादी है, फिर भी मैं एक बिल्कुल असभ्य व्यक्ति की तरह व्यवहार नहीं कर सकता।"

श्रीमती डी गुएरमांटेस बैठ चुकी थीं। उनका नाम, उनके पदवी के साथ, उनके शारीरिक विस्तार में उस रियासत का आभास जोड़ रहा था जो उनके चारों ओर फैली हुई थी और

गुएरमांटेस के जंगलों की छायादार, धूप से सराबोर शीतलता को इस ड्राइंग-रूम में लाकर उस टफेट को घेर रही थी जिस पर वह बैठी थीं। मुझे केवल इस बात पर आश्चर्य हुआ कि डचेस के चेहरे पर उन जंगलों की झलक इतनी स्पष्ट क्यों नहीं थी, जिस पर वनस्पति का कोई संकेत नहीं था, और अधिक से अधिक उनके गालों का लालिमा भरा रंग—जिस पर निश्चित रूप से गुएरमांटेस नाम अंकित होना चाहिए था—ही प्रभाव था, लेकिन खुले आसमान में लंबी दौड़ का चित्र प्रस्तुत नहीं करता था। बाद में, जब उनमें मेरी रुचि कम हो गई, तो मुझे डचेस की कई विशेषताओं का पता चला, विशेष रूप से (फिलहाल केवल उसी एक विशेषता की बात करें जिसका आकर्षण मुझे उस समय महसूस हो रहा था, हालांकि मैं अभी तक यह पता नहीं लगा पाया था कि वह क्या थी) उनकी आँखें, जिनमें मानो किसी चित्र में कैद फ्रांस की दोपहर के नीले आकाश का दृश्य था, जो विशाल था और बिना सूरज की रोशनी के भी प्रकाश से नहाया हुआ था; और उनकी आवाज़, जो शुरू में कर्कश लगने पर लगभग आम लोगों की आवाज़ जैसी थी, जिसमें मानो कॉम्ब्रे के चर्च की सीढ़ियों या चौक में पेस्ट्री की दुकान की सीढ़ियों पर से गुजरती हुई देहाती धूप की सुनहरी चमक झलक रही थी। लेकिन उस पहले दिन मुझे कुछ भी समझ नहीं आया, मेरी तीव्र रुचि ने उस थोड़ी सी जानकारी को भी नष्ट कर दिया जो मैं उनसे प्राप्त कर सकता था, जिससे मुझे गुएरमांटेस नाम का कोई संकेत मिल सकता था। बहरहाल, मैंने खुद से कहा कि वास्तव में वही थीं जिन्हें दुनिया भर में डचेस डी गुएरमांटेस की उपाधि से नवाज़ा गया था: उस नाम से निहित अकल्पनीय जीवन, वास्तव में इस शरीर में समाहित था; इसने अभी-अभी उस जीवन को विभिन्न प्राणियों की भीड़ में, इस कमरे में, जो इसे चारों ओर से घेरे हुए था और जिस पर इसने इतनी तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न की कि मुझे लगा कि मैं देख सकता हूँ, जहाँ उस रहस्यमय जीवन का विस्तार समाप्त होता है, वहाँ एक झिलमिलाहट उसकी सीमाओं को रेखांकित करती है: उसकी नीली पेकिन स्कर्ट के गुब्बारे द्वारा कालीन पर खींचे गए वृत्त की परिधि के चारों ओर, और डचेस की चमकदार आँखों में उन चिंताओं, यादों, समझ से परे, तिरस्कारपूर्ण, मनोरंजक और जिज्ञासु विचारों के प्रतिच्छेदन बिंदु पर जो उन्हें भीतर से भर देते थे और बाहरी छवियाँ जो उनकी सतह पर प्रतिबिंबित होती थीं। शायद मैं इतना गहराई से प्रभावित नहीं होता अगर मैं उनसे मैडम के रूप में मिला होता। डी विलेपारिसिस को शाम की पार्टी में देखना, मार्क्विज़ के किसी 'दिन' पर

उन्हें देखने के बजाय, उन चाय पार्टियों में से एक में, जो महिलाओं के लिए उनकी दोपहर की सैर के दौरान एक संक्षिप्त पड़ाव मात्र होती हैं, जब वे सड़कों पर गाड़ी चलाते समय पहनी हुई टोपियों को पहने हुए, ड्राइंग रूम के बंद वातावरण में बाहर की ताजी हवा की गुणवत्ता बिखेरती हैं, और पेरिस का देर दोपहर का बेहतर दृश्य प्रस्तुत करती हैं, उन ऊँची, खुली खिड़कियों की तुलना में जिनसे कोई उनकी विक्टोरिया कारों के पहियों की आवाज सुन सकता है: श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कॉर्नफ्लावर से सजी एक बोटिंग हैट पहनी थी, और वे मुझे कॉम्ब्रे के आसपास के उन खेतों की याद नहीं दिलाती थीं जहाँ मैंने अक्सर टैनसनविले हेज से सटी ढलान पर उन फूलों को इकट्ठा किया था, बीते वर्षों के सूरज की; बल्कि यह गोधूलि की सुगंध और धूल थी जैसा कि एक घंटे पहले था, जब श्रीमती डी गुएरमांटेस रू डे ला पैक्स में उनसे गुजरी थीं। मुस्कुराते हुए, तिरस्कारपूर्ण, अस्पष्ट भाव से, और अपने सिकुड़े हुए होठों पर एक अजीब सी मुस्कान लिए, अपने सनग्लास के नुकीले सिरे से, मानो अपने रहस्यमय जीवन के एंटीना के सबसे नुकीले सिरे से, वह कालीन पर वृत्त बना रही थी; फिर, उस उदासीन ध्यान से जो किसी भी चीज़ के साथ संपर्क के हर बिंदु को मिटाकर शुरू होता है जिसका वास्तव में अध्ययन किया जा रहा है, उसकी निगाहें बारी-बारी से हममें से प्रत्येक पर टिक गईं; फिर सोफे और आर्मचेयर का निरीक्षण किया, लेकिन इस बार उस मानवीय सहानुभूति से नरम होकर जो किसी जानी-पहचानी चीज़ की उपस्थिति से जागृत होती है, चाहे वह कितनी भी महत्वहीन क्यों न हो, एक ऐसी चीज़ जो लगभग एक व्यक्ति के समान है; फर्नीचर के ये टुकड़े हमारे जैसे नहीं थे, वे अस्पष्ट रूप से उसकी दुनिया से संबंधित थे, वे उसकी चाची के जीवन से जुड़े हुए थे; फिर बोवेस फर्नीचर से उसकी निगाहें उस पर बैठे व्यक्ति पर वापस गईं, और फिर उसी तीक्ष्ण बुद्धि और उसी अस्वीकृति के भाव को फिर से धारण कर लिया जो श्रीमती के सम्मान में झलकता था। डी गुएरमांटेस को अपनी चाची के लिए जो महसूस हुआ, उसे शब्दों में व्यक्त करने से वह शायद रोक पातीं, लेकिन अगर उन्हें कुर्सियों पर हमारी उपस्थिति के बजाय ग्रीस का एक धब्बा या धूल की एक परत दिखाई देती, तो वह निश्चित रूप से उस भावना को महसूस करतीं।

वह प्रशंसनीय लेखक जी—— कमरे में दाखिल हुए; वे श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने आए थे, जिसे वे एक थकाऊ कर्तव्य समझते थे। यद्यपि डचेस उन्हें पुनः देखकर प्रसन्न हुईं, पर

उन्होंने स्वागत का कोई संकेत नहीं दिया, परन्तु सहजतः वे सीधे उनके पास चले गए। उनके आकर्षण, उनकी चतुराई और उनकी सादगी ने उन्हें असाधारण बुद्धि की महिला के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त, सामान्य शिष्टाचार के कारण वे उनसे बात करने के लिए बाध्य थे, क्योंकि वे एक मिलनसार और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, इसलिए श्रीमती डी गुएरमांटेस अक्सर उन्हें दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करती थीं, यहाँ तक कि तब भी जब उनके साथ केवल उनके पति और वे स्वयं ही होते थे, या शरद ऋतु में गुएरमांटेस में, इस घनिष्ठता का लाभ उठाकर उन्हें कभी-कभी उन शाही लोगों के साथ रात्रिभोज पर आमंत्रित करती थीं जो उनसे मिलने के लिए उत्सुक रहते थे। डचेस कुछ प्रतिष्ठित पुरुषों का मनोरंजन करना पसंद करती थीं, बशर्ते वे कुंवारे हों, और विवाहित होने पर भी वे हमेशा इस शर्त को पूरा करते थे, क्योंकि उनकी पत्नियां, जो कि लगभग सामान्य ही होती थीं, उस ड्राइंग रूम में एक धब्बा होतीं, जिसमें हमेशा पेरिस की सबसे फैशनेबल सुंदरियों के अलावा कोई और नहीं होता था, इसलिए उनके पतियों को हमेशा उनकी पत्नियों के बिना ही आमंत्रित किया जाता था; और ड्यूक, किसी भी संभावित संवेदनशीलता को ठेस न पहुंचाने के लिए, इन अनिच्छुक विधवा पुरुषों को यह समझाते थे कि डचेस कभी भी घर में महिलाओं को नहीं आने देतीं, महिलाओं की संगति बर्दाश्त नहीं कर सकतीं, मानो यह किसी डॉक्टर के आदेश पर हो, और जैसे वह कह रहे हों कि वह ऐसे कमरे में नहीं रह सकतीं जिसमें दुर्गंध हो, या नमकीन खाना नहीं खा सकतीं, या इंजन की ओर पीठ करके यात्रा नहीं कर सकतीं, या कमरबंद नहीं पहन सकतीं। यह सच था कि ये प्रतिष्ठित पुरुष गुएरमांटेस के यहाँ प्रिंसेस डी पार्म, प्रिंसेस डी सागन (जिनका ज़िक्र लगातार सुनकर फ्रांस्वा ने यह सोचकर कि यह स्त्रीवाचक प्रत्यय संयोगवश ज़रूरी है, उन्हें 'सागंटे' कहना शुरू कर दिया था) और कई अन्य महिलाओं से मिलते थे, लेकिन उनकी उपस्थिति का कारण यह बताया जाता था कि वे रिश्तेदार थे, या इतने पुराने दोस्त थे कि उन्हें नज़रअंदाज़ करना असंभव था। ड्यूक डी गुएरमांटेस द्वारा डचेस के अन्य महिलाओं से मेलजोल न रख पाने की अजीब बीमारी के बारे में दिए गए स्पष्टीकरणों से वे सहमत हुए हों या न हुए हों, इन प्रतिष्ठित पुरुषों ने उन्हें अपनी पत्नियों तक पहुँचा दिया। इनमें से कुछ का मानना था कि यह बीमारी केवल उनकी ईर्ष्या को छुपाने का बहाना थी, क्योंकि डचेस अपने दरबार पर अकेले ही राज करना चाहती थीं। कुछ और सरल स्वभाव वाली

महिलाओं का मानना था कि शायद डचेस की कोई अजीब आदत थी, शायद कोई बदनामी भरा अतीत रहा हो, जिसकी वजह से औरतें उसके घर जाना पसंद नहीं करती थीं और वह अपनी मजबूरी को एक शौक का नाम दे देती थी। उनमें से जो बेहतर थीं, उन्होंने अपने पतियों को डचेस की अद्‌भुत बुद्धि की तारीफ करते हुए सुना, और मान लिया कि वह बाकी महिलाओं से इतनी श्रेष्ठ होंगी कि उन्हें उनका समाज उबाऊ लगता होगा क्योंकि वे किसी भी विषय पर समझदारी से बात नहीं कर सकती थीं। और यह सच था कि डचेस दूसरी महिलाओं से ऊब जाती थीं, बशर्ते कि उनकी शाही पदवी उन्हें खास दिलचस्प न बनाती हो। लेकिन जिन पत्नियों को समाज से अलग रखा गया था, वे गलत थीं जब उन्होंने सोचा कि वह सिर्फ पुरुषों का मनोरंजन इसलिए करती थीं ताकि उनके साथ साहित्य, विज्ञान और दर्शन पर खुलकर चर्चा कर सकें। क्योंकि उन्होंने कभी इन विषयों का जिक्र नहीं किया, कम से कम बड़े बुद्धिजीवियों के साथ तो बिल्कुल नहीं। यदि पारिवारिक परंपरा के कारण, जिसके तहत महान सैनिकों की बेटियाँ अपने सबसे तुच्छ मनोरंजन के बीच भी सैन्य मामलों के प्रति सम्मान बनाए रखती हैं, और थियर्स, मेरिमी और औगियर के साथ मित्रतापूर्ण संबंध रखने वाली महिलाओं की पोती होने के नाते, वह महसूस करती थी कि उसके ड्राइंग रूम में बुद्धिजीवी पुरुषों के लिए हमेशा एक स्थान होना चाहिए, तो दूसरी ओर, उसने गुएरमांटेस में उन प्रसिद्ध पुरुषों के साथ हुए सौहार्दपूर्ण और आत्मीय स्वागत के तरीके से प्रतिभावान पुरुषों को पारिवारिक मित्रों के रूप में देखने की कमजोरी को आत्मसात कर लिया था, जिनकी प्रतिभा किसी को चकाचौंध नहीं करती, जिनके काम के बारे में कोई बात नहीं करता, और अगर कोई बात करे भी तो उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं होगी। इसके अलावा, मेरिमी, मेलहाक और हालेवी द्वारा वर्णित मानसिकता, जो उनकी स्वयं की भी थी, ने उन्हें पिछली पीढ़ी की शाब्दिक भावुकता से प्रतिक्रिया करते हुए बातचीत की ऐसी शैली की ओर अग्रसर किया जो उत्तम भाषा और उदात्त विचारों की अभिव्यक्ति से पूरी तरह विमुख थी। इसलिए, जब वे किसी कवि या संगीतकार के साथ होतीं, तो वे केवल उनके द्वारा खाए जा रहे भोजन या बाद में खेले जाने वाले ताश के खेल के बारे में ही बात करना एक तरह से शिष्टाचार का प्रतीक बना लेती थीं। उनकी इस संयमिता का, उनके तौर-तरीकों से अपरिचित किसी तीसरे व्यक्ति पर, एक विचलित करने वाला प्रभाव पड़ता था जो रहस्य के समान था। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उनसे

पूछा कि क्या उन्हें इस या उस प्रसिद्ध कवि से मिलने के लिए दोपहर के भोजन पर आना अच्छा लगेगा, तो जिज्ञासा से व्याकुल होकर वे निर्धारित समय पर पहुँच गए। डचेस कवि से मौसम के बारे में बात कर रही थीं। वे दोपहर के भोजन के लिए बैठ गए। "क्या आपको अंडे बनाने का यह तरीका पसंद है?" उन्होंने कवि से पूछा। उनकी प्रशंसा सुनकर, जो कि वह भी करती थीं, क्योंकि उनके अपने घर की हर चीज़ उन्हें उत्तम लगती थी, यहाँ तक कि गुएरमांटेस से मंगाई गई एक घटिया सी साइडर भी: "महाशय को कुछ और अंडे दीजिए," वह बटलर से कहतीं, जबकि चिंतित साथी अतिथि उस चीज़ का इंतज़ार कर रहे थे जो निश्चित रूप से पार्टी का मुख्य उद्देश्य रहा होगा, क्योंकि डचेस, कवि और स्वयं उनके पेरिस छोड़ने से पहले, हर तरह की कठिनाई के बावजूद, उन्होंने मिलने का इंतज़ाम किया था। लेकिन भोजन चलता रहा, एक के बाद एक व्यंजन परोसे गए, लेकिन इससे पहले श्रीमती डी गुएरमांटेस को चतुराई भरे चुटकुले या उपयुक्त कहानियाँ सुनाने के अवसर मिल गए। इस बीच कवि खाते रहे, और न तो ड्यूक और न ही डचेस ने यह याद करने का कोई संकेत दिया कि वह एक कवि हैं। और जल्द ही दोपहर का भोजन समाप्त हो गया और पार्टी बिना कविता के बारे में एक शब्द भी कहे समाप्त हो गई, जिसकी हर कोई प्रशंसा करता था, लेकिन जिसके बारे में स्वान ने मुझे जो पूर्वाभास दिया था, उसी तरह की एक संकोचपूर्ण शैली के कारण, किसी ने भी उसका ज़िक्र नहीं किया। यह संकोच केवल शिष्टाचार की बात थी। लेकिन उस साथी अतिथि के लिए, अगर उसने इस मामले पर ज़रा भी सोचा होता, तो उसे इसमें कुछ अजीब सी उदासी नज़र आती, और गुएरमांटेस परिवार में ये भोजन उसे उन घंटों की याद दिलाते जो शर्मीले प्रेमी अक्सर एक साथ तुच्छ बातें करते हुए बिताते हैं, जब तक कि बिछड़ने का समय नहीं आ जाता, बिना—चाहे शर्म से, साहस से या असहजता से—उस बड़े रहस्य को, जिसे अगर वे स्वीकार कर लेते तो ज़्यादा खुश होते, अपने दिल से ज़बान तक पहुँचाने में कभी कामयाब हुए। हालाँकि, यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि गंभीर मामलों पर, जिनके बारे में हमेशा व्यर्थ ही चर्चा होने का इंतज़ार किया जाता था, यह चुप्पी, अगर इसे डचेस का स्वभाव माना जाए, तो यह उनके लिए बिल्कुल भी स्थायी नहीं थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपना बचपन एक ऐसे समाज में बिताया था जो कुछ अलग था, उतना ही कुलीन था लेकिन कम शानदार और सबसे बढ़कर उस समाज से कम निरर्थक था जिसमें वह

अब रहती थीं, और एक व्यापक संस्कृति वाला समाज था। उसकी वर्तमान चंचलता के नीचे एक अधिक ठोस, अदृश्य रूप से पौष्टिक आधारशिला थी, जिसकी तलाश में डचेस अक्सर जाती थी (हालांकि बहुत कम, क्योंकि उसे पांडित्य से घृणा थी), विक्टर ह्यूगो या लामार्टिन के किसी उद्धरण की, जो अत्यंत उपयुक्त होता था और जिसे वह अपनी सुंदर आँखों से सच्ची भावना के साथ बोलती थी, और जो उसके श्रोताओं को आश्चर्यचकित और मोहित कर देता था। कभी-कभी, बिना किसी अधिकार का दिखावा किए, प्रासंगिक और सरल शब्दों में, वह किसी नाटककार या शिक्षाविद को ज्ञानवर्धक सलाह देती थी, उसे किसी स्थिति में बदलाव करने या किसी कथानक के अंत को बदलने के लिए कहती थी।

यदि श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में, ठीक वैसे ही जैसे कॉम्ब्रे के चर्च में, श्रीमती परसेपीड की शादी के दिन, मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस के सुंदर, अति मानवीय चेहरे में उनके नाम के अज्ञात तत्व को खोजने में कठिनाई हुई, तो कम से कम मैंने यह सोचा कि जब वह बोलेंगी, तो उनकी बातचीत, गहन, रहस्यमय, किसी मध्ययुगीन टेपेस्ट्री या गोथिक खिड़की की तरह विचित्र होगी। लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस नाम की किसी व्यक्ति द्वारा बोले गए शब्दों से मुझे निराशा न हो, भले ही मैं उनसे प्रेम न करता, तो भी यह पर्याप्त नहीं होता कि वे शब्द सुंदर, मधुर और गहन हों; उनमें उनके नाम के अंतिम अक्षर का वह अमर रंग प्रतिबिंबित होना चाहिए था, वह रंग जिसे मैंने उन्हें पहली बार देखने पर उनके व्यक्तित्व में न पाकर निराश हुआ था और उनके मन में शरण लेने के लिए मजबूर हो गया था। बेशक, मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में पहले ही सुना था। सेंट-लूप के डी विलेपारिसिस निवासी, जिनकी बुद्धि असाधारण नहीं थी, बिना किसी संकोच के गुएरमांटेस नाम का उच्चारण करते थे, मानो वह कोई ऐसी व्यक्ति हो जो उनसे मिलने आ रही हो या जिसके साथ उन्होंने भोजन करने का वादा किया हो। ऐसा लगता था मानो उन्हें इस बात का एहसास ही न हो कि उनके नाम में शरद ऋतु में पीले पड़ते जंगलों की चमक और एक रहस्यमय ग्रामीण क्षेत्र की झलक छिपी हुई है। लेकिन यह उनकी ओर से एक दिखावा ही रहा होगा, जैसे शास्त्रीय कवि हमें अपने लेखन के पीछे छिपे गहरे उद्देश्य की कोई आगाह नहीं करते। यह एक ऐसा दिखावा था जिसकी नकल करने की मैंने भी कोशिश की, और अत्यंत स्वाभाविक स्वर में कहा: "ड्यूशेस डी गुएरमांटेस," मानो यह कोई साधारण नाम हो। और फिर सबने मुझे यकीन दिलाया कि

वह एक अत्यंत बुद्धिमान महिला थीं, एक चतुर वक्ता थीं, और कुछ बेहद दिलचस्प लोगों के छोटे समूह में से एक थीं: ये शब्द मेरे सपने के साथी बन गए। जब वे बुद्धिमान समूह, चतुर बातचीत की बात करते थे, तो वह उस तरह की बुद्धिमत्ता बिल्कुल नहीं थी जिसकी मैंने कल्पना की थी, यहाँ तक कि महानतम बुद्धिजीवियों की भी नहीं, और न ही वह बर्गोट जैसे लोगों से भरा हुआ समूह था। नहीं, बुद्धिमत्ता से मेरा तात्पर्य सूर्य की रोशनी से जगमगाती, वनमय शीतलता से परिपूर्ण एक अवर्णनीय क्षमता से था। वास्तव में, यदि उन्होंने अत्यंत बुद्धिमानीपूर्ण टिप्पणियाँ की होतीं (जिस अर्थ में मैं इस शब्द को किसी दार्शनिक या आलोचक के संदर्भ में समझता था), तो श्रीमती डी गुएरमांटेस शायद उस विशेष क्षमता के बारे में मेरी अपेक्षा को और भी अधिक निराश करतीं, बजाय इसके कि किसी सामान्य बातचीत के दौरान वे रसोई के व्यंजनों या किसी ग्रामीण घर के साज-सज्जा पर चर्चा करतीं, अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों के नाम लेतीं, जिससे मुझे उनके जीवन का एक चित्र मिल जाता।

"मुझे लगा कि मुझे बेसिन यहीं मिल जाएगा, वह आज आपसे मिलने आने वाला था," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपनी चाची से कहा।

"मैंने आपके पति को कुछ दिनों से नहीं देखा है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कुछ चिड़चिड़े स्वर में उत्तर दिया। "दरअसल, मैंने उन्हें देखा ही नहीं है—हाँ, शायद एक बार देखा होगा—जबसे उन्होंने मेरे साथ वह प्यारा सा मज़ाक किया था जिसमें उन्होंने मेरे नौकरों से उन्हें स्वीडन की रानी घोषित करवाया था।"

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने होंठों के कोनों को सिकोड़कर एक मुस्कान बनाई, मानो वह अपने घूंघट को काट रही हों।

"कल रात हम उनसे ब्लैंच लेरोई के रेस्टोरेंट में डिनर पर मिले थे। अब तो आप उन्हें पहचान ही नहीं पाएंगे, वह बहुत ज्यादा मोटी हो गई हैं; मुझे यकीन है कि उन्हें कुछ न कुछ बीमारी जरूर होगी।"

मैं अभी इन सज्जनों से यही कह रहा था कि आपने कहा था कि वह मेंढक जैसी दिखती है।

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एक कर्कश आवाज निकाली जिसका मतलब था कि उन्होंने प्रशंसा स्वीकार कर ली है।

"मुझे याद नहीं कि मैंने कभी ऐसी मनमोहक तुलना की हो, लेकिन अगर वह पहले ऐसी थी, तो अब वह उस मेंढक जैसी है जो बैल के आकार तक फूल गई है। या यूँ कहें कि यह बिल्कुल वैसा नहीं है, क्योंकि उसका सारा फूलाव उसकी कमर के सामने केंद्रित है, वह एक दिलचस्प स्थिति में फंसे मेंढक जैसी है।"

"वाह, यह तो बहुत ही चतुराई भरा है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कहा, और मन ही मन गर्व महसूस कर रही थीं कि उनके मेहमान उनकी भतीजी की इस बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन देख रहे हैं।

"यह तो पूरी तरह से मनमाना है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने व्यंग्यपूर्वक इस विशेषण को अलग करते हुए उत्तर दिया, ठीक उसी तरह जैसे स्वान ने किया होता, "क्योंकि मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने कभी किसी मेंढक को गर्भवती नहीं देखा। खैर, जिस मेंढक की बात हो रही है, जो वैसे तो राजा की मांग नहीं कर रही है, क्योंकि मैंने उसे अपने पति की मृत्यु के बाद से इतना घबराया हुआ कभी नहीं देखा, वह अगले सप्ताह किसी दिन हमारे साथ भोजन करने आ रही है। मैंने वादा किया था कि मैं आपको समय रहते सूचित कर दूंगी।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उलझन भरी गुर्राहट निकाली, जिसके बाद उन्होंने कहा: "मुझे पता है कि वह परसों रात मेक्लेनबर्ग परिवार के साथ भोजन कर रही थीं। हैनिबल डी ब्रेओटे भी वहाँ थे। उन्होंने आकर मुझे इसके बारे में बताया, और सच कहूँ तो यह काफी मनोरंजक था।"

"वहाँ एक आदमी था जो बाबल से कहीं ज़्यादा हाज़िरजवाब था," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, जिन्होंने एम. डी ब्रेओटे-कॉन्साल्वी के साथ अपनी घनिष्ठ मित्रता को देखते हुए, इस संक्षिप्त नाम का प्रयोग करके अपनी दोस्ती को ज़ाहिर करना ज़रूरी समझा। "मेरा मतलब है एम. बर्गोट।"

मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि बर्गोट को विनोदी माना जा सकता है; वास्तव में, मैं हमेशा उन्हें मानवता के बौद्धिक वर्ग में घुलमिलते हुए ही देखता था, यानी उस रहस्यमय क्षेत्र से असीम रूप से दूर, जिसकी एक झलक मुझे थिएटर के एक बॉक्स के बैंगनी पर्दों के पीछे से मिली थी, जिसके पीछे, डचेस को मुस्कुराते हुए, एम. डी ब्रेउटे उनके साथ, देवताओं की भाषा में, उस अकल्पनीय बात, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के लोगों के बीच बातचीत कर रहे थे।

संतुलन बिगड़ते देख और बर्गोट को एम. डी ब्रेउटे से ऊपर उठते देखकर मैं स्तब्ध रह गया। लेकिन सबसे बढ़कर, मुझे यह सोचकर निराशा हुई कि मैंने फ्रेड्रे की शाम को बर्गोट से दूरी बनाए रखी, कि मैं उनके पास जाकर उनसे बात नहीं की, जब मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को श्रीमती डी विलेपारिसिस से यह कहते सुना:

"मैं सिर्फ उसी से मिलना चाहती हूँ," डचेस ने आगे कहा, जिनके मन में हमेशा, मानो किसी मानसिक ज्वार के पलटने पर, प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के प्रति जिज्ञासा का प्रवाह उनकी अभिजात्य अभिमान की लहर पर हावी हो जाता था। "यह कितना सुखद होगा।"

मेरे साथ बर्गोट की उपस्थिति, जिसे सुनिश्चित करना हमारे लिए बहुत आसान होता, लेकिन जिसके बारे में मुझे लगा था कि इससे श्रीमती डी गुएरमांटेस पर मेरी बुरी छाप पड़ सकती है, निस्संदेह इसके विपरीत यह परिणाम होता कि वह मुझे अपने बॉक्स में शामिल होने का संकेत देतीं और मुझे एक दिन उस प्रख्यात लेखक को दोपहर के भोजन पर लाने के लिए आमंत्रित करतीं।

"मुझे पता चला है कि उनका व्यवहार अच्छा नहीं था, उन्हें एम. डी कोबर्ग के सामने पेश किया गया, लेकिन उन्होंने उनसे एक शब्द भी नहीं कहा," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने इस विचित्र विशेषता पर विस्तार से बताते हुए कहा, मानो वह किसी चीनी व्यक्ति के कागज पर नाक पोंछने की घटना का वर्णन कर रही हों। "उन्होंने एक बार भी उन्हें 'महामहिम' नहीं कहा," उन्होंने इस विवरण पर हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, जो उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि पोप से मुलाकात के दौरान एक प्रोटेस्टेंट का उनके सामने घुटने टेकने से इनकार करना।

बर्गोट की इन विलक्षणताओं में रुचि रखते हुए भी, वह उन्हें निंदनीय नहीं मानती थीं, बल्कि उनमें कुछ खूबी भी देखती थीं, हालांकि यह बताना मुश्किल था कि किस तरह की खूबी। बर्गोट की मौलिकता को सराहने के इस असामान्य तरीके के बावजूद, यह एक ऐसा तथ्य था जिसे मैं बाद में पूरी तरह से नगण्य नहीं मान सकता था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस, अपने कई मित्रों को आश्चर्यचकित करते हुए, बर्गोट को एम. डी ब्रेओटे से अधिक बुद्धिमान मानती थीं। इस प्रकार, फैशन की दुनिया में ऐसे निर्णय, जो विद्रोही, एकांतप्रिय और फिर भी अंततः न्यायसंगत होते हैं, उन चुनिंदा बुद्धिजीवियों द्वारा दिए जाते हैं जो बाकियों से श्रेष्ठ होते हैं। और

वे फिर मूल्यों के पदानुक्रम की पहली मोटी रूपरेखा तैयार करते हैं जिसे अगली पीढ़ी स्थापित करेगी, पुराने मानकों का शाश्वत रूप से पालन करने के बजाय।

बेल्जियम दूतावास के प्रभारी कॉम्टे डी'आर्गेनकोर्ट, जो श्रीमती डी विलेपारिसिस के दूर के रिश्तेदार थे, लंगड़ाते हुए अंदर आए। उनके पीछे दो युवक, बैरन डी गुएरमांटेस और ड्यूक डी चैटेलराल्ट भी आए। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने लापरवाही भरे लहजे में और अपने सोफे से हिले बिना ही उनका अभिवादन किया: "नमस्ते, युवा चैटेलराल्ट।" क्योंकि वह युवा ड्यूक की माता की घनिष्ठ मित्र थीं, जिसके कारण ड्यूक उनके प्रति आजीवन सम्मान रखते थे। लंबे, पतले, सुनहरे बालों और गोरे रंग वाले, पूरी तरह से गुएरमांटेस परिवार के अनुरूप, ये दोनों युवक उस विशाल कमरे में फैली वसंत संध्या की रोशनी की परछाईं जैसे लग रहे थे। उस समय प्रचलित रिवाज के अनुसार, उन्होंने अपनी रेशमी टोपियाँ अपने पैरों के पास फर्श पर रख दीं। फ्रोंडे जनजाति के इतिहासकार का मानना था कि वे उस तरह शर्मिंदा थे, जैसे कोई किसान महापौर के कार्यालय में आकर अपनी टोपी का क्या करे, यह न जानता हो। उनका मानना था कि उन्हें दया भाव से उनकी इस असहजता और झिझक को दूर करने में मदद करनी चाहिए।

"नहीं, नहीं," उसने कहा, "इन्हें फर्श पर मत छोड़ो, लोग इन पर पैर रख देंगे।"

बैरन डी गुएरमांटेस की एक नजर, जिससे उनकी पुतलियों का तल झुक गया, अचानक उनसे शुद्ध और मर्मस्पर्शी नीले रंग की एक लहर निकली जिसने नेक इरादे वाले इतिहासकार को स्तब्ध कर दिया।

"उस व्यक्ति का नाम क्या है?" यह सवाल बैरन ने मुझसे पूछा, जिनका परिचय मुझे श्रीमती डी विलेपारिसिस ने अभी-अभी कराया था।

"श्री पियरे," मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

"पियरे, क्या?"

"पियरे: यह उनका नाम है, वे एक इतिहासकार हैं, एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।"

"सच में? ऐसा तो कोई कह ही नहीं सकता।"

"नहीं, आजकल नौजवानों में टोपी ज़मीन पर रखने का नया चलन है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने समझाया। "मैं भी आपकी तरह ही हूँ, मुझे यह कभी पसंद नहीं आया। फिर

भी, यह मेरे भतीजे रॉबर्ट से बेहतर है, जो हमेशा अपनी टोपी हॉल में ही छोड़ देता है। जब मैं उसे अंदर आते देखती हूँ तो कहती हूँ कि वह बिल्कुल घड़ीसाज़ जैसा दिखता है, और मैं उससे पूछती हूँ कि क्या वह घड़ियों में चाबी भरने आया है।"

"अभी आप एम. मोले की टोपी के बारे में बात कर रही थीं, मैडम ला मार्क्विज़; हम जल्द ही अरस्तू की तरह टोपियों पर एक अध्याय संकलित कर सकेंगे," फ्रोंडे के इतिहासकार ने श्रीमती डी विलेपारिसिस के हस्तक्षेप से कुछ हद तक आश्वस्त होकर कहा, लेकिन उनकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि मेरे अलावा किसी ने उन्हें नहीं सुना।

"छोटी डचेस सचमुच अद्भुत हैं," एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने मैडम डी गुएरमांटेस की ओर इशारा करते हुए कहा, जो जी—— से बात कर रही थीं। "जब भी कमरे में कोई मशहूर शख्स मौजूद होता है, तो आप उसे उसके साथ बैठे हुए पाएंगे। ज़ाहिर है, वही उस पार्टी का सबसे प्रभावशाली व्यक्ति होगा। ज़ाहिर है, हमेशा एम. डी बोरेली, एम. श्लमबर्गर या एम. डी'एवेनेल ही नहीं होते। लेकिन तब तो एम. पियरे लोटी या एम. एडमंड रोस्टैंड ज़रूर होते हैं। कल शाम डौडेविल्स के घर पर, जहाँ वह अपने पन्ना के मुकुट और लंबी ट्रेल वाली गुलाबी पोशाक में बेहद खूबसूरत लग रही थीं, उनके एक तरफ एम. डेसचनेल और दूसरी तरफ जर्मन राजदूत बैठे थे: वह उनसे चीन के बारे में बात कर रही थीं; आम जनता, जो सम्मानजनक दूरी पर बैठी थी और जो सुन नहीं पा रही थी, सोच रही थी कि कहीं युद्ध तो नहीं होने वाला। सचमुच, आप कह सकते थे कि वह एक रानी हैं, जो अपने खास लोगों के बीच बैठी हैं।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस को चित्रकारी करते देखने के लिए सभी लोग उनके चारों ओर जमा हो गए थे।

"ये फूल सचमुच दिव्य गुलाबी हैं," लेग्रैंडिन ने कहा, "मुझे कहना चाहिए आसमानी गुलाबी। क्योंकि आसमानी गुलाबी भी होता है, जैसे आसमानी नीला होता है। लेकिन," उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी कर ली ताकि मार्क्विज़ के अलावा कोई और न सुन सके, "मुझे लगता है कि मैं अब भी आपके द्वारा बनाए गए इन फूलों के रेशमी, जीवंत रंग को ही पसंद करूँगा। आपने पिसानेलो और वैन हुयसुन को उनके श्रमसाध्य, नीरस हर्बल चित्रों से बहुत पीछे छोड़ दिया है।"

एक कलाकार, चाहे वह कितना भी विनम्र क्यों न हो, हमेशा अपने प्रतिद्वंद्वियों से बेहतर माने जाने को तैयार रहता है और केवल यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि उनके साथ न्याय हो।

"ऐसा सोचने का कारण यह है कि उन्होंने अपने समय के फूलों को चित्रित किया, जो अब हमारे पास नहीं हैं, लेकिन उन्होंने इसे बड़ी कुशलता से किया।"

"आह! अपने समय के फूल! यह तो एक बहुत ही चतुर सिद्धांत है," लेग्रैंडिन ने कहा।

"मैं देख रहा हूँ कि आप कुछ सुंदर चेरी के फूल बना रहे हैं—या वे मई के फूल हैं?" फ्रोंडे के इतिहासकार ने फूल के बारे में हिचकिचाहट के साथ, लेकिन आत्मविश्वास भरे स्वर में पूछना शुरू किया, क्योंकि वह टोपी वाली घटना को भूलने लगा था।

"नहीं; ये सेब के फूल हैं," डचेस डी गुएरमांटेस ने अपनी चाची से कहा।

"अहा! मुझे लगता है कि तुम भी मेरी तरह एक अच्छी देहाती महिला हो; तुम एक फूल को दूसरे से पहचान सकती हो।"

"जी हां, बिल्कुल! लेकिन मुझे लगा था कि सेब के फूल खिलने का मौसम अब खत्म हो चुका है," इतिहासकार ने अपनी गलती को छुपाने की बेताब कोशिश करते हुए कहा।

"अरे नहीं, बिलकुल नहीं; अभी तो बिल्कुल नहीं; पेड़ अगले दो हफ़्ते तक नहीं खिलेंगे, शायद तीन हफ़्ते तक नहीं," लाइब्रेरियन ने कहा, जो श्रीमती डी विलेपारिसिस की जागीरों के प्रबंधन में मदद करने के कारण ग्रामीण मामलों की बेहतर जानकारी रखते थे।

"कम से कम तीन हफ्ते," डचेस ने कहा; "पेरिस के आसपास भी, जहाँ वे बहुत आगे हैं। नॉर्मंडी में, क्या आप नहीं जानते, उनके पिता के घर पर," उन्होंने युवा ड्यूक डी चैटेलरो की ओर इशारा करते हुए कहा, "जहाँ समुद्र तट के पास कुछ शानदार सेब के पेड़ हैं, जैसे जापानी स्क्रीन, वे 20 मई के बाद ही पूरी तरह से गुलाबी होते हैं।"

युवा ड्यूक ने कहा, "मैं उन्हें कभी नहीं देखता, क्योंकि उन्हें देखकर मुझे एलर्जी हो जाती है। वे बहुत उबाऊ होते हैं।"

"जंग लगने से होने वाला बुखार? मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सुना," इतिहासकार ने कहा।

"आजकल यही एक प्रचलित शिकायत है," लाइब्रेरियन ने उसे बताया।

"यह सब इस बात पर निर्भर करता है, अगर सेबों की अच्छी फसल हुई तो शायद आपको यह बिल्कुल भी नहीं मिलेगा। आप ले नॉर्मंड की कहावत तो जानते ही हैं: 'जब सेबों की अच्छी फसल होती है...'", एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने कहा, जो वास्तव में फ्रांसीसी नहीं थे, लेकिन हमेशा खुद को पेरिसवासी दिखाने की कोशिश करते थे।

"आप बिलकुल सही कह रही हैं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने अपनी भतीजी से कहा, "ये दक्षिण से हैं। एक फूलवाले ने इन्हें भेजा था और मुझसे इन्हें उपहार के रूप में स्वीकार करने का अनुरोध किया था। मुझे यकीन है कि आप हैरान होंगे, श्रीमान वाल्मेरे," उन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष की ओर मुड़कर कहा, "कि एक फूलवाले ने मुझे सेब के फूलों का उपहार दिया। खैर, मैं बूढ़ी हो गई हूँ, लेकिन अभी भी मेरी उम्र शून्य नहीं हुई है, मेरे अभी भी कुछ दोस्त हैं," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, जिसे उनकी सादगी का संकेत माना जा सकता था, लेकिन मुझे यह महसूस हुआ कि इसका मतलब यह था कि इतने प्रतिष्ठित लोगों के बीच रहते हुए एक साधारण फूलवाले से दोस्ती पर गर्व करना उन्हें प्रभावी लगता था।

ब्लोच उठे और उन फूलों को देखने चले गए जिन्हें श्रीमती डी विलेपारिसिस चित्रित कर रही थीं।

“कोई बात नहीं, मार्क्विज़,” इतिहासकार ने फिर से बैठते हुए कहा, “भले ही हमें उन क्रांतियों में से एक और देखनी पड़े जिन्होंने हमारे इतिहास के अनगिनत पन्नों को खून से रंग दिया है—और कसम से, इन दिनों कोई कुछ कह नहीं सकता,” उन्होंने एक गोलाकार और सतर्क नज़र से देखते हुए कहा, मानो यह सुनिश्चित करना चाहते हों कि कमरे में कोई ‘असंतोषी’ व्यक्ति तो नहीं है, हालाँकि उन्हें ज़रा भी संदेह नहीं था कि वास्तव में कोई है, “आप जैसी प्रतिभा और पाँच भाषाओं के ज्ञान के साथ आप निश्चित रूप से सफल होंगी।” फ्रोंडे के इतिहासकार को काफी ताज़गी महसूस हो रही थी, क्योंकि वह अपनी अनिद्रा को भूल चुके थे। लेकिन उन्हें अचानक याद आया कि वह पिछली छह रातों से सोए नहीं थे, जिसके बाद उनके मन में पैदा हुई एक असहनीय थकान ने उनके अंगों को लकवाग्रस्त कर दिया, उनके कंधे झुक गए, और उनका उदास चेहरा एक बूढ़े आदमी की तरह लटकने लगा।

ब्लोच ने अपनी प्रशंसा को उचित हावभाव से व्यक्त करने की कोशिश की, लेकिन वह केवल अपनी कोहनी से सेब के फूलों की टहनी से भरे गिलास को गिराने में सफल रहा, और सारा पानी कालीन पर फैल गया।

"सचमुच, आपकी उंगलियां किसी परी जैसी हैं," (मार्किस से) उस इतिहासकार ने कहा, जिसकी पीठ उस समय मेरी ओर थी, इसलिए उसने ब्लोच की अनाड़ीपन पर ध्यान नहीं दिया था।

लेकिन ब्लोच ने इसे अपने ऊपर किया गया उपहास समझा और अपनी शर्म को छुपाने के लिए उद्दंडता से जवाब दिया: "इसका जरा भी महत्व नहीं है; मैं भीगा नहीं हूँ।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने घंटी बजाई और एक नौकर कालीन पोंछने और कांच के टुकड़े उठाने के लिए आया। उन्होंने दोनों युवकों को अपने नाट्य प्रदर्शनों में आमंत्रित किया, और साथ ही श्रीमती डी गुएरमांटेस को भी, इस निर्देश के साथ:

"गिसेले और बर्थे" (डचेस डी'ऑबरजोन और डी पोर्टेफिन) को बताना याद रखना कि वे दो बजे से थोड़ा पहले यहाँ आ जाएँ ताकि मेरी मदद कर सकें," जैसा कि वह किराए पर रखे गए वेटरों को टेबल लगाने के लिए जल्दी आने के लिए कह सकती थी।

उन्होंने अपने शाही रिश्तेदारों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा उन्होंने एम. डी नॉरपोइस के साथ किया था, बिना किसी शिष्टाचार के, जैसा उन्होंने इतिहासकार, कॉटार्ड, ब्लोच और मेरे प्रति दिखाया था। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें हमारी सामाजिक जिज्ञासा को शांत करने के अलावा उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसका कारण यह था कि वह जानती थीं कि उन्हें उन लोगों का मनोरंजन करने की कोई आवश्यकता नहीं है जिनके लिए वह कोई कमोबेश प्रतिभाशाली महिला नहीं थीं, बल्कि उनके पिता या चाचा की संवेदनशील बुढ़िया थीं, जिन्हें विनम्र व्यवहार की आवश्यकता थी और जो वैसा ही व्यवहार प्राप्त करती थीं। उनके सामने चमकने की कोशिश करने का कोई उद्देश्य नहीं था, वह अपनी स्थिति की मजबूती और कमजोरी के बारे में उन्हें कभी धोखा नहीं दे सकती थीं, क्योंकि वे (उनसे बेहतर कोई नहीं) उनके पूरे इतिहास को जानते थे और उस प्रतिष्ठित वंश का सम्मान करते थे जिससे वह आती थीं। लेकिन, सबसे बढ़कर, वे उनके लिए एक मृत पौधे से अधिक कुछ नहीं रह गए थे जो फिर कभी फल नहीं देगा, वे उन्हें अपने नए दोस्तों से परिचित नहीं होने देते थे और न ही अपने

सुखों में उन्हें शामिल होने देते थे। वह उनसे केवल कभी-कभार उनकी उपस्थिति या उनके बारे में बात करने की संभावना ही प्राप्त कर पाती थी, अपनी शाम पाँच बजे की चाय पार्टियों में, जैसा कि बाद में उनके संस्मरणों में वर्णित है, जिनके लिए ये पार्टियाँ केवल एक प्रकार का पूर्वाभ्यास थीं, चुनिंदा श्रोताओं के सामने पांडुलिपि का प्रारंभिक पठन। और वह समाज जिसमें ये सभी कुलीन रिश्तेदार और रिश्तेदारियाँ रुचि जगाने, चकाचौंध करने और मोहित करने का काम करते थे, कॉटार्ड्स, ब्लोक्स, उस समय सार्वजनिक दृष्टि में रहे नाटककारों, फ्रोंडे के इतिहासकारों और ऐसे ही अन्य विषयों का समाज; इसी समाज में श्रीमती के लिए अस्तित्व था। डी विलेपारिसिस—फैशन जगत के उस हिस्से को छोड़कर जो उसे आकर्षित नहीं करता था—गतिशीलता, नवीनता, जीवन का सारा मनोरंजन, इन्हीं लोगों से उसे सामाजिक लाभ मिलते थे (जिसके कारण वह उन्हें कभी-कभार मिलने देती थी, भले ही वे उसे, डचेस डी गुएरमांटेस को, कभी जान न पाते हों), उन उल्लेखनीय पुरुषों के साथ रात्रिभोज करती थी जिनके काम में उसकी रुचि थी, उसके ड्राइंग रूम में लेखक द्वारा पूरी तरह से मंचित एक हल्का ओपेरा या मूक अभिनय, दिलचस्प शो के लिए टिकट बुकिंग। ब्लोच जाने के लिए उठा। उसने ज़ोर से कहा था कि टूटे हुए फूलदान की घटना कोई मायने नहीं रखती, लेकिन उसने मन ही मन जो कहा वह अलग था, और उससे भी कहीं ज़्यादा अलग जो उसने सोचा था: "अगर लोग अपने नौकरों को फूल ऐसी जगह रखने का प्रशिक्षण नहीं दे सकते जहाँ वे गिर न जाएँ और उनके मेहमानों को गीला न कर दें और शायद उनके हाथ भी न कट जाएँ, तो ऐसी विलासिता में न पड़ना ही बेहतर है," उसने गुस्से में बुदबुदाया। वह उन संवेदनशील, अति संवेदनशील व्यक्तियों में से एक थे जो अपनी किसी गलती को बर्दाश्त नहीं कर पाते, भले ही वे खुद से यह स्वीकार न करें कि उन्होंने गलती की है, लेकिन वह गलती उनका पूरा दिन खराब करने के लिए काफी होती है। घोर क्रोध में, वह लगभग यह ठान चुके थे कि अब कभी समाज में नहीं जाएंगे। वह उस स्थिति में पहुँच चुके थे जहाँ किसी न किसी तरह का ध्यान भटकाना उनके लिए अत्यावश्यक था। सौभाग्य से, अगले ही पल श्रीमती डी विलेपारिसिस उन्हें रुकने के लिए कहने वाली थीं। या तो इसलिए कि वह अपने मित्रों के बीच प्रचलित भावना से अवगत थीं, और उन्होंने यहूदी-विरोधी भावना की बढ़ती लहर को भांप लिया था, या फिर केवल लापरवाही के कारण, उन्होंने कमरे में मौजूद किसी से भी उनका

परिचय नहीं कराया था। हालाँकि, समाज में कम घुलमिल पाने के कारण, कमरे से निकलने से पहले उन्होंने सभी से विदा लेना अपना कर्तव्य समझा, शिष्टाचार का पालन किया, लेकिन बिना किसी मित्रता के; उन्होंने कई बार अपना सिर झुकाया, अपनी दाढ़ी वाली ठुड्डी को कॉलर में छिपाया, और ठंडी, असंतुष्ट निगाहों से बारी-बारी से हर व्यक्ति को अपने चश्मे से देखा। लेकिन श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उन्हें रोक दिया; उन्हें अभी भी अपने घर में होने वाले छोटे नाटक के बारे में उनसे चर्चा करनी थी, और वे यह भी नहीं चाहती थीं कि वे एम. डी नॉरपोइस (जिनके न आने से वे हैरान थीं) से मिलने से पहले ही चले जाएं। हालांकि ब्लोच को प्रेरित करने के लिए यह परिचय बिल्कुल अनावश्यक था, क्योंकि उन्होंने पहले ही उन दो अभिनेत्रियों को, जिनके नाम उन्होंने उनसे लिए थे, मार्क्विज़ के ड्राइंग रूम में मुफ्त में गाने के लिए राजी करने का फैसला कर लिया था, ताकि यूरोप के सभी प्रतिष्ठित और महान लोगों के जमावड़े वाले समारोहों में से एक में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े। उन्होंने उन्हें एक दुखद अभिनेत्री का भी प्रस्ताव दिया था, जिसकी 'आँखें पवित्र और हेरा के समान सुंदर' थीं, जो कलात्मक सौंदर्यबोध के साथ गीतात्मक गद्य का पाठ करती थीं। लेकिन इस महिला का नाम सुनकर श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मना कर दिया, क्योंकि यह सेंट-लूप की प्रेमिका का नाम था।

“मेरे पास अच्छी खबर है,” उसने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। “मुझे पूरा यकीन है कि अब उसका गुस्सा शांत हो गया है, और बहुत जल्द वे अलग हो जाएँगे—उस अधिकारी के बावजूद जिसने इस पूरे मामले में घिनौनी भूमिका निभाई है,” उसने आगे कहा। रॉबर्ट का परिवार एम. डी बोरोडिनो से घृणा करने लगा था, जिसने नाई के कहने पर उसे ब्रुग्स जाने की छुट्टी दी थी, और उस पर एक कुख्यात षड्यंत्र को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था। “उसके लिए यह वाकई बहुत बुरा है,” श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उस नेक लहजे में कहा जो सभी गुएरमांटे परिवार में आम था, यहाँ तक कि सबसे भ्रष्ट लोगों में भी। “बहुत, बहुत बुरा,” उसने शब्द को तीन बार ‘t’ बोलते हुए दोहराया। ऐसा लग रहा था कि उसे राजकुमार के उनके सभी अय्याशी समारोहों में मौजूद होने पर कोई संदेह नहीं था। लेकिन, चूंकि दयालु हृदय उस बूढ़ी महिला का प्रमुख गुण था, इसलिए उस भयानक कप्तान के प्रति उसकी तीखी और कठोर अभिव्यक्ति, जिसका नाम उसने व्यंग्यात्मक लहजे में लिया: "प्रिंस डी बोरोडिनो!"—एक ऐसी महिला के रूप में जिसके लिए साम्राज्य का कोई महत्व नहीं था—मेरी ओर एक कोमल

मुस्कान में बदल गई, पलकों के एक यांत्रिक फड़कने के साथ, जो हमारे बीच एक अस्पष्ट समझ का संकेत था।

"मुझे डी सेंट-लूप-एन-ब्रे के लिए बहुत सम्मान है," ब्लोच ने कहा, "भले ही वह कितना भी गंदा कुत्ता हो, क्योंकि वह बेहद सभ्य है। मुझे उसके लिए नहीं, बल्कि सभ्य लोगों के लिए बहुत सम्मान है, वे बहुत कम मिलते हैं," वह बिना सोचे-समझे बोलता रहा, क्योंकि वह खुद बेहद असभ्य था, कि उसके शब्दों से किसी को ठेस पहुँच रही है। "मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ जो मुझे उसकी उत्तम परवरिश का सबसे प्रभावशाली उदाहरण लगता है। एक बार मेरी उससे एक नौजवान के साथ मुलाकात हुई, जब वह अपने पहिएदार रथ पर सवार होने ही वाला था, खुद उसने दो घोड़ों पर शानदार लगाम कसी थी, जिनके चारे जौ और जई से भरे हुए थे, और जिन्हें आगे बढ़ाने के लिए चाबुक की ज़रूरत नहीं थी। उसने हमारा परिचय कराया, लेकिन मैं उस नौजवान का नाम नहीं जान पाया; परिचय होने पर कोई कभी किसी का नाम नहीं जान पाता," उसने हँसते हुए समझाया, यह उसके पिता का एक चुटकुला था। "डी सेंट-लूप-एन-ब्रे एकदम शांत थे, उन्होंने उस युवक के बारे में कोई हंगामा नहीं किया, बिल्कुल सहज लग रहे थे। खैर, मुझे एक-दो दिन बाद संयोग से पता चला कि वह युवक सर रूफस इसराइल्स का बेटा था!"

इस कहानी का अंत इसकी प्रस्तावना से कम चौंकाने वाला था, क्योंकि यह कमरे में मौजूद हर किसी के लिए पूरी तरह समझ से परे रहा। असल बात यह थी कि सर रूफस इसराइल्स, जो ब्लोच और उनके पिता को लगभग एक शाही शख्सियत लगते थे, जिनके सामने सेंट-लूप को कांपना चाहिए था, गुएरमांटेस की दुनिया में एक विदेशी नवोदित व्यक्ति थे, जिन्हें समाज में बर्दाश्त किया जाता था, जिनकी दोस्ती पर कोई भी कभी गर्व करने का सपना भी नहीं देख सकता था, बल्कि इसके विपरीत था।

"मैंने यह बात सर रूफस के पावर ऑफ अटॉर्नी धारक से सीखी है; वह मेरे पिता के मित्र हैं और एक असाधारण व्यक्ति हैं। ओह, एक अद्भुत इंसान," उन्होंने उस आत्मविश्वास और उत्साह के साथ हमें आश्वस्त किया, जो केवल उन्हीं विचारों में झलकता है जो स्वयं से उत्पन्न नहीं होते।

ब्लोच ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए मुझसे कहा, "बताइए, आपको क्या लगता है सेंट-लूप के पास कितना पैसा है? वैसे तो इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, आप समझ रहे हैं ना? मैं बाल्ज़ाक के नज़रिए से जानना चाहता हूँ। आपको पता है ना कि यह पैसा किसमें है, फ्रांसीसी शेयरों में, विदेशी शेयरों में, ज़मीन में या किसी और चीज़ में?"

मैं उसे कोई जानकारी नहीं दे सका। अचानक ऊँची आवाज़ में ब्लोच ने पूछा कि क्या वह खिड़कियाँ खोल सकता है, और जवाब का इंतज़ार किए बिना, ऐसा करने के लिए कमरे के उस पार चला गया। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने विरोध किया कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसे सर्दी लगी थी। "बेशक, अगर यह आपके लिए बुरा है!" ब्लोच उदास हो गया। "लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि यहाँ गर्मी नहीं है।" और हँसते हुए उसने कमरे में चारों ओर नज़र घुमाते हुए श्रीमती डी विलेपारिसिस के खिलाफ समर्थन की अपील की। उसे इन सभ्य लोगों से कोई समर्थन नहीं मिला। उसकी धधकती आँखें, किसी भी मेहमान को अपनी वफादारी से विचलित करने में विफल रहने पर, उनके सामान्य गंभीर भाव में बदल गईं; उसने अपनी हार स्वीकार करते हुए कहा, "तापमान कितना है? कम से कम बहत्तर तो होगा ही। मुझे आश्चर्य नहीं है। मैं पसीने से तरबतर हूँ। और मेरे पास, अल्फ़ियस नदी के पुत्र, ऋषि एंटनोर की तरह, अपने शरीर को पॉलिश किए हुए संगमरमर के स्नान में डालने और अपने अंगों पर सुगंधित तेल लगाने से पहले, अपने पसीने को रोकने के लिए पिता की कृपा से मिलने वाली लहर में डुबकी लगाने की शक्ति नहीं है।" और उस आवश्यकता के साथ जो लोग दूसरों को उन चिकित्सा सिद्धांतों के बारे में बताने के लिए महसूस करते हैं जिनका प्रयोग उनके स्वयं के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकता है, उसने कहा, "अच्छा, अगर आपको लगता है कि यह आपके लिए अच्छा है! मुझे कहना होगा, मुझे लगता है कि आप बिल्कुल गलत हैं। यही तो आपको सर्दी-जुकाम देता है।"

ब्लोच, एम. डी नॉरपोइस से मिलने की संभावना से बेहद खुश थे। उन्होंने हमें बताया कि वे उनसे ड्रेफस मामले के बारे में बात करना चाहेंगे। उन्होंने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "वहाँ एक ऐसी मानसिकता काम कर रही है जिसे मैं पूरी तरह से समझ नहीं पाता, और इस प्रतिष्ठित राजनयिक से साक्षात्कार लेना बेहद सनसनीखेज होगा," ताकि वे खुद को राजदूत से कमतर न समझें।

श्रीमती डी विलेपारिसिस को इस बात का दुख हुआ कि उन्होंने इतनी ज़ोर से ये कहा, लेकिन जब उन्होंने देखा कि लाइब्रेरियन, जिनके प्रबल राष्ट्रवादी विचार उन्हें एक तरह से नियंत्रण में रखते थे, इतनी दूर थीं कि उन्होंने ये सब नहीं सुना होगा, तो उन्हें कम बुरा लगा। उन्हें और भी ज़्यादा हैरानी तब हुई जब उन्होंने ब्लोच को, जो अपने बुरे व्यवहार के उस राक्षस के वश में था जिसने उसे अपने कहे के परिणामों के प्रति हमेशा अंधा बना रखा था, पिता तुल्य शिष्टाचार पर हंसते हुए पूछते सुना: "क्या मैंने उनकी कोई विद्वतापूर्ण रचना नहीं पढ़ी है जिसमें उन्होंने अकाट्य तर्कों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की है जिससे यह साबित होता है कि जापानी युद्ध का अंत रूसी विजय और जापानी पराजय में होना तय था? अब तो वो बिल्कुल लकवाग्रस्त हो गए हैं, है ना? मुझे यकीन है कि वो वही बूढ़े आदमी हैं जिन्हें मैंने अपनी कुर्सी पर निशाना साधते हुए और फिर कमरे में उस तक फिसलते हुए देखा था, मानो वो पहियों पर हों।"

"अरे नहीं! बिलकुल भी ऐसा नहीं! ज़रा रुकिए," मार्किज़ ने आगे कहा, "मुझे नहीं पता कि वह क्या कर रहा होगा।"

उसने घंटी बजाई और जब नौकर आया, तो उसने, जैसा कि वह इस बात को छुपाती नहीं थी, बल्कि इसका प्रचार करना पसंद करती थी कि उसका पुराना दोस्त अपना अधिकांश समय उसके घर में बिताता है, कहा: "जाओ और एम. डी नॉरपोइस को अंदर आने के लिए कहो," उसने उसे आदेश दिया, "वह मेरी लाइब्रेरी में कुछ कागजात छाँट रहे हैं; उन्होंने कहा था कि उन्हें बीस मिनट लगेंगे, और मैं अब एक घंटे पौने दो घंटे से इंतज़ार कर रही हूँ। वह तुम्हें ड्रेफस मामले के बारे में, जो कुछ भी तुम जानना चाहो, बता देंगे," उसने ब्लोच से रूखेपन से कहा। "वह जिस तरह से चीजें चल रही हैं, उससे ज़्यादा सहमत नहीं हैं।"

एम. डी नॉरपोइस के तत्कालीन सरकार से अच्छे संबंध नहीं थे, और श्रीमती डी विलेपारिसिस, हालांकि उन्होंने कभी भी किसी मंत्री को अपने घर लाने की हिम्मत नहीं की थी (उन्होंने एक महान महिला की गरिमा को बरकरार रखा था और उन राजनीतिक संबंधों से दूर रहीं जिन्हें निभाना उनके लिए अनिवार्य था), उन्हें हर बात की जानकारी देती रहती थीं। इसके अलावा, तत्कालीन राजनेता एम. डी नॉरपोइस से श्रीमती डी विलेपारिसिस से परिचय कराने का अनुरोध करने का साहस भी नहीं करते थे। लेकिन उनमें से कई लोग महत्वपूर्ण अनुमानों पर

उनकी सलाह या मदद की आवश्यकता पड़ने पर उनसे मिलने उनके ग्रामीण घर गए थे। पता तो पता था। घर गए। घर की मालकिन नहीं दिखीं। लेकिन उस शाम खाने पर उन्होंने कहा:
"मैंने सुना है कि वे यहाँ आकर आपको परेशान कर रहे थे। मुझे उम्मीद है कि अब हालात बेहतर हो रहे होंगे।"
"क्या आपको जल्दी नहीं है?" उसने अब ब्लोच से पूछा।
"नहीं, बिलकुल नहीं। मैं जाना चाहता था क्योंकि मेरी तबीयत ठीक नहीं है; दरअसल, ऐसी चर्चा चल रही है कि मैं अपनी पित्त नलिकाओं के इलाज के लिए विची अस्पताल जा रहा हूँ," उन्होंने अपने अंतिम शब्दों को तीखे व्यंग्य के साथ कहा।
"अरे, मेरे भतीजे चैटेलराउल्ट को तो वहीं जाना है, आप दोनों को मिलकर इसे ठीक करना होगा। क्या वह अभी भी कमरे में है? वह एक अच्छा लड़का है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कहा, और शायद उन्होंने जो कहा, उसका मतलब भी वही था, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि जिन दो लोगों को वह जानती थीं, उनके बीच दोस्ती न होने का कोई कारण नहीं था।
"ओह, मुझे लगता है कि उसे इसकी परवाह नहीं होगी—मैं उसे ठीक से नहीं जानता—कम से कम मैं उसे बहुत कम जानता हूँ। वह वहाँ बैठा है," ब्लोच ने उलझन और असमंजस के बीच हकलाते हुए कहा।
बटलर अपनी मालकिन का संदेश ठीक से नहीं पहुंचा सका, क्योंकि एम. डी नॉरपोइस ने यह जताने के लिए कि वह अभी-अभी सड़क से आया है और उसने अपनी मालकिन को अभी तक नहीं देखा है, हॉल में पड़ी पहली टोपी उठा ली और बड़ी रस्म के साथ मैडम डी विलेपारिसिस का हाथ चूमने के लिए आगे बढ़ा, और लंबे समय बाद मिलने पर दिखाई देने वाली दिलचस्पी के साथ उनका हालचाल पूछा। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि मार्किज़ ने इस दिखावे को पूरी तरह से खत्म कर दिया था, जिसे उसने एम. डी नॉरपोइस और ब्लोच को बगल के कमरे में ले जाकर समाप्त कर दिया। ब्लोच, जिसने उस व्यक्ति के प्रति दिखाई जा रही सारी शिष्टाचारता को देखा था जिसे उसने अभी तक एम. डी नॉरपोइस के रूप में नहीं पहचाना था, ने मुझसे सहज दिखने की कोशिश करते हुए कहा: "वह बूढ़ा बेवकूफ कौन है?" शायद, एम. डी नॉरपोइस की ये सारी चापलूसी और खुशामद ब्लोच के स्वभाव के अच्छे पहलू, युवा पीढ़ी के अधिक स्वतंत्र और सीधे-सादे तौर-तरीकों को सचमुच ठेस पहुँचा चुकी

थी, और इसलिए उन्होंने इसे बेतुका बताकर कुछ हद तक ईमानदारी भी दिखाई। लेकिन कारण चाहे जो भी हो, जैसे ही ये अभिवादन स्वयं ब्लोच को संबोधित किए गए, ये बेतुकापन खत्म हो गया, बल्कि उन्हें इससे आनंद भी मिला।

"महामहिम राजदूत," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कहा, "मैं चाहूंगी कि आप इस सज्जन से मिलें। महामहिम ब्लोच, महामहिम मार्क्विस डी नॉरपोइस।" श्रीमान डी नॉरपोइस के प्रति अपने अनौपचारिक व्यवहार के बावजूद, उन्होंने हमेशा उन्हें "महामहिम राजदूत" कहकर संबोधित करने पर जोर दिया। यह एक सामाजिक परंपरा होने के साथ-साथ उनके राजदूत पद के प्रति अत्यधिक सम्मान का भी प्रतीक था, जो सम्मान मार्क्विस ने उनमें पैदा किया था। इसके अलावा, यह उनके प्रति एक विशेष, कम परिचित और अधिक औपचारिक व्यवहार का सहज प्रयोग भी था—जो एक प्रतिष्ठित महिला के घर में, अन्य मेहमानों के साथ उनके द्वारा बरती जाने वाली स्वतंत्रता के विपरीत, उस व्यक्ति को तुरंत उनके प्रेमी के रूप में चिह्नित करता है।

एम. डी नॉरपोइस ने अपनी नीली निगाहें अपनी सफेद दाढ़ी में छिपा लीं, अपने लंबे शरीर को गहराई से झुकाया मानो वे ब्लोच नाम के सभी प्रसिद्ध और (उनके लिए) प्रभावशाली अर्थों के सामने नतमस्तक हो रहे हों, और बुदबुदाए: "मैं प्रसन्न हूँ..." जिस पर उनके युवा श्रोता, भावुक तो हुए, लेकिन यह महसूस करते हुए कि प्रख्यात राजनयिक कुछ ज़्यादा ही कर रहे हैं, उन्हें सुधारते हुए बोले: "बिल्कुल नहीं! इसके विपरीत, मैं प्रसन्न हूँ।" लेकिन यह औपचारिकता, जिसे एम. डी नॉरपोइस, श्रीमती डी विलेपारिसिस के प्रति अपनी मित्रता के कारण, अपने पुराने मित्र द्वारा उनसे मिलवाए गए प्रत्येक नए व्यक्ति के लाभ के लिए दोहराते थे, श्रीमती डी विलेपारिसिस को ब्लोच के सम्मान के लिए पर्याप्त नहीं लगी, जिनसे उन्होंने कहा:

"आप उनसे जो कुछ भी जानना चाहें, पूछ लीजिए; अगर ज़्यादा सुविधाजनक हो तो उन्हें दूसरे कमरे में ले जाइए; उन्हें आपसे बात करके बहुत खुशी होगी। मुझे लगता है कि आप उनसे ड्रेफस मामले के बारे में बात करना चाहते थे," वह आगे बोलीं, बिना यह सोचे कि यह बात एम. डी नॉरपोइस को पसंद आएगी या नहीं, ठीक वैसे ही जैसे वह इतिहासकार के लिए डचेस डी मोंटमोरेंसी के चित्र को रोशन करने से पहले या चाय को कप में डालने से पहले अनुमति लेने के बारे में नहीं सोचतीं।

"तुम्हें ज़ोर से बोलना होगा," उसने ब्लोच को चेतावनी दी, "वह थोड़ा बहरा है, लेकिन वह तुम्हें वह सब कुछ बता देगा जो तुम जानना चाहते हो; वह बिस्मार्क और कैवूर को बहुत अच्छी तरह जानता था। यह सच है, है ना?" उसने अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए कहा, "तुम बिस्मार्क को अच्छी तरह जानते थे?"

"क्या आपके पास स्टॉक के बारे में कुछ जानकारी है?" एम. डी नॉरपोइस ने मुझसे एक समझदारी भरे लहजे में पूछा और गर्मजोशी से मेरा हाथ मिलाया। मैंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए उनसे वह टोपी विनम्रतापूर्वक ले ली, जिसे वे औपचारिक रूप से कमरे में लाए थे, क्योंकि मैंने देखा कि वह मेरी ही टोपी थी जो उन्होंने अनजाने में ले ली थी। "आपने मुझे एक थोड़ी जटिल सी चीज़ दिखाई, जिसमें आपने बहुत अधिक बारीकी से विश्लेषण किया था। मैंने आपको अपनी राय स्पष्ट रूप से दी थी; आपने जो लिखा था, उसे कागज़ पर उतारने की कोई ज़रूरत नहीं थी। क्या आप हमें कुछ और देने का सोच रहे हैं? अगर मुझे सही याद है, तो आप बर्गोट से बहुत प्रभावित थे।" "आपको बर्गोट के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहिए," डचेस ने बीच में कहा। "मैं चित्रकार के रूप में उनकी प्रतिभा पर कोई संदेह नहीं करता; डचेस, कोई भी नहीं करेगा। उन्हें नक्काशी की अच्छी समझ है, भले ही वे एम. चेरबुलिएज़ की तरह बड़े पैमाने पर ब्रश का काम न जानते हों। लेकिन मुझे लगता है कि आजकल हम कलाओं को लेकर भ्रमित हो गए हैं और यह भूल गए हैं कि उपन्यासकार का काम कथानक बुनना और पाठकों को शिक्षित करना है, न कि पृष्ठ-पृष्ठ या अंत-पृष्ठ बनाने में समय बर्बाद करना। मैं रविवार को अपने अच्छे मित्र ए. जे. के यहाँ आपके पिताजी से मिलूंगा," उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा।

जब मैंने उन्हें श्रीमती डी गुएरमांटेस से बात करते देखा, तो एक पल के लिए मुझे उम्मीद जगी कि शायद वे मुझे उनके घर बुलाए जाने के बदले में वही मदद देंगे जो उन्होंने श्रीमती स्वान के घर जाने के लिए देने से मना कर दिया था। मैंने उनसे कहा, "मेरी एक और पसंदीदा कृति एल्स्टिर की है। लगता है डचेस डी गुएरमांटेस के पास उनकी कुछ अद्भुत कृतियाँ हैं, विशेष रूप से मूली का वह शानदार गुच्छा जिसे मैंने प्रदर्शनी में देखा था और जिसे मैं फिर से देखना चाहूँगी; वह कितनी अद्भुत कृति है!" और सचमुच, अगर मैं कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति होती और मुझसे पूछा जाता कि मुझे कौन सी तस्वीर सबसे अच्छी लगती है, तो मैं मूली के इस गुच्छे का

नाम लेती। "एक उत्कृष्ट कृति?" एम. डी नॉरपोइस ने आश्चर्यचकित और तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। "यह तो तस्वीर होने का दिखावा भी नहीं करती, यह तो महज़ एक रेखाचित्र है।" (वे सही थे।) "अगर आप इस तरह की एक चतुर छोटी सी कृति को 'उत्कृष्ट कृति' कहते हैं, तो आप हेबर्ट की वर्जिन या डैगनन-बुवेरेट के बारे में क्या कहेंगे?"

"मैंने सुना है कि आपने रॉबर्ट की औरत को लाने से मना कर दिया है," ब्लॉच द्वारा राजदूत को एक तरफ ले जाने के बाद श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपनी चाची से कहा। "मुझे नहीं लगता कि आपको कुछ खास कमी खलेगी, जैसा कि आप जानती हैं, वह बिलकुल ही भयानक है, उसमें प्रतिभा का कोई अंश नहीं है, और इसके अलावा वह बेहद बदसूरत भी है।"

"क्या आपका मतलब यह है कि आप उन्हें जानती हैं, डचेस?" एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने पूछा।

"जी हाँ, क्या आपको नहीं पता था कि उसने पूरे पेरिस के सामने मेरे घर में प्रस्तुति दी थी, हालाँकि इस पर मुझे गर्व करने की कोई बात नहीं है," मैडम डी गुएरमांटेस ने हंसते हुए कहा। फिर भी, अभिनेत्री के बारे में चर्चा होने के कारण, उन्हें यह बताने में खुशी हुई कि उनकी मूर्खता का पहला फल उन्हें खुद भुगतना पड़ा था। "हैलो, मुझे लगता है कि अब मुझे जाना चाहिए," उन्होंने बिना हिले-डुले कहा।

उसने अभी-अभी अपने पति को कमरे में प्रवेश करते देखा था, और ये शब्द उनके एक नवविवाहित जोड़े की तरह साथ में मिलने आने की बेतुकी स्थिति की ओर इशारा कर रहे थे, न कि उसके और उसके पति के बीच अक्सर तनावपूर्ण संबंधों की ओर, जो बढ़ती उम्र के बावजूद अभी भी एक खुशमिजाज कुंवारे की तरह जीवन जी रहा था। चाय की मेज के चारों ओर एकत्रित विशाल समूह पर नज़र डालते हुए, उसकी सौम्य, व्यंग्यात्मक दृष्टि - ढलते सूरज की चमक से थोड़ी चकाचौंध - उसकी छोटी गोल पुतलियाँ, जो उसकी आँखों के ठीक बीच में स्थित थीं, मानो 'बैल' हों जिन्हें वह एक उत्कृष्ट निशानेबाज होने के नाते हमेशा सटीक निशाने से मार सकता था, ड्यूक एक व्याकुल, सतर्क धीमी गति से आगे बढ़ा, मानो इतने शानदार जमावड़े से घबराकर वह महिलाओं के वस्त्रों पर पैर रखने और बातचीत में बाधा डालने से डर रहा हो। एक स्थायी मुस्कान—जो 'यवेटोट के अच्छे राजा' का आभास कराती थी—थोड़ी आडंबरपूर्ण, एक आधा खुला हाथ जो शार्क के पंख की तरह बगल में तैरता रहता था, जिसे वह अपने पुराने दोस्तों और परिचय कराए गए अजनबियों को हल्के से पकड़ने देता था, उसे

बिना एक भी हरकत किए या अपनी सौम्य, आलसी, शाही चाल को बाधित किए बिना, उन सभी की तत्परता का इनाम देते हुए बस इतना कहता था: "कैसे हो, मेरे लड़के; कैसे हो, मेरे प्यारे दोस्त; बहुत अच्छा लगा, महाशय ब्लोच; कैसे हो, अर्जेनकोर्ट;" और, जब मेरी बारी आई, जो सबसे अधिक पसंदीदा था, और जब उसे मेरा नाम बताया गया: "कैसे हो, मेरे युवा पड़ोसी, तुम्हारे पिताजी कैसे हैं? वह कितने शानदार व्यक्ति हैं!" उसने श्रीमती डी विलेपारिसिस को छोड़कर किसी के प्रति कोई विशेष प्रदर्शन नहीं किया, जिन्होंने अपने छोटे एप्रन की जेब से एक हाथ निकालते हुए सिर हिलाकर उन्हें नमस्कार किया।

एक ऐसी दुनिया में जहाँ हर कोई लगातार गरीब होता जा रहा था, वहाँ वह अत्यंत धनी था और अपने इस अपार धन-संपत्ति के विचार से वह हमेशा के लिए मोहित हो चुका था। उसने एक महान रईस का सारा घमंड प्रदर्शित किया, जो एक साधन संपन्न व्यक्ति के घमंड से और भी बढ़ गया था। धनवान व्यक्ति की शालीनता और शिष्टाचार ने उसकी आत्मनिर्भरता को बड़ी मुश्किल से नियंत्रित किया था। इसके अलावा, यह भी समझा जा सकता था कि महिलाओं के बीच उसकी सफलता, जिसने उसकी पत्नी को इतना दुखी कर दिया था, केवल उसके नाम और धन के कारण नहीं थी, क्योंकि वह अब भी बेहद आकर्षक था और उसका चेहरा किसी यूनानी देवता की तरह पवित्र और सुडौल था।

"क्या आपका मतलब यह है कि उसने आपके घर में प्रस्तुति दी?" एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने डचेस से पूछा।

"देखो, वह हाथ में लिली का गुच्छा लिए और अपनी पोशाक पर भी लिली लगाए कविता पाठ करने आई थी।" श्रीमती डी गुएरमांटेस अपनी चाची की तरह कुछ शब्दों का उच्चारण बेहद देहाती ढंग से करती थीं, लेकिन श्रीमती डी विलेपारिसिस की तरह 'र' का उच्चारण कभी नहीं करती थीं।

इससे पहले कि एम. डी नॉरपोइस, अपनी मेज़बान के दबाव में, ब्लोच को उस छोटे से एकांत स्थान पर ले जाते जहाँ वे खुलकर बात कर सकते थे, मैं कुछ देर के लिए उस बुजुर्ग राजनयिक के पास गया और अपने पिता के अकादमिक पद के बारे में कुछ कहा। उन्होंने पहले तो बातचीत को किसी और दिन के लिए टालने की कोशिश की। मैंने बताया कि मैं बालबेक जा रहा हूँ। "क्या? फिर से बालबेक जा रहे हो? अरे वाह, तुम तो नियमित रूप से दुनिया घूमते

रहते हो।" उन्होंने मेरी बात ध्यान से सुनी। लेरॉय-ब्यूलियू का नाम सुनते ही उन्होंने मुझे संदेह भरी नज़रों से देखा। मुझे लगा कि शायद उन्होंने एम. लेरॉय-ब्यूलियू से मेरे पिता के बारे में कुछ अपमानजनक कहा होगा और उन्हें डर था कि अर्थशास्त्री ने उन्हें यह बात बता दी होगी। अचानक ही वे मेरे पिता के प्रति गहरी आत्मीयता से भर उठे। और शुरुआती झिझक के बाद, अचानक एक शब्द ऐसे फूट पड़ा मानो वक्ता के विरुद्ध हो, जिसका अटूट विश्वास उसकी आधी-अधूरी चुप्पी पर भारी पड़ गया: "नहीं, नहीं," उन्होंने भावुक होकर मुझसे कहा, "आपके पिता को चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। उनके अपने हित में है कि वे चुनाव न लड़ें; यह उनके लिए उचित नहीं है; उन्हें अपने वास्तव में महान गुणों का सम्मान करना चाहिए, जो इस तरह के जोखिम से प्रभावित होंगे। वे इसके लिए बहुत बड़े व्यक्तित्व के धनी हैं। यदि वे चुने गए, तो उन्हें सब कुछ खोना होगा और कुछ भी हासिल नहीं होगा। शुक्र है, वे एक कुशल वक्ता नहीं हैं। और यही एक बात मायने रखती है मेरे प्रिय साथियों, भले ही आप केवल खोखली बातें ही क्यों न करें। आपके पिता का जीवन में एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है; उन्हें सीधे उसकी ओर बढ़ना चाहिए, और इधर-उधर भटकने की बजाय, यहाँ तक कि अकादमिक जगत के उन (काँटेदार) क्षेत्रों में भी। इसके अलावा, उन्हें ज़्यादा वोट नहीं मिलेंगे। अकादमी किसी भी उम्मीदवार को अपने साथ ले जाने से पहले कुछ समय तक इंतज़ार कराना पसंद करती है। सीने में। फिलहाल तो कुछ नहीं किया जा सकता। बाद में क्या होगा, मैं नहीं कह सकता। लेकिन उसे तब तक इंतजार करना होगा जब तक कि सोसाइटी खुद उससे मिलने न आ जाए। यह एक प्रथा है; एक बहुत अच्छी प्रथा नहीं, बल्कि एक जुनून है, आल्प्स के उस पार हमारे दोस्तों के बीच 'फरा दा से' (खुद को खो देना) की। लेरॉय-ब्यूलियू ने मुझसे इस सब के बारे में जिस तरह से बात की, वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। मैंने उसे शायद थोड़ा तीखे लहजे में बताया कि जो व्यक्ति औपनिवेशिक आयात और धातुओं से निपटने का आदी है, उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह उन अनिश्चितताओं की भूमिका को समझेगा, जैसा कि बिस्मार्क कहा करते थे। लेकिन, चाहे कुछ भी हो जाए, आपके पिता को किसी भी हालत में खुद को उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करना चाहिए, 'प्रिंसिपिस ऑब्स्टा' (अस्पष्टता का सिद्धांत)। अगर वह अचानक उनसे वोट मांगते हैं तो उनके दोस्त खुद को एक नाजुक स्थिति में पाएंगे। दरअसल," वह स्पष्टवादिता के साथ बोले, अपनी नीली आँखों को मेरे

चेहरे पर टिकाते हुए, "मैं एक ऐसी बात कहने जा रहा हूँ जिसे सुनकर आप आश्चर्यचकित होंगे, क्योंकि मैं आपके पिता का इतना प्रिय हूँ।" खैर, सिर्फ इसलिए कि मैं उनसे स्नेह करता हूँ (हम दोनों अविभाज्य हैं—आर्केड्स एम्बो), सिर्फ इसलिए कि मैं जानता हूँ कि वे अपने देश के लिए कितनी अपार सेवा कर सकते हैं, अगर वे सत्ता में बने रहें तो देश को कितनी ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं; स्नेह से, उनके प्रति उच्च सम्मान से, देशभक्ति से, मैं उन्हें वोट नहीं दूंगा। इसके अलावा, मुझे लगता है कि मैंने उन्हें यह समझा दिया है कि मुझे उन्हें वोट नहीं देना चाहिए। (मुझे उनकी आँखों में लेरॉय-ब्यूलियू की कठोर असीरियन छवि दिखाई दी।) "इसलिए अब उन्हें वोट देना मेरे लिए एक तरह से अपने ही कथन से मुकर जाना होगा।" एम. डी नॉरपोइस ने अपने साथी शिक्षाविदों को बार-बार पुराने ख्यालों वाला बताया। अन्य कारणों के अलावा, किसी भी क्लब या अकादमी का हर सदस्य अपने साथी सदस्यों को अपने चरित्र के ठीक विपरीत दिखाना पसंद करता है, यह कहने के लाभ के लिए नहीं कि: "आह! काश यह मेरे हाथ में होता!" बल्कि इसलिए कि वह उस चुनाव को, जिसे उसने खुद जीता है, अधिक कठिन और अधिक विशिष्ट साबित कर सके। उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "मैं आपको बता दूं कि आप सभी के हित में, मैं दस या पंद्रह वर्षों में आपके पिता को विजयी निर्वाचित देखना पसंद करूंगा।" ये शब्द, जो मुझे लगता है कि ईर्ष्या से नहीं तो कम से कम किसी भी प्रकार की अनिच्छा से कहे गए थे, और जिन्हें बाद में घटनाओं के क्रम ने एक अलग अर्थ दे दिया, तब मुझे याद आया।

“मुझे लगता है कि आपने फ्रोंडे आंदोलन के दौरान रोटी की कीमत पर संस्थान को भाषण देने के बारे में नहीं सोचा होगा,” उस आंदोलन के इतिहासकार ने संकोच से एम. डी नॉरपोइस से पूछा। “आप इस विषय पर काफी अच्छी खबर फैला सकते हैं,” (यानी, “आप मुझे एक ज़बरदस्त विज्ञापन दे देंगे”) उन्होंने राजदूत की ओर कायरतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा, लेकिन उनकी भावनाओं में एक गर्माहट थी जिसने उन्हें अपनी पलकें उठाने और आँखों में दोहरी चमक लाने पर मजबूर कर दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने यह भाव पहले भी देखा हो, जबकि मैं आज दोपहर ही इतिहासकार से पहली बार मिला था। अचानक मुझे याद आया कि मैंने यही भाव एक ब्राज़ीलियाई डॉक्टर की आँखों में भी देखा था, जो दावा करता था कि वह पौधों के आवश्यक तेलों को सूंघकर मेरे जैसे घुटन के दौरे ठीक कर सकता है। जब मैंने इस

उम्मीद में कि वे मेरे मामले पर अधिक ध्यान देंगे, उन्हें बताया कि मैं प्रोफ़ेसर कॉटार्ड को जानता हूँ, तो उन्होंने कॉटार्ड के हित में बोलते हुए उत्तर दिया: "अब मेरे इस इलाज के बारे में अगर आप उन्हें बता दें, तो उन्हें एकेडमी ऑफ़ मेडिसिन के लिए एक सनसनीखेज लेख लिखने का मौका मिल जाएगा!" उन्होंने इस मामले पर ज़ोर देने की हिम्मत नहीं की, बल्कि उसी प्रश्नवाचक, संकोची, चिंतित और विनती भरे भाव से मुझे घूरते रहे, जिसे देखकर मैं अभी-अभी फ्रोंडे के इतिहासकार के चेहरे पर हैरान रह गया था। ज़ाहिर है, दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को नहीं जानते थे और उनमें कुछ भी समान नहीं था, लेकिन भौतिक नियमों की तरह मनोवैज्ञानिक नियम भी कमोबेश एक समान ही लागू होते हैं। और आवश्यक शर्तें भी समान हैं; एक ही भाव अलग-अलग मनुष्यों की आँखों में चमकता है, जैसे एक ही सूर्योदय अलग-अलग जगहों को रोशन करता है, जो एक-दूसरे से बहुत दूर हैं और जिनका आपस में कोई संबंध नहीं है। मैंने राजदूत का उत्तर नहीं सुना, क्योंकि पूरा दल शोर मचाते हुए श्रीमती डी विलेपारिसिस के चारों ओर फिर से इकट्ठा हो गया था, ताकि उन्हें काम करते हुए देख सकें।
"क्या आप जानते हैं कि हम किसके बारे में बात कर रहे हैं, बेसिन?" डचेस ने अपने पति से पूछा।
ड्यूक ने कहा, "मैं काफी हद तक सही अनुमान लगा सकता हूं।"
"अरे! मुझे डर है कि एक अभिनेत्री के रूप में वह उस महान परंपरा में नहीं आतीं जिसे हम कह सकते हैं।"
श्रीमती डी गुएरमांटेस ने श्री डी'आर्गेनकोर्ट से कहा, "आप इससे अधिक हास्यास्पद किसी बात की कल्पना भी नहीं कर सकते।"
"दरअसल, यह हास्यास्पद था," एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, जिनकी विचित्र शब्दावली ने समाज के लोगों को यह घोषित करने में सक्षम बनाया कि वह मूर्ख नहीं थे और साहित्यिक लोग, उसी समय, उन्हें एक पूर्ण मूर्ख मानते थे।
“मुझे जो बात समझ नहीं आती,” डचेस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “वह यह है कि आखिर रॉबर्ट को उससे प्यार कैसे हो गया। ओह, मुझे पता है कि इस तरह की बातों पर चर्चा नहीं करनी चाहिए,” उन्होंने एक दार्शनिक और भावुक व्यक्ति के मनमोहक अंदाज़ में कहा, जिसका आखिरी भ्रम भी टूट चुका था। “मुझे पता है कि कोई भी किसी से भी प्यार कर सकता

है। और," उन्होंने आगे कहा, क्योंकि भले ही वह आधुनिक साहित्य पर अब भी हंसती हों, लेकिन लोकप्रिय प्रेस के माध्यम से या बातचीत के दौरान, यह उनके मन में घर करने लगा था, "यही तो प्यार की सबसे अच्छी बात है, क्योंकि यही इसे इतना 'रहस्यमय' बनाता है।"

"रहस्यमय! ओह, मुझे स्वीकार करना होगा, चचेरे भाई, यह मेरी समझ से थोड़ा परे है," कॉम्टे डी'आर्गेनकोर्ट ने कहा।

"ओह, हाँ, प्यार वाकई एक रहस्यमयी चीज़ है," डचेस ने दुनियादारी जानने वाली एक नेक दिल महिला की मीठी मुस्कान के साथ कहा, लेकिन साथ ही उस दृढ़ विश्वास के साथ भी, जैसे कोई वैगनरियन क्लब के ऊबे हुए सज्जन को यकीन दिलाता है कि वाल्क्यूरे में शोर से कहीं ज़्यादा कुछ है। "आखिरकार, कोई नहीं जानता कि एक व्यक्ति दूसरे से प्यार क्यों करता है; यह शायद वैसा बिल्कुल न हो जैसा हम सोचते हैं," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, और इस व्याख्या से उन्होंने अपने द्वारा दिए गए विचार को तुरंत खारिज कर दिया। "आखिरकार, कोई कुछ नहीं जानता, है ना?" उन्होंने थकी हुई शंका के साथ अपनी बात समाप्त की। "इसके अलावा, हम समझते हैं, है ना; हम दूसरों के प्यार के चुनाव को समझा नहीं सकते।"

लेकिन इस सिद्धांत को स्थापित करने के तुरंत बाद ही उन्होंने इसे त्याग दिया और सेंट-लूप के चुनाव की आलोचना की।

फिर भी, क्या आपको नहीं पता, मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि कोई पुरुष किसी ऐसे व्यक्ति में आकर्षण कैसे पा सकता है जो बिल्कुल मूर्ख हो?

सेंट-लूप का नाम सुनते ही और यह जानकर कि वह पेरिस में है, ब्लोच ने तुरंत उसके बारे में एक ऐसी अपमानजनक टिप्पणी की कि सभी लोग स्तब्ध रह गए। वह नफरत पाल रहा था और ऐसा लग रहा था कि वह उसे पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। एक बार जब उसने यह सिद्धांत स्थापित कर लिया कि वह स्वयं उच्च नैतिक मूल्यों वाला है और ला बूली (एक एथलेटिक क्लब जिसे वह बहुत ही फैशनेबल मानता था) में आने वाले लोग कारावास के पात्र हैं, तो उनके खिलाफ किया गया हर प्रहार उसे प्रशंसनीय लगा। एक बार तो वह यहाँ तक कह गया कि वह ला बूली के अपने एक मित्र के खिलाफ मुकदमा दायर करने के लिए उत्सुक है। मुकदमे के दौरान उसने कुछ ऐसे सबूत देने का प्रस्ताव रखा जो पूरी तरह से झूठे होंगे, हालाँकि प्रतिवादी उनकी सत्यता पर सवाल नहीं उठा पाएगा। इस तरह ब्लोच

(जिसने संयोगवश कभी अपनी योजना को अमल में नहीं लाया) अपने प्रतिद्वंद्वी को भ्रमित और क्रोधित करने की उम्मीद कर रहा था। इसमें भला क्या बुराई हो सकती थी, क्योंकि जिसे वह नुकसान पहुँचाना चाहता था, वह एक ऐसा व्यक्ति था जो केवल 'सही काम' करने के बारे में सोचता था, एक ला बूली जैसा व्यक्ति, और ऐसे लोगों के खिलाफ कोई भी हथियार जायज़ था, खासकर ब्लोच जैसे संत के हाथों में?

"लेकिन मैं कहता हूँ, स्वान के बारे में क्या?" एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने आपत्ति जताई, जो अंततः अपनी चचेरी बहन के भाषण का सार समझने में सफल हो गया था, उसकी अवलोकन क्षमता से प्रभावित था, और उन पुरुषों के उदाहरण खोजने के लिए अपना दिमाग खपा रहा था जो उन महिलाओं के प्यार में पड़ गए थे जिनमें उसने खुद कोई आकर्षण नहीं देखा था।

"लेकिन स्वान का मामला तो बिल्कुल अलग था," डचेस ने आपत्ति जताते हुए कहा। "यह वाकई बहुत हैरानी की बात थी, मैं मानती हूँ, क्योंकि वह तो बस एक नेक इरादों वाली बेवकूफ है, लेकिन वह कभी मूर्ख नहीं थी, और एक समय वह खूबसूरत भी थी।"

"ओ ओ!" मम्मे बुदबुदाया। डी विलेपरिसिस।

"क्या आपने कभी ऐसा नहीं सोचा? यकीनन, उनमें कुछ खूबियां थीं, बेहद खूबसूरत आंखें, अच्छे बाल, वो बहुत अच्छे कपड़े पहनती थीं और आज भी पहनती हैं। आजकल, मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं, वो बहुत बुरी लगती हैं, लेकिन अपने समय में वो एक प्यारी महिला थीं। हालांकि, चार्ल्स की उनसे शादी से मुझे जो दुख हुआ, वो कम नहीं था, क्योंकि यह बिल्कुल अनावश्यक था।" डचेस का इरादा कुछ भी असामान्य कहने का नहीं था, लेकिन जब एम. डी'आर्गेनकोर्ट हंसने लगे, तो उन्होंने ये आखिरी शब्द दोहराए—शायद इसलिए कि उन्हें ये मजेदार लगे या इसलिए कि उन्हें उनका हंसना अच्छा लगा—और अपनी चतुराई के साथ-साथ अपनी नारीत्व की मोहकता को भी बढ़ाने के लिए एक मोहक मुस्कान के साथ उनकी ओर देखा। उसने आगे कहा: "हाँ, सच में, यह सब झंझट के लायक नहीं था, है ना? फिर भी, उसमें कुछ आकर्षण तो था और मैं समझ सकती हूँ कि कोई भी उससे प्यार क्यों न कर बैठे, लेकिन अगर आप रॉबर्ट की प्रेमिका को देखते, तो यकीन मानिए, आप हँसी से लोटपोट हो जाते। ओह, मुझे पता है कोई मुझे ऑगियर का यह कथन सुनाएगा: 'जब तक नशा हो रहा है, बोतल से क्या फर्क पड़ता है?' खैर, रॉबर्ट को नशा तो हो गया होगा, लेकिन उसने बोतल चुनने

में ज़रा भी समझदारी नहीं दिखाई! सबसे पहले तो, क्या आप यकीन करेंगे कि वह मुझसे उम्मीद कर रही थी कि मैं अपने ड्राइंग रूम के ठीक बीच में बनी सीढ़ी पर चढ़ जाऊँ। अरे, बिलकुल मामूली सी बात—क्या?—और उसने ऐलान किया कि वह सीढ़ियों पर पेट के बल लेट जाएगी। और फिर, अगर आपने वो सब सुना होता जो उसने सुनाया, तो मुझे सिर्फ एक दृश्य याद है, लेकिन मुझे यकीन है कि कोई भी इसकी कल्पना नहीं कर सकता; इसे 'सात राजकुमारियाँ' कहा जाता था।"

"सात राजकुमारियाँ! हे भगवान, वह कितनी घमंडी होगी!" एम. डी'आर्गेनकोर्ट चिल्लाए। "लेकिन, एक मिनट रुकिए, मुझे तो पूरा नाटक याद है। लेखक ने इसकी एक प्रति राजा को भेजी थी, जिसे एक शब्द भी समझ नहीं आया और उन्होंने मुझे इसे समझाने के लिए बुलाया।"

"क्या यह संयोगवश सर पेलादान से तो नहीं है?" फ्रोंडे के इतिहासकार ने पूछा, जिसका उद्देश्य एक सूक्ष्म और सामयिक संकेत देना था, लेकिन इतनी धीमी आवाज़ में कि उनका प्रश्न किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना ही निकल गया।

"तो आप सात राजकुमारियों को जानती हैं, है ना?" डचेस ने उत्तर दिया, "बधाई हो! मैं तो सिर्फ एक को जानती हूँ, लेकिन वही काफी है; मुझे बाकी छह से मिलने की कोई इच्छा नहीं है। अगर वे सभी वैसी ही हैं जैसी मैंने देखी हैं!"

"कितनी बेवकूफ है!" मैंने मन ही मन सोचा। उसकी ठंडी-सी मुलाकात से चिढ़कर, मुझे इस बात से एक तरह की कड़वी संतुष्टि मिली कि वह माएटरलिंक को बिल्कुल भी नहीं समझ पा रही थी। "सोचो, यही वो औरत है जिससे मिलने के लिए मैं हर सुबह मीलों पैदल चलकर जाती हूँ। सच में, मैं बहुत दयालु हूँ। खैर, अब मेरी बारी है कि मैं उससे मिलना न चाहूँ।" मैंने खुद से यही कहा; लेकिन मेरे शब्द मेरे विचारों के विपरीत थे; वे बस बातचीत के शब्द थे, जैसे हम खुद से उन पलों में कहते हैं जब हम इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि अकेले चुपचाप नहीं रह पाते, और किसी दूसरे सुनने वाले की कमी महसूस करते हुए, बिना सोचे-समझे खुद से बातें करने लगते हैं, जैसे किसी अजनबी से बात कर रहे हों।

"मैं आपको बता नहीं सकती कि यह कैसा था," डचेस ने आगे कहा; "आप हँसे बिना रह ही नहीं सकते थे। ऐसा नहीं है कि किसी ने कोशिश की हो; बल्कि इसके विपरीत, मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है, क्योंकि वह युवती बिल्कुल भी खुश नहीं थी और रॉबर्ट ने मुझे कभी माफ

नहीं किया। हालाँकि मैं वास्तव में खेद व्यक्त नहीं कर सकती, क्योंकि अगर यह सफल रहा होता तो शायद वह महिला फिर से आती, और मुझे नहीं लगता कि मैरी-ऐनार्ड इसे स्वीकार करेंगी।"

यह नाम परिवार में रॉबर्ट की मां, श्रीमती डी मार्सैंट्स, जो ऐनार्ड डी सेंट-लूप की विधवा थीं, को उनकी चचेरी बहन, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस-बाविएर, जिनका नाम भी मैरी था, से अलग करने के लिए दिया गया था। भ्रम से बचने के लिए, उनके भतीजे, चचेरे भाई और बहनोई उनके ईसाई नाम में या तो उनके पति का नाम या उनका अपना कोई नाम जोड़ देते थे, जिससे उनका नाम मैरी-गिल्बर्ट या मैरी-हेडविज हो जाता था।

"सबसे पहले तो, पिछली रात एक तरह का पूर्वाभ्यास हुआ था, जो बहुत ही शानदार था!" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने व्यंग्यात्मक लहजे में अपने विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा। "ज़रा सोचिए, उन्होंने एक वाक्य बोला, नहीं, इतना भी नहीं, वाक्य का एक चौथाई हिस्सा भी नहीं, और फिर वह रुक गईं; उन्होंने अपना मुंह नहीं खोला—मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रही हूँ—लगभग पाँच मिनट तक।"

"ओह, मैं कहता हूँ," एम. डी'आर्गेनकोर्ट चिल्लाया।

मैंने अत्यंत विनम्रता से उन्हें यह संकेत देने की हिम्मत की कि यह थोड़ा असामान्य लग सकता है। और उन्होंने कहा—मैं आपको उनके सटीक शब्द बता रहा हूँ—'किसी भी बात को ऐसे दोहराना चाहिए जैसे कि आप उसे अभी-अभी रच रहे हों।' ज़रा सोचिए, यह वास्तव में बहुत बड़ी बात है।

"लेकिन मुझे समझ में आया कि वह कविता पाठ करने में बिल्कुल भी बुरी नहीं थी," उन दो युवकों में से एक ने कहा।

"उसे कविता का ज़रा भी ज्ञान नहीं है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उत्तर दिया। "हालांकि, मुझे यह बताने के लिए उसकी बात सुनने की ज़रूरत नहीं थी। उसे अपने लिली के फूलों के साथ आते देखना ही काफी था। उन लिली को देखते ही मैं समझ गई कि उसमें कोई प्रतिभा नहीं हो सकती!"

सब लोग हंस पड़े।

"मुझे उम्मीद है, मेरी प्यारी चाची, आप मुझसे नाराज़ नहीं होंगी, क्योंकि मैंने उस दिन स्वीडन की रानी के बारे में एक छोटा सा मज़ाक किया था। मैं आपसे माफ़ी मांगने आया हूँ।"
"अरे नहीं, मैं बिलकुल भी नाराज़ नहीं हूँ, अगर आपको भूख लगी है तो मैं आपको अपने यहाँ खाने की अनुमति भी देती हूँ। आइए, श्रीमान वाल्मेरे, आप इस घर की बेटी हैं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने पुस्तकालयाध्यक्ष से एक पुरानी शिष्टाचारात्मक बात दोहराते हुए कहा।
एम डी गुएरमांटेस उस आरामकुर्सी में सीधे बैठ गए, जिस पर वे बैठे थे, और अपनी टोपी को अपने बगल में कालीन पर टिका दिया, और संतुष्ट मुस्कान के साथ छोटी-छोटी केक की थाली का निरीक्षण किया जो उन्हें दी जा रही थी।
"यह सज्जन आपको एक प्रशंसनीय बेटी बनाते हैं," एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने टिप्पणी की, जिन्हें अनुकरण की भावना ने श्रीमती डी विलेपारिसिस के छोटे से मजाक को प्रचलन में रखने के लिए प्रेरित किया।
पुस्तकालयाध्यक्ष ने केक की थाली फ्रोंडे के इतिहासकार को सौंप दी।
"आप अपना काम बखूबी निभाते हैं," दूसरे व्यक्ति ने चौंककर कहा, और साथ ही भीड़ की सहानुभूति जीतने की उम्मीद भी जताई। उसी समय उसने अपने से पहले ही यह बात कहने वालों की ओर मिलीभगत भरी नज़र डाली।
"मेरी प्यारी चाची, मुझे बताइए," एम. डी गुएरमांटेस ने श्रीमती डी विलेपारिसिस से पूछा, "वह सुंदर दिखने वाला आदमी कौन था जो अभी मेरे अंदर आते ही बाहर जा रहा था? मैं उसे जरूर जानता हूँ, क्योंकि उसने मुझे झुककर प्रणाम किया, लेकिन मैं उसे पहचान नहीं पा रहा हूँ; आप जानती हैं कि मुझे नाम याद नहीं रहते, यह कितनी परेशानी की बात है," उन्होंने संतुष्टि भरे स्वर में कहा।
"एम. लेग्रैंडिन."
"ओह, लेकिन ओरियान की एक चचेरी बहन है जिसकी माँ, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो ग्रैंडिन थीं। हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है, वह ग्रैंडिन डी ल'एप्रेवियर थीं।"
"नहीं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उत्तर दिया, "कोई संबंध नहीं है। ये साधारण ग्रैंडिन हैं। इनका कोई खास वंश नहीं है। लेकिन आप जो भी नाम देना चाहें, वे उसके ग्रैंडिन बनने में बहुत खुश होंगे। इनकी एक बहन है जिसका नाम श्रीमती डी कैम्ब्रेमर है।"

"अरे बेसिन, तुम तो अच्छी तरह जानते हो कि मेरी चाची किसकी बात कर रही हैं," डचेस ने गुस्से से कहा। "वह उस बड़े घास खाने वाले जीव का भाई है जिसे तुमने कुछ दिन पहले मुझसे मिलने के लिए भेजने का अजीबोगरीब विचार किया था। वह पूरे एक घंटे तक रुकी रही; मुझे लगा मैं पागल हो जाऊंगी। लेकिन मुझे पहले लगा कि शायद वह पागल हो गई है जब मैंने एक अनजान व्यक्ति को कमरे में आते देखा जो बिल्कुल गाय जैसा दिख रहा था।"
"सुनो, ओरियान; उसने मुझसे पूछा कि तुम किस दोपहर घर पर थी; मैं उसके साथ असभ्य व्यवहार नहीं कर सकता था; और वैसे भी, तुम बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बोलती हो, वह बिल्कुल भी गाय जैसी नहीं है," उसने दुखी स्वर में कहा, हालांकि दर्शकों की ओर एक हल्की सी मुस्कुराती हुई नज़र डालना नहीं भूला।
उन्हें पता था कि उनकी पत्नी की तीक्ष्ण बुद्धि को विरोधाभास की प्रेरणा की आवश्यकता थी, उस विरोधाभास की जो सामान्य ज्ञान के विरुद्ध है, क्योंकि कोई (उदाहरण के लिए) किसी स्त्री को गाय समझने की गलती नहीं कर सकता। इसी प्रक्रिया से प्रेरित होकर श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने मूल विचार को विस्तार देते हुए अपने कई सबसे शानदार कथनों की रचना की। और ड्यूक ने अपने सरल स्वभाव से, बिना प्रत्यक्ष रूप से ऐसा किए, उनकी मदद की, ठीक वैसे ही जैसे रेलगाड़ी के डिब्बे में तीन ताश खेलने वाले के अनजाने साथी की तरह।
"मैं मानती हूँ कि वह गाय जैसी नहीं दिखती, वह तो एक दर्जन गायों जैसी दिखती है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, जब मैंने टोपी पहने मवेशियों के झुंड को अपने ड्राइंग रूम में आते देखा और उन्हें मुझसे पूछते सुना कि मैं कैसा हूँ, तो मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूँ। मेरा आधा मन तो यह कहने का हुआ: 'कृपया, मवेशियों के झुंड, आप ज़रूर कोई गलती कर रहे हैं, आप मुझे जान ही नहीं सकते, क्योंकि आप खुद मवेशियों का झुंड हैं,' लेकिन उसके बारे में बहुत सोचने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि कैम्ब्रेमर की यह महिला वही इन्फेंटा डोरोथिया होगी जिसने कहा था कि वह एक दिन मुझसे मिलने आएगी, और वह भी कुछ हद तक गाय जैसी ही है, इसलिए मैं बस यही कहने ही वाला था: 'महामहिम' और मवेशियों के झुंड के लिए तीसरे व्यक्ति का प्रयोग कर रहा था। उसकी गर्दन के नीचे की त्वचा की बनावट भी मुझे स्वीडन की रानी की याद दिला रही थी। लेकिन इस सामूहिक हमले की तैयारी लंबी दूरी की तोपखाने की गोलाबारी से की गई थी, युद्ध के सभी

नियमों के अनुसार। मुझे नहीं पता कितने समय पहले, उसके कार्डों से मुझ पर बमबारी की गई थी; मैं उन्हें पूरे घर में, सभी मेजों और कुर्सियों पर पड़ा हुआ पाता था। विज्ञापन पत्र। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वे किस चीज़ का विज्ञापन कर रहे थे। घर में आपको 'मार्क्विस एट मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर' के अलावा कुछ नहीं दिखेगा, साथ में कोई पता भी होगा जो मुझे याद नहीं है; आप यकीन मानिए कि मैं कभी भी वहां नहीं जाऊंगा।

"लेकिन रानी की तरह दिखना एक बहुत बड़ा गौरव है," फ्रोंडे के इतिहासकार ने कहा।

"हे भगवान, इन दिनों राजाओं और रानियों का कोई खास महत्व नहीं है," एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वह खुद को खुले विचारों वाला और आधुनिक दिखाना पसंद करते थे, और इसलिए भी ताकि वह अपनी शाही मित्रता को कोई महत्व न देते हुए प्रतीत हों, जिसे वह बहुत महत्व देते थे।

ब्लोच और एम. डी नॉरपोइस दूसरे कमरे से लौटकर हमारी ओर आए।

"तो महोदय," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने पूछा, "क्या आपने उनसे ड्रेफस मामले के बारे में बात की है?"

एम. डी नॉरपोइस ने मुस्कुराते हुए अपनी निगाहें छत की ओर उठाईं, मानो स्वर्ग को उन निरंकुश सनक का साक्षी बना रहे हों जिनके आगे उनकी पत्नी डुलसीनिया उन्हें झुकने पर मजबूर कर रही थी। फिर भी उन्होंने ब्लोच से बड़ी आत्मीयता से उस भयानक, शायद घातक दौर के बारे में बात की जिससे फ्रांस गुजर रहा था। चूंकि इसका संभवतः यह अर्थ था कि एम. डी नॉरपोइस (जिनके सामने ब्लोच ने ड्रेफस की निर्दोषता में अपने विश्वास को स्वीकार किया था) एक कट्टर ड्रेफस-विरोधी थे, इसलिए राजदूत की सौम्यता, उनके इस मौन स्वीकारोक्ति का भाव कि उनका श्रोता सही था, इस बात पर कभी संदेह न करना कि वे दोनों एक ही राय के थे, और सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए उनके साथ हाथ मिलाने की तत्परता ने ब्लोच के अहंकार को बढ़ाया और उनकी जिज्ञासा को जगाया। वे कौन से महत्वपूर्ण बिंदु थे जिन्हें एम. डी नॉरपोइस ने कभी स्पष्ट नहीं किया, लेकिन जिन पर उन्होंने परोक्ष रूप से यह पुष्टि की कि वे ब्लोच से सहमत थे; तो फिर इस मामले पर उनकी क्या राय थी, जो उन्हें एक साथ ला सकी? ब्लोच उस रहस्यमय एकमतता को देखकर और भी अधिक आश्चर्यचकित थे जो उनके और एम. डी नॉरपोइस के बीच मौजूद प्रतीत होती थी, क्योंकि यह केवल राजनीति तक ही

सीमित नहीं थी, बल्कि श्रीमती डी विलेपारिसिस ने एम. डी नॉरपोइस से ब्लोच के साहित्यिक कार्यों के बारे में विस्तार से बात की थी।

पूर्व राजदूत ने उनसे कहा, "आप अपनी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व हैं, और इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। आप उस युग के नहीं हैं जिसमें निस्वार्थ कार्य का कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, जिसमें लेखक जनता को अश्लीलता या अयोग्यता के अलावा कुछ नहीं देते। आपके जैसे प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, और यदि हमारे पास सरकार होती तो ऐसा होता भी।"

ब्लोच को इस तस्वीर से बहुत खुशी हुई जिसमें वह खुद को एक सार्वभौमिक तबाही के बीच अकेले तैरते हुए देख रहा था। लेकिन यहाँ भी वह और अधिक जानकारी चाहता था, वह जानना चाहता था कि एम. डी नॉरपोइस ने किन कमियों का जिक्र किया था। ब्लोच को लग रहा था कि वह कई अन्य लोगों की तरह ही काम कर रहा है; उसने कभी खुद को इतना असाधारण नहीं समझा था। वह ड्रेफस मामले पर लौट आया, लेकिन एम. डी नॉरपोइस के अपने विचारों को स्पष्ट करने में सफल नहीं हुआ। उसने उन्हें उन अधिकारियों के बारे में बोलने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की जिनके नाम उस समय लगातार अखबारों में आ रहे थे; उन्होंने उन राजनेताओं से भी अधिक जिज्ञासा जगाई जो इसमें शामिल थे, क्योंकि वे राजनेताओं की तरह पहले से ही प्रसिद्ध नहीं थे, बल्कि एक विशेष वेश धारण किए हुए, एक अलग तरह के जीवन की गुमनामी और धार्मिक रूप से संरक्षित चुप्पी से निकलकर, बस खड़े होकर बोलते और फिर गायब हो जाते, जैसे लोहेनग्रिन हंस द्वारा खींची गई नाव से उतरता है। ब्लोच अपने एक परिचित राष्ट्रवादी वकील की बदौलत ज़ोला मुकदमे की कई सुनवाईयों में प्रवेश पाने में सफल रहे थे। वे सुबह वहाँ पहुँचते और अदालत की कार्यवाही समाप्त होने तक वहीं बैठे रहते, अपने साथ सैंडविच का एक पैकेट और कॉफी का एक थर्मस लेकर, मानो किसी डिग्री की अंतिम परीक्षा दे रहे हों। दिनचर्या में यह बदलाव उनके अंदर एक बेचैनी पैदा करता था, जिसे कॉफी और मुकदमे में उनकी भावनात्मक रुचि चरम पर पहुँचा देती थी। वे अदालत में हुई हर बात से इतने मुग्ध होकर निकलते थे कि शाम को घर बैठे ही उन्हें उस खूबसूरत सपने में फिर से डूबने की तीव्र इच्छा होती थी और वे दोनों पक्षों के पसंदीदा रेस्तरां में दोस्तों की तलाश में निकल पड़ते थे, जिनके साथ वे दिन भर की कार्यवाही पर अंतहीन

चर्चा करते और एक ऐसे रात्रिभोज का आदेश देते, जिसे वे एक दबंग लहजे में मंगवाते थे, जिससे उन्हें शक्ति का भ्रम होता था। इस तरह वे दिन भर की भूख और थकावट को दूर करते, जो इतनी जल्दी शुरू हुआ था और दोपहर के भोजन के लिए कोई विराम नहीं मिला था। मानव मन, अनुभव और कल्पना के दो स्तरों के बीच निरंतर मंडराता रहता है, और अपने परिचित लोगों के आदर्श जीवन को समझने तथा उन लोगों को जानने का प्रयास करता है जिनके जीवन की कल्पना उसे करनी पड़ी है। ब्लोच के प्रश्नों के उत्तर में एम. डी नॉरपोइस ने कहा:

"इस मामले में दो अधिकारी शामिल हैं, जिन पर अभी मुकदमा चल रहा है। मुझे याद है कि कुछ समय पहले मैंने एक ऐसे व्यक्ति से उनके बारे में सुना था, जिनके निर्णय पर मुझे पूरा भरोसा था और जिन्होंने उन दोनों की बहुत प्रशंसा की थी - मेरा मतलब एम. डी मिरीबेल से है। वे लेफ्टिनेंट-कर्नल हेनरी और लेफ्टिनेंट-कर्नल पिक्कार्ट हैं।"

"लेकिन," ब्लोच ने कहा, "ज़्यूस की पुत्री, दिव्य एथेना ने एक के मन में दूसरे के मन के ठीक विपरीत विचार डाल दिए हैं। और वे दो शेरों की तरह एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। कर्नल पिक्कार्ट सेना में एक शानदार पद पर थे, लेकिन उनकी मोइरा ने उन्हें उस पक्ष में धकेल दिया जो वास्तव में उनका नहीं था। राष्ट्रवादियों की तलवार उनके कोमल शरीर को चीर देगी, और उन्हें शिकारी जानवरों और मनुष्यों के शरीर पर पलने वाले पक्षियों के भोजन के रूप में फेंक दिया जाएगा।"

एम. डी नॉरपोइस ने कोई जवाब नहीं दिया।

"वे दोनों वहाँ किस बारे में बकवास कर रहे हैं?" एम. डी गुएरमांटेस ने एम. डी विलेपारिसिस से पूछा, एम. डी नॉरपोइस और ब्लोच की ओर इशारा करते हुए।

"ड्रेफस मामला।"

"ये लोग तो शैतान हैं। वैसे, क्या आप जानते हैं कि ड्रेफस का कट्टर समर्थक कौन है? मैं आपको हज़ार अनुमान लगाने का मौका देता हूँ। मेरा भतीजा रॉबर्ट! मैं आपको बता सकता हूँ कि जॉकी में, जब लोगों को उसके कारनामों के बारे में पता चला, तो वहाँ खानदानों का एक बड़ा जमावड़ा लग गया, खूब हंगामा हुआ। और चूंकि वह अगले हफ्ते चुनाव लड़ रहा है..."

"बेशक," डचेस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "अगर वे सभी गिल्बर्ट की तरह हैं, जो लगातार कहता रहता है कि सभी यहूदियों को यरूशलेम वापस भेज दिया जाना चाहिए।"
"जी हां; तो प्रिंस डी गुएरमांटेस बिल्कुल मेरी ही तरह सोचते हैं," एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने कहा।
ड्यूक अपनी पत्नी का दिखावा तो करता था, लेकिन उससे प्यार नहीं करता था। वह बेहद स्वार्थी था, उसे बीच में टोकना बिल्कुल पसंद नहीं था, और घर पर उसके साथ क्रूरता से पेश आने की आदत भी थी। पत्नी के बोलने पर एक बुरे पति की तरह और अनसुनी होने पर एक कुशल वक्ता की तरह गुस्से से भर उठता था। अचानक रुककर उसने डचेस को घूरकर देखा, जिससे हर कोई असहज महसूस करने लगा।
"तुम्हें क्या लगता है कि हम गिल्बर्ट और जेरूसलम के बारे में सुनना चाहेंगे? इसका उससे कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन," उन्होंने नरम लहजे में कहा, "तुम मानोगी कि अगर हमारे परिवार के किसी सदस्य को जॉकी में गोली मार दी जाए, खासकर रॉबर्ट को, जिसके पिता दस साल तक चेयरमैन रहे थे, तो यह काफी गंभीर मामला होगा। तुम क्या उम्मीद कर सकती हो, मेरी प्यारी, उन्हें तो बहुत गुस्सा आ रहा है; वे सब इसमें लगे हुए हैं। मैं उन्हें दोष भी नहीं देता; व्यक्तिगत रूप से, तुम जानती हो कि मुझमें कोई नस्लीय भेदभाव नहीं है, ये सब बातें मुझे पुरानी लगती हैं, और मैं कहता हूं कि मैं समय के साथ चलता हूं; लेकिन धिक्कार है, जब कोई 'मार्क्विस डी सेंट-लूप' के नाम से जाना जाता है तो वह ड्रेफसार्ड नहीं होता; मैं और क्या कह सकता हूं?"
एम. डी गुएरमांटेस ने कुछ ज़ोर देकर कहा, "जब कोई मार्क्विस डी सेंट-लूप के नाम से जाना जाता है।" वे भली-भांति जानते थे कि ड्यूक डी गुएरमांटेस कहलाना कहीं अधिक गौरव की बात थी। लेकिन अगर उनके आत्मसम्मान में ड्यूक डी गुएरमांटेस की उपाधि की श्रेष्ठता को अन्य सभी उपाधियों से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर बताने की प्रवृत्ति थी, तो शायद यह शिष्टाचार के नियमों से अधिक कल्पना के नियम थे जिन्होंने उन्हें इसे कम करके दिखाने के लिए प्रेरित किया। हममें से प्रत्येक व्यक्ति दूर से जो देखता है, जो दूसरों में देखता है, उसे सबसे चमकीले रंगों में देखता है। क्योंकि कल्पना में परिप्रेक्ष्य को नियंत्रित करने वाले सामान्य नियम ड्यूकों पर भी उतने ही लागू होते हैं जितने कि आम मनुष्यों पर। और न केवल कल्पना के नियम, बल्कि वाणी के नियम भी। अब, वाणी के दो नियमों में से कोई भी यहाँ लागू हो सकता है, एक

वह नियम जो हमें अपने वर्ग के लोगों की तरह नहीं बल्कि अपनी मानसिक श्रेणी के लोगों की तरह स्वयं को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। इस नियम के अनुसार, एम. डी. गुएरमांटेस अपने शब्दों के चयन में, यहाँ तक कि जब वे कुलीन वर्ग के बारे में बात करना चाहते थे, तब भी एक साधारण से व्यापारी के ऋणी हो सकते थे, जो कहता: "जब कोई ड्यूक डी. गुएरमांटेस के नाम से जाना जाता है," जबकि एक शिक्षित व्यक्ति, जैसे स्वान या लेग्रैंडिन, ऐसा नहीं कहते। एक ड्यूक किराने वाले के लायक उपन्यास लिख सकता है, यहाँ तक कि उच्च समाज के जीवन के बारे में भी, उपाधियाँ और वंश उसके लिए कोई मायने नहीं रखते, और 'कुलीन' की उपाधि एक आम आदमी के लेखन से भी अर्जित की जा सकती है। इस मामले में, एम. डी. गुएरमांटेस ने 'जब कोई नाम से जाना जाता है' वाक्यांश किससे लिया था, शायद उन्हें इसका जरा भी अंदाजा नहीं था। लेकिन वाणी का एक और नियम यह है कि समय-समय पर, जैसे बीमारियाँ आती हैं और फिर गायब हो जाती हैं जिनके बारे में फिर कभी कुछ सुनने को नहीं मिलता, वैसे ही, न जाने कैसे, शायद अनायास ही या किसी दुर्घटना से, जैसे कि अमेरिका से फ्रांस में एक खरपतवार का आगमन हुआ, जिसके बीज एक यात्रा करने वाले कालीन की ऊन में फंसकर रेलवे तटबंध पर गिर गए, उसी दशक में ऐसे वाणी के रूप सामने आते हैं जिन्हें हम उन लोगों के होठों पर सुनते हैं जिन्होंने किसी भी तरह से मिलकर उनका उपयोग नहीं किया है। तो, जैसे एक साल मैंने ब्लोच को खुद के बारे में कहते हुए सुना था कि "सबसे आकर्षक लोग, सबसे प्रतिभाशाली, सबसे प्रसिद्ध, सबसे विशिष्ट लोगों ने पाया था कि पेरिस में केवल एक ही व्यक्ति था जिसे वे बुद्धिमान, सुखद और जिसके बिना वे नहीं रह सकते थे - अर्थात् ब्लोच," और यही वाक्यांश अनगिनत अन्य युवा पुरुषों द्वारा भी इस्तेमाल किया गया सुना जो उन्हें नहीं जानते थे और केवल उनके नाम के स्थान पर अपना नाम इस्तेमाल करते थे, वैसे ही मैंने अक्सर यह सुना था 'जब कोई नाम से जाना जाता है।'

ड्यूक ने आगे कहा, "जिस तरह के प्रभाव में वह आया है, उससे क्या उम्मीद की जा सकती है; यह समझना आसान है।"

"फिर भी यह काफी हास्यास्पद है," डचेस ने सुझाव दिया, "जब आप उनकी मां के रवैये के बारे में सोचते हैं, कि कैसे वह सुबह, दोपहर और रात अपने फ्रांसीसी पितृसत्ता के भाषणों से हमें इतना ऊबा देती हैं कि हमारी आंखों में आंसू आ जाते हैं।"

"हाँ, लेकिन सिर्फ़ उसकी माँ के बारे में ही नहीं सोचना है, आप हमें इस तरह धोखा नहीं दे सकते। एक औरत भी है, जो बेहद घटिया किस्म की है; उसका उस पर उसकी माँ से कहीं ज़्यादा प्रभाव है, और वह मास्टर ड्रेफस की हमवतन भी है। उसने अपनी मानसिकता रॉबर्ट को भी दे दी है।"

"ड्यूक, शायद आपने सुना न हो, कि इस तरह की मानसिकता का वर्णन करने के लिए एक नया शब्द है," संशोधन-विरोधी समिति के सचिव, लाइब्रेरियन ने कहा। "वे इसे 'मानसिकता' कहते हैं। इसका अर्थ बिल्कुल वही है, लेकिन इसका यह फायदा है कि कोई नहीं जानता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। यह अभी का सबसे नया शब्द है, जैसा कि लोग कहते हैं 'आखिरी शब्द'।" इस बीच, ब्लोच का नाम सुनकर, वह उसे एम. डी नॉरपोइस से सवाल करते हुए देख रहा था, उसके मन में संदेह था जिसने मार्क्विज़ के मन में भी उतनी ही तीव्र, हालांकि अलग तरह की, आशंकाएँ जगा दीं। लाइब्रेरियन के सामने कांपते हुए, और हमेशा उसकी उपस्थिति में ड्रेफस विरोधी की तरह व्यवहार करते हुए, वह इस बात से डरी हुई थी कि अगर उसे पता चल गया कि उसने अपने घर एक ऐसे यहूदी को बुलाया है जो 'सिंडिकेट' से कमोबेश जुड़ा हुआ है, तो वह क्या कहेगा।

“जी हां,” ड्यूक ने कहा, “'मानसिकता' की बात कर रहे हो? मुझे इसे याद रखना चाहिए; मैं इसे कभी न कभी इस्तेमाल करूंगा।” यह कोई मुहावरा नहीं था, ड्यूक के पास एक छोटी सी पर्स थी जो ऐसे ही 'संदर्भों' से भरी हुई थी, जिसे वह खाने की पार्टियों से पहले देखा करते थे। “मुझे 'मानसिकता' शब्द पसंद है। ऐसे बहुत से नए शब्द हैं जिन्हें लोग अचानक इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं, लेकिन वे टिकते नहीं। मैंने कुछ दिन पहले कहीं पढ़ा था कि कोई लेखक 'प्रतिभाशाली' था। शायद आप इसका मतलब जानते हों; मैं नहीं जानता। और तब से मैंने यह शब्द फिर कभी नहीं सुना।”

"लेकिन 'प्रतिभाशाली' शब्द की तुलना में 'मानसिकता' शब्द का प्रयोग अधिक व्यापक रूप से होता है," फ्रोंडे के इतिहासकार ने बातचीत में अपनी बात रखी। "मैं शिक्षा मंत्रालय की एक समिति में हूँ जहाँ मैंने इसे कई बार इस्तेमाल होते सुना है, साथ ही अपने क्लब, वोल्नी में और वास्तव में एम. एमिल ओलिवियर के यहाँ रात्रिभोज में भी।"

"मैं, जिसे शिक्षा मंत्रालय का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है," ड्यूक ने बनावटी विनम्रता से उत्तर दिया, लेकिन उसके अहंकार की तीव्रता इतनी अधिक थी कि उसके होंठों पर मुस्कान आ गई और उसकी आँखें खुशी से चमक उठती हुई श्रोताओं की ओर देखने लगीं। उसके व्यंग्यपूर्ण तिरस्कार ने बेचारे इतिहासकार को शर्म से लाल कर दिया। "मैं, जिसे शिक्षा मंत्रालय का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है," उसने अपने शब्दों का आनंद लेते हुए दोहराया, "और न ही वोल्नी क्लब का (मेरे एकमात्र क्लब यूनियन और जॉकी हैं - मुझे लगता है कि आप जॉकी में नहीं हैं, महोदय?" उसने इतिहासकार से पूछा, जो और भी गहरे लाल रंग से शर्म से लाल हो गया, अपमान को भांपते हुए और उसे समझ न पाने के कारण, उसके शरीर कांपने लगा। "मैं, जिसे एम. एमिल ओलिवियर के साथ भोजन करने का निमंत्रण भी नहीं मिला है, मुझे स्वीकार करना होगा कि मैंने 'मानसिकता' शब्द कभी नहीं सुना था। मुझे यकीन है कि आप भी इसी स्थिति में हैं, अर्जेनकोर्ट।"

उन्होंने आगे कहा, "आप जानते हैं कि वे ड्रेफस के अपराध के सबूत क्यों पेश नहीं कर पा रहे हैं। जाहिर तौर पर इसका कारण यह है कि युद्ध मंत्री की पत्नी उसकी रखैल थी, लोग यही कह रहे हैं।"

"अरे! मुझे लगा कि यह प्रधानमंत्री की पत्नी हैं," एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने कहा।

"मुझे लगता है कि आप सभी इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले को लेकर समान रूप से थकाऊ हैं," डचेस डी गुएरमांटेस ने कहा, जो सामाजिक क्षेत्र में हमेशा यह दिखाने के लिए उत्सुक रहती थीं कि वह खुद को किसी के भी बहकावे में नहीं आने देती हैं। यहूदियों के बारे में मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मैं उनमें से किसी को नहीं जानता और मैं इसी अनजानी स्थिति में रहना चाहता हूँ। लेकिन दूसरी तरफ, मुझे यह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता कि सिर्फ इसलिए कि उनके विचार 'सही' माने जाते हैं और वे यहूदी व्यापारियों से लेन-देन नहीं करते, या उनके सनग्लासेस पर 'यहूदियों का नाश हो' लिखा होता है, हमें मैरी-ऐनार्ड या विक्टर्निएन द्वारा जबरदस्ती डुरंड, डुबोई और ऐसी ही कई महिलाओं को दिखाया जा रहा है, जिन्हें हम इस मामले के बिना कभी नहीं जान पाते। मैं कुछ दिन पहले मैरी-ऐनार्ड से मिलने गया था। वहाँ का माहौल बहुत अच्छा हुआ करता था। आजकल तो वे सभी लोग मिलते हैं जिनसे हम जीवन

भर बचने की कोशिश करते रहे हैं, इस बहाने कि वे ड्रेफस के खिलाफ हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जिनके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है कि वे कौन हो सकते हैं।

“नहीं; वह युद्ध मंत्री की पत्नी थी; कम से कम, यही अफवाह फैली हुई है,” ड्यूक ने अपनी बात जारी रखी, जिन्हें अपनी बातचीत में कुछ खास मुहावरों का इस्तेमाल करना पसंद था, जिन्हें वे पुराने जमाने के मानते थे। “व्यक्तिगत रूप से, जैसा कि सब जानते हैं, मैं अपने चचेरे भाई गिल्बर्ट से बिल्कुल विपरीत विचार रखता हूँ। मैं उसकी तरह सामंती नहीं हूँ। अगर कोई नीग्रो मेरा दोस्त होता, तो मैं उसके साथ घूमता-फिरता, और मुझे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं होती कि कोई क्या सोचता है; फिर भी, आप मुझसे सहमत होंगे कि जब कोई सेंट-लूप नाम से जाना जाता है, तो वह जनमत की धज्जियाँ नहीं उड़ाता, जो वोल्टेयर या मेरे भतीजे से भी ज़्यादा समझदार है। और न ही कोई उस तरह की अंतरात्मा की कलाबाज़ी करता है, जिसे मैं क्लब में पेश होने से एक हफ़्ते पहले करने की अनुमति दूँ। यह थोड़ा कठोर है, सच में! नहीं, शायद उसकी उस छोटी सी प्रेमिका ने ही उसे इतना घमंडी बना दिया है। मुझे लगता है उसने उससे कहा होगा कि उसे 'बुद्धिजीवियों' में गिना जाएगा।” बुद्धिजीवी लोग उस कुलीन वर्ग के सर्वोच्च लोग हैं। वैसे, इससे एक काफी मनोरंजक, हालांकि थोड़ा शरारती, व्यंग्यपूर्ण वाक्य भी निकला है।

और ड्यूक ने अपनी पत्नी और एम. डी'आर्गेनकोर्ट के लिए अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, "माटेर सेमिटा," जो पहले ही जॉकी क्लब में अपनी जगह बना चुकी थी, क्योंकि दुनिया के सभी उड़ने वाले बीजों में से, जिसके साथ सबसे मजबूत पंख जुड़े होते हैं, जो इसे अपनी मूल शाखा से सबसे अधिक दूरी तक फैलाने में सक्षम बनाते हैं, वह अभी भी एक मजाक है।

“हम इस सज्जन से, जो विद्वान जैसे दिखते हैं, इसे समझाने के लिए कह सकते हैं,” उन्होंने इतिहासकार की ओर इशारा करते हुए कहा। “लेकिन इसे दोहराना बेहतर नहीं है, खासकर इसलिए कि इस सुझाव में जरा भी सच्चाई नहीं है। मैं अपनी चचेरी बहन मिरेपोइक्स जितनी महत्वाकांक्षी नहीं हूँ, जो दावा करती है कि वह ईसा से पहले अपने परिवार की वंशावली लेवी गोत्र तक खोज सकती है, और मैं यह साबित करने का बीड़ा उठाऊँगा कि हमारे परिवार में कभी भी यहूदी रक्त का एक कतरा भी नहीं रहा है। फिर भी, इस तथ्य से आँखें मूंद लेने का कोई फायदा नहीं है, आप निश्चिंत रहें कि मेरे प्यारे भतीजे के अत्यंत मौलिक विचार लैंडरन्यू में

काफी हलचल मचा सकते हैं। खासकर इसलिए कि फेज़ेन्साक अभी बीमार हैं, और ड्यूरास चुनाव लड़ेंगे; आप जानते हैं कि उन्हें उपद्रव करना कितना पसंद है," ड्यूक ने अपनी बात समाप्त की, जो कुछ मुहावरों का सटीक अर्थ कभी नहीं सीख पाए थे, और 'उपद्रव करना' का अर्थ 'मुश्किलें पैदा करना' समझते थे।

ब्लोच ने कर्नल पिक्कार्ट के सामने एम. डी नॉरपोइस को फंसाने की कोशिश की।

"इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती," एम. डी नॉरपोइस ने उत्तर दिया, "उनकी गवाही लेनी ही थी। मैं भली-भांति जानता हूँ कि इस रवैये के कारण मेरे कई साथियों ने कड़ा विरोध जताया है, लेकिन मेरे विचार से सरकार कर्नल को बोलने देने के लिए बाध्य थी। इस तरह के अंधे रास्ते से आसानी से बाहर नहीं निकला जा सकता, या ऐसा करने पर हमेशा खाई में गिरने का खतरा रहता है। जहाँ तक स्वयं अधिकारी की बात है, पहली सुनवाई में उनके बयान से बहुत ही उत्कृष्ट प्रभाव पड़ा। जब उन्हें उस चुस्त-दुरुस्त चेसेउर वर्दी में अदालत में आते और बिल्कुल सरल और स्पष्ट स्वर में अपनी देखी और समझी हुई बातें बताते हुए सुना, और यह कहते हुए सुना: 'एक सैनिक के रूप में अपने सम्मान की कसम'" (यहाँ एम. डी नॉरपोइस की आवाज़ में देशभक्ति की हल्की सी झलक थी) "'यही मेरा दृढ़ विश्वास है', तो यह इनकार करना असंभव है कि उन्होंने जो प्रभाव छोड़ा वह गहरा था।"

"देखो; वह एक ड्रेफसार्ड है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है," ब्लोच ने सोचा।

"लेकिन जिस बिंदु पर उन्होंने अब तक मिली सारी सहानुभूति खो दी, वह तब था जब उनका सामना रजिस्ट्रार ग्रिबेलिन से हुआ। जब किसी ने उस पुराने लोक सेवक को सुना, एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास केवल एक ही जवाब होता था," (यहाँ एम. डी नॉरपोइस ने अपने सच्चे विश्वासों की ऊर्जा के साथ अपने शब्दों पर ज़ोर देना शुरू किया) "जब किसी ने उन्हें सुना, जब किसी ने उन्हें अपने वरिष्ठ अधिकारी के चेहरे पर आँखें गड़ाए, बिना डरे अपना सिर ऊँचा करके, उनसे ऐसी स्वर में कहते हुए देखा जिसमें कोई प्रतिक्रिया की गुंजाइश नहीं थी: 'कर्नल महोदय, आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने कभी झूठ नहीं बोला, आप जानते हैं कि इस समय, हमेशा की तरह, मैं सच बोल रहा हूँ,' तो हवा का रुख बदल गया; एम. पिक्कार्ट बाद की सुनवाई में चाहे जो भी कर लेते; वे पूरी तरह असफल रहे।"

"नहीं; ज़ाहिर है वह ड्रेफ़ुसार्ड का विरोधी है; यह बिल्कुल स्पष्ट है," ब्लोच ने मन ही मन कहा। "लेकिन अगर वह पिक्कार्ट को गद्दार और झूठा मानता है, तो वह उसके खुलासों को गंभीरता से कैसे ले सकता है, और उन्हें इस तरह उद्धृत कैसे कर सकता है जैसे कि वह उन्हें आकर्षक और सच्चा मानता हो। और दूसरी ओर, अगर वह उसे एक ईमानदार व्यक्ति मानता है जो अपने अंतरात्मा को शांत कर रहा है, तो वह यह कैसे मान सकता है कि ग्रिबेलिन के सामने आने पर वह झूठ बोल रहा था?"

“खैर, अगर यह ड्रेफस निर्दोष है,” डचेस ने बीच में ही कहा, “तो उसने इसे साबित करने के लिए कुछ खास नहीं किया है। उस द्वीप से वह कितने बेवकूफी भरे, बेतुके पत्र लिखता है। मुझे नहीं पता कि एम. एस्टरहाज़ी उससे बेहतर हैं या नहीं, लेकिन वह शब्दों के चुनाव में कुछ कुशलता तो दिखाते हैं, उनका लहजा बिल्कुल अलग है। यह एम. ड्रेफस के समर्थकों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। उनके लिए कितना दुख की बात है कि निर्दोषों को बदलने का कोई तरीका नहीं है।” सब हंस पड़े। “तुमने सुना ओरियान ने क्या कहा?” ड्यूक डी गुएरमांटेस ने उत्सुकता से ई. डी विलेपारिसिस से पूछा। “हां; मुझे तो यह बहुत मजेदार लगा।” ड्यूक को यह काफी नहीं लगा। “खैर, मुझे नहीं पता, मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे यह मजेदार लगा; या यूं कहूं कि मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई बात मजेदार है या नहीं। मुझे चतुराई से कोई मतलब नहीं है।” एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने विरोध किया। "शायद इसलिए कि मैं सांसद रह चुका हूँ, जहाँ मैंने कई शानदार भाषण सुने हैं जिनका कोई मतलब नहीं था। वहाँ मैंने तर्क को सबसे ज़्यादा महत्व देना सीखा। शायद इसीलिए उन्होंने मुझे दोबारा नहीं चुना। मुझे मज़ाकिया बातें बिल्कुल भी पसंद नहीं आतीं।" "बेसिन, मेरे बच्चे, इतना गंभीर पिता बनने की कोशिश मत करो, तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुमसे ज़्यादा हास्य-विनोद की सराहना कोई नहीं करता।" "कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। बात बस इतनी है कि एक खास तरह के हास्य से मैं प्रभावित नहीं होता, इसीलिए मैं अक्सर अपनी पत्नी के हास्य-विनोद से प्रभावित हो जाता हूँ। क्योंकि आप पाएंगे कि यह आमतौर पर गहन अवलोकन पर आधारित होता है। वह एक पुरुष की तरह तर्क करती है; वह एक लेखक की तरह अपनी बात रखती है।"

संभवतः एम. डी नॉरपोइस द्वारा ब्लोच से इस तरह बात करने का कारण, मानो वे दोनों सहमत हों, यह हो सकता है कि वे स्वयं इतने कट्टर ड्रेफसवादी विरोधी थे कि सरकार को पर्याप्त रूप से ड्रेफसवादी विरोधी न पाकर वे उसके उतने ही शत्रु थे जितने कि ड्रेफसवादी। शायद इसलिए कि राजनीति में उनका उद्देश्य कुछ अधिक गहन था, एक अलग स्तर पर स्थित था, जिसके लिए ड्रेफसवाद एक महत्वहीन अवधारणा प्रतीत होता था जो विदेश नीति के बड़े मुद्दों में रुचि रखने वाले देशभक्त का ध्यान आकर्षित करने योग्य नहीं थी। शायद, बल्कि इसलिए कि उनकी राजनीतिक बुद्धिमत्ता के सिद्धांत केवल रूप, प्रक्रिया और व्यावहारिकता के प्रश्नों पर ही लागू होते थे, इसलिए वे तथ्यों के प्रश्नों को हल करने में उतने ही असमर्थ थे जितना कि दर्शन में शुद्ध तर्क अस्तित्व की समस्याओं से निपटने में असमर्थ होता है; या फिर इसलिए कि उसी बुद्धिमत्ता ने उन्हें ऐसे विषयों पर चर्चा करने में खतरा दिखाया और इसलिए, अपनी सावधानी में, उन्होंने केवल छोटी-मोटी घटनाओं के बारे में बात करना ही उचित समझा। लेकिन ब्लोच की गलती यह सोचने में थी कि एम. डी नॉरपोइस, भले ही स्वभाव से कम सतर्क और कम औपचारिक होते, (मान लीजिए कि वे ऐसा चाहते) हेनरी, पिक्कार्ट या डू पैटी डी क्लैम की भूमिका के बारे में या मामले के विभिन्न पहलुओं के बारे में उन्हें सच बता सकते थे। वास्तव में, ब्लोच को इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि एम. डी नॉरपोइस इन सभी मामलों के बारे में जानते थे। आखिर वे सभी मंत्रियों के मित्र होते हुए भी इसे कैसे नहीं जान सकते थे? स्वाभाविक रूप से, ब्लोच का मानना था कि राजनीति में सच्चाई को सबसे बुद्धिमान लोग भी लगभग फिर से स्थापित कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने आम आदमी की तरह यह कल्पना की कि यह तर्क से परे, स्थायी रूप से और एक भौतिक रूप में, गणतंत्र के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की गुप्त फाइलों में मौजूद है, जो इसे अपने मंत्रिमंडल को देते हैं। अब, भले ही कोई राजनीतिक सत्य लिखित दस्तावेजों का रूप ले ले, फिर भी इनका मूल्य उस रेडियोग्राफिक प्लेट से अधिक नहीं होता जिस पर आम आदमी यह कल्पना करता है कि रोगी की बीमारी शब्दों में लिखी हुई है, जबकि वास्तव में वह प्लेट अध्ययन के लिए केवल एक सामग्री प्रदान करती है, जिसे कई अन्य सामग्रियों के साथ मिलाकर डॉक्टर अपनी तर्क शक्ति से समग्र रूप से विचार करता है और उसी के आधार पर अपना निदान करता है। इसी प्रकार, राजनीति में भी सत्य, जब कोई जानकार लोगों के पास जाता है और यह सोचता है

कि वह इसे समझने वाला है, तो वह हाथ नहीं लगता। वास्तव में, बाद में (ड्रेफस मामले तक ही सीमित रहें), जब हेनरी के कबूलनामे और उसके बाद आत्महत्या जैसी चौंकाने वाली घटना घटी, तो इस तथ्य की व्याख्या ड्रेफस समर्थक मंत्रियों और कैवाइग्नाक और कुइग्नेट द्वारा एक साथ विपरीत तरीके से की गई, जिन्होंने स्वयं जालसाजी का पता लगाया था और जांच की थी; विशेष रूप से ड्रेफसवादी मंत्रियों के बीच, जो ड्रेफसवाद की एक ही विचारधारा के अनुयायी थे और न केवल उन्हीं दस्तावेजों से बल्कि एक ही भावना से प्रेरित थे, हेनरी की भूमिका को दो बिल्कुल अलग-अलग तरीकों से समझाया गया। एक समूह उन्हें एस्टरहाज़ी का सहयोगी मानता था, जबकि दूसरा समूह यह भूमिका डु पैटी डी क्लैम को सौंपता था। इस प्रकार वे अपने विरोधी कुइग्नेट के सिद्धांत के समर्थन में एकजुट हो गए और अपने समर्थक रीनाच के पूर्ण विरोध में खड़े हो गए। ब्लोच एम. डी नॉरपोइस से केवल इतना ही पता लगा सके कि यदि यह सच है कि चीफ ऑफ स्टाफ, एम. डी बोइसडेफ्रे ने एम. रोशेफोर्ट को एक गुप्त संदेश भेजा था, तो यह स्पष्ट था कि एक अत्यंत खेदजनक अनियमितता हुई थी।

आप इस बात को पूरी तरह से समझ सकते हैं कि युद्ध मंत्री (कम से कम गुप्त रूप से) अपने चीफ ऑफ स्टाफ को नरक की शक्तियों के हवाले कर रहे होंगे। आधिकारिक तौर पर इससे इनकार करना (मेरी राय में) अनावश्यक नहीं होता। लेकिन युद्ध मंत्री इस मामले पर गुप्त रूप से बहुत स्पष्टवादिता से अपनी राय व्यक्त करते हैं। इसके अलावा, कुछ ऐसे विषय भी हैं जिन पर हंगामा खड़ा करना अत्यंत नासमझी होगी, क्योंकि बाद में उन पर नियंत्रण रखना संभव नहीं होगा।

"लेकिन वे दस्तावेज स्पष्ट रूप से जाली हैं," ब्लोच ने कहा।

एम. डी नॉरपोइस ने इसका कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उन्होंने घोषणा की कि वे प्रिंस हेनरी डी'ऑरलियन्स द्वारा किए जा रहे प्रदर्शनों को स्वीकार नहीं करते हैं।

इसके अलावा, वे केवल संसद की शांति भंग कर सकते हैं और ऐसे आंदोलनों को बढ़ावा दे सकते हैं जो किसी भी दृष्टिकोण से देखे जाएं, निंदनीय ही होंगे। निश्चित रूप से हमें सैन्य-विरोधी षड्यंत्र को रोकना होगा, लेकिन हम दक्षिणपंथी तत्वों द्वारा प्रोत्साहित किसी भी प्रकार के झगड़े को बर्दाश्त नहीं कर सकते, जो स्वयं देशभक्ति के आदर्श की सेवा करने के बजाय

उसे अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। ईश्वर का शुक्र है, फ्रांस दक्षिण अमेरिकी गणराज्य नहीं है, और यहाँ अभी तक सैन्य घोषणा की आवश्यकता महसूस नहीं हुई है।
ब्लोच उनसे ड्रेफस के अपराध के प्रश्न पर कुछ भी बुलवा नहीं सके, और न ही उन्होंने उस समय चल रहे दीवानी मुकदमे के फैसले के बारे में कोई भविष्यवाणी की। दूसरी ओर, एम. डी नॉरपोइस इस फैसले के परिणामों के बारे में बताने के लिए अत्यंत तत्पर प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने कहा, "अगर दोष सिद्ध हो जाता है, तो संभवतः इसे रद्द कर दिया जाएगा, क्योंकि ऐसे मामलों में जहां इतने सारे गवाह मौजूद हों, प्रक्रिया में कोई न कोई खामी जरूर होती है जिसे वकील अपील में उठा सकते हैं। प्रिंस हेनरी के गुस्से भरे बयान पर लौटते हुए, मुझे इस बात पर बहुत संदेह है कि उनके पिता ने इसे स्वीकार किया होगा।"
"क्या आपको लगता है कि चार्ट्रेस ड्रेफस के लिए है?" डचेस ने मुस्कुराते हुए पूछा, उसकी आंखें गोल हो गईं, गाल चमक उठे, नाक थाली में धंसी हुई थी, और उसका पूरा हावभाव बड़े ही मनमोहक ढंग से हैरान करने वाला था।
"बिल्कुल नहीं; मेरा मतलब सिर्फ इतना था कि उस तरफ के पूरे परिवार में एक राजनीतिक समझ है, जिसे हमने प्रशंसनीय राजकुमारी क्लेमेंटाइन में चरम सीमा तक पहुंचते देखा है, और जिसे उनके बेटे, राजकुमार फर्डिनेंड ने एक अनमोल विरासत के रूप में सहेज कर रखा है। आपको बुल्गारिया के राजकुमार कभी भी मेजर एस्टरहाज़ी को अपने सीने से लगाए हुए नहीं मिलते।"
"वह एक साधारण सैनिक को पसंद करते," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने धीरे से कहा, जो अक्सर प्रिंस डी जॉइनविले के यहाँ रात्रिभोज में बल्गेरियाई सम्राट से मिलती थीं, और एक बार जब उन्होंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें ईर्ष्या नहीं होती, तो उन्होंने कहा था: "हाँ, महोदय, आपके कंगन से।"
“क्या आप आज शाम श्रीमती डी सागन के भोज में नहीं जा रहे हैं?” श्री डी नॉरपोइस ने श्रीमती डी विलेपारिसिस से ब्लोच के साथ अपनी बातचीत को बीच में ही रोकते हुए पूछा। मेरे मित्र ने राजदूत को प्रभावित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, जिन्होंने बाद में हमें बड़ी सरलता से बताया, शायद ब्लोच के भाषण में नव-होमरिक शैली के बचे हुए अंशों को देखते हुए, जिसे उन्होंने लगभग पूरी तरह से छोड़ दिया था: “उनका बोलने का तरीका थोड़ा मनोरंजक है,

थोड़ा पुराने ज़माने का, थोड़ा गंभीर। आप उनसे लामार्टिन या जीन-बैप्टिस्ट रूसो की तरह 'द लर्न्ड सिस्टर्स' जैसी कविता सुनाने की उम्मीद करते हैं। यह आजकल के युवाओं में काफी असामान्य हो गया है, जैसा कि उनसे पहले की पीढ़ी में भी था। हम स्वयं रोमांटिक स्वभाव के थे।" लेकिन चाहे उनके साथी उन्हें कितने भी असाधारण लगे हों, श्री डी नॉरपोइस ने फैसला किया कि बातचीत काफी लंबी हो चुकी है।

"जी नहीं, महोदय, मैं अब पार्टियों में नहीं जाती," उन्होंने एक प्यारी दादी जैसी मुस्कान के साथ जवाब दिया। "मुझे लगता है आप सब जा रहे होंगे? आप सब उस तरह की चीज़ों के लिए सही उम्र के हैं," उन्होंने एम. डी चैटेलरो, उनके दोस्त और ब्लोच को एक नज़र में देखते हुए कहा। "फिर भी, मुझे बुलाया गया था," उन्होंने मज़ाक में यह जताते हुए कहा कि उन्हें यह सम्मान पाकर खुशी हुई है। "दरअसल, वे खास तौर पर मुझे बुलाने आए थे।" ('वे' से तात्पर्य प्रिंसेस डी सागन से था।)

"मुझे कार्ड नहीं मिला है," ब्लोच ने कहा, यह सोचते हुए कि श्रीमती डी विलेपारिसिस तुरंत उन्हें एक कार्ड दिलवाने की पेशकश करेंगी, और श्रीमती डी सागन को अपने बॉल में उस महिला के मित्र को देखकर खुशी होगी जिसे उन्होंने व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित करने के लिए फोन किया था।

मार्क्विज़ ने कोई जवाब नहीं दिया, और ब्लोच ने इस बात पर ज़ोर नहीं दिया, क्योंकि उन्हें उनसे एक और ज़्यादा गंभीर मामले पर चर्चा करनी थी, और इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पहले ही उनसे पूछ लिया था कि क्या वे दो-तीन दिन बाद फिर आ सकते हैं। दोनों युवकों को यह कहते हुए सुनकर कि उन्होंने अभी-अभी रू रॉयल क्लब से इस्तीफा दे दिया है, जहाँ हर कोई आ-जा रहा था, उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस से वहाँ उनके चुनाव की व्यवस्था करने का अनुरोध किया।

"क्या ये सैगन लोग कुछ ज़्यादा ही बुरे व्यवहार वाले, कुछ ज़्यादा ही अभिमानी और घमंडी नहीं हैं?" उन्होंने व्यंग्य भरे लहजे में पूछा।

"बिल्कुल नहीं, उस क्षेत्र में हम आपके लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकते," पेरिसियन समाज के सभी प्रचलित मुहावरों को अपनाने वाले एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने उन्हें आश्वस्त किया।

"तो फिर," ब्लोच ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "मुझे लगता है कि यह उन गंभीर आयोजनों में से एक है, जो इस मौसम की महान सामाजिक परंपराओं में से एक है।"
मम. डी विलेपरिसिस खुशी से ममे की ओर मुड़ गया। डी गुएर्मेंटेस।
"हमें बताइए, क्या यह एक भव्य सामाजिक समारोह है, मैडम डी सागन का बॉल?"
"मुझसे पूछने का कोई फायदा नहीं," डचेस ने जवाब दिया, "मुझे आज तक यह समझ नहीं आया कि सामाजिक समारोह क्या होता है। वैसे भी, समाज मेरा मजबूत पक्ष नहीं है।"
"बिल्कुल; मुझे तो लगा कि मामला बिल्कुल उल्टा है," ब्लोच ने कहा, जिसे लगा कि मैडम डी गुएरमांटेस गंभीरता से बोल रही हैं।
एम. डी नॉरपोइस की हताशा के बावजूद, उन्होंने ड्रेफस मामले के बारे में उनसे लगातार सवाल पूछते रहे। राजदूत ने कहा कि बाहर से देखने पर उन्हें डु पैटी डी क्लैम का दिमाग कुछ हद तक भ्रमित लगा, जिसे शायद न्यायिक जांच जैसे इतने संवेदनशील और विवेकपूर्ण कार्य को संचालित करने के लिए उपयुक्त नहीं चुना गया था।
"मुझे पता है कि सोशलिस्ट पार्टी ज़ोर-शोर से उसकी गर्दन काटने और जेल से कैदी की तत्काल रिहाई की मांग कर रही है। लेकिन मुझे लगता है कि अभी हमें एम.एम. गेरॉल्ट-रिचर्ड एंड कंपनी के मामले में दखल देने की ज़रूरत नहीं है। अब तक पूरा मामला पूरी तरह से रहस्य बना हुआ है। मैं यह नहीं कह रहा कि दोनों तरफ से कुछ न कुछ गंदा काम नहीं हुआ है जिसे दबाने की कोशिश की गई हो। हो सकता है आपके मुवक्किल के कुछ कमोबेश निस्वार्थ संरक्षकों की मंशा अच्छी हो, मैं इससे इनकार नहीं करूंगा, लेकिन आप जानते हैं कि ऐसी चीजें भी हो सकती हैं," उन्होंने बड़ी चालाकी से कहा। "यह आवश्यक है कि सरकार यह आभास दे कि वह वामपंथी गुटों के हाथों में नहीं है, और वह किसी भी तरह के दबाव में, हाथ-पैर बांधकर, आत्मसमर्पण नहीं करने वाली है, चाहे वह किसी भी प्रकार का रक्षक हो, जो कि, मेरा विश्वास कीजिए, सेना के समान नहीं है। यह स्वाभाविक है कि यदि कोई नया सबूत सामने आता है, तो नए सिरे से मुकदमा चलाने का आदेश दिया जाएगा। और इसका क्या परिणाम निकलता है? स्पष्ट रूप से, नए सिरे से मुकदमे की मांग करना एक खुले दरवाजे को जबरदस्ती खोलने जैसा है। जब वह दिन आएगा, तो सरकार स्पष्ट स्वर में बोलेगी या अपने मूलभूत विशेषाधिकार को निलंबित कर देगी। मनगढ़ंत कहानियाँ अब पर्याप्त नहीं होंगी। हमें

ड्रेफस पर मुकदमा चलाने के लिए न्यायाधीशों की नियुक्ति करनी होगी। और यह एक आसान मामला होगा क्योंकि, हालांकि हमारे प्यारे फ्रांस में, जहाँ हम खुद को छोटा समझना पसंद करते हैं, हमने यह सोचने या ऐसा सोचने देने की आदत बना ली है कि सत्य और न्याय शब्द सुनने के लिए इंग्लिश चैनल पार करना आवश्यक है, जो अक्सर स्प्री तक पहुँचने का एक घुमावदार रास्ता होता है, बर्लिन के बाहर भी न्यायाधीश मिल जाते हैं। लेकिन एक बार जब व्यवस्था स्थापित हो जाएगी..." सरकार ने अपना काम शुरू कर दिया है, क्या आप सत्ता की आवाज़ सुनेंगे? जब वह आपको एक नागरिक के रूप में अपना कर्तव्य निभाने का आदेश दे, तो क्या आप उसकी आवाज़ सुनेंगे, क्या आप कानून और व्यवस्था के मोर्चे पर खड़े होंगे? जब उसकी देशभक्तिपूर्ण अपील सुनाई दे, तो क्या आप उसे अनसुना करने के बजाय 'हाज़िर!' कहने की समझदारी दिखाएंगे?

एम. डी नॉरपोइस ने ब्लोच से ये सवाल इतनी तीक्ष्णता से पूछे कि मेरे मित्र को एक ओर तो चिंता हुई, वहीं दूसरी ओर उन्हें प्रसन्नता भी हुई; क्योंकि राजदूत उनसे ऐसे बात कर रहे थे मानो वे किसी पूरे दल को संबोधित कर रहे हों, उनसे ऐसे सवाल कर रहे थे मानो वे उस दल के विश्वासपात्र हों और उनके द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों के लिए उत्तरदायी हों। ब्लोच के सामूहिक उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, एम. डी नॉरपोइस ने आगे कहा, "यदि आप निहत्थे हो जाते हैं, तो मामले की पुनः सुनवाई का आदेश देने वाले फरमान की स्याही सूखने से पहले ही, चाहे आदेश कितना भी कपटपूर्ण क्यों न हो, आप निहत्थे हो जाते हैं और एक निरर्थक विरोध में एकजुट हो जाते हैं, जिसे कुछ लोग नीति का अंतिम उपाय मानते हैं, यदि आप अपने तम्बुओं में लौट जाते हैं और अपनी नावों को जला देते हैं, तो आप स्वयं को ही विनाश की ओर ले जा रहे होंगे। क्या आप उन लोगों के कैदी हैं जो अशांति फैलाते हैं? क्या आपने उन्हें कोई वचन दिया है?" ब्लोच असमंजस में थे कि क्या उत्तर दें। एम. डी नॉरपोइस ने उन्हें ज़रा भी समय नहीं दिया। "यदि यह बात सच है, जैसा कि मैं मानना चाहूँगा, और यदि आपमें वह थोड़ी सी भी प्रतिभा है जिसकी मुझे आपके कुछ नेताओं और मित्रों में घोर कमी दिखती है, अर्थात् राजनीतिक सूझबूझ, तो जिस दिन आपराधिक न्यायालय की बैठक होगी, यदि आप स्वयं को संकटग्रस्त जल में फँसाने वाले मछुआरों के हाथों घसीटे जाने से बचाते हैं, तो आप अपनी लड़ाई जीत जाएँगे। मैं इस बात की गारंटी नहीं देता कि जनरल स्टाफ के सभी सदस्य बेदाग

बच निकलेंगे, लेकिन यह बहुत अच्छा होगा यदि उनमें से कुछ कम से कम बिना किसी विवाद को जन्म दिए अपनी प्रतिष्ठा बचा सकें।"

"इसके अलावा, यह तर्कसंगत है कि फैसला सुनाने और बिना सजा वाले अपराधों की पहले से ही बहुत लंबी सूची को बंद करने का अधिकार सरकार के पास है, निश्चित रूप से समाजवादी आंदोलनकारियों के इशारे पर नहीं, न ही किसी अज्ञात सैन्य प्रवक्ता के इशारे पर," उन्होंने ब्लोच के चेहरे पर साहसपूर्वक देखते हुए कहा, शायद उस सहज प्रवृत्ति के साथ जो सभी रूढ़िवादियों को दुश्मन के खेमे में अपना समर्थन स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है। सरकार की कार्रवाई किसी भी बोली लगाने वाले के निर्देशों पर नहीं चलनी चाहिए, चाहे बोली कहीं से भी आए। शुक्र है, सरकार न तो कर्नल ड्रिएंट के आदेशों के अधीन है और न ही एम. क्लेमेंसो के। हमें पेशेवर आंदोलनकारियों पर लगाम लगानी चाहिए और उन्हें दोबारा सिर उठाने से रोकना चाहिए। फ्रांस में, यहाँ फ्रांस के अधिकांश लोग, केवल व्यवस्थित परिस्थितियों में काम करने की अनुमति चाहते हैं। इस बारे में कोई संदेह नहीं है। लेकिन हमें जनमत को जागरूक करने से नहीं डरना चाहिए; और यदि कुछ लोग, जैसे कि हमारे मित्र राबेले, बेखबर पानी में कूद पड़ें, तो उन्हें यह बताना बेहतर होगा कि वह पानी अशांत था, उसे जानबूझकर हमारी सीमाओं के बाहर की किसी एजेंसी द्वारा अशांत किया गया था, ताकि उसकी गहराई में छिपे खतरों को छिपाया जा सके। और सरकार को यह आभास नहीं देना चाहिए कि वे आत्मरक्षा में अपनी निष्क्रियता से बाहर आ रहे हैं, जब वे उस अधिकार का प्रयोग करते हैं जो मूल रूप से उनका अपना है, मेरा मतलब है न्याय की प्रक्रिया शुरू करना। सरकार सभी स्वीकार करेगी। आपके सुझावों पर गौर करें। अगर यह साबित हो जाता है कि न्यायिक त्रुटि हुई है, तो उन्हें भारी बहुमत प्राप्त होगा, जिससे उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने का अवसर मिलेगा।

"आप, महोदय," ब्लोच ने एम. डी'आर्गेनकोर्ट की ओर मुड़ते हुए कहा, जिनसे उस सज्जन के आगमन पर बाकी दल के साथ उनका परिचय कराया गया था, "आप निश्चित रूप से एक ड्रेफुसार्ड हैं; विदेश में वे सभी ड्रेफुसार्ड हैं।"

"यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका संबंध केवल फ्रांसीसियों से ही है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने उस विशिष्ट प्रकार के उद्दंडता के साथ उत्तर दिया, जिसमें

दूसरे व्यक्ति पर एक ऐसा मत थोपा जाता है जिसे स्पष्ट रूप से यह जानना आवश्यक है कि वह नहीं मानता, क्योंकि उसने अभी-अभी ठीक इसके विपरीत मत व्यक्त किया है।
ब्लोच का चेहरा लाल हो गया; एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने कमरे में चारों ओर देखते हुए मुस्कुराया, और यदि यह मुस्कान, जब तक बाकी लोगों की ओर निर्देशित थी, ब्लोच के प्रति दुर्भावना से भरी हुई थी, तो अंततः जब यह मेरे मित्र के चेहरे पर टिकी, तो इसमें सौहार्द झलकने लगा, जिससे उसे उन शब्दों पर नाराज़गी जताने का कोई बहाना नहीं बचा, हालांकि वे शब्द उतने ही क्रूर थे। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एम. डी'आर्गेनकोर्ट से कुछ बुदबुदाया जो मैं सुन नहीं सका, लेकिन वह ब्लोच के धर्म के बारे में ही रहा होगा, क्योंकि उस क्षण डचेस के चेहरे पर वह भाव झलक रहा था जिसमें बोलने वाले व्यक्ति द्वारा ध्यान दिए जाने के डर से एक निश्चित झिझक और अवास्तविकता झलकती है, जबकि उसमें जिज्ञासा और शरारत से भरी मस्ती भी मिली हुई है जो ऐसे लोगों के समूह के प्रति मन में पैदा होती है जिनसे व्यक्ति खुद को मौलिक रूप से अजनबी महसूस करता है। खुद को संभालने के लिए ब्लोच ने ड्यूक डी चैटेलराउल्ट की ओर रुख किया। "महोदय, एक फ्रांसीसी होने के नाते, आपको पता होना चाहिए कि विदेशों में सभी लोग ड्रेफस समर्थक हैं, हालांकि दिखावा करने में हम यह नहीं जानते कि विदेशों में क्या चल रहा है। खैर, मुझे पता है कि मैं आपसे खुलकर बात कर सकता हूँ; सेंट-लूप ने मुझे ऐसा बताया था।" लेकिन युवा ड्यूक, जिसे लगा कि हर कोई ब्लोच के खिलाफ हो रहा है, और जो समाज में अक्सर लोगों की तरह डरपोक था, उसने व्यंग्यपूर्ण और दिखावटी हास्य का प्रयोग करते हुए, जो उसे एम. डी चार्लस से विरासत में मिला था, उत्तर दिया: "महोदय, आपको मुझसे ड्रेफस मामले पर चर्चा करने के लिए नहीं कहना चाहिए; यह एक ऐसा विषय है जिसका मैं सिद्धांत रूप से केवल जाफेटिक्स से ही उल्लेख करता हूँ।" ब्लोच को छोड़कर सभी मुस्कुराए, हालांकि वह स्वयं अपने यहूदी मूल, अपने पूर्वजों के उस पक्ष के बारे में तीखी टिप्पणियाँ करने का आदी था जो सिनाई पर्वत के आसपास कहीं से आया था। लेकिन इन सूक्तियों में से किसी एक के बजाय (निस्संदेह इसलिए कि उनके पास कोई तैयार सूक्ति नहीं थी), आंतरिक प्रक्रिया ने ब्लोच के मुख से कुछ बिल्कुल अलग ही बात निकलवा दी। और हमने केवल इतना ही सुना: "लेकिन आखिर आपको कैसे पता चला? आपको किसने बताया?" मानो वह किसी अपराधी का बेटा हो। जबकि, उनके नाम को देखते हुए, जो

ईसाई धर्म से बिल्कुल मेल नहीं खाता था, और उनके चेहरे को देखते हुए, उनकी हैरानी से मन की सादगी झलकती थी।

एम. डी नॉरपोइस की बातों से संतुष्ट न होकर, वह पुस्तकालयाध्यक्ष के पास गया और उससे पूछा कि क्या श्रीमती डी विलेपारिसिस के घर में कभी-कभी एम. डू पैटी डी क्लैम या एम. जोसेफ रीनाच आते-जाते रहते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष ने कोई उत्तर नहीं दिया; वह एक राष्ट्रवादी था और मार्क्विज़ को लगातार समझाता रहता था कि सामाजिक क्रांति किसी भी क्षण भड़क सकती है और उन्हें अपने मित्रों के चयन में अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। उसने मन ही मन सोचा कि कहीं ब्लोच सिंडिकेट का कोई गुप्त दूत तो नहीं है, जो सूचना जुटाने आया हो, और वह तुरंत श्रीमती डी विलेपारिसिस से ब्लोच के पूछे गए प्रश्नों को दोहराने चला गया। श्रीमती ने निष्कर्ष निकाला कि ज़्यादा से ज़्यादा वह असभ्य था और एम. डी नॉरपोइस को फंसाने की स्थिति में हो सकता था। साथ ही, वह लाइब्रेरियन को भी संतुष्ट करना चाहती थी, जिससे वह डरती थी और जो उसे अपने विचारों में ढालने की कोशिश कर रहा था, हालांकि इसमें उसे कोई खास सफलता नहीं मिली थी (हर सुबह वह उसे पेटिट जर्नल में एम. जुडेट का लेख पढ़कर सुनाता था)। इसलिए उसने ब्लोच को यह स्पष्ट करने का फैसला किया कि उसे दोबारा घर आने की ज़रूरत नहीं है, और उसे अपने सामाजिक तौर-तरीकों में वह तरीका आसानी से मिल गया जिससे एक संभ्रांत महिला किसी को भी अपने घर से विदा करती है, एक ऐसा तरीका जिसमें उंगली उठाना और गुस्से से भरी आंखें दिखाना शामिल नहीं होता, जैसा कि लोग कल्पना करते हैं। जब ब्लोच उससे विदा लेने आया, तो अपनी गहरी कुर्सी में धंसी हुई वह लगभग आधी नींद से जागी हुई लग रही थी। उसकी धंसी हुई आंखें मोतियों की जोड़ी की तरह हल्की लेकिन मनमोहक चमक रही थीं। ब्लोच की विदाई, जिसने मार्क्विज़ के चेहरे पर मुश्किल से एक हल्की सी मुस्कान ला दी, उससे उसने एक शब्द भी नहीं कहा, न ही उसने उसे अपना हाथ बढ़ाया। इस दृश्य ने ब्लोच को पूरी तरह से अचंभित कर दिया, लेकिन दर्शकों के घेरे में होने के कारण उसने महसूस किया कि इसे अधिक देर तक जारी रखना उसके लिए नुकसानदायक होगा, और मार्क्विज़ को मजबूर करने के लिए, जिस हाथ को उसने पकड़ने का प्रयास नहीं किया था, उसे उसने स्वयं उसकी ओर बढ़ा दिया। श्रीमती डी विलेपारिसिस चौंक गईं। लेकिन निस्संदेह, लाइब्रेरियन और ड्रेफसार्ड विरोधी गुट

को तत्काल संतुष्टि प्रदान करने के साथ-साथ, वह भविष्य के लिए भी तैयारी करना चाहती थीं, और इसलिए उन्होंने अपनी पलकें बंद करते हुए ही संतोष कर लिया।

"मुझे लगता है वह सो रही है," ब्लोच ने लाइब्रेरियन से कहा, जिसने मार्क्विज़ का समर्थन पाकर नाराज़गी का भाव दिखाया। "अलविदा मैडम," ब्लोच ने गुस्से से कहा।

उस बूढ़ी औरत ने अपने होठों को हल्के से हिलाया, मानो वह मरणासन्न हो, मुँह खोलना चाहती हो, पर उसकी आँखें अब लोगों को पहचान नहीं पा रही हों। फिर वह नई ऊर्जा से भरी हुई, एम. डी'आर्गेनकोर्ट की ओर मुड़ी, जबकि ब्लोच कमरे से बाहर निकल गया, यह सोचकर कि वह ज़रूर मानसिक रूप से कमज़ोर हो गई है। जिज्ञासा से भरा और इस विचित्र घटना पर और प्रकाश डालने के लिए उत्सुक, वह कुछ दिनों बाद उससे फिर मिलने आया। उसने उसका बड़े ही दोस्ताना अंदाज़ में स्वागत किया, क्योंकि वह एक नेक दिल महिला थी, क्योंकि लाइब्रेरियन वहाँ नहीं था, क्योंकि उसके मन में वह छोटा नाटक चल रहा था जिसे ब्लोच उसके लिए प्रस्तुत करने वाला था, और अंत में क्योंकि उसने उस नाराज़ महिला का छोटा सा दृश्य हमेशा के लिए कर लिया था, जिसे वह करना चाहती थी - एक ऐसा दृश्य जिसकी उसी शाम विभिन्न ड्राइंग रूम में खूब प्रशंसा हुई और चर्चा हुई, लेकिन उस रूप में जो अब सच्चाई से बिल्कुल अलग हो चुका था।

“आप अभी-अभी 'सेवन प्रिंसेस' की बात कर रही थीं, डचेस; आपको पता है (हालांकि इसमें गर्व की कोई बात नहीं है) कि उस रचना के लेखक—मैं उसे क्या कहूँ?—मेरे ही देश के नागरिक हैं,” एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने कमरे में मौजूद किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा उस रचना के लेखक के बारे में जानने की संतुष्टि के साथ-साथ हल्के से तिरस्कार भरे लहजे में कहा। “जी हाँ, वे राष्ट्रीयता से बेल्जियम के नागरिक हैं,” उन्होंने आगे कहा।

"बिल्कुल! नहीं, हम आपको 'सेवन प्रिंसेस' के लिए किसी भी तरह से ज़िम्मेदार नहीं ठहरा रहे हैं। सौभाग्य से, आप और आपके देशवासी उस बेतुकी रचना के लेखक जैसे नहीं हैं। मैं कई आकर्षक बेल्जियमवासियों को जानती हूँ, आप, आपके राजा, जो थोड़े शर्मीले हैं, लेकिन बुद्धि से परिपूर्ण हैं, मेरे लिग्ने के चचेरे भाई-बहन, और कई अन्य, लेकिन मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आप 'सेवन प्रिंसेस' के लेखक की भाषा नहीं समझते। इसके अलावा, अगर आप जानना चाहते हैं, तो इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि वास्तव में इसमें

कुछ भी नहीं है। आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो हमेशा अस्पष्ट दिखने की कोशिश करते हैं, और यहाँ तक कि खुद को हास्यास्पद बनाने की योजना भी बनाते हैं ताकि यह तथ्य छिपा सकें कि उनके दिमाग में कोई विचार नहीं है। अगर इसके पीछे कुछ होता, तो मैं आपको बता सकती हूँ कि मुझे थोड़ी सी हिम्मत दिखाने से ज़रा भी डर नहीं लगता," उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "बशर्ते कि इसमें कोई विचार हो। मुझे नहीं पता कि आपने बोरेली की रचना देखी है या नहीं। कुछ लोग इसे देखकर हैरान रह गए हैं, लेकिन मुझे... “भले ही इसके लिए मुझे सड़कों पर पत्थर मारे जाएं,” वह बिना सोचे समझे बोल पड़ी, जबकि उसे इस तरह की सजा का कोई खास खतरा नहीं था, “मुझे यह बेहद दिलचस्प लगा। लेकिन सात राजकुमारियां! यह ठीक है कि उनमें से एक को मेरे भतीजे से लगाव है, लेकिन मैं पारिवारिक भावनाओं को इतनी आसानी से संभाल नहीं सकती...”

डचेस ने अचानक अपनी बात रोक दी, क्योंकि एक महिला अंदर आई जो रॉबर्ट की माँ, कॉम्टेस डी मार्सेंटेस थीं। मैडम डी मार्सेंटेस को फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व, एक ऐसी अच्छाई और समर्पण की देवी के रूप में माना जाता था जो सचमुच देवदूत जैसी थी। मुझे ऐसा बताया गया था, और मुझे आश्चर्य होने का कोई विशेष कारण नहीं था, क्योंकि मुझे यह नहीं पता था कि वह ड्यूक डी गुएरमांटेस की बहन थीं। बाद में, जब भी मुझे पता चला कि ऐसी महिलाएं, उदास, पवित्र, पीड़ित, चर्च की खिड़कियों में संतों के आदर्श रूपों की तरह पूजनीय, एक ही वंश से निकली थीं, जिनसे क्रूर, व्यभिचारी और नीच भाई थे, तो मैं हमेशा चौंक जाती हूँ। भाई-बहन, जब वे ड्यूक डी गुएरमांटेस और मैडम की तरह चेहरे से बहुत मिलते-जुलते हों, तो... मुझे ऐसा लगा कि डी मार्सैंट्स के लोगों में एक समान बुद्धि और एक समान हृदय होना चाहिए, जैसा कि उस व्यक्ति में होता है जो अच्छे और बुरे भावों के बीच बदलता रहता है, लेकिन फिर भी उससे संकीर्ण मानसिकता होने पर व्यापक दृष्टिकोण या कठोर हृदय होने पर उदात्त त्याग की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

श्रीमती डी मार्सेंट्स ब्रुनेटियर के व्याख्यानों में भाग लेती थीं। उन्होंने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन को मंत्रमुग्ध कर दिया और अपने निष्कलंक जीवन से उसे समृद्ध भी किया। लेकिन सुंदर नाक और तीक्ष्ण दृष्टि के शारीरिक मेल के कारण, श्रीमती डी मार्सेंट्स को उनके भाई ड्यूक के समान बौद्धिक और नैतिक परिवार में ही रखा जाता था। मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा था कि

केवल एक महिला होने मात्र से, और शायद उनके दुखमय जीवन और सबके स्नेह को प्राप्त करने के कारण, कोई व्यक्ति अपने परिवार के बाकी सदस्यों से इतना अलग हो सकता है, जैसा कि पुराने उपन्यासों में होता है, जहाँ सभी सद्गुण और सुंदरता एक उद्दंड और कानूनविहीन भाइयों की बहन में समाहित होती है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रकृति, पुराने कवियों की तुलना में कम अपरंपरागत, लगभग पूरी तरह से परिवार में पाए जाने वाले तत्वों का ही उपयोग करती होगी, और मैं उसे इतनी कल्पनाशीलता देने में असमर्थ थी कि वह मूर्ख और मंदबुद्धि व्यक्ति के समान सामग्रियों से, मसखरेपन के जरा भी अंश के बिना एक उदात्त मस्तिष्क, किसी भी क्रूरता से अछूते संत का निर्माण कर सके। श्रीमती डी मार्सेंट्स ने सफेद सूरह का गाउन पहना हुआ था जिस पर बड़े-बड़े ताड़ के पत्तों की कढ़ाई थी, जिन पर अलग सामग्री के काले फूल उभरे हुए थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि तीन सप्ताह पहले ही उन्होंने अपने चचेरे भाई, एम. डी मोंटमोरेंसी को खो दिया था, एक ऐसा शोक जिसने उन्हें मिलने-जुलने या छोटे-मोटे भोजों में जाने से नहीं रोका, लेकिन वे हमेशा शोक में डूबी रहती थीं। वह एक महान महिला थीं। पूर्वजों के प्रभाव ने उन्हें दरबारी जीवन की पीढ़ियों की तुच्छता से भर दिया था, उन सभी सतही, कठोर कर्तव्यों से जो इसके अंतर्गत आते हैं। श्रीमती डी मार्सेंट्स में अपने माता-पिता की मृत्यु पर लंबे समय तक शोक मनाने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन वह किसी भी कीमत पर अपने चचेरे भाई की मृत्यु के ठीक अगले महीने रंगीन कपड़ों में नज़र नहीं आना चाहती थी। वह मेरे प्रति बहुत ही सुखद थीं, क्योंकि मैं रॉबर्ट का दोस्त था और मैं उससे अलग दुनिया में रहता था। इस सुखद व्यवहार के साथ-साथ वह थोड़ी शर्म भी दिखाती थीं, अपनी आवाज़, आँखों और मन को बीच-बीच में समेट लेती थीं, जैसे कोई स्त्री अनजाने में फैली हुई स्कर्ट को समेट लेती है ताकि वह ज़्यादा जगह न घेरे, अपनी कोमलता में भी अकड़ी और सीधी बनी रहे, जैसा कि अच्छी परवरिश सिखाती है। हालाँकि, इस अच्छी परवरिश को अक्षरशः नहीं लेना चाहिए, क्योंकि इनमें से कई महिलाएं बहुत जल्दी नैतिक पतन की ओर अग्रसर हो जाती हैं, लेकिन फिर भी अपने व्यवहार की लगभग बचकानी शुद्धता को कभी नहीं खोतीं। डी मार्सेंटेस बातचीत में थोड़ी चिड़चिड़ी थीं, क्योंकि जब भी उन्हें किसी आम आदमी, जैसे कि बर्गोट या एल्स्टिर के बारे में बात करने का मौका मिलता, तो वे शब्द को अलग करके, उसका पूरा अर्थ देते हुए, दो अलग-अलग स्वरों में, गुएरमांटे परिवार की खास

लय में बोलती थीं: "मुझे महाशय बर्गोट से मिलने का सम्मान, महान सम्मान मिला है," या "महाशय एल्स्टिर से परिचय करने का।" चाहे वह अपने श्रोताओं को अपनी विनम्रता पर आश्चर्यचकित करने के लिए हो या उसी प्रवृत्ति के कारण जो श्रीमती डी गुएरमांटेस ने पुराने रूपों के उपयोग की ओर लौटने में दिखाई, जो आज के समय की लापरवाही भरी प्रथाओं के खिलाफ एक विरोध था, जिसमें लोग कभी भी खुद को पर्याप्त रूप से 'सम्मानित' नहीं मानते थे। इनमें से जो भी सही कारण हो, ऐसा लगता था कि जब श्रीमती डी गुएरमांटेस... डी मार्सेंटेस ने कहा: "मुझे यह सम्मान मिला है, यह बहुत बड़ा सम्मान है।" उन्हें लगा कि वह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और यह दिखा रही हैं कि वह प्रतिष्ठित पुरुषों के नाम उसी तरह ग्रहण कर सकती हैं जैसे वे स्वयं अपने ग्रामीण घर में स्वागत करतीं, यदि वे आस-पास होते। दूसरी ओर, अपने व्यापक पारिवारिक संबंधों और अपने सभी रिश्तेदारों के प्रति गहरी निष्ठा के कारण, धीमी गति से बोलने और बातों को विस्तार से समझाने की आदत के चलते, वह हमेशा रिश्तेदारी की सटीक सीमा स्पष्ट करने का प्रयास करती थीं। इस कारण, वह (बिना किसी प्रभाव पैदा करने की इच्छा के और वास्तव में केवल भावुक किसानों और प्रतिष्ठित शिकारियों के बारे में बात करने की परवाह किए बिना) यूरोप के सभी प्रसिद्ध घरों का लगातार उल्लेख करती रहीं। उनकी इस कमी को उनसे कम प्रतिभाशाली लोग क्षमा नहीं कर सके और यदि वे थोड़े भी बुद्धिमान थे, तो इसे मूर्खता का संकेत मानकर उपहास किया।
देश में, श्रीमती डी मार्सेंट्स को उनके अच्छे कार्यों के लिए पूजा जाता था, लेकिन मुख्य रूप से इसलिए कि उनके वंश की शुद्धता, जिसमें कई पीढ़ियों से फ्रांस के इतिहास में केवल महानतम लोगों का ही वंश चला आ रहा था, ने उनके व्यवहार से वह सब कुछ छीन लिया था जिसे निम्न वर्ग के लोग 'शिष्टाचार' कहते हैं, और उन्हें पूर्ण सरलता प्रदान की थी। वह संकट में फंसी किसी भी गरीब महिला को गले लगाने से कभी नहीं हिचकिचाती थीं, और उसे लकड़ी से भरी गाड़ी लाने के लिए महल तक आने को कहती थीं। लोग कहते थे कि वह एक आदर्श ईसाई थीं। वह रॉबर्ट के लिए एक अत्यंत धनी पत्नी खोजने के लिए दृढ़ संकल्पित थीं। एक महान महिला होने का अर्थ है महान महिला होने का दिखावा करना, यानी एक हद तक सरलता का ढोंग करना। यह एक ऐसा शौक है जिसकी कीमत बहुत अधिक होती है, खासकर इसलिए क्योंकि सरलता लोगों को तभी आकर्षित करती है जब उन्हें पता हो कि

आप सरल जीवन जीने के लिए बाध्य नहीं हैं, यानी आप बहुत धनी नहीं हैं। बाद में, जब मैंने किसी को उनसे अपनी मुलाकात के बारे में बताया, तो किसी ने मुझसे कहा: "आपने निश्चित रूप से देखा होगा कि वह एक युवती के रूप में कितनी सुंदर रही होंगी।" लेकिन सच्ची सुंदरता इतनी व्यक्तिगत, इतनी अनूठी होती है कि उसे सुंदरता के रूप में पहचानना मुश्किल हो जाता है। आज दोपहर मैंने खुद से बस इतना ही कहा कि उसकी नाक छोटी थी, आँखें बहुत नीली थीं, गर्दन लंबी थी और चेहरा उदास था।

"सुनिए," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने डचेस डी गुएरमांटेस से कहा, "मैं किसी भी क्षण एक ऐसी महिला के आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ जिसे आप जानना नहीं चाहेंगी। मैंने सोचा कि किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए आपको पहले ही सूचित कर देना बेहतर होगा। लेकिन आपको डरने की ज़रूरत नहीं है, मैं उसे फिर कभी यहाँ नहीं बुलाऊँगी, केवल आज उसे आने देने के लिए मैं विवश थी। वह स्वान की पत्नी है।"

ड्रेफस मामले की बढ़ती गंभीरता को देखते हुए और अपने पति की नस्लीय पृष्ठभूमि के दुरुपयोग के डर से, श्रीमती स्वान ने उनसे विनती की थी कि वे कैदी की निर्दोषता का ज़िक्र कभी न करें। जब वे उपस्थित नहीं होते थे, तो वह और भी आगे बढ़कर प्रबल राष्ट्रवाद का प्रदर्शन करती थीं; ऐसा करके वे केवल श्रीमती वर्दुरिन का अनुसरण कर रही थीं, जिनमें अब तक सुप्त मध्यमवर्गीय यहूदी-विरोध जागृत होकर उग्र रूप ले चुका था। इस रवैये के कारण श्रीमती स्वान को यहूदी-विरोधी समाज में बन रही कई महिला संघों की सदस्यता प्राप्त हुई और वे अभिजात वर्ग के कई सदस्यों से मित्रता करने में सफल रहीं। यह विचित्र लग सकता है कि उनके उदाहरण का अनुसरण करने के बजाय, स्वान की इतनी करीबी मित्र डचेस डी गुएरमांटेस ने इसके विपरीत, हमेशा उनकी उस इच्छा का विरोध किया, जिसे उन्होंने उनसे छिपाया नहीं था, कि वे अपनी पत्नी का उनसे परिचय कराएँ। लेकिन हम समय आने पर देखेंगे कि यह डचेस के विशिष्ट स्वभाव के कारण उत्पन्न हुआ, जो मानती थी कि वह कुछ भी करने के लिए 'बाध्य' नहीं थी, और उसने निरंकुश बल के साथ वह सब कुछ लागू किया जो उसकी सामाजिक 'स्वतंत्र इच्छा' द्वारा तय किया गया था, जो कि अत्यंत मनमानी थी।

"मुझे बताने के लिए धन्यवाद," डचेस ने कहा। "यह वाकई बहुत अप्रिय होगा। लेकिन चूंकि मैं उसे जानती हूं, इसलिए मैं समय रहते वहां से निकल जाऊंगी।"

"मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, ओरियान, वह वास्तव में बहुत अच्छी हैं; एक उत्कृष्ट महिला हैं," श्रीमती डी मार्सैंट्स ने कहा।
मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह है, लेकिन मुझे खुद को इस बात का आश्वासन देने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती है।
"क्या आपको लेडी इसराइल्स के यहाँ आमंत्रित किया गया है?" श्रीमती डी विलेपारिसिस ने बातचीत का रुख मोड़ते हुए डचेस से पूछा।
"अरे, शुक्र है कि मैं उस औरत को नहीं जानती," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने जवाब दिया। "आपको मैरी-ऐनार्ड से पूछना चाहिए। वह उसे जानती है। मुझे कभी समझ नहीं आया कि क्यों।"
“मैं उसे एक समय जानती थी,” श्रीमती डी मार्सैंट्स ने कहा। “मैं अपनी गलती मानती हूँ। लेकिन मैंने अब उससे कोई जान-पहचान न रखने का फैसला किया है। लगता है वह उनमें से सबसे बुरी है, और इसे छिपाने की कोई कोशिश नहीं करती। इसके अलावा, हम सब बहुत ज्यादा भरोसेमंद और मेहमाननवाज रहे हैं। मैं उस जाति के किसी भी व्यक्ति के पास कभी नहीं जाऊँगी। जबकि हमारे पुराने दोस्त, गाँव के रिश्तेदार, हमारे अपने खून के लोग थे जिनके लिए हमने अपने दरवाजे बंद कर दिए थे, हमने यहूदियों के लिए उन्हें खोल दिया। और अब हम देख रहे हैं कि उनसे हमें क्या धन्यवाद मिलता है। लेकिन मुझे बोलने का कोई अधिकार नहीं है; मेरा एक प्यारा बेटा है, और एक नौजवान मूर्ख की तरह, वह हर तरह की पागलपन भरी बातें कहता और करता है,” उन्होंने आगे कहा, क्योंकि उन्हें एम. डी'आर्गेनकोर्ट द्वारा रॉबर्ट के बारे में किए गए किसी इशारे का एहसास हो गया था। “लेकिन, रॉबर्ट की बात करें तो, क्या आपने उसे नहीं देखा?” उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस से पूछा; “शनिवार होने के कारण, मैंने सोचा कि वह छुट्टी पर पेरिस आ रहा होगा, और ऐसे में वह आपसे मिलने जरूर आएगा।”
दरअसल, श्रीमती डी मार्सैंट्स को लगा था कि उनके बेटे को उस सप्ताह छुट्टी नहीं मिलेगी; लेकिन यह जानते हुए कि अगर उसे छुट्टी मिल भी जाती है, तो वह श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने कभी नहीं आएगा, उन्होंने कमरे में उसके आने की उम्मीद जताकर, अपनी

संवेदनशील चाची से उन सभी मुलाकातों के लिए माफी पाने की उम्मीद की, जो उसने उनसे न की थीं।
"रॉबर्ट यहाँ है! लेकिन मुझे उससे कभी एक शब्द भी सुनने को नहीं मिला; मुझे नहीं लगता कि मैंने उसे बालबेक के बाद से देखा है।"
"वह बहुत व्यस्त हैं; उनके पास करने के लिए बहुत कुछ है," श्रीमती डी मार्सेंटेस ने विनती की।
श्रीमती डी गुएरमांटेस की पलकें हल्की सी मुस्कान के साथ फड़फड़ा उठीं, जब उन्होंने अपने सनग्लास के सिरे से कालीन पर बन रहे वृत्त को ध्यान से देखा। जब भी ड्यूक अपनी पत्नी के प्रति खुलेआम बेवफ़ाई करते थे, श्रीमती डी मार्सेंट्स हमेशा अपनी भाभी की ओर से अपने भाई के खिलाफ मोर्चा संभाल लेती थीं। उनकी भाभी को इस सुरक्षा की कृतज्ञता और कड़वाहट दोनों महसूस होती थी, और रॉबर्ट की शरारतों से उन्हें कोई खास हैरानी नहीं होती थी। इसी समय दरवाजा फिर खुला और रॉबर्ट खुद कमरे में दाखिल हुए।
"वाह, संत की बात हो गई!" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा।
श्रीमती डी मार्सैंट्स, जिनकी पीठ दरवाजे की ओर थी, ने अपने बेटे को अंदर आते नहीं देखा था। जब उनकी नज़र उस पर पड़ी, तो उनका मातृत्व हृदय खुशी से ऐसे उछल पड़ा जैसे किसी पंख के फड़फड़ाने से, उनका शरीर आधा अपनी जगह से उठ गया, उनका चेहरा कांप उठा और उन्होंने रॉबर्ट की आँखों में बड़े आश्चर्य से देखा।
"वाह! आप आ गए! कितना आनंददायक! कितना बड़ा आश्चर्य!"
"अरे! संत की बात हो रही है!—मैं समझ गया," बेल्जियम के राजनयिक ने हंसते हुए कहा।
"स्वादिष्ट है ना?" डचेस ने तीखे लहजे में कहा, जिन्हें शब्दों के साथ खेलना बिल्कुल पसंद नहीं था और उन्होंने यह मजाक केवल खुद का मजाक उड़ाने के बहाने किया था।
"शुभ दोपहर, रॉबर्ट," उसने कहा, "मुझे लगता है कि वह अपनी चाची को भूल गया है।"
उन्होंने कुछ देर बात की, शायद मेरे बारे में, क्योंकि जब सेंट-लूप अपनी मां के पास जाने के लिए उसे छोड़कर जा रहा था, तब श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मेरी ओर मुड़कर देखा:
"शुभ दोपहर; आप कैसी हैं?" यह उनका अभिवादन था।

उसने अपनी नीली निगाहों की रोशनी मुझ पर बरसाई, एक पल के लिए झिझकी, फिर अपनी बांह का तना मेरी ओर फैलाया, और आगे झुकी, जो एक झाड़ी की तरह तेज़ी से पीछे की ओर उछली जिसे ज़मीन पर उखाड़ दिया गया हो और छोड़ने पर वह अपनी स्वाभाविक स्थिति में लौट आती हो। इस प्रकार वह सेंट-लूप की निगाहों की आग के नीचे व्यवहार कर रही थी, जो उस पर नज़र रख रही थीं और अपनी चाची से कुछ और रियायत पाने के लिए बेताब कोशिश कर रही थीं। हमारी बातचीत के पूरी तरह विफल होने के डर से, उसने बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए उसमें हिस्सा लिया और मेरी ओर से उत्तर दिया:

"अभी उनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है, वे काफी थक जाते हैं; वैसे, मुझे लगता है कि अगर वे आपसे अक्सर मिलते तो उनकी तबीयत काफी बेहतर हो जाती, क्योंकि मैं आपको यह बताए बिना नहीं रह सकती कि वे आपकी बहुत प्रशंसा करते हैं।"

"ओह, यह तो उनकी बहुत बड़ी मेहरबानी है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने जानबूझकर अनौपचारिक लहजे में कहा, मानो मैं उनके लिए उनका लबादा लेकर आई हूँ। "मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"देखो, मुझे एक मिनट के लिए अपनी माँ से बात करने जाना है; मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ," सेंट-लूप ने कहा, और इस तरह मुझे अपनी चाची के बगल में बैठने के लिए मजबूर किया।

हम दोनों चुप रहे।

"मैं तुम्हें कभी-कभी सुबह देखती हूँ," उसने ऐसे कहा जैसे वह मुझे कुछ ऐसा बता रही हो जो मुझे पता ही न हो, और मैंने भी उसे कभी नहीं देखा था। "टहलना कितना अच्छा होता है।"

"ओरियान," श्रीमती डी मार्सैंट्स ने धीमी आवाज़ में कहना शुरू किया, "आपने कहा था कि आप श्रीमती डी सेंट-फेरेल के घर जा रही हैं; क्या आप इतनी कृपा करेंगी कि उन्हें बता दें कि वह रात के खाने पर मेरी उम्मीद न करें, क्योंकि रॉबर्ट मेरे साथ है, इसलिए मैं घर पर ही रहूंगी। और एक बात और, हालांकि मैं आपसे पूछना नहीं चाहती, क्या आप जाते समय उन्हें यह संदेश दे देंगी कि वे रॉबर्ट की पसंदीदा सिगार का एक डिब्बा तुरंत मंगवा दें। उन्हें 'कोरोना' कहते हैं। मेरे पास घर में एक भी नहीं है।"

रॉबर्ट हमारे पास आया; उसे केवल श्रीमती डी सेंट-फेरेल का नाम ही पता चला था।

"मैडम डी सेंट-फेरेल आखिर कौन हैं?" उसने आश्चर्यचकित लेकिन दृढ़ स्वर में पूछा, क्योंकि वह समाज से संबंधित हर चीज के बारे में जानबूझकर अनभिज्ञ होने का दिखावा कर रहा था।
"लेकिन, मेरे प्यारे बेटे, तुम अच्छी तरह जानते हो," उसकी माँ ने कहा। "वह वर्मैंडोइस की बहन है। उसी ने तुम्हें वह सुंदर बिलियर्ड टेबल दी थी जो तुम्हें इतनी पसंद थी।"
"क्या, वो वर्मैंडोइस की बहन हैं, मुझे तो पता ही नहीं था। सच में, मेरा परिवार कमाल का है," उन्होंने आगे कहा, मेरी ओर मुड़कर बातचीत में शामिल होते हुए और अनजाने में ब्लोच की आवाज़ में बोलते हुए, जैसे वो उनके विचारों को अपना रहे हों, "वे सबसे अनसुने लोगों को जानते हैं, सेंट-फेरेओल नाम के लोगों को" (हर शब्द के आखिरी व्यंजन पर ज़ोर देते हुए) "और ऐसे ही नाम वाले लोग; वे पार्टियों में जाते हैं, विक्टोरिया कार चलाते हैं, शानदार ज़िंदगी जीते हैं। ये तो अद्भुत है।"
श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने गले से एक हल्की, छोटी, तीखी आवाज़ निकाली, मानो अनजाने में हंसी को दबा रही हों, जिससे यह ज़ाहिर हो सके कि रिश्तेदारी के नियमों के अनुसार वह अपने भतीजे की बुद्धिमत्ता का उतना ही सम्मान करती थीं। एक नौकर ने आकर बताया कि प्रिंस वॉन फाफेनहाइम-मुन्स्टरबर्ग-वेनिगेन ने एम. डी नॉरपोइस को संदेश भेजा है कि वह उनका इंतज़ार कर रहे हैं।
"उन्हें अंदर ले आइए, महोदय," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने बूढ़े राजदूत से कहा, जो जर्मन मंत्री की तलाश में निकल पड़े।
"रुको महोदय; क्या आपको लगता है कि मुझे उन्हें महारानी शार्लोट का लघुचित्र दिखाना चाहिए?"
"क्यों, मुझे यकीन है कि वह बहुत खुश होंगे," राजदूत ने दृढ़ विश्वास के स्वर में कहा, मानो वह भाग्यशाली मंत्री को मिलने वाले इस उपकार से ईर्ष्या कर रहे हों।
"ओह, मुझे पता है कि वह बहुत समझदार है," श्रीमती डी मार्सैंट्स ने कहा, "और विदेशियों में ऐसा होना बहुत दुर्लभ है। लेकिन मैंने उसके बारे में सब कुछ पता लगा लिया है। वह यहूदी-विरोध का जीता-जागता उदाहरण है।"
राजकुमार का नाम उसके आरंभिक अक्षरों की उस निडरता में संरक्षित था, जिस साहस के साथ—संगीत की एक अभिव्यक्ति उधार लेते हुए—उच्चारण किया गया था, और उस

लड़खड़ाती पुनरावृत्ति में जो उन्हें दोहराती थी। जर्मन जाति की आवेगशीलता, सलीकेदार सादगी और गहन नृवंशविज्ञान, गहरे नीले तामचीनी के 'हेम' पर हरी शाखाओं की तरह उभरे, जो अठारहवीं शताब्दी के जर्मन के हल्के और बारीक नक्काशीदार सोने के काम के पीछे राइन की खिड़की के रहस्यमय प्रकाश से जगमगा रहा था। इस नाम में, उन कई नामों के साथ, एक छोटे से जर्मन भोजनालय का नाम भी शामिल था, जहाँ मैं बचपन में अपनी दादी के साथ जाया करता था, जो गोएथे के चरणों से सम्मानित पर्वत की तलहटी में स्थित था, जिसके अंगूर के बागों से हम कुरहोफ में शराब पीते थे, जिनके शानदार वाइन के विस्तृत और मधुर नाम थे, ठीक वैसे ही जैसे होमर अपने नायकों को दिए गए विशेषण। और जैसे ही मैंने राजकुमार का नाम सुना, पानी पीने की जगह याद आने से पहले ही, नाम मानो सिकुड़ गया, मानो मानवता से भर गया हो, मानो मेरी स्मृति में एक छोटी सी जगह बना ली हो, जहाँ वह परिचित, मिट्टी से मिट्टी, सुरम्य, मनमोहक, हल्का, और कुछ ऐसा भी था जो अधिकृत, निर्धारित था। फिर, एम. डी गुएरमांटेस ने राजकुमार के बारे में बताते हुए उनकी कई उपाधियाँ बताईं, और मैंने उस गाँव का नाम पहचाना जो उस नदी के किनारे बसा था जहाँ हर शाम, दिन भर का इलाज खत्म होने पर, मैं मच्छरों के बीच नाव में जाया करता था, और उस जंगल का नाम भी पहचाना जो इतना दूर था कि डॉक्टर ने मुझे वहाँ जाने की अनुमति नहीं दी थी। और वास्तव में यह समझना आसान था कि स्वामी का प्रभुत्व आसपास के स्थानों तक फैला हुआ था और उनकी उपाधियों की सूची में उन नामों को नए सिरे से जोड़ दिया जिन्हें मानचित्र पर एक साथ पढ़ा जा सकता था। इस प्रकार, पवित्र रोमन साम्राज्य के राजकुमार और फ्रैंकोनिया के शूरवीर के मुखौटे के नीचे, मुझे एक प्रिय और मुस्कुराती हुई भूमि का चेहरा दिखाई दिया, जिस पर अक्सर शाम छह बजे के सूरज की रोशनी ठहरती थी, कम से कम राजकुमार, राइनग्राफ और इलेक्टर पैलेटाइन के कमरे में प्रवेश करने से पहले। क्योंकि मुझे शीघ्र ही पता चला कि वह बौनों और जलपरियों से आबाद जंगल और नदी से, और उस जादुई पहाड़ से, जिस पर प्राचीन नगर बसा था और जो लूथर और जर्मनिक लुईस की यादों को संजोए हुए था, जो राजस्व प्राप्त करता था, उसका उपयोग वह पाँच चारोन मोटर-कारों, पेरिस और लंदन में एक-एक घर, ओपेरा में सोमवार के लिए एक बॉक्स और 'फ्रेंचाइज़' में मंगलवार के लिए एक और बॉक्स रखने में करता था। वह मुझे न तो अलग लगा और न ही वह

स्वयं को समान भाग्य और उम्र के उन अन्य पुरुषों से अलग समझता था जिनकी पृष्ठभूमि कम काव्यात्मक थी। उनके पास उनकी संस्कृति, उनके आदर्श थे, उन्हें अपने पद पर गर्व था, लेकिन केवल उन लाभों के कारण जो इससे उन्हें प्राप्त हुए थे, और अब उनके जीवन में केवल एक ही महत्वाकांक्षा थी, नैतिक और राजनीतिक विज्ञान अकादमी के मानद सदस्य के रूप में निर्वाचित होना, और यही कारण था कि वे श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने आए थे। यदि उन्होंने, जिनकी पत्नी बर्लिन के सबसे विशिष्ट समूह की नेता थीं, मार्किज़ से परिचय कराने की विनती की थी, तो यह उनकी जान-पहचान की किसी इच्छा का परिणाम नहीं था। संस्थान में निर्वाचित होने की इस महत्वाकांक्षा से वर्षों से ग्रस्त, दुर्भाग्य से वे कभी भी पाँच से अधिक शिक्षाविदों की संख्या का अनुमान नहीं लगा पाए थे जो उनके लिए मतदान करने को तैयार प्रतीत होते थे। वे जानते थे कि एम. डी नॉरपोइस अकेले ही कम से कम दस अन्य लोगों को मना सकते हैं, एक ऐसी संख्या जिसे वे कुशल बातचीत से और भी बढ़ा सकते थे। और इसलिए राजकुमार, जो उन्हें रूस में तब से जानते थे जब वे दोनों वहाँ राजदूत के रूप में थे, उनसे मिलने गए थे और उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की थी। लेकिन चाहे वह कितनी भी मैत्रीपूर्ण पहल करता, मार्किस के लिए रूसी पदक दिलवाता, विदेशी राजनीति पर लेखों में उनका उल्लेख करता, सब व्यर्थ था; उसके सामने एक कृतघ्न व्यक्ति था, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी नज़र में ये सब बातें कुछ भी मायने नहीं रखती थीं, जिसने उसकी उम्मीदवारी की संभावनाओं को एक इंच भी आगे नहीं बढ़ाया था, यहाँ तक कि उसे अपना वोट देने का वादा भी नहीं किया था। निस्संदेह एम. डी नॉरपोइस ने उसका अत्यंत विनम्रता से स्वागत किया, वास्तव में उससे विनती की कि वह इतनी दूर आने की परेशानी न उठाए, स्वयं राजकुमार के निवास पर गया, और जब उस जर्मन योद्धा ने कहा: "मैं आपका सहयोगी बनना बहुत पसंद करूँगा," तो उसने गहरी भावना से उत्तर दिया: "आह! मुझे बहुत खुशी होगी!" और निस्संदेह एक मूर्ख, डॉ. कॉटार्ड ने मन ही मन कहा होगा: "देखो, ये मेरे घर में है; ये खुद ही आने पर अड़ा था, क्योंकि ये मुझे खुद से ज़्यादा महत्वपूर्ण समझता है; ये कहता है कि मुझे अकादमी में देखकर उसे खुशी होगी; आखिर शब्दों का भी कुछ अर्थ होता है, धिक्कार है, शायद अगर ये मेरे लिए वोट नहीं देता तो इसलिए कि ये बात उसके दिमाग में आई ही नहीं। ये मेरे प्रभाव पर इतना ज़ोर देता है; शायद ये सोचता है कि मुझे भुनी हुई

चिड़ियाएँ मुंह में परोसी जाती हैं, कि मुझे हर तरह का समर्थन प्राप्त है, और इसीलिए ये मुझे अपना समर्थन नहीं देता; लेकिन मुझे बस उसे मजबूर करना है, और उससे धीरे से कहना है: 'ठीक है, मेरे लिए वोट दीजिए, प्लीज़?' और वो मान जाएगा।"

लेकिन प्रिंस वॉन फैफेनहाइम कोई भोले-भाले व्यक्ति नहीं थे। वे वही थे जिन्हें डॉ. कॉटार्ड 'एक कुशल राजनयिक' कहते और वे जानते थे कि एम. डी नॉरपोइस भी उनसे कम कुशल नहीं थे, और न ही वे ऐसे व्यक्ति थे जो बिना बताए यह न समझ पाते कि किसी उम्मीदवार को वोट देकर वे उस पर एहसान कर सकते हैं। प्रिंस ने अपने दूतावासों में और विदेश मंत्री के रूप में, अपने देश की ओर से, न कि जैसा कि इस मामले में है, कई ऐसी वार्ताएँ की थीं जिनमें पहले से ही यह पता होता है कि कोई व्यक्ति कितनी दूर तक जाने को तैयार है और किस बिंदु पर वह अपनी प्रतिबद्धता से पीछे हट जाएगा। वे इस बात से भली-भांति परिचित थे कि कूटनीतिक भाषा में 'बात करना' का अर्थ 'प्रस्ताव देना' होता है। और इसी कारण उन्होंने एम. डी नॉरपोइस को सेंट एंड्रयू का कॉर्डन प्राप्त करने की व्यवस्था की थी। लेकिन अगर उन्हें एम. डी नॉरपोइस के साथ हुई अपनी बातचीत की रिपोर्ट अपनी सरकार को देनी होती, तो वे अपने संदेश में लिखते: "मुझे एहसास हुआ कि मैंने गलत रास्ता अपनाया था।" जैसे ही वे संस्थान के विषय पर वापस लौटे, एम. डी नॉरपोइस ने दोहराया:

"मेरे लिए इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता; मेरे सहयोगियों के लिए इससे बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता। मुझे लगता है कि उन्हें सचमुच सम्मानित महसूस करना चाहिए कि आपने उनके बारे में सोचा। यह एक बहुत ही दिलचस्प उम्मीदवारी है, जो हमारे सामान्य पाठ्यक्रम से थोड़ी हटकर है। जैसा कि आप जानते हैं, अकादमी बहुत ही रूढ़िवादी है, यह हर उस चीज़ से घबरा जाती है जिसमें कुछ नयापन होता है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे इस बात का अफसोस है। मैंने कितनी बार अपने सहयोगियों से यही बात कही है! मुझे यकीन नहीं है, भगवान मुझे माफ करें, कि मैंने एक बार भी 'दकियानूसी' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया होगा," उन्होंने दबी आवाज़ में, एक हैरान करने वाली मुस्कान के साथ, लगभग एक कोने में खड़े होकर, राजकुमार पर अपनी नीली आँखों से एक तेज़, तिरछी नज़र डाली, मानो कोई अनुभवी अभिनेता अपने दर्शकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर रहा हो। "राजकुमार, आप समझते हैं कि मैं आप जैसे इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति को ऐसे किसी काम में शामिल होने की

अनुमति नहीं देना चाहता जो शुरू से ही निराशाजनक हो। जब तक मेरे सहयोगियों के विचार इतने पुराने हैं, तब तक मेरा मानना है कि इससे दूर रहना ही समझदारी भरा कदम होगा। लेकिन आप निश्चिंत रहें कि यदि मुझे कभी भी उस महाविद्यालय में, जो एक मकबरे में तब्दील होता जा रहा है, कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई दे जो थोड़ा अधिक आधुनिक, थोड़ा अधिक जीवंत हो, और यदि मुझे आपकी सफलता की कोई भी संभावना दिखाई दे, तो मैं सबसे पहले आपको सूचित करूंगा।"

राजकुमार ने सोचा, "कॉर्डन एक गलती थी; बातचीत में जरा भी प्रगति नहीं हुई है; यह वह नहीं था जो वह चाहता था। मुझे अभी तक सही कुंजी नहीं मिली है।"

यह एक ऐसी तर्क-वितर्क शैली थी, जिसे राजकुमार के ही विद्यालय में शिक्षित हुए एम. डी. नॉरपोइस भी समझ सकते थे। नॉरपोइस जैसे राजनयिकों की उस पांडित्यपूर्ण मूर्खता का उपहास किया जा सकता है, जिसमें वे व्यावहारिक रूप से अर्थहीन आधिकारिक शब्दों पर इतना भावुक हो जाते हैं। लेकिन उनके इस बचकानेपन का एक लाभ भी है; राजनयिक जानते हैं कि यूरोपीय या अन्य किसी भी प्रकार के संतुलन, जिसे हम शांति कहते हैं, को बनाए रखने वाले तराजू में सद्भावना, प्रभावशाली भाषण और गंभीर निवेदन का कोई महत्व नहीं होता; और वास्तविक निर्णायक कारक कुछ और होता है, वह संभावना कि शत्रु (यदि वह पर्याप्त शक्तिशाली है) अपनी इच्छा के बदले में अपनी किसी इच्छा को पूरा कर सकता है या नहीं। एम. डी. नॉरपोइस और प्रिंस वॉन फाफेनहाइम को अक्सर इन सत्यों से निपटना पड़ता था, जिन्हें मेरी दादी जैसी पूर्णतः तटस्थ व्यक्ति नहीं समझ पातीं। जिन देशों के साथ हम युद्ध के कगार पर थे, वहां के प्रभारी श्री डी नॉरपोइस, घटनाक्रम के संभावित मोड़ को लेकर चिंतित थे और भली-भांति जानते थे कि यह संकेत उन्हें न तो 'शांति' शब्द से मिलेगा और न ही 'युद्ध' शब्द से, बल्कि किसी अन्य, प्रतीत होने वाले सामान्य शब्द से, भय या आशीर्वाद के किसी शब्द से मिलेगा, जिसे राजनयिक अपने गुप्त कोड की सहायता से तुरंत पढ़ लेगा और फ्रांस के सम्मान की रक्षा के लिए, वह उसी तरह के एक अन्य सामान्य शब्द से उत्तर देगा, जिसके नीचे शत्रु राष्ट्र का मंत्री तुरंत लिखा देख लेगा: 'युद्ध'। इसके अलावा, एक सदियों पुरानी परंपरा के अनुसार, जो दो नवयुवकों की पहली मुलाकात को, जो विवाह के बंधन में बंधे थे, जिम्नासे थिएटर में एक प्रदर्शन के दौरान आकस्मिक मुलाकात का रूप देती थी, वह संवाद

जिसके दौरान नियति को 'युद्ध' या 'शांति' शब्द का निर्धारण करना था, आमतौर पर मंत्री के पवित्र स्थान में नहीं, बल्कि एक कुर्गार्टन में एक बेंच पर होता था, जहाँ मंत्री और एम. डी नॉरपोइस स्वतंत्र रूप से एक गर्म झरने पर जाकर उसके स्रोत से अपने छोटे गिलासों में कुछ औषधीय जल पीते थे। एक प्रकार की मौन सहमति से वे अपने उपचार के लिए निर्धारित समय पर मिलते थे, और एक छोटी सी सैर से शुरुआत करते थे, जो देखने में तो सीधी-सादी लगती थी, लेकिन बोलने वालों में से प्रत्येक जानता था कि यह किसी सैन्य अभियान के आदेश जितनी ही दुखद थी। और इसलिए, संस्थान में चुनाव के लिए इस नामांकन जैसे निजी मामले में, राजकुमार ने वही प्रेरक प्रणाली अपनाई थी जो उनके सार्वजनिक जीवन में उनके काम आई थी, वही प्रतीकात्मक अर्थों को समझने की विधि।

और यह मानना निःसंदेह गलत होगा कि मेरी दादी और उनके जैसी कुछ ही महिलाएं इस तरह की गणना को समझने में असफल रहीं। एक तो यह कि औसत मनुष्य, जो ऐसे पेशे में है जिसके नियम उसके लिए शुरू से ही निर्धारित हैं, अपनी अंतर्ज्ञान की कमी के कारण उस अज्ञानता के करीब पहुँच जाता है जो मेरी दादी को उनकी उच्च निस्वार्थता के कारण थी। अक्सर हमें किसी 'आश्रित' व्यक्ति, चाहे पुरुष हो या स्त्री, के कार्यों या शब्दों के पीछे छिपे स्वार्थ, केवल जीवित रहने की आवश्यकता को समझने के लिए उसके जीवन स्तर को समझना पड़ता है, जो देखने में सबसे निर्दोष प्रतीत होते हैं। कौन नहीं जानता कि जब कोई स्त्री, जिसे वह भुगतान करने वाला है, उससे कहती है: "पैसे की बात न करें," तो इस बात को संगीत में 'मौन ताल' कहा जाता है, और यदि बाद में वह कहती है: "तुम बहुत ज्यादा परेशानी देते हो; तुम हमेशा मुझसे बातें छुपाते हो; मेरा तुमसे नाता टूट गया है," तो उसे इसका अर्थ यह समझना चाहिए: "कोई और मुझे ज्यादा दे रहा है।" फिर भी, यह तो एक साधारण स्वभाव वाली महिला की भाषा है, जो समाज की अन्य महिलाओं से बहुत अलग नहीं है। अपाचे इसके और भी अधिक प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। लेकिन एम., नॉरपोइस और जर्मन राजकुमार, यदि अपाचे और उनके तौर-तरीके उनके लिए अज्ञात थे, तो भी वे राष्ट्रों के समान स्तर पर रहने के आदी थे, जो अपनी महानता के बावजूद, स्वार्थ और धूर्तता से ग्रस्त होते हैं, और केवल बलपूर्वक, अपने भौतिक हितों के कारण ही नियंत्रण में रहते हैं, जो उन्हें हत्या तक ले जा सकता है। यह हत्या अक्सर प्रतीकात्मक भी होती है, क्योंकि लड़ने में उनकी मात्र

हिचकिचाहट या इनकार किसी राष्ट्र के लिए 'विनाश' का कारण बन सकता है। लेकिन चूंकि यह सब येलो और अन्य रंगीन पुस्तकों में वर्णित नहीं है, इसलिए लोग स्वभाव से शांतिप्रिय हैं; यदि वे युद्धप्रिय होते हैं, तो यह सहज प्रवृत्ति से, घृणा से, चोट के बोध से होता है, न कि उन कारणों से जिनके कारण उनके शासक ने नॉरपोइस की सलाह पर ऐसा करने का निर्णय लिया है।

अगली सर्दियों में राजकुमार गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; वे ठीक तो हो गए, लेकिन उनके हृदय पर स्थायी रूप से असर पड़ गया।

"हे भगवान!" उसने मन ही मन कहा। "मैं इस संस्थान के चक्कर में ज़रा भी समय बर्बाद नहीं कर सकता। अगर मैंने बहुत देर कर दी, तो चुनाव से पहले ही मेरी मौत हो सकती है। यह वाकई बहुत बुरा होगा।"

उन्होंने पिछले बीस वर्षों की विदेश नीति पर रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस के लिए एक निबंध लिखा, जिसमें उन्होंने एम. डी नॉरपोइस का कई बार और अत्यंत प्रशंसात्मक शब्दों में उल्लेख किया। फ्रांसीसी राजनयिक उनसे धन्यवाद देने के लिए मिलने आए। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं सूझ रहे। राजकुमार ने मन ही मन कहा, मानो कोई व्यक्ति किसी जिद्दी ताले में कई चाबियाँ फिट करने की कोशिश कर रहा हो: "अभी तक सही चाबी नहीं मिली!" और एम. डी नॉरपोइस को दरवाजे तक छोड़ते हुए, उनकी सांस फूलने लगी और उन्होंने सोचा: "धिक्कार है, ये लोग मुझे अंदर आने से पहले मेरी कब्र तक देख लेंगे। हमें जल्दी करनी चाहिए।"

उस शाम, ओपेरा में उनकी मुलाकात एम. डी नॉरपोइस से दोबारा हुई।

"मेरे प्रिय राजदूत," उन्होंने उनसे कहना शुरू किया, "आपने आज मुझसे कहा कि आप अपनी कृतज्ञता साबित करने के लिए क्या कर सकते हैं, यह आपको नहीं पता; यह बहुत बड़ी अतिशयोक्ति थी, क्योंकि आप पर मेरा कोई एहसान नहीं है, लेकिन मैं इतना असभ्य होने जा रहा हूँ कि आपकी बात पर विश्वास कर लूँगा।"

एम. डी नॉरपोइस राजकुमार की चतुराई का उतना ही सम्मान करते थे जितना राजकुमार स्वयं उनका करते थे। वे तुरंत समझ गए कि राजकुमार वॉन फाफेनहाइम उनसे कोई

अनुरोध नहीं बल्कि एक प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले हैं, और अत्यंत सौहार्दपूर्ण भाव से उसे सुनने के लिए तैयार हो गए।

खैर, अब आप मुझे बहुत ही अविवेकी समझेंगे। दो लोग हैं जिनसे मेरा गहरा लगाव है—बिल्कुल अलग-अलग तरीकों से, जैसा कि आप अभी समझ जाएंगे—ये दोनों हाल ही में पेरिस में बस गए हैं और भविष्य में भी वहीं रहने का इरादा रखते हैं: मेरी पत्नी और ग्रैंड डचेस जॉन। वे कुछ भोज आयोजित करने की सोच रहे हैं, मुख्य रूप से इंग्लैंड के राजा और रानी के सम्मान में, और वे दुनिया में सबसे ज्यादा यही चाहते थे कि उनके मेहमानों को उस व्यक्ति की संगति मिले, जिनके लिए वे दोनों बिना जाने ही बहुत सम्मान रखते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उनकी इच्छा कैसे पूरी करूँ, तभी मुझे अभी-अभी, एक बेहद अप्रत्याशित संयोग से, पता चला कि आप इस व्यक्ति के मित्र हैं। मैं जानता हूँ कि वह बहुत ही एकांत जीवन जीती हैं और बहुत कम लोगों से मिलती हैं—जैसा कि स्टेंडहल कहते, 'खुशकिस्मत लोग'—लेकिन अगर आप मुझे अपना समर्थन दें, उसी उदारता के साथ जो आपने हमेशा मुझे दिखाई है, तो मुझे यकीन है कि वह आपको मुझे उनसे मिलवाने और उनका संदेश पहुँचाने की अनुमति देंगी। ग्रैंड डचेस और राजकुमारी दोनों की इच्छाएं उन तक पहुंच जाएं। शायद जब इंग्लैंड की रानी आएंगी, तो वे हमारे साथ भोजन करने के लिए राजी हो जाएं, और फिर (कौन जाने) अगर हम उन्हें ज्यादा बोर न करें, तो ग्रैंड डचेस जॉन के घर, बोलियू में हमारे साथ ईस्टर की छुट्टियां बिताएं। मैं जिस व्यक्ति की बात कर रहा हूं, उनका नाम मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस है। मैं स्वीकार करता हूं कि ऐसे बुद्धि-विद्या के स्कूल में नियमित रूप से आने की आशा मुझे सांत्वना देगी, और मुझे संस्थान में दाखिला लेने के अपने प्रयास को बिना किसी पछतावे के छोड़ने पर विचार करने के लिए प्रेरित करेगी। क्योंकि मुझे पता चला है कि उनके घर में भी बौद्धिक और शानदार बातचीत का नियमित प्रवाह होता है।

राजकुमार को अवर्णनीय आनंद का अनुभव हुआ कि ताला अब प्रतिरोध नहीं कर रहा था और अंततः चाबी घूम रही थी।

"ऐसा विकल्प बिल्कुल अनावश्यक है, मेरे प्रिय राजकुमार," एम. डी नॉरपोइस ने उत्तर दिया; "संस्थान के साथ उस घर से ज़्यादा सामंजस्य और कुछ नहीं हो सकता जिसका आप ज़िक्र कर रहे हैं, जो शिक्षाविदों का एक नियमित केंद्र है। मैं आपका अनुरोध श्रीमती ला मार्क्विज़ डी

विलेपारिसिस तक पहुँचा दूँगा: उन्हें निस्संदेह प्रसन्नता होगी। जहाँ तक आपके साथ उनके भोजन की बात है, वे बहुत कम बाहर जाती हैं और शायद यह व्यवस्था करना थोड़ा मुश्किल होगा। लेकिन मैं आपको उनसे मिलवाऊँगा और आप व्यक्तिगत रूप से अपनी बात रख सकते हैं। आपको किसी भी हालत में अकादमी नहीं छोड़नी चाहिए; संयोग से, कल यानी दो सप्ताह बाद, मैं उनके साथ लेरॉय-ब्यूलियू के यहाँ एक महत्वपूर्ण बैठक में जाने से पहले दोपहर का भोजन करूँगा, जिनके बिना कोई भी निर्वाचित नहीं हो सकता; मैंने उनसे बातचीत के दौरान आपका नाम ले लिया था, जिससे वे स्वाभाविक रूप से भली-भांति परिचित थे। उन्होंने कुछ आपत्तियाँ उठाईं। लेकिन संयोग से, उन्हें अगले चुनाव में मेरे समूह के समर्थन की आवश्यकता है, और मैं पूरी तरह से पदभार ग्रहण करने का इरादा रखता हूँ; मैं उन्हें हमारे बीच के सौहार्दपूर्ण संबंधों के बारे में खुलकर बताऊँगा, मैं उनसे यह नहीं छिपाऊँगा कि यदि आप चुनाव लड़ते हैं, तो मैं सभी से अनुरोध करूँगा।" मेरे दोस्तों ने आपके लिए वोट देने को कहा है," (यहाँ राजकुमार ने राहत की गहरी साँस ली) "और वह जानता है कि मेरे दोस्त हैं। मुझे लगता है कि अगर मैं उसका समर्थन प्राप्त करने में सफल हो गया, तो आपकी जीत की संभावना बहुत बढ़ जाएगी। उस शाम छह बजे श्रीमती डी विलेपारिसिस के घर आइए; मैं आपको उनसे मिलवा दूँगा और तब मैं आपको उनके साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में बता सकता हूँ।"

इस प्रकार राजकुमार वॉन फैफेनहाइम ने श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने का निर्णय लिया था। उनके बोलने पर मुझे गहरा मोहभंग हुआ। मुझे कभी यह बात समझ में नहीं आई थी कि यदि इतिहास के किसी युग में कुछ विशिष्ट और सामान्य विशेषताएं किसी राष्ट्रीयता की विशेषताओं से कहीं अधिक प्रबल होती हैं, जैसे कि चित्रों सहित जीवनी संबंधी शब्दकोश में, जिसमें मिनर्वा का एक प्रामाणिक चित्र भी शामिल है, लाइबनिज़ अपने विग और रफ के साथ मारिवाक्स या सैमुअल बर्नार्ड से बहुत कम भिन्न लगते हैं, तो किसी राष्ट्रीयता में कुछ विशिष्ट विशेषताएं किसी जाति की विशेषताओं से कहीं अधिक प्रबल होती हैं। इस मामले में ये विशेषताएं मेरे सामने उस भाषण से नहीं प्रकट हुईं, जिसमें मैंने उन्हें देखने से पहले परियों की सरसराहट और कोबोल्ड्स के नृत्य की उम्मीद की थी, बल्कि एक ऐसे रूपांतरण से प्रकट हुईं जिसने उनकी काव्य उत्पत्ति को स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया: यह तथ्य कि जब उन्होंने, छोटे

कद के, लाल रंग के, मोटे शरीर वाले, श्रीमती डी विलेपारिसिस के हाथ पर सिर झुकाया... डी विलेपारिसिस के बारे में बात करते हुए, राइनग्राफ ने उससे कहा: "आपको भी नमस्कार, मातामे ला मार्क्विज़," एक अलसैटियन कुली के लहजे में।

"क्या आप मुझे एक कप चाय या थोड़ा सा यह केक नहीं देंगी? यह बहुत स्वादिष्ट है?" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझसे पूछा, यथासंभव मित्रतापूर्ण व्यवहार दिखाने की उत्सुकता में। "मैं इस घर में ऐसे ही मेहमाननवाज़ी करती हूँ जैसे यह मेरा ही घर हो," उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में समझाया, जिससे उनकी आवाज़ में थोड़ी कर्कशता आ गई, मानो वह अपनी कर्कश हंसी को दबाने की कोशिश कर रही हों।

"महाराज," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने श्री डी नॉरपोइस से कहा, "क्या आप यह भूलेंगे कि आपको अकादमी के बारे में राजकुमार से कुछ कहना है?"

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपनी निगाहें नीचे कीं और समय देखने के लिए अपनी कलाई को अर्धवृत्ताकार रूप में घुमाया।

"अरे वाह! मुझे तुरंत उड़ान भरनी होगी अगर मुझे श्रीमती डी सेंट-फेरेल के यहाँ पहुँचना है, और मैं श्रीमती लेरोई के साथ भोजन कर रही हूँ।"

और वह मुझे अलविदा कहे बिना ही उठ गई। उसकी नज़र मैडम स्वान पर पड़ी, जो मुझे कमरे में देखकर काफी शर्मिंदा लग रही थीं। उन्हें याद आ ही गया होगा कि सबसे पहले उन्होंने ही मुझे आश्वस्त किया था कि उन्हें ड्रेफस की निर्दोषता पर पूरा भरोसा है।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी माँ मुझे श्रीमती स्वान से मिलवाए," सेंट-लूप ने मुझसे कहा। "वह एक पूर्व वेश्या है। उसका पति यहूदी है, और वह यहाँ राष्ट्रवादी होने का दिखावा करने आई है। हैलो, ये रहे अंकल पलामेडे।"

श्रीमती स्वान का आगमन मेरे लिए विशेष महत्व रखता था, क्योंकि कुछ दिन पहले एक घटना घटी थी, जिसका उल्लेख करना मुझे अनिवार्य है, क्योंकि इसके दूरगामी परिणाम होने वाले थे, जैसा कि पाठक को आगे पता चलेगा। खैर, श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने से कुछ दिन पहले, मेरे पास एक ऐसा आगंतुक आया जिसकी मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी, चार्ल्स मोरेल, जो मेरे परदादा के पुराने नौकर का बेटा था (हालाँकि मैंने उसके अस्तित्व के बारे में कभी नहीं सुना था)। मेरे परदादा (जिनके घर में मेरी मुलाकात गुलाबी पोशाक वाली महिला

से हुई थी) का निधन एक साल पहले हो गया था। उनके नौकर ने कई बार मुझसे मिलने आने की इच्छा व्यक्त की थी; मुझे उनकी यात्रा का उद्देश्य नहीं पता था, लेकिन उन्हें देखकर मुझे खुशी होती, क्योंकि मैंने फ्रांस्वा से सुना था कि वह मेरे चाचा की स्मृति के प्रति सच्ची श्रद्धा रखते थे और नियमित रूप से उस कब्रिस्तान की तीर्थयात्रा करते थे जहाँ उन्हें दफनाया गया था। लेकिन, स्वास्थ्य कारणों से उन्हें अपने गाँव स्थित घर लौटना पड़ा, जहाँ वे कुछ समय तक रहने की उम्मीद कर रहे थे, इसलिए उन्होंने यह ज़िम्मेदारी अपने बेटे को सौंप दी। मुझे आश्चर्य हुआ जब अठारह साल का एक सुंदर युवक मेरे कमरे में आया, जो महंगे कपड़ों में था, न कि अच्छे स्वाद वाले, लेकिन फिर भी देखने में किसी सज्जन के नौकर के बेटे जैसा बिल्कुल नहीं लग रहा था। इसके अलावा, हमारी बातचीत की शुरुआत में ही उसने अपने गृहस्थ वर्ग से संबंध तोड़ते हुए मुझे संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ बताया कि उसने संगीत विद्यालय में प्रथम पुरस्कार जीता है। उसके मेरे पास आने का उद्देश्य यह था: उसके पिता ने मेरे चाचा एडोल्फ़ की संपत्ति छाँटते समय कुछ ऐसी चीज़ें अलग रख दी थीं, जो उन्हें लगा कि मेरे माता-पिता को भेजना ठीक नहीं होगा, लेकिन साथ ही मेरी उम्र के एक युवक को रुचिकर लग सकती हैं। ये तस्वीरें मशहूर अभिनेत्रियों और बदनाम वेश्याओं की थीं, जिन्हें मेरे चाचा जानते थे। ये उस रंगीन मिजाज वाले जीवन की धुंधली होती तस्वीरें थीं, जिसे उन्होंने अपने पारिवारिक जीवन से बिल्कुल अलग रखा था। जब युवा मोरेल मुझे ये तस्वीरें दिखा रहे थे, तो मैंने गौर किया कि वे मुझसे ऐसे बात कर रहे थे मानो किसी बराबर के व्यक्ति से। वे मुझसे अक्सर 'आप' और बहुत कम 'महोदय' कहकर जो आनंद ले रहे थे, वह उस व्यक्ति के लिए स्वाभाविक था जिसके पिता ने मेरे माता-पिता से बात करते समय कभी भी तीसरे व्यक्ति के अलावा किसी और शब्द का प्रयोग नहीं किया था। लगभग सभी तस्वीरों पर कुछ इस तरह लिखा था: "मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लिए।" एक अभिनेत्री, जो बाकियों की तुलना में कम आभारी और अधिक सतर्क थी, ने लिखा था: "सबसे अच्छे दोस्त के लिए," जिससे उसे (जैसा कि मुझे बताया गया) बाद में यह कहने का मौका मिला कि मेरे चाचा किसी भी मायने में उनके सबसे अच्छे दोस्त नहीं थे और न ही कभी रहे थे, बल्कि वे केवल वही दोस्त थे जिन्होंने उनके लिए सबसे कम काम किए थे, वह दोस्त जिसका उन्होंने इस्तेमाल किया था, एक अच्छा, दयालु आदमी, दूसरे शब्दों में एक बूढ़ा मूर्ख। युवा मोरेल भले ही अपनी नीच पृष्ठभूमि से छुटकारा पाने की व्यर्थ कोशिश करे,

लेकिन ऐसा लगता था मानो मेरे चाचा एडोल्फ़ की परछाई, जो बूढ़े नौकर की नज़रों में आदरणीय और विशालकाय थे, बेटे के बचपन और किशोरावस्था पर एक पवित्र दर्शन की तरह मंडराती रही हो। जब मैं तस्वीरें पलट रहा था, चार्ल्स मोरेल ने मेरे कमरे का मुआयना किया। और जब मैं उन्हें रखने के लिए कोई जगह ढूंढ रहा था, तो उन्होंने मुझसे पूछा (ऐसे लहजे में जिसमें निंदा का भाव निहित था, जैसे शब्दों में ही), "कैसी बात है कि मुझे तुम्हारे कमरे में तुम्हारे चाचा की एक भी तस्वीर नहीं दिख रही?" मुझे शर्म से चेहरा लाल हो गया और मैं हकलाते हुए बोला, "अरे, मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि मेरे पास ऐसी कोई तस्वीर है।" "क्या, तुम्हारे पास तुम्हारे चाचा एडोल्फ़ की एक भी तस्वीर नहीं है, जो तुमसे इतना प्यार करते थे! मैं तुम्हें अपने गवर्नर की एक तस्वीर भेजूंगा—उनके पास तो बहुत सारी हैं—और मुझे उम्मीद है कि तुम उसे उस दराजों वाली पेटी के ऊपर सम्मान के स्थान पर लगाओगे, जो तुम्हें तुम्हारे चाचा से मिली थी।" यह सच है कि मेरे कमरे में मेरे पिता या माता की एक भी तस्वीर नहीं थी, इसलिए मेरे चाचा एडोल्फ़ की तस्वीर न होना कोई बहुत चौंकाने वाली बात नहीं थी। लेकिन यह समझना आसान था कि बूढ़े मोरेल के लिए, जिन्होंने अपने बेटे को भी उसी तरह सोचने की शिक्षा दी थी, मेरे चाचा परिवार में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, और मेरे माता-पिता तो उनकी तुलना में फीके ही थे। मैं उनका अधिक प्रिय था, क्योंकि मेरे चाचा अक्सर कहते थे कि मैं एक तरह का रेसीन या वाउलाबेल बनूंगा, और मोरेल मुझे लगभग गोद लिए हुए बेटे की तरह मानते थे, जैसे मेरे चाचा का चुना हुआ बच्चा। मुझे जल्द ही पता चल गया कि यह युवक बहुत ही 'जोखिम भरा' था। इसलिए अपनी पहली मुलाकात में ही उन्होंने मुझसे, जो एक संगीतकार भी था और छोटी कविताओं को संगीतबद्ध करने में सक्षम था, पूछा कि क्या मैं किसी ऐसे कवि को जानता हूँ जिसका समाज में अच्छा स्थान हो। मैंने एक का नाम बताया। वह उस कवि के काम से परिचित नहीं थे और उन्होंने उसका नाम भी कभी नहीं सुना था, जिसे उन्होंने नोट कर लिया। खैर, मुझे पता चला कि कुछ समय बाद ही उन्होंने कवि को पत्र लिखकर बताया कि वे कवि के काम के कट्टर प्रशंसक हैं और उन्होंने, मोरेल ने, उनकी एक कविता के लिए संगीत तैयार किया है और यदि कवि सो-एंड-सो की कोम्टेस के यहाँ उसका प्रदर्शन करवा दें तो वे आभारी होंगे। यह कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी थी और इससे उनकी मंशा ज़ाहिर हो रही थी। कवि को बुरा लगा और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

बाकी सब बातों के लिए, चार्ल्स मोरेल अपनी महत्वाकांक्षा के अलावा, ठोस वास्तविकताओं की ओर भी झुकाव रखते थे। आंगन से गुजरते हुए उन्होंने जुपियन की भतीजी को एक जैकेट सिलते हुए देखा था, और हालांकि उन्होंने मुझे सिर्फ इतना बताया कि उस समय उन्हें एक फैंसी जैकेट चाहिए थी, मुझे लगा कि उस लड़की ने उन पर गहरा प्रभाव डाला था। उन्होंने मुझे नीचे आकर उससे मिलवाने में जरा भी संकोच नहीं किया, "लेकिन आपके परिवार के रिश्तेदार के रूप में नहीं, आप मेरे साथ आइएगा, मैं आपकी समझदारी पर भरोसा करता हूँ कि आप मेरे पिता को इसमें नहीं घसीटेंगे, बस अपने किसी परिचित प्रतिष्ठित कलाकार से मिलवाइए, आप जानते हैं कि व्यापारियों पर अच्छा प्रभाव डालना कितना महत्वपूर्ण होता है।" हालाँकि उन्होंने मुझे सुझाव दिया था कि, उन्हें अच्छी तरह से न जानने के कारण, उन्हें 'प्रिय मित्र' कहकर संबोधित करना उचित नहीं था, फिर भी वे भली-भांति जानते थे कि लड़की के सामने मैं उन्हें कुछ इस तरह संबोधित कर सकता हूँ, जैसे "प्रिय स्वामी, बिल्कुल नहीं... हालाँकि... ठीक है, अगर आप चाहें, तो प्रिय प्रतिष्ठित कलाकार।" दुकान में पहुँचने के बाद, मैंने उन्हें 'विशेषण' कहने से परहेज किया, जैसा कि सेंट-साइमन ने कहा होगा, और केवल उनके 'आप' को दोहराकर ही संतुष्ट हो गया। उन्होंने मखमल के कई पैटर्न में से एक ऐसा पैटर्न चुना जो कल्पना से परे चमकीले लाल रंग का था और इतना भड़कीला था कि, अपने खराब स्वाद के बावजूद, बनने के बाद वह कभी भी उस जैकेट को पहन नहीं पाए। लड़की अपने दो 'शिष्यों' के साथ फिर से काम पर लग गई, लेकिन मुझे लगा कि यह प्रभाव दोनों तरफ से था, और चार्ल्स मोरेल, जिन्हें वह अपने ही 'स्तर' का मानती थी (केवल अधिक बुद्धिमान और धनी), उनके लिए असाधारण रूप से आकर्षक साबित हुए थे। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब मैंने चार्ल्स मोरेल को उनके पिता द्वारा भेजी गई तस्वीरों में से एक में एल्स्टिर द्वारा बनाई गई मिस सैक्रिपेंट (उर्फ ओडेट) की तस्वीर देखी। बाहरी द्वार की ओर जाते हुए मैंने उनसे कहा, "मुझे नहीं लगता कि आप बता सकते हैं, लेकिन क्या मेरे चाचा इस महिला को अच्छी तरह जानते थे? मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं उन्हें उनके जीवन के किस पड़ाव पर रखूँ; और यह बात मुझे इसलिए दिलचस्प लग रही है क्योंकि इसमें एम. स्वान का ज़िक्र है..." "अरे हाँ, अगर मैं आपको बताना भूल गया हूँ तो बता दूँ कि मेरे पिता ने मुझे विशेष रूप से उस महिला की तस्वीर की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए कहा था। दरअसल,

जब आपने आखिरी बार अपने चाचा को देखा था, तब वह उनके साथ 'दोपहर का भोजन' कर रही थीं। मेरे पिता दुविधा में थे कि आपको अंदर आने दें या नहीं। ऐसा लगता है कि आपने उस महिला पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला था, और वह आपसे और मिलना चाहती थी। लेकिन मेरे पिता के अनुसार, ठीक उसी समय परिवार में कुछ परेशानी आ गई, और आपने फिर कभी अपने चाचा को नहीं देखा।" उन्होंने मुस्कुराते हुए विदाई ली और आंगन के उस पार जुपियन की भतीजी की ओर देखा। वह उन्हें निहार रही थी और निस्संदेह उनके पतले चेहरे, सुडौल नैन-नक्श, सुनहरे बालों और चमकती आँखों की प्रशंसा कर रही थी। मैंने उनसे हाथ मिलाते हुए श्रीमती स्वान के बारे में सोचा और आश्चर्य से मन ही मन कहा, मेरी यादों में वे दोनों कितनी अलग और भिन्न थीं कि अब से मुझे उन्हें 'गुलाबी पोशाक वाली महिला' के रूप में पहचानना पड़ेगा।

एम. डी चार्लस को श्रीमती स्वान के साथ अपनी जगह बनाने में देर नहीं लगी। हर सामाजिक समारोह में जहाँ वे उपस्थित होते, पुरुषों के प्रति तिरस्कारपूर्ण भाव रखते हुए, महिलाओं द्वारा सराहे जाते और तुरंत ही सबसे सजी-धजी महिलाओं से जुड़ जाते, जिनके वस्त्र वे मानो अपने वस्त्रों की शोभा बढ़ाने के लिए पहनते थे। बैरन का फ्रॉक कोट या स्वैलोटेल किसी महान चित्रकार द्वारा बनाए गए उस चित्र की याद दिलाता था जिसमें एक व्यक्ति काले वस्त्र पहने हुए है, लेकिन उसके बगल में एक कुर्सी पर चमकीले रंग का चोला पड़ा है जिसे वह किसी कॉस्ट्यूम बॉल में पहनने वाला है। यह साझेदारी, जो आमतौर पर किसी शाही महिला के साथ होती थी, एम. डी चार्लस को कई विशेषाधिकार दिलाती थी जिनका वे आनंद लेते थे। उदाहरण के लिए, इसका एक परिणाम यह था कि नाट्य प्रस्तुतियों या संगीत कार्यक्रमों में उनकी मेजबानें बैरन को ही महिलाओं की पंक्ति में आगे की सीट देती थीं, जबकि बाकी पुरुष कमरे के पीछे भीड़ में बैठे रहते थे। और फिर, ऐसा प्रतीत होता था कि एम. डी चार्लस पूरी तरह से मंत्रमुग्ध होकर, ऊँची आवाज़ में उस मुग्ध महिला को मनोरंजक कहानियाँ सुना रहे थे, और इस वजह से उन्हें किसी और से हाथ मिलाने की आवश्यकता नहीं थी; दूसरे शब्दों में, वे सभी सामाजिक कर्तव्यों से मुक्त हो गए थे। अपनी पसंद की सुंदरी की सुगंधित आड़ में, वे एक भीड़ भरे ड्राइंग रूम में ऐसे अलग-थलग पड़ गए थे, जैसे किसी भीड़ भरे थिएटर या कॉन्सर्ट हॉल में किसी बॉक्स के पीछे। और जब कोई उनकी साथी की सुंदरता के कारण

उनसे अभिवादन करने आता, तो उनके लिए यह उचित था कि वे संक्षिप्त रूप से और महिला के साथ अपनी बातचीत को बाधित किए बिना जवाब दें। निश्चित रूप से, श्रीमती स्वान उन लोगों के स्तर की नहीं थीं जिनके साथ वे इस तरह दिखावा करना पसंद करते थे। लेकिन उन्होंने उनके प्रति प्रशंसा और मित्रता का भाव व्यक्त किया; वे जानते थे कि उनके इस व्यवहार से स्वान प्रसन्न होंगी और वे स्वयं भी कमरे की सबसे सुंदर महिला के साथ होने पर प्रसन्न थे।

इस बीच, श्रीमती डी विलेपारिसिस, एम. डी चार्लस के आगमन से कुछ खास प्रसन्न नहीं थीं। हालांकि वे अपनी चाची के चरित्र में गंभीर कमियों को स्वीकार करते थे, फिर भी वे उनसे वास्तव में स्नेह रखते थे। लेकिन कभी-कभी, क्रोध से आवेशित होकर, किसी काल्पनिक शिकायत के कारण, वे बिना किसी रोक-टोक के उन्हें पत्र लिख देते थे, जो बेहद अपमानजनक होते थे और जिनमें वे उन छोटी-छोटी घटनाओं का भी बखान करते थे जिन पर उन्होंने पहले कभी ध्यान ही नहीं दिया था। अन्य उदाहरणों में, मैं निम्नलिखित घटना का उल्लेख करना चाहूंगा, जो मुझे बालबेक में अपने प्रवास के दौरान पता चली - श्रीमती डी विलेपारिसिस को डर था कि वे बालबेक में अपनी छुट्टियां बढ़ाने के लिए पर्याप्त धन नहीं लाई हैं, और चूंकि वे मितव्ययी स्वभाव की थीं और अनावश्यक खर्चों से बचती थीं, इसलिए उन्हें पेरिस से पैसे मंगवाने की परवाह नहीं थी, इसलिए उन्होंने एम. डी चार्लस से तीन हजार फ्रैंक उधार लिए थे। एक महीने बाद, किसी मामूली कारण से अपनी चाची से नाराज होकर, उन्होंने उनसे यह राशि टेलीग्राम द्वारा वापस करने के लिए कहा। उन्हें दो हज़ार नौ सौ नब्बे से कुछ अधिक फ्रैंक मिले। कुछ दिनों बाद पेरिस में अपनी चाची से मुलाक़ात हुई, और दोस्ताना बातचीत के दौरान उन्होंने बड़ी विनम्रता से उनका ध्यान उस गलती की ओर दिलाया जो उनके बैंकर ने पैसे भेजते समय की थी। "लेकिन कोई गलती नहीं हुई थी," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उत्तर दिया, "मनी ऑर्डर की राशि छह फ्रैंक पचहत्तर थी।" "ओह, बिल्कुल, अगर यह जानबूझकर किया गया था, तो कोई बात नहीं," एम. डी चार्लस ने कहा, "मैंने इसका ज़िक्र केवल इसलिए किया था क्योंकि अगर बैंक ने ऐसा किसी ऐसे व्यक्ति के साथ किया होता जो आपको उतना अच्छी तरह से नहीं जानता जितना मैं जानता हूँ, तो अप्रिय स्थिति उत्पन्न हो सकती थी।" "नहीं, नहीं, कोई गलती नहीं हुई थी।" "आखिरकार, आप बिल्कुल सही

थीं," एम. डी चार्लस ने सहजता से कहा और झुककर अपनी चाची के हाथ को चूमा। वास्तव में, उन्हें कोई नाराज़गी नहीं थी और वे उनकी इस मितव्ययिता की छोटी सी मिसाल पर बस आनंदित थे। लेकिन कुछ समय बाद, यह सोचकर कि पारिवारिक मामले में उसकी चाची उससे बदला लेने की कोशिश कर रही थी और उसके खिलाफ 'पूरी साजिश रच रही थी', और मूर्खतापूर्ण ढंग से उन वकीलों के पीछे छिप गई थी जिन पर उसे शक था कि उसने उसके खिलाफ साजिश रची है, उसने उसे गुस्से और धृष्टता से भरा एक पत्र लिखा। उसने अंत में लिखा, "मैं सिर्फ बदला लेकर संतुष्ट नहीं होऊंगा; मैं तुम्हें हंसी का पात्र बना दूंगा। कल मैं सबको मनी ऑर्डर की कहानी और तीन हजार में से छह सौ पचहत्तर फ्रैंक जो तुमने मुझसे छिपाए थे, बता दूंगा; मैं तुम्हें सबके सामने बेइज्जत करूंगा।" ऐसा करने के बजाय, वह अगले दिन अपनी चाची के पास माफी मांगने गया, क्योंकि उसे उस पत्र पर पछतावा हो रहा था जिसमें उसने कुछ बेहद खराब शब्दों का इस्तेमाल किया था। लेकिन इसके अलावा, वह मनी ऑर्डर की कहानी किसे बताता? अब बदला लेने की बजाय, वह एक सच्ची सुलह चाहता था, इसलिए अब चुप रहना ही उसके लिए सही था। लेकिन अपनी चाची के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते हुए भी वह यह कहानी हर जगह दोहरा चुका था; उसने इसे बिना किसी दुर्भावना के, मज़ाक के तौर पर और इसलिए सुनाया था क्योंकि वह अत्यंत लापरवाह था। उसने यह कहानी दोहराई थी, लेकिन श्रीमती डी विलेपारिसिस को इसकी जानकारी नहीं थी। परिणामस्वरूप, जब उन्हें उसके पत्र से पता चला कि वह उस घटना को सार्वजनिक करके उन्हें अपमानित करना चाहता है जिसमें उसने स्वयं अपने मुँह से कहा था कि उन्होंने सही किया है, तो उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि वह शुरू से ही उन्हें धोखा दे रहा था और जब उसने उनके प्रति स्नेह का दिखावा किया था तब झूठ बोला था। यह विवाद अब शांत हो गया था, लेकिन दोनों में से किसी को भी ठीक से नहीं पता था कि दूसरा उनके बारे में क्या सोचता है। इस तरह का रुक-रुक कर होने वाला झगड़ा बेशक कुछ अपवाद है। ब्लोच और उसके दोस्तों के झगड़े बिल्कुल अलग तरह के थे। और जैसा कि हम आगे देखेंगे, एम. डी चार्लस के झगड़े तो और भी अलग तरह के थे, उन लोगों के साथ जो श्रीमती डी विलेपारिसिस से बिल्कुल भिन्न थे। इन सबके बावजूद हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि एक-दूसरे के बारे में हमारी राय, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ हमारे संबंध, दिखावे के अलावा किसी भी मायने में

स्थायी नहीं होते, बल्कि समुद्र की तरह परिवर्तनशील होते हैं। यही कारण है कि उन जोड़ों के बीच तलाक की अफवाहें फैलती हैं जो हमेशा से इतने घनिष्ठ प्रतीत होते थे और कुछ ही समय बाद एक-दूसरे के बारे में स्नेह से बात करते थे; यही कारण है कि एक मित्र दूसरे मित्र के बारे में इतनी बुरी बातें कह देता है, जिसे हम अटूट मानते थे और जिसके साथ हम अपने आश्चर्य से उबरने से पहले ही फिर से सुलह कर लेते हैं; और यही कारण है कि राष्ट्रों के बीच गठबंधन इतने कम समय में टूट जाते हैं।

"देखो, मेरे चाचा और श्रीमती स्वान वहाँ बड़े मज़े कर रहे हैं!" सेंट-लूप ने कहा। "और देखो, माँ अपने भोलेपन में उन्हें परेशान करने जा रही है। पवित्र लोगों के लिए सब कुछ पवित्र होता है, मुझे लगता है!"

मैंने एम. डी चार्लस को गौर से देखा। उनके भूरे बालों का गुच्छा, उनकी आंख, जो उनके मोनोकल से उठी हुई थी और मुस्कुरा रही थी, और उनके बटनहोल में लगे लाल फूल, मानो एक आकर्षक त्रिकोण के तीन गतिशील शीर्षों की तरह लग रहे थे। मैंने उन्हें प्रणाम करने का साहस नहीं किया, क्योंकि उन्होंने मुझे पहचानने का कोई संकेत नहीं दिया था। फिर भी, हालांकि उन्होंने मेरी ओर सिर नहीं घुमाया था, मुझे यकीन था कि उन्होंने मुझे देख लिया था; जब वे श्रीमती स्वान को कोई कहानी सुना रहे थे, जिनका भव्य, गुलाबी रंग का लबादा वास्तव में बैरन के घुटने तक लहरा रहा था, उनकी घूमती हुई नज़र, किसी सड़क विक्रेता की तरह जो हर समय जासूसों के आने का इंतज़ार कर रहा हो, कमरे के हर कोने को छान रही थी और उसमें मौजूद सभी लोगों पर नज़र रख रही थी। एम. डी चैटेलराउल्ट उन्हें नमस्कार करने के लिए आगे आए, लेकिन एम. डी चार्लस के चेहरे पर तब तक कोई संकेत नहीं था कि उन्होंने युवा ड्यूक को देखा है, जब तक कि वे वास्तव में उनके सामने खड़े नहीं हो गए। इस तरह, इस तरह की कई सभाओं में, एम. डी चार्लस लगभग लगातार बिना किसी निश्चित उद्देश्य या लक्ष्य के मुस्कुराते रहते थे, जो नए आने वालों के अभिवादन से पहले ही मौजूद होता था, लेकिन जब वे उनके पास आते थे, तो उनके प्रति किसी भी प्रकार की मित्रता का संकेत नहीं मिलता था। फिर भी, यह स्पष्ट रूप से मेरा कर्तव्य था कि मैं जाकर श्रीमती स्वान से बात करूं। लेकिन चूंकि उन्हें यकीन नहीं था कि मैं श्रीमती डी मार्सैंट्स और एम. डी चार्लस को पहले से जानता हूं, इसलिए उनका व्यवहार काफी ठंडा था, शायद उन्हें डर था कि कहीं मैं

उनसे मेरा परिचय कराने के लिए न कह दूं। तब मैं एम. डी चार्लस के पास गया, और तुरंत ही मुझे इसका पछतावा हुआ, क्योंकि हालांकि उन्होंने मुझे देखा होगा, फिर भी उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। जब मैं उनके सामने खड़ा होकर झुका, तो मैंने देखा कि उनके शरीर से, जिसके पूरे फैलाव के कारण मैं उनके पास नहीं जा पा रहा था, उनकी फैली हुई भुजा से थोड़ी दूर एक उंगली उभरी हुई थी, मानो वह किसी बिशप की अंगूठी की कमी को दर्शा रही हो। ऐसा लग रहा था मानो वह उस पवित्र स्थान को, विश्वासियों के चुंबन के लिए, अर्पित कर रहे हों। और ऐसा प्रतीत हुआ कि मैंने बैरन की अनुमति के बिना और एक ऐसे अपराध के द्वारा, जिसके लिए वह मुझे हमेशा के लिए जिम्मेदार ठहराएंगे, उनकी गुमनाम और भावहीन मुस्कान को छू लिया है। यह शीतलता ऐसी बिल्कुल नहीं थी जिससे श्रीमती स्वान पिघल उठें।
"आप कितने थके हुए और चिंतित दिख रहे हैं," श्रीमती डी मारसेंटेस ने अपने बेटे से कहा, जो एम. डी चार्लस का अभिवादन करने आया था।
और सचमुच, रॉबर्ट की आँखों में भाव हर पल एक ऐसी गहराई तक पहुँचते प्रतीत होते थे, जहाँ से वे एक गोताखोर की तरह अचानक ऊपर उठते थे, जैसे कोई गोताखोर तल तक पहुँच गया हो। यह तल, जिसे छूते ही रॉबर्ट को इतना दर्द हुआ कि उसने उसे तुरंत छोड़ दिया, और एक क्षण बाद फिर से उस पर लौट आया, यह विचार था कि उसका अपनी प्रेमिका से झगड़ा हो गया था।
"कोई बात नहीं," उसकी माँ ने उसके गाल पर हाथ फेरते हुए कहा, "कोई बात नहीं; अपने छोटे बेटे को फिर से देखकर अच्छा लगा।"
लेकिन स्नेह का यह प्रदर्शन रॉबर्ट को चिढ़ाता हुआ प्रतीत हुआ, इसलिए श्रीमती डी मार्सेंट्स अपने बेटे को कमरे के दूसरे छोर पर ले गईं, जहाँ पीले रेशम से सजे एक आले में, बोवेस शैली की कुछ आरामकुर्सियाँ बैंगनी रंग के पर्दों से सजी थीं, मानो बटरकप के खेत में बैंगनी आइरिस खिले हों। श्रीमती स्वान ने खुद को अकेला पाया और यह जानकर कि मैं सेंट-लूप की मित्र हूँ, मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया। इतने लंबे समय से उनसे न मिलने के कारण मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या बात करूँ। मैं कालीन पर बिखरी हुई टोपियों के बीच अपनी टोपी पर नज़र रखे हुए थी और एक अस्पष्ट जिज्ञासा के साथ खुद से पूछ रही थी कि इनमें से एक टोपी किसकी हो सकती है, जो ड्यूक डी गुएरमांटेस की नहीं थी, फिर भी

जिसकी अस्तर में एक बड़े 'G' के ऊपर एक राजसी मुकुट बना हुआ था। मैं कमरे में मौजूद हर किसी को जानती थी, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह टोपी किसकी हो सकती है। मैंने राजदूत की ओर देखते हुए श्रीमती स्वान से कहा, "श्रीमान डी नॉरपोइस कितने अच्छे इंसान हैं! यह सच है कि रॉबर्ट डी सेंट-लूप उन्हें एक झंझट समझते हैं, लेकिन..."
"वह बिल्कुल सही कह रहा है," उसने जवाब दिया।
उसके चेहरे से यह समझकर कि वह कुछ ऐसा सोच रही है जिसे वह मुझसे छिपा रही है, मैंने उससे कई सवाल पूछे। इस कमरे में, जहाँ वह मुश्किल से किसी को जानती थी, किसी के प्रति अत्यधिक रुचि दिखाने की संतुष्टि के लिए, वह मुझे एक कोने में ले गई।
"मुझे यकीन है कि एम. डी सेंट-लूप का यही मतलब था," उसने कहना शुरू किया, "लेकिन आप उन्हें कभी मत बताना कि मैंने ऐसा कहा है, क्योंकि वे मुझे अविवेकी समझेंगे, और मैं उनकी प्रतिष्ठा को बहुत महत्व देती हूँ; मैं एक 'ईमानदार भारतीय' हूँ, क्या आप नहीं जानते? कुछ दिन पहले, चार्लस प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ भोजन कर रहे थे; मुझे नहीं पता क्या हुआ, लेकिन आपका नाम लिया गया। एम. डी नॉरपोइस ने उनसे कहा होगा—यह सब इतना बेतुका है कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, इसके बारे में ज़्यादा चिंता मत करो, किसी ने ध्यान नहीं दिया, वे सभी उस शरारती ज़बान को अच्छी तरह जानते थे जिसने यह कहा था —कि आप एक पाखंडी चापलूस हैं।"
बहुत समय पहले मैंने इस बात पर अपनी हैरानी दर्ज की थी कि मेरे पिता के मित्र, जैसे कि एम. डी नॉरपोइस, मेरे बारे में इस तरह से बात कर सकते थे। मुझे और भी आश्चर्य हुआ जब मुझे पता चला कि उस शाम जब मैंने उनसे श्रीमती स्वान और गिल्बर्ट के बारे में पूछा था, उस समय मेरे मन में जो भाव थे, वे राजकुमारी डी गुएरमांटेस को पता थे, जिनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उन्होंने मेरे अस्तित्व के बारे में सुना होगा। हमारे प्रत्येक कार्य, हमारे शब्द, हमारे दृष्टिकोण 'दुनिया' से, उन लोगों से जिन्होंने इसे प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा है, एक ऐसे माध्यम से कटे हुए हैं जिसकी पारगम्यता अनंत परिवर्तनशील है और जो हमारे लिए भी अज्ञात रहती है; अनुभव से यह सीखते हुए कि कुछ महत्वपूर्ण बातें, जिनके प्रसार की हम बेसब्री से आशा करते थे (जैसे कि वे उत्साहपूर्ण भाषण जो मैं एक समय में सभी लोगों के सामने और हर अवसर पर श्रीमती स्वान के विषय पर दिया करता था), अक्सर हमारी चिंता

के कारण तुरंत ही भुला दी जाती हैं, तो हम यह कितना कम अनुमान लगा सकते हैं कि कोई छोटा सा शब्द, जिसे हम स्वयं भूल गए हों, या फिर कोई ऐसा शब्द जो हमने कभी उच्चारित न किया हो, बल्कि किसी अन्य शब्द के अपूर्ण अपवर्तन से अपने मार्ग में बना हो, बिना किसी बाधा के अनंत दूरियों तक - इस मामले में राजकुमारी डी गुएरमांटेस तक - पहुँच सकता है और हमारे खर्च पर देवताओं के भोज को मोड़ सकता है। वास्तव में हमें अपने आचरण के बारे में क्या याद है, यह हमारे निकटतम पड़ोसी को भी अज्ञात रहता है; जो बातें हम भूल चुके हैं कि हमने कभी कही थीं, या वास्तव में जो बातें हमने कभी कही ही नहीं, वे किसी दूसरे ग्रह पर भी हंसी का कारण बन सकती हैं, और हमारे कार्यों और व्यवहार की जो छवि दूसरे लोगों के मन में बनती है, वह हमारी अपनी छवि से उतनी ही भिन्न होती है, जितनी कि एक मूल चित्र की बिगड़ी हुई प्रति, जिसमें एक जगह काली रेखा की जगह खाली जगह हो और खाली स्थान की जगह एक अस्पष्ट आकृति। फिर भी, यह संभव है कि जो लिखा नहीं गया है, वह कोई ऐसी विशेषता हो जो अस्तित्वहीन है और जिसे हम केवल अपने अंधे आत्मसम्मान के कारण देख रहे हैं, और जो हमें जोड़ा हुआ प्रतीत होता है, वह वास्तव में हमारा ही एक हिस्सा है, लेकिन इतना आवश्यक हिस्सा कि हमारी नजर से छूट गया है। इसलिए, यह अजीब छाप, जो हमें अपने से बहुत कम मिलती-जुलती लगती है, कभी-कभी उसी सत्य की छाप लिए होती है, जो शायद ही प्रशंसात्मक हो, लेकिन गहरी और उपयोगी होती है, जैसे एक्स-रे द्वारा ली गई तस्वीर। इसका यह मतलब नहीं है कि हमें उसमें खुद को पहचानना चाहिए। एक ऐसा व्यक्ति जो शीशे में अपने सुंदर चेहरे और मजबूत कद-काठी को देखकर मुस्कुराने का आदी है, अगर आप उसे उनका एक्स-रे दिखाएँ, तो हड्डियों की उस माला को देखकर, जिस पर खुद की छवि होने का लेबल लगा है, उसे वही संदेह होगा जो किसी कला दीर्घा में किसी लड़की के चित्र को देखकर, कैटलॉग में "ऊंट आराम कर रहा है" पढ़ने पर होता है। बाद में, हमारे चित्रों के बीच यह विसंगति, चाहे उन्हें हमने खुद बनाया हो या किसी और ने, मैंने अपने अलावा दूसरों के मामले में भी देखी, जो अपने द्वारा खींची गई तस्वीरों के संग्रह के बीच शांति से रह रहे थे, जबकि उनके चारों ओर भयानक चेहरे मुस्कुरा रहे थे, जो आमतौर पर उन्हें दिखाई नहीं देते थे, लेकिन अगर कोई दुर्घटना उन्हें प्रकट कर दे तो वे स्तब्ध रह जाते थे और चेतावनी देते थे: "यह तुम हो।"

कुछ साल पहले, मुझे श्रीमती स्वान को यह बताने में बहुत खुशी होती कि मैंने श्री डी नॉरपोइस की चापलूसी किस संबंध में की थी, क्योंकि संबंध तो उनसे मिलने की मेरी इच्छा से ही था। लेकिन अब मुझे यह इच्छा नहीं रही, मैं अब गिल्बर्ट से प्रेम नहीं करता था। दूसरी ओर, मैं श्रीमती स्वान को अपने बचपन की गुलाबी पोशाक वाली महिला से नहीं जोड़ पाया था। इसलिए मैंने उस महिला के बारे में बात की जो उस समय मेरे मन में थी।

मैंने श्रीमती स्वान से पूछा, "क्या आपने अभी-अभी डचेस डी गुएरमांटेस को देखा?"

लेकिन चूंकि डचेस ने मैडम स्वान से मुलाकात के दौरान उन्हें प्रणाम नहीं किया, इसलिए मैडम स्वान ने उन्हें महत्वहीन व्यक्ति के रूप में देखने का विकल्प चुना, जिनकी कमरे में उपस्थिति पर किसी ने ध्यान भी नहीं दिया।

"मुझे नहीं पता; मैंने उसे पहचाना ही नहीं," उसने इंग्लैंड से उधार ली गई एक कहावत का प्रयोग करते हुए चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया।

फिर भी, मैं न केवल श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में, बल्कि उनके संपर्क में आने वाले सभी लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक था, और (ब्लोच की तरह ही), उन लोगों की बेअदबी के साथ जो अपनी बातचीत में दूसरों को प्रसन्न करने के बजाय, केवल अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर, उन तथ्यों को स्पष्ट करना चाहते हैं जो उनके लिए रुचिकर हैं, श्रीमती डी गुएरमांटेस के जीवन का सटीक अंदाजा लगाने के अपने प्रयास में मैंने श्रीमती डी विलेपारिसिस से श्रीमती लेरोई के बारे में पूछताछ की।

"ओह, जी हाँ, मैं जानती हूँ कि आप किसकी बात कर रहे हैं," उसने तिरस्कार भरे लहजे में जवाब दिया, "उन अमीर लकड़ी व्यापारियों की बेटी। मैंने सुना है कि वह आजकल काफी घूमने-फिरने लगी है, लेकिन मुझे आपको यह समझाना होगा कि अब मैं नई जान-पहचान बनाने के लिए काफी बूढ़ी हो चुकी हूँ। मैंने अपने जीवन में इतने दिलचस्प और मनमोहक लोगों को जाना है कि मुझे नहीं लगता कि श्रीमती लेरोल मेरे पहले से मौजूद जान-पहचान में कोई नया जुड़ाव होंगी।" श्रीमती डी मार्सेंटेस, जो मार्क्विज़ की दासी की भूमिका निभा रही थीं, ने मुझे राजकुमार से मिलवाया और जब वह ऐसा कर ही रही थीं, तब श्री डी नॉरपोइस ने भी मेरी बहुत प्रशंसा की। शायद उन्होंने मुझे शिष्टाचारवश सम्मान देना उचित समझा होगा, जिससे उनकी साख को कोई नुकसान नहीं होता, क्योंकि मुझे अभी-अभी पेश किया गया था।

शायद उन्होंने सोचा होगा कि एक विदेशी, भले ही वह कितना भी प्रतिष्ठित विदेशी हो, फ्रांसीसी समाज से अपरिचित होगा और सोचेगा कि उसे किसी फैशनेबल युवक से मिलवाया जा रहा है। शायद उन्होंने राजदूत के रूप में अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग करने के लिए ऐसा किया हो, या फिर पुरातन परंपराओं के प्रति अपने प्रेम के कारण राजकुमार के सम्मान में उस पुरानी प्रथा को पुनर्जीवित किया हो, जो उनके पद के अनुरूप थी, कि पेश किए जाने के लिए दो प्रायोजकों की आवश्यकता होती थी।

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने श्री डी नॉरपोइस से अपील की, क्योंकि उन्हें यह अत्यंत आवश्यक लगा कि मुझे उनका आश्वासन मिले कि श्रीमती लेरोई को न जानने का उन्हें कोई अफसोस नहीं है।

"क्या मैं सही नहीं हूँ, श्रीमान राजदूत, श्रीमती लेरोई काफी नीरस हैं, है ना? वह यहाँ आने वाले लोगों से बिल्कुल अलग हैं; मैंने उनसे दोस्ती न करके बिल्कुल सही किया, है ना?"

चाहे स्वतंत्रता के कारण हो या थकान के कारण, एम. डी नॉरपोइस ने केवल सम्मानपूर्वक झुककर उत्तर दिया, लेकिन उनका उत्तर अर्थहीन था।

"महोदय," श्रीमती डी विलेपारिसिस हंसते हुए बोलीं, "दुनिया में कुछ बेतुके लोग भी हैं। क्या आप विश्वास करेंगे कि आज दोपहर एक सज्जन मुझसे मिलने आए थे जिन्होंने मुझे यह समझाने की कोशिश की कि उन्हें एक युवती के हाथ चूमने की तुलना में मेरे हाथ चूमने में अधिक आनंद आता है?"

मैंने तुरंत समझ लिया कि यह लेग्रैंडिन है। एम. डी नॉरपोइस ने पलकों को हल्का सा झपकाते हुए मुस्कुराया, मानो यह टिप्पणी किसी ऐसी स्वाभाविक कामुकता से प्रेरित हो कि इसे कहने वाले व्यक्ति में कोई दोष नहीं निकाला जा सकता था, मानो यह किसी प्रेम प्रसंग की शुरुआत हो जिसे वह माफ करने को तैयार थे, भले ही वोइसेनन या युवा क्रेबिलन की तरह उसे प्रोत्साहित न करना चाहें।

"बहुत सी युवतियों के हाथ भी वह नहीं कर पाएंगे जो मैं यहाँ देख रहा हूँ," राजकुमार ने श्रीमती डी विलेपारिसिस के अधूरे जलरंग चित्रों की ओर इशारा करते हुए कहा। और उन्होंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने फैंटिन-लाटूर द्वारा बनाए गए फूलों के चित्र देखे हैं, जिनकी हाल ही में प्रदर्शनी लगाई गई थी।

"ये उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, और जैसा कि आजकल लोग कहते हैं, एक कुशल चित्रकार, रंगों के उस्तादों में से एक की कला का संकेत देती हैं," एम. डी नॉरपोइस ने कहा; "फिर भी, मेरा मानना है कि इनकी तुलना इन चित्रों से नहीं की जा सकती, जिनमें मुझे फूल के रंगों को पहचानना आसान लगता है।"

मान भी लें कि किसी पुराने प्रेमी के पक्षपात, लोगों की चापलूसी करने की आदत, या एक छोटे से दायरे में स्वीकार्य आलोचनात्मक मानदंड ने पूर्व राजदूत को यह भाषण देने के लिए प्रेरित किया था, तब भी यह साबित होता है कि समाज में लोगों का निर्णय सच्चे स्वाद के किस पूर्ण अभाव पर आधारित है, इतना मनमाना कि छोटी सी बात भी इसे बेतुकेपन की ओर ले जा सकती है, जिस रास्ते पर यह रुक जाता है, बिना किसी वास्तविक भावना के।

"फूलों के बारे में जानने का श्रेय मैं नहीं लेती, मैंने अपना पूरा जीवन खेतों के बीच ही बिताया है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया। "लेकिन," उन्होंने राजकुमार की ओर मुड़ते हुए विनम्रतापूर्वक कहा, "अगर मैंने, जब मैं बिल्कुल छोटी बच्ची थी, तो फूलों के बारे में आम तौर पर गाँव के बच्चों की तुलना में कहीं अधिक गंभीर विचार बनाए थे, तो इसका श्रेय आपके एक प्रतिष्ठित देशवासी, श्री वॉन श्लेगल को जाता है। मैं उनसे ब्रोगली में मिली थी, जब मैं एक बार अपनी चाची कॉर्डेलिया (मार्शल डी कैस्टेलन की पत्नी, क्या आप जानते हैं?) के साथ वहाँ ठहरी थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि श्री लेब्रून, श्री डी साल्वंडी, श्री डौडान ने उनसे फूलों के बारे में बात की थी। मैं तब बहुत छोटी बच्ची थी, मैं उनकी सारी बातें समझ नहीं पाती थी। लेकिन उन्हें मेरे साथ खेलना अच्छा लगता था, और जब वे आपके देश वापस गए तो उन्होंने मुझे एक सुंदर वनस्पति विज्ञान की किताब भेजी ताकि मुझे उस यात्रा की याद दिला सके जो हमने एक साथ वाल रिचर की एक गाड़ी में की थी, जब मैं उनकी गोद में सो गई थी। मेरे पास वह किताब अभी भी है, और इसने मुझे फूलों के बारे में कई ऐसी बातें सिखाईं जो मैं अन्यथा नहीं देख पाती। जब श्रीमती डी बरांते ने श्रीमती डी की कुछ रचनाएँ प्रकाशित कीं... ब्रोगली के पत्र, जो उन्हीं की तरह आकर्षक और बनावटी थे, मुझे उम्मीद थी कि उनमें मुझे श्री वॉन श्लेगल के साथ हुई उन बातचीत का कुछ विवरण मिलेगा। लेकिन वह एक ऐसी महिला थीं जो प्रकृति से धर्म के समर्थन में तर्कों के अलावा कुछ नहीं चाहती थीं।

रॉबर्ट मुझे कमरे के दूसरे छोर पर ले गया जहाँ वह और उसकी माँ थे।

मैंने कहा, "आपने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ? क्या हम कल साथ में भोजन कर सकते हैं?"
"कल? हाँ, अगर आप चाहें तो, लेकिन ब्लोच के साथ ही बात करनी होगी। अभी-अभी उनसे घर के दरवाजे पर मुलाकात हुई; पहले तो उनका मेरे साथ थोड़ा रूखा व्यवहार था क्योंकि मैं उनके पिछले दो पत्रों का जवाब देना पूरी तरह भूल गया था। (कम से कम उन्होंने मुझे यह नहीं बताया कि इसी बात से उन्हें गुस्सा आया था, पर मैंने अंदाज़ा लगा लिया था।) लेकिन उसके बाद वे मेरे प्रति इतने दोस्ताना हो गए कि मैं उन्हें निराश नहीं कर सकता। हम दोनों के बीच, कम से कम उनकी तरफ से, मुझे लगता है कि यह जीवन-मरण का रिश्ता है।" और मैं यह भी नहीं मानता कि रॉबर्ट पूरी तरह गलत थे। ब्लोच के मामले में, अक्सर गुस्से भरी निंदा उस गहरे स्नेह का परिणाम होती थी जिसे वे अनचाहा समझते थे। और चूंकि उनमें दूसरों के जीवन की कल्पना करने की क्षमता कम थी, और उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई बीमार हो सकता है, या घर से दूर हो सकता है, या किसी और काम में व्यस्त हो सकता है, इसलिए एक हफ्ते की चुप्पी को वे जानबूझकर की गई बेरुखी के रूप में समझते थे। और इसलिए मैंने कभी यह नहीं माना कि एक दोस्त के रूप में, या बाद के वर्षों में एक लेखक के रूप में, उनके सबसे हिंसक outbursts बहुत गहरे थे। अगर कोई उन्हें ठंडे और गंभीर लज्जा से जवाब देता, या कोई ऐसी घिसी-पिटी बात कहता जिससे वे अपना हमला और तेज़ कर देते, तो वे भड़क उठते थे, लेकिन अक्सर गर्मजोशी और सहानुभूति भरे रवैये के आगे वे शांत हो जाते थे। "अच्छे होने की बात करें तो," सेंट-लूप ने आगे कहा, "आप कहते हैं कि मैं आपके पास आया था, लेकिन मैं बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। मेरी चाची कहती हैं कि आप ही उनसे बचते हैं, आपने उनसे कभी एक शब्द भी नहीं कहा। उन्हें शक था कि कहीं आपको उनसे कोई शिकायत तो नहीं है।"
सौभाग्य से, अगर मैं इस भाषण में बह जाता, तो बालबेक के लिए हमारा प्रस्थान, जिसे मैं निकट ही मानता था, मुझे श्रीमती गुएरमांटेस से दोबारा मिलने का कोई भी प्रयास करने से रोक देता, ताकि मैं उन्हें आश्वस्त कर सकूँ कि मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है, और इस तरह उन्हें यह साबित करने के लिए मजबूर कर सकूँ कि वास्तव में उन्हें मुझसे शिकायत है। लेकिन मुझे बस खुद को याद दिलाना था कि उन्होंने मुझे अपने एल्स्टर्स से मिलने का प्रस्ताव

तक नहीं दिया था। इसके अलावा, यह कोई निराशा की बात नहीं थी; मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि वह मुझसे उनके बारे में बात करना शुरू कर देंगी; मैं जानता था कि मैं उन्हें प्रभावित नहीं करता, और मुझे उन्हें कभी भी पसंद करने की कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए; मैं बस यही आशा कर सकता था कि उनकी दयालुता के कारण, पेरिस छोड़ने से पहले उनसे दोबारा न मिलने के कारण, मुझे वहीं पर एक बेहद सुखद छाप मिल जाएगी, जिसे मैं चिंता और दुख से टूटी हुई स्मृति के बजाय, अनिश्चित काल तक, अक्षुण्ण रूप से अपने साथ बालबेक ले जा सकूँगा।

श्रीमती डी मार्सेंटेस रॉबर्ट से अपनी बातचीत को बार-बार रोककर मुझे बता रही थीं कि रॉबर्ट ने मेरे बारे में उनसे कितनी बार बात की थी, और वह मुझे कितना पसंद करते थे; उनका मेरे प्रति ऐसा आदरपूर्ण व्यवहार था जिससे मुझे लगभग ठेस पहुँच रही थी क्योंकि मुझे लग रहा था कि यह उनके इस डर से प्रेरित था कि कहीं मेरे कारण उन्हें उस बेटे के साथ उलझना न पड़े जिससे वह पूरे दिन नहीं मिली थीं, जिसके साथ वह अकेले रहना चाहती थीं, और जिस पर उनका प्रभाव मेरे प्रभाव के बराबर नहीं था और उन्हें मेरे प्रभाव को स्वीकार करना ही होगा। दोपहर में मुझे ब्लोच के चाचा, श्री निस्सिम बर्नार्ड का जिक्र करते हुए सुनकर, श्रीमती डी मार्सेंटेस ने पूछा कि क्या वही व्यक्ति कभी नीस में रहता था।

"उस स्थिति में, वह हमारी शादी से पहले वहां एम. डी मार्सैंट्स को जानते थे," उसने मुझे बताया। "मेरे पति अक्सर उनके बारे में एक उत्कृष्ट व्यक्ति के रूप में बात करते थे, जिनका स्वभाव इतना कोमल और उदार था।"

"यह सोचकर हैरानी होती है कि जीवन में पहली बार वह झूठ नहीं बोल रहा था! यह अविश्वसनीय है," ब्लोच की यही टिप्पणी होती।

इस पूरे समय मैं श्रीमती डी मार्सेंटेस को यह समझाना चाहती थी कि रॉबर्ट मुझसे कहीं अधिक स्नेह उनसे रखता था, और यदि उन्होंने मेरे प्रति कोई शत्रुता दिखाई होती तो मेरा स्वभाव ऐसा नहीं था कि मैं उन्हें उनसे अलग करने का प्रयास करती। लेकिन अब जब श्रीमती डी गुएरमांटेस कमरे से चली गई थीं, तो मुझे रॉबर्ट को देखने का अधिक समय मिला, और तब मैंने पहली बार देखा कि एक बार फिर, उनके भीतर क्रोध का सैलाब उमड़ रहा था, जो उनके गंभीर और उदास चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। मुझे डर था कि कहीं

दोपहर थिएटर में हुई घटना को याद करके, वह मेरे सामने अपमानित महसूस न कर रहे हों कि उन्होंने अपनी प्रेमिका द्वारा इतना कठोर व्यवहार किए जाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अचानक वह अपनी माँ से अलग हो गया, जिसने उसकी गर्दन पर हाथ रखा हुआ था, और मेरी ओर आकर मुझे उस छोटे से फूलों से सजे काउंटर के पीछे ले गया जहाँ श्रीमती डी विलेपारिसिस फिर से बैठ गई थीं, और मुझे छोटे कमरे में उसके पीछे आने का इशारा किया। मैं उसके पीछे जल्दी से जा रहा था कि एम. डी चार्लस, जिसने शायद सोचा होगा कि मैं घर से निकल रहा हूँ, राजकुमार वॉन फाफेनहाइम से, जिससे वह बात कर रहा था, अचानक मुड़ा और तेज़ी से घूमकर मेरे सामने आ गया। मैंने घबराकर देखा कि उसने वह टोपी उतार ली थी जिसके अस्तर में एक बड़ा 'G' और एक राजसी मुकुट बना हुआ था। छोटे कमरे के द्वार पर उसने मेरी ओर देखे बिना कहा:

"जैसा कि मैं देख रहा हूँ कि आप समाज में जाने लगे हैं, तो कृपया मुझसे मिलने आइए। लेकिन मामला थोड़ा पेचीदा है," वह कुछ अनमने और हिसाब-किताब लगाने वाले अंदाज़ में बोले, मानो उन्हें डर था कि एक बार मुझसे मिलने का मौका गँवा देने के बाद वह दोबारा यह मौका नहीं पा पाएँगे। "मैं घर पर बहुत कम ही रहता हूँ; आपको मुझे पत्र लिखना होगा। लेकिन मैं आपको शांति से समझाना ज़्यादा पसंद करूँगा। मैं अभी जा ही रहा हूँ। क्या आप मेरे साथ थोड़ी दूर चलेंगे? मैं बस एक पल के लिए रुकूँगा।"

मैंने उसे चेतावनी देते हुए कहा, "महोदय, आपको सावधान रहना चाहिए; आपने गलती से गलत टोपी उठा ली है।"

"क्या तुम मुझे अपनी टोपी लेने से रोकना चाहते हो?" मैंने सोचा, क्योंकि हाल ही में मेरे साथ भी ऐसी ही एक घटना घटी थी, कि किसी और ने उसकी टोपी ले ली होगी और उसने घर नंगे सिर न जाने के लिए यूं ही कोई टोपी उठा ली होगी, और मैंने उसकी चाल का पर्दाफाश करके उसे मुश्किल में डाल दिया है। मैंने उससे कहा कि मुझे सेंट-लूप से कुछ कहना है। "वह अभी भी उस बेवकूफ ड्यूक डी गुएरमांटेस से बात कर रहा है," मैंने आगे कहा। "यह तो वाकई मजेदार है; मैं अपने भाई को बताऊँगा।" "ओह! तुम्हें लगता है कि इससे एम. डी चार्लस को दिलचस्पी होगी?" (मैंने सोचा कि अगर उसका कोई भाई है, तो उसका नाम भी चार्लस ही होगा। सेंट-लूप ने बालबेक में मुझे अपने परिवार के बारे में बताया था, लेकिन मैं सारी बातें

भूल गया था।) "एम. डी चार्लस के बारे में तुमसे कौन बात कर रहा है?" बैरन ने घमंडी लहजे में जवाब दिया। "रॉबर्ट से बात करो।"

उन्होंने आगे कहा, "मैंने सुना है कि आज सुबह आप उन अय्याशियों में से एक में शामिल थीं जो वह उस महिला के साथ करता है जो उसे बदनाम कर रही है। आपके लिए अच्छा होगा कि आप उस पर अपना प्रभाव इस्तेमाल करें और उसे यह एहसास दिलाएं कि वह अपनी बेचारी माँ और हम सभी को कितना दुख पहुँचा रहा है, हमारा नाम खराब करके।"

मैं यह कहना चाहता था कि इस अपमानजनक भोज में सारी बातचीत एमर्सन, इब्सन और टॉल्स्टॉय के बारे में ही थी, और उस युवती ने रॉबर्ट को उपदेश दिया था कि वह सिर्फ पानी ही पिए। रॉबर्ट को कुछ सांत्वना देने की उम्मीद में, जिसका स्वाभिमान, मुझे लगा, आहत हुआ था, मैंने उसकी प्रेमिका के लिए कोई बहाना ढूंढने की कोशिश की। मुझे नहीं पता था कि उस समय, उसके प्रति अपने गुस्से के बावजूद, वह खुद पर ही दोष मढ़ रहा था। लेकिन ऐसा हमेशा होता है, यहाँ तक कि एक अच्छे आदमी और एक निकम्मी औरत के बीच झगड़ों में भी, और जब सारी सच्चाई एक पक्ष के पक्ष में होती है, तो कोई न कोई छोटी सी बात सामने आ जाती है जिससे औरत किसी एक बात पर गलत साबित नहीं हो पाती। और जैसे ही वह बाकी सभी बातों को नज़रअंदाज़ करती है, जैसे ही आदमी को उसकी संगति की ज़रूरत महसूस होने लगती है, या उससे बिछड़ने से उसका मनोबल गिर जाता है, उसकी कमज़ोरी उसके विवेक को और भी कठोर बना देती है, उसे अपने ऊपर लगाए गए बेतुके आरोपों की याद आती है और वह खुद से पूछता है कि क्या उनमें कोई सच्चाई तो नहीं है।

"मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हार के मामले में मैं गलत था," रॉबर्ट ने मुझसे कहा। "बेशक, मेरा कभी भी कुछ गलत करने का इरादा नहीं था, लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि दूसरे लोग चीजों को एक ही नजरिए से नहीं देखते। उसने अपने बचपन में बहुत मुश्किलों का सामना किया। उसकी नजरों में, मैं बस एक अमीर आदमी था जो सोचता है कि वह अपने पैसे से कुछ भी हासिल कर सकता है, और जिसके साथ एक गरीब आदमी मुकाबला नहीं कर सकता, चाहे वह बूचेरॉन को प्रभावित करने की कोशिश हो या कोई मुकदमा। बेशक, वह मेरे प्रति बहुत क्रूर रही है, जबकि मैंने हमेशा उसके भले के अलावा कुछ नहीं सोचा। लेकिन मुझे साफ दिख रहा है कि वह मानती है कि मैं उसे यह महसूस कराना चाहता था कि कोई उसे

पैसे से काबू में रख सकता है, और यह सच नहीं है। और वह मुझसे इतनी प्यार करती है; वह मेरे बारे में क्या सोचती होगी? बेचारी, अगर तुम जानती, तो उसके तौर-तरीके इतने प्यारे हैं, मैं तुम्हें बता नहीं सकता, उसने अक्सर मेरे लिए बहुत प्यारी चीजें की हैं। अब वह कितना दुखी महसूस कर रही होगी! खैर, अंत में जो भी हो, मैं उसे यह नहीं सोचने देना चाहता कि मैं एक नीच इंसान हूँ; मैं जल्दी से निकल जाऊंगा।" बूशेरॉन की दुकान पर जाओ और हार ले आओ। क्या पता; जब वो मुझे हार पहने देखेगी, तो शायद मान लेगी कि उससे गलती हुई है। समझ रहे हो ना, ये बात मुझे बर्दाश्त नहीं होती कि वो इस समय दुख झेल रही है। खुद का दुख तो पता होता है; ये तो कुछ भी नहीं। लेकिन उसके साथ—ये सोचना कि वो दुख झेल रही है और ये न समझ पाना कि वो क्या महसूस कर रही है—मुझे लगता है मैं पल भर में पागल हो जाऊँगा—मैं उसे फिर कभी न देखना ही बेहतर समझूँगा बजाय उसे दुख झेलने देने के। अगर ज़रूरी हो तो वो मेरे बिना खुश रह सकती है; बस यही मेरी गुज़ारिश है। सुनो; तुम्हें पता है, मेरे लिए उससे जुड़ी हर बात बहुत मायने रखती है, ये मेरे लिए किसी ब्रह्मांडीय चीज़ के बराबर है; मैं ज्वैलर की दुकान पर दौड़ूँगा और फिर जाकर उससे माफ़ी माँगूँगा। लेकिन जब तक मैं वहाँ नहीं पहुँचूँगा, वो मेरे बारे में क्या सोचेगी? काश उसे पता चल जाता कि मैं आ रहा हूँ! तुम जाकर उसे क्यों नहीं बता देते? क्या पता, इससे सारा मामला सुलझ जाए। शायद," वो आगे बोला। मुस्कुराते हुए, मानो उन्हें इस सुखद संभावना पर शायद ही विश्वास हो, "हम तीनों गाँव में एक साथ भोजन कर सकते हैं। लेकिन अभी कुछ कह नहीं सकते। मुझे कभी समझ नहीं आता कि उसे कैसे संभालूँ। बेचारी बच्ची। शायद मैं उसे पहले से भी ज़्यादा दुख पहुँचा दूँ। इसके अलावा, उसका फैसला अपरिवर्तनीय भी हो सकता है।"

रॉबर्ट मुझे वापस अपनी माँ के पास ले गया।

"अलविदा," उसने उससे कहा। "मुझे अब जाना होगा। मुझे नहीं पता कि मुझे दोबारा छुट्टी कब मिलेगी। शायद एक महीने तक नहीं। जैसे ही मुझे पता चलेगा, मैं आपको लिखूंगा।"

निश्चित रूप से रॉबर्ट उस प्रकार का पुत्र बिल्कुल नहीं था जो अपनी माँ के साथ बाहर जाते समय यह सोचता हो कि अजनबियों को दी जाने वाली मुस्कान और अभिवादन के विपरीत, उसके प्रति चिड़चिड़ापन दिखाना उचित है। यह घृणित प्रतिशोध का रूप उन लोगों में बहुत आम है जो यह मानते हैं कि अपने ही परिवार के प्रति अभद्रता करना औपचारिक व्यवहार

का स्वाभाविक पूरक है। बेचारी माँ चाहे कुछ भी कहे, उसका पुत्र, मानो उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध घर लाया गया हो और वह अपनी उपस्थिति के लिए उसे भारी कीमत चुकाने को तैयार हो, तुरंत ही व्यंग्यात्मक, सटीक और क्रूर खंडन के साथ उसके दबे-कुचले कथन का खंडन कर देता है; माँ तुरंत ही, हालांकि इससे वह निरस्त्र नहीं होता, उस श्रेष्ठ व्यक्ति की राय से सहमत हो जाती है जिसकी वह अनुपस्थिति में सबके सामने प्रशंसा करती रहती है, कि उसका स्वभाव आकर्षक है और वह उसे अपने तीखे प्रहारों से नहीं बख्शता। सेंट-लूप बिल्कुल भी ऐसा नहीं था; लेकिन राहेल की अनुपस्थिति से उत्पन्न पीड़ा ने उसे इस प्रकार ढाला कि विभिन्न कारणों से वह अपनी माँ के प्रति उतना ही कठोर हो गया जितना कि मैंने जिन बेटों का वर्णन किया है वे अपनी माताओं के प्रति होते हैं। और जब वह उसकी बातें सुन रही थी, तो मैंने वही स्पंदन देखा, मानो किसी शक्तिशाली पंख का, जिसे श्रीमती डी मार्सैंट्स अपने बेटे के कमरे में पहली बार प्रवेश करने पर दबा नहीं पाई थीं, उनके पूरे शरीर में एक बार फिर से सिहरन पैदा कर दिया; लेकिन इस बार उनका चेहरा चिंतित था, उनकी आँखें दुःख से चौड़ी हो गई थीं, और यही सब उन्होंने उस पर टिका दिया था।

"क्या, रॉबर्ट, तुम जा रहे हो? सच में? मेरे प्यारे बेटे! आज ही के दिन मैंने तुम्हें देखा है!"

और फिर बड़ी धीमी आवाज़ में, अत्यंत स्वाभाविक स्वर में, ऐसी आवाज़ में जिससे उसने सारी उदासी को दूर करने का प्रयास किया ताकि वह अपने बेटे के प्रति ऐसी दया की भावना न जगाए जो शायद उसके लिए कष्टदायक हो, या फिर व्यर्थ हो और उसे केवल चिढ़ाने का काम करे, जैसे कि सामान्य ज्ञान से प्रेरित कोई तर्क, उसने आगे कहा:

"तुम्हें पता है, यह तुम्हारी ओर से बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।"

लेकिन अपनी इस सरलता में उसने इतना संकोच जोड़ दिया कि उसे यह विश्वास हो जाए कि वह उसकी स्वतंत्रता का हनन नहीं कर रही है, और इतना स्नेह भी दिखाया कि वह उस पर अपने सुखों को भंग करने का आरोप न लगाए। इस सब के कारण सेंट-लूप को अपने भीतर भी स्नेह की ऐसी ही लहर उठने की आशंका दिखाई दी, यानी मानो अपनी प्रेमिका के साथ शाम बिताने में बाधा उत्पन्न हो रही हो। और इस तरह वह क्रोधित हो गया।

"यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन चाहे अच्छा हो या बुरा, सच्चाई यही है।"

और उसने अपनी माँ पर उन सभी आरोपों की बौछार कर दी, जिनके वह शायद स्वयं ही हकदार था; यही कारण है कि स्वार्थी लोग हमेशा अपनी बात मनवा लेते हैं; शुरुआत में ही अपने दृढ़ संकल्प को अडिग रखने के बाद, जिस भावना को जगाकर उनसे अपना संकल्प तोड़ने की अपील की जाती है, उसे जितना अधिक ठेस पहुँचती है, उतना ही अधिक दोष वे स्वयं में नहीं, बल्कि उन लोगों में पाते हैं जिन्होंने उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया। परिणामस्वरूप, उनका दृढ़ संकल्प क्रूरता की चरम सीमा तक पहुँच जाता है, जिससे उनकी नज़रों में उस व्यक्ति का दोष और भी बढ़ जाता है जो इतना निर्दयी है कि सही होते हुए भी आहत होता है और इस प्रकार विश्वासघात करके उनकी दया की स्वाभाविक प्रवृत्ति के विरुद्ध कार्य करने का दर्द पहुँचाता है। लेकिन श्रीमती डी मार्सेंट्स ने स्वेच्छा से ज़िद करना बंद कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि वह उसे रोक नहीं पाएंगी।

"मैं तुम्हें यहीं छोड़ रहा हूँ," उसने मुझसे कहा, "लेकिन तुम उसे ज़्यादा देर तक मत रोकना, माँ, क्योंकि उसे एक मिनट में कहीं और जाना है।"

मुझे भली-भांति पता था कि मेरी संगति से श्रीमती डी मार्सेंट्स को कोई सुख नहीं मिल सकता था, लेकिन मैंने रॉबर्ट के साथ न जाकर यह बेहतर समझा कि उन्हें यह न लगे कि मैं उन सुखों में शामिल हूँ जिनकी वजह से वह रॉबर्ट से वंचित हो रही थीं। मैं उनके बेटे के व्यवहार के लिए कोई बहाना ढूंढना चाहती थी, भले ही यह उनके प्रति स्नेह से अधिक उन पर दया के कारण था। लेकिन बात तो उन्होंने ही पहले की।

"बेचारा लड़का," उसने कहना शुरू किया, "मुझे यकीन है कि मैंने उसे बहुत दुख पहुँचाया होगा। देखिए, श्रीमान, माताएँ कितनी स्वार्थी होती हैं, आखिर उसके पास सुख-सुविधाएँ तो बहुत कम हैं, वह पेरिस बहुत कम आता है। ओह, अगर वह अभी तक न गया होता तो मैं उसे रोकना चाहती, उसे रोकने के लिए नहीं, बल्कि बस यह बताने के लिए कि मैं उससे नाराज़ नहीं हूँ, मुझे लगता है कि वह बिल्कुल सही था। क्या आप मुझे जाने देंगे अगर मैं सीढ़ियों से झाँक कर देख लूँ?"

मैं उसके साथ वहां गया था।

"रॉबर्ट! रॉबर्ट!" उसने पुकारा। "नहीं; वह चला गया है; हम बहुत देर हो चुके हैं।"

उस पल मैं रॉबर्ट को उसकी प्रेमिका से अलग कराने के मिशन पर उतनी ही खुशी से निकल पड़ता, जितनी खुशी से कुछ घंटे पहले उसे उसके साथ रहने के लिए मजबूर करने पर। एक स्थिति में सेंट-लूप मुझे झूठा दोस्त समझता, दूसरी में उसका परिवार मुझे उसका शातिर साथी कहता। फिर भी, कुछ घंटों के अंतराल में मैं वही इंसान था।

हम ड्राइंग रूम में लौट आए। यह देखकर कि सेंट-लूप हमारे साथ नहीं थे, श्रीमती डी विलेपारिसिस ने श्री डी नॉरपोइस के साथ वही संदेहपूर्ण, उपहासपूर्ण और दयाहीन नज़रें मिलाईं, जिनसे लोग एक-दूसरे को अत्यधिक ईर्ष्यालु पत्नी या अत्यधिक प्रेम करने वाली माँ की ओर इशारा करते हैं (बाहरी लोगों के लिए ये दृश्य मनोरंजक होते हैं), मानो यह कह रही हों: "देखो, अब तो मुसीबत आ गई है।"

रॉबर्ट अपनी प्रेमिका के पास गया, साथ में वह शानदार आभूषण भी ले गया जो दोनों पक्षों की बातचीत के बाद उसे नहीं देना चाहिए था। लेकिन बात वही रही, क्योंकि उसने उसे देखा तक नहीं, और सुलह के बाद भी वह उसे स्वीकार करने के लिए राजी नहीं कर सका। रॉबर्ट के कुछ दोस्तों का मानना था कि उसकी निस्वार्थता के ये प्रमाण जानबूझकर उसे अपने करीब लाने के लिए थे। फिर भी वह पैसों की लालची नहीं थी, सिवाय इसके कि वह बिना सोचे-समझे खर्च कर सके। मैंने उसे जरूरतमंद लोगों पर बेपरवाही से दान करते देखा है। "इस समय," रॉबर्ट के दोस्त उससे कहते थे, राहेल के निस्वार्थ कार्यों को अपने तीखे शब्दों से संतुलित करने की कोशिश करते हुए, "इस समय वह फोलिज़-बर्गेरेस में सैर कर रही होगी। वह लड़की एक पहेली है, बिल्कुल रहस्यमयी।" आखिरकार, हमने कितनी ही ऐसी महिलाओं को नहीं देखा है जो पुरुषों द्वारा रखी जाने के कारण उदासीन नहीं हैं, और जो अपने घिनौने अस्तित्व से उत्पन्न कोमलता के साथ, अपने प्रेमियों की उदारता पर अपने हाथों से हजारों छोटी-छोटी सीमाएं निर्धारित करती हैं?

रॉबर्ट को अपनी प्रेमिका की बेवफ़ाइयों के बारे में शायद ही कुछ पता था, और वह राहेल के वास्तविक जीवन की तुलना में इन बेवफ़ाइयों को लेकर अपने मन को पीड़ा देता रहता था, एक ऐसा जीवन जो उसके जाने के बाद ही हर दिन शुरू होता था। उसे इन बेवफ़ाइयों के बारे में शायद ही कुछ पता था। कोई उसे इनके बारे में बता भी देता तो राहेल पर उसका भरोसा नहीं डगमगाता। क्योंकि यह प्रकृति का एक आकर्षक नियम है जो सबसे जटिल सामाजिक

प्राणियों के हृदय में प्रकट होता है, कि हम जिनसे प्रेम करते हैं उनके बारे में पूरी तरह अनजान रहते हैं। दर्पण के एक तरफ प्रेमी खुद से कहता है: "वह एक देवदूत है, वह कभी खुद को मेरे हवाले नहीं करेगी, मैं मर ही जाऊं तो बेहतर है—और फिर भी वह मेरी परवाह करती है; वह इतनी परवाह करती है कि शायद—लेकिन नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।" और अपनी तीव्र इच्छा में, प्रतीक्षा की पीड़ा में, वह इस स्त्री के चरणों में कैसे गहने फेंकता है, उसे असुविधा से बचाने के लिए वह कैसे पैसे उधार लेने दौड़ता है; इसी बीच, स्क्रीन के दूसरी तरफ, जहाँ से उनकी बातचीत उतनी ही धीमी गति से सुनाई देगी जितनी किसी एक्वेरियम की कांच की दीवार के बाहर दर्शकों के बीच होती है, लोग कह रहे हैं: "तुम उसे नहीं जानते? बधाई हो, उसने न जाने कितने आदमियों को लूटा है, बल्कि बर्बाद कर दिया है। पेरिस में उससे बुरी लड़की कोई नहीं है। वह एक नंबर की धोखेबाज़ है। और चालाक कहना भी कम होगा!" और शायद जनता आखिरी विशेषण का इस्तेमाल करने में पूरी तरह गलत नहीं है, क्योंकि वास्तव में वह संशयवादी आदमी जो उस औरत से प्यार नहीं करता और जिसे वह सिर्फ आकर्षित करती है, अपने दोस्तों से कहता है: "नहीं, नहीं, मेरे प्यारे दोस्त, वह बिल्कुल भी वेश्या नहीं है; मैं यह नहीं कहता कि उसने अपने जीवन में एक-दो बार ऐसे काम नहीं किए, लेकिन वह ऐसी औरत नहीं है जिसके लिए पैसे दिए जाएं, अगर वह होती तो बहुत महंगी होती। उसके साथ या तो पचास हज़ार फ्रैंक या कुछ नहीं।" खैर, उसने उस पर पचास हज़ार फ्रैंक खर्च कर दिए, एक बार उसके साथ संबंध बना लिया, लेकिन उसने (और तो और, उस आदमी में एक इच्छुक साथी पाकर) उसे यह यकीन दिला दिया कि वह उन लोगों में से एक है जिन्होंने उसे मुफ्त में पाया है। समाज ऐसा ही है, जिसमें हम सभी के दो पहलू होते हैं, जिसमें सबसे स्पष्ट, सबसे कुख्यात दोष किसी दूसरे व्यक्ति को कभी पता नहीं चल पाते, सिवाय इसके कि वे एक खोल के नीचे, एक चिकने कोकून के नीचे, प्रकृति की एक मनमोहक जिज्ञासा के रूप में छिपे रहते हैं। पेरिस में दो बेहद सम्मानित पुरुष थे जिनके सामने सेंट-लूप अब झुकता नहीं था, और जब वह उन्हें महिलाओं का शोषण करने वाला कहता था तो उसकी आवाज़ कांपने लगती थी: ऐसा इसलिए था क्योंकि वे दोनों राहेल के कारण बर्बाद हो चुके थे। "मैं सिर्फ एक बात के लिए खुद को दोषी मानती हूँ," श्रीमती डी मार्सैंट्स ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, "और वो ये कि मैंने उससे कहा कि वो मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर

रहा था। वो इतना प्यारा, अनोखा बेटा है, उसके जैसा दुनिया में कोई और नहीं है, वो सिर्फ एक बार मुझसे मिलता है। उसे ये कहना कि वो मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रहा, इससे कहीं बेहतर होता अगर वो मुझे पीट देता, क्योंकि मुझे यकीन है कि आज शाम उसे जो भी आनंद मिल रहा होगा, और उसे ज़्यादा आनंद नहीं मिलता, उस अनुचित शब्द से उसका सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। लेकिन, महोदय, मुझे आपको रोकना नहीं चाहिए, क्योंकि आपको जल्दी है।"

श्रीमती डी मार्सैंट्स ने चिंता से मुझे विदाई दी। रॉबर्ट पर इन भावनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा; वह सच्ची थीं। लेकिन अब वह एक महान महिला नहीं रहीं, एक बार फिर उनका अस्तित्व समाप्त हो गया।

मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी थी, आपसे यह छोटी सी बातचीत करके मुझे बहुत खुशी हुई। धन्यवाद! धन्यवाद!

और विनम्रता से भरी उनकी निगाहें मुझ पर कृतज्ञता और उत्साह से टिकी थीं, मानो मेरी बातचीत उनके जीवन के सबसे सुखद अनुभवों में से एक हो। उनकी ये मनमोहक निगाहें उनकी सफेद स्कर्ट पर लगे काले फूलों के साथ बहुत अच्छी लग रही थीं; ये एक ऐसी महान महिला की निगाहें थीं जो अपने काम में माहिर थीं।

"लेकिन मुझे कोई जल्दी नहीं है," मैंने जवाब दिया; "इसके अलावा, मुझे एम. डी चार्लस का इंतजार करना होगा; मैं उनके साथ जा रहा हूँ।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने ये आखिरी शब्द सुन लिए। ऐसा लगा जैसे उन्हें इनसे ठेस पहुंची हो। अगर मामला ऐसा न होता जिससे ऐसी भावना उत्पन्न हो सकती, तो शायद मुझे यह समझ आता कि श्रीमती डी विलेपारिसिस को उस समय जो चिंता सता रही थी, वह उनकी शालीनता थी। लेकिन यह विचार मेरे मन में आया ही नहीं। मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस, सेंट-लूप, श्रीमती डी मार्सैंटेस, एम. डी चार्लस और श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलकर बहुत प्रसन्न था; मैंने इस पर विचार नहीं किया और हल्के-फुल्के अंदाज में बेतरतीब ढंग से बोलता रहा।

"क्या तुम मेरे भतीजे पलामेडे के साथ यहाँ से जा रहे हो?" उसने मुझसे पूछा।

मुझे लगा कि अगर श्रीमती डी विलेपारिसिस को पता चलेगा कि मैं उनके एक ऐसे भतीजे से घनिष्ठ संबंध रखता हूँ, जिनका वह बहुत सम्मान करती थीं, तो उन पर बहुत अच्छा प्रभाव

पड़ेगा। मैंने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, "उन्होंने मुझे अपने साथ घर चलने के लिए कहा है। मुझे बहुत खुशी है। वैसे भी, हम आपकी सोच से कहीं अधिक अच्छे दोस्त हैं, और मैंने यह पक्का कर लिया है कि हम और भी अच्छे दोस्त बने रहेंगे।"

पहले तो श्रीमती डी विलेपारिसिस परेशान लग रही थीं, लेकिन अब वे चिंतित प्रतीत हो रही थीं। उन्होंने मुझसे चिंता भरे लहजे में कहा, "उनका इंतज़ार मत करो। वे श्री डी फाफेनहाइम से बात कर रहे हैं। उन्हें यकीन है कि वे भूल गए होंगे कि उन्होंने तुमसे क्या कहा था। बेहतर होगा कि तुम अभी जल्दी से चली जाओ, जब तक उनकी पीठ तुम्हारी ओर है।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस के चेहरे पर जो पहला भाव प्रकट हुआ, वह परिस्थितियों को देखते हुए शालीनता को ठेस पहुँचाने वाला प्रतीत होता था। उनका आग्रह और विरोध, यदि केवल उनके चेहरे का ही अध्ययन किया जाता, तो ऐसा लगता कि यह सद्गुण से प्रेरित था। मुझे स्वयं रॉबर्ट और उसकी प्रेमिका के पास जाने की कोई जल्दी नहीं थी। लेकिन श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मेरे जाने को इतना महत्वपूर्ण बना दिया कि शायद यह सोचकर कि उन्हें अपने भतीजे से कोई महत्वपूर्ण बात करनी है, मैंने उन्हें अलविदा कह दिया। उनके बगल में, भव्य और प्रभावशाली एम. डी गुएरमांटेस भारी मन से बैठे थे। ऐसा लगता था मानो उनके शरीर में व्याप्त अपार धन-दौलत की भावना ने उन्हें एक विशेष उच्च घनत्व प्रदान किया हो, मानो उन्हें किसी भट्टी में पिघलाकर एक ही मानव पिंड में बदल दिया गया हो, जिससे इस विशाल व्यक्तित्व का निर्माण हुआ हो। जब मैंने उन्हें अलविदा कहा, तो वे विनम्रतापूर्वक अपनी सीट से उठे, और मैं उनके पुराने फ्रांसीसी शिष्टाचार से उत्पन्न तीस मिलियन के भार को महसूस कर सका, जो उठकर मेरे सामने आ खड़ा हुआ। ऐसा लगा मानो मैं ओलंपियन ज़्यूस की उस मूर्ति को देख रहा हूँ जिसे फ़ीडियास ने ठोस सोने में ढाला था। अच्छे शिष्टाचार का एम. डी. गुएरमांटेस के शरीर पर इतना प्रभाव था, कम से कम उनके दिमाग पर तो था ही, क्योंकि उनके दिमाग पर इसका उतना प्रभाव नहीं था। एम. डी. गुएरमांटेस अपने ही चुटकुलों पर हँसते थे, लेकिन दूसरों के चुटकुलों पर नहीं झुकते थे।

जैसे ही मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा, मुझे पीछे से किसी की आवाज़ सुनाई दी जो मुझे पुकार रही थी:

"तो तुम इसी तरह मेरा इंतजार करते हो, है ना?"

वह एम. डी चार्लस थे।
जब हम आंगन में पहुंचे तो उसने रूखेपन से पूछा, "अगर हम थोड़ी दूर पैदल चलें तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?" "हम तब तक पैदल चल सकते हैं जब तक मुझे कोई सुविधाजनक टैक्सी न मिल जाए।"
"आप मुझसे किसी विषय पर बात करना चाहते थे, महोदय?"
"हाँ, सच कहूँ तो, कुछ बातें थीं जो मैं आपसे कहना चाहता था, लेकिन अब मुझे पक्का नहीं पता कि कहूँ या नहीं। जहाँ तक आपकी बात है, मुझे यकीन है कि वे बातें आपके लिए अमूल्य लाभ का शुरुआती बिंदु साबित हो सकती हैं। लेकिन मैं यह भी समझता हूँ कि शांति की कदर करने वाली उम्र में, ये बातें मेरे लिए समय की बर्बादी और असुविधा का कारण बनेंगी। मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या आप उन सभी प्रयासों के लायक हैं जो मुझे आपके साथ करने पड़ेंगे, और मैं आपको इतना अच्छी तरह से नहीं जानता कि इसका जवाब दे सकूँ। शायद आपको भी मेरे द्वारा आपके लिए किए जाने वाले कार्य इतने आकर्षक न लगें कि मैं खुद इतनी मेहनत करूँ, क्योंकि मैं साफ-साफ कहता हूँ कि मेरे लिए तो यह सिर्फ परेशानी ही है।"
मैंने विरोध करते हुए कहा कि ऐसी स्थिति में तो उसे ऐसा सपने में भी नहीं सोचना चाहिए। चर्चा का यह संक्षिप्त अंत उसे पसंद नहीं आया।
"इस तरह की शिष्टता का कोई मतलब नहीं," उन्होंने मुझे ठंडे स्वर में फटकारा। "किसी ऐसे व्यक्ति के लिए कष्ट सहने से ज्यादा सुखद कुछ नहीं है जो वाकई लायक हो। हममें से अच्छे लोगों के लिए भी कला का अध्ययन, पुरानी चीजों का शौक, संग्रह, बाग-बगीचे सब दिखावटी, वैकल्पिक, बहाने मात्र हैं। अपने भीतर, डायोजेन्स की तरह, हम एक सच्चे इंसान के लिए तड़पते हैं। हम बेगोनिया उगाते हैं, यू के पेड़ काटते हैं, अंतिम उपाय के तौर पर, क्योंकि यू और बेगोनिया देखभाल सह लेते हैं। लेकिन हम अपना समय किसी ऐसे इंसान को देना चाहेंगे, अगर हमें यकीन हो कि वह हमारे कष्ट सहने लायक है। असली सवाल यही है: आपको अपने बारे में कुछ तो जानना चाहिए। क्या आप मेरे कष्ट सहने लायक हैं या नहीं?"
मैंने उनसे कहा, "महोदय, मैं दुनिया में किसी भी कीमत पर आपकी चिंता का कारण नहीं बनना चाहता, लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, आप निश्चिंत रहें कि आपसे मुझे जो कुछ भी

मिलेगा, वह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का स्रोत होगा। मैं बहुत प्रभावित हूँ कि आपने मुझ पर इतना ध्यान दिया और मेरी मदद करने का प्रयास किया।"

मुझे बेहद आश्चर्य हुआ कि उन्होंने लगभग भावुकता से इस भाषण के लिए मुझे धन्यवाद दिया, और उसी सहज आत्मीयता के साथ अपना हाथ मेरे हाथ में डाल दिया, जो मुझे बालबेक में पहले ही महसूस हो चुकी थी, और जो उनके लहजे की शीतलता के बिल्कुल विपरीत थी।

उन्होंने मुझसे कहा, "तुम्हारी उम्र में आम तौर पर पाई जाने वाली असंवेदनशीलता के कारण, तुम कभी-कभी ऐसी बातें कह देते हो जिनसे हमारे बीच एक ऐसी खाई पैदा हो जाती है जिसे भरना असंभव होता है। दूसरी ओर, तुमने अभी जो कहा है, वह ठीक वैसा ही है जो मुझे छू जाता है और मुझे तुम्हारे लिए बहुत कुछ करने की प्रेरणा देता है।"

जब वह मेरे साथ हाथ में हाथ डालकर चल रहे थे और ये शब्द कह रहे थे, जो तिरस्कार से भरे होने के बावजूद बेहद स्नेहपूर्ण थे, तब श्री डी चार्लस ने अपनी निगाहें मुझ पर उसी तीव्र एकाग्रता से टिका दीं, जिसने मुझे पहली सुबह तब झकझोर दिया था, जब मैंने उन्हें बालबेक के कैसिनो के बाहर देखा था, और वास्तव में उससे कई साल पहले, गुलाबी कंटीली झाड़ियों के बीच, श्रीमती स्वान के बगल में खड़े हुए, जिन्हें मैंने तब उनकी प्रेमिका समझा था, टैनसनविले के पार्क में; अब उनकी निगाहें उनके चारों ओर घूम गईं और उन टैक्सियों को देखने लगीं जो दिन के इस समय अपने अस्तबलों की ओर जा रही थीं, उन्हें इतनी दृढ़ता से देख रहे थे कि कई टैक्सियाँ रुक गईं, ड्राइवरों ने सोचा कि वह उन्हें काम पर रखना चाहते हैं। लेकिन श्री डी चार्लस ने तुरंत उन्हें जाने दिया।

"ये वो नहीं हैं जो मुझे चाहिए," उन्होंने मुझे समझाया, "ये सब उनके लैंप के रंग और उनकी दिशा का सवाल है। मुझे उम्मीद है, महोदय," उन्होंने आगे कहा, "कि आप मेरे द्वारा आपके समक्ष रखे जाने वाले विशुद्ध रूप से निस्वार्थ और परोपकारी प्रस्ताव को किसी भी तरह से गलत नहीं समझेंगे।"

मुझे उनकी भाषा शैली और स्वान की भाषा शैली में समानता देखकर आश्चर्य हुआ, जो बालबेक के समय की तुलना में अब कहीं अधिक स्पष्ट है।

"मुझे लगता है कि आपमें इतनी समझ है कि आप यह न सोचें कि मैं समाज की कमी, अकेलेपन या ऊब के डर से आपके पास आया हूँ। मैं आमतौर पर अपने बारे में बात करना

पसंद नहीं करता, लेकिन आपने शायद सुना होगा—द टाइम्स के एक प्रमुख लेख में इसका जिक्र था, जिसने काफी प्रभाव डाला—कि ऑस्ट्रिया के सम्राट, जिन्होंने हमेशा मुझे अपनी मित्रता से सम्मानित किया है और मेरे साथ चचेरे भाईचारे का रिश्ता बनाए रखने पर जोर देते हैं, ने कुछ दिन पहले एक सार्वजनिक साक्षात्कार में कहा था कि अगर कॉम्टे डी चैम्बॉर्ड के साथ मेरे जैसा यूरोपीय राजनीति की बारीकियों को अच्छी तरह समझने वाला व्यक्ति होता, तो आज वह फ्रांस के राजा होते। महोदय, मैंने अक्सर सोचा है कि मुझमें, मेरी मामूली प्रतिभाओं के कारण नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों के कारण जिनके बारे में आपको शायद कभी पता चले, एक अमूल्य गुप्त ज्ञान छिपा है, जिसका उपयोग मैंने व्यक्तिगत रूप से करने की स्वतंत्रता नहीं पाई है, लेकिन जो उस नौजवान के लिए एक अनमोल धरोहर होगी जिसे मैं कुछ महीनों में सौंपने वाला हूँ। इसे इकट्ठा करने में मुझे तीस साल से भी ज़्यादा समय लगा है, जो शायद केवल मेरे पास ही है। मैं उस बौद्धिक आनंद की बात नहीं कर रहा हूँ जो आपको उन रहस्यों को जानने में मिलेगा जिन्हें जानने के लिए हमारे ज़माने का कोई मिशेलेट अपना पूरा जीवन दे देता, और जिनके प्रकाश में कुछ घटनाएँ उसके लिए बिल्कुल अलग रूप ले लेतीं। और मैं केवल घटित घटनाओं की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि परिस्थितियों की श्रृंखला की बात कर रहा हूँ। (यह एम. डी चार्लस का पसंदीदा मुहावरा था, और अक्सर जब वे इसका प्रयोग करते थे, तो वे प्रार्थना की मुद्रा में हाथ जोड़ते थे, लेकिन उनकी उंगलियाँ अकड़ी हुई होती थीं, मानो उनकी जटिलता से उन परिस्थितियों को दर्शाना चाहते हों, जिनका उन्होंने स्पष्ट उल्लेख नहीं किया, और उन्हें जोड़ने वाली श्रृंखला को भी।) "मैं आपको न केवल अतीत बल्कि भविष्य की भी ऐसी व्याख्या दे सकता हूँ जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी।" एम. डी चार्लस ने रुककर मुझसे ब्लोच के बारे में सवाल किया, जिसके बारे में उन्होंने अपनी चाची के ड्राइंग रूम में चर्चा सुनी थी, हालाँकि वे सुनते हुए प्रतीत नहीं हो रहे थे। और उस व्यंग्यात्मक लहजे में उन्होंने इतनी कुशलता से अपनी बात को अलग कर दिया कि ऐसा लग रहा था मानो वे किसी और ही बात पर विचार कर रहे हों और केवल शिष्टाचारवश यांत्रिक रूप से बोल रहे हों। उन्होंने पूछा कि क्या मेरा मित्र युवा, सुंदर आदि है। यदि ब्लोच ने मेरी बात सुनी होती, तो वे एम. डी नॉरपोइस से भी अधिक उलझन में होते, लेकिन बिल्कुल अलग कारणों से, यह जानने के लिए कि एम. डी चार्लस ड्रेफस के पक्ष में हैं या विपक्ष में। "यदि आप

जीवन के बारे में जानना चाहते हैं, तो कभी-कभार किसी विदेशी को अपने मित्रों में शामिल करना बुरा विचार नहीं है," एम. डी चार्लस ने मुझसे पूछताछ समाप्त करने के बाद कहा। मैंने उत्तर दिया कि ब्लोच फ्रांसीसी हैं। "हाँ," एम. डी चार्लस ने कहा, "मैंने तो उन्हें यहूदी ही समझा था।" उनकी इस असंगति की पुष्टि ने मुझे यह मानने पर मजबूर कर दिया कि एम. डी चार्लस ड्रेफस के सबसे बड़े विरोधी थे, जितने लोगों से मैं मिला था। हालाँकि, उन्होंने ड्रेफस पर लगाए गए राजद्रोह के आरोप का विरोध किया। लेकिन उनका विरोध इस रूप में सामने आया: "मैं अखबारों में पढ़ रहा हूँ कि ड्रेफस ने अपने देश के खिलाफ अपराध किया है—हाँ, मैं यही समझता हूँ। मैं अखबारों पर ध्यान नहीं देता, मैं उन्हें हाथ धोते समय पढ़ता हूँ, मुझे नहीं लगता कि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी लेने की ज़रूरत है। वैसे भी, अपराध तो है ही नहीं। आपके मित्र के देशवासी ने अगर यहूदिया के साथ विश्वासघात किया होता तो अपराध किया होता, लेकिन उसका फ्रांस से क्या लेना-देना है?" मैंने बताया कि अगर युद्ध हुआ तो यहूदियों को भी उतना ही लामबंद किया जाएगा जितना किसी और को। "शायद ऐसा हो, और मुझे यकीन नहीं है कि यह नासमझी नहीं होगी। अगर हम सेनेगल और मालागासिया के लोगों को लाते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि उनका मन फ्रांस की रक्षा करने में लगेगा, जो कि स्वाभाविक ही है। आपके ड्रेफस पर शायद आतिथ्य सत्कार के नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लग सकता है। लेकिन हमें इस पर चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। शायद आप अपने मित्र से मुझे मंदिर में किसी बड़े उत्सव में, यहूदी भजनों के साथ खतना समारोह में उपस्थित होने की अनुमति देने के लिए कह सकते हैं। हो सकता है कि वह एक हॉल किराए पर लेकर मुझे कुछ बाइबिल से संबंधित मनोरंजन प्रदान करें, जैसे सेंट-साइर की युवतियों ने लुई XIV का मनोरंजन करने के लिए रैसीन द्वारा रचित भजनों के दृश्यों का प्रदर्शन किया था। आप हमें हंसाने के लिए पार्टियां भी आयोजित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आपके मित्र और उनके पिता के बीच एक लड़ाई, जिसमें वह उन्हें वैसे ही मारेंगे जैसे डेविड ने गोलियत को मारा था। यह एक बहुत ही मनोरंजक प्रहसन होगा। वह इसके साथ ही अपनी बूढ़ी औरत (या, जैसा कि मेरी पुरानी नर्स कहती थी, उसकी 'हैगार्ट') को भी कुछ जोरदार घूंसे मार सकते हैं।" माँ। यह एक शानदार तमाशा होगा, और हमें बुरा नहीं लगेगा, है ना, मेरे युवा मित्र, क्योंकि हमें अनोखे तमाशे पसंद हैं, और उस गैर-यूरोपीय प्राणी को पीटना एक बूढ़े ऊँट को उचित दंड देने जैसा होगा।" जैसे

ही उन्होंने यह भयानक, लगभग पागलपन भरी भाषा बोली, एम. डी चार्लस ने मेरी बांह इतनी ज़ोर से दबाई कि उसमें दर्द होने लगा। मुझे याद आया कि उनके परिवार ने मुझे उस बूढ़ी नर्स के प्रति उनकी अद्‌भुत दयालुता के बारे में बताया था, जिसकी मोलियर जैसी शब्दावली का उन्होंने अभी-अभी उल्लेख किया था, और मैंने मन ही मन सोचा कि एक ही हृदय में अच्छाई और बुराई के बीच के संबंध, जिनका अब तक, मुझे लगता है, बहुत कम अध्ययन किया गया है, चाहे वे कितने भी विविध क्यों न हों, शोध का एक रोचक विषय हो सकते हैं।

मैंने उन्हें आगाह किया कि वैसे भी, श्रीमती ब्लोच अब जीवित नहीं हैं, जबकि श्री ब्लोच के बारे में मैंने सवाल किया कि क्या उन्हें ऐसे खेल में आनंद आएगा जिससे उनकी आंखें जा सकती हैं। श्री डी चार्लस नाराज़ लग रहे थे। उन्होंने कहा, "वह औरत जिसने मरकर बहुत बड़ी गलती की। जहाँ तक उनकी आंखों की बात है, तो निश्चित रूप से आराधनालय अंधा है, वह सुसमाचार की सच्चाई को नहीं समझता। वैसे भी, सोचो, इस समय, जब ये सभी अभागे यहूदी ईसाइयों के मूर्खतापूर्ण क्रोध के सामने कांप रहे हैं, तो उनके लिए कितना सम्मान की बात होगी कि मुझ जैसा आदमी उनके खेलों में आनंद ले रहा है।" इसी समय मेरी नज़र श्री ब्लोच सीनियर पर पड़ी, जो हमारी ओर आ रहे थे, शायद अपने बेटे से मिलने जा रहे थे। उन्होंने हमें नहीं देखा, लेकिन मैंने उन्हें श्री डी चार्लस से मिलवाने की पेशकश की। मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मेरे शब्दों से कितना क्रोध भड़क उठेगा। "उससे मेरा परिचय कराओ! लेकिन तुम्हें सामाजिक मूल्यों की बिल्कुल भी समझ नहीं है! लोग मुझे इतनी आसानी से नहीं जान पाते। इस मामले में, दोहरी असुविधा होगी, एक तो परिचय कराने वाले की कम उम्र के कारण और दूसरा परिचय कराए जा रहे व्यक्ति की अयोग्यता के कारण। ज़्यादा से ज़्यादा, अगर मुझे कभी उस एशियाई तमाशे को देखने का मौका मिला, जिसका मैंने तुम्हें सुझाव दिया था, तो मैं उस घिनौने प्राणी से कुछ उदार भावनाएँ व्यक्त कर सकता हूँ। लेकिन अगर वह अपने बेटे से बुरी तरह पिटने दे, तो मैं अपनी संतुष्टि भी व्यक्त कर सकता हूँ।" हुआ यूँ कि एम. ब्लोच ने हमारी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह श्रीमती सज़ेरत का लगातार झुककर अभिवादन करने में व्यस्त थे, जिसे उन्होंने बहुत ही विनम्रता से स्वीकार किया। मुझे इस पर आश्चर्य हुआ, क्योंकि पुराने दिनों में कॉम्ब्रे में वह मेरे माता-पिता से युवा ब्लोच को घर में रखने पर बहुत नाराज़ थीं, उस समय वह यहूदी-विरोधी थीं। लेकिन ड्रेफ्यूज़वाद, तेज़ हवा के झोंके

की तरह, कुछ दिन पहले ही एम. ब्लोच को उनके पैरों पर खड़ा कर दिया था। मेरे पिता के मित्र को श्रीमती सज़ेरत आकर्षक लगीं और वे विशेष रूप से उस महिला के यहूदी-विरोध से प्रसन्न थे, जिसे वे उनके सच्चे विश्वास और ड्रेफ्यूज़वादी विचारों की सुदृढ़ता का प्रमाण मानते थे, और साथ ही उस मुलाकात के महत्व को भी बढ़ाते थे जिसके लिए उन्होंने उन्हें अनुमति दी थी। जब उन्होंने उनसे दृढ़ता से कहा था, "एम. ड्रमोंट में इतनी धृष्टता है कि वे संशोधनवादियों को प्रोटेस्टेंट और यहूदियों के साथ एक ही श्रेणी में रखते हैं। कितनी आनंददायक व्यभिचारिता है!" तो उन्हें जरा भी आपत्ति नहीं हुई थी। घर पहुँचकर उन्होंने एम. निसिम बर्नार्ड से गर्व से कहा, "बर्नार्ड, आप जानते हैं, उनमें यह पूर्वाग्रह है!" लेकिन एम. निसिम बर्नार्ड ने कुछ नहीं कहा, बस एक देवदूत जैसी निगाह से आकाश की ओर देखा। यहूदियों के दुर्भाग्य से दुखी, ईसाइयों के साथ अपनी पुरानी दोस्ती को याद करते हुए, जो बढ़ती उम्र के साथ और भी सलीकेदार और कीमती हो गई थी (जिसके कारण पाठक को आगे पता चलेंगे), अब उनमें एक ऐसे भूत का आभास था जिस पर बेमेल ढंग से बाल गुंथे हुए थे, जैसे ओपल के दिल में धागे। बैरन ने मुझे बांह से पकड़े हुए कहा, "ड्रेफस का यह सारा मामला सिर्फ एक ही नुकसान पहुंचाता है। यह समाज को नष्ट कर देता है (मैं सभ्य समाज नहीं कह रहा; समाज तो उस प्रशंसात्मक विशेषण के योग्य ही नहीं रह गया है) क्योंकि श्रीमान और श्रीमती कैमल, कैमलरीज़ और कैमलयार्ड्स जैसे लोग बड़ी संख्या में आ रहे हैं, ये आश्चर्यजनक प्राणी मुझे अपने चचेरे भाइयों के घरों में भी मिलते हैं, क्योंकि वे पैट्री फ़्रांसेज़, या यहूदी-विरोधी, या किसी ऐसे ही गठबंधन से जुड़े हैं, मानो किसी राजनीतिक राय से किसी को कोई सामाजिक योग्यता मिल जाती हो।" एम. डी चार्लस की इस चंचलता ने डचेस डी गुएरमांटेस के साथ उनकी पारिवारिक समानता को उजागर किया।

मैंने उनसे समानता के बारे में कहा। चूंकि उन्हें लगा कि मैं उन्हें नहीं जानती, इसलिए मैंने उन्हें ओपेरा वाली शाम की याद दिलाई, जब वे मुझसे बचने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने इतने ज़ोर से कहा कि उन्होंने मुझे वहाँ देखा तक नहीं था कि मैं उनकी बात मान ही लेती, अगर थोड़ी देर बाद एक छोटी सी घटना ने मुझे यह सोचने पर मजबूर न कर दिया होता कि एम. डी चार्लस, शायद अपने अत्यधिक अहंकार के कारण, मेरे साथ दिखना नहीं चाहते थे।

“चलिए, अब आपके विषय पर लौटते हैं,” उन्होंने कहा, “और आपके लिए मेरी योजनाओं पर। महोदय, कुछ लोगों के बीच एक फ्रीमेसनरी (धार्मिक संगठन) है जिसके बारे में मैं अभी इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता, सिवाय इसके कि इसमें यूरोप के चार शासक शामिल हैं। अब, इनमें से एक के दरबारी उसके इस भ्रम को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। यह बहुत गंभीर मामला है, और इससे युद्ध छिड़ सकता है। जी हाँ, महोदय, यह सच है। आपको उस व्यक्ति की कहानी याद होगी जिसने यह मान लिया था कि उसने चीन की राजकुमारी को एक बोतल में बंद कर रखा है। यह एक प्रकार का पागलपन था। वह इससे ठीक हो गया, लेकिन जैसे ही उसका पागलपन दूर हुआ, वह मूर्ख बन गया। कुछ बीमारियाँ ऐसी होती हैं जिनका हमें इलाज नहीं करवाना चाहिए क्योंकि वे ही हमें अन्य गंभीर बीमारियों से बचाती हैं। मेरे एक चचेरे भाई को पेट की समस्या थी; वह कुछ भी पचा नहीं पाता था। पेट के सबसे विद्वान विशेषज्ञों ने उसका इलाज किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैं उसे एक डॉक्टर के पास ले गया (वैसे, वह भी एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति थे, जिनके बारे में मैं आपको बहुत कुछ बता सकता हूँ)। उन्होंने तुरंत अनुमान लगा लिया कि समस्या घबराहट के कारण है; उन्होंने अपने मैंने अपने मरीज़ को बेझिझक अपनी पसंद का कुछ भी खाने का आदेश दिया और उसे भरोसा दिलाया कि उसका पाचन तंत्र इसे सहन कर लेगा। लेकिन मेरे चचेरे भाई को गुर्दे की सूजन भी थी। पेट जो भोजन आसानी से पचा लेता है, गुर्दे कुछ समय बाद उसे बाहर निकालना बंद कर देते हैं। मेरे चचेरे भाई को पेट की एक काल्पनिक बीमारी के साथ अच्छी उम्र जीने के बजाय, जिसके कारण उसे आहार का पालन करना पड़ता था, चालीस वर्ष की आयु में पेट ठीक होने के बावजूद गुर्दे खराब हो जाने के साथ ही उसकी मृत्यु हो गई। अपनी उम्र के लोगों की तुलना में आपको बहुत अधिक लाभ मिलता है, तो शायद आप वही बन जाएँ जो अतीत का कोई प्रख्यात व्यक्ति बन सकता था, यदि किसी अच्छे देवदूत ने उसे, ऐसे लोगों के बीच जो भाप और बिजली के बारे में कुछ नहीं जानते थे, इन रहस्यों का खुलासा कर दिया होता। मूर्ख मत बनो, विवेक से मुंह मत मोड़ो। समझ लो कि यदि मैं तुम्हारी कोई बड़ी सेवा करता हूँ, तो मैं तुमसे भी उतना ही बड़ा प्रतिफल चाहता हूँ। समाज के लोगों में मेरी रुचि समाप्त हुए अब कई वर्ष हो गए हैं। मेरे पास अब केवल एक ही इच्छा बची है, अपने जीवन की गलतियों को सुधारने के लिए, अपने ज्ञान का लाभ उस आत्मा को देना जो अभी भी पवित्र है

और सद्गुणों से प्रेरित होने में सक्षम है। महोदय, मुझे बहुत दुख झेलने पड़े हैं, जिनके बारे में शायद मैं आपको कभी बता सकूँ; मैंने अपनी पत्नी को खो दिया है, जो सबसे प्यारी, सबसे नेक और सबसे परिपूर्ण इंसान थीं, जिसकी कल्पना भी कोई कर सकता है। मेरे कुछ युवा रिश्तेदार हैं जो—मैं यह नहीं कह रहा कि योग्य हैं, बल्कि वे उस नैतिक विरासत को स्वीकार करने में सक्षम नहीं हैं जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ। जहाँ तक मुझे पता है, शायद आप ही वह व्यक्ति हों जिनके हाथों में यह विरासत जानी है, जिनके जीवन को मैं दिशा दे सकूँ और उन्हें इतने ऊँचे मुकाम तक पहुँचा सकूँ। इससे मुझे भी लाभ होगा। शायद आपको कूटनीति के महान रहस्य सिखाते हुए, मुझे स्वयं भी उनमें रुचि जागृत हो जाए, और अंततः मैं भी कुछ ऐसे काम करने लगूँ जिनमें आपकी भी बराबर हिस्सेदारी हो। लेकिन इससे पहले कि मैं आपको बता सकूँ, मुझे आपसे अक्सर, बहुत अक्सर, हर दिन मिलना होगा।

मैं श्री डी चार्लस की इस अप्रत्याशित कृपा का लाभ उठाकर उनसे यह पूछने की सोच ही रहा था कि क्या वे मेरी उनकी भाभी से मुलाकात करवा सकते हैं, तभी अचानक मुझे लगा जैसे किसी ने बिजली का झटका दिया हो और मेरा हाथ ज़ोर से झटका खा गया। श्री डी चार्लस ने जल्दी से अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़ा लिया था। हालाँकि वे बात करते-करते इधर-उधर देख रहे थे, लेकिन उनकी नज़र श्री डी आर्गेनकोर्ट पर पड़ी, जो एक गली से हमारी ओर आ रहे थे। हमें देखकर श्री डी आर्गेनकोर्ट चिंतित दिखे, उन्होंने मुझे अविश्वास भरी नज़रों से देखा, लगभग वैसी ही नज़रें जो किसी दूसरे देश के प्राणी के लिए होती हैं, जैसी श्रीमती डी गुएरमांटेस ने ब्लोच से पूछी थीं, और हमसे बचने की कोशिश की। लेकिन ऐसा लग रहा था मानो श्री डी चार्लस उन्हें यह दिखाना चाहते थे कि उन्हें उनसे नज़रें न मिलने की ज़रा भी चिंता नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन्हें आवाज़ दी, बस कुछ मामूली बात बताने के लिए। शायद इस डर से कि एम. डी'आर्गेनकोर्ट ने मुझे पहचाना नहीं होगा, एम. डी चार्लस ने उन्हें बताया कि मैं श्रीमती डी विलेपारिसिस, डचेस डी गुएरमांटेस और रॉबर्ट डी सेंट-लूप का घनिष्ठ मित्र हूँ, और स्वयं चार्लस मेरी दादी का पुराना मित्र है, और उनके पोते को उनके प्रति अपने स्नेह का थोड़ा सा अंश दिखाने में प्रसन्न है। फिर भी मैंने देखा कि एम. डी'आर्गेनकोर्ट, यद्यपि श्रीमती डी विलेपारिसिस के यहाँ उनसे मेरी अभी-अभी मुलाकात हुई थी, और एम. डी चार्लस ने मेरे परिवार के बारे में उनसे विस्तार से बात की थी, दोपहर की तुलना में मेरे प्रति स्पष्ट रूप से

अधिक ठंडे थे; और लंबे समय तक जब भी हम मिलते, वे वही अलगाव दिखाते रहे। अब वे मुझे ऐसी जिज्ञासा से देख रहे थे जिसमें मित्रता का कोई संकेत नहीं था, और ऐसा प्रतीत हुआ कि हमें विदा करते समय, एक क्षण की झिझक के बाद, उन्होंने मेरी ओर हाथ बढ़ाया जिसे उन्होंने तुरंत वापस खींच लिया, तो उन्हें अपनी सहज घृणा को भी दूर करना पड़ा।

“मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस है,” एम. डी चार्लस ने कहा। “वह अर्जेनकोर्ट नाम का आदमी, भले ही ऊँचे खानदान का हो, पर बदतमीज़, कूटनीति में पूरी तरह नाकाम, एक नामुमकिन पति, जो हमेशा किसी नाटक के पात्र की तरह औरतों के पीछे भागता रहता है, उन आदमियों में से एक है जो समझ तो नहीं पाते, पर जीवन की उन महान चीज़ों को बर्बाद करने में माहिर होते हैं। मुझे उम्मीद है कि अगर हमारी दोस्ती कभी बनेगी, तो वह भी उन्हीं महान चीज़ों में से एक होगी, और मुझे यह भी उम्मीद है कि आप मेरी तरह ही इसे उन गधों से बचाकर मेरा सम्मान करेंगे जो आलस्य, नासमझी या जानबूझकर की गई बुराई के कारण उन चीज़ों को रौंद देते हैं जो हमेशा के लिए बनी होनी चाहिए थीं। दुर्भाग्य से, ज़्यादातर आदमी इसी सांचे में ढले होते हैं जिनसे हम मिलते हैं।”

"ड्यूशेस डी गुएरमांटेस बहुत ही चतुर लगती हैं। आज दोपहर हम युद्ध की संभावना के बारे में बात कर रहे थे। ऐसा लगता है कि उन्हें इस विषय की विशेष रूप से अच्छी जानकारी है।"

"वह बिल्कुल भी ऐसी नहीं है," एम. डी चार्लस ने तीखे लहजे में जवाब दिया। "महिलाएं, और सच कहें तो अधिकांश पुरुष, मेरी कही हुई बात को बिल्कुल नहीं समझते। मेरी भाभी एक आकर्षक महिला हैं जो सोचती हैं कि हम अभी भी बाल्ज़ाक के उपन्यासों के ज़माने में जी रहे हैं, जब राजनीति में महिलाओं का प्रभाव था। उनके घर जाना इस समय आपके लिए केवल बुरा ही साबित हो सकता है, जैसा कि कहीं भी जाने पर होता है। यही एक बात मैं आपको बताने ही वाली थी कि उस मूर्ख ने मुझे बीच में ही रोक दिया। मेरे लिए आपको जो पहला त्याग करना होगा—मैं आपसे आपके प्रति अपने दिए गए उपहारों के अनुपात में ही त्याग मांगूंगी—वह है समाज में जाना छोड़ देना। आज दोपहर आपको उस बेवकूफी भरी चाय पार्टी में देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। आप मुझे याद दिला सकते हैं कि मैं भी वहाँ थी, लेकिन मेरे लिए वह कोई सामाजिक समारोह नहीं था, वह तो बस एक पारिवारिक मुलाकात थी। बाद में, जब आप अपनी स्थिति स्थापित कर लेंगे, अगर आपको इस तरह की चीजों में थोड़ा-बहुत शामिल

होना अच्छा लगे, तो शायद इससे कोई नुकसान न हो। और फिर, मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि मैं आपके लिए कितनी अनमोल हो सकती हूँ। 'ओपन'" गुएरमांटेस के घर और अन्य सभी घरों के दरवाजे आपके लिए खोलना उचित हो, इसका निर्णय मेरे ऊपर है। मैं ही निर्णायक रहूंगा और स्थिति पर अपना नियंत्रण बनाए रखने का इरादा रखता हूं।

मैंने सोचा कि मैं एम. डी चार्लस द्वारा श्रीमती डी विलेपारिसिस से मेरी मुलाकात के बारे में कही गई बात का फायदा उठाकर यह पता लगाने की कोशिश करूंगा कि समाज में उनकी वास्तव में क्या स्थिति थी, लेकिन प्रश्न ने मेरे होठों पर वह रूप ले लिया जो मैंने सोचा नहीं था, और मैंने उनसे इसके बजाय पूछ लिया कि विलेपारिसिस परिवार क्या था।

"यह तो बिलकुल ऐसा है जैसे आपने मुझसे पूछा हो कि 'नोबडी' परिवार कौन था," एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया। "मेरी चाची ने प्रेम के कारण एम. थिरियन से शादी की, जो बहुत धनी थे और जिनकी बहनों की भी आश्चर्यजनक रूप से अच्छी शादियों हुई थीं; और उस दिन से उन्होंने खुद को मार्क्विस डी विलेपारिसिस कहना शुरू कर दिया। इससे किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ, ज़्यादा से ज़्यादा उन्हें थोड़ा-बहुत, और वो भी बहुत थोड़ा! उनका कारण क्या था, मैं नहीं बता सकती; मुझे लगता है कि वे वास्तव में 'मोंसियर डी विलेपारिसिस' थे, एक सज्जन जो विलेपारिसिस में पैदा हुए थे, जैसा कि आप जानते हैं, यह पेरिस के बाहर एक छोटी सी जगह का नाम है। मेरी चाची ने परिवार में इस तरह के मार्क्विस पद को साबित करने की कोशिश की, वे चीजों को सही ढंग से व्यवस्थित करना चाहती थीं; मैं आपको इसका कारण नहीं बता सकती। जब कोई ऐसा नाम अपनाता है जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं है, तो बेहतर है कि वह नियमों का पालन न करे।"

श्रीमती डी विलेपारिसिस का मात्र श्रीमती थिरियन होना, उनके दल के मिश्रित स्वरूप को देखकर उनके प्रति मेरी धारणा में आई गिरावट को और भी पुख्ता कर गया। मुझे यह अनुचित लगा कि एक ऐसी महिला, जिसका पद और नाम हाल ही में मिला हो, शाही हस्तियों से अपने संबंधों के बल पर अपने समकालीनों को इस प्रकार प्रभावित कर सके और भविष्य में भी ऐसा ही प्रभाव डालने की संभावना रखे। अब जब वह फिर से वैसी ही बन गई थीं जैसा मैंने उन्हें अपने बचपन में समझा था - एक ऐसी शख्सियत जिसमें कोई अभिजात्यता नहीं थी - तो उनके आसपास जमा हुए ये प्रतिष्ठित रिश्तेदार उन्हें अजनबी ही लगने लगे। वह हम सभी

के लिए अब भी उतनी ही आकर्षक थीं। मैं कभी-कभार उनसे मिलने जाता था और वह मुझे समय-समय पर छोटे-छोटे उपहार भेजती थीं। लेकिन मुझे कभी यह आभास नहीं हुआ कि वह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से संबंधित थीं, और अगर मुझे इसके बारे में कोई जानकारी चाहिए होती, तो वह उन अंतिम लोगों में से एक होतीं जिनसे मैं संपर्क करता।

“फिलहाल,” एम. डी चार्लस ने आगे कहा, “समाज में जाने से तुम केवल अपनी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाओगे, अपनी बुद्धि और चरित्र को बिगाड़ोगे। साथ ही, अपने मित्रों का चुनाव करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। अगर तुम्हारे परिवार को कोई आपत्ति नहीं है तो रखैल रखो, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है, दरअसल मैं तो केवल सलाह ही दे सकता हूँ, तुम नौजवान बदमाश, नौजवान बदमाश जिसे जल्द ही दाढ़ी बनानी पड़ेगी,” उन्होंने मेरी ठुड्डी पर उंगलियां फेरते हुए मुझे प्रेरित किया। लेकिन तुम्हारे पुरुष मित्रों का चुनाव ज़्यादा महत्वपूर्ण है। दस में से आठ नौजवान छोटे बदमाश होते हैं, छोटे दुष्ट जो तुम्हें ऐसा नुकसान पहुँचा सकते हैं जिसकी भरपाई तुम कभी नहीं कर पाओगी। रुको, मेरा भतीजा सेंट-लूप तुम्हारे लिए मुश्किल समय में बिल्कुल ठीक साथी है। जहाँ तक तुम्हारे भविष्य की बात है, वह तुम्हारे किसी काम का नहीं है, लेकिन उसके लिए मैं काफ़ी हूँ। और सच कहूँ तो, जब तुम मुझसे ऊब जाओ, तो साथ घूमने-फिरने के लिए, मुझे उसमें कोई गंभीर कमी नज़र नहीं आती। वैसे भी, वह एक मर्द है, उन नपुंसक लोगों में से नहीं जो आजकल बहुत दिखते हैं, छोटे किराएदारों जैसे, और किसी भी पल अपने भोले-भाले शिकारों को फाँसी पर चढ़ा सकते हैं। मुझे इस बोलचाल के शब्द 'किराएदार' का मतलब नहीं पता था; जिसे भी इसका मतलब पता होता, वह भी उसके इस शब्द के इस्तेमाल से उतना ही हैरान होता जितना मैं। समाज में लोग हमेशा बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं, और जिन लोगों के खिलाफ कुछ बातें इशारों में कही जाती हैं, वे यह दिखाने में संकोच नहीं करते कि उन्हें उनका ज़िक्र करने से डर नहीं लगता। उनकी नज़र में यह उनकी बेगुनाही का सबूत है। लेकिन उन्होंने अपनी समझदारी खो दी है, वे यह समझने में असमर्थ हो गए हैं कि कब कोई मज़ाकिया बात बहुत तकनीकी, बहुत चौंकाने वाली हो जाएगी, और सादगी के बजाय भ्रष्टाचार का सबूत बन जाएगी। "वह बाकियों जैसा नहीं है; उसके तौर-तरीके अच्छे हैं; वह सचमुच गंभीर है।"

'गंभीर' विशेषण पर मुझे मुस्कुराए बिना नहीं रह सका, जिसे एम. डी. चार्लस ने जिस लहजे में बोला, उससे ऐसा लगा जैसे किसी छोटी दुकानदार लड़की के बारे में कहा जाए कि वह 'गंभीर' है, और उसमें 'सद्गुणी' या 'स्थिर' भाव समा गया हो। उसी क्षण एक टैक्सी सड़क पर टेढ़ी-मेढ़ी चलती हुई गुजरी; एक युवा टैक्सी ड्राइवर, जो अपनी गाड़ी छोड़कर अंदर बैठा था, टैक्सी चला रहा था, और गद्दों पर लेटा हुआ था, मानो आधा नशे में हो। एम. डी. चार्लस ने तुरंत उसे रोक दिया। ड्राइवर बहस करने लगा।

आप किस दिशा में जा रहे हैं?

"आपकी।" यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि एम. डी चार्लस पहले ही इसी तरह के रंग के लैंप वाली कई टैक्सियों को अस्वीकार कर चुके थे।

"अच्छा, मैं बॉक्स पर नहीं चढ़ना चाहता। क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर मैं यहीं नीचे रहूँ?"

"नहीं; लेकिन आपको अपना नकाब उतारना होगा। अच्छा, मेरे प्रस्ताव पर विचार कीजिए," एम. डी चार्लस ने मुझसे विदा लेते हुए कहा, "मैं आपको मेरे प्रस्ताव पर विचार करने के लिए कुछ दिन देता हूँ; मुझे लिखिएगा। मैं दोहराता हूँ, मुझे आपसे हर दिन मिलना होगा, और आपसे वफादारी और विवेक की गारंटी चाहिए, जो कि आप प्रदान करते हुए प्रतीत होते हैं। लेकिन अपने जीवन में मैं दिखावे के झांसे में इतनी बार आ चुका हूँ कि मैं उन पर दोबारा कभी भरोसा नहीं करना चाहता। धिक्कार है, कम से कम आप यह उम्मीद तो कर ही सकते हैं कि कोई खजाना सौंपने से पहले मुझे पता हो कि वह किसके हाथों में जाने वाला है। ठीक है, मेरी पेशकश को ध्यान में रखिएगा; आप हरक्यूलिस की तरह (हालाँकि, दुर्भाग्य से, मुझे नहीं लगता कि आपका शरीर उसके जितना विकसित है) दोराहे पर खड़े हैं। कोशिश कीजिए कि आपको जीवन भर इस बात का पछतावा न हो कि आपने सद्गुण का मार्ग नहीं चुना। नमस्कार!" उसने टैक्सी ड्राइवर की ओर मुड़कर कहा, "क्या तुमने गाड़ी का बोनट नीचे नहीं किया? मैं खुद कर लेता हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हारी हालत देखकर मुझे ही गाड़ी चलानी चाहिए।"

वह टैक्सी ड्राइवर के बगल में कूद गया, लगाम पकड़ी और घोड़ा सरपट दौड़ पड़ा।

चतुर्थ

जहां तक मेरी बात है, जैसे ही मैं अपने द्वार पर पहुंचा, मुझे उस दोपहर ब्लोच और एम. डी नॉरपोइस के बीच हुई बातचीत का ही एक और रूप मिल गया, संक्षिप्त, उलटा और क्रूर। यह विवाद हमारे बटलर, जो ड्रेफस में विश्वास करते थे, और गुएरमांटेस के बटलर, जो ड्रेफस विरोधी थे, के बीच था। प्रतिद्वंद्वी लीगों, पैट्री फ्रांसेज़ और ड्रोइट्स डी ल'होमे के बुद्धिजीवियों के बीच जो सत्य और प्रति-सत्य आपस में टकरा रहे थे, वे तेजी से जनमत की गहराई में उतर रहे थे। एम. रीनाच भावनाओं को भड़काकर उन लोगों को प्रभावित कर रहे थे जिन्हें उन्होंने कभी देखा भी नहीं था, जबकि स्वयं ड्रेफस का मामला उनके तर्क के सामने एक अकाट्य सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत हुआ, जिसे उन्होंने बाद में तर्कसंगत नीति की सबसे आश्चर्यजनक जीत (कुछ लोगों के अनुसार फ्रांस के खिलाफ जीत) से सिद्ध कर दिया, जो दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी थी। दो वर्षों में उन्होंने बिलोट की जगह क्लेमेंसो को मंत्री बनाया, जनमत को पूरी तरह से बदल दिया, पिक्कार्ट को जेल से निकालकर युद्ध मंत्रालय में नियुक्त किया, जबकि वह कृतघ्न था। शायद भीड़ को नियंत्रित करने वाला यह तर्कवादी स्वयं अपने पूर्वजों की कठपुतली था। जब हम पाते हैं कि दर्शनशास्त्र की जिन प्रणालियों में सबसे अधिक सत्य समाहित हैं, वे अंततः भावनाओं के कारण ही अपने लेखकों को निर्देशित की गई थीं, तो हम यह कैसे मान सकते हैं कि ड्रेफस मामले जैसे राजनीति के एक साधारण मामले में, इस प्रकार के कारण, तर्क करने वाले की जानकारी के बिना, उसके तर्क को नियंत्रित नहीं कर सकते थे? ब्लोच का मानना था कि एक तार्किक क्रम ने उन्हें ड्रेफसवाद चुनने के लिए प्रेरित किया, फिर भी वे जानते थे कि उनकी नाक, त्वचा और बाल उनकी जाति द्वारा उन पर थोपे गए थे। निःसंदेह तर्क को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है; फिर भी यह कुछ ऐसे नियमों का पालन करता है जिन्हें उसने स्वयं निर्धारित नहीं किया है। गुएरमांटेस के बटलर और हमारा मामला अनोखा था। ड्रेफसवाद और ड्रेफस-विरोधी विचारधाराओं की दो धाराओं की लहरें, जिन्होंने अब फ्रांस को एक छोर से दूसरे छोर तक विभाजित कर दिया था, कुल मिलाकर शांत थीं, लेकिन कभी-कभार जो प्रतिध्वनियाँ सुनाई देती थीं, वे सच्ची होती थीं। जब आप किसी को जानबूझकर मामले से दूर रखी जा रही बातचीत के बीच में दबे स्वर में कोई राजनीतिक समाचार सुनाते

हुए सुनते, जो आमतौर पर झूठा होता था, लेकिन हमेशा उसकी सच्चाई की उम्मीद के साथ, तो आप उसकी भविष्यवाणियों की प्रकृति से उसके मन की बात समझ सकते थे। इस प्रकार कुछ बिंदुओं पर टकराव उत्पन्न हुआ, एक ओर दबी हुई धर्म प्रचार की भावना, दूसरी ओर न्यायपूर्ण आक्रोश। अंदर आते ही मैंने जिन दो बटलर को बहस करते सुना, वे इस नियम के अपवाद थे। हमारे बटलर का मानना था कि ड्रेफस दोषी थे, जबकि गुएरमांटेस के बटलर का मानना था कि वे निर्दोष थे। यह उनके व्यक्तिगत विश्वासों को छिपाने के लिए नहीं, बल्कि चालाकी और उनकी तीव्र प्रतिद्वंद्विता के कारण किया गया था। हमारे बटलर को इस बात का यकीन नहीं था कि दोबारा मुकदमा चलाया जाएगा या नहीं, इसलिए उसने पहले ही यह इच्छा ज़ाहिर कर दी थी कि अगर मुकदमा विफल होता है, तो ड्यूक के बटलर को न्यायपूर्ण मामले की जीत की खुशी से वंचित कर दिया जाए। ड्यूक के बटलर को लगा कि अगर मुकदमा नहीं चलाया गया, तो हमारा बटलर एक निर्दोष व्यक्ति को शैतान के द्वीप पर कैद किए जाने से ज़्यादा नाराज़ होगा। पोर्टर यह सब देखता रहा। मुझे ऐसा लगा कि गुएरमांटे परिवार में कलह का कारण वह नहीं था।

मैं ऊपर गया और पाया कि मेरी दादी की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। कुछ समय से, बिना ठीक-ठीक जाने कि क्या हुआ था, वे अपनी सेहत को लेकर शिकायत कर रही थीं। बीमारी के क्षणों में ही हमें यह एहसास होता है कि हम अकेले नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे प्राणी से बंधे हुए हैं जो हमसे बिल्कुल अलग है, जिसे हमारे बारे में कोई जानकारी नहीं है और जिसके सामने हम अपनी बात नहीं रख सकते: हमारा शरीर। मान लीजिए कि रास्ते में हमें कोई डाकू मिल जाए; हम शायद अपनी दुर्दशा का हवाला देकर उसे मना लें, भले ही उसकी निजी भलाई का हवाला देकर न मना पाएं। लेकिन अपने शरीर से दया की भीख मांगना किसी ऑक्टोपस के सामने भाषण देने जैसा है, जिसके लिए हमारे शब्दों का कोई अर्थ नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे लहरों की आवाज़ का, और जिसके साथ रहने के लिए हम विवश हैं। मेरी दादी के दौरे अक्सर ठीक हो जाते थे – उनका ध्यान हमेशा हम पर ही रहता था, इसलिए उन्हें इसका पता भी नहीं चलता था। जब दर्द बहुत ज़्यादा होता था, तो उसे ठीक करने की उम्मीद में, वे व्यर्थ ही यह समझने की कोशिश करती थीं कि आखिर परेशानी क्या है। यदि वे विकृत घटनाएँ, जिनका रंगमंच उनका शरीर था, उनकी समझ से परे और अस्पष्ट रहीं, तो भी वे उन्हीं के समान

प्राकृतिक जगत के कुछ प्राणियों के लिए स्पष्ट और बोधगम्य थीं। ये वे प्राणी हैं जिनकी सहायता से मानव मन धीरे-धीरे शरीर की वाणी को समझने का प्रयास करता है, ठीक वैसे ही जैसे जब कोई विदेशी हमसे मिलता है तो हम उसके देश के किसी व्यक्ति को दुभाषिया बनाने की कोशिश करते हैं। ये प्राणी हमारे शरीर से संवाद कर सकते हैं और बता सकते हैं कि उसका क्रोध गंभीर है या शीघ्र ही शांत हो जाएगा। कॉटार्ड, जिन्हें हमने मेरी दादी को देखने के लिए बुलाया था, और जिन्होंने हमें यह बताते ही कि वह बीमार हैं, एक रूखी मुस्कान के साथ यह पूछकर क्रोधित कर दिया था: "बीमार? आपको यकीन है कि यह कोई कूटनीतिक बीमारी नहीं है?" उन्होंने अपनी मरीज़ की बेचैनी को शांत करने के लिए उसे दूध पिलाने की कोशिश की। लेकिन लगातार दूध के कटोरे पिलाने से भी उन्हें कोई राहत नहीं मिली, क्योंकि मेरी दादी उसमें खूब सारा नमक डालती थीं (जिसके विषाक्त प्रभाव, विडाल द्वारा खोजे जाने से पहले, अज्ञात थे)। क्योंकि चिकित्सा विज्ञान चिकित्सकों की क्रमिक और परस्पर विरोधी गलतियों का संकलन है, इसलिए जब हम उनमें से सबसे बुद्धिमान को भी सहायता के लिए बुलाते हैं, तो संभावना यही है कि हम किसी ऐसे वैज्ञानिक सत्य पर भरोसा कर रहे हों जिसकी त्रुटि कुछ वर्षों में ही सिद्ध हो जाएगी। अतः चिकित्सा विज्ञान पर विश्वास करना घोर मूर्खता होगी, बल्कि उस पर विश्वास न करना उससे भी बड़ी मूर्खता होगी, क्योंकि समय के साथ-साथ इन त्रुटियों के ढेर से अनेक सत्य उभर कर आए हैं। कॉटार्ड ने हमें उनका तापमान लेने को कहा था। एक थर्मामीटर लाया गया। लगभग पूरी लंबाई में वह पारे से रहित था। नली के निचले भाग में, उसके छोटे से कक्ष में, चांदी के रंग की सैलामैंडर मछली मुश्किल से दिखाई दे रही थी। वह मृत प्रतीत हो रही थी। कांच की छड़ मेरी दादी के मुंह में डाल दी गई। हमें उसे वहां ज्यादा देर तक रखने की जरूरत नहीं थी; उस नन्ही जादूगरनी ने अपना राशिफल बनाने में देर नहीं की थी। हमने उसे टावर के आधे रास्ते पर स्थिर पाया। वह हिलने से इनकार कर रही थी और हमें वही आंकड़ा दिखा रही थी जो हमने उससे पूछा था - एक ऐसा आंकड़ा जिसे मेरी दादी का दिमाग कितनी भी सावधानी से जांच कर ले, वह भी नहीं बता सकता था: 101 डिग्री। पहली बार हमें कुछ चिंता हुई। हमने थर्मामीटर को अच्छी तरह हिलाया, ताकि वह अशुभ रेखा मिट जाए, मानो हम इस तरह मरीज का बुखार तराजू पर दिखाए गए आंकड़े के साथ-साथ कम कर सकें। अफसोस, यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वह नन्ही

भविष्यवक्ता, चाहे कितनी भी नासमझ क्यों न हो, ने मनमाने ढंग से फैसला नहीं सुनाया था, क्योंकि अगले दिन, मेरी दादी के होठों के बीच थर्मामीटर रखा ही हुआ था कि मानो एक ही झटके में, अपनी निश्चितता और उस तथ्य के अंतर्ज्ञान पर गर्व करते हुए, जो हमारे लिए अगोचर था, वह नन्ही भविष्यवक्ता उसी बिंदु पर अटल होकर रुक गई और अपनी चमकती छड़ी की नोक से एक बार फिर उस संख्या 101 की ओर इशारा किया। उसने हमें और कुछ नहीं बताया; हम चाहे कितनी भी इच्छा करें, खोजें, प्रार्थना करें, व्यर्थ ही वह हमारी विनतियों के प्रति अनसुनी रही; ऐसा लगा मानो यह उसका अंतिम कथन हो, एक चेतावनी और एक धमकी। फिर, उनकी प्रतिक्रिया में बदलाव लाने के प्रयास में, हमने उसी श्रेणी के एक अन्य, लेकिन अधिक शक्तिशाली पदार्थ का सहारा लिया, जो शरीर से प्रश्न पूछने तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसे नियंत्रित भी कर सकता था। यह आधुनिक एस्पिरिन के समान ही ज्वरनाशक था, जो उस समय प्रचलन में नहीं था। हमने थर्मामीटर को 99.5 से नीचे नहीं गिराया था और आशा की थी कि तापमान इससे ऊपर नहीं जाएगा। हमने दादी को यह दवा निगलवाई और फिर थर्मामीटर उनके मुंह में वापस रख दिया। ठीक उसी तरह जैसे किसी कठोर रक्षक को उच्च अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित अनुमति पत्र दिखाया जाए, जिसकी सुरक्षा का सहारा लिया गया हो, और वह अनुमति पत्र सही पाए जाने पर उत्तर दे: "बहुत अच्छा; मुझे कुछ नहीं कहना; अगर ऐसा है तो आप जा सकते हैं," इस बार मीनार में बैठा रक्षक टस से मस नहीं हुआ। लेकिन उदास भाव से वह मानो कह रही हो: "इससे तुम्हें क्या फायदा होगा? चूंकि तुम कुनैन की दोस्त हो, वह मुझे ऊपर न जाने का आदेश दे सकती है, एक बार, दस बार, बीस बार। और फिर वह मुझे यह कहते-कहते थक जाएगी, 'मैं उसे जानती हूँ; अपने साथ रहो।' यह हमेशा नहीं चलेगा। और तब तुम्हारी हालत बहुत बेहतर हो जाएगी।" तभी मेरी दादी ने अपने भीतर एक ऐसे प्राणी की उपस्थिति महसूस की जो मानव शरीर को उनसे भी बेहतर जानता था, पृथ्वी से विलुप्त हो चुकी जातियों के समकालीन की उपस्थिति, पृथ्वी के पहले निवासी की उपस्थिति—जो सोचने-समझने वाले मनुष्य के सृजन से बहुत पहले का था —उन्होंने उस शाश्वत सहयोगी को महसूस किया जो उनके सिर, हृदय, कोहनी में, थोड़ा कठोर होकर भी, उनकी कमजोरियों का पता लगा रहा था, और प्रागैतिहासिक युद्ध के लिए सब कुछ व्यवस्थित कर रहा था जो तुरंत शुरू होने वाला था। पल भर में, कुचले हुए अजगर

की तरह बुखार, उस शक्तिशाली रासायनिक पदार्थ से पराजित हो गया, जिसके लिए मेरी दादी, समस्त जीव-जंतुओं और वनस्पतियों से परे जाकर, ईश्वर का धन्यवाद करना चाहती थीं। सदियों के धुंध में छिपी उस झलक से वे भावुक हो उठीं, जो उन्हें पौधों की उत्पत्ति से भी पहले के वातावरण की याद दिलाती थी। इसी बीच, थर्मामीटर, मानो किसी प्राचीन देवता द्वारा क्षण भर के लिए पराजित हुई कोई विचित्र देवी हो, अपनी चांदी की धुरी को स्थिर रखे रहा। अफसोस! मनुष्य ने जिन अन्य निम्न प्राणियों को उस रहस्यमय शिकार का पीछा करने के लिए प्रशिक्षित किया है, जिसे वह अपने भीतर के पथहीन जंगल में नहीं खोज सकता, वे हमें प्रतिदिन बेरहमी से एक निश्चित मात्रा में पित्ती की सूचना देते थे, जो अधिक तो नहीं थी, लेकिन इतनी नियमित थी कि ऐसा प्रतीत होता था मानो वह किसी ऐसी स्थायी बीमारी से संबंधित हो जिसे हम पहचान नहीं पा रहे थे। बर्गोट ने मेरे उस संशयवादी स्वभाव को झकझोर दिया था, जिसने मुझे अपनी बुद्धि को गौण मानने पर मजबूर कर दिया था, जब उन्होंने डॉ. डू बोल्बन के बारे में इस तरह बात की कि वे मुझे कभी ऊबेंगे नहीं, वे उपचार के ऐसे तरीके खोजेंगे जो चाहे कितने भी विचित्र क्यों न लगें, मेरे विलक्षण मन के अनुकूल होंगे। लेकिन विचार हमारे भीतर रूपांतरित हो जाते हैं, वे उस प्रतिरोध को पार कर लेते हैं जिसके साथ हम उनका पहली बार सामना करते हैं, और उन समृद्ध बौद्धिक भंडारों से पोषण प्राप्त करते हैं जिनके लिए हम तैयार नहीं थे। इसलिए, जैसा कि अक्सर होता है जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कुछ सुनते हैं जिसे हम नहीं जानते, और वह हमारे भीतर महान प्रतिभा, एक प्रकार की विलक्षण प्रतिभा का विचार जगाता है, मेरे अंतर्मन में मैंने डॉ. डू बोल्बन को उस असीम विश्वास का लाभ दिया जो वे हममें जगाते हैं, जो दूसरों की तुलना में अधिक भेदक दृष्टि से सत्य को देखते हैं। मैं वास्तव में जानता था कि वे तंत्रिका संबंधी रोगों के विशेषज्ञ थे, वही व्यक्ति जिनके बारे में शार्कोट ने अपनी मृत्यु से पहले भविष्यवाणी की थी कि वे तंत्रिका विज्ञान और मनोचिकित्सा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेंगे। "आह! मुझे इसके बारे में पता नहीं। यह बिल्कुल संभव है," फ्रांस्वा ने कहा, जो कमरे में मौजूद थी और उसने चारकोट का नाम, डु बोलबोन के नाम की तरह, पहली बार सुना था। लेकिन इससे उसे "यह संभव है" कहने से कोई नहीं रोक पाया। ऐसे समय में उसके 'संभव', 'शायद' और 'मुझे नहीं पता' कहना अजीब तरह से परेशान करने वाला था। मन करता था उससे कहूँ: "स्वाभाविक रूप से तुम नहीं जानती,

क्योंकि तुम्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं, तुम यह कैसे कह सकती हो कि यह संभव है या नहीं; तुम्हें इसके बारे में कुछ भी नहीं पता। वैसे भी, अब तुम यह नहीं कह सकती कि तुम्हें नहीं पता कि चारकोट ने डु बोलबोन से क्या कहा था। तुम्हें पता है क्योंकि हमने अभी तुम्हें बताया है, और तुम्हारे 'शायद' और 'संभव' यहाँ मायने नहीं रखते, क्योंकि यह एक तथ्य है।"

मस्तिष्क और तंत्रिका संबंधी मामलों में उनकी विशेष दक्षता के बावजूद, जैसा कि मैं जानती थी कि डु बोलबोन एक महान चिकित्सक, एक श्रेष्ठ व्यक्ति और गहन एवं आविष्कारशील बुद्धि के धनी थे, मैंने अपनी माँ से उन्हें बुलवाने का आग्रह किया। यह आशा कि रोग का स्पष्ट निदान करके वे शायद इसे ठीक कर सकें, अंततः उस डर पर भारी पड़ी जो हमें (किसी विशेषज्ञ को बुलाने पर) मेरी दादी को घबरा देने का था। मेरी माँ का निर्णय इस तथ्य से हुआ कि कॉटार्ड द्वारा अनजाने में प्रोत्साहित होकर, मेरी दादी अब घर से बाहर नहीं निकलती थीं और मुश्किल से ही बिस्तर से उठती थीं। वे हमें श्रीमती डी सेविग्ने के श्रीमती डी ला फायेट पर लिखे पत्र के शब्दों में जवाब दे सकती थीं: "सब कहते थे कि बाहर न जाने की इच्छा रखना उनकी मूर्खता है। मैंने इन लोगों से, जो अपने निर्णय पर इतने अडिग थे, कहा: 'श्रीमती डी ला फायेट पागल नहीं हैं!' और मैं अपनी बात पर अड़ी रही। उनकी मृत्यु ने ही यह सिद्ध किया कि बाहर न जाना उनका बिल्कुल सही निर्णय था।" डु बोलबोन जब आए तो उन्होंने न बुलाने का फैसला किया—यदि श्रीमती डी ला फायेट को नहीं तो... डी सेविग्ने, जिनके बारे में हमने उन्हें कुछ नहीं बताया—कम से कम मेरी दादी के बारे में तो नहीं। उनकी छाती थपथपाने के बजाय, अपनी अद्भुत आँखों से उन पर टकटकी लगाए रखने के बजाय, जिनमें शायद यह भ्रम था कि वे अपनी मरीज़ का गहन परीक्षण कर रहे हैं, या उन्हें वह भ्रम देने की इच्छा थी, जो सहज प्रतीत होता था लेकिन यांत्रिक रूप से उत्पन्न किया गया था, या फिर उन्हें यह न दिखाने के लिए कि वे कुछ और ही सोच रहे हैं, या केवल उन पर अपना प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए, उन्होंने बर्गोट के बारे में बात करना शुरू कर दिया।

मुझे तो ऐसा ही लगता है, वाकई वो शानदार हैं, उनकी प्रशंसा करना आपका बिलकुल सही है। लेकिन उनकी कौन सी किताब आपको सबसे ज़्यादा पसंद है? वाकई! अच्छा, शायद वही

सबसे अच्छी हो। वैसे भी, उनके उपन्यासों में से वही सबसे बेहतरीन है। उसमें क्लेयर बेहद आकर्षक हैं; उनके पुरुष किरदारों में से आपको सबसे ज़्यादा कौन पसंद है?

पहले तो मुझे लगा कि वह मेरी दादी से साहित्य के बारे में इस तरह बात करवा रहे हैं क्योंकि उन्हें खुद चिकित्सा उबाऊ लगती है, शायद अपनी बुद्धिमत्ता दिखाने के लिए और शायद चिकित्सीय उद्देश्य से भी, ताकि वे अपनी मरीज़ का आत्मविश्वास बढ़ा सकें, उन्हें यह दिखा सकें कि वे चिंतित नहीं हैं, और उनका ध्यान उनकी सेहत की चिंता से हटा सकें। लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि एक विशिष्ट मनोचिकित्सक और मस्तिष्क पर अपने काम के कारण, वे इन सवालों के माध्यम से यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि मेरी दादी की याददाश्त ठीक है या नहीं। मानो अनिच्छा से ही सही, उन्होंने उनके अतीत के बारे में पूछताछ शुरू की, और उन पर गंभीर और शांत निगाहें गड़ा दीं। फिर अचानक, मानो सत्य को देख लिया हो और हर कीमत पर उसे पाने का निश्चय कर लिया हो, अपने हाथों को हल्के से रगड़ते हुए, जिन्हें पोंछने में उन्हें शायद कुछ कठिनाई हो रही थी, ताकि वे अपने मन में उठ रही अंतिम झिझक और हमारे द्वारा उठाए गए सभी आपत्तियों को मिटा सकें, मेरी दादी की ओर स्पष्ट दृष्टि से देखते हुए, साहसपूर्वक और मानो अंततः ठोस ज़मीन पर खड़े हो गए हों, शांत और प्रभावशाली स्वर में बोलते हुए, जिसके हर उतार-चढ़ाव में बुद्धिमत्ता झलक रही थी, उन्होंने बोलना शुरू किया। (वैसे, इस पूरी मुलाकात के दौरान उनकी आवाज़ स्वाभाविक रूप से स्नेहपूर्ण बनी रही। और उनकी घनी भौंहों के नीचे उनकी व्यंग्यात्मक आँखें करुणा से भरी थीं।)

"आप बिलकुल ठीक हो जाएंगी, महोदया, उस दिन—जब वह दिन आएगा, और यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है कि वह दिन आएगा या नहीं—जब आपको एहसास होगा कि आपमें कोई खराबी नहीं है, और आप अपना सामान्य जीवन फिर से शुरू कर देंगी। आपने मुझे बताया कि आप खाना नहीं खा रही हैं, बाहर नहीं जा रही हैं?"

"लेकिन, महोदय, मुझे बुखार है।"

उसने उसकी कलाई पर उंगली रखी।

"कम से कम अभी तो नहीं। वैसे भी, ये कैसा बहाना है! क्या आपको नहीं पता कि हम 102 डिग्री बुखार वाले तपेदिक रोगियों को खुली हवा में रखते हैं और उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा खाना खिलाते हैं?"
"लेकिन मेरे पास थोड़ा सा सफेद भाग भी है।"
"आपको इसके बारे में कुछ भी नहीं पता होना चाहिए। आपके पास वह है जिसे मैंने कभी-कभी 'मानसिक एल्ब्यूमिन' कहा है।" हम सभी को कभी न कभी, जब हम बीमार होते हैं, तो थोड़े-बहुत ऐसे लक्षण महसूस होते हैं जिन्हें हमारे डॉक्टर हमारा ध्यान दिलाकर स्थायी बनाने की पूरी कोशिश करते हैं। एक बीमारी जिसे डॉक्टर दवाओं से ठीक कर देते हैं (जैसा कि मुझे बताया गया है कि वे कभी-कभी सफल भी हो जाते हैं), उसी बीमारी को वे स्वस्थ लोगों में एक दर्जन से अधिक पैदा कर देते हैं, उन्हें उस रोगजनक एजेंट से संक्रमित करके जो दुनिया के सभी रोगाणुओं से हज़ार गुना अधिक घातक होता है - यह विचार कि व्यक्ति बीमार है। इस तरह का विश्वास, जो किसी भी स्वभाव पर विचलित करने वाला प्रभाव डालता है, न्यूरोटिक लोगों पर विशेष रूप से अधिक प्रभाव डालता है। उन्हें बताएँ कि उनके पीछे एक बंद खिड़की खुली है, वे छींकने लगेंगे; उन्हें विश्वास दिलाएँ कि आपने उनके सूप में मैग्नीशिया मिला दिया है, उन्हें पेट दर्द होने लगेगा; कि उनकी कॉफ़ी सामान्य से अधिक कड़क है, वे पूरी रात एक पल भी नहीं सोएँगे। क्या आपको लगता है, महोदया, कि मुझे आपकी आँखों में देखने, आपके बोलने के तरीके को सुनने, और अगर मैं कहूँ तो, आपकी बेटी और आपके पोते को देखने के अलावा और कुछ करने की ज़रूरत है, जो आप जैसा दिखता है? "क्या पता तुम्हें क्या हुआ था?" "अगर डॉक्टर इजाज़त दें तो तुम्हारी दादी शायद चैंप्स-एलिसीज़ के किसी शांत रास्ते पर, उस लॉरेल की झाड़ी के पास जाकर बैठ सकती हैं, जहाँ तुम बचपन में खेला करती थी," मेरी माँ ने मुझसे कहा, इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से डॉ. डू बोलबोन से सलाह लेते हुए, उनकी आवाज़ में एक संकोची विनम्रता का भाव आ गया, जो तब नहीं होता जब वह केवल मुझसे बात कर रही होतीं। डॉक्टर ने मेरी दादी की ओर रुख किया और, जाहिर तौर पर साहित्य और विज्ञान दोनों में पर्याप्त ज्ञान होने के कारण, उनसे इस प्रकार आग्रह किया: "महोदया, चैंप्स-एलिसी जाइए, उस लॉरेल के बगीचे में जाइए जो आपके पोते को बहुत प्रिय है। आपको लॉरेल स्वास्थ्यवर्धक लगेगा। यह शुद्ध करता है। अजगर अजगर का वध करने के

बाद, अपोलो ने अपने हाथ में लॉरेल की एक शाखा लेकर डेल्फी में प्रवेश किया था। उसने इस प्रकार विषैले राक्षस के घातक कीटाणुओं से स्वयं को बचाने का प्रयास किया था। इसलिए आप देख सकते हैं कि लॉरेल सबसे प्राचीन, सबसे पूजनीय और, मैं इसमें जोड़ना चाहूंगा - चिकित्सीय और रोगनिरोधक दोनों ही दृष्टि से सर्वोत्तम है - यह सबसे सुंदर एंटीसेप्टिक है।"
चूंकि डॉक्टरों को जो कुछ भी पता होता है, उसका एक बड़ा हिस्सा बीमारों से ही मिलता है, इसलिए वे आसानी से यह मान लेते हैं कि मरीजों द्वारा प्रदर्शित यह ज्ञान उन सभी में समान है, और वे किसी पिछले मरीज के पास सुनी हुई बात से उसे चौंका देने पर गर्व महसूस करते हैं। इसी तरह, एक पेरिसवासी की तरह, जो किसी किसान से बातचीत करते हुए, स्थानीय बोली का कोई शब्द अचानक बोलकर उसे आश्चर्यचकित करने की उम्मीद करता है, डॉ. डू बोलबोन ने मेरी दादी से मुस्कुराते हुए कहा: "शायद हवा वाली रात में आपको नींद आ जाएगी, जबकि सबसे तेज़ नींद की दवाइयाँ भी बेअसर होंगी।" "इसके विपरीत, महोदय, जब हवा चलती है तो मुझे बिल्कुल नींद नहीं आती।" लेकिन डॉक्टर संवेदनशील लोग होते हैं। "आह!" डू बोलबोन ने भौंहें सिकोड़ते हुए बुदबुदाया, मानो किसी ने उनके पैर के अंगूठे पर पैर रख दिया हो, या मानो तूफानी रातों में मेरी दादी का नींद न आना उनके लिए व्यक्तिगत अपमान हो। हालांकि, उनके मन में अपने बारे में कोई अनुचित विचार नहीं था, और चूंकि एक 'श्रेष्ठ' व्यक्ति होने के नाते, वे खुद को चिकित्सा पर किसी भी तरह का भरोसा न करने के लिए बाध्य महसूस करते थे, इसलिए उन्होंने जल्दी ही अपनी दार्शनिक शांति को पुनः प्राप्त कर लिया।
मेरी माँ ने बर्गोट के दोस्त से आश्वासन पाने की अपनी तीव्र इच्छा में, उनके फैसले के समर्थन में यह भी कहा कि मेरी दादी की एक चचेरी बहन, जो तंत्रिका संबंधी बीमारी से पीड़ित थी, सात साल तक कॉम्ब्रे में अपने बेडरूम में बंद रही, और सप्ताह में एक या दो बार से अधिक अपने बिस्तर से नहीं उठी।
"देखिए, महोदया, मुझे यह बात पता नहीं थी, फिर भी मैं आपको बता सकता था।"
"लेकिन, श्रीमान, मैं उससे बिल्कुल भी मिलती-जुलती नहीं हूँ; इसके विपरीत, मेरे डॉक्टर शिकायत करते हैं कि वे मुझे बिस्तर पर नहीं रोक पाते," मेरी दादी ने कहा, शायद इसलिए कि वे डॉक्टर के सिद्धांतों से थोड़ी नाराज़ थीं, या इसलिए कि वे उन पर उठाई जा सकने वाली

किसी भी आपत्ति को उनके सामने प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक थीं, इस उम्मीद में कि वे उनका खंडन करेंगे और उनके जाने के बाद, उनके उत्साहवर्धक निदान की सटीकता के बारे में उनके मन में कोई संदेह नहीं रहेगा।

"क्यों, ज़ाहिर है, महोदया, आप एक साथ उन्माद के सभी रूपों से ग्रसित नहीं हो सकतीं; आपमें अन्य प्रकार के उन्माद हैं, लेकिन यह विशेष प्रकार का नहीं। कल मैं न्यूरोस्थेनिक्स के एक केंद्र में गया था। बगीचे में, मैंने एक आदमी को एक आसन पर खड़ा देखा, बिल्कुल एक फकीर की तरह, उसकी गर्दन इस तरह झुकी हुई थी जो निश्चित रूप से बहुत असहज रही होगी। जब मैंने उससे पूछा कि वह वहाँ क्या कर रहा है, तो उसने बिना सिर घुमाए या एक भी मांसपेशी हिलाए उत्तर दिया: 'देखिए, डॉक्टर, मुझे गठिया की गंभीर समस्या है और मुझे बहुत जल्दी सर्दी लग जाती है; मैंने अभी-अभी बहुत व्यायाम किया है, और जब मुझे गर्मी लग रही थी, तो मूर्खता से मेरी गर्दन मेरे कपड़ों से छू रही थी। अगर मैं अब खुद को ठंडा होने देने से पहले अपनी गर्दन को कपड़ों से हटा लूँ, तो मुझे निश्चित रूप से गर्दन में अकड़न हो जाएगी, और शायद ब्रोंकाइटिस भी हो जाएगा।' जो वह वास्तव में कर भी देता। 'तुम न्यूरोस्थेनिया के एक बेहतरीन नमूने हो, बस यही हो तुम,' मैंने उससे कहा। और क्या तुम जानते हो कि उसने मुझे गलत साबित करने के लिए क्या तर्क दिया? वह यह था कि जहाँ उस जगह के बाकी सभी मरीज़ों को अपना वज़न नापने का इतना जुनून था कि वज़न मापने वाली मशीन पर ताला लगाना पड़ता था ताकि वे पूरा दिन उस पर न बिताएँ, वहीं उसे तो उस पर ज़बरदस्ती उठाना पड़ता था, क्योंकि उसे वज़न नापने की ज़रा भी परवाह नहीं थी। उसे इस बात पर गर्व था कि वह दूसरों के जुनून से ग्रसित नहीं था, और साथ ही यह भी सोचता था कि उसका भी अपना एक जुनून है, और यही उसे दूसरों से बचाता है। आपको इस तुलना से नाराज़ नहीं होना चाहिए, महोदया, क्योंकि जो व्यक्ति ठंड लगने के डर से अपनी गर्दन भी नहीं घुमा पाता था, वह हमारे समय का सबसे महान कवि है। वह बेचारा सनकी व्यक्ति मेरी जानकारी में सबसे ऊँचा बुद्धिजीवी है। न्यूरोटिक कहलाने को स्वीकार करो। तुम उस शानदार और दयनीय परिवार से संबंध रखती हो जो धरती का नमक है। हम सभी महानतम चीज़ें जानते हैं ये सब हमें मनोरोगी लोगों से ही मिले हैं। धर्मों की स्थापना और कला की महान कृतियों का सृजन उन्हीं ने किया है। दुनिया कभी इस बात से अवगत नहीं हो पाएगी कि वह

उनकी कितनी ऋणी है, और सबसे बढ़कर, उन्होंने अपने उपहारों को दुनिया को देने के लिए कितना कष्ट सहा है। हम मधुर संगीत, सुंदर चित्रों, हजारों उत्कृष्ट वस्तुओं का आनंद लेते हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि इन्हें बनाने वालों को कितनी कीमत चुकानी पड़ी - अनिद्रा, आँसू, रुक-रुक कर हँसी, चकत्ते, अस्थमा, मिर्गी, मृत्यु का भय जो इन सबसे भी बदतर है, और जिसे शायद आपने भी महसूस किया होगा, मैडम," उन्होंने मेरी दादी की ओर मुस्कुराते हुए कहा, "क्योंकि अब स्वीकार कीजिए, जब मैं कमरे में आया, तो आप बहुत आत्मविश्वास महसूस नहीं कर रही थीं। आपको लगा कि आप बीमार हैं; शायद बहुत गंभीर रूप से बीमार। ईश्वर ही जानता है कि वह कौन सी बीमारी थी जिसके लक्षण आपको महसूस हो रहे थे। और आप गलत नहीं थीं; लक्षण थे। मनोरोग में बीमारी का बहाना करने की अद्भुत क्षमता होती है। ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसकी वह हूबहू नकल न कर सके। यह अपच के कारण होने वाले दर्द, गर्भावस्था की बीमारियों की सजीव नकल तैयार कर देगा।" हृदय की अनियमित लय, तपेदिक के रोगी का तीव्र बुखार। यदि यह डॉक्टर को धोखा दे सकता है, तो यह रोगी को धोखा देने में कैसे विफल हो सकता है? नहीं, नहीं; आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं आपके कष्टों का मज़ाक उड़ा रहा हूँ। मैं उन्हें पूरी तरह समझे बिना उनका इलाज नहीं करूँगा। और, वे कहते हैं कि कोई भी स्वीकारोक्ति तब तक अच्छी नहीं होती जब तक वह पारस्परिक न हो। मैंने आपको बताया है कि तंत्रिका संबंधी परेशानी के बिना कोई महान कलाकार नहीं हो सकता। और तो और," उन्होंने गंभीरता से तर्जनी उंगली उठाते हुए कहा, "कोई महान वैज्ञानिक भी नहीं हो सकता। मैं इससे आगे बढ़कर कहूँगा कि जब तक वह स्वयं तंत्रिका संबंधी परेशानी से ग्रस्त न हो, वह, मैं यह नहीं कहूँगा कि एक अच्छा डॉक्टर है, लेकिन मैं यह ज़रूर कहूँगा कि वह तंत्रिका संबंधी परेशानियों का इलाज करने वाला सही डॉक्टर नहीं है। तंत्रिका रोग विज्ञान में, जो डॉक्टर बहुत अधिक मूर्खतापूर्ण बातें नहीं कहता, वह रोगी का आधा इलाज होता है, ठीक वैसे ही जैसे एक आलोचक एक कवि होता है जिसने कविता लिखना बंद कर दिया हो और एक पुलिसकर्मी एक चोर होता है जिसने वकालत छोड़ दी हो। मैं, महोदया, आपकी तरह, खुद को एल्ब्यूमिनुरिया से पीड़ित नहीं मानता, मैं मुझे खाने या ताजी हवा से उतना डर नहीं लगता जितना आपको लगता है, लेकिन मैं कम से कम बीस बार बिस्तर से उठकर यह देखे बिना सो नहीं पाती कि मेरा दरवाजा बंद है या नहीं। और जिस घर

में मुझे कल वह कवि मिला जो अपनी गर्दन हिला भी नहीं रहा था, मैं वहाँ एक कमरा लेने गई थी, क्योंकि—यह बात हम दोनों के बीच ही रहे—मैं अपनी छुट्टियाँ वहीं बिताती हूँ, जब दूसरों का इलाज करने की कोशिश में मैं खुद को थका देती हूँ और अपनी परेशानी बढ़ा लेती हूँ।
"लेकिन क्या आप चाहते हैं कि मैं इस तरह का इलाज कराऊं, श्रीमान?" मेरी दादी की आवाज डरी हुई सी निकली।
"यह ज़रूरी नहीं है, महोदया। आपके द्वारा बताए गए लक्षण मेरे कहने पर गायब हो जाएँगे। इसके अलावा, आपके साथ एक बहुत ही कुशल व्यक्ति हैं जिन्हें मैं अब से आपका चिकित्सक नियुक्त करता हूँ। आपकी समस्या यही है, आपकी नसों की अति सक्रियता। अगर मुझे इसका इलाज पता भी होता, तो भी मैं सावधानी बरतता। मुझे बस इसे नियंत्रित करना है। आपकी मेज पर मुझे बर्गोट की एक किताब दिख रही है। अगर आप अपनी न्यूरोसिस से ठीक हो जाएँगी, तो आपको इसकी परवाह नहीं रहेगी। खैर, मैं शायद इसे अपना कर्तव्य समझूँ कि इससे मिलने वाले आनंद के बदले आपको एक ऐसी तंत्रिका स्थिरता प्रदान करूँ जो आपको वे आनंद देने में पूरी तरह असमर्थ होगी। लेकिन वे आनंद स्वयं एक शक्तिशाली उपचार हैं, शायद सबसे शक्तिशाली। नहीं; मुझे आपकी तंत्रिका ऊर्जा के विरुद्ध कुछ नहीं कहना है। मैं बस इतना चाहता हूँ कि यह मेरी बात सुने; मैं आपको इसके भरोसे छोड़ता हूँ। इसे अपनी गति उलटनी होगी। जिस शक्ति का उपयोग यह अब आपको उठने से, पर्याप्त भोजन करने से रोकने के लिए कर रही है, उसे आपको खाने, पढ़ने, बाहर जाने और आराम करने में लगाएँ।" आपको हर संभव तरीके से विचलित कर रहा है। आपको मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि आप थकी हुई हैं। थकान एक पूर्वकल्पित विचार की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। इसके बारे में सोचना ही बंद कर दें। और अगर कभी आपको थोड़ी सी भी अस्वस्थता महसूस हो, जो किसी को भी हो सकती है, तो ऐसा लगेगा जैसे आपको कुछ हुआ ही नहीं, क्योंकि आपकी तंत्रिका ऊर्जा ने आपको वह प्रदान कर दिया है जिसे एम. डी टैलीरैंड ने एक अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति में 'काल्पनिक स्वास्थ्य' कहा है। देखिए, इसने आपको पहले ही ठीक करना शुरू कर दिया है, आप बिस्तर पर बैठी मेरी बातें सुन रही हैं और एक बार भी तकिए पर पीछे नहीं झुकी हैं; आपकी आंखें चमक रही हैं, आपका रंग निखर रहा है, मैं

आपसे आधे घंटे से घड़ी देखकर बात कर रहा हूं और आपने समय पर ध्यान ही नहीं दिया। अच्छा, महोदया, अब मैं आपको शुभ दिन की शुभकामनाएं देता हूं।

डॉ. डू बोलबोन को दरवाजे तक छोड़ने के बाद जब मैं उस कमरे में लौटी जहाँ मेरी माँ अकेली थीं, तो पिछले कुछ हफ्तों से मुझ पर छाया हुआ बोझ हल्का हो गया। मुझे लगा कि मेरी माँ खुशी से झूम उठेंगी और मेरी खुशी देखेंगी। मुझे उस पल की बेचैनी महसूस हो रही थी जब कोई व्यक्ति हमारे सामने भावनाओं से भर उठेगा, जो एक तरह से उस डर के रोमांच जैसा था जो तब होता है जब पता चलता है कि कोई अंदर आएगा और बंद दरवाजे से चौंका देगा। मैंने माँ से बात करने की कोशिश की, लेकिन मेरी आवाज़ लड़खड़ा गई, और फूट-फूट कर रोने लगी। मैं काफी देर तक उनके कंधे पर सिर रखकर रोती रही, अपने दुख को महसूस करती रही, स्वीकार करती रही, उसका आनंद लेती रही, क्योंकि अब मुझे पता था कि वह मेरे जीवन से चला गया है, जैसे हम अच्छे-अच्छे इरादे बनाकर खुद को बड़ा समझते हैं, जिन्हें परिस्थितियाँ हमें पूरा करने की अनुमति नहीं देतीं। फ्रांस्वा ने हमारी खुशी में शामिल होने से इनकार करके मुझे नाराज़ कर दिया। वह बहुत दुखी थी क्योंकि अभी-अभी प्रेम में डूबे नौकर और चुगली करने वाले चौकीदार के बीच एक भयानक झगड़ा हुआ था। अपनी अटूट दयालुता के चलते डचेस को खुद हस्तक्षेप करना पड़ा, घर में शांति बहाल करनी पड़ी और नौकर को माफ करना पड़ा। क्योंकि वह एक अच्छी मालकिन थी, और अगर वह चुगली न करती तो वह आदर्श 'जगह' होती।

पिछले कुछ दिनों में लोगों को मेरी दादी की बीमारी के बारे में पता चलने लगा था और वे उनके हालचाल पूछने लगे थे। सेंट-लूप ने मुझे लिखा था: "मैं आपकी प्यारी दादी की बीमारी का फायदा उठाकर आपको ऐसी बात नहीं कहना चाहता जो महज़ फटकार से कहीं ज़्यादा गंभीर है, और जिसका उनसे कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन अगर मैं आपसे शिष्टाचारवश भी कहूँ कि मैं आपके इस विश्वासघात को कभी नहीं भूलूँगा, या इस तरह के घिनौने धोखे के लिए कभी माफ़ी मिल सकती है, तो यह झूठ होगा।" लेकिन कुछ अन्य मित्रों ने, यह मानकर कि मेरी दादी गंभीर रूप से बीमार नहीं थीं (हो सकता है कि उन्हें पता भी न हो कि वह बीमार थीं), मुझे अगले दिन चैंप्स-एलिसी में मिलने के लिए कहा, और वहाँ से उनके साथ कुछ लोगों से मिलने जाने और अंत में ग्रामीण इलाके में रात्रिभोज करने का प्रस्ताव रखा, जिसका विचार

मुझे अच्छा लगा। अब मेरे पास इन दोनों सुखों को छोड़ने का कोई कारण नहीं था। जब मेरी दादी को बताया गया कि डॉ. डू बोल्बोन के आदेशों का पालन करने के लिए अब उनके लिए जितना संभव हो उतना बाहर जाना अनिवार्य है, तो उन्होंने तुरंत चैंप्स-एलिसी जाने का सुझाव दिया। मेरे लिए उन्हें वहाँ ले जाना आसान होगा; और जब वे पढ़ रही होंगी, तब मैं अपने दोस्तों से बाद में मिलने की जगह तय कर लूँगी; और अगर मैं जल्दी करूँ तो उनके साथ ट्रेन पकड़कर विले डी'एवरे जाने के लिए मेरे पास समय भी होगा। जब समय आया, तो मेरी दादी बाहर नहीं जाना चाहती थीं; वे थकी हुई महसूस कर रही थीं। लेकिन मेरी माँ, डू बोल्बोन के निर्देशों का पालन करते हुए, दृढ़ निश्चय के साथ अपनी बात मनवाने पर अड़ी रहीं। उन्हें यह सोचकर लगभग रोना आ गया था कि मेरी दादी फिर से अपनी उस मानसिक कमजोरी में पड़ जाएँगी, जिससे वे शायद कभी उबर न पाएँ। बाहर घूमने के लिए ऐसा सुहाना और गर्म दिन फिर कभी नहीं आएगा। जैसे-जैसे सूरज आकाश में आगे बढ़ता गया, उसने बालकनी की टूटी-फूटी मजबूती में जगह-जगह अपनी हल्की-सी मलमल बिखेर दी और पत्थर की चौखट को एक गर्म आवरण, एक अनिश्चित सुनहरे प्रभामंडल जैसा बना दिया। फ्रांस्वा को अपनी बेटी को संदेश भेजने का समय नहीं मिला था, इसलिए वह दोपहर के भोजन के तुरंत बाद चली गई। हालांकि, उसने बड़ी दयालुता से पहले जुपियन की दुकान पर जाने की सहमति दी, ताकि मेरी दादी के पहनने वाले लबादे में एक सिलाई करवा ली जाए। उसी क्षण अपनी सुबह की सैर से लौटकर मैं उसके साथ दुकान में गया। जुपियन ने फ्रांस्वा से पूछा, "क्या आपके छोटे मालिक आपको यहाँ लाए हैं? क्या आप उन्हें मुझसे मिलने ला रही हैं या कोई अच्छी हवा और भाग्य आप दोनों को यहाँ ले आया है?" अपनी अशिक्षा के बावजूद, जुपियन व्याकरण के नियमों का उतना ही सहजता से सम्मान करता था जितना कि एम. डी गुएरमांटेस, तमाम कोशिशों के बावजूद, उन्हें तोड़ता था। फ्रांस्वा के जाने और लबादा ठीक हो जाने के बाद, दादी के तैयार होने का समय हो गया था। उन्होंने हठपूर्वक माँ को अपने साथ कमरे में रहने देने से इनकार कर दिया था, और अकेले ही कपड़े पहनने में उन्हें बहुत समय लग गया। अब जबकि मैं जानती थी कि उनकी तबीयत ठीक है, फिर भी, रिश्तेदारों के प्रति हमारे मन में जो अजीब सी उदासीनता होती है, जिसके कारण हम उन्हें प्राथमिकता देते हैं, मुझे लगा कि उनका इतना समय लेना बहुत स्वार्थपूर्ण था। उन्हें पता था कि मुझे अपने दोस्तों से मिलने

जाना है और विले डी'एवरे में खाना खाना है, फिर भी उन्होंने मुझे देर करवा दी। अधीर होकर, मैं दो बार यह कहे जाने के बावजूद कि वह लगभग तैयार हैं, अंत में बिना उनका इंतजार किए ही नीचे चली गई। आखिरकार वह मेरे पास आ गई, मुझसे माफी मांगे बिना, जैसा कि वह आमतौर पर करती थी, मुझे इंतजार कराने के लिए। वह उस व्यक्ति की तरह लाल और परेशान थी जो जल्दबाजी में कहीं आ गया हो और अपना आधा सामान भूल गया हो। ठीक उसी समय जब मैं आधे खुले कांच के दरवाजे के पास पहुँच रहा था, जो जरा भी गर्म किए बिना, सड़क से तरल, धड़कती हुई, गुनगुनी हवा को अंदर आने दे रहा था (जैसे किसी जलाशय के नल खोल दिए गए हों) गलियारे की ठंडी दीवारों के बीच से।

"अरे, अगर तुम अपने दोस्तों से मिलने जा रही हो तो मुझे दूसरा लबादा पहन लेना चाहिए था। इस लबादे में तो मैं बिल्कुल कंगाल लग रही हूँ।"

उन्हें इतना लाल चेहरा देखकर मैं चौंक गई, और मुझे लगा कि देर होने की वजह से उन्हें जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने पड़े होंगे। जब हम चैंप्स-एलिसी में एवेन्यू गैब्रियल के अंत में टैक्सी से उतरे, तो मैंने अपनी दादी को बिना मुझसे कुछ कहे एक तरफ मुड़ते और हरे रंग की जाली वाले उस छोटे से पुराने मंडप की ओर जाते देखा, जिसके दरवाजे पर मैं कभी फ्रांस्वा का इंतजार करती थी। वही पार्क-कीपर जो तब वहाँ खड़ा था, फ्रांस्वा की 'मार्क्विस' से बात कर रहा था, जब मैं अपनी दादी के पीछे-पीछे, जो शायद बीमार महसूस कर रही थीं और उन्होंने अपना हाथ मुँह पर रखा हुआ था, बगीचों के बीच बने उस छोटे से देहाती थिएटर की सीढ़ियाँ चढ़ गई। प्रवेश द्वार पर, ठीक वैसे ही जैसे सर्कस के उन बूथों में होता है जहाँ अखाड़े के लिए सजे-धजे और आटे से लथपथ विदूषक दरवाजे पर खड़ा होकर सीटों के लिए खुद पैसे लेता है, ग्राहकों से रसीद लेते समय 'मार्क्विस' अभी भी अपनी जगह पर बैठी थी, उसका विशाल, असमान चेहरा खुरदुरे प्लास्टर से लिपटा हुआ था और उसके भूरे रंग के विग के ऊपर लाल फूलों और काली लेस से सजी छोटी सी टोपी थी। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसने मुझे पहचाना होगा। पार्क का रखवाला, हरियाली की रखवाली छोड़कर, जिसके रंग से उसकी वर्दी मेल खाने के लिए बनाई गई थी, उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठकर उससे बात कर रहा था।

"तो आप अभी भी यहीं हैं?" वह कह रहा था। "आप रिटायर होने के बारे में नहीं सोचते?"

"और मुझे रिटायर होने की क्या ज़रूरत है, महोदय? क्या आप कृपया मुझे बताएँगे कि मैं यहाँ से बेहतर कहाँ रहूँगी, जहाँ मैं अधिक आराम से और हर सुख-सुविधा के साथ रह सकूँगी? और फिर यह सब आना-जाना, बहुत सारी भागदौड़; मैं इसे अपना छोटा पेरिस कहती हूँ; मेरे ग्राहक मुझे हर चीज़ से अवगत रखते हैं। उदाहरण के लिए, उनमें से एक अभी पाँच मिनट पहले ही बाहर गया है; वह एक मजिस्ट्रेट है, सर्वोच्च पद पर। बहुत खूब, महोदय," वह जोश से चिल्लाई, मानो इस कथन की सत्यता को बलपूर्वक साबित करने के लिए तैयार हो, यदि नागरिक प्राधिकरण का प्रतिनिधि इसकी सत्यता पर कोई सवाल उठाए, "पिछले आठ वर्षों से, क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं, हर दिन, ठीक तीन बजे वह यहाँ आता है, हमेशा विनम्र, कभी एक शब्द भी ज़ोर से नहीं बोलता, कभी कोई गड़बड़ नहीं करता; और वह अपने कागज़ात पढ़ने और अपने छोटे-मोटे काम करने के लिए आधे घंटे या उससे अधिक समय तक रुकता है। एक दिन वह नहीं आया। मैंने उस समय ध्यान नहीं दिया, लेकिन उस शाम, सब अचानक मैंने मन ही मन कहा: 'अरे, वो सज्जन तो आज आए ही नहीं; शायद उनकी मृत्यु हो गई हो!' और इससे मुझे बहुत झटका लगा, क्योंकि ज़ाहिर है, जब लोग अच्छा व्यवहार करते हैं तो मुझे उनसे लगाव हो जाता है। इसलिए जब मैंने उन्हें अगले दिन फिर आते देखा तो मुझे बहुत खुशी हुई, और मैंने उनसे कहा: 'आशा है कल सब ठीक रहा होगा, महोदय?' फिर उन्होंने मुझे बताया कि उनकी पत्नी का निधन हो गया था, और बेचारे, एक के बाद एक कई बातों के कारण वे आ नहीं पाए थे। उनके चेहरे पर वही उदासी छाई हुई थी, जो पच्चीस साल की शादी के बाद बिछड़ने पर लोगों के चेहरे पर होती है, लेकिन फिर भी वे यहाँ वापस आकर खुश लग रहे थे। साफ दिख रहा था कि उनकी सारी आदतें बदल गई थीं। मैंने उन्हें घर जैसा महसूस कराने की पूरी कोशिश की। मैंने उनसे कहा: "आपको चीजों को भूलना नहीं चाहिए, महोदय। बस पहले की तरह यहाँ आते रहिए, इससे आपके दुख में थोड़ा सुकून मिलेगा।"

'मार्क्विस' ने अपना लहजा थोड़ा नरम कर लिया, क्योंकि उसने देखा था कि बागों और लॉन का रक्षक उसकी बात को संतुष्टिपूर्वक और बिना किसी विरोध के सुन रहा था, और अपनी म्यान में एक तलवार को सुरक्षित रखे हुए था जो किसी बागवानी उपकरण या किसी उद्यान-देवता के प्रतीक की तरह दिखती थी।

और इसके अलावा," उसने आगे कहा, "मैं अपने ग्राहकों को खुद चुनती हूँ, मैं हर किसी को अपने छोटे-छोटे कमरों में नहीं आने देती, जैसा कि मैं उन्हें कहती हूँ। और क्या मेरे सारे फूलों के साथ यह जगह किसी पार्लर जैसी नहीं दिखती? मेरे ग्राहक कितने मिलनसार हैं; कोई न कोई हमेशा मेरे लिए सुंदर बकाइन, चमेली या गुलाब का गुलदस्ता लेकर आता है; गुलाब मेरे पसंदीदा फूल हैं।"

यह सोचकर कि शायद वह महिला हमसे इसलिए नाराज़ थी क्योंकि हम कभी उसके बगीचे में बकाइन या सुंदर गुलाब नहीं लाते थे, मेरा चेहरा लाल हो गया। किसी तरह वहाँ से निकलने की उम्मीद में—या फिर किसी प्रतिकूल फैसले से बचने की उम्मीद में—मैं बाहर निकलने की ओर बढ़ा। लेकिन इस दुनिया में हमेशा ऐसा नहीं होता कि जो लोग हमें सुंदर गुलाब देते हैं, हम उन्हीं के प्रति सबसे ज़्यादा मित्रवत होते हैं, क्योंकि 'मार्क्विस' ने सोचा कि मैं ऊब गया हूँ, और मेरी ओर मुड़ गई।

"क्या आप नहीं चाहेंगे कि मैं आपके लिए एक छोटी सी जगह खोल दूं?"

और, मेरी गिरावट पर:

"नहीं? क्या आप सच में ऐसा नहीं करेंगी?" वह मुस्कुराते हुए बोली। "ठीक है, जैसी आपकी मर्ज़ी। आप ऐसा कर सकती हैं, लेकिन मुझे अच्छी तरह पता है कि अगर आप नहीं करना चाहतीं तो पैसे न देने से आप ऐसा नहीं करेंगी।"

ठीक उसी क्षण, फटेहाल कपड़ों में एक महिला उस जगह में दाखिल हुई, जो ठीक उसी ज़रूरत को महसूस कर रही थी जिसकी चर्चा हो रही थी। लेकिन वह 'मार्क्विस' की दुनिया से ताल्लुक नहीं रखती थी, क्योंकि मार्क्विस ने एक घमंडी की तरह उस पर जमकर हमला किया:

"मैडम, मेरा कोई भी काम रुका हुआ नहीं है।"

"क्या ये लंबे होंगे?" टोपी में लगे पीले फूलों के नीचे शर्म से लाल होती हुई बेचारी महिला ने पूछा।

"ठीक है, महोदया, अगर आप मेरी सलाह मानें तो कहीं और कोशिश कीजिए; देखिए, अभी भी ये दो सज्जन इंतज़ार कर रहे हैं, और मेरे पास केवल एक ही कोठरी है; बाकी खराब हैं।"

"वहाँ ज़्यादा पैसे नहीं हैं," उसने दूसरे के जाने के बाद समझाया। "यहाँ हमें इस तरह के लोग नहीं चाहिए; वे साफ़-सफ़ाई नहीं रखते, जगह का सम्मान नहीं करते, और अगले एक घंटे

तक आपको ही उनकी गंदगी साफ़ करनी पड़ेगी। मुझे उनके पैसे खोने का कोई अफ़सोस नहीं है।"

आखिरकार मेरी दादी बाहर आईं, और मुझे लगा कि शायद वो इतनी देर अंदर रहकर अपनी नादानी का प्रायश्चित किसी बड़े इनाम से नहीं करेंगी, इसलिए मैं वहाँ से हट गया, ताकि मुझे उस तिरस्कार का सामना न करना पड़े जो 'मार्क्विस' उन पर बरसाएगी, और धीरे-धीरे एक रास्ते पर चलने लगा, ताकि मेरी दादी को मुझे पकड़ने के लिए जल्दी न करनी पड़े; जैसा कि उन्होंने थोड़ी देर बाद किया। मुझे उम्मीद थी कि वो कहेंगी, "मुझे खेद है कि मैंने आपको इंतज़ार करवाया; मुझे उम्मीद है कि आप अपने दोस्तों के लिए समय पर पहुँच जाएँगी," लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, इतना कि थोड़ा आहत होकर, मैं पहले बोलने से हिचकिचा रहा था; जब तक कि मैंने ऊपर उनकी ओर नहीं देखा, तब तक मैंने गौर किया कि मेरे बगल में चलते हुए भी उन्होंने अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ रखा था। मुझे डर था कि कहीं उनके दिल में फिर से कोई तकलीफ न हो। मैंने उन्हें और ध्यान से देखा और उनकी चाल में एक अजीब सी बेढंगीपन देखकर मैं दंग रह गया। उनकी टोपी टेढ़ी थी, उनका लबादा दागदार था; उसके चेहरे पर उलझन और चिंता के भाव थे, उसका चेहरा लाल और थोड़ा अचंभित था, ठीक वैसे ही जैसे किसी व्यक्ति को अभी-अभी किसी गाड़ी ने टक्कर मार दी हो या किसी खाई से बाहर निकाला गया हो।

"दादी, मुझे लगा था कि आप बीमार हैं; अब आप कैसा महसूस कर रही हैं?" मैंने उनसे पूछा। शायद उसने सोचा होगा कि मुझे चिंतित किए बिना, बिना कोई जवाब दिए रहना उसके लिए असंभव होगा।

"मैंने चौकीदार के साथ उसकी पूरी बातचीत सुनी," उसने मुझे बताया। "क्या इससे ज़्यादा गुएरमांटे परिवार, या वर्दुरिन परिवार और उनके छोटे से समूह की खासियत कुछ और हो सकती थी? हे भगवान, उसने कितनी सुंदर भाषा का इस्तेमाल किया!" और उसने बड़े ही सधे अंदाज़ में अपनी खास मार्क्विज़, श्रीमती डी सेविग्ने का यह वाक्य दोहराया: "जब मैं उनकी बातें सुन रही थी, तो मुझे लगा जैसे वे मेरे लिए विदाई की खुशियाँ तैयार कर रहे हों।"

उन्होंने मुझसे जो भाषण दिया, वह कुछ ऐसा था जिसमें उन्होंने अपनी सारी आलोचनात्मक संवेदनशीलता, उद्धरणों के प्रति प्रेम और शास्त्रीय ग्रंथों की अपनी स्मृति को, स्वाभाविक रूप

से जितनी अच्छी तरह से याद किया होता, उससे भी कहीं अधिक अच्छी तरह से समाहित कर लिया था, मानो यह साबित करना चाहती हों कि उनमें ये सभी क्षमताएँ अभी भी बरकरार हैं। लेकिन मैंने उनकी कही हुई बातों को सुनने के बजाय केवल अनुमान लगाया, क्योंकि उनकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि वे अपने वाक्य बुदबुदा रही थीं और अपने दाँतों को इतनी ज़ोर से भींच रही थीं कि शायद उन्हें फिर से बीमार होने का डर था।

"चलो!" मैंने हल्के से कहा, ताकि ऐसा न लगे कि मैं उसकी बीमारी को बहुत गंभीरता से ले रहा हूँ, "चूँकि आपके दिल में तकलीफ है, तो क्या हम अब घर चलें? मैं बदहजमी से पीड़ित दादी को चैंप्स-एलिसी में घसीटना नहीं चाहता।"

"मैंने ये सुझाव देना सही नहीं समझा, क्योंकि तुम्हारे दोस्तों को ये पसंद नहीं आएगा," उसने जवाब दिया। "बेचारा लड़का! लेकिन अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो मुझे लगता है कि ऐसा करना ज़्यादा समझदारी भरा होगा।"

मुझे डर था कि कहीं वह उसके इन शब्दों को बोलने के अजीब तरीके को न देख ले।

"चलो!" मैंने उससे तीखे स्वर में कहा, "तुम्हें बात करते-करते थकने की ज़रूरत नहीं है; अगर तुम्हारा दिल खराब है, तो यह बेवकूफी है; घर पहुँचने तक इंतज़ार करो।"

उसने उदास मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा और मेरा हाथ थाम लिया। उसे एहसास हो गया था कि मुझसे वह बात छिपाने की कोई ज़रूरत नहीं थी जो मैंने तुरंत समझ ली थी, कि उसे हल्का सा स्ट्रोक आया था।

हम एवेन्यू गैब्रियल से होते हुए, टहलती भीड़ के बीच से वापस लौटे। मैंने अपनी दादी को एक सीट पर आराम करने के लिए छोड़ दिया और टैक्सी की तलाश में निकल गया। वह, जिनके बारे में मैं हमेशा अपने दिल में तब सोचता था जब मुझे किसी भी मामूली व्यक्ति के बारे में राय बनानी होती थी, अब मुझसे दूर हो गई थीं, बाहरी दुनिया का हिस्सा बन गई थीं, और किसी भी राहगीर से कहीं ज़्यादा, मुझे उनसे अपनी स्थिति के बारे में अपने विचार छुपाने, अपनी बेचैनी का एक शब्द भी न कहने के लिए बाध्य होना पड़ा। मैं किसी अजनबी से भी ज़्यादा भरोसे से उनसे इस बारे में बात नहीं कर सकता था। उन्होंने अचानक मुझे वे विचार, वे दुख लौटा दिए थे, जिन्हें मैंने अपने बचपन से हमेशा के लिए उनके हवाले कर दिया था। वह अभी मरी नहीं थीं। मैं पहले से ही अकेला था। और यहाँ तक कि वे संकेत भी जो उन्होंने गुएरमांटेस, श्रीमती...

डी सेविग्ने के बारे में हमारी बातचीत में, छोटे से परिवार के बारे में हुई बातें निरर्थक या अवसरहीन, काल्पनिक सी लगने लगीं, क्योंकि वे उस शून्यता से उत्पन्न हुई थीं जो संभवतः कल अस्तित्वहीन हो जाएगी, जिसके लिए उनका कोई अर्थ नहीं रह जाएगा, उस शून्यता से, जो उन्हें गर्भ धारण करने में असमर्थ है, जो मेरी दादी जल्द ही होंगी।

"जी महोदय, मुझे मना करना अच्छा नहीं लगता, लेकिन आपने अपॉइंटमेंट नहीं लिया है, आपका कोई समय तय नहीं है। इसके अलावा, आज मेरा मरीजों को देखने का समय नहीं है। आपके पास अपना डॉक्टर जरूर होगा। मैं उनके काम में दखल नहीं दे सकता, जब तक कि वे मुझे परामर्श के लिए न बुलाएं। यह पेशेवर शिष्टाचार का मामला है..."

जैसे ही मैं एक टैक्सी ड्राइवर को इशारा कर रहा था, मेरी नज़र प्रसिद्ध प्रोफेसर ई— पर पड़ी, जो मेरे पिता और दादा के लगभग मित्र थे, कम से कम उनसे परिचित तो थे ही, और एवेन्यू गैब्रियल में रहते थे। अचानक मुझे एक विचार आया और मैंने उन्हें उनके घर में प्रवेश करते ही रोक लिया, यह सोचकर कि शायद वही मेरी दादी को सलाह दे पाएंगे। लेकिन वे स्पष्ट रूप से जल्दी में थे और अपने पत्रों को मंगवाने के बाद, मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए बेचैन दिखे, इसलिए उनसे बात करने का मेरा एकमात्र मौका उनके साथ लिफ्ट में ऊपर जाना था, जिसके लिए उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं उन्हें खुद स्विच चलाने दूं, क्योंकि यह उनका एक जुनून था।

"लेकिन महोदय, मैं आपसे यहाँ मेरी दादी को देखने के लिए नहीं कह रही हूँ; मेरी बातों से आपको समझ आ जाएगा कि उनकी हालत आने लायक नहीं है; मैं बस इतना कह रही हूँ कि आप आधे घंटे में हमारे घर आएँ, जब मैं उन्हें घर ले आऊँगी।"

"आपके घर आना! सच में, महोदय, आप मुझसे ऐसी उम्मीद नहीं कर सकते। मैं वाणिज्य मंत्री के साथ भोजन कर रही हूँ। मुझे पहले एक अतिथि से मिलना है। मुझे तुरंत कपड़े बदलने होंगे, और ऊपर से मेरा कोट फट गया है और दूसरे कोट में मेरे गहनों के लिए बटनहोल नहीं हैं। आपसे निवेदन है, कृपया स्विच न छुएं। आपको लिफ्ट के काम करने का तरीका नहीं पता; सावधानी बरतना बहुत जरूरी है। बटनहोल बनवाने का मतलब है और देरी। खैर, चूंकि मैं आपके लोगों की मित्र हूँ, अगर आपकी दादी तुरंत यहाँ आ जाएं तो मैं उनसे मिल लूंगी।

लेकिन मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि मैं उन्हें ठीक पंद्रह मिनट का समय दे पाऊंगी, एक पल भी ज्यादा नहीं।"

मैं लिफ्ट से बाहर निकले बिना ही तुरंत चल पड़ा, जिसे प्रोफेसर ई— ने मुझे वापस नीचे ले जाने के लिए खुद ही चालू किया था, और ऐसा करते समय उन्होंने मेरी ओर संदेह भरी नजर से देखा।

हम बेशक कह सकते हैं कि मृत्यु का समय अनिश्चित है, लेकिन जब हम ऐसा कहते हैं तो हम उस समय को अपने लिए समय के एक अस्पष्ट और दूर के विस्तार में स्थित मानते हैं, हमें कभी यह ख्याल नहीं आता कि इसका उस दिन से कोई संबंध हो सकता है जो पहले ही शुरू हो चुका है, या यह संकेत दे सकता है कि मृत्यु—या उसका पहला आक्रमण और हम पर आंशिक कब्ज़ा, जिसके बाद वह हमें फिर कभी नहीं छोड़ेगी—इसी दोपहर घटित हो सकती है, अनिश्चित होने से बहुत दूर, इस दोपहर का हर घंटा पहले ही किसी न किसी काम में लगा दिया गया है। आप हर दिन ड्राइव पर जाने का निश्चय करते हैं ताकि एक महीने में आपको ताजी हवा का पूरा लाभ मिल सके; आप इस बात पर हिचकिचा रहे हैं कि कौन सा कोट लें, किस कैब ड्राइवर को बुलाएँ, आप कैब में हैं, पूरा दिन आपके सामने है, छोटा इसलिए क्योंकि आपको जल्दी घर लौटना है, क्योंकि एक दोस्त आपसे मिलने आ रहा है; आप आशा करते हैं कि कल भी मौसम इतना ही सुहावना होगा; और आपको ज़रा भी शक नहीं है कि मौत, जो एक अलग ही दुनिया में, घने अंधेरे में छिपी हुई, आपकी ओर बढ़ रही है, उसने ठीक इसी दिन को चुना है, कुछ ही मिनटों में, ठीक उसी समय जब गाड़ी चैंप्स-एलिसीज़ पहुँच जाएगी। शायद वे लोग जो आम तौर पर मौत की अजनबीपन से डरते हैं, उन्हें इस तरह की मौत में—मौत से इस तरह के पहले संपर्क में—कुछ तसल्ली मिलेगी, क्योंकि इस तरह मौत रोज़मर्रा की ज़िंदगी का एक जाना-पहचाना रूप धारण कर लेती है। इससे पहले एक अच्छा दोपहर का भोजन हुआ है, और वही सैर-सपाटा जो स्वस्थ लोग करते हैं। खुली गाड़ी में घर की यात्रा इसके पहले हमले पर एक और वार है; मेरी दादी बीमार थीं, फिर भी कई लोग गवाही दे सकते थे कि शाम छह बजे, जब हम चैंप्स-एलिसीज़ से घर आ रहे थे, तो उन्होंने उन्हें खुली गाड़ी में, सुहावने मौसम में गुज़रते हुए प्रणाम किया था। लेग्रैंडिन, प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड की ओर बढ़ते हुए, हमारी ओर देखकर अपनी टोपी उतारकर रुके और आश्चर्य भरे भाव से हमें

देखने लगे। मैं, जो उस समय तक जीवन से पूरी तरह विरक्त नहीं था, ने अपनी दादी से पूछा कि क्या उन्होंने उनके अभिवादन का जवाब दिया था, और उन्हें याद दिलाया कि लेग्रैंडिन को छोटी-छोटी बातों पर भी बुरा लग जाता था। मेरी दादी, मुझे शायद बहुत तुच्छ समझते हुए, अपना हाथ हवा में उठा दिया, मानो कह रही हों: "क्या फर्क पड़ता है? यह जरा भी महत्वपूर्ण नहीं है।"

हाँ, कोई कह सकता था कि कुछ मिनट पहले, जब मैं टैक्सी ढूंढ रहा था, मेरी दादी एवेन्यू गैब्रियल में एक सीट पर आराम कर रही थीं, और थोड़ी देर बाद वे एक खुली गाड़ी में वहाँ से गुज़र गईं। लेकिन क्या यह सचमुच सच होता? उदाहरण के लिए, एक सीट, भले ही वह संतुलन की कुछ स्थितियों के अधीन हो, एवेन्यू के किनारे अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन एक जीवित व्यक्ति को स्थिर रहने के लिए, चाहे वह सीट पर टिका हो या गाड़ी में, बलों के तनाव की आवश्यकता होती है जिसे हम आमतौर पर उसी तरह महसूस नहीं करते जैसे हम वायुमंडलीय दबाव को महसूस नहीं करते (क्योंकि इसकी क्रिया सार्वभौमिक है)। संभवतः यदि हमें खोखला कर दिया जाए और फिर हवा के दबाव को सहन करने के लिए छोड़ दिया जाए, तो हम अपने अस्तित्व के अंत से ठीक पहले उस भयानक भार को महसूस कर सकते हैं जिसे बेअसर करने के लिए हमारे शरीर में कुछ भी शेष नहीं बचेगा। इसी प्रकार जब हमारे भीतर बीमारी और मृत्यु का अथाह गड्ढा खुल जाता है और दुनिया और हमारा अपना शरीर जिस उथल-पुथल के साथ हम पर टूट पड़ते हैं, उसका सामना करने की हमारी कोई क्षमता नहीं रह जाती, तब अपनी मांसपेशियों के तनाव को भी सहन करना, उस कंपकंपी को सहना जो हमें अंदर तक जमा देती है, यहाँ तक कि खुद को उस स्थिति में स्थिर रखना जिसे हम सामान्यतः एक निर्जीव वस्तु की साधारण नकारात्मक स्थिति मानते हैं, यदि हम चाहते हैं कि हमारा सिर सीधा रहे और हमारी आँखें शांत रहें, तो इसके लिए जीवन शक्ति की खपत होती है और यह एक थका देने वाले संघर्ष का विषय बन जाता है।

और अगर लेग्रैंडिन ने उस विस्मय भरी नज़र से हमारी ओर देखा था, तो इसलिए कि उन्हें, और उस समय हमारे पास से गुज़र रहे अन्य लोगों को भी, ऐसा लग रहा था जैसे मेरी दादी उस टैक्सी में, जिसमें वे बैठी थीं, डूबती जा रही हों, मानो किसी खाई में गिर रही हों, तकियों

को बेताब होकर पकड़े हुए हों जो उनके शरीर को नीचे गिरने से मुश्किल से रोक पा रहे थे, उनके बाल बिखरे हुए थे, उनकी आँखें बेकाबू थीं, मानो उन छवियों का सामना करने में असमर्थ हों जिन्हें उनकी पुतली अब सहन करने में सक्षम नहीं थी। हालाँकि मैं अभी भी उनके पास था, उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी अज्ञात दुनिया में डूबी हुई हों, जहाँ उन्हें पहले ही चोटें लग चुकी थीं, जिनके निशान अभी भी उनके चेहरे पर थे जब मैंने कुछ मिनट पहले शैंप्स-एलिसी में उनकी ओर देखा था, उनकी टोपी, उनका चेहरा, उनका लबादा उस अदृश्य देवदूत के हाथों अस्त-व्यस्त पड़ा था जिससे वे जूझ रही थीं। तब से मैंने सोचा है कि स्ट्रोक का यह क्षण मेरी दादी के लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक नहीं रहा होगा, बल्कि शायद उन्होंने इसे बहुत पहले ही भांप लिया था, इसकी उम्मीद में जी रही थीं। स्वाभाविक रूप से, उसे पता नहीं था कि यह घातक क्षण कब आएगा, वह कभी निश्चित नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे उन प्रेमियों को नहीं होता जिन्हें इसी तरह का संदेह अपनी प्रेमिकाओं की वफादारी पर अनुचित आशाएँ और निराधार संदेह करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन ऐसा कम ही होता है कि ये गंभीर बीमारियाँ, जैसे कि अब अंततः उसे पूरी तरह से प्रभावित कर चुकी थीं, किसी बीमार व्यक्ति के भीतर लंबे समय तक निवास न करें, इससे पहले कि उसकी मृत्यु हो जाए, इस दौरान वे एक 'मिलनसार' पड़ोसी या किराएदार की तरह उससे परिचय कराने की जल्दी करती हैं। एक भयानक परिचय, इससे होने वाले कष्टों के कारण उतना नहीं, जितना कि जीवन पर लगाए गए निश्चित प्रतिबंध की विचित्र नवीनता के कारण। एक महिला खुद को मरते हुए देखती है, इन मामलों में मृत्यु के वास्तविक क्षण में नहीं, बल्कि महीनों, कभी-कभी वर्षों पहले, जब मृत्यु भयावह रूप से उसके भीतर निवास करने आ चुकी होती है। पीड़ित उस अजनबी से परिचित होती है जिसे वह अपने मस्तिष्क में आते-जाते सुनती है। यह सच है कि वह उसे दृष्टि से नहीं पहचानती, लेकिन उसके द्वारा नियमित रूप से की जाने वाली ध्वनियों से वह उसकी आदतों का अंदाजा लगा सकती है। क्या वह अपराधी है? एक सुबह, उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती। वह चला गया है। आह! काश, वह हमेशा के लिए चला जाता! शाम को वह लौट आया है। उसकी क्या योजनाएँ हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए, उसका विशेषज्ञ, एक प्रिय प्रेमिका की तरह, ऐसे बयान देता है जिन पर एक दिन तो विश्वास हो जाता है, दूसरे दिन वह उसे आश्वस्त नहीं कर पाती। या यूँ कहें कि डॉक्टर प्रेमिका की भूमिका नहीं, बल्कि उन

नौकरों की भूमिका निभा रहा है जिनसे पूछताछ की जा रही है। वे तो बस तीसरे पक्ष हैं। जिस व्यक्ति से हम जवाब पाने के लिए दबाव डालते हैं, जिस पर हमें धोखा देने का संदेह होता है, वह स्वयं जीवन है, और यद्यपि हम उसे पहले जैसा नहीं पाते, फिर भी हम उस पर विश्वास करते हैं या कम से कम उस दिन तक अनिश्चित बने रहते हैं जब वह अंततः हमें छोड़ जाती है। मैंने अपनी दादी को प्रोफ़ेसर ई—— की लिफ़्ट में चढ़ने में मदद की और थोड़ी देर बाद वे हमारे पास आए और हमें अपने परामर्श कक्ष में ले गए। लेकिन वहाँ, व्यस्त होने के बावजूद, उनका आडंबरपूर्ण व्यवहार बदल गया, आदत का ऐसा ही असर होता है; क्योंकि उनकी आदत अपने मरीज़ों के साथ दोस्ताना, यानी जीवंत व्यवहार करने की थी। चूंकि वे जानते थे कि मेरी दादी एक बड़ी पाठक थीं, और वे स्वयं भी थे, इसलिए उन्होंने पहले कुछ मिनट सुहावने गर्मी के मौसम के अनुकूल कविता के कुछ पसंदीदा अंश सुनाने में बिताए। उन्होंने दादी को एक आरामकुर्सी पर बिठाया था और खुद रोशनी की ओर पीठ करके बैठे थे ताकि उन्हें दादी अच्छी तरह से दिखाई दें। उनकी जाँच बहुत बारीकी से और गहन थी, यहाँ तक कि एक पल के लिए मुझे कमरे से बाहर भी जाना पड़ा। मेरे लौटने के बाद भी उन्होंने जाँच जारी रखी, फिर जब जाँच पूरी हो गई, तो पंद्रह मिनट लगभग समाप्त होने के बावजूद, वे मेरी दादी को कई उद्धरण दोहराते रहे। उन्होंने कुछ चुटकुले भी सुनाए, जो काफी हास्यपूर्ण थे, हालाँकि मैं उन्हें किसी और अवसर पर सुनना पसंद करता, लेकिन जिस मनोरंजक लहजे में उन्होंने उन्हें सुनाया, उससे मुझे पूरी तरह से तसल्ली मिली। तब मुझे याद आया कि सीनेट के अध्यक्ष एम. फॉलियर्स को कई साल पहले एक झूठा दौरा पड़ा था, और उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की हैरानी के बावजूद वे कुछ दिनों बाद अपने कर्तव्यों पर लौट आए थे और कहा जाता था कि उन्होंने गणतंत्र के राष्ट्रपति पद के लिए अपनी संभावित उत्तराधिकार की तैयारी शुरू कर दी थी। मेरी दादी के शीघ्र स्वस्थ होने पर मेरा विश्वास और भी पुख्ता हो गया क्योंकि जैसे ही मैं एम. फॉलियर्स के उदाहरण को याद कर रहा था, प्रोफेसर के एक चुटकुले के अंत में आई एक ज़ोरदार हंसी ने मुझे उस समानता पर विचार करने से विचलित कर दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी घड़ी निकाली, पाँच मिनट देर हो जाने पर नाराज़गी से अपनी भौंहें सिकोड़ीं, और हमें अलविदा कहते हुए अपना दूसरा कोट तुरंत लाने के लिए घंटी बजाई। मैंने तब तक

प्रतीक्षा की जब तक मेरी दादी कमरे से बाहर नहीं चली गईं, फिर मैंने दरवाजा बंद किया और उनसे सच बताने को कहा।

“बिल्कुल भी उम्मीद नहीं है,” उन्होंने मुझे बताया। “यह यूरेमिया की वजह से हुआ स्ट्रोक है। यूरेमिया अपने आप में जानलेवा नहीं होता, लेकिन यह मामला मुझे निराशाजनक लग रहा है। आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं गलत हूँ। खैर, आपके पास कॉटार्ड हैं, आप बेहतरीन हाथों में हैं। माफ़ कीजिए,” उनकी बात अधूरी रह गई क्योंकि एक नौकरानी उनका कोट हाथ में लिए कमरे में आई। “मैंने आपको बताया था, मैं वाणिज्य मंत्री के साथ भोजन कर रहा हूँ, और मुझे पहले एक व्यक्ति से मिलना है। आह! जीवन उतना आसान नहीं होता जितना आपकी उम्र में अक्सर लोग सोचते हैं।”

और उन्होंने कृपापूर्वक मुझे अपना हाथ बढ़ाया। मैंने अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया था, और एक नौकर हमें हॉल में ले जा रहा था तभी हमें गुस्से की एक तेज़ चीख सुनाई दी। नौकरानी सजावट के लिए बटनहोल काटना और सिलना भूल गई थी। इसमें और दस मिनट लगेंगे। प्रोफेसर का गुस्सा जारी रहा जबकि मैं सीढ़ियों पर खड़ी उस दादी को देख रही थी जिनके लिए अब कोई उम्मीद नहीं थी। हम सब सचमुच अकेले हैं। हम घर की ओर चल पड़े। सूरज डूब रहा था, उसकी रोशनी उस अंतहीन दीवार पर पड़ रही थी जिसके किनारे से हमारी टैक्सी को हमारे घर वाली गली तक पहुँचने से पहले गुज़रना था। डूबते सूरज की रोशनी में घोड़े और गाड़ी की परछाईं लाल रंग की पृष्ठभूमि पर काली पड़ रही थी, मानो पोम्पेई की टेराकोटा की किसी मूर्ति पर अंतिम संस्कार का रथ रखा हो। आखिरकार हम घर पहुँच गए। मैंने बीमार महिला को हॉल में सीढ़ियों के नीचे बिठाया और माँ को सूचना देने ऊपर गया। मैंने उन्हें बताया कि मेरी दादी चक्कर आने के बाद थोड़ी अस्वस्थ महसूस कर रही हैं और घर लौट आई हैं। जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, माँ का चेहरा निराशा से भर उठा, हालाँकि वह इतनी शांत थीं कि मुझे एहसास हुआ कि कई सालों से वह चुपचाप एक अनिश्चित लेकिन अंतिम दिन के लिए खुद को तैयार कर रही थीं। उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं पूछा; ऐसा लग रहा था कि जिस तरह द्वेष दूसरों के कष्टों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है, उसी तरह अपनी भक्ति में वह यह स्वीकार नहीं करना चाहती थीं कि उनकी माँ गंभीर रूप से बीमार हैं, खासकर ऐसी बीमारी से जो मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती है। माँ काँप उठीं,

उनकी आँखों से आँसू बहने लगे, वे तुरंत डॉक्टर को बुलाने के लिए दौड़ीं; लेकिन जब फ्रांस्वा ने पूछा कि कौन बीमार है, तो वे जवाब नहीं दे सकीं, उनकी आवाज़ गले में अटक गई। वे दौड़कर नीचे आईं और मैं उनके चेहरे से सिसकी को छुपाने की पूरी कोशिश कर रही थी। मेरी दादी नीचे हॉल में सोफे पर बैठी इंतज़ार कर रही थीं, लेकिन जैसे ही उन्होंने हमें आते सुना, उन्होंने खुद को संभाला, खड़ी हुईं और माँ को देखकर खुशी से हाथ हिलाया। मैंने उनके सिर को सफेद लेस के शॉल से आधा लपेट दिया था, और उनसे कहा था कि ऐसा इसलिए किया है ताकि सीढ़ियों पर उन्हें सर्दी न लग जाए। मुझे उम्मीद थी कि मेरी माँ उनके चेहरे के बदलाव, उनके मुँह के बिगड़े हुए रूप को नहीं देख पाएंगी; मेरी सावधानी बेकार साबित हुई; मेरी माँ दादी के पास गईं, उनका हाथ ऐसे चूमा मानो वह उनके ईश्वर का हाथ हो, उन्हें उठाया और अत्यंत सावधानी से लिफ्ट तक ले गईं। उन्हें डर था कि कहीं उनकी ज़रा सी भी हरकत से उन्हें चोट न पहुँच जाए। उनकी विनम्रता ऐसी थी मानो वे स्वयं को संसार की सबसे अनमोल वस्तु को छूने के योग्य न समझती हों, लेकिन उन्होंने एक पल भी अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाईं, न ही पीड़ित के चेहरे की ओर देखा। शायद ऐसा इसलिए था ताकि दादी इस विचार से दुखी न हों कि उन्हें देखकर उनकी बेटी घबरा सकती है। शायद उस गहरे दुख के डर से जिसका सामना करने की हिम्मत वे नहीं कर पा रही थीं। शायद आदर के कारण, क्योंकि उन्हें यह उचित नहीं लगा कि वे उन पूजनीय चेहरों पर किसी भी प्रकार की मानसिक कमजोरी को बिना अपवित्रता के देखें। शायद इसलिए ताकि वे ज्ञान और अच्छाई से परिपूर्ण दादी के सच्चे चेहरे की छवि को अपनी स्मृति में हमेशा के लिए संजो सकें। इस प्रकार वे दोनों साथ-साथ ऊपर गईं, दादी अपने शॉल से आधी ढकी हुई थीं, और माँ ने अपनी नज़रें फेर ली थीं।

इसी बीच एक ऐसी व्यक्ति भी थी जिसने मेरी दादी के बदले हुए चेहरे से जो कुछ भी समझा जा सकता था, उस पर अपनी नजरें कभी नहीं हटाईं, जिस पर उनकी बेटी देखने की हिम्मत नहीं करती थी, एक ऐसी व्यक्ति जिसने उन पर एक आश्चर्यपूर्ण, अविवेकी और अशुभ दृष्टि डाली: यह फ्रांकोइस थी। ऐसा नहीं था कि वह मेरी दादी से दिल से जुड़ी हुई नहीं थी (दरअसल, वह माँ की दिखाई गई बेरुखी से निराश और लगभग आहत थी, क्योंकि वह चाहती थी कि माँ अपनी माँ की बाहों में फूट-फूटकर रोए), लेकिन उसमें हमेशा चीजों के बुरे

पहलू को देखने की एक खास प्रवृत्ति थी। बचपन से ही उसमें दो ऐसी खासियतें थीं जो एक-दूसरे के विपरीत लगती थीं, लेकिन जब वे एक साथ आती थीं तो एक-दूसरे को मजबूत करती थीं: एक तो साधारण पृष्ठभूमि के लोगों में पाई जाने वाली संयम की कमी, जो किसी भी शारीरिक परिवर्तन को देखकर अपने अंदर पैदा होने वाले दर्द और डर को छिपाने की कोशिश नहीं करते, जिसे अनदेखा करना बेहतर होता। दूसरा, उस किसान की तरह असंवेदनशील और असभ्य व्यवहार, जो पहले ड्रैगनफ्लाई के पंख नोचती है और फिर मुर्गियों की गर्दन मरोड़ने लगती है, और उसमें वह लज्जा नहीं होती जो उसे पीड़ा सहते हुए शरीर को देखकर अपनी रुचि को छिपाने में मदद करती।

जब फ्रांस्वा की अचूक देखभाल के बदौलत मेरी दादी को बिस्तर पर लिटाया गया, तो उन्होंने पाया कि वे पहले से कहीं अधिक आसानी से बोल पा रही थीं। रक्त वाहिका में मामूली सी रुकावट या अवरोध, जिसके कारण यूरेमिया हुआ था, जाहिरा तौर पर बहुत मामूली था। और तुरंत ही वे माँ की इस कठिन घड़ी में उनका साथ देने के लिए उत्सुक हो गईं, ताकि वे उन सबसे दर्दनाक पलों में उनकी सहायता कर सकें जिनसे उन्हें अभी गुज़रना पड़ा था।

“अच्छा, मेरी बच्ची,” उसने मेरी माँ का हाथ अपने एक हाथ में लेते हुए और दूसरे हाथ को अपने होठों के सामने रखते हुए कहना शुरू किया, ताकि कुछ शब्द बोलने में उसे अभी भी आ रही थोड़ी सी कठिनाई को छिपा सके। “तो यही है तुम्हारी माँ के प्रति दया! ऐसा लगता है जैसे तुम बदहजमी को बहुत सुखद चीज़ समझती हो!”

फिर पहली बार मेरी माँ की आँखें मेरी दादी की आँखों में प्रेम से टकटकी लगाए देख रही थीं, मानो वह उनका बाकी चेहरा देखना ही न चाहती हों, और उन्होंने उन झूठे वादों की सूची गिनाना शुरू कर दिया, जिन्हें हम कसम तो खाते हैं लेकिन पूरा करने में असमर्थ होते हैं:

"मम्मी, आप जल्द ही पूरी तरह से ठीक हो जाएंगी, आपकी बेटी इसका ख्याल रखेगी।"

और अपने सारे प्रेम, अपनी माँ के ठीक होने के दृढ़ संकल्प को समेटे हुए, उस चुंबन में जिसे उन्होंने अपने हाथों में सौंप दिया था, और जिसे उन्होंने अपने मन और पूरे अस्तित्व से तब तक थामे रखा जब तक कि वह उनके होठों पर खिल नहीं गया, उन्होंने झुककर उसे विनम्रतापूर्वक, श्रद्धापूर्वक उस अनमोल माथे पर रख दिया। मेरी दादी ने बिस्तर की चादरों के एक तरह के जमाव की शिकायत की जो हर समय उनके बाएं पैर पर एक ही जगह इकट्ठा

होती रहती थी, और जिससे वे कभी खुद को मुक्त नहीं कर पाती थीं। लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं था कि इसका कारण वे स्वयं थीं (इसलिए वे दिन-प्रतिदिन फ्रांकोइस पर बिस्तर ठीक से न बिछाने का अनुचित आरोप लगाती थीं)। एक झटके से वे ऊन की उन लहराती चादरों के पूरे ढेर को उस तरफ फेंकती रहती थीं, जो वहाँ किसी खाड़ी की रेत की तरह जमा हो जाती थी जो ज्वार के लगातार जमाव से बहुत जल्द समुद्र तट में बदल जाती है (जब तक कि निवासी एक तटबंध न बना लें)।

मेरी माँ और मैं (जिनका झूठ फ्रांस्वा की तीक्ष्ण बुद्धि से हमारे बोलने से पहले ही उजागर हो गया था) यह मानने को भी तैयार नहीं थे कि मेरी दादी गंभीर रूप से बीमार थीं, मानो ऐसा स्वीकार करने से उनके दुश्मनों को खुशी मिल सकती थी (हालांकि उनके कोई दुश्मन नहीं थे) और यह मानना ज़्यादा प्यार भरा था कि उनकी हालत उतनी बुरी नहीं थी, संक्षेप में, उसी सहज भावना से प्रेरित होकर जिसने मुझे यह मानने पर मजबूर किया था कि एंड्री अल्बर्टीन के लिए इतना दुखी थी कि वास्तव में उससे प्यार नहीं करती थी। यही व्यक्तिगत घटनाएँ बड़े संकटों में सामूहिक रूप से दोहराई जाती हैं। युद्ध में, जो व्यक्ति अपने देश से प्यार नहीं करता, वह उसके खिलाफ कुछ नहीं कहता, बल्कि उसे हारा हुआ मानता है, उस पर दया करता है, हर चीज़ को सबसे बुरे रूप में देखता है।

फ्रांकोइस हमारे लिए अमूल्य थीं, क्योंकि उनमें बिना सोए सबसे कठिन काम करने की क्षमता थी। और अगर कई रातें बीमार कमरे में बिताने के बाद जब वह सोने चली जातीं और हमें उन्हें सोने के पंद्रह मिनट बाद बुलाना पड़ता, तो वह सबसे थकाने वाले कामों को भी इतनी आसानी से कर पातीं कि मानो वे दुनिया के सबसे सरल काम हों। उनका चेहरा नाराज़ होने के बजाय संतुष्टि और विनम्रता से चमक उठता था। केवल प्रार्थना या नाश्ते के समय ही, चाहे मेरी दादी अपनी मृत्यु की पीड़ा में ही क्यों न हों, फ्रांकोइस चुपचाप चली जातीं ताकि उन्हें देर न हो। वह न तो अपने युवा नौकर को अपनी जगह लेने देतीं और न ही ऐसा होने देतीं। यह सच था कि वह कॉम्ब्रे से हम सभी के प्रति कर्तव्य का एक अत्यंत उच्च विचार लेकर आई थीं; वह यह बर्दाश्त नहीं करतीं कि हमारा कोई भी नौकर हमें निराश करे। इस सिद्धांत ने उन्हें इतना महान, इतना अभिमानी और इतना कुशल प्रशिक्षक बना दिया था कि हमारे घर में कोई भी नौकर, चाहे वह कितना भी भ्रष्ट क्यों न हो, तुरंत अपने जीवन के प्रति दृष्टिकोण को इतना

शुद्ध कर लेता था कि वह कारीगरों से मिलने वाले सामान्य कामों को ठुकरा देता था और चाहे पहले वह कितना भी कम सहयोग करता हो, तुरंत मेरे हाथों से काम लेने के लिए दौड़ पड़ता था और मुझे छोटे से छोटा सामान उठाने से भी नहीं थकाता था। लेकिन कॉम्ब्रे में फ्रांस्वा ने एक आदत भी डाल ली थी - और उसे अपने साथ पेरिस ले आई थी - कि वह अपने काम में किसी भी तरह की सहायता बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। किसी को भी अपनी मदद के लिए आते देखना उसे जानलेवा अपमान जैसा लगता था, और नौकर हफ्तों तक घर में बिना उनकी सुबह की नमस्कार का जवाब दिए बैठे रहते थे, यहाँ तक कि बिना उन्हें अलविदा कहे या उनका कारण समझे ही अपनी छुट्टियों पर चले जाते थे, जिसका सीधा-सा कारण यह था कि उन्होंने किसी दिन उनकी तबीयत खराब होने पर उनके काम में हाथ बटाने की पेशकश की थी। और इस समय जब मेरी दादी इतनी बीमार थीं, तो फ्रांस्वा को अपने कर्तव्य विशेष रूप से अपने ही लग रहे थे। वह स्वयं, जो आधिकारिक पद पर थीं, इन उत्सवों के रीति-रिवाजों में अपनी भूमिका से पीछे नहीं हटना चाहती थीं। इसलिए, उनके युवा नौकर को, जिसे उन्होंने घर से निकाल दिया था, समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। नौकर की तरह मेरे डेस्क से नोट-पेपर लेकर संतुष्ट न होकर, उसने मेरी किताबों की अलमारी से कविता की पुस्तकें भी उधार लेना शुरू कर दिया। वह दिन का लगभग आधा समय उन्हें पढ़ता रहा, कवियों के प्रति श्रद्धा से, और साथ ही अपने शेष समय में अपने पैतृक गाँव में अपने मित्रों को लिखे पत्रों में उद्धरणों को शामिल करने के लिए। स्वाभाविक रूप से, उसे उम्मीद थी कि इससे उनके मित्र प्रभावित होंगे। लेकिन चूंकि उसके विचारों में कोई क्रम नहीं था, इसलिए उसने यह धारणा बना ली थी कि मेरी अलमारियों से बेतरतीब ढंग से चुनी गई ये कविताएँ सामान्य ज्ञान की बातें हैं, जिनका उल्लेख करना प्रथागत है। इतना ही नहीं, इन किसानों को लिखते समय, जिनकी अचंभित अवस्था को उन्होंने नजरअंदाज कर दिया, उन्होंने अपने स्वयं के विचारों को लामार्टिन की पंक्तियों से इस प्रकार मिलाया जैसे वे कह सकते थे, "जो अंत में हँसता है, वही सबसे देर तक हँसता है!" या केवल "आप कैसे हैं?"

मेरी दादी का दर्द कम करने के लिए उन्हें मॉर्फिन दी गई। दुर्भाग्य से, इससे उन्हें अन्य तरीकों से तो आराम मिला, लेकिन सफेदी की मात्रा बढ़ गई। हमने दादी के शरीर में डेरा डाले उस दुष्ट राक्षस पर जो वार किए, वे हमेशा निशाने से चूक जाते थे, और यह उन्हीं की बेचारी दादी

को, उनके बीच फंसे शरीर को, बिना कोई शिकायत किए, बस एक हल्की सी कराह के साथ, उन वारों को सहना पड़ता था। और हमने उन्हें जो दर्द दिया, उसकी भरपाई हम उन्हें कोई लाभ नहीं दे पाए। जिस क्रूर राक्षस को हम खत्म करना चाहते थे, उसे हम मुश्किल से छू पाए, और हमने बस उसे और भी क्रोधित कर दिया, और शायद उस पल को और करीब ला दिया जब वह अपनी अभागी कैदी को खा जाएगा। कुछ दिनों जब सफेदी का स्राव बहुत अधिक हो जाता था, तो कॉटार्ड कुछ हिचकिचाहट के बाद मॉर्फिन देना बंद कर देता था। इस साधारण से, तुच्छ से व्यक्ति में, उन कुछ क्षणों में जब वह विचार-विमर्श कर रहा था, जब उपचार के विभिन्न विकल्पों के सापेक्ष खतरे बारी-बारी से उसके मन में आ रहे थे, और अंत में वह किसी निर्णय पर पहुँच रहा था, ठीक उसी प्रकार की महानता थी जैसी किसी सेनापति में होती है, जो अपने जीवन के बाकी समय में साधारण होते हुए भी एक महान रणनीतिकार होता है, और संकट की घड़ी में, क्षण भर के चिंतन के बाद, सैन्य दृष्टि से सबसे बुद्धिमानीपूर्ण मार्ग का निर्णय लेता है और आदेश देता है: "पूर्व की ओर बढ़ो।" चिकित्सकीय दृष्टि से, यूरेमिया के इस हमले को रोकने की कितनी भी कम उम्मीद क्यों न हो, गुर्दों पर अधिक भार डालना उचित नहीं था। लेकिन दूसरी ओर, जब मेरी दादी को मॉर्फिन नहीं मिलती थी, तो उनका दर्द असहनीय हो जाता था; वह लगातार एक विशेष क्रिया करने का प्रयास करती थीं जिसे बिना कराह के करना उनके लिए कठिन होता था। काफी हद तक, पीड़ा एक प्रकार की आवश्यकता है जो शरीर को एक नई स्थिति से परिचित होने के लिए महसूस होती है, जो उसे बेचैन करती है, ताकि उसकी संवेदनशीलता उस स्थिति के अनुकूल हो सके। कुछ ऐसी असुविधाओं में दर्द का कारण स्पष्ट हो सकता है जो हर किसी के लिए नहीं होतीं। तीखे धुएँ से भरे कमरे में दो सख्त मिजाज आदमी आकर अपना काम करेंगे; तीसरा, जो ज़्यादा तनावग्रस्त है, लगातार बेचैनी से परेशान रहेगा। उसकी नाक उस गंध को लगातार सूंघती रहेगी जिसे, कहा जा सकता है, उसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन वह उसे और सटीक रूप से महसूस करके अपनी परेशान सूंघने की क्षमता से जोड़ने का प्रयास करता रहेगा। इसका एक परिणाम यह भी हो सकता है कि उसकी अत्यधिक चिंता उसे दांत दर्द की शिकायत करने से रोक देगी। जब मेरी दादी को दर्द होता था, तो उनके गुलाबी माथे पर पसीना टपकता था, जिससे उनके सफेद बाल चिपक जाते थे, और अगर उन्हें लगता था कि

हममें से कोई भी कमरे में नहीं है, तो वह चिल्ला उठती थीं: "ओह, यह कितना भयानक है!" लेकिन अगर उसकी नजर मेरी मां पर पड़ती, तो वह तुरंत अपने चेहरे से दर्द के हर निशान को मिटाने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा देती, या फिर एक वैकल्पिक रणनीति अपनाते हुए, वही शिकायतें दोहराती और उनके साथ ऐसे स्पष्टीकरण देती जिससे बाद में मेरी मां द्वारा सुनी गई बातों का अलग अर्थ निकलता।

"ओह! मेरे प्रिय, ऐसे खूबसूरत धूप वाले दिन में बिस्तर पर पड़े रहना कितना भयानक है जब बाहर ताज़ी हवा में जाने की इच्छा हो; मैं तुम्हारे आदेशों पर गुस्से से रो रही हूँ।"

लेकिन वह अपनी आंखों में दिख रही पीड़ा, माथे पर आए पसीने और अंगों के अचानक और तुरंत रुक जाने वाले कंपन से छुटकारा नहीं पा सकी।

"कुछ भी गलत नहीं है। मैं शिकायत इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मैं आराम से लेट नहीं पा रही हूँ। मुझे लग रहा है मेरे बाल बिखरे हुए हैं, मेरा दिल खराब है, मैं दीवार से टकरा गई।"

और मेरी माँ, पलंग के चरणों में, उस पीड़ाग्रस्त शरीर पर टकटकी लगाए बैठी थी, मानो अपनी दृष्टि से उस पीड़ा से तर माथे को, उस शरीर को जो अपने भीतर बुराई को छिपाए हुए था, भेदकर वह उस बुराई तक पहुँचने और उसे दूर ले जाने में सफल हो जाएगी, मेरी माँ ने कहा:

"नहीं, नहीं, प्यारी माँ, हम आपको इस तरह कष्ट नहीं सहने देंगे, हम कुछ ऐसा करेंगे जिससे यह कष्ट दूर हो जाए, बस एक पल के लिए धैर्य रखें; मुझे आपको एक चुंबन देने दीजिए, प्रिय - नहीं, आपको हिलना नहीं है।"

बिस्तर पर झुककर, घुटने मोड़कर, लगभग ज़मीन पर घुटने टेककर, मानो विनम्रता का अभ्यास करके वह अपने भावुक समर्पण को स्वीकार्य बनाने की बेहतर संभावना तलाश रही हो, उसने दादी की ओर अपना सारा जीवन ऐसे झुकाया जैसे उसका चेहरा किसी चितकबरी मिठाई की तरह समाहित हो, जिसे उसने दादी के ऊपर फैला दिया। उसका चेहरा इतने भावपूर्ण, इतने दुख भरे, इतने मधुर गड्ढों और सिलवटों से सजा था कि यह कहना मुश्किल था कि उन्हें किसी चुंबन, सिसकी या मुस्कान की छेनी से उकेरा गया था। दादी ने भी अपना चेहरा माँ की ओर उठाने की कोशिश की। उनका चेहरा इतना बदल गया था कि शायद अगर वह बाहर जाने की हिम्मत रखतीं, तो उन्हें केवल उनकी टोपी में लगे पंख से ही पहचाना जा

सकता था। उनके चेहरे के भाव, किसी मूर्तिकार के हाथों में मिट्टी की तरह, किसी ऐसे विशेष सांचे में ढलने के लिए खिंच रहे थे, जो उन्हें बाकी सब कुछ से विचलित कर रहा था, और जिसे हम पहचान नहीं पाए। यह ढलाई का काम अब लगभग पूरा हो चुका था, और अगर इस प्रक्रिया में दादी का चेहरा सिकुड़ गया था, तो साथ ही साथ वह सख्त भी हो गया था। उसकी सतह के नीचे फैली नसें संगमरमर की नहीं, बल्कि किसी खुरदुरे पत्थर की लग रही थीं। साँस लेने में हो रही तकलीफ़ के कारण वह बार-बार आगे की ओर झुकती और थकान से बार-बार तकिये पर गिरती, उसका चेहरा, थका हुआ, मुरझाया हुआ, बेहद भावपूर्ण, किसी आदिम, लगभग प्रागैतिहासिक नक्काशी में किसी मकबरे के क्रूर, लाल, बैंगनी, हताश रक्षक के चेहरे जैसा लग रहा था। लेकिन अभी काम पूरा नहीं हुआ था। आगे, उसे अपने प्रतिरोध पर काबू पाना था, और उस मकबरे में, जिसके प्रवेश द्वार की उसने इतनी पीड़ा से रक्षा की थी, उसे उस तनावपूर्ण संकुचन के साथ प्रवेश करना था।

एक बार ऐसा हुआ कि समझ नहीं आ रहा था कि किस संत से प्रार्थना करें। मेरी दादी को बहुत खांसी और छींक आ रही थी, तो हमने एक रिश्तेदार की सलाह मानी, जिसने हमें भरोसा दिलाया कि अगर हम डॉक्टर X को बुला लें, तो वो कुछ ही दिनों में सब ठीक कर देंगे। लोग अपने डॉक्टरों के बारे में ऐसी बातें कहते हैं और उनके दोस्त उन पर वैसे ही विश्वास कर लेते हैं जैसे फ्रांस्वा हमेशा अखबारों के विज्ञापनों पर विश्वास करती थी। डॉक्टर अपने साथ अपने दूसरे मरीजों की जुकाम और खांसी से भरा थैला लेकर आए, जैसे ईओलस की बोतल। मेरी दादी ने साफ मना कर दिया कि वे जांच नहीं करवाएंगे। और हमने डॉक्टर के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए, जिन्होंने बेवजह इतनी मेहनत की थी, उनकी बात मान ली और बारी-बारी से हमारी नाक की जांच करने को तैयार हो गए, हालांकि किसी में भी कोई समस्या नहीं थी। लेकिन उनके अनुसार, समस्या थी; सिरदर्द हो या पेट दर्द, दिल की बीमारी हो या मधुमेह, सब कुछ नाक की बीमारी थी जिसका गलत निदान किया गया था। हममें से हर एक से उन्होंने कहा: "मैं तुम्हारी नाक की छोटी सी पुतली को एक बार फिर देखना चाहता हूँ। ज़्यादा देर मत करो। मैं गर्म सुई से इसे जल्दी ही निकाल दूँगा।" हम तो ज़ाहिर तौर पर कुछ और ही सोच रहे थे। फिर भी हमने खुद से पूछा: "किसलिए निकालना?" संक्षेप में, हम सबकी नाक बीमार थी; उनकी गलती सिर्फ़ वर्तमान काल के प्रयोग में थी। क्योंकि अगले दिन तक उनकी जाँच और

अस्थायी इलाज का असर दिखने लगा था। हममें से हर किसी को जुकाम हो गया था। और जब सड़क पर उनकी मुलाक़ात मेरे पिता से हुई जो खाँसी से बेहाल थे, तो उन्हें यह सोचकर हँसी आई कि कोई अनपढ़ आम आदमी सोचेगा कि यह बीमारी उनके इलाज की वजह से हुई है। उन्होंने हमारी जाँच उस समय की थी जब हम पहले से ही बीमार थे।

मेरी दादी की बीमारी ने कई लोगों को अत्यधिक या कम सहानुभूति दिखाने का अवसर दिया, जिसने हमें उतना ही आश्चर्यचकित किया जितना कि संयोगवश उनमें से किसी एक ने हमें परिस्थितियों या मित्रता के ऐसे संबंध बताए जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। और घर पर लगातार पूछताछ करने आने वाले लोगों द्वारा दिखाई गई रुचि ने हमें उस बीमारी की गंभीरता का एहसास कराया, जिसे हम तब तक दादी के कमरे में प्राप्त अनगिनत पीड़ादायक अनुभवों से पूरी तरह अलग नहीं कर पाए थे। टेलीग्राम द्वारा बुलाए जाने पर भी उनकी बहनों ने कॉम्ब्रे छोड़ने से इनकार कर दिया। उन्हें वहाँ एक संगीतकार मिला था जो उन्हें उत्कृष्ट चैम्बर संगीत कार्यक्रम सुनाता था, जिन्हें सुनकर उन्हें लगा कि बीमार के बिस्तर के पास बैठने से बेहतर उन्हें चिंतन का स्रोत मिल सकता है, एक उदासी भरी अनुभूति जिसका स्वरूप कम से कम असामान्य था। श्रीमती सज़ेरत ने माँ को पत्र लिखा, लेकिन उस व्यक्ति के लहजे में जिसने सगाई के अचानक टूटने (जिसका कारण उनका ड्रेफसवाद था) से किसी को हमेशा के लिए खो दिया हो। दूसरी ओर, बर्गोट हर दिन आता था और मेरे साथ कई घंटे बिताता था। उनकी आदत थी कि वे नियमित रूप से कुछ समय के लिए एक ही घर में जाते थे, जहाँ उन्हें औपचारिकता निभाने की ज़रूरत नहीं होती थी। पहले वे इसलिए जाते थे ताकि बिना किसी रुकावट के बात कर सकें; अब वे इसलिए जाते थे ताकि वे बिना बोले, जितनी देर चाहें चुपचाप बैठ सकें। क्योंकि वे बहुत बीमार थे, कुछ लोगों का कहना था कि उन्हें एल्ब्यूमिन्यूरिया था, मेरी दादी की तरह। एक और मत के अनुसार, उन्हें ट्यूमर था। वे लगातार कमज़ोर होते जा रहे थे; सीढ़ियों पर चढ़ना उनके लिए मुश्किल था, और उतरना तो और भी मुश्किल। रेलिंग पकड़ने के बावजूद भी वे अक्सर लड़खड़ा जाते थे, और मुझे लगता है कि अगर उन्हें बाहर जाने की आदत, बाहर जाने की क्षमता खोने का डर न होता, तो वे घर पर ही रहते, वही 'छोटी दाढ़ी वाला आदमी' जिसे मैंने कुछ समय पहले इतना चुस्त-दुरुस्त देखा था। अब वे पूरी तरह से अंधे हो चुके थे और उनकी वाणी भी अक्सर बाधित होती थी।

लेकिन साथ ही, एक बिलकुल विपरीत प्रक्रिया से, उनके साहित्यिक कार्यों का वह संग्रह, जो उस समय केवल कुछ ही साहित्यकारों को ज्ञात था जब श्रीमती स्वान उनके इसे फैलाने के दबे-कुचले प्रयासों का समर्थन करती थीं, अब सबके सामने कद और शक्ति में इतना बढ़ गया था कि आम जनता के बीच उसका असाधारण प्रसार हो गया था। सामान्य नियम तो यही है कि लेखक अपनी मृत्यु के बाद ही प्रसिद्ध होता है। लेकिन अपने जीवनकाल में और मृत्यु की ओर धीमी गति से बढ़ते हुए, जब तक कि वह अभी तक उस मुकाम पर नहीं पहुंचे थे, तब इस लेखक ने अपने कार्यों को प्रसिद्धि की ओर बढ़ते हुए देखा। एक मृत लेखक कम से कम बिना किसी दबाव के प्रसिद्ध हो सकता है। उसके नाम की चमक उसकी कब्र पर लगे पत्थर से ही थम जाती है। शाश्वत नींद की खामोशी में उसे यश की पुकार नहीं सुननी पड़ती। लेकिन बर्गोट के लिए यह विरोधाभास अभी अधूरा था। वह अभी भी इतना जीवित था कि उस उथल-पुथल से प्रभावित हो सके। वह अब भी चल-फिर रहा था, हालांकि मुश्किल से, जबकि उसकी किताबें, उसके चारों ओर उछल-कूद कर रही थीं, उन बेटियों की तरह जिनसे कोई प्यार तो करता है लेकिन जिनकी उग्र युवावस्था और शोरगुल भरी खुशियाँ थका देती हैं, दिन-ब-दिन उसके बिस्तर के पास नए प्रशंसकों की भीड़ ला रही थीं।

अब उनका हमारे यहाँ आना-जाना मेरे लिए कई साल देर से शुरू हुआ, क्योंकि अब मेरे मन में उनके लिए पहले जैसी प्रशंसा नहीं रही थी। हालाँकि, यह उनकी ख्याति में वृद्धि के विपरीत नहीं है। किसी लेखक का काम पूरी तरह से समझा और सफल तभी हो पाता है जब किसी दूसरे, अभी तक गुमनाम लेखक का काम कुछ ऐसे लोगों के मन में अपनी जगह बना लेता है जिन्हें प्रसन्न करना मुश्किल होता है, और इस तरह एक पुराने लेखक की जगह एक नया पंथ स्थापित हो जाता है जिसका पालन लगभग बंद हो चुका होता है। बर्गोट की जिन किताबों को मैं बार-बार पढ़ता था, उनमें उनके वाक्य मेरी आँखों के सामने उतने ही स्पष्ट रूप से उभरते थे जितने मेरे अपने विचार, मेरे कमरे का फर्नीचर और सड़क पर गाड़ियाँ। सभी विवरण आसानी से दिखाई देते थे, शायद ठीक वैसे नहीं जैसे हमेशा से दिखाई देते थे, लेकिन कम से कम वैसे जैसे अब दिखाई देने लगे थे। लेकिन हाल ही में एक नए लेखक ने रचनाएँ प्रकाशित करना शुरू किया था, जिनमें चीजों के बीच के संबंध उन्हें जोड़ने वाले संबंधों से इतने अलग थे कि मैं उनकी लिखी हुई बातों को मुश्किल से ही समझ पाता था। उदाहरण के लिए, वह कहते

थे: "होज़ पाइपों ने सड़कों के उत्तम रखरखाव की प्रशंसा की" (और अब तक यह सरल था, मैं आसानी से उनके पीछे-पीछे उन सड़कों पर चल पड़ा) "जो ब्रिएंड और क्लाउडेल से हर पाँच मिनट में शुरू होती थीं।" उस बिंदु पर मैं समझना बंद कर देता था, क्योंकि मुझे किसी स्थान का नाम अपेक्षित था और इसके बजाय एक व्यक्ति का नाम दिया गया था। मुझे बस यही महसूस हुआ कि वाक्य गलत नहीं था, बल्कि मुझमें ही अंत तक पहुँचने के लिए आवश्यक शक्ति और क्षमता की कमी थी। मैं फिर से शुरू करता, जी-जान से उस शिखर तक पहुँचने का प्रयास करता जहाँ से मैं चीजों को उनके नए संबंधों में देख सकूँ। और हर बार, वाक्य के लगभग आधे हिस्से तक पहुँचने के बाद, मैं फिर से गिर जाता, जैसा कि बाद में, जब मैं सेना में भर्ती हुआ, तो 'ब्रिज-लैडर' नामक अभ्यास के मेरे प्रयासों में हुआ। फिर भी, मुझे उस नए लेखक के लिए वही प्रशंसा महसूस हुई जो एक अनाड़ी लड़का महसूस करता है जिसे जिम्नास्टिक में कभी कोई अंक नहीं मिलते, जब वह किसी अधिक फुर्तीले लड़के को देखता है। और तब से बर्गोट के प्रति मेरी प्रशंसा कम होने लगी, क्योंकि उनकी स्पष्टता मुझे अपर्याप्त लगने लगी थी। एक समय ऐसा भी था जब लोग फ्रोमेंटिन द्वारा चित्रित चित्रों में चीजों को आसानी से पहचान लेते थे, जबकि रेनॉयर द्वारा चित्रित चित्रों में उन्हें बिल्कुल भी नहीं पहचान पाते थे।

आजकल सुसंस्कृत और परिष्कृत लोग हमें बताते हैं कि रेनॉयर पिछली सदी के महान चित्रकारों में से एक हैं। लेकिन ऐसा कहते हुए वे समय के तत्व को भूल जाते हैं, और यह भी कि रेनॉयर को एक महान कलाकार के रूप में पहचान मिलने में काफी समय लगा, इस सदी के अंत तक। इस प्रकार मान्यता प्राप्त करने के लिए, मूल चित्रकार, मूल लेखक नेत्र विशेषज्ञों के समान मार्ग अपनाते हैं। वे अपने चित्रों या गद्य के माध्यम से जो उपचार हमें देते हैं, वह हमेशा हमें पसंद नहीं आता। जब यह उपचार समाप्त हो जाता है, तो चिकित्सक हमसे कहते हैं: "अब देखो!" और, आश्चर्य की बात है, हमारे आस-पास की दुनिया (जो एक बार में नहीं बनी, बल्कि हर बार एक नए कलाकार के जन्म के साथ नए सिरे से बनती है) हमें पुरानी दुनिया से बिल्कुल अलग, लेकिन एकदम स्पष्ट दिखाई देती है। महिलाएं सड़कों पर चलती हैं, पहले जैसी नहीं, क्योंकि वे रेनॉयर हैं, वही रेनॉयर जैसी महिलाएं जिन्हें हम लगातार महिलाओं के रूप में देखने से इनकार करते रहे हैं। गाड़ियाँ भी रेनॉयर की कृतियों जैसी हैं, पानी भी,

और आकाश भी: हमें जंगल में टहलने का मन करता है, जो हमें उस अलौकिक दुनिया की याद दिलाता है, जिसे पहली बार देखने पर वह जंगल के अलावा दुनिया की किसी भी चीज़ जैसा लग रहा था, जैसे कि अनगिनत रंगों से सजी कोई टेपेस्ट्री, जिसमें जंगल के लिए आवश्यक रंग तो गायब हों। यही है वह नया और नश्वर ब्रह्मांड जो अभी-अभी रचा गया है। यह तब तक कायम रहेगा जब तक कोई नया प्रतिभाशाली चित्रकार या लेखक अगली भूवैज्ञानिक आपदा को जन्म नहीं दे देता।

मेरे मन में बर्गोट की जगह लेने वाले इस लेखक ने मुझे अपनी असंगतता से नहीं, बल्कि उन नवीन विचारों से थका दिया - जो पूरी तरह से सुसंगत थे - जिन्हें समझने की मेरी बुद्धि अभ्यस्त नहीं थी। यह तथ्य कि मैं हमेशा एक ही बिंदु पर अपनी पकड़ ढीली कर देता था, मेरे द्वारा किए जाने वाले प्रयासों में एक समानता को दर्शाता था। इसके अलावा, जब हज़ार में से एक बार मैं लेखक के वाक्य के अंत तक पहुँचने में सफल हो जाता था, तो मुझे वहाँ हमेशा वही हास्य, सत्य और आकर्षण दिखाई देता था जो मुझे बहुत पहले बर्गोट को पढ़ते समय मिला था, बल्कि उससे भी अधिक आनंददायक। मैंने सोचा कि कुछ ही वर्ष हुए हैं जब बर्गोट ने स्वयं मेरे लिए दुनिया का ऐसा ही पुनर्निर्माण किया था, जैसा कि मैं अब उनके उत्तराधिकारी से उम्मीद कर रहा था। तब मुझे यह प्रश्न पूछना पड़ा कि क्या कला और विज्ञान के बीच, जो होमर के समय से अधिक उन्नत नहीं है, हम जो अंतर करते हैं, उसमें वास्तव में कोई सच्चाई है? शायद, इसके विपरीत, इस मामले में कला विज्ञान के समान ही थी। मुझे ऐसा लगता था कि हर नया लेखक अपने तत्काल पूर्ववर्ती से आगे बढ़ चुका है; और मुझे कैसे पता होता कि बीस साल बाद, जब मैं आज के नवागंतुक का बिना किसी तनाव या प्रयास के साथ चल पाऊंगा, तो कोई दूसरा लेखक प्रकट न हो जाए, जिसके आगमन पर उसे भी उसी अनिश्चित स्थिति में धकेल दिया जाएगा जिसमें उसके स्वयं के आगमन ने बर्गोट को धकेल दिया होता?

मैंने नए लेखक के बारे में बाद वाले से बात की। उसने मुझे उसके प्रति अरुचि तब दिखाई, जब उसने कहा कि उसकी कला भद्दी, सतही और खोखली है, बल्कि तब दिखाई जब उसने मुझे बताया कि उसने उसे देखा था और लगभग (समानता इतनी प्रबल थी) उसे ब्लोच समझ बैठा था। उस क्षण से मेरे मित्र के चेहरे की झलक छपे हुए पन्नों पर स्पष्ट हो गई, और मुझे उन्हें समझने के लिए आवश्यक प्रयास करने की कोई बाध्यता महसूस नहीं हुई। अगर बर्गोट ने

मेरे सामने उसकी निंदा की थी, तो मुझे लगता है कि यह आने वाली सफलता से ईर्ष्या के कारण कम और उसके काम से अज्ञानता के कारण अधिक थी। वह शायद ही कुछ पढ़ता था। उसके अधिकांश विचार बहुत पहले ही उसके मस्तिष्क से निकलकर उसकी किताबों में समा गए थे। वह दुबला-पतला हो गया था, मानो शल्यक्रिया द्वारा उसके शरीर से किताबें निकाल ली गई हों। अब जब उसने अपने लगभग सभी विचारों को एक स्वतंत्र अस्तित्व दे दिया था, तो उसकी प्रजनन प्रवृत्ति उसे किसी भी गतिविधि के लिए प्रेरित नहीं करती थी। वह एक स्वस्थ रोगी, प्रसवोत्तर महिला की तरह निष्क्रिय जीवन व्यतीत कर रहा था; उनकी सुंदर आँखें स्थिर, कुछ स्तब्ध सी थीं, मानो कोई व्यक्ति समुद्र तट पर लेटा हो और धुंधले सपने में बस हर छोटी लहर को टूटते हुए देख रहा हो। हालाँकि, अगर अब उनसे बात करना उतना दिलचस्प नहीं था जितना पहले हुआ करता, तो मुझे इसका कोई अफसोस नहीं था। वे आदतों के इतने पक्के थे कि सरलतम आदतें भी, चाहे कितनी ही जटिल क्यों न हों, एक बार बन जाने पर कुछ समय के लिए उनके लिए अपरिहार्य हो जाती थीं। मुझे नहीं पता कि सबसे पहले वे हमारे घर क्यों आए, लेकिन उसके बाद हर दिन वे बस इसलिए आते थे क्योंकि वे कल आए थे। वे घर ऐसे आते थे जैसे किसी कैफे में गए हों, ताकि कोई उनसे बात न करे, ताकि वे—बहुत कम ही—खुद बात कर सकें; संक्षेप में, उनके व्यवहार में यह संकेत मिल सकता था कि वे हमारी चिंता में हमारे साथ सहानुभूति रखते थे, या उन्हें मेरी संगति अच्छी लगती थी, अगर कोई उनके बार-बार आने से कोई निष्कर्ष निकालने की कोशिश करता। मेरी माँ, जो अपने बीमार साथी के प्रति दिखाई जाने वाली हर छोटी-बड़ी बात को लेकर बहुत संवेदनशील थीं, इस बात से बहुत प्रभावित हुईं। और हर दिन वह मुझे याद दिलाती थीं: "ध्यान रखना, उन्हें अच्छे से धन्यवाद देना मत भूलना।"

हमें श्रीमती कॉटार्ड की ओर से एक विनम्र और सलीकेदार सेवा भी मिली, ठीक वैसे ही जैसे एक चित्रकार की प्रेमिका स्टूडियो में बैठक के बीच में हमारे लिए जलपान लाती है। यह उनके पति द्वारा पेशेवर रूप से दी जाने वाली सेवा का एक विनम्र पूरक था। वह हमें अपनी 'सेविका' की पेशकश करने आई थीं, या यदि हम किसी पुरुष की सेवा पसंद करते, तो वह उसके लिए 'पूरे देश में खोज' करने का वादा करतीं। और सबसे अच्छी बात यह थी कि हमारे मना करने पर उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि यह हमारी ओर से केवल 'टालमटोल' नहीं है, एक

ऐसा शब्द जिसका उनकी दुनिया में अर्थ है निमंत्रण स्वीकार न करने का झूठा बहाना। उन्होंने हमें आश्वासन दिया कि प्रोफेसर, जो घर पर रहते हुए कभी अपने मरीजों का जिक्र नहीं करते थे, इस बात से उतने ही दुखी थे जैसे कि वह खुद बीमार हों। हम आगे चलकर देखेंगे कि भले ही यह सच होता, फिर भी यह सबसे बेवफा और सबसे ज्यादा ध्यान रखने वाले पति की ओर से एक बहुत छोटी और साथ ही बहुत बड़ी स्वीकारोक्ति होती।

लक्ज़मबर्ग के वंशानुगत ग्रैंड ड्यूक ने मुझे ऐसे प्रस्ताव भेजे जो बेहद मददगार और साथ ही बेहद मार्मिक भी थे, क्योंकि उन्हें जिस अंदाज़ में व्यक्त किया गया था (जो उच्चतम बुद्धिमत्ता, गहरी सहानुभूति और अभिव्यक्ति की दुर्लभ कुशलता का मिश्रण था)। मेरी उनसे मुलाकात बालबेक में हुई थी, जहाँ वे अपनी एक चाची, लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी से मिलने आए थे। उस समय वे स्वयं केवल कॉम्टे डी नासाऊ थे। कुछ महीनों बाद उन्होंने लक्ज़मबर्ग की एक अन्य राजकुमारी की आकर्षक पुत्री से विवाह किया, जो बेहद धनी थीं, क्योंकि वे एक ऐसे राजकुमार की इकलौती पुत्री थीं जो एक विशाल आटा चक्की के मालिक थे। इसके बाद, लक्ज़मबर्ग के ग्रैंड ड्यूक, जिनकी अपनी कोई संतान नहीं थी और जो अपने भतीजे नासाऊ के प्रति समर्पित थे, ने अपने चैंबर से उस युवक को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने की अनुमति प्राप्त कर ली। इस तरह के सभी विवाहों की तरह, दुल्हन की संपत्ति का स्रोत ही बाधा होने के साथ-साथ निर्णायक कारक भी था। मुझे कॉम्टे डी नासाऊ एक बेहद आकर्षक नौजवान के रूप में याद हैं, जिनसे मैं कभी मिली थी। उस समय वे अपनी मंगेतर के लिए एक गहरे और प्रचंड प्रेम में डूबे हुए थे। मेरी दादी की बीमारी के दौरान उन्होंने मुझे जो पत्र लिखे, उनसे मैं बहुत प्रभावित हुई। माँ ने भी भावुक होकर अपनी माँ के एक कथन को दुख से उद्धृत किया: "सेविग्ने इससे बेहतर नहीं कह सकते थे।"

छठे दिन, दादी की मिन्नतों के आगे झुककर, माँ थोड़ी देर के लिए उन्हें छोड़कर लेटने का बहाना करने लगीं। मैं चाहती थी कि (ताकि दादी सो सकें) फ्रांस्वा बिल्कुल शांत बैठी रहें और हिल-डुल कर उन्हें परेशान न करें। मेरी बार-बार की मिन्नतों के बावजूद, वह उठीं और कमरे से बाहर चली गईं; वह सचमुच दादी से बहुत प्यार करती थीं; अपनी गहरी समझ और स्वाभाविक निराशावाद के कारण उन्हें लगता था कि दादी का भविष्य अंधकारमय है। इसलिए वह उनकी हर संभव देखभाल करना चाहती थीं। लेकिन तभी खबर आई कि घर में

एक इलेक्ट्रीशियन आया है, जो अपनी कंपनी का सबसे पुराना नौकर है, जिसका मुखिया उसका जीजा है, और जिसे पूरे भवन में, जहाँ वह कई वर्षों से काम कर रहा था, और विशेष रूप से जुपियन द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था। इस आदमी को दादी की बीमारी से पहले आने का आदेश दिया गया था। मुझे लगा कि उसे वापस भेजा जा सकता था, या इंतज़ार करने के लिए कहा जा सकता था। लेकिन फ्रांस्वा के शिष्टाचार के नियम इसकी अनुमति नहीं देते थे; यह इस सम्मानित व्यक्ति के प्रति असभ्यता होती; मेरी दादी की हालत एकदम बेमानी हो गई। जब पंद्रह मिनट इंतज़ार करने के बाद मेरा सब्र टूट गया और मैं उन्हें रसोई में ढूंढने गई, तो मैंने उन्हें पीछे की सीढ़ियों के लैंडिंग पर उनसे बात करते हुए पाया। दरवाज़ा खुला हुआ था, जिसका फ़ायदा यह था कि अगर हममें से कोई वहाँ आ जाता, तो ऐसा लगता कि वे बस अलविदा कह रहे हैं, लेकिन इसका नुकसान यह भी था कि घर में तेज़ ठंडी हवा आ रही थी। फ़्रांस्वा ने खुद को उस कामगार से छुड़ाया, और जल्दबाज़ी में उसकी पत्नी और साले को अभिवादन करना भूल गई। यह कॉम्ब्रे परिवार की एक खास शिष्टता थी, जो फ़्रांस्वा के व्यवहार में शिष्टाचार की कोई कमी नहीं थी, और यह शिष्टाचार विदेश नीति तक भी दिखता था। लोग मूर्खता से सोचते हैं कि सामाजिक घटनाओं के विशाल आयाम उन्हें मानव आत्मा में गहराई से उतरने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान करते हैं; इसके विपरीत, उन्हें यह समझना चाहिए कि किसी एक व्यक्ति के व्यक्तित्व की गहराई में उतरकर ही वे इन घटनाओं को समझ सकते हैं। फ्रांस्वा ने कॉम्ब्रे के माली से हज़ार बार कहा था कि युद्ध सबसे निरर्थक अपराध है, जीवन ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो मायने रखती है। फिर भी, जब रूस-जापान युद्ध छिड़ा, तो ज़ार के बारे में सोचते हुए उन्हें बहुत शर्मिंदगी हुई कि हम 'बेचारे रूसियों' की मदद के लिए युद्ध में क्यों नहीं गए, क्योंकि, उन्होंने हमें याद दिलाया, "हम उनके सहयोगी हैं।" उन्हें लगा कि निकोलस द्वितीय के प्रति यह संयम उचित नहीं होगा, जिन्होंने हमेशा "हमारे बारे में इतनी अच्छी बातें कही थीं"; यह उसी नैतिक सिद्धांत का परिणाम था जिसने उन्हें जुपियन से ब्रांडी का एक गिलास लेने से मना करने से रोक दिया होता, यह जानते हुए कि इससे उनका पाचन 'खराब' हो जाएगा, और इसी कारण अब, जब मेरी दादी मृत्यु के कगार पर थीं, तो उन्हें वही कंजूसी स्वीकार करनी पड़ती, जिसके लिए उन्होंने जापान के संबंध में

तटस्थ रहने के लिए फ्रांस को दोषी माना था, यदि वह स्वयं उस भले इलेक्ट्रीशियन से माफी मांगने न गई होतीं, जिसे इतनी परेशानी उठानी पड़ी थी।

सौभाग्य से, हम जल्द ही फ्रांस्वा की बेटी से छुटकारा पा गए, जिसे कुछ हफ्तों के लिए बाहर जाना पड़ा था। कॉम्ब्रे में लोग बीमार व्यक्ति के परिवार को जो आम सलाह देते थे, जैसे: "क्या आपने उसे कुछ देर के लिए कहीं बाहर ले जाने की कोशिश नहीं की... हवा बदल जाए, भूख बढ़ जाए... वगैरह?" उसी तरह, उसने एक अनोखा सुझाव भी दिया, जो उसने खुद अपनी कल्पना में गढ़ा था और जब भी हम उसे देखते, वह बिना चूके यही बात दोहराती थी, मानो बार-बार दोहराने से लोगों के दिमाग में यह बात बैठ जाए: "उसे शुरू से ही अपनी सेहत में सुधार लाना चाहिए था।" उसने किसी भी इलाज को दूसरे से बेहतर नहीं बताया, बशर्ते वह 'पूरी तरह से कारगर' हो। फ्रांस्वा ने गौर किया कि हम मेरी दादी को ज़्यादा दवाइयाँ नहीं दे रहे थे। उसके अनुसार, दवाइयाँ पेट को खराब कर देती थीं, इसलिए वह इससे खुश थी, लेकिन साथ ही साथ शर्मिंदा भी थी। दक्षिण फ्रांस में उसके कुछ रिश्तेदार थे—जो अपेक्षाकृत संपन्न थे—जिनकी बेटी बचपन में ही बीमार पड़ गई और तेईस वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। कई वर्षों तक माता-पिता ने दवाइयों, अलग-अलग डॉक्टरों के पास जाने और एक जलस्थल से दूसरे जलस्थल की यात्रा करने में अपना सारा पैसा बर्बाद कर दिया, जब तक कि उसकी मृत्यु नहीं हो गई। अब फ्रांस्वा को यह सब कुछ ऐसा लग रहा था जैसे उन माता-पिता के लिए विलासिता हो, मानो उनके पास घुड़दौड़ के घोड़े हों या देश में कोई आलीशान घर हो। वे स्वयं भी अपने दुख के बीच ऐसे खर्चे के विचार से एक प्रकार की संतुष्टि प्राप्त कर रहे थे। अब उनके पास कुछ भी नहीं बचा था, सबसे कीमती चीज, उनकी बच्ची, लेकिन उन्हें लोगों को यह बताने में आनंद आता था कि उन्होंने उसके लिए देश के सबसे अमीर लोगों से भी ज्यादा किया था। महीनों तक दिन में कई बार उस बेचारी बच्ची को जिन पराबैंगनी किरणों के प्रभाव में रखा गया था, वे उन्हें किसी भी चीज से ज्यादा आनंदित करती थीं। अपने दुःख में भी इस भव्यता से प्रसन्न पिता कभी-कभी अपनी बेटी के बारे में इस तरह बात करने लगते थे जैसे वह कोई ओपेरा स्टार हो जिसके लिए उन्होंने अपना सब कुछ बर्बाद कर दिया हो। फ्रांकोइस भी इस भव्य दृश्य से प्रभावित थीं; उन्हें दादी के बीमार बिस्तर के दृश्य कुछ

कमज़ोर लगे, मानो किसी छोटे से प्रांतीय थिएटर के मंच पर किसी बीमारी के दृश्य के लिए उपयुक्त हों।

एक समय ऐसा आया जब मेरी दादी की यूरेमिक बीमारी ने उनकी आँखों पर असर डाला। कुछ दिनों तक उन्हें बिल्कुल दिखाई नहीं दिया। उनकी आँखें किसी अंधे व्यक्ति की आँखों जैसी नहीं थीं, बल्कि पहले जैसी ही थीं। और मुझे यह समझ में आया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि जैसे ही कोई दरवाजा खोलता, वह तुरंत एक अजीब सी स्वागत भरी मुस्कान बना लेती थीं, जो तब तक बनी रहती थी जब तक कोई उनके पास आकर उनका हाथ नहीं पकड़ लेता। यह मुस्कान बहुत जल्दी शुरू हो जाती थी और उनके होठों पर एक ही जगह टिकी रहती थी, स्थिर, लेकिन हमेशा चेहरे पर पूरी तरह से बनी रहती थी, और हर तरफ से दिखाई देने की कोशिश करती थी, क्योंकि अब वह अपनी दृष्टि पर निर्भर नहीं रह सकती थीं, इसे नियंत्रित करने के लिए, सही समय, सही दिशा बताने के लिए, इसे सटीक बनाने के लिए, इसे आने वाले व्यक्ति की स्थिति या चेहरे के भाव के अनुसार बदलने के लिए; क्योंकि यह अकेली रह गई थी, उनकी आँखों में वह मुस्कान नहीं थी जो आगंतुक का ध्यान थोड़ा सा भटका देती, इसलिए अपनी अटपटीपन में यह अनुचित महत्व धारण कर लेती थी, जिससे अतिशय मित्रता का आभास होता था। फिर उनकी दृष्टि पूरी तरह से ठीक हो गई; उनकी आंखों से भटकती हुई पीड़ा उनके कानों तक पहुंच गई। कई दिनों तक मेरी दादी बहरी रहीं। उन्हें डर था कि कहीं कोई अचानक अंदर न आ जाए और उन्हें सुनाई न दे, इसलिए दिनभर, चाहे वे दीवार की ओर मुंह करके लेटी हों, वे बार-बार अपना सिर दरवाजे की ओर घुमाती रहती थीं। लेकिन उनकी गर्दन की हरकत बेढंगी थी, क्योंकि कुछ ही दिनों में इंद्रियों के इस बदलाव को अपनाना संभव नहीं होता, ताकि आवाज़ों को देख न सकें, तो कम से कम आंखों से सुन सकें। आखिरकार उनका दर्द कम हो गया, लेकिन उनकी बोलने की क्षमता बढ़ती गई। हमें उनसे लगभग हर बात दोहराने के लिए कहना पड़ता था।

और अब मेरी दादी ने यह महसूस करते हुए कि हम उनकी बात समझ नहीं पा रहे हैं, बोलने की कोशिश पूरी तरह छोड़ दी और एकदम शांत लेट गईं। जब उन्होंने मुझे देखा तो वे अचानक ऐसे चौंक गईं जैसे कोई व्यक्ति अचानक सांस न ले पा रहा हो, लेकिन उनके मुंह से कोई स्पष्ट आवाज नहीं निकल रही थी। फिर, अपनी पूरी लाचारी से अभिभूत होकर, उन्होंने

अपना सिर तकियों पर गिरा दिया, बिस्तर पर पूरी तरह लेट गईं, उनका चेहरा गंभीर था, जैसे संगमरमर का चेहरा हो, उनके हाथ चादर पर स्थिर थे या किसी शारीरिक क्रिया में व्यस्त थे, जैसे कि अपने रुमाल से उंगलियां पोंछना। उन्होंने सोचने की कोई कोशिश नहीं की। फिर एक निरंतर बेचैनी की स्थिति छा गई। वह लगातार उठने की कोशिश कर रही थीं। लेकिन हमने उन्हें यथासंभव ऐसा करने से रोका, इस डर से कि कहीं उन्हें पता न चल जाए कि वह कितनी लकवाग्रस्त हो गई हैं। एक दिन जब उन्हें कुछ पल के लिए अकेला छोड़ दिया गया था, तो मैंने उन्हें नाइटगाउन में फर्श पर खड़ी खिड़की खोलने की कोशिश करते हुए पाया।
एक बार बालबेक में, जब समुद्र में कूदी एक विधवा को उसकी इच्छा के विरुद्ध बचाया गया था, तो मेरी दादी ने मुझसे कहा था (शायद उन पूर्वाभासों में से एक से प्रेरित होकर जो हम कभी-कभी अपने आसपास के जैविक जीवन के रहस्य में देखते हैं - जो कि इतना अस्पष्ट है, फिर भी जिसमें ऐसा लगता है कि हमारे अपने भविष्य की झलक मिलती है) कि वह इससे अधिक क्रूर कुछ भी नहीं सोच सकतीं कि एक बेचारी को उस मौत से छीन लिया जाए जिसे उसने जानबूझकर चाहा था और उसे उसके जीवित शहादत में वापस भेज दिया जाए।
हम ठीक समय पर अपनी दादी को पकड़ने पहुंचे। उन्होंने मेरी माँ का लगभग हिंसक विरोध किया, फिर, पराजित होकर, उन्हें जबरदस्ती एक कुर्सी पर बैठा दिया गया। तब उन्होंने मृत्यु की कामना करना, जीवित रहने का पछतावा करना छोड़ दिया, उनके चेहरे पर फिर से भावहीनता आ गई और उन्होंने बड़ी मेहनत से उन बालों को हटाना शुरू कर दिया जो किसी ने उनके कंधों पर डाले हुए फर के लबादे से उनकी नाइटगाउन पर रह गए थे।
उसकी आँखों का भाव पूरी तरह बदल गया; अक्सर बेचैन, उदास, थका हुआ, यह वह भाव नहीं था जिसे हम जानते थे, यह एक लड़खड़ाती बूढ़ी औरत का उदास चेहरा था...
बार-बार उनसे यह पूछकर कि क्या वह अपने बाल संवारना नहीं चाहेंगी, फ्रांस्वा ने खुद को यह यकीन दिला दिया कि यह अनुरोध मेरी दादी की तरफ से आया है। उसने ब्रश, कंघी, इत्र और एक कपड़ा उठा लिया। उसने मन ही मन कहा, "अगर मैं मैडम अमेडी के बाल संवार दूं तो कोई नुकसान नहीं होगा; कोई भी इतना बीमार नहीं होता कि अच्छे से कंघी न करवा सके।" दूसरे शब्दों में, कोई इतना कमजोर नहीं होता कि कोई दूसरा व्यक्ति अपनी संतुष्टि के लिए उसकी कंघी न कर सके। लेकिन जब मैं कमरे में आया तो मैंने फ्रांस्वा के क्रूर हाथों के

बीच, जो इतनी प्रसन्न थी मानो वह मेरी दादी को स्वस्थ कर रही हो, देखा कि उम्रदराज बालों की पतली लटों के नीचे, जिनमें कंघी का सामना करने की ताकत नहीं थी, एक ऐसा सिर था जो जबरदस्ती अपनी जगह पर टिका नहीं रह पा रहा था और लगातार इधर-उधर घूम रहा था, जिसमें कमजोरी दर्द के तेज झटकों के साथ बदल रही थी। मुझे महसूस हुआ कि वह क्षण निकट आ रहा है जब फ्रांस्वा अपना काम पूरा कर लेगी, और मैंने उसे यह कहकर जल्दी करने की हिम्मत नहीं की कि "बस करो," क्योंकि मुझे डर था कि वह मेरी बात नहीं मानेगी। लेकिन जब मेरी दादी यह देख लें कि उनके बाल उनकी पसंद के अनुसार बने हैं या नहीं, तो फ्रांस्वा ने मासूमियत से उन्हें एक गिलास लाकर दिया, तो मुझे तुरंत हस्तक्षेप करना पड़ा। उस पल मुझे खुशी हुई कि मैंने समय रहते उससे गिलास छीन लिया, इससे पहले कि मेरी दादी, जिन्हें हमने जानबूझकर दर्पण से दूर रखा था, उस चेहरे की एक झलक भी देख पातीं, जो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। लेकिन अफसोस, जब एक पल बाद मैं उनके माथे को चूमने के लिए झुकी, जिस पर इतना कठोर व्यवहार किया गया था, तो उन्होंने हैरानी, अविश्वास और सदमे भरे भाव से मेरी ओर देखा: वह मुझे पहचान नहीं पाईं।

हमारे डॉक्टर के अनुसार, यह इस बात का लक्षण था कि उसके मस्तिष्क में रक्त का जमाव बढ़ रहा था। इसे किसी न किसी तरह से दूर करना ही होगा।

कॉटार्ड दुविधा में थी। फ्रांस्वा को पहले उम्मीद थी कि वे 'स्पष्ट कप' लगाएंगे। उसने मेरे शब्दकोश में इस उपचार के प्रभावों को खोजा, लेकिन उसे इसका कोई संदर्भ नहीं मिला। अगर उसने 'स्पष्ट' के बजाय 'खराब' भी कहा होता, तब भी उसे इस विशेषण का कोई संदर्भ नहीं मिलता, क्योंकि उसने इसे 'S' के अंतर्गत भी नहीं खोजा था, न ही 'C' के अंतर्गत; उसने वास्तव में 'स्पष्ट' कहा था, लेकिन उसने लिखा (और परिणामस्वरूप मान लिया कि मुद्रित शब्द 'स्पष्ट' था)। कॉटार्ड को निराशा हुई, और उसने बहुत कम उम्मीद के साथ जोंक को प्राथमिकता दी। कुछ घंटों बाद जब मैं अपनी दादी के कमरे में गई, तो उनकी गर्दन, कनपटी और कानों से चिपके हुए छोटे काले सांप उनके खून से सने बालों में ऐसे रेंग रहे थे, जैसे मेडुसा के सिर पर। लेकिन उनके पीले और शांत, बिल्कुल स्थिर चेहरे पर मैंने उनकी अपनी सुंदर आँखें देखीं, जो खुली, दमकती और शांत थीं, मानो बीते दिनों में होती थीं (शायद बीमारी से पहले की तुलना में अब और भी अधिक बुद्धिमत्ता से भरी हुई थीं, क्योंकि वे बोल नहीं

सकती थीं और हिल-डुल नहीं सकती थीं, इसलिए वे अपने विचार केवल अपनी आँखों में ही प्रकट करती थीं, वे विचार जो कभी हमारे भीतर असीम स्थान रखते हैं, हमें अकल्पनीय खजाने प्रदान करते हैं, कभी कुछ भी नहीं लगते, फिर मानो स्वतः उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे रक्त की कुछ बूँदों के निकलने से), उनकी आँखें कोमल और तरल थीं, जैसे तेल के दो कुंड जिनमें फिर से प्रज्वलित आग जल रही थी, मानो बीमार के चेहरे के सामने एक पुनः प्राप्त ब्रह्मांड को रोशन कर रही हो। उनकी शांति अब निराशा की बुद्धिमत्ता नहीं, बल्कि आशा की बुद्धिमत्ता थी। उन्होंने महसूस किया कि वे बेहतर हैं, सावधानी बरतना चाहती थीं, हिलना-डुलना नहीं चाहती थीं, और मुझे केवल एक मनमोहक मुस्कान दी ताकि मैं जान सकूँ कि वे बेहतर महसूस कर रही हैं, और धीरे से मेरा हाथ दबाया।

मैं जानती थी कि मेरी दादी को कुछ जानवरों को देखकर कितनी घृणा होती थी, उन्हें छूए जाने की तो बात ही छोड़िए। मैं जानती थी कि वह किसी उच्च उद्देश्य के लिए ही जोंकों को सहन कर रही थीं। इसलिए मुझे बहुत गुस्सा आया जब मैंने फ्रांस्वा को बच्चों को हंसाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली हंसी के साथ बार-बार उनसे कहते सुना: "ओह, देखो ये छोटे-छोटे कीड़े मैडम पर कैसे दौड़ रहे हैं।" यह तो हमारी मरीज़ के प्रति अनादर का भाव था, मानो वह अपने दूसरे बचपन में हो। लेकिन मेरी दादी, जिनके चेहरे पर एक शांत और गंभीर भाव आ गया था, मानो उन्होंने उसकी बात सुनी ही न हो।

अफसोस! जैसे ही जोंक हटाई गईं, नाक बंद होने की समस्या फिर से लौट आई और लगातार बढ़ती गई। मुझे आश्चर्य हुआ कि इस समय, जब मेरी दादी इतनी बीमार थीं, फ्रांस्वा लगातार गायब हो रही थीं। दरअसल, उन्होंने अपने लिए शोक वस्त्र बनवाए थे और अपनी दर्जी को इंतज़ार नहीं करवाना चाहती थीं। अधिकांश महिलाओं के जीवन में, हर बात, यहाँ तक कि सबसे बड़ा दुख भी, 'पहनकर देखने' के सवाल में सिमट जाता है।

कुछ दिनों बाद, जब मैं बिस्तर पर सो रहा था, तो मेरी माँ सुबह तड़के मुझे बुलाने आई। उस कोमल सहानुभूति के साथ, जो बड़े संकटों में, शोक से व्याकुल लोग दूसरों की थोड़ी सी भी असुविधा के प्रति दिखाते हैं:

"आपकी नींद में खलल डालने के लिए मुझे क्षमा करें," उसने मुझसे कहा।

जागते ही मैंने जवाब दिया, "मैं सो नहीं रहा था।"

मैंने यह बात सद्भावना से कही। जागृति की क्रिया से हमारे भीतर जो बड़ा परिवर्तन होता है, वह हमें चेतना के स्पष्ट जीवन से परिचित कराना उतना नहीं है, जितना कि उस दूसरे, बल्कि अधिक विसरित प्रकाश की स्मृति को मिटा देना है जिसमें हमारा मन समुद्र की अपार गहराइयों की तरह विश्राम कर रहा था। विचारों का वह ज्वार, जो हमारी बोध से आधा छिपा हुआ था और जिस पर हम कुछ क्षण पहले तक बह रहे थे, हमें गति की ऐसी अवस्था में रखता था जो हमें उसे जागृति कहने में सक्षम बनाती थी। लेकिन फिर हमारी वास्तविक जागृति स्मृति में व्यवधान उत्पन्न करती है। कुछ समय बाद हम इन अवस्थाओं को नींद कहते हैं क्योंकि हमें वे अब याद नहीं रहतीं। और जब वह चमकीला तारा, जो जागृति के क्षण में सोए हुए व्यक्ति के पीछे उसकी पूरी नींद को प्रकाशित करता है, चमकता है, तो वह उसे कुछ क्षणों के लिए यह कल्पना करने पर मजबूर कर देता है कि यह नींद नहीं बल्कि जागृति की अवस्था थी; यह भी कहना जरूरी है कि एक टूटता तारा, जो अपनी रोशनी के फीके पड़ने के साथ न केवल झूठे अस्तित्व को बल्कि हमारे सपने के स्वरूप को भी मिटा देता है, और जागने वाले को केवल इतना कहने में सक्षम बनाता है: "मैं सो रहा था।"

मेरी माँ ने इतनी कोमल आवाज़ में पूछा कि मानो उन्हें मुझे चोट पहुँचाने का डर हो, कि क्या बिस्तर से उठने में मुझे बहुत थकान होगी, और मेरे हाथों को सहलाते हुए आगे कहा:

"मेरे प्यारे बेटे, अब तुम्हारी मदद करने के लिए सिर्फ तुम्हारे पापा और मम्मी ही बचे हैं।"

हम बीमारों के कमरे में गए। बिस्तर पर अर्धवृत्ताकार मुद्रा में झुकी हुई, मेरी दादी के अलावा कोई और ही प्राणी था, एक जंगली जानवर जैसा, जो उनके बालों से ढका हुआ था और उनके चादरों के बीच दुबका हुआ था। वह हांफ रहा था, कराह रहा था, और उसकी कंपकंपी से चादरें हिल रही थीं। उसकी पलकें बंद थीं, और मेरे पास वाली पलक ठीक से बंद नहीं हुई थी, इसलिए उसकी आंख का एक धुंधला सा हिस्सा दिखाई दे रहा था, धुंधली सी, परदे जैसी, जो उसकी दृष्टि की मंदता और एक छिपे हुए आंतरिक दर्द दोनों को दर्शा रही थी। यह सारी बेचैनी हमारी ओर नहीं थी, क्योंकि वह हमें न तो देख रही थी और न ही पहचान रही थी। लेकिन अगर यह सिर्फ एक जानवर ही था जो वहां हलचल कर रहा था, तो मेरी दादी कहां हो सकती थीं? हां, मैं उनकी नाक की आकृति पहचान सकता था, जिसका अब उनके चेहरे के बाकी हिस्सों से कोई संबंध नहीं था, लेकिन जिसके कोने पर अभी भी एक तिल था, और वह

हाथ जो चादरों को एक ऐसे इशारे से हटा रहा था जिसका पहले मतलब होता था कि चादरें उन पर दबाव डाल रही हैं, लेकिन अब इसका कोई मतलब नहीं था।

माँ ने मुझे थोड़ा सिरका और पानी लाने को कहा, जिससे मैं दादी के माथे को पोंछ सकूँ। माँ को लगा कि यही एक चीज़ थी जिससे उन्हें ताज़गी मिलती थी, और उन्होंने देखा कि दादी अपने बालों को पीछे हटाने की कोशिश कर रही थीं। तभी एक नौकर ने दरवाज़े से मुझे इशारा किया। दादी के अंतिम क्षणों की खबर पूरे घर में आग की तरह फैल गई थी। उन 'अतिरिक्त सहायकों' में से एक, जिन्हें लोग असाधारण परिस्थितियों में नौकरों पर बोझ कम करने के लिए रखते हैं (यह प्रथा मृत्युशय्या को एक सामाजिक समारोह का रूप देती है), ने अभी-अभी ड्यूक डी गुएरमांटेस के लिए सामने का दरवाज़ा खोला था, जो अब हॉल में इंतज़ार कर रहे थे और उन्होंने मुझे बुलाया था: मैं उनसे बच नहीं सकता था।

"मुझे अभी-अभी, महोदय, आपकी दुखद खबर मिली है। मैं सहानुभूति जताते हुए आपके पिता से हाथ मिलाना चाहूँगा।" मैंने बहाना बनाया कि इस समय उन्हें परेशान करना ठीक नहीं होगा। श्री डी गुएरमांटेस उस व्यक्ति की तरह थे जो यात्रा शुरू करने से ठीक पहले अचानक आ जाता है। लेकिन वे हमारे प्रति दिखाई जा रही इस शिष्टाचार को इतना महत्व देते थे कि वे बाकी सब कुछ भूल गए और उन्होंने ड्राइंग रूम में ले जाने की ज़िद की। आम तौर पर, वे किसी का भी सम्मान करने के लिए तय की गई औपचारिकताओं का पूरी निष्ठा से पालन करते थे और इस बात की परवाह नहीं करते थे कि बक्से पैक हैं या ताबूत तैयार है।

"क्या तुमने डियूलफ़ॉय को बुलवाया? नहीं? यह तो बहुत बड़ी गलती थी। और अगर तुमने मुझसे पूछा होता, तो मैं उसे बुला लेता, वह मुझे कभी मना नहीं करता, हालाँकि उसने डचेस डी चार्ट्रेस को पहले मना कर दिया था। देखो, मैं खुद को शाही खानदान की राजकुमारी से ऊपर समझता हूँ। लेकिन मौत के सामने हम सब बराबर हैं," उसने आगे कहा, उसका यह मतलब नहीं था कि मेरी दादी उसके बराबर हो रही थीं, बल्कि शायद इसलिए कि उसे लगा कि डियूलफ़ॉय पर अपनी शक्ति और डचेस डी चार्ट्रेस पर अपनी श्रेष्ठता के बारे में लंबी चर्चा करना ठीक नहीं होगा।

इस सलाह से मुझे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। मैं जानता था कि गुएरमांटे परिवार में, डियूलफ़ॉय का नाम अक्सर (थोड़े ज़्यादा सम्मान के साथ) उन दूसरे कारीगरों के नामों के साथ लिया

जाता था जो अपने-अपने क्षेत्र में 'बेहतरीन' माने जाते थे। और बूढ़ी डचेस डी मोर्टेमार्ट (गुएरमांटेस) (वैसे, मुझे कभी समझ नहीं आया कि जब भी कोई डचेस की बात करता है, तो लगभग हमेशा यही क्यों कहा जाता है: "फलां-फलां की बूढ़ी डचेस" या फिर, अगर वो अभी जवान होतीं, तो वाटो के लहजे में: "फलां-फलां की छोटी डचेस") गंभीर मामलों में पलकें झुकाकर लगभग अपने आप ही लिखती थीं: "डियूलफ़ॉय, डियूलफ़ॉय!" जैसे, अगर किसी को आइसक्रीम के लिए जगह चाहिए होती, तो वो सलाह देतीं: 'पोइरे ब्लैंच' या छोटी पेस्ट्री के लिए 'रेबट्टे, रेबट्टे'। लेकिन मुझे इस बात का पता नहीं था कि मेरे पिता ने वास्तव में डियूलफॉय को बुलवा लिया था।

इस समय मेरी माँ, जो बेसब्री से ऑक्सीजन सिलेंडरों का इंतज़ार कर रही थीं ताकि मेरी दादी को साँस लेने में आसानी हो, हॉल में आईं जहाँ उन्हें श्री डी गुएरमांटेस के मिलने की ज़रा भी उम्मीद नहीं थी। अगर मुमकिन होता तो मैं उन्हें छुपाना चाहती। लेकिन अपने मन में इस बात को लेकर आश्वस्त कि इससे ज़्यादा ज़रूरी, इससे ज़्यादा खुशी देने वाला या एक आदर्श सज्जन के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए इससे ज़्यादा ज़रूरी कुछ नहीं हो सकता, उन्होंने मुझे ज़बरदस्ती बांह से पकड़ लिया और, हालाँकि मैंने बार-बार "सर, सर, सर" कहकर अपना बचाव किया, फिर भी मुझे माँ के पास घसीटते हुए ले गए और बोले: "क्या आप मुझे अपनी माँ से मिलवाकर मुझे यह सम्मान देंगी?" आखिरी शब्द कहते हुए उन्होंने मुझे थोड़ा ढीला छोड़ दिया। और उन्हें यह इतना स्पष्ट था कि यह सम्मान तो दादी का ही है कि गंभीर चेहरा बनाते हुए भी वे मुस्कुराए बिना नहीं रह सके। उनके नाम का ज़िक्र करने के अलावा कोई चारा नहीं था, और नाम सुनते ही वे झुकने और अभिवादन करने लगे, और वे अभिवादन की पूरी रस्म शुरू करने ही वाले थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने बातचीत शुरू करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मेरी माँ, अपने शोक से व्याकुल होकर, मुझे तुरंत आने के लिए कहा और एम. डी गुएरमांटेस के भाषणों का कोई उत्तर नहीं दिया। एम. डी गुएरमांटेस को एक आगंतुक के रूप में स्वागत की उम्मीद थी, लेकिन उन्हें हॉल में अकेला छोड़ दिया गया। अगर उसी क्षण उनकी नज़र सेंट-लूप पर न पड़ी होती, जो उस सुबह पेरिस पहुँचे थे और हमसे खबर लेने के लिए जल्दी में आए थे, तो वे वहाँ से चले जाते। ड्यूक ने खुशी से चिल्लाते हुए अपने भतीजे की आस्तीन पकड़ ली, जिसे उन्होंने लगभग फाड़ ही दिया, मेरी माँ की

उपस्थिति की परवाह किए बिना, जो फिर से हॉल पार कर रही थीं। मुझे लगता है कि सेंट-लूप को मुझसे न मिलने का कोई अफसोस नहीं था, उनकी सच्ची सहानुभूति के बावजूद, मेरे प्रति उनके रवैये को देखते हुए। वे अपने चाचा के साथ घर से चले गए, जिन्हें उनसे कुछ बहुत महत्वपूर्ण कहना था और वे लगभग इसी उद्देश्य से डोनसिएरेस तक गए थे, और इतनी मेहनत से बच जाने पर वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। "सच कहूँ तो, अगर किसी ने मुझसे कहा होता कि मुझे बस आंगन पार करना है और तुम यहाँ मिल जाओगे, तो मैं इसे एक बड़ा मज़ाक समझता; जैसा कि तुम्हारा दोस्त एम. ब्लोच कहता, यह तो सरासर तमाशा है।" और रॉबर्ट को कंधे से पकड़े हुए सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए वह बोला, "फिर भी, यह तो बिल्कुल साफ है कि मैंने जल्लाद की रस्सी को छू लिया होगा; मेरी किस्मत वाकई बहुत ही अजीब है।" ऐसा नहीं था कि ड्यूक डी गुएरमांटेस बदतमीज़ थे; बिलकुल भी नहीं। लेकिन वह उन लोगों में से एक था जो खुद को दूसरों की जगह पर रखने में असमर्थ होते हैं, जो इस मामले में अंतिम संस्कार करने वालों और अधिकांश डॉक्टरों से मिलते-जुलते हैं, और जो अपने चेहरे पर भाव लाने और यह कहने के बाद कि "यह एक बहुत ही दुखद अवसर है," और यदि आवश्यक हो तो आपको गले लगाने और आराम करने की सलाह देने के बाद, मृत्युशय्या या अंत्येष्टि को एक सीमित प्रकार के सामाजिक समारोह से अधिक कुछ नहीं समझते, जिसमें वे क्षण भर के लिए रुकी हुई प्रसन्नता के साथ, कमरे में उस व्यक्ति की तलाश करते हैं जिसे वे अपने छोटे-मोटे मामलों के बारे में बता सकें, या किसी और से परिचय कराने के लिए कह सकें, या घर जाने के समय अपनी गाड़ी में लिफ्ट दे सकें। ड्यूक डी गुएरमांटेस अपने भतीजे की बाहों में पहुँचने के लिए खुद को 'अच्छी हवा' की बधाई देते हुए भी, मेरी माँ द्वारा दिए गए स्वागत से इतने आश्चर्यचकित थे - हालाँकि यह स्वाभाविक था - कि उन्होंने बाद में कहा कि मेरी माँ उतनी ही अप्रिय थीं जितने मेरे पिता विनम्र थे, कि उन्हें 'गायब होने के दौरे' पड़ते थे, जिनमें ऐसा लगता था कि वे सचमुच आपकी एक भी बात नहीं सुन रही हैं, और उनके विचार में उनमें आत्म-नियंत्रण नहीं था और शायद वे पूरी तरह से 'स्वभाविक' भी नहीं थीं। साथ ही, (जैसा कि मुझे बताया गया) वे इस मानसिक स्थिति को, कम से कम आंशिक रूप से, परिस्थितियों के कारण मानने के लिए पूरी तरह तैयार थे, और उन्होंने कहा कि मेरी माँ उन्हें इस दुखद घटना से बहुत 'प्रभावित' प्रतीत हुई थीं। लेकिन उनके शरीर में अब भी उन सभी अभिवादनों और

सम्मानों का अंश शेष था जिन्हें वे व्यक्त नहीं कर पाए थे, और माँ के वास्तविक दुख की उन्हें इतनी कम समझ थी कि उन्होंने अंतिम संस्कार से एक दिन पहले मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें विचलित करने के लिए कुछ कर रहा हूँ।

मेरी दादी के सौतेले भाई, जो धार्मिक थे और जिनसे मैं कभी नहीं मिली थी, ने ऑस्ट्रिया को तार भेजा, जहाँ उनके मठ के प्रमुख रहते थे, और विशेष अनुमति से छुट्टी लेकर उसी दिन वहाँ पहुँच गए। शोक से व्याकुल होकर वे दादी के बिस्तर के पास बैठकर एक किताब से प्रार्थनाएँ और ध्यान पढ़ रहे थे, लेकिन उनकी पैनी नज़रें दादी के चेहरे से हटी ही नहीं। एक समय, जब मेरी दादी बेहोश थीं, तो उस पादरी के शोक को देखकर मैं भी विचलित हो गई और मैंने उन्हें स्नेह से देखा। मेरी दया देखकर वे हैरान हुए, और फिर एक अजीब बात हुई। उन्होंने अपने हाथ अपने चेहरे के सामने जोड़ लिए, मानो कोई गहन ध्यान में लीन हो, लेकिन यह सोचकर कि मैं उन्हें देखना बंद कर दूँगी, उन्होंने अपनी उंगलियों के बीच एक छोटी सी जगह छोड़ दी, जैसा कि मैंने देखा। और जिस क्षण मेरी नज़र उनके चेहरे से हटी, मैंने उनकी पैनी नज़र देखी, जो उनके हाथों के पीछे छिपी हुई थी और यह देख रही थी कि मेरी सहानुभूति सच्ची है या नहीं। वे वहाँ किसी गुप्त कक्ष के अंधेरे में छिपे हुए थे। उसने देखा कि मैं अब भी देख रहा हूँ और उसने तुरंत उस जाली को कसकर बंद कर दिया जिसे उसने थोड़ा खुला छोड़ दिया था। उसके बाद मैं उससे फिर मिला, लेकिन हम दोनों में से किसी ने भी उस पल का ज़िक्र नहीं किया। यह मौन सहमति थी कि मैंने ध्यान नहीं दिया था कि वह मुझ पर नज़र रख रहा था। पादरी और मनोचिकित्सक, दोनों में हमेशा एक जांचकर्ता की प्रवृत्ति होती है। इसके अलावा, ऐसा कौन सा दोस्त है, चाहे वह कितना भी प्रिय क्यों न हो, जिसके और हमारे साझा अतीत में कोई न कोई ऐसी घटना न हुई हो जिसके बारे में हम यह मान लेते हैं कि वह उसे भूल गया होगा?

डॉक्टर ने मेरी दादी को मॉर्फिन का इंजेक्शन दिया और उनकी सांस लेने में तकलीफ कम करने के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर मंगवाए। मेरी माँ, डॉक्टर और नर्स सिस्टर ने उन्हें अपने हाथों में पकड़ रखा था; जैसे ही एक सिलेंडर खत्म होता, दूसरा उसकी जगह रख दिया जाता। मैं कुछ मिनटों के लिए कमरे से बाहर गया था। जब मैं लौटा तो मैंने खुद को एक चमत्कार के सामने पाया। एक धीमी, मंद ध्वनि के साथ लगातार गुनगुनाती आवाज़ में, मेरी दादी मानो एक

लंबे और आनंदमय मंत्र से हमारा स्वागत कर रही थीं, जो पूरे कमरे में गूंज रहा था, तीव्र और मधुर। मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि यह लगभग अचेतन था, उतना ही विशुद्ध रूप से यांत्रिक जितना कि कमरे से बाहर जाने से पहले मैंने सुनी कर्कश घरघराहट। शायद कुछ हद तक यह मॉर्फिन के कारण आए सुधार को दर्शाता था। मुख्य रूप से यह (श्वसन नलिकाओं से हवा का प्रवाह पहले जैसा न होने के कारण) उनकी सांस लेने की लय में आए बदलाव का परिणाम था। ऑक्सीजन और मॉर्फिन की दोहरी क्रिया से मुक्त होकर, मेरी दादी की साँस अब भारी, उबकाई भरी या कराहती नहीं थी, बल्कि तेज और हल्की थी, मानो किसी मधुर धारा पर तैरती हुई कोई तैराक हो। शायद उनकी साँस के साथ, जो किसी सरकंडे के खोखले तने में हवा की तरह अचेतन थी, इस मंत्र में कुछ ऐसी मानवीय आहें भी घुलमिल गई थीं, जो मृत्यु के निकट आने पर मुक्त होकर हमें उन मनों में दुख या सुख की अनुभूति कराती हैं जो पहले ही भावनाहीन हो चुके हैं। ये आहें अब उस लंबे स्वर को और अधिक मधुर बना रही थीं, लेकिन उसकी लय को बदले बिना, जो ऊपर उठता, और ऊँचा उठता, फिर नीचे आता, और ऑक्सीजन की तलाश में उनके बोझ रहित हृदय से नए सिरे से निकलता। फिर, इतनी ऊँची पिच तक पहुँचने के बाद, इतनी शक्ति के साथ गाए जाने के बाद, उनकी परमानंद की अवस्था के बीच से निकली प्रार्थना की गुनगुनाहट के साथ, वह मंत्र कभी-कभी एक ऐसे झरने की तरह रुक जाता प्रतीत होता था जिसका प्रवाह रुक गया हो।

फ्रांस्वा, किसी भी गहरे दुख में, उसे व्यक्त करने की आवश्यकता तो महसूस करती थी, लेकिन उसमें वह कला नहीं थी—भले ही वह आवश्यकता कितनी सरल और व्यर्थ क्यों न हो। मेरी दादी की स्थिति को पूरी तरह से निराशाजनक मानते हुए, वह हमें अपने निजी विचार ही बताना चाहती थी। और वह बस इतना ही दोहरा सकती थी: "मुझे बहुत अजीब लग रहा है," उसी लहजे में जैसे वह पत्तागोभी के शोरबे से भरी प्लेट ज़्यादा ले लेने पर कहती थी: "पेट में बोझ सा लग रहा है," ये दोनों ही भावनाएँ उसके अनुमान से कहीं अधिक स्वाभाविक थीं। यद्यपि उसने अपने दुख को बहुत कम शब्दों में व्यक्त किया, फिर भी उसका दुख बहुत गहरा था, और यह इस बात से और भी बढ़ गया था कि उसकी बेटी, जो कॉम्ब्रे में रुकी हुई थी (जिसे यह युवा पेरिसवासी अब 'कैम्ब्रूस' कहती थी और जहाँ वह खुद को 'पेट्रोस' की तरह महसूस कर रही थी, दूसरे शब्दों में कहें तो जीवाश्म बन रही थी), संभवतः अंतिम संस्कार के लिए

समय पर नहीं लौट पाएगी, जो कि फ्रांस्वा के अनुसार एक शानदार आयोजन होगा। यह जानते हुए कि हम ज्यादा खर्च करने के इच्छुक नहीं थे, उसने जुपियन से वादा करवाया कि वह सप्ताह की हर शाम खाली रखेगा। वह जानती थी कि अंतिम संस्कार के समय वह कहीं और व्यस्त होगा। उसने ठान लिया था कि लौटने पर वह कम से कम उससे सारी बात पर चर्चा करेगी।

कई रातों से मेरे पिता, दादाजी और हमारे एक चचेरे भाई जागते रहे और दिन में घर से बाहर नहीं निकले। उनकी निरंतर देखभाल उदासीनता का मुखौटा पहने बैठी रही, और मृत्युशय्या के आसपास उनके अंतहीन खाली समय ने उन्हें उस छोटी-मोटी बातचीत में लिप्त कर दिया जो रेलगाड़ी के डिब्बे में लंबे समय तक बंद रहने का एक अभिन्न अंग है। खैर, इस चचेरे भाई (मेरी परदादी के भतीजे) ने मेरे मन में उतनी ही तीव्र घृणा उत्पन्न कर दी जितनी कि वह सम्मान के पात्र थे और आमतौर पर उन्हें प्राप्त भी था। बड़ी मुसीबत के समय उन्हें हमेशा बुलाया जाता था, और वे मरने वालों की इतनी तत्परता से देखभाल करते थे कि उनके शोक संतप्त परिवार, उनकी स्वस्थ सेहत का बहाना बनाकर, उनके मजबूत शरीर, भारी आवाज और घनी दाढ़ी के बावजूद, हमेशा उनसे रिवाज के अनुसार नरम शब्दों में कब्रिस्तान न आने की विनती करते थे। मुझे पहले से ही पता चल गया था कि माँ, जो घोर दुःख में भी दूसरों के बारे में सोचती थी, जल्द ही उससे बहुत अलग शब्दों में वही बातें कहेगी जो वह ऐसे सभी अवसरों पर सुनने का आदी था।

"मुझसे वादा करो कि तुम 'कल' नहीं आओगे। प्लीज़, 'उसके भले के लिए'। किसी भी हालत में, तुम 'आखिरी हद तक' मत जाना। यही तो वह चाहती।"

लेकिन कोई चारा नहीं था; वह हमेशा घर पर सबसे पहले पहुँचता था, इसी वजह से उसे कुछ और लोगों के बीच (हमें पता नहीं था) 'फूलों की मांग पर नहीं' का उपनाम दिया गया था। और हर काम में शामिल होने से पहले वह हमेशा हर काम निपटा देता था, जिसकी वजह से उसे यह कहने का हक था: "हम आपका शुक्रिया अदा नहीं कर सकते।"

"यह क्या है?" मेरे दादाजी की ओर से तेज़ आवाज़ में यह बात आई, जो काफी बहरे हो गए थे और हमारे चचेरे भाई ने मेरे पिताजी से जो कहा था, उसे वे समझ नहीं पाए थे।

"कुछ नहीं," चचेरे भाई ने जवाब दिया। "मैं बस यही कह रहा था कि मुझे आज सुबह कॉम्ब्रे से खबर मिली थी। वहाँ का मौसम बेहद खराब है, और यहाँ धूप बहुत तेज़ है।"
"लेकिन स्थिति बहुत खराब है," मेरे पिता ने कहा।
"तुमने कहाँ कहा था कि मौसम खराब है?" मेरे दादाजी ने पूछा।
"कॉम्ब्रे में।"
"अरे! मुझे आश्चर्य नहीं हुआ; जब भी यहाँ हालात खराब होते हैं, कॉम्ब्रे में सब ठीक होता है, और इसके विपरीत भी। हे भगवान! कॉम्ब्रे की बात करें तो, क्या किसी ने लेग्रैंडिन को बताना याद रखा है?"
"हाँ, उसकी चिंता मत करो, वह काम हो चुका है," मेरे चचेरे भाई ने कहा, जिसके गाल, अनियंत्रित रूप से बढ़ी दाढ़ी से कांस्य रंग के हो गए थे, उसे 'याद' आने की संतुष्टि से हल्के से डिंपल पड़ गए थे।
इस समय मेरे पिता कमरे से जल्दी से बाहर निकल गए। मुझे लगा कि कोई अचानक बदलाव आ गया है, चाहे अच्छा हो या बुरा। असल में, डॉक्टर डियूलफ़ॉय आ चुके थे। मेरे पिता उन्हें ड्राइंग रूम में लेने गए, ठीक वैसे ही जैसे कोई अभिनेता मंच पर अगला कलाकार होता है। हमने उन्हें इलाज के लिए नहीं, बल्कि लगभग कानूनी तौर पर प्रमाण पत्र देने के लिए बुलाया था। डॉक्टर डियूलफ़ॉय वाकई एक महान चिकित्सक, एक अद्भुत प्रोफेसर हो सकते थे; इन कई गुणों में, जिनमें वे माहिर थे, उन्होंने एक तीसरा गुण भी जोड़ा, जिसमें वे चालीस वर्षों तक बेजोड़ रहे, एक ऐसा गुण जो तर्क-वितर्क करने वाले, स्कारामूच या नेक पिता के गुण जितना ही मौलिक था, और वह गुण था किसी पीड़ा या मृत्यु का प्रमाण पत्र देना। उनके नाम की ध्वनि ही उस गरिमा का पूर्वाभास करा देती थी जिसके साथ वे इस भूमिका को निभाएंगे, और जब नौकर ने घोषणा की: "एम. डियूलफ़ॉय," तो ऐसा लगता था मानो कोई मोलियर के नाटक को देख रहा हो। उनके गरिमामय हावभाव में, बिना किसी दिखावे के, उनके परिपूर्ण शरीर की लचक झलकती थी। अपने आप में बेहद खूबसूरत चेहरा, दुखद परिस्थितियों के कारण रीति-रिवाजों से बंधा हुआ था। अपने काले रंग के भव्य फ्रॉक कोट में प्रोफेसर कमरे में दाखिल हुए, बिना बनावटीपन के उदास, उन्होंने संवेदना का एक भी शब्द नहीं कहा, जिसे बेईमानी समझा जा सकता था, और न ही उन्होंने शिष्टाचार के नियमों का जरा सा भी उल्लंघन किया।

मृत्युशय्या पर, वे ही थे, न कि ड्यूक डी गुएरमांटेस, जो एक महान सज्जन थे। मेरी दादी की जांच करने के बाद, लेकिन उन्हें थकाए बिना, और डॉक्टर के प्रति शिष्टाचार के तौर पर अत्यधिक संयम बरतते हुए, उन्होंने मेरे पिता से कुछ शब्द कहे, मेरी माँ को आदरपूर्वक प्रणाम किया, जिनके सामने मुझे लगा कि मेरे पिता ने खुद को बड़ी मुश्किल से "प्रोफेसर डियूलफॉय" कहने से रोका। लेकिन हमारे आगंतुक पहले ही मुँह फेर चुके थे, परिचय मांगने की इच्छा न दिखाते हुए, और अत्यंत शालीनता से कमरे से बाहर निकल गए, बस अपने हाथ में थमाए गए सीलबंद लिफाफे को अपने साथ ले गए। ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उन्होंने उसे देखा हो, और हम स्वयं एक क्षण के लिए आश्चर्यचकित रह गए कि क्या हमने वास्तव में उसे वह दिया था, क्योंकि उन्होंने उसे गायब करने में जादूगर जैसी फुर्ती दिखाई थी, फिर भी उस महान सलाहकार की गंभीरता में कोई कमी नहीं आई - बल्कि और भी बढ़ गई - जो अपने रेशमी कॉलर वाले लंबे फ्रॉक कोट में थे, और उनके सुंदर चेहरे पर करुणा का भाव था। उनकी धीमी और जीवंत चाल से पता चलता था कि भले ही उन्हें सौ और मरीजों से मिलना हो और कई मरीज प्रतीक्षा कर रहे हों, वे हड़बड़ी में नहीं दिखना चाहते थे। क्योंकि वे चतुराई, बुद्धिमत्ता और दयालुता की साक्षात मूर्ति थे। वह प्रतिष्ठित व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं हैं। अन्य चिकित्सक, अन्य प्रोफेसर शायद उनके समकक्ष रहे हों, या शायद उनसे आगे भी निकल गए हों। लेकिन जिस 'क्षमता' से उनके ज्ञान, शारीरिक गुणों और विशिष्ट व्यवहार ने उन्हें विजय दिलाई थी, वह अब मौजूद नहीं है, क्योंकि उनका स्थान लेने में सक्षम कोई उत्तराधिकारी नहीं है। माँ ने तो एम. डियूलफ़ॉय पर ध्यान भी नहीं दिया था, उनके लिए मेरी दादी के अलावा सब कुछ अस्तित्वहीन था। मुझे याद है (और यहाँ मैं पहले से ही बता रही हूँ) कि कब्रिस्तान में, जहाँ हमने उन्हें एक अलौकिक प्रेत की तरह, दबे पांव कब्र तक जाते और दूर जा चुकी किसी उड़ती हुई आकृति को निहारते हुए देखा था, मेरे पिता ने उनसे कहा था: "बूढ़े नॉरपोइस घर और चर्च और यहाँ आए थे; उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण समिति की बैठक छोड़कर यहाँ आने का फैसला किया; आपको उनसे एक शब्द कहना चाहिए, अगर आप ऐसा करेंगी तो उन्हें बहुत प्रसन्नता होगी।" जब राजदूत उनके सामने खड़े होकर झुके, तो मेरी माँ आँसू रहित चेहरे को धीरे से झुकाने के अलावा कुछ नहीं कर सकीं। कुछ दिन पहले—मेरी दादी के अंतिम पलों के बिस्तर के पास, जहाँ हम अभी थे, वापस लौटने से पहले

—जब वे शव के पास देख रहे थे, तब फ्रांस्वा, जो भूतों पर पूरी तरह से अविश्वास तो नहीं करती थी, लेकिन हल्की सी भी आवाज़ से डर जाती थी, ने कहा था: "मुझे लगता है कि यह वही हैं।" लेकिन डर की जगह, उसके शब्दों ने मेरी माँ के मन में एक अवर्णनीय मिठास जगा दी, जो इस बात से बहुत प्रसन्न होतीं कि मृत आत्मा लौट आए, ताकि कभी-कभी उनकी माँ उनके साथ रहें।

अब उन आखिरी पलों की बात करें तो, "क्या तुमने उसकी बहनों द्वारा हमें भेजे गए टेलीग्राम के बारे में सुना?" मेरे दादाजी ने चचेरे भाई से पूछा।

"हां, बीथोवेन, उन्होंने मुझे इसके बारे में बताया था, इसे फ्रेम में लगवाने लायक है; फिर भी, मुझे आश्चर्य नहीं हुआ।"

"मेरी बेचारी पत्नी, जो उनसे बहुत प्यार करती थी," मेरे दादाजी ने आंसू पोंछते हुए कहा। "हमें उन्हें दोष नहीं देना चाहिए। वे दोनों बिल्कुल पागल हैं, जैसा कि मैं हमेशा कहता आया हूं। अब क्या बात है; क्या आप ऑक्सीजन लेना जारी नहीं रख रहे हैं?"

मेरी मां ने कहा, "ओह, लेकिन फिर तो मां को सांस लेने में और भी ज्यादा तकलीफ होगी।"

डॉक्टर ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा: "अरे नहीं! ऑक्सीजन का असर अभी काफी देर तक रहेगा; हम इसे अभी दोबारा शुरू कर सकते हैं।"

मुझे लगा कि वह किसी मरणासन्न महिला के बारे में ऐसा नहीं कहते, कि अगर यह अच्छा प्रभाव बना रहता है तो इसका मतलब है कि हम उसे जीवित रखने के लिए अभी भी कुछ कर सकते हैं। ऑक्सीजन की सरसराहट कुछ क्षणों के लिए बंद हो गई, लेकिन उसकी साँसों की मधुर सिसकी लगातार, हल्की, बेचैन, अधूरी, निरंतर, फिर से शुरू होती हुई बहती रही। कभी-कभी ऐसा लगता था कि सब कुछ खत्म हो गया है, उसकी साँस रुक गई है, चाहे सोते हुए व्यक्ति की साँसों में होने वाले किसी बदलाव के कारण, या फिर किसी प्राकृतिक रुकावट के कारण, बेहोशी के प्रभाव से, घुटन के बढ़ने से, या हृदय की किसी विफलता के कारण। डॉक्टर मेरी दादी की नब्ज़ जाँचने के लिए झुके, लेकिन तभी, मानो कोई छोटी नदी सूखे नदी-तल में अपना पानी बहा रही हो, रुकी हुई लय से एक नई लय फूट पड़ी। और पहली लय उसी अटूट शक्ति के साथ दूसरे स्वर में फिर से शुरू हो गई। कौन जाने, मेरी दादी को शायद पता भी न हो, लेकिन दुख से दबी अनगिनत सुखद और कोमल यादें उनके भीतर से वैसे ही निकल

रही थीं, जैसे सिलेंडरों में लंबे समय से दबी हल्की गैसें निकलती हैं? ऐसा लग रहा था मानो जो कुछ भी उन्हें हमें बताना था, वह सब उनके भीतर से उमड़ रहा था, मानो वह इतनी वाक्पटुता, इतनी गंभीरता और इतने भावों से हमसे ही बात कर रही हों। पलंग के चरणों में, इस पीड़ा की हर आह से कांपती हुई, रोती तो नहीं थीं, लेकिन कभी-कभी आंसुओं से भीगी हुई, मेरी माँ एक ऐसे पत्ते की तरह थीं, जो बारिश की मार झेल रहा हो और हवा से अपनी डंडी पर घूम रहा हो। उन्होंने मुझे अपनी आँखें पोंछने को कहा, इससे पहले कि मैं दादी को चूमने जाऊं।

"लेकिन मुझे लगा था कि अब उसे कुछ दिखाई नहीं देता?" मेरे पिता ने कहा।

डॉक्टर ने जवाब दिया, "कोई भी कभी भी निश्चित नहीं हो सकता।"

जब मेरे होंठ दादी के चेहरे से छूए, तो उनके हाथ काँप उठे, उनके पूरे शरीर में एक लंबी सिहरन दौड़ गई, शायद सहज प्रतिक्रिया थी, या शायद इसलिए कि कुछ भावनाओं में अतिसंवेदनशीलता होती है जो अचेतनता के पर्दे के पीछे से भी उस चीज़ को पहचान लेती है जिसके लिए उन्हें इंद्रियों की शायद ही ज़रूरत होती है। अचानक दादी आधी उठीं, ज़ोरदार कोशिश की, मानो अपनी जान पर हमले का विरोध कर रही हों। फ्रांस्वा यह दृश्य सहन नहीं कर सकी और फूट-फूटकर रोने लगी। डॉक्टर की कही बात याद करके मैंने उसे कमरे से बाहर ले जाने की कोशिश की। उसी क्षण दादी ने अपनी आँखें खोलीं। मैंने जल्दी से फ्रांस्वा के सामने आकर उसके आँसू छुपाने की कोशिश की, जबकि मेरे माता-पिता पीड़ित से बात कर रहे थे। ऑक्सीजन की आवाज़ बंद हो गई थी; डॉक्टर बिस्तर के पास से हट गए। दादी का निधन हो गया था।

एक-दो घंटे बाद, फ्रांस्वा ने आखिरी बार, बिना उन्हें कोई तकलीफ दिए, उन खूबसूरत बालों में कंघी की, जो अभी-अभी भूरे होने लगे थे और अब तक मेरी दादी की उम्र से भी कम लगते थे। लेकिन अब इसके विपरीत, वही बाल उस चेहरे पर उम्र का ताज सजा रहे थे, जो फिर से जवान हो गया था, जिस पर वर्षों के कष्टों से बनी झुर्रियाँ, सिकुड़न, सूजन, तनाव और गड्ढे गायब हो गए थे। ठीक वैसे ही जैसे उस समय, जब उनके माता-पिता ने उनके लिए दूल्हा चुना था, उनके चेहरे पर पवित्रता और विनम्रता की कोमल झलक थी, गाल एक पवित्र उम्मीद, खुशी की कल्पना और एक मासूम खुशी से दमक रहे थे, जिसे समय ने धीरे-धीरे मिटा दिया

था। जीवन ने उनसे विदा लेते हुए जीवन की निराशाओं को भी अपने साथ ले लिया था। मेरी दादी के होठों पर एक मुस्कान मंडरा रही थी। उस अंतिम संस्कार के पलंग पर, मृत्यु ने, मध्य युग के किसी मूर्तिकार की तरह, उन्हें एक युवती के रूप में लिटा दिया था।

भाग II

अल्बर्टीन का आगमन — सेंट-लूप के कुछ मित्रों के लिए धनी दुल्हनों की संभावना — प्रिंसेस डी पार्म के समक्ष प्रदर्शित गुएरमांटे परिवार की चतुराई — एम. डी चार्लस का एक विचित्र दौरा — उनका चरित्र मुझे और भी अधिक उलझन में डालता है — डचेस के लाल जूते।

मैं

हालांकि यह शरद ऋतु का एक साधारण रविवार था, फिर भी मेरा पुनर्जन्म हुआ था, जीवन मेरे सामने बिल्कुल नया था, क्योंकि उस सुबह, कई सुहावने दिनों के बाद, एक ठंडी धुंध छाई हुई थी जो लगभग दोपहर तक छटी नहीं थी। मौसम में बदलाव ही दुनिया और खुद को नए सिरे से गढ़ने के लिए काफी होता है। पहले, जब हवा मेरी चिमनी में ज़ोर से चलती थी, तो मैं लोहे के तख्ते पर पड़ने वाली उसकी आवाज़ को उतनी ही तीव्रता से सुनता था मानो, सी माइनर सिम्फनी की शुरुआत में सुनाई देने वाली प्रसिद्ध धनुष-बाण की थाप की तरह, वे किसी रहस्यमय नियति का अनूठा आकर्षण हों। प्रकृति के हर रूप में बदलाव हमें इसी तरह का रूपांतरण प्रदान करता है, हमारी इच्छाओं को चीजों के नए रूप के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए अनुकूलित करता है। मेरे जागने के क्षण से ही, धुंध ने मुझे, अच्छे दिनों में रहने वाले एक गतिशील प्राणी के बजाय, एक स्वार्थी व्यक्ति बना दिया था, जो चिमनी के कोने और वैवाहिक पलंग की लालसा रखता था, इस भिन्न संसार में एक कांपते हुए आदम की तरह जो एक स्थिर हव्वा की तलाश में था।

सुबह के धुंधले परिदृश्य और एक कप चॉकलेट के स्वाद के बीच, मैंने उस शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक जीवन की सारी मौलिकता को समझने की कोशिश की, जिसे मैं लगभग एक साल पहले डोनसिएरेस लेकर आया था। एक नंगी पहाड़ी की आयताकार आकृति से सुशोभित, जो अदृश्य होने पर भी हमेशा मौजूद रहती थी, वह मेरे भीतर अन्य सभी सुखों से बिल्कुल अलग, अवर्णनीय सुखों की एक श्रृंखला का निर्माण करती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि एक-दूसरे से गहराई से गुंथी हुई वे छापें, जो उन्हें संगीतमय संगत प्रदान करती थीं, मेरे अवचेतन मन में उन सुखों की कहीं अधिक विशेषता थीं, जितनी कि मैं उन्हें बता सकता था। इस दृष्टिकोण से, वह नई दुनिया जिसमें आज सुबह की धुंध ने मुझे डुबो दिया था, एक ऐसी दुनिया थी जिसे मैं पहले से जानता था (जिसने इसे और अधिक वास्तविक बना दिया) और कुछ समय के लिए भुला दिया था (जिसने इसकी नवीनता को बहाल कर दिया)। और मैं धुंध भरे परिदृश्यों की कई तस्वीरें देख सका जो मेरी स्मृति में संजोई हुई थीं, विशेष रूप से 'डोंसिएरेस में सुबह' की एक

श्रृंखला, जिसमें बैरक में मेरी पहली सुबह और एक अन्य तस्वीर शामिल थी, जो एक पड़ोसी ग्रामीण घर में ली गई थी, जहाँ मैं सेंट-लूप के साथ रात बिताने गया था: जिसमें खिड़कियों से, जिनके पर्दे मैंने भोर में बिस्तर पर जाने से पहले हटा दिए थे, पहली तस्वीर में एक सैनिक, और दूसरी तस्वीर में (एक तालाब और जंगल के पतले किनारे पर, जिसका बाकी हिस्सा धुंध की एकसमान और तरल कोमलता में डूबा हुआ था) एक कोचवान पट्टा चमकाने में व्यस्त दिखाई दिया। ये दुर्लभ आकृतियाँ मुझे उन दुर्लभ आकृतियों की तरह दिखाई दीं, जो धुंधली भित्तिचित्र से उभरती हैं, और जिन्हें अपनी रहस्यमय धुंधली रोशनी के अनुकूल ढलना पड़ता है।

आज दोपहर मैं अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे इन तस्वीरों को देख रहा था, क्योंकि मैं बिस्तर पर वापस चला गया था ताकि उस समय का इंतज़ार कर सकूँ जब मेरे माता-पिता, जो कुछ दिनों के लिए कॉम्ब्रे गए थे, घर पर न हों। मैं उनका फ़ायदा उठाकर उस शाम श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में होने वाले एक छोटे से नाटक को देखने जाना चाहता था। अगर वे घर पर होते तो शायद मैं बाहर जाने की हिम्मत न करता; मेरी माँ, मेरी दादी की स्मृति के प्रति अपने आदर के कारण, चाहती थीं कि उनके प्रति दिखाई जाने वाली श्रद्धांजलि पूरी ईमानदारी और खुले दिल से दी जाए; वे मुझे इस सैर के लिए मना नहीं करतीं, बल्कि इसका विरोध करतीं। दूसरी ओर, अगर मैंने कॉम्ब्रे से उसकी इच्छा पूछी होती, तो वह उदास स्वर में यह उत्तर नहीं देती: "जो मन करे करो; अब तुम इतने बड़े हो गए हो कि सही-गलत का बोध कर सको," बल्कि मुझे पेरिस में अकेला छोड़ने के लिए खुद को दोषी ठहराते हुए और मेरे दुख की तुलना अपने दुख से करते हुए, मेरे लिए कुछ ऐसे मनोरंजन की कामना करती जो वह स्वयं के लिए नहीं करती, और जिसके बारे में वह खुद को समझाती कि मेरी दादी, जो मेरी सेहत और मेरे मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए सबसे ज्यादा चिंतित थीं, मुझे ऐसा करने की सलाह देतीं।

उस सुबह नए स्टीम हीटर का फर्नेस पहली बार जलाया गया था। उसकी अप्रिय आवाज़—एक रुक-रुक कर आने वाली हिचकी—का मेरे मन में डोंसिएरेस की यादों से कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन आज दोपहर मेरे अंदर उसका उनके साथ लंबे समय तक संपर्क होने से

उसके साथ एक ऐसा अटूट जुड़ाव बन गया कि जब भी, उसे लगभग भूलने के बाद, मैं केंद्रीय हीटर की हिचकी फिर से सुनता, तो वह मुझे उनकी याद दिला देती थी।

घर में फ्रांस्वा के सिवा कोई और नहीं था। धरती पर हल्की बारिश की तरह गिरती धुंधली रोशनी लगातार एक पारदर्शी जाल बुन रही थी, जिसके बीच रविवार की छुट्टी मनाने वाले लोग चांदी जैसी चमक में दिखाई दे रहे थे। मैंने अपने बिस्तर के पास फिगारो अखबार रख दिया था, जिसे मैं हर सुबह नियमित रूप से मंगवाता था, जब से मैंने एक लेख भेजा था जो अभी तक छपा नहीं था; सूरज न होने के बावजूद, दिन की रोशनी इतनी तेज़ थी कि लग रहा था जैसे अभी दोपहर ही बीती हो। जालीदार खिड़की के पर्दे, जो किसी अच्छे दिन में इतने धुंधले और नाजुक नहीं होते, उनमें वही सुंदरता और कोमलता का मिश्रण था जो ड्रैगनफ्लाई के पंखों और वेनिस के कांच में होता है। मुझे और भी उदास कर रहा था कि मुझे यह रविवार अकेले बिताना पड़ रहा है क्योंकि मैंने उस सुबह मैडम डी स्टरमारिया को एक पत्र भेजा था। रॉबर्ट डी सेंट-लूप, जिन्हें उनकी माँ ने कई दर्दनाक और असफल प्रयासों के बाद आखिरकार उनकी प्रेमिका से अलग करने में सफलता प्राप्त की थी, और जिन्हें तुरंत बाद मोरक्को भेज दिया गया था, इस उम्मीद में कि वहाँ वे उस महिला को भूल जाएँगे जिससे उनका प्रेम कुछ समय के लिए समाप्त हो गया था, ने मुझे एक पत्र भेजा था, जो मुझे एक दिन पहले मिला था, जिसमें उन्होंने फ्रांस में थोड़े समय की छुट्टी पर आने की सूचना दी थी। चूंकि वे केवल पेरिस से गुजर रहे थे (जहाँ उनका परिवार निस्संदेह राहेल के साथ उनके संबंधों को फिर से जोड़ने से डरा हुआ था), उन्होंने मुझे यह दिखाने के लिए सूचित किया कि वे मेरे बारे में सोच रहे थे, कि उनकी मुलाकात टैंजियर माइल में हुई थी, या यूँ कहें कि श्रीमती (क्योंकि उन्होंने शादी के तीन महीने बाद ही अपने पति को तलाक दे दिया था) डी स्टरमारिया से। और रॉबर्ट को याद था कि मैंने उन्हें बालबेक में क्या बताया था, इसलिए उन्होंने मेरी ओर से उनसे एक मुलाकात की व्यवस्था करने का अनुरोध किया था। उन्होंने रॉबर्ट को बताया था कि ब्रिटनी लौटने से पहले पेरिस में बिताई जाने वाली शामों में से किसी एक शाम को वे मेरे साथ भोजन करके प्रसन्न होंगी। उन्होंने मुझे श्रीमती को पत्र लिखने में देरी न करने की चेतावनी दी। डी स्टरमारिया, क्योंकि वह निश्चित रूप से मेरे पत्र मिलने से पहले ही आ चुकी होती। यह मेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, हालाँकि मेरी दादी की अंतिम बीमारी के समय से मुझे

उसकी कोई खबर नहीं मिली थी, जब उसने मुझ पर विश्वासघात और धोखे का आरोप लगाया था। तब यह समझना बहुत आसान था कि क्या हुआ होगा। राहेल, जिसे उसकी ईर्ष्या को भड़काना अच्छा लगता था—उसके मुझे नुकसान पहुँचाने के अन्य कारण भी थे—ने अपने प्रेमी को यह विश्वास दिला दिया था कि मैंने उसकी अनुपस्थिति में उसके साथ संबंध बनाने का घिनौना प्रयास किया था। संभव है कि वह इस आरोप की सच्चाई पर विश्वास करता रहा हो, लेकिन उसने राहेल से प्रेम करना छोड़ दिया था, जिसका अर्थ था कि इसकी सच्चाई या झूठ उसके लिए पूरी तरह से महत्वहीन हो गया था, और केवल हमारी दोस्ती ही बची थी। जब उससे दोबारा मिलने पर मैंने उससे मुझ पर किए गए उसके हमले के बारे में बात करने की कोशिश की, तो उसका एकमात्र जवाब एक सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण मुस्कान थी, जिससे ऐसा लगा जैसे वह मुझसे क्षमा मांग रहा हो; फिर उसने बातचीत का रुख बदल दिया। इन सब बातों का यह अर्थ नहीं था कि कुछ समय बाद पेरिस में रहने के दौरान वह राहेल से कभी-कभार नहीं मिलता था। जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले साथी बहुत कम ही अचानक और पूरी तरह से गायब हो जाते हैं। वे कभी-कभी (इतना कि लोगों को पुराने प्यार के फिर से जागने का आभास होने लगता है) जीवन में अपना पुराना स्थान ग्रहण करने के लिए लौट आते हैं, और फिर हमेशा के लिए चले जाते हैं। राहेल की लगातार पैसों की माँगों से मिलने वाले सुख के कारण सेंट-लूप का राहेल से अलगाव जल्द ही उसके लिए कम दर्दनाक हो गया था। ईर्ष्या, जो प्रेम की अवधि को बढ़ाती है, कल्पना के अन्य रूपों की तुलना में बहुत अधिक तत्वों को समाहित करने में सक्षम नहीं है। यदि कोई व्यक्ति यात्रा शुरू करते समय अपने साथ तीन-चार छवियाँ ले जाता है, जिन्हें वह संयोगवश रास्ते में खो देगा (जैसे पोंटे वेकियो पर ढेर सारे लिली और एनीमोन, या कोहरे में लिपटा फ़ारसी चर्च), तो उसका संदूक पहले से ही काफी भरा हुआ होता है। जब कोई अपनी प्रेमिका से विदा लेता है, तो उसे इस बात की उतनी ही खुशी होती है, जब तक कि वह उसे भूलना शुरू न कर दे, कि वह तीन-चार संभावित संरक्षकों की संपत्ति न बन जाए, जिनके बारे में वह मन ही मन सोचता है और जिनसे वह ईर्ष्या करता है: वे सभी जिनका वह इस तरह से चित्रण नहीं करता, उसका कोई महत्व नहीं होता। अब, त्यागी हुई प्रेमिका द्वारा बार-बार पैसे की मांग करना उसके जीवन के बारे में उतनी ही जानकारी नहीं देता जितनी कि बुखार दर्शाने वाले चार्ट उसकी बीमारी का पूरा अंदाजा नहीं

देते। लेकिन बाद वाला कम से कम इस बात का संकेत तो देता है कि वह बीमार थी, और पहले वाला एक अस्पष्ट अनुमान प्रदान करता है कि त्यागी गई प्रेमिका (चाहे वह कोई भी हो) को धनी संरक्षकों के रूप में कुछ खास नहीं मिला होगा। और इसलिए हर मांग का स्वागत उस खुशी के साथ किया जाता है जो ईर्ष्यालु व्यक्ति के कष्टों में शांति लाती है, और वह तुरंत पैसे भेजकर जवाब देता है, क्योंकि स्वाभाविक रूप से वह यह सोचना पसंद नहीं करता कि उसे किसी चीज की कमी हो, सिवाय प्रेमियों के (उसके मन में बसे तीन प्रेमियों में से एक), जब तक कि समय उसे शांत होने और बिना किसी भावना के अपने उत्तराधिकारी का नाम जानने में सक्षम न बना दे। कभी-कभी राहेल इतनी देर रात आती थी कि वह अपने पूर्व प्रेमी से सुबह तक उसके बगल में लेटने की अनुमति मांग लेती थी। यह रॉबर्ट के लिए बहुत सुकून देने वाला था, क्योंकि इससे उसे याद आ जाता था कि वे दोनों कितने अंतरंगता से एक साथ रहे थे, और यह देखकर कि भले ही वह बिस्तर का अधिकांश हिस्सा अपने लिए ले लेता था, उसकी नींद में जरा भी खलल नहीं पड़ता था। उसने महसूस किया कि उसके शरीर के करीब लेटने में उसे कहीं और लेटने की तुलना में अधिक आराम मिलता था, कि उसके बगल में लेटने पर - यहां तक कि एक होटल में भी - उसे ऐसा लगता था जैसे वह किसी पुराने परिचित शयनकक्ष में है, जहां आदत हावी होती है और नींद बेहतर आती है। उसे ऐसा महसूस होता था कि उसके कंधे, उसके अंग, उसका पूरा शरीर उसी के लिए है, यहाँ तक कि जब वह अनिद्रा या रात में उठने के कारण अत्यधिक बेचैन होता था, तब भी ये चीजें इतनी सामान्य थीं कि वे उसे परेशान नहीं कर सकती थीं, और उनकी अनुभूति से उसकी शांति की भावना और भी बढ़ जाती थी।

जहां हम थे, वहीं वापस आते हुए, रॉबर्ट के पत्र ने मुझे और भी बेचैन कर दिया था क्योंकि मैं उसके लिखे शब्दों के बीच छिपे अर्थ को समझ गया था, जिसे उसने स्पष्ट रूप से कहने की हिम्मत नहीं की थी। उसने मुझसे कहा, "तुम उसे निजी कमरे में भोजन के लिए ज़रूर कह सकते हो। वह एक आकर्षक युवती है, उसका स्वभाव बहुत ही प्यारा है, तुम उसके साथ बहुत अच्छे से घुल-मिल जाओगे, और मुझे यकीन है कि तुम दोनों की शाम बहुत अच्छी बीतेगी।" चूंकि मेरे माता-पिता सप्ताह के अंत में शनिवार या रविवार को लौट रहे थे, और उसके बाद मुझे हर शाम घर पर ही भोजन करना पड़ता, इसलिए मैंने तुरंत श्रीमती डी

स्टरमारिया को पत्र लिखकर शुक्रवार तक किसी भी शाम का प्रस्ताव रखा जो उन्हें ठीक लगे। मुझे संदेश मिला कि मुझे उसी शाम लगभग आठ बजे उनका पत्र मिलेगा। अगर दोपहर के उस समय में, जब तक मुझे उनका पत्र नहीं मिला, कोई और मुझसे मिलने आ जाता, तो समय जल्दी बीत जाता। जब घंटों बातचीत में बीत जाते हैं, तो इंसान उन्हें गिनना या उन पर ध्यान देना भूल जाता है; वे गायब हो जाते हैं, और अचानक वह फुर्तीला, चंचल समय फिर से प्रकट हो जाता है, उस बिंदु से बहुत दूर जहाँ से वह ओझल हो गया था। लेकिन अगर हम अकेले हैं, तो हमारी व्यस्तता, टिक-टिक करते पेंडुलम की तरह बार-बार और एकरूपता से उस दूर और निरंतर प्रतीक्षित क्षण को हमारे सामने लाकर, घंटों को उन सभी मिनटों से विभाजित या गुणा कर देती है, जिन्हें अगर हम दोस्तों के साथ होते तो गिन भी नहीं पाते। और अपनी इच्छा के निरंतर पुनरावर्तन के सामने, उस तीव्र आनंद के साथ जिसका स्वाद मैं आज दोपहर (हालांकि अफसोस, कुछ दिनों तक नहीं!) श्रीमती डी स्टरमारिया की संगति में चखने वाला था, जो दोपहर मुझे अकेले बितानी थी, मुझे बहुत खाली और उदास सी लगी।

बीच-बीच में मुझे लिफ्ट के ऊपर आने की आवाज़ सुनाई देती थी, लेकिन उसके बाद एक दूसरी आवाज़ भी आती थी, वो आवाज़ नहीं जिसकी मुझे उम्मीद थी, यानी हमारे लैंडिंग पर लिफ्ट के रुकने की आवाज़, बल्कि एक बिल्कुल अलग आवाज़ जो लिफ्ट ऊपर की मंजिलों की ओर बढ़ते हुए निकालती थी। और क्योंकि अक्सर इसका मतलब होता था कि जब मैं किसी मेहमान का इंतज़ार कर रही होती थी, तब मेरी मंजिल खाली हो जाती थी, इसलिए कई बार, यहाँ तक कि जब मैं किसी से मिलना नहीं चाहती थी, तब भी वो आवाज़ मेरे लिए उदास कर देने वाली होती थी, मानो उसमें एकांत कारावास की सज़ा गूँज रही हो। थका हुआ, निराश, कई घंटों से अपने पुराने काम में व्यस्त, धूसर दिन अपनी झिलमिलाती रोशनी और छाया की कढ़ाई कर रहा था, और यह सोचकर मुझे दुख होता था कि मुझे उस चीज़ के साथ अकेला छोड़ दिया जाएगा जो मुझे उतना ही जानती है जितना कि एक दर्जी जो खिड़की के पास बैठकर अपना काम पूरा करते समय बेहतर देख सके, और कमरे में मौजूद व्यक्ति पर कोई ध्यान न दे। अचानक, हालांकि मुझे कोई घंटी सुनाई नहीं दी थी, फ्रांस्वा ने दरवाजा खोलकर अल्बर्टीन को अंदर आने दिया। वह मुस्कुराती हुई, चुपचाप, गोल-मटोल, अपने भरे-पूरे शरीर में समाई हुई आगे आई, मानो तैयार हो कि मैं उन दिनों को फिर से जी सकूँ, मुझे

ढूंढने आ सकूँ, जो हमने उस बालबेक में साथ बिताए थे, जहाँ मैं उसके बाद कभी नहीं लौटा था। निस्संदेह, जब भी हम किसी ऐसे व्यक्ति से दोबारा मिलते हैं जिसके साथ हमारे रिश्ते—चाहे वे कितने ही मामूली क्यों न रहे हों—बदल गए हों, तो यह दो अलग-अलग कालों के मेल जैसा होता है। इसके लिए हमें यह ज़रूरी नहीं कि कोई पूर्व प्रेमिका एक दोस्त के रूप में हमसे मिलने आए, हमें बस इतना चाहिए कि कोई ऐसा व्यक्ति पेरिस आए जिसे हम किसी खास तरह के जीवन के दैनिक चक्र में जानते थे, और वह जीवन हमारे लिए समाप्त हो गया हो, मानो एक सप्ताह पहले ही समाप्त हुआ हो। अल्बर्टीन के मुस्कुराते, सवालिया, शरमाते चेहरे पर मैं सवाल पढ़ सकता था: "और मैडम डी विलेपारिसिस? और नृत्य-शिक्षक? और पेस्ट्री-रसोइया?" जब वह बैठी तो उसकी पीठ मानो कह रही हो: "अरे वाह! यहाँ कोई चट्टान नहीं है; अगर मैं तुम्हारे बगल में बैठ जाऊँ, तो तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी, जैसे मैं बालबेक में बैठती थी?" वह किसी जादूगरनी की तरह थी जो मुझे समय को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण दे रही हो। इस मायने में वह उन सभी लोगों जैसी थी जिनसे हम अब कम ही मिलते हैं, लेकिन जिनके साथ कभी हमारा बहुत घनिष्ठ संबंध था। लेकिन अल्बर्टीन के साथ कुछ और भी था। निश्चित रूप से, बालबेक में भी, हमारी रोज़ाना की मुलाकातों में, जब भी वह नज़र आती थी, मैं हमेशा हैरान रह जाता था, क्योंकि उसका रूप-रंग दिन-प्रतिदिन बदलता रहता था। लेकिन अब उसे पहचानना मुश्किल था। गुलाबी धुंध से मुक्त होकर, जो कभी उसके चेहरे को ढक लेती थी, उसके चेहरे के भाव किसी मूर्ति की तरह उभर आए थे। उसका एक अलग चेहरा था, या यूँ कहें कि आखिरकार उसका एक चेहरा था; उसका शरीर भी विकसित हो गया था। अब उस खोल का लगभग कुछ भी शेष नहीं बचा था जिसमें वह कैद थी और जिसकी सतह पर, बालबेक में, उसके भविष्य की रूपरेखा मुश्किल से दिखाई देती थी।

इस बार अल्बर्टीन हमेशा की तरह जल्दी पेरिस लौट आई थी। आम तौर पर वह बसंत ऋतु में ही आती थी, जिसका मतलब यह था कि पिछले कुछ हफ्तों से पहले खिल रहे तूफानों से परेशान होकर, मुझे जो आनंद महसूस हो रहा था, उसमें अल्बर्टीन की वापसी और सुहावने मौसम के बीच कोई खास अंतर नहीं दिख रहा था। इतना ही काफी था कि मुझे बताया गया कि वह पेरिस में है और घर आई थी, मानो मैं उसे फिर से देख पा रहा हूँ, जैसे समुद्र किनारे खिलता हुआ गुलाब। मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसे क्षणों में मुझ पर बालबेक की चाहत

हावी हो रही थी या उसकी; शायद उसके लिए मेरी चाहत ही बालबेक को पाने का एक आलसी, कायर और अधूरा तरीका था, मानो किसी वस्तु को भौतिक रूप से पाना, किसी शहर में बस जाना, उसे आध्यात्मिक रूप से पाने के बराबर हो। इसके अलावा, भौतिक रूप से भी, जब वह मेरी कल्पना में समुद्र के क्षितिज के सामने खड़ी नहीं होती थी, बल्कि मेरे साथ एक कमरे में स्थिर बैठी होती थी, तो वह मुझे अक्सर एक बहुत ही दयनीय गुलाब का नमूना लगती थी, इतनी दयनीय कि मैं खुशी-खुशी अपनी आँखें बंद कर लेता ताकि उसकी पंखुड़ियों के इस या उस दोष को न देखूँ, और इसके बजाय यह कल्पना करूँ कि मैं समुद्र तट पर नमकीन हवा में सांस ले रहा हूँ।

मुझे इस बिंदु पर यह कहना ही होगा, हालांकि उस समय मुझे इस बात का अंदाजा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है। निश्चित रूप से, अपना जीवन डाक टिकटों या पुरानी तंबाकू की डिब्बियों, यहां तक कि चित्रों या मूर्तियों की तुलना में महिलाओं को समर्पित करना कहीं अधिक तर्कसंगत है। अन्य संग्राहकों का उदाहरण ही हमें बदलाव लाने, केवल एक महिला को नहीं बल्कि अनेक महिलाओं को अपने संग्रह में शामिल करने की चेतावनी देता है। वे मनमोहक कल्पनाएँ जिनमें एक लड़की समुद्र तट, चर्च में किसी मूर्ति के गुंथे हुए बाल, एक पुरानी तस्वीर, और हर वो चीज जो उसे देखने और उसकी प्रशंसा करने पर मजबूर करती है, जब भी वह प्रकट होती है, एक आकर्षक रचना की तरह लगती हैं, वे कल्पनाएँ स्थिर नहीं होतीं। किसी महिला के साथ जीवन बिताने पर आप जल्द ही उन चीजों को देखना बंद कर देंगे जिनकी वजह से आप उससे प्यार करते थे; हालांकि मुझे यह भी कहना होगा कि ईर्ष्या इन दो अलग-अलग तत्वों को फिर से जोड़ सकती है। यदि लंबे समय तक साथ रहने के बाद, मैं अल्बर्टीन को एक साधारण स्त्री से अधिक कुछ न समझ पाऊं, तो भी उसके और बालबेक में उसके द्वारा प्रेम किए गए किसी व्यक्ति के बीच का कोई षडयंत्र शायद उसके भीतर समुद्र तट और ज्वार के प्रवाह को पुनर्जीवित करने, उन्हें समाहित करने के लिए पर्याप्त होगा। लेकिन, चूंकि ये गौण संकेत अब हमारी आंखों को मोहित नहीं करते, इसलिए ये हृदय पर ही प्रभाव डालते हैं और घातक सिद्ध होते हैं। इतने खतरनाक रूप में, हम चमत्कार की पुनरावृत्ति को वांछनीय वस्तु नहीं मान सकते। लेकिन मैं आने वाले वर्षों के क्रम का पूर्वाभास कर रहा हूं। और यहां मुझे केवल इस बात का खेद व्यक्त करना है कि मुझमें इतनी समझ

नहीं थी कि मैं महिलाओं के अपने संग्रह को उसी प्रकार सहेज कर रखूं जैसे लोग अपने पुराने क्रिज़िंग ग्लास के संग्रह को रखते हैं, चाहे वह कितना भी पूर्ण क्यों न हो, अपनी अलमारी में, ताकि हमेशा एक और दुर्लभ के लिए जगह न हो।

अपनी छुट्टियों के सामान्य क्रम से हटकर, इस वर्ष वह सीधे बालबेक से आई थी, जहाँ वह हमेशा की तरह देर तक नहीं रुकी थी। मुझे उसे देखे हुए काफी समय हो गया था, और चूंकि मैं पेरिस में उसके साथ मेलजोल रखने वाले लोगों को नाम तक नहीं जानता था, इसलिए जब वह मुझसे मिलने नहीं आती थी, तो मैं उसके बारे में कोई राय नहीं बना पाता था। यह सिलसिला अक्सर काफी लंबा चलता था। फिर, एक दिन अचानक अल्बर्टीन आ जाती, जिसकी गुलाबी झलकियाँ और खामोश मुलाक़ातें मुझे इस बारे में कुछ खास जानकारी नहीं दे पातीं कि वह उस दौरान क्या कर रही होती थी, जो उसके गुप्त जीवन के उस अंधेरे में डूबा रहता था, जिसे भेदने की मेरी आँखें ज़रा भी इच्छा नहीं रखती थीं।

लेकिन इस बार, कुछ संकेतों से ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके जीवन में कोई नया अनुभव अवश्य प्रवेश कर चुका था। फिर भी, शायद, उनसे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि अल्बर्टीन जिस उम्र में पहुँच चुकी थी, उस उम्र में लड़कियाँ बहुत तेज़ी से बदलती हैं। उदाहरण के लिए, उनकी बुद्धिमत्ता अब अधिक स्पष्ट थी, और जब मैंने उन्हें उस दिन की याद दिलाई जब उन्होंने सोफोक्लीज से "मेरे प्रिय रेसीन" लिखवाने के अपने विचार की श्रेष्ठता पर बड़े उत्साह से ज़ोर दिया था, तो वे अपनी मूर्खता पर खुलकर हँस पड़ीं। "एंड्री बिल्कुल सही थी; यह मेरी मूर्खता थी," उन्होंने स्वीकार किया। "सोफोक्लीज को 'सर' से शुरू करना चाहिए था।" मैंने उत्तर दिया कि एंड्री के 'सर' और 'प्रिय सर' उनके अपने 'मेरे प्रिय रेसीन' या गिज़ेल के 'मेरे प्रिय मित्र' से कम हास्यास्पद नहीं थे, लेकिन वास्तव में मूर्ख तो वे प्रोफेसर थे जो अभी भी सोफोक्लीज से रेसीन को पत्र लिखवाते रहते थे। लेकिन यहाँ अल्बर्टीन मेरी बात समझ नहीं पा रही थी। उसे मेरी मूर्खता समझ नहीं आ रही थी; उसकी बुद्धि अभी विकसित हो रही थी, पर पूरी तरह नहीं। उसमें और भी आकर्षक बातें थीं; मुझे इस सुंदर लड़की में, जो अभी मेरे बिस्तर के पास बैठी थी, कुछ अलग सा महसूस हुआ; और आँखों और चेहरे की उन रेखाओं में, जो जीवन के प्रति व्यक्ति के सामान्य दृष्टिकोण को व्यक्त करती हैं, एक बदलाव, एक आंशिक परिवर्तन, मानो अब वे प्रतिरोध चकनाचूर हो गए हों जिनके विरुद्ध मैंने बालबेक

में एक शाम व्यर्थ ही अपनी शक्ति झोंक दी थी, जो अब बहुत पुरानी बात हो गई है, जिस दिन हम एक जोड़े के रूप में थे, जो हमारे वर्तमान संबंध के बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि तब वह लेटी होती थी और मैं उसके बिस्तर के पास बैठा होता था। यह जानने की इच्छा रखते हुए कि क्या अब वह मुझे चूमने देगी, मैं हर बार जब वह उठकर जाने लगती, तो उससे थोड़ी देर और मेरे पास रुकने का अनुरोध करता। यह रियायत पाना आसान नहीं था, क्योंकि भले ही उसके पास करने को कुछ नहीं था (वरना वह घर से तुरंत निकल जाती), वह अपनी आदतों में व्यवस्थित थी और मेरे प्रति बहुत विनम्र भी नहीं थी, मेरी संगति में उसे सहजता महसूस नहीं होती थी। फिर भी, हर बार घड़ी देखकर वह मेरे कहने पर बैठ जाती थी, और अंततः उसने मेरे साथ कई घंटे बिताए, बिना मुझसे कुछ मांगे। मैं उससे जो बातें कह रहा था, वे तार्किक रूप से उन बातों से मेल खाती थीं जो मैंने पिछले घंटों में कही थीं, और उनका मेरे विचारों से कोई संबंध नहीं था। मेरी उससे जो इच्छा थी, वह अनिश्चित काल तक एक ही जगह अटकी रही। इच्छा जैसी कोई चीज नहीं है जो किसी के कहे गए शब्दों को उसके मन में चल रही बातों से अलग कर दे। समय कम है, फिर भी ऐसा लगता है मानो हम उन विषयों पर बात करके समय बिताने की कोशिश कर रहे हों जो हमारे मन में बसे विचारों से बिल्कुल अलग हैं। फिर हम तय करते हैं कि जो वाक्य हम बोलना चाहते हैं, उसके साथ, या यों कहें कि उससे पहले, एक इशारा किया जाए, यह मानते हुए कि हमें तुरंत प्रदर्शन का आनंद नहीं लेना है और इसके बाद होने वाली प्रतिक्रियाओं के बारे में अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए, बिना एक शब्द कहे, यहाँ तक कि 'आपकी अनुमति से' कहे बिना ही, यह इशारा कर दिया जाता है। निश्चित रूप से मैं अल्बर्टीन से ज़रा भी प्यार नहीं करता था; बाहर के कोहरे की संतान, वह केवल उस कल्पनाशील इच्छा को संतुष्ट कर सकती थी जिसे मौसम के परिवर्तन ने मुझमें जगाया था और जो रसोई की कलाओं और स्मारकीय मूर्तिकला द्वारा संतुष्ट होने वाली इच्छाओं के बीच में थी, क्योंकि इसने मुझे एक साथ अपने शरीर में एक भिन्न और गर्म पदार्थ को मिलाने और अपने फैले हुए शरीर से किसी बिंदु पर एक भिन्न शरीर को जोड़ने का सपना दिखाया, जैसे कि ईव का शरीर आदम के बगल में पैरों से मुश्किल से टिका हुआ है, जिसके शरीर के लिए उसका शरीर लगभग लंबवत है, बालबेक के चर्च पर उन रोमनस्क्यू बेस-रिलीफ में जो इतने महान और इतने शांत तरीके से, अभी भी लगभग एक शास्त्रीय फ्रिज़ की

तरह, स्त्री की रचना का प्रतिनिधित्व करते हैं; उनमें ईश्वर हर जगह दो सेवकों की तरह, दो छोटे स्वर्गदूतों की तरह दिखाई देते हैं, जिन्हें आगंतुक पहचानता है - पंखों वाले, झुंड में उड़ने वाले ग्रीष्म ऋतु के जीवों की तरह जिन्हें सर्दियों ने आश्चर्यचकित कर दिया और बख्श दिया - हरक्यूलेनियम के कामदेव, जो तेरहवीं शताब्दी तक अच्छी तरह से जीवित रहे, और अपनी अंतिम धीमी उड़ान भरते हुए, थके हुए लेकिन उनसे अपेक्षित अनुग्रह में कभी कमी नहीं आने देते, बरामदे के पूरे सामने।

इस सुख की बात करें, जो मेरी इच्छा पूरी करके मुझे इन विचारों से मुक्त कर देता और जिसे मैं किसी भी अन्य सुंदर स्त्री से उतनी ही आसानी से प्राप्त कर लेता, तो अगर मुझसे पूछा जाता कि इस अंतहीन बातचीत के दौरान, जिसमें मैंने अल्बर्टीन से अपने मन की बात छुपाने का पूरा ध्यान रखा, तो उसकी संभावित प्रसन्नता के बारे में मेरी आशावादी परिकल्पना किस पर आधारित थी, तो शायद मैं उत्तर देता कि यह परिकल्पना (जबकि अल्बर्टीन की आवाज़ की भूली हुई रूपरेखा मेरे लिए उसके व्यक्तित्व की रूपरेखा को फिर से दोहरा रही थी) कुछ ऐसे शब्दों के प्रकट होने के कारण थी जो उसकी शब्दावली का हिस्सा नहीं थे, या कम से कम उस अर्थ में नहीं थे जो वह अब उन्हें दे रही थी। इस प्रकार उसने रो से कहा कि एल्स्टर मूर्ख है, और मेरे विरोध करने पर:

"आप नहीं समझते," उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मेरा मतलब है कि उसका ऐसा व्यवहार करना मूर्खतापूर्ण था; बेशक मैं जानती हूं कि वह वास्तव में काफी प्रतिष्ठित व्यक्ति है।"

इसी तरह, फॉन्टेनब्लू गोल्फ क्लब के बारे में यह कहना चाहते हुए कि यह शानदार है, उन्होंने घोषणा की: "उनका चयन काफी अच्छा है।"

मेरे द्वारा लड़ी गई एक द्वंद्वयुद्ध की बात करते हुए, उन्होंने मेरे सहायकों के बारे में कहा: "कितने बेहतरीन सहायक हैं," और मेरे चेहरे को देखकर उन्होंने स्वीकार किया कि वह मुझे 'मूंछों के साथ' देखना चाहेंगी। उन्होंने यहाँ तक कह दिया (और तब मुझे लगा कि मेरे पास बहुत बड़ा मौका है) कि एक ऐसे वाक्यांश में, जिसके बारे में मुझे एक साल पहले तक यकीन था कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं है, कि जब से उन्होंने गिज़ेल को आखिरी बार देखा था, तब से एक निश्चित 'समय बीत गया' है। इसका मतलब यह नहीं था कि जब मैं बालबेक में था, तब

तक अल्बर्टीन के पास उन भावों का पर्याप्त संग्रह नहीं था, जो तुरंत यह प्रकट करते हैं कि किसी के लोग अच्छी स्थिति में हैं, और जो एक माँ साल दर साल अपनी बेटी को देती है, ठीक उसी तरह जैसे वह धीरे-धीरे, जैसे-जैसे लड़की बड़ी होती है, महत्वपूर्ण अवसरों पर उसे अपने गहने देती है। यह स्पष्ट था कि अल्बर्टीन अब छोटी बच्ची नहीं रही थी, जब एक दिन, एक अजनबी महिला द्वारा दिए गए उपहार के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हुए, उसने कहा: "मैं पूरी तरह से उलझन में हूँ।" बोंटेम्प्स ने अपने पति की ओर देखे बिना नहीं रह सकीं, जिनकी टिप्पणी थी:

"हे भगवान, चौदह साल की उम्र में तो वह काफी बूढ़ी लगती है।"

युवावस्था के आगमन का संकेत तब और भी स्पष्ट हो गया जब अल्बर्टीन ने एक दूसरी लड़की के बारे में, जिसकी आवाज़ खराब थी, कहा: "यह भी नहीं पता कि वह सुंदर है या नहीं, वह अपने चेहरे पर एक फुट मोटा मेकअप लगाती है।" अंततः, हालांकि वह अभी भी एक स्कूली छात्रा थी, उसने अपनी परवरिश और सामाजिक स्थिति के अनुरूप एक परिपक्व महिला का व्यवहार प्रदर्शित किया, जब उसने किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा जिसका चेहरा फड़क रहा था: "मैं उसे देख नहीं सकती, क्योंकि उसे देखकर मेरा भी वैसा ही करने का मन करता है," या, यदि किसी और की नकल की जा रही हो: "इसमें अजीब बात यह है कि जब आप उसकी आवाज़ की नकल करते हैं तो आप बिल्कुल उसी की तरह दिखते हैं।" ये सभी बातें सामाजिक परिवेश से ली गई हैं। लेकिन मुझे यह संभव नहीं लगता कि अल्बर्टीन के प्राकृतिक परिवेश ने उसे 'विशिष्ट' शब्द प्रदान किया हो, जिसका प्रयोग उस अर्थ में किया गया है जिस अर्थ में मेरे पिता किसी ऐसे सहकर्मी के बारे में कहते थे जिससे वे वास्तव में नहीं मिले थे, लेकिन जिसकी बौद्धिक उपलब्धियों की उन्होंने प्रशंसा सुनी थी: "ऐसा लगता है कि वह काफी विशिष्ट व्यक्ति है।" 'चयन' शब्द, यहाँ तक कि गोल्फ क्लब के संदर्भ में भी, मुझे साइमोनेट परिवार के साथ उतना ही असंगत लगा जितना कि डार्विन के शोधों से सदियों पहले प्रकाशित किसी पाठ के साथ 'प्राकृतिक' विशेषण का प्रयोग। 'समय का अंतराल' मुझे और भी बेहतर संकेत लगा। अंत में कुछ उथल-पुथल के प्रमाण मिले, जिनकी प्रकृति मुझे ज्ञात नहीं थी, लेकिन अल्बर्टीन द्वारा एक ऐसे व्यक्ति के संतोष के साथ घोषणा करने पर मेरी सभी आशाओं

को सही ठहराने के लिए पर्याप्त थे, जिसकी राय को किसी भी तरह से तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए:
"मेरे विचार से, यह सबसे अच्छी बात है जो हो सकती है। मैं इसे सबसे अच्छा समाधान मानता हूं, एक स्टाइलिश तरीका।"
यह इतना अनोखा था, इतना स्पष्ट रूप से एक जलोढ़ निक्षेप था जिससे यह संदेह होता था कि वह अब तक अज्ञात मिट्टी पर इस तरह की मनमौजी यात्राओं पर गई होगी, कि 'मेरे मन में' शब्द सुनते ही मैंने अल्बर्टीन को अपनी ओर खींच लिया, और 'मैं देखता हूँ' सुनते ही उसे अपने बिस्तर के किनारे बैठा दिया।
इसमें कोई शक नहीं कि मध्यम संस्कृति की महिलाएं, जब पढ़े-लिखे पुरुषों से शादी करती हैं, तो इस तरह की बातें उनके रहन-सहन का हिस्सा बन जाती हैं। और शादी की रात के बाद आने वाले बदलाव के कुछ ही समय बाद, जब वे अपने बचपन की सहेलियों से मिलने-जुलने और शर्माते हुए बात करने लगती हैं, तो हैरानी से यह बात सामने आती है कि अगर वे किसी व्यक्ति को बुद्धिमान बताते समय 'ल' शब्द का उच्चारण करती हैं, तो वे बिल्कुल परिपक्व हो चुकी होती हैं; लेकिन यह तो असल में उनके व्यक्तित्व में बदलाव का संकेत है, और मुझे यह अंतर तब समझ आया जब मैंने अपनी पुरानी परिचित अल्बर्टाइन की शब्दावली के बारे में सोचा—ऐसी शब्दावली जिसमें सबसे साहसी बात यह कहना होता था कि किसी भी असाधारण व्यक्ति के बारे में वे कहती थीं: 'वह एक अनोखा इंसान है,' या अगर आप उन्हें ताश खेलने का सुझाव देते, तो वे कहतीं: 'मेरे पास हारने के लिए पैसे नहीं हैं,' या फिर अगर उनकी कोई सहेली उन्हें ताना मारती, तो वे ऐसे शब्दों में कहतीं जो उन्हें अनुचित लगते थे: 'यह तो वाकई शानदार है!' ऐसे मामलों में एक अभिव्यक्ति एक प्रकार की मध्यमवर्गीय परंपरा द्वारा निर्धारित होती है जो लगभग मैग्निफिकैट जितनी ही पुरानी है, और एक ऐसी लड़की जो थोड़ी चिड़चिड़ी है और आश्वस्त है कि वह सही है, इसे 'बिल्कुल स्वाभाविक रूप से' इस्तेमाल करती है, यानी क्योंकि उसने ये शब्द अपनी माँ से सीखे हैं, ठीक वैसे ही जैसे उसने प्रार्थना करना या किसी मित्र का अभिवादन करना सीखा है। ये सभी अभिव्यक्तियाँ श्रीमती बोंटेम्प्स ने उसे यहूदियों के प्रति घृणा और अश्वेतों के प्रति उसकी भावना के साथ ही सिखाई थीं, जो हमेशा उपयुक्त और उचित थी, वास्तव में बिना किसी औपचारिक शिक्षा के,

क्योंकि जैसे माता-पिता गोल्डफिंच की चहचहाहट नवजात बच्चों के लिए एक आदर्श का काम करती है, ताकि वे भी सच्चे गोल्डफिंच बन सकें। लेकिन अंत में, 'चयन' मुझे पराया लगा और 'मैं मानता हूँ' उत्साहजनक। अल्बर्टीन अब पहले जैसी नहीं रही; जिसका अर्थ था कि शायद वह पहले की तरह व्यवहार नहीं करेगी, पहले की तरह प्रतिक्रिया नहीं देगी।
मुझे न सिर्फ उसके लिए कोई प्यार नहीं रह गया था, बल्कि बालबेक में मुझे इस बात का भी ख्याल नहीं रखना पड़ता था कि कहीं उसके मन में मेरे लिए जो स्नेह था, वह टूट न जाए, क्योंकि वह अब मौजूद ही नहीं था। इसमें कोई शक नहीं था कि वह मेरे प्रति काफी उदासीन हो चुकी थी। मैं भली-भांति जानता था कि उसके लिए मैं अब उस 'छोटे समूह' का हिस्सा नहीं था, जिसमें शामिल होने के लिए मैंने कभी इतनी बेसब्री से कोशिश की थी और फिर प्रवेश पाकर इतना खुश हुआ था। इसके अलावा, चूंकि बालबेक के दिनों की तरह अब उसमें खुले दिल से अच्छे स्वभाव का भाव भी नहीं था, इसलिए मुझे कोई गंभीर संकोच नहीं हुआ: फिर भी मुझे लगता है कि जिस बात ने मुझे अंततः निर्णय लेने पर मजबूर किया, वह एक और भाषावैज्ञानिक खोज थी। जैसे-जैसे मैं अपनी अंतरंग इच्छा को छुपाने के लिए बाहरी बातचीत की कड़ी में नए-नए सूत्र जोड़ता गया, अल्बर्टीन को अपने बिस्तर के कोने पर सुरक्षित बिठाकर, मैंने उस छोटे समूह की एक लड़की के बारे में बात की, जो बाकियों से छोटी थी, फिर भी मुझे वह काफी सुंदर लगी थी। तभी अल्बर्टीन ने जवाब दिया, "हाँ, वह मुझे एक छोटी मौस्मे की याद दिलाती है।" जब मैं पहली बार अल्बर्टीन से मिली थी, तब दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे यह पता चले कि उसने कभी 'मूस्मे' शब्द सुना भी था। संभव था कि अगर सब कुछ सामान्य रूप से चलता, तो वह इसे कभी नहीं सीख पाती, और मुझे इसमें कोई अफसोस नहीं होता, क्योंकि भाषा में इससे बुरा शब्द कोई नहीं है। इसका नाम सुनते ही दांतों में वैसे ही दर्द होने लगता है जैसे मुंह में बर्फ का बड़ा चम्मच डालने पर होता है। लेकिन अल्बर्टीन के मुंह से, जो वहां इतनी सुंदर बैठी थी, यह शब्द सुनकर मुझे 'मूस्मे' शब्द भी अप्रिय नहीं लगा। इसके विपरीत, मुझे लगा कि यह एक रहस्योद्घाटन है, अगर बाहरी दीक्षा का नहीं, तो कम से कम आंतरिक विकास का। दुर्भाग्य से, अब मुझे उसे अलविदा कहना था अगर मैं चाहती थी कि वह अपने खाने के समय तक घर पहुंच जाए, और मैं भी अपने खाने के समय तक बिस्तर से उठकर तैयार हो जाऊं। खाना तैयार करने का काम फ्रांस्वा कर रही थी;

उसे इसे रोके रखना पसंद नहीं था, और उसने शायद पहले ही इसे अपनी नैतिक संहिता के किसी अनुच्छेद का उल्लंघन मान लिया होगा कि मेरे माता-पिता की अनुपस्थिति में अल्बर्टीन इतनी देर तक मुझसे मिलने आ रही है, और इस वजह से सब कुछ देर हो जाएगा। लेकिन 'मौस्मे' से पहले ये सारे तर्क धराशायी हो गए और मैंने जल्दी से कहा:

"बस कल्पना कीजिए; मुझे जरा भी गुदगुदी नहीं होती; आप मुझे एक घंटे तक लगातार गुदगुदी करते रह सकते हैं और मुझे पता भी नहीं चलेगा।"

"वास्तव में?"

मैं आपको आश्वस्त करता हूँ।

वह निःसंदेह समझ गई थी कि यह मेरी ओर से एक इच्छा की अटपटी अभिव्यक्ति थी, क्योंकि यह उस व्यक्ति की तरह थी जो आपको परिचय कराने की पेशकश करता है जिसके लिए आपने उससे पूछने का साहस नहीं किया है, हालांकि आपने जो कहा है उससे उसे पता चल गया है कि यह आपके लिए बहुत उपयोगी होगा।

"क्या आप चाहेंगे कि मैं कोशिश करूं?" उसने स्त्रीत्वपूर्ण विनम्रता के साथ पूछा।

"जैसा आपको पसंद हो, लेकिन अगर आप बिस्तर पर ठीक से लेट जाएं तो आपको ज्यादा आराम मिलेगा।"

"उस तरह?"

"नहीं; बिल्कुल शीर्ष पर पहुंचो।"

"क्या आपको यकीन है कि मेरा वजन ज्यादा नहीं है?"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, दरवाज़ा खुला और फ़्रांस्वा, हाथ में एक दीपक लिए, अंदर आई। अल्बर्टीन को बस इतना ही समय मिला कि वह अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर गिर पड़ी। शायद फ़्रांस्वा ने हमें भ्रमित करने के लिए यही क्षण चुना था, वह दरवाज़े पर कान लगाकर सुन रही थी या शायद चाबी के छेद से झाँक रही थी। लेकिन ऐसा कुछ भी सोचने की ज़रूरत नहीं थी; उसने अपनी आँखों से उस बात की पुष्टि करने की ज़हमत भी नहीं उठाई होगी जो उसकी अंतरात्मा ने स्पष्ट रूप से जान ली होगी, क्योंकि मेरे और मेरे माता-पिता के साथ रहने के कारण उसके डर, उसकी समझदारी, उसकी सतर्कता और उसकी चतुराई ने उसे हम सबके बारे में वह सहज और लगभग भविष्यसूचक ज्ञान दे दिया था जो एक नाविक को समुद्र

के बारे में, शिकारी को शिकार के बारे में और बीमारी के बारे में, यदि चिकित्सक के बारे में नहीं, तो अक्सर रोगी के बारे में होता है। उसने जो ज्ञान अर्जित किया था, वह किसी अजनबी को चकित कर देता, और यह उतना ही उचित है जितना कि प्राचीन काल में कुछ कलाओं और विज्ञानों की उन्नत स्थिति, क्योंकि उनके लिए जानकारी का व्यावहारिक रूप से कोई स्रोत उपलब्ध नहीं था। (उसके स्रोत भी सीमित थे। वे कुछ अनौपचारिक टिप्पणियाँ थीं जो रात के खाने पर हमारी बातचीत का मुश्किल से बीसवाँ हिस्सा थीं, जिन्हें बटलर ने चलते-फिरते पकड़ लिया और रसोई तक गलत तरीके से पहुँचा दिया।) फिर से, उसकी गलतियाँ, उनकी तरह, प्लेटो की कहानियों की तरह, दुनिया की गलत धारणा और पूर्वकल्पित विचारों के कारण थीं, न कि उसके पास उपलब्ध सामग्री की कमी के कारण। क्या अभी कुछ ही दिन पहले, कीड़ों की आदतों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण खोजें एक ऐसे वैज्ञानिक द्वारा संभव नहीं थीं, जिसके पास कोई प्रयोगशाला नहीं थी और जिसने किसी भी प्रकार के उपकरणों का उपयोग नहीं किया था? लेकिन अगर उसकी निम्न स्थिति से उत्पन्न बाधाओं ने उसे उस कला के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने से नहीं रोका, जो उसका अंतिम लक्ष्य था—और जिसका उद्देश्य हमें अपनी खोजों के परिणामों से अवगत कराकर भ्रमित करना था—तो उसके काम करने की सीमाओं ने कहीं अधिक प्रभाव डाला; इस मामले में, बाधा ने न केवल उसकी कल्पना की उड़ान को पंगु होने से रोका, बल्कि उसे बहुत मजबूत भी किया। बेशक, फ्रांस्वा ने कभी भी बनावटी बातों का इस्तेमाल नहीं किया, जैसे कि शब्दों का चुनाव और व्यवहार। (भले ही वह हमारी बातों पर विश्वास नहीं करती थी, इस उम्मीद में कि वह विश्वास कर लेगी) वह बिना किसी संदेह के किसी भी बात को सच मान लेती थी, चाहे वह बात उसके जैसी स्थिति वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा कही गई हो, चाहे वह कितनी भी बेतुकी क्यों न हो, और हमारे विचारों के लिए चौंकाने वाली क्यों न हो। जिस तरह से वह हमारी बातों को सुनती थी, उससे उसकी अविश्वास की भावना झलकती थी, उसी तरह जिस लहजे में उसने (अप्रत्यक्ष भाषा का प्रयोग करके वह हम पर बेखौफ होकर सबसे घातक अपमान कर सकती थी) एक रसोइए की कहानी सुनाई, जिसने उसे बताया था कि कैसे उसने अपने मालिकों को धमकाया था और सबके सामने उनका अपमान करके उनसे कई विशेषाधिकार और रियायतें हासिल की थीं, उससे पता चलता था कि वह कहानी उसके लिए पवित्र सत्य थी। फ्रांस्वा ने यहाँ तक

कह दिया: "मुझे यकीन है, अगर मैं मालकिन होती तो मैं बहुत परेशान होती।" चौथी मंजिल पर रहने वाली महिला के प्रति हमारी शुरुआती सहानुभूति भले ही कम ही क्यों न हो, फिर भी इस भयावह उदाहरण की रिपोर्ट पर कंधे उचकाना व्यर्थ ही होगा, मानो यह कोई अविश्वसनीय कहानी हो; इसे सुनाते हुए, कहानीकार ने सबसे निर्विवाद, सबसे चिढ़ाने वाली पुष्टि की कुचलने वाली, चीर देने वाली शक्ति के साथ बोलने में सफलता प्राप्त की।

लेकिन सबसे बढ़कर, जिस प्रकार महान लेखक अक्सर एकाग्रता की ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेते हैं जिससे वे राजनीतिक स्वतंत्रता या साहित्यिक अराजकता की व्यवस्था में वंचित रह जाते, जब वे किसी सम्राट या काव्य शैली के अत्याचार, छंद-नियमों की कठोरता या राजकीय धर्म से बंधे होते हैं, उसी प्रकार फ्रांस्वा, हमसे स्पष्ट रूप से उत्तर देने में असमर्थ होने के कारण, टायरेसियस की तरह बोलीं और टैसिटस की तरह लिखतीं। उन्होंने वह सब कुछ एक वाक्य में समाहित कर लिया जिसे वे सीधे तौर पर व्यक्त नहीं कर सकीं, और इस बात के लिए हम स्वयं को दोषी ठहराए बिना उनकी आलोचना नहीं कर सकते थे, वास्तव में एक वाक्य से भी कम में, मौन में, जिस तरह से उन्होंने किसी वस्तु को कमरे में रखा।

इस प्रकार, जब मैंने गलती से अपनी मेज पर, अन्य पत्रों के ढेर के बीच, एक ऐसा पत्र छोड़ दिया जिसे वह न देखे, क्योंकि मान लीजिए, उसमें उसके प्रति ऐसी घृणा व्यक्त की गई थी जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि प्राप्तकर्ता के मन में भी उसके प्रति वही भावना थी जो पत्र लिखने वाले के मन में थी, तो उस शाम, जब मैं व्याकुल अंतरात्मा के साथ घर लौटा और सीधे अपने कमरे में गया, तो मेरे पत्रों के ढेर के ऊपर, करीने से व्यवस्थित, उस आपत्तिजनक दस्तावेज़ ने मेरी नज़र खींच ली, ठीक वैसे ही जैसे फ्रांस्वा की नज़र उस पर ज़रूर पड़ी होगी। उसने उसे सबसे ऊपर, बाकी पत्रों से लगभग अलग, इस तरह रखा था कि वह एक तरह की अभिव्यक्ति थी, जिसमें अपनी एक अलग ही वाक्पटुता थी, और जब मैं दरवाजे पर खड़ा था, तो उसे देखकर मैं सिहर उठा। वह इन नाटकीय प्रभावों को तैयार करने में माहिर थी, जिनका उद्देश्य उसकी अनुपस्थिति में ही दर्शक को यह बताना था कि जब वह समय आने पर प्रकट होगी, तो दर्शक पहले से ही जान जाएगा कि उसे सब कुछ पता है। किसी निर्जीव वस्तु को इस प्रकार बोलने की कला में, वह इरविंग या फ्रेडरिक लेमैत्रे की तरह प्रेरणा और परिश्रम से परिपूर्ण थी। इस अवसर पर, अल्बर्टीन और मुझ पर जलता हुआ दीपक

ताने हुए, जिसकी प्रकाश किरणें लड़की के शरीर द्वारा चादर में बनाए गए अभी भी दिखाई दे रहे गड्ढों को भी नहीं छोड़ रही थीं, फ्रांस्वा ने 'न्याय द्वारा अपराध पर प्रकाश' डालने वाले चित्र की याद दिला दी। अल्बर्टीन के चेहरे पर इस रोशनी का कोई असर नहीं पड़ा। उसके गालों पर वही धूप जैसी चमक थी जिसने मुझे बालबेक में मोहित कर लिया था। अल्बर्टीन का यह चेहरा, जो कभी-कभी बाहर दूधिया पीलापन लिए होता था, अब दीपक की रोशनी के अनुसार इतनी चकाचौंध भरी, एकसमान रंग की, दृढ़ और दमकती हुई दिखाई दे रही थी कि उसकी तुलना कुछ फूलों के स्थायी मांसल रंगों से की जा सकती थी। इसी बीच फ्रांस्वा के अचानक प्रवेश से चौंककर, मैंने कहा:

"क्या? लैंप पहले ही जल गया? मैं तो कह रहा हूँ, रोशनी बहुत तेज़ है!"

जैसा कि आप समझ सकते हैं, मेरा उद्देश्य इन दो उद्गारों में से दूसरे के माध्यम से अपनी उलझन का स्पष्टीकरण देना था, और पहले के माध्यम से उठने में देरी का बहाना बनाना था। फ्रांस्वा ने क्रूर अस्पष्टता के साथ उत्तर दिया:

"क्या आप चाहते हैं कि मैं इसे बुझा दूं?"

"—गिश!" अल्बर्टीन ने मेरे कान में फुसफुसाया, और मैं उसकी परिचित जीवंतता से मंत्रमुग्ध हो गया, जिसमें उसने मुझे एक साथ शिक्षक और साथी मानते हुए, इस मनोवैज्ञानिक पुष्टि को इस तरह से कहा जैसे कोई व्याकरणिक प्रश्न पूछ रही हो। जब फ्रांस्वा कमरे से चली गई और अल्बर्टीन एक बार फिर मेरे बिस्तर पर बैठ गई:

मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें पता है मुझे किस बात का डर है?" उसने कहा, "मुझे डर है कि अगर हम इसी तरह चलते रहे तो शायद मैं तुम्हें चूमने की लालसा को रोक न पाऊं।"

"यह तो बहुत ही दुखद बात होगी।"

मैंने इस निमंत्रण का तुरंत जवाब नहीं दिया, जिसे शायद कोई दूसरा व्यक्ति अनावश्यक भी समझता, क्योंकि अल्बर्टीन के बोलने का तरीका इतना कामुक और मोहक था कि मानो वह आपसे बात करते हुए ही आपको सहला रही हो। उसका एक शब्द भी किसी एहसान के समान था, और उसकी बातचीत आपको चुंबनों से सराबोर कर देती थी। फिर भी, यह निमंत्रण मुझे बेहद आकर्षक लगा। वास्तव में, अल्बर्टीन की उम्र की किसी भी सुंदर लड़की से यह निमंत्रण मिलता तो ऐसा ही होता; लेकिन अल्बर्टीन का अब मेरे लिए इतना सुलभ होना मुझे

आनंद से कहीं अधिक दे गया, मेरे सामने सुंदरता की छाप वाले कई चित्र उभर आए। मुझे वह असली अल्बर्टीन याद आई जो मेरे और समुद्र तट के बीच खड़ी थी, मानो समुद्र की पृष्ठभूमि पर चित्रित हो, मेरे लिए उसका अस्तित्व उन आकृतियों से अधिक वास्तविक नहीं था जो मंच पर दिखाई देती हैं, जब यह पता नहीं होता कि हम उस अभिनेत्री को देख रहे हैं जो अभिनय करने वाली है, या किसी सहायक कलाकार को जो उस क्षण मुख्य अभिनेत्री की भूमिका निभा रही है, या केवल एक लालटेन से निकलने वाली परछाई को। फिर असली स्त्री उस प्रकाशमान समूह से अलग होकर मेरी ओर आई, और इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ कि मैं देख सका कि वास्तविक जीवन में उसमें वह प्रेममय सहजता नहीं थी जो जादुई चित्रों में दिखाई देती थी। मैंने जान लिया था कि उसे छूना, गले लगाना संभव नहीं था; उससे केवल बात की जा सकती थी; मेरे लिए वह उतनी ही स्त्री थी जितनी कि खाने की मेजों पर कभी फैशन में रहने वाले, अखाद्य सजावटी अंगूर, वास्तव में फल होते हैं। और अब वह मुझे एक तीसरे स्तर पर दिखाई दे रही थी, उतनी ही वास्तविक जितनी कि मेरे दूसरे अनुभव में थी, लेकिन उतनी ही सरल जितनी पहले अनुभव में थी; सरल, और इसलिए भी अधिक आनंददायक क्योंकि मैंने इतने लंबे समय तक उसे स्त्री नहीं समझा था। जीवन के मेरे अतिरिक्त ज्ञान (एक ऐसे जीवन का जो पहले की तुलना में कम एकरूप, कम सरल था) ने मुझे अस्थायी रूप से अज्ञेयवाद की ओर झुका दिया। कोई कैसे निश्चित रूप से कह सकता है, जब जो बात पहले संभव लगती है वह गलत साबित हो जाती है और तीसरी बार में सत्य सिद्ध हो जाती है? और अफसोस, अल्बर्टीन के बारे में मेरी खोजें अभी खत्म नहीं हुई थीं। खैर, भले ही जीवन द्वारा एक के बाद एक प्रकट होने वाले अनेक पहलुओं के इस खुलासे का रोमांटिक आकर्षण न होता (वह आकर्षण सेंट-लूप ने रिवबेल में हमारे रात्रिभोज के दौरान महसूस किए गए आकर्षण के बिल्कुल विपरीत था, जब उन्होंने जीवन के उतार-चढ़ाव से ढके मुखौटे के नीचे, शांत चेहरे पर, उन विशेषताओं को पहचाना जिन पर कभी उनके होंठ सजे थे), फिर भी अल्बर्टीन के गालों को चूमने की संभावना का ज्ञान शायद उन्हें चूमने से भी कहीं अधिक आनंददायक था। एक ऐसी स्त्री को पाना जिस पर केवल शरीर का अधिकार हो, क्योंकि वह मांस के टुकड़े से अधिक कुछ नहीं है, और उस लड़की को पाना जिसे आप कुछ दिनों समुद्र तट पर उसके दोस्तों के साथ देखते थे, बिना यह जाने कि उसे उन दिनों क्यों देखते थे और

दूसरों दिनों क्यों नहीं, और यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते थे कि शायद आप उसे फिर कभी न देख पाएं, इन दोनों में कितना अंतर है! जीवन ने कृपापूर्वक इस नन्ही लड़की के रोमांस को अपने संपूर्ण विस्तार में प्रकट किया था, उसके अध्ययन के लिए पहले एक, फिर दूसरा, और शारीरिक इच्छा में एक ऐसा साथी जोड़ दिया था जिसने इसे सौ गुना बढ़ा दिया और इसे उन अन्य इच्छाओं के साथ विविधतापूर्ण बना दिया, जो अधिक आध्यात्मिक और कम आसानी से शांत होने वाली हैं, जो अपनी सुस्ती से नहीं उभरतीं, शारीरिक इच्छा को अपने आप चलने देती हैं, जब उनका उद्देश्य केवल मांस के एक टुकड़े पर विजय प्राप्त करना होता है, लेकिन जो स्मृतियों के एक पूरे क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त करने के लिए, जहाँ से उन्होंने निर्वासन की पीड़ा को महसूस किया है, उसके चारों ओर एक तूफान की तरह उठती हैं, उसे विस्तृत करती हैं, उसका अनुसरण करने में असमर्थ होती हैं, उस रूप में उसका आत्मसात करना असंभव है जिसमें इसकी तलाश की जाती है, एक अमूर्त वास्तविकता का, बल्कि इस इच्छा का आधे रास्ते में इंतजार करती हैं और स्मरण के क्षण में, वापसी के क्षण में इसे अपने साथ फिर से प्रदान करती हैं; किसी भी अजनबी के गालों को चूमना, चाहे वे कितने ही ठंडे और ताज़े क्यों न हों, लेकिन गुमनाम, बिना किसी रहस्य के, बिना किसी भेद के, उन गालों को चूमना जिनका मैं इतने लंबे समय से सपना देख रहा था, उस रंग के स्वाद, उस सुगंध को जानना होगा जिस पर मैं अंतहीन रूप से टकटकी लगाए बैठा था। किसी ने एक स्त्री को देखा है, जीवन के सजावटी परिवेश में एक मात्र छवि के रूप में, जैसे अल्बर्टाइन, समुद्र के सामने उभरी हुई, और फिर उस छवि को ग्रहण करने, उसे अलग करने, उसे अपने करीब लाने, धीरे-धीरे उसकी ठोसता, उसके रंगों को पहचानने में सक्षम हुआ है, मानो उसे स्टीरियोस्कोप के शीशे के पीछे रख दिया हो। यही कारण है कि वे स्त्रियाँ जो थोड़ी कठिन होती हैं, जिनका प्रतिरोध एक बार में पार नहीं किया जा सकता, जिनके बारे में वास्तव में पहले पता नहीं होता कि क्या कभी पार किया जा सकेगा, केवल दिलचस्प होती हैं। उन्हें जानना, उनके करीब जाना, उन पर विजय पाना मानव छवि के रूप, आयाम और उभार में उतार-चढ़ाव पैदा करना है। यह छवि की सराहना में सापेक्षता का एक उदाहरण है, जिसे जीवन के परिवेश में एक पतली आकृति के अनुपात में पुनः प्राप्त करने पर नए सिरे से देखना आनंददायक होता

है। वेश्यालय में सबसे पहले मिलने वाली महिलाएं कोई मायने नहीं रखतीं क्योंकि वे अपरिवर्तनीय रहती हैं।
इसके अलावा, अल्बर्टाइन ने मेरे द्वारा संजोए गए उन समुद्री दृश्यों की सभी यादों को अपने भीतर सहेज कर रखा था, जो मुझे विशेष रूप से प्रिय थे। मुझे ऐसा लगता था मानो मैं उस लड़की के दोनों गालों पर बालबेक के पूरे समुद्र तट को चूम सकता हूँ।
"अगर आपको मेरे चुंबन से कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं इसे थोड़ी देर के लिए टालना चाहूँगा और एक अच्छा मौका ढूँढूँगा। बस आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि आपने मुझे ऐसा करने की अनुमति दी है। मुझे एक वाउचर चाहिए जिस पर लिखा हो: 'एक चुंबन के लिए मान्य'।"
"क्या मुझे इस पर हस्ताक्षर करने होंगे?"
"लेकिन अगर मैं इसे अभी ले लूं, तो क्या मुझे बाद में दूसरा लेने का अधिकार होगा?"
"तुम्हारे वाउचर मुझे खूब हंसाते हैं; मैं समय-समय पर एक नया वाउचर जारी करता रहूंगा।"
"मुझे बस एक बात और बताइए। आपको पता है, बालबेक में, आपसे परिचय होने से पहले, आप अक्सर एक कठोर, हिसाब-किताब वाली नज़र से देखते थे; आप मुझे यह नहीं बता सकते कि उस समय आप क्या सोच रहे थे जब आप उस तरह से देखते थे?"
"नहीं; मुझे बिल्कुल याद नहीं है।"
"रुको; इससे शायद तुम्हें कुछ याद आ जाए: एक दिन तुम्हारी दोस्त गिज़ेल ने अपने पैर एक साथ रखे और उस कुर्सी के ऊपर से छलांग लगा दी जिस पर एक बूढ़ा आदमी बैठा था। उस पल तुम्हारे मन में क्या चल रहा था, उसे याद करने की कोशिश करो।"
"गिज़ेल वह थी जिसे हम सबसे कम देखते थे; मुझे लगता है कि वह उस टोली का हिस्सा तो थी, लेकिन ठीक से नहीं। मुझे लगता है कि मैंने उसके बारे में बहुत ही असभ्य और साधारण सी सोच रखी थी।"
"ओह, बस इतना ही?"
उसे चूमने से पहले, मैं निश्चित रूप से उसे उस रहस्य से फिर से भर देना चाहता था जो समुद्र तट पर मेरे लिए उसके मन में था, उससे पहले कि मैं उसे जान पाता, उसके भीतर उस जगह को खोजना चाहता था जहाँ वह पहले रह चुकी थी; कम से कम इसके लिए, अगर मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होता, तो मैं बालबेक में बिताए अपने जीवन की सभी यादों को, मेरी

खिड़की के नीचे लहरों के उठने और टूटने की आवाज़ को, बच्चों के चिल्लाने को, प्रतिस्थापित कर सकता था। लेकिन जब मेरी नज़रें उसके गालों के मनमोहक गुलाबी गोले पर पड़ीं, जिनकी कोमल घुमावदार सतहें उसकी घनी काली लटों की पहली तलहटी में विलीन हो जाती थीं, जो लहरदार पर्वत श्रृंखलाओं की तरह फैली हुई थीं, खड़ी दीवारों को उभारती थीं और गहरी घाटियों के खोखले हिस्सों को आकार देती थीं, तो मैं खुद से कहे बिना नहीं रह सका: "अब आखिरकार, बालबेक में असफल होने के बाद, मैं अल्बर्टीन के गालों में खिलने वाले गुप्त गुलाब की सुगंध को जानने जा रहा हूँ, और चूंकि हमारे जीवन में चीजों और लोगों को प्रभावित करने वाले चक्र अपेक्षाकृत कम हैं, शायद अब मुझे अपने जीवन को उसके अंत के करीब मानना चाहिए, जब मैंने सभी चेहरों में से चुने हुए खिलते हुए चेहरे को उसकी दूरी से बाहर निकाल कर, उस नए तल पर ला दिया है जहाँ मैं अंततः अपने होठों से उसका स्पर्श अनुभव प्राप्त करूँगा।" मैंने खुद से ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मेरा मानना था कि होठों से प्राप्त ज्ञान जैसी कोई चीज होती है; मैंने खुद से कहा कि मैं इस मांसल गुलाब का स्वाद ज़रूर चखूँगा, क्योंकि मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मनुष्य, जो संरचना में समुद्री अर्चिन या व्हेल से भी कहीं कम अविकसित प्राणी है, फिर भी कुछ आवश्यक अंगों से वंचित है, और विशेष रूप से उसके पास चुंबन के लिए कोई अंग नहीं है। इस कमी को वह अपने होंठों से पूरा करता है, और इस प्रकार शायद उसे अपने प्रिय को सींग जैसे नुकीले दांत से सहलाने की तुलना में थोड़ा अधिक संतोषजनक परिणाम मिलता है। लेकिन होंठ, जो भूख बढ़ाने वाली किसी भी चीज़ का स्वाद तालू तक पहुँचाने के लिए बने हैं, अपनी गलती को जाने बिना या अपनी निराशा को स्वीकार किए बिना, सतह पर घूमने और अभेद्य लेकिन अप्रतिरोध्य गाल की बाधा पर रुकने से ही संतुष्ट रहते हैं। इसके अलावा, ऐसे क्षणों में, जब शरीर और शरीर का वास्तविक संपर्क होता है, तो होंठ, चाहे वे कितने भी कुशल और बेहतर क्यों न हो जाएँ, शायद उस स्वाद को बेहतर ढंग से नहीं चख पाते जिसे प्रकृति उन्हें कभी भी पूरी तरह से ग्रहण करने से रोकती है, क्योंकि उस निर्जन क्षेत्र में जहाँ उन्हें अपना उचित पोषण नहीं मिलता, वे अकेले होते हैं; दृष्टि और फिर गंध की इंद्रियाँ तो उन्हें बहुत पहले ही छोड़ चुकी होती हैं। शुरुआत में, जैसे ही मेरा मुँह धीरे-धीरे उन गालों की ओर बढ़ने लगा जिन्हें मेरी आँखों ने चूमने का संकेत दिया था, मेरी आँखों ने अपनी स्थिति बदलते हुए गालों का एक अलग जोड़ा देखा; गले को

करीब से देखने पर, मानो आवर्धक लेंस से देखा गया हो, उसकी खुरदरी बनावट में एक ऐसी मजबूती दिखाई दी जिसने चेहरे के स्वरूप को बदल दिया।

फोटोग्राफी की कला के सबसे नए अनुप्रयोगों के अलावा—जो किसी गिरजाघर के चरणों में उन सभी घरों को समेट लेते हैं, जो बार-बार हमारे पास खड़े होने पर मीनारों की ऊँचाई तक पहुँचते हुए प्रतीत होते हैं, एक रेजिमेंट की तरह पंक्तिबद्ध, खुली व्यवस्था में, एक समूह में, उन्हीं प्रसिद्ध और परिचित संरचनाओं को व्यवस्थित करते हैं, पियाज़ेटा के दो स्तंभों को, जो कुछ क्षण पहले बहुत दूर थे, वास्तविक संपर्क में लाते हैं, सैल्यूट के समीपवर्ती गुंबद को धकेलते हैं, और एक फीकी और नीरस पृष्ठभूमि में एक पुल के विस्तार के भीतर, एक खिड़की के आभामंडल में, अग्रभूमि में खड़े एक पेड़ की पत्तियों के बीच, जिसे अधिक जीवंत रंग में चित्रित किया गया है, एक विशाल क्षितिज को समाहित करने का प्रबंधन करते हैं, और क्रमिक रूप से अन्य सभी गिरजाघरों की मेहराबदार दीवारों को उसी गिरजाघर की पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करते हैं—मैं ऐसी किसी चीज के बारे में नहीं सोच सकता जो इतनी प्रभावी ढंग से एक चुंबन की तरह किसी चीज से, जिसे हम एक निश्चित रूप वाला मानते हैं, सौ अन्य चीजों को जगा सके, जो समान रूप से हो सकती हैं क्योंकि प्रत्येक उससे संबंधित एक समान रूप से वैध दृश्य से संबंधित है। संक्षेप में, जैसे बालबेक में अल्बर्टाइन मुझे अक्सर अलग-अलग रूप में दिखाई देती थी, वैसे ही अब, मानो किसी व्यक्ति के विभिन्न मुलाकातों के दौरान उसके रूप और रंग में होने वाले परिवर्तनों की गति को तेजी से बढ़ाते हुए, मैंने उन सभी को कुछ ही सेकंडों में समाहित करने का प्रयास किया हो, ताकि उस घटना को प्रयोगात्मक रूप से पुन: प्रस्तुत कर सकूँ जो किसी व्यक्ति की विशिष्टता को बढ़ाती है, और एक दूसरे से, बक्सों के घोंसले की तरह, उसमें निहित सभी संभावनाओं को बाहर निकाल सकूँ। उसके गाल की ओर मेरे होठों के इस संक्षिप्त स्पर्श में, मुझे दस अल्बर्टाइन दिखाई दीं; यह अकेली लड़की कई सिरों वाली देवी की तरह थी, जिसे मैंने आखिरी बार देखा था, अगर मैं उसके पास जाने की कोशिश करता, तो दूसरा सिर प्रकट हो जाता। कम से कम जब तक मैंने उस सिर को छुआ नहीं था, मैं उसे देख सकता था, उससे एक हल्की सी सुगंध मुझ तक पहुँच रही थी। लेकिन अफसोस—क्योंकि चुंबन के मामले में हमारी नाक और आँखें उतनी ही बेमेल होती हैं जितनी हमारे होठों का आकार—अचानक मेरी आँखों ने देखना बंद कर दिया; इसके बाद, टक्कर से

कुचली हुई मेरी नाक को अब कोई सुगंध महसूस नहीं हो रही थी, और इससे मेरी इच्छा के गुलाब के स्वाद के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त किए बिना, मैंने इन अप्रिय संकेतों से जाना कि अंततः मैं अल्बर्टीन के गाल को चूमने की क्रिया में था।

क्या ऐसा इसलिए था कि हम बालबेक में अपने साथ बिताए गए दृश्य के ठीक विपरीत दृश्य को दोहरा रहे थे—जैसा कि किसी ठोस वस्तु के घूमने से स्पष्ट हो सकता है? क्या ऐसा इसलिए था कि अब मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था और वह मेरे बगल में बैठी थी, जो किसी भी क्रूर हमले से बचने और अपनी इच्छा मुझ पर थोपने में सक्षम थी, इसलिए उसने मुझे अब इतनी आसानी से वह लेने दिया जो उसने पहले इतने कठोर चेहरे के साथ मुझसे छीन लिया था? (निस्संदेह, उसी भौंहों से निकली उस कामुक अभिव्यक्ति में, जो मेरे होठों के पास आने पर उसके चेहरे पर उभर आई, केवल एक सूक्ष्म अंतर था, जो उसकी रेखाओं में एक घायल व्यक्ति को 'समाप्त' करने और उसे राहत पहुँचाने के भाव के बीच, एक उदात्त और एक भयावह चित्र के बीच के अंतर को समाहित करता था।) यह न जानते हुए कि क्या मुझे इसका श्रेय किसी अनजाने उपकारक को देना चाहिए, जिसने पिछले कुछ महीनों में, पेरिस या बालबेक में, मेरे लिए काम किया था, और इस बदले हुए रवैये के लिए आभारी होना चाहिए, मैंने सोचा कि शायद हमारी वर्तमान स्थिति ही इसका कारण हो सकती है। हालाँकि, अल्बर्टीन ने मुझे एक बिल्कुल अलग ही स्पष्टीकरण दिया; संक्षेप में: "ओह, देखो, बालबेक में उस समय मैं तुम्हें ठीक से नहीं जानती थी। मुझे क्या पता, तुम शरारत करने की सोच रहे थे।" इस तर्क ने मुझे असमंजस में डाल दिया। अल्बर्टीन ने इसे कहने में निस्संदेह ईमानदारी दिखाई थी। किसी महिला के लिए अपने अंगों की हरकतों में, किसी मित्र के साथ अंतरंग बातचीत के दौरान अपने शरीर द्वारा महसूस की जाने वाली संवेदनाओं में, उस अज्ञात पाप को पहचानना इतना कठिन होता है, जिसके बारे में सोचकर वह कांप उठती है कि कोई अजनबी उसे पतन की ओर ले जाने की योजना बना रहा है।

बहरहाल, उसके जीवन में हाल ही में जो भी बदलाव हुए हों, जिनसे शायद यह स्पष्ट हो सके कि अब वह मेरी क्षणिक और विशुद्ध शारीरिक इच्छा को इतनी आसानी से क्यों स्वीकार कर रही थी, जबकि बालबेक में उसने मेरे प्रेम को घृणापूर्वक अस्वीकार कर दिया था, उसी शाम अल्बर्टीन में एक और कहीं अधिक आश्चर्यजनक बदलाव प्रकट हुआ, जैसे ही उसके स्पर्शों ने

मुझे वह संतुष्टि प्रदान की जिसे वह अवश्य ही देख चुकी थी, और वास्तव में, मुझे डर था कि कहीं वह उसके भीतर घृणा और अपमानित लज्जा की सहज प्रतिक्रिया न उत्पन्न कर दे, जैसी गिलबर्ट ने शैंप्स-एलिसी में लॉरेल की झाड़ियों के पीछे एक समान क्षण में दिखाई थी।

ठीक इसके विपरीत हुआ। जब मैंने उसे पहली बार अपने बिस्तर पर लिटाया और उसे सहलाना शुरू किया, तभी अल्बर्टीन के चेहरे पर एक ऐसा भाव आ गया जो मुझे उसमें पहले कभी नहीं दिखा था - आज्ञाकारी, सौम्य और लगभग बचकानी सरलता। उसकी सामान्य चिंताओं और रुचियों के हर निशान को मिटाते हुए, आनंद से ठीक पहले का वह क्षण, जो इस मायने में मृत्यु के बाद के क्षण के समान था, उसके पुनर्जीवित चेहरे पर बचपन की मासूमियत जैसी अनुभूति लौटा गया था। और निस्संदेह, हर कोई जिसकी विशेष प्रतिभा अचानक सामने आती है, वह विनम्र, समर्पित और आकर्षक बन जाता है; खासकर अगर वह जानता है कि इस प्रतिभा से वह हमें बहुत आनंद दे रहा है, तो वह स्वयं इसे प्रदर्शित करने में प्रसन्न होता है, और इसे यथासंभव पूर्ण रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक रहता है। लेकिन अल्बर्टीन के चेहरे पर इस नए भाव में निस्वार्थता, विवेक, उदारता का मात्र प्रदर्शन नहीं था, बल्कि एक प्रकार की पारंपरिक और अप्रत्याशित भक्ति थी; और यह उसके अपने बचपन से भी कहीं आगे, मानव जाति की शैशवावस्था में लौट आई थी। मुझसे बिल्कुल अलग, जिसने केवल शारीरिक सुख की तलाश की थी, जो मुझे अंततः मिल गया था, अल्बर्टीन को ऐसा लगता था कि अगर वह यह मानती है कि इस भौतिक सुख के साथ कोई नैतिक भावना नहीं हो सकती या इसे किसी भी चीज़ का अंत माना जाना चाहिए, तो यह उसकी ओर से एक प्रकार की अशिष्टता होगी। जो कुछ क्षण पहले इतनी जल्दी में थी, अब, शायद इसलिए कि उसे लगता था कि चुंबन प्रेम का प्रतीक है और प्रेम अन्य सभी कर्तव्यों से ऊपर है, उसने मेरे द्वारा उसके रात के खाने की याद दिलाने पर कहा:

"लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मेरे पास बहुत समय है।"

जो कुछ हुआ था उसके तुरंत बाद उठकर जाने के विचार से वह शर्मिंदा लग रही थी, शिष्टाचार से शर्मिंदा, ठीक वैसे ही जैसे फ्रांस्वा ने प्यास न लगने पर भी, जुपियन द्वारा दिए गए शराब के गिलास को शालीनता से स्वीकार कर लिया था, और आखिरी बूँदें खत्म होते ही उसे छोड़ने की हिम्मत कभी नहीं कर पाती, चाहे कर्तव्य की पुकार कितनी भी अत्यावश्यक क्यों न

हो। अल्बर्टीन—और शायद यही एक कारण था, जिसके बारे में पाठक को आगे पता चलेगा, जिसने मुझे अनजाने में उसकी ओर आकर्षित किया—उस छोटी फ्रांसीसी किसान लड़की का साक्षात रूप थी जिसकी प्रतिमा सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स में पत्थर पर देखी जा सकती है। फ्रांस्वा की तरह, जो आगे चलकर उसकी कट्टर दुश्मन बनने वाली थी, मैंने उसमें मित्र और अजनबी दोनों के प्रति विनम्रता, शालीनता की भावना और रोगी के पास के प्रति सम्मान देखा। मेरी चाची की मृत्यु के बाद, फ्रांस्वा, जो केवल शोकपूर्ण स्वर में बोलने के लिए बाध्य महसूस करती थी, अपनी बेटी की शादी से पहले के महीनों में बहुत सदमे में होती अगर जब युवा जोड़ा एक साथ बाहर निकला, तो लड़की ने अपने प्रेमी का हाथ न पकड़ा होता। मेरे बगल में बेसुध लेटी अल्बर्टीन ने कहा:

"तुम्हारे बाल कितने सुंदर हैं; तुम्हारी आंखें कितनी प्यारी हैं; तुम एक प्यारे लड़के हो।"

जब मैंने उसे बताया कि देर हो रही है, और फिर मैंने कहा: "क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?" तो उसने जवाब दिया, जो शायद सच था, लेकिन ऐसा केवल पिछली रात से लेकर अगले कुछ घंटों तक ही हो सकता था:

मैं हमेशा आप पर विश्वास करता हूँ।

उन्होंने मुझसे मेरे बारे में, मेरे परिवार के बारे में, मेरी सामाजिक स्थिति के बारे में बात की। उन्होंने कहा: "ओह, मुझे पता है कि आपके माता-पिता कुछ बहुत अच्छे लोगों को जानते हैं। आप रॉबर्ट फॉरेस्टियर और सुज़ैन डेलेज की दोस्त हैं।" उस क्षण ये नाम मेरे लिए बिल्कुल अनजान थे। लेकिन अचानक मुझे याद आया कि मैं वास्तव में बचपन में चैंप्स-एलिसी में रॉबर्ट फॉरेस्टियर के साथ खेली थी, जिनसे मैं उसके बाद कभी नहीं मिली थी। सुज़ैन डेलेज की बात करें तो, वह श्रीमती ब्लैटिन की परपोती थीं, और मैं एक बार उनके नृत्य पाठ के लिए गई थी, और यहाँ तक कि उनकी माँ के ड्राइंग रूम में खेले जा रहे एक नाटक में एक छोटी भूमिका निभाने का वादा भी किया था। लेकिन हँसी के दौरे पड़ने और नाक से खून बहने के डर से मैंने मना कर दिया था, इसलिए मैंने उन्हें कभी नहीं देखा था। मुझे बस इतना याद था कि मैंने एक बार सुना था कि स्वान परिवार की टोपी में पंख लगाने वाली गवर्नेस कभी डेलेज परिवार के साथ काम करती थी, लेकिन शायद वह उस गवर्नेस की बहन या कोई दोस्त ही थी। मैंने अल्बर्टीन से कहा कि रॉबर्ट फॉरेस्टियर और सुज़ैन डेलेज का मेरे जीवन में बहुत कम स्थान

है। "हो सकता है; लेकिन तुम्हारी माताएँ दोस्त हैं, मैं तुम्हें इससे पहचान सकती हूँ। मैं अक्सर एवेन्यू डे मेसिन में सुज़ैन डेलेज को देखती हूँ, मुझे उनकी शैली पसंद है।" हमारी माताएँ केवल श्रीमती बोंटेम्प्स की कल्पना में ही एक-दूसरे को जानती थीं। उन्होंने सुना था कि मैं एक समय रॉबर्ट फॉरेस्टियर के साथ संगीत बजाती थी, और ऐसा लगता था कि मैं उन्हें कविताएँ सुनाया करती थी। उन्होंने इसी से यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि हम पारिवारिक संबंधों से जुड़े हुए हैं। मुझे लगता है कि मेरी माँ का नाम सुनते ही वह हमेशा कहती थीं, "ओह, हाँ, वह डेलेज फॉरेस्टियर समूह में हैं," इस तरह वह मेरे माता-पिता को बिना किसी मेहनत के ही तारीफ कर देती थीं।

इसके अलावा, अल्बर्टीन के सामाजिक विचार बेहद बेतुके थे। वह दोहरे 'n' वाले साइमोनेट्स को न केवल एकल 'n' वाले साइमोनेट्स से, बल्कि दुनिया के हर व्यक्ति से हीन मानती थी। अगर कोई व्यक्ति आपके परिवार का न होते हुए भी आपका ही नाम रखता है, तो उसे तुच्छ समझने का यह एक अच्छा कारण है। बेशक, अपवाद भी होते हैं। ऐसा हो सकता है कि दो साइमोनेट्स (किसी ऐसी सभा में मिले हों जहाँ बातचीत करने की ज़रूरत महसूस होती है, चाहे विषय कुछ भी हो, और जहाँ अजनबियों के प्रति स्वाभाविक रूप से सौहार्द होता है, उदाहरण के लिए कब्रिस्तान जाते हुए किसी अंतिम संस्कार के जुलूस में), यह जानकर कि उनका नाम एक ही है, आपसी मित्रता के साथ, भले ही असफल हो, कोई संबंध खोजने की कोशिश करें। लेकिन यह केवल एक अपवाद है। बहुत से लोग संदिग्ध चरित्र के होते हैं, लेकिन या तो हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते या हमें उनकी परवाह नहीं होती। हालाँकि, अगर नामों की समानता के कारण उनके नाम से लिखे पत्र हमारे पास आते हैं, या इसके विपरीत, तो हम तुरंत उनके नैतिक मूल्यों के बारे में संदेह महसूस करते हैं, जो अक्सर उचित होता है। हमें उनसे भ्रमित होने का डर रहता है, और जब कोई हमारे सामने उनका ज़िक्र करता है, तो हम घृणा का भाव दिखाकर इस गलती को पहले ही रोक लेते हैं। जब हम अखबार में अपना नाम, उनके नाम से, पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है मानो उन्होंने हमारा नाम हड़प लिया हो। सामाजिक ताने-बाने के अन्य सदस्यों के गुनाहों से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। हम उनका बोझ अपने हमनामों पर ही डाल देते हैं। अन्य साइमोनेट्स के प्रति हमारी घृणा इसलिए और भी प्रबल है क्योंकि यह कोई व्यक्तिगत भावना नहीं बल्कि वंशानुगत है।

दूसरी पीढ़ी के बाद हमें केवल वही घृणा का भाव याद रहता है जिससे हमारे दादा-दादी अन्य साइमोनेट्स का ज़िक्र करते थे, हमें इसका कारण नहीं पता, और अगर पता चले कि इसकी शुरुआत किसी हत्या से हुई थी तो हमें आश्चर्य नहीं होगा। फिर, जैसा कि अक्सर होता है, एक ऐसा समय आता है जब एक नर और मादा साइमोनेट, जिनका आपस में कोई संबंध नहीं होता, विवाह बंधन में बंध जाते हैं और इस तरह हमारे बीच की खाई को पाट देते हैं।

अल्बर्टीन ने न केवल मुझसे रॉबर्ट फॉरेस्टियर और सुज़ैन डेलेज के बारे में बात की, बल्कि सहजता से, उस भरोसे की भावना के साथ जो दो व्यक्तियों के निकट आने पर उत्पन्न होती है, यानी शुरुआत में, इससे पहले कि एक व्यक्ति दूसरे के प्रति विशेष छल और संकोच पैदा करे, उसने मुझे अपने परिवार और एंड्री के एक चाचा के बारे में एक कहानी सुनाई, जिसके बारे में उसने बालबेक में एक शब्द भी कहने से इनकार कर दिया था; यह सोचकर कि अब उसे ऐसा नहीं दिखाना चाहिए कि उसके पास कोई ऐसा रहस्य है जिसे मैं न जानूँ। उस क्षण से, यदि उसकी सबसे प्रिय सहेली ने मेरे विरुद्ध उससे कुछ कहा होता, तो वह मुझे सूचित करना अपना कर्तव्य समझती। मैंने उस पर घर जाने का दबाव डाला, और अंततः वह चली गई, लेकिन मेरे असभ्य व्यवहार के कारण वह इतनी शर्मिंदा थी कि वह लगभग मेरे लिए माफी माँगने के अंदाज़ में हँसी, जैसे कोई मेज़बान जिसकी पार्टी में आप बिना सज-धज कर गए हों, आपको नज़रअंदाज़ कर दे लेकिन फिर भी नाराज़ हो जाए।

"क्या तुम मुझ पर हंस रहे हो?" मैंने पूछा।

"मैं हंस नहीं रही, मैं तुम्हें देखकर मुस्कुरा रही हूँ," उसने प्यार से जवाब दिया। "मैं तुमसे दोबारा कब मिलूँगी?" उसने आगे कहा, मानो वह यह मानने से इनकार कर रही हो कि हमारे बीच अभी जो कुछ हुआ, क्योंकि यह आमतौर पर चरम सीमा होती है, वह एक महान मित्रता की शुरुआत तो नहीं हो सकती, एक ऐसी मित्रता जो पहले से मौजूद है जिसे हमें खोजना होगा, स्वीकार करना होगा, और जो अकेले ही हमारे द्वारा किए गए आत्मसमर्पण का कारण हो सकती है।

"चूंकि आपने मुझे अनुमति दे दी है, तो मैं समय मिलते ही आपको बुलवा लूंगा।" मैं उन्हें यह बताने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था कि मैं श्रीमती डी स्टरमारिया से मिलने के अवसर के लिए बाकी सब कुछ त्याग रहा था। "दुर्भाग्यवश, यह अचानक ही हो पाएगा," मैंने आगे कहा,

"मुझे पहले से कभी पता नहीं होता। क्या मेरे लिए शाम को, जब मैं खाली होऊं, आपको बुलवाना संभव होगा?"
"थोड़ी देर में यह संभव हो जाएगा, मेरे पास अपना खुद का ताला-चाबी वाला घर होगा। लेकिन फिलहाल यह संभव नहीं है। खैर, मैं कल या परसों दोपहर को आ जाऊँगा। अगर आप व्यस्त हैं तो आपको मुझसे मिलने की ज़रूरत नहीं है।"
दरवाजे पर पहुँचकर, मुझे उसके आने की उम्मीद न देखकर आश्चर्यचकित होकर, उसने अपना गाल मेरी ओर किया, यह महसूस करते हुए कि अब हमें एक-दूसरे को चूमने के लिए किसी भी शारीरिक इच्छा की आवश्यकता नहीं थी। हमारे बीच जो संक्षिप्त संबंध बने थे, वे उस प्रकार के थे जो पूर्ण आत्मीयता और हार्दिक चुनाव से अक्सर बनते हैं। अल्बर्टीन ने महसूस किया कि उसे उन चुंबनों में अस्थायी रूप से कुछ भाव जोड़ना चाहिए जो हमने मेरे बिस्तर पर किए थे, क्योंकि वे चुंबन एक शूरवीर और उसकी प्रेमिका के बीच के संबंध का प्रतीक हो सकते थे, जैसा कि किसी गॉथिक गायक के मन में कल्पना की गई हो।
जब वह मुझे छोड़कर चली गई, तो यह युवा पिकार्ड, जिसे सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के मूर्तिकार ने शायद उसके बरामदे पर उकेरा होगा, फ्रांस्वा मेरे लिए एक पत्र लाई जिसने मुझे खुशी से भर दिया, क्योंकि यह श्रीमती डी स्टर्मारिया की ओर से था, जिन्होंने मेरे रात्रिभोज के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया था। श्रीमती डी स्टर्मारिया की ओर से, मेरे लिए इसका मतलब था कि यह पत्र वास्तविक श्रीमती डी स्टर्मारिया की ओर से उतना नहीं था जितना कि उस महिला की ओर से था जिसके बारे में मैं अल्बर्टीन के आने से पहले पूरे दिन सोच रहा था। प्रेम का यह भयानक छल है कि यह हमें बाहरी दुनिया की किसी महिला के साथ नहीं, बल्कि हमारे दिमाग में गढ़ी और रखी गई एक कठपुतली के साथ खेल में उलझाकर शुरू होता है, और वह भी उसका एकमात्र रूप जो हमेशा हमारे पास होता है, एकमात्र रूप जो हम कभी प्राप्त कर सकते हैं, एक ऐसा रूप जिसे स्मृति की मनमानी शक्ति, जो कल्पना की शक्ति के लगभग समान ही पूर्ण है, वास्तविक महिला से उतना ही भिन्न बना सकती है जितना कि मेरे सपनों का बालबेक वास्तविक बालबेक से भिन्न था; एक कृत्रिम रचना, जिससे धीरे-धीरे और अपने ही नुकसान के लिए, हम वास्तविक स्त्री को मिलता-जुलता बनाने के लिए मजबूर करेंगे।

अल्बर्टीन की वजह से मुझे इतनी देर हो गई थी कि जब मैं श्रीमती डी विलेपारिसिस के ड्राइंग रूम में दाखिल हुई, तब तक नाटक खत्म हो चुका था। मेहमानों की भीड़ में फंसने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, जो बाहर निकलकर ड्यूक डी गुएरमांटेस और उनकी पत्नी के कथित तौर पर हो चुके तलाक की खबर पर चर्चा कर रहे थे। इसलिए, जब तक मुझे अपनी मेज़बान से हाथ मिलाने का मौका नहीं मिला, मैं बाहरी कमरे में एक खाली सोफे पर बैठ गई। तभी दूसरे कमरे से, जहाँ निस्संदेह उनकी कुर्सी सबसे आगे वाली पंक्ति में थी, मैंने डचेस को पीले साटन के बहते हुए गाउन में, जिस पर बड़े-बड़े काले खसखस के फूल उभरे हुए थे, भव्य, विशाल और लंबी मुद्रा में निकलते देखा। उन्हें देखकर अब मुझे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। एक दिन मेरी माँ ने मेरे माथे पर हाथ रखकर (जैसा कि मेरी भावनाओं को ठेस पहुँचने के डर से उनकी आदत थी) कहा: "तुम्हें श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिलने की कोशिश में इधर-उधर भटकना बंद कर देना चाहिए। सभी पड़ोसी तुम्हारे बारे में बातें कर रहे हैं। इसके अलावा, देखो तुम्हारी दादी कितनी बीमार हैं, तुम्हें उस औरत को परेशान करने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम है जिस पर तुम हँसते हो।" एक पल में, जैसे कोई सम्मोहनकर्ता किसी को उस दूर देश से वापस लाता है जहाँ वह खुद को होने की कल्पना कर रहा होता है, और उसकी आँखें खोल देता है, या जैसे कोई डॉक्टर किसी को कर्तव्य और वास्तविकता का एहसास दिलाकर उस काल्पनिक बीमारी से ठीक कर देता है जिसमें वह खोया हुआ होता है, मेरी माँ ने मुझे एक बहुत लंबे सपने से जगा दिया। बाकी का दिन उस बीमारी को अंतिम विदाई देने में बीता जिसे मैं त्याग रहा था; मैंने घंटों तक रोते हुए शुबर्ट के 'एडियू' के दुख भरे बोल गाए।

अलविदा, अजीब आवाजें तुम्हें पुकार रही हैं
मुझसे दूर रहो, देवदूतों की प्यारी बहन।

और फिर यह सब समाप्त हो गया। मैंने अपनी सुबह की सैर छोड़ दी थी, और इतनी आसानी से कि मुझे लगा कि मेरी भविष्यवाणी (जो बाद में गलत साबित हुई) सही साबित हुई है कि मैं अपने जीवन में आसानी से किसी महिला से मिलना बंद करने का आदी हो जाऊँगा। और जब कुछ समय बाद, फ्रांस्वा ने मुझे बताया कि जुपियन, अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए उत्सुक, आस-पड़ोस में एक दुकान की तलाश कर रहा है, और उसके लिए एक दुकान ढूंढना चाहता है (और तो और, जब मैं उस गली में टहल रहा था जिसे मैंने अपने बिस्तर से ही किसी

भीड़भाड़ वाले समुद्र तट की तरह चहल-पहल से भरा सुना था, और डेयरियों के लोहे के ऊंचे शटर के पीछे सफेद आस्तीन वाली युवा दूध बेचने वाली लड़कियों को देख रहा था, तो मुझे बहुत खुशी हुई), तो मैं फिर से ये सैर शुरू करने में सक्षम हो गया। और मुझे जरा भी संकोच नहीं हुआ; क्योंकि मैं जानता था कि अब मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिलने के उद्देश्य से बाहर नहीं जा रहा था; ठीक वैसे ही जैसे कोई विवाहित स्त्री अपने प्रेमी के रहते हुए अनगिनत सावधानियां बरतती है, और उससे संबंध तोड़ने के बाद उसके पत्रों को इधर-उधर छोड़ देती है, इस डर से कि कहीं उसके पति के सामने उसका वह विश्वासघात उजागर न हो जाए, जिसके लिए वह दोषी न रहते हुए चिंतित होना बंद कर देती है। अब मुझे जो बात परेशान कर रही थी, वह यह थी कि लगभग हर घर में कोई न कोई दुखी व्यक्ति पनाह लिए हुए था। एक घर में पत्नी हमेशा रोती रहती थी क्योंकि उसका पति उसके प्रति बेवफा था। दूसरे घर में मामला उल्टा था। एक अन्य घर में एक मेहनती माँ, जिसे उसके शराबी बेटे ने बुरी तरह पीटा था, पड़ोसियों की नज़रों से अपने दुखों को छिपाने की कोशिश कर रही थी। लगभग आधी मानव जाति रो रही थी। और जब मुझे उन लोगों के बारे में पता चला जिन्होंने इसे लिखा था, तो मैंने देखा कि वे इतने परेशान करने वाले थे कि मैंने खुद से पूछा कि क्या यह व्यभिचारी पति-पत्नी ही तो नहीं थे (जो सिर्फ इसलिए व्यभिचारी थे क्योंकि उनका वैध सुख उनसे छीन लिया गया था, और वे अपने-अपने पति-पत्नी को छोड़कर बाकी सभी के सामने आकर्षक और वफादार होने का दिखावा करते थे)। अब जुपियन के लिए उपयोगी होने का बहाना भी मेरे पास सुबह की सैर जारी रखने के लिए नहीं बचा था। हमें पता चला था कि हमारे आंगन में काम करने वाले उस कारीगर को, जिसके काम करने के कमरे जुपियन की दुकान से बस एक पतली सी दीवार से अलग थे, ड्यूक के एजेंट द्वारा जल्द ही 'नोटिस' दिया जाने वाला था क्योंकि उसके हथौड़े की आवाज़ बहुत ज़्यादा थी। जुपियन के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता था; काम करने के कमरों में लकड़ी रखने के लिए एक तहखाना था, जो हमारे तहखानों से जुड़ा हुआ था। वह इसमें अपना कोयला रख सकता था, दीवार तोड़ सकता था, और फिर उसके पास एक ही कमरे में एक बड़ी दुकान हो जाती। लेकिन उसके लिए घर ढूंढने का काम न होने के बावजूद भी मैं दोपहर के भोजन से पहले हर दिन बाहर जाता रहा, ठीक वैसे ही जैसे जुपियन खुद, एम. डी गुएरमांटेस द्वारा मांगे जा रहे किराए को बहुत ज़्यादा

पाकर, इस उम्मीद में परिसर का निरीक्षण करने की अनुमति दे रहा था कि किरायेदार न मिलने से निराश होकर ड्यूक कम किराया देने को तैयार हो जाएगा। फ्रांस्वा ने देखा कि जिस समय किसी संभावित किरायेदार के आने की संभावना नहीं थी, उस समय भी चौकीदार ने खाली दुकान का दरवाजा खुला छोड़ दिया था। उसे लगा कि चौकीदार ने गुएरमांटेस के नौकर से सगाई कर चुकी युवती को लुभाने (वे वहां प्रेमियों के लिए एकांत स्थान ढूंढेंगे) और उन्हें रंगे हाथों पकड़ने के लिए जाल बिछाया है।

चाहे जो भी हो, और भले ही अब मुझे जुपियन के लिए कोई नई दुकान नहीं ढूंढनी थी, फिर भी मैं दोपहर के भोजन से पहले बाहर निकल जाता था। अक्सर, इन सैर-सपाटे के दौरान, मेरी मुलाकात एम. डी नॉरपोइस से हो जाती थी। ऐसा होता था कि चलते-चलते अपने किसी साथी से बातचीत करते हुए, वे मेरी ओर एक नज़र डालते थे, जो मुझे अच्छी तरह से देखने के बाद, बिना मुस्कुराए या पहचान का कोई और संकेत दिए, मानो उन्होंने मुझे पहले कभी देखा ही न हो, अपने साथी की ओर लौट जाती थी। क्योंकि, इन प्रतिष्ठित राजनयिकों के लिए, किसी खास तरीके से देखना यह बताने के लिए होता है कि उन्होंने आपको देखा नहीं है और उन्हें अपने साथ आए साथी से किसी गंभीर विषय पर चर्चा करनी है। घर के पास अक्सर मिलने वाली एक लंबी महिला मेरे साथ कम सजग रहती थी। क्योंकि भले ही मैं उसे नहीं जानता था, वह मुड़कर मुझे देखती, दुकानों की खिड़कियों के सामने मेरा इंतज़ार करती, मानो मुझे चूमने वाली हो, और ऐसे इशारे करती जैसे वह पूरी तरह से आत्मसमर्पण कर चुकी हो। अगर कोई भी ऐसा व्यक्ति दिखाई देता जिसे वह जानती थी, तो वह मेरे प्रति फिर से बर्फीली ठंडक का भाव दिखाने लगती। काफी समय से, सुबह की सैर के दौरान, मैं सिर्फ अपने काम के बारे में सोचता रहता था, चाहे वह अखबार खरीदना ही क्यों न हो, मैं हमेशा सबसे छोटा रास्ता चुनता था, और अगर वह डचेस के नियमित सैर के रास्ते से अलग होता, तो मुझे कोई पछतावा नहीं होता था, और अगर वह उसी रास्ते पर पड़ता, तो भी मुझे कोई संकोच या झिझक नहीं होती थी, क्योंकि अब वह मुझे वह वर्जित रास्ता नहीं लगता था जिस पर चलकर मैं किसी कृतघ्न स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ। लेकिन मुझे कभी यह ख्याल नहीं आया था कि मेरे ठीक होने से, जब मेरा श्रीमती डी गुएरमांटेस के प्रति सामान्य रवैया बहाल हुआ, तो उसका उन पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ेगा, और इस तरह एक ऐसी

मित्रता, यहाँ तक कि एक ऐसी दोस्ती संभव हो जाएगी जिसमें अब मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। तब तक, मुझे उनसे मिलाने के लिए पूरी दुनिया के एकजुट प्रयास भी उस दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम के बुरे प्रभाव को बेअसर कर सकते थे। मनुष्य से कहीं अधिक शक्तिशाली परियों ने यह नियम बनाया है कि ऐसे मामलों में, जब तक हम सच्चे मन से और दिल से यह न कह दें: "मैं अब प्रेम में नहीं हूँ," तब तक कुछ भी हमारे काम नहीं आएगा। मैं सेंट-लूप से नाराज़ थी क्योंकि वह मुझे अपनी चाची से मिलने नहीं ले गया था। लेकिन वह किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही जादू तोड़ने में असमर्थ था। जब तक मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से प्रेम करती रही, दूसरों से मिलने वाली शिष्टाचार की निशानियाँ, उनकी प्रशंसाएँ मुझे वास्तव में दुखी करती थीं, न केवल इसलिए कि वे उनसे नहीं आती थीं, बल्कि इसलिए भी कि वह कभी उनके बारे में सुनना नहीं चाहती थीं। और फिर भी, अगर उन्हें पता भी चल जाता, तो भी मेरे लिए उनका कोई उपयोग नहीं होता। वास्तव में, प्रेम में सफलता के लिए सहायक छोटी-छोटी बातों में, अनुपस्थिति, भोजन के निमंत्रण को अस्वीकार करना, अनजाने में की गई कठोरता, दुनिया के सभी सौंदर्य प्रसाधनों और महंगे कपड़ों से कहीं अधिक उपयोगी होती हैं। यदि लोगों को सफलता की कला इस प्रकार सिखाई जाए, तो सामाजिक सफलता की कोई कमी नहीं होगी।
जिस कमरे में मैं बैठा था, उसमें से गुज़रते हुए, उनके मन में उन दोस्तों के ख्याल भरे हुए थे जिन्हें मैं नहीं जानता था और जिनसे शायद वे किसी और पार्टी में मिलने वाली थीं। तभी श्रीमती डी गुएरमांटेस की नज़र मुझ पर पड़ी, जो सोफे पर बैठा था और सचमुच उदासीन था, बस शिष्टाचार निभा रहा था, जबकि प्यार में होने के दौरान मैंने उदासीनता का भाव दिखाने की बहुत कोशिश की थी, लेकिन कभी सफल नहीं हुआ था। वह एक तरफ मुड़ीं, मेरी ओर आईं और ओपेरा-कॉमिक में उस शाम उनके चेहरे पर जो मुस्कान थी, उसे दोहराते हुए, जिसे अब किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा देखभाल किए जाने की अप्रिय भावना मिटा नहीं पा रही थी, जिसके लिए उन्हें कोई परवाह नहीं थी: "नहीं, हिलिए मत; अगर मैं थोड़ी देर के लिए आपके बगल में बैठ जाऊं तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?" उन्होंने पूछा, अपनी विशाल स्कर्ट को शालीनता से समेटते हुए, जो अन्यथा पूरे सोफे को ढक लेती।
उनसे कद में छोटा होने के बावजूद, जो अपने गाउन के विशाल आकार के कारण और भी बड़ी लग रही थीं, मैं लगभग उनकी खूबसूरत नंगी बांह से छू गया, जिसके चारों ओर

अनगिनत हल्के रोएं सुनहरे कोहरे की तरह निरंतर धुएं की तरह उठते हुए दिखाई दे रहे थे, और उनके सुनहरे बालों की लटों की खुशबू मुझ पर फैल रही थी। बैठने के लिए मुश्किल से जगह होने के कारण, वह आसानी से मेरी ओर मुड़ नहीं सकती थीं, और इसलिए मेरी ओर देखने के बजाय सीधे अपने सामने देखने के लिए मजबूर होकर, उन्होंने एक चित्र में दिखाई देने वाले स्वप्निल, मधुर भाव को अपना लिया।

"क्या आपको रॉबर्ट के बारे में कोई खबर मिली है?" उसने पूछा।

उसी समय श्रीमती डी विलेपारिसिस कमरे में दाखिल हुईं।

"जी महोदय, आप बिल्कुल सही समय पर आए हैं, आखिरकार हम आपको यहाँ देख पा रहे हैं!" और यह देखकर कि मैं उनकी भतीजी से बात कर रहा था, शायद यह समझते हुए कि हम उनकी सोच से कहीं ज़्यादा घनिष्ठ थे: "लेकिन मुझे ओरियन के साथ आपकी बातचीत में दखल देने की ज़रूरत नहीं है," उन्होंने आगे कहा, और (क्योंकि मेहमाननवाज़ी के ये अच्छे काम एक आदर्श मेज़बान के कर्तव्यों का हिस्सा होते हैं): "क्या आप गुरुवार को उनके साथ यहाँ भोजन करना चाहेंगे?"

उस दिन मुझे श्रीमती डी स्टरमारिया की मेजबानी करनी थी, इसलिए मैंने मना कर दिया।

"तो शनिवार को?"

चूंकि मेरी मां शनिवार या रविवार को लौट रही थीं, इसलिए मेरे लिए हर शाम उनके साथ भोजन करने के लिए घर पर न रहना उचित नहीं था; इसलिए मैंने इस निमंत्रण को भी अस्वीकार कर दिया।

"अरे, आपसे संपर्क करना आसान नहीं है।"

"आप मुझसे मिलने कभी क्यों नहीं आतीं?" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने पूछा, जब श्रीमती डी विलेपारिसिस कलाकारों को बधाई देने और मुख्य अभिनेत्री को गुलाबों का गुलदस्ता भेंट करने के लिए चली गईं। इस गुलदस्ते को भेंट करने वाले के हाथ ने ही इसकी कीमत का पूरा श्रेय दिया, क्योंकि इसकी कीमत बीस फ्रैंक से अधिक नहीं थी। (वैसे, यह उनकी अधिकतम राशि थी जो वे किसी कलाकार को केवल एक बार प्रदर्शन करने पर देती थीं। जो कलाकार पूरे सत्र में उनकी सभी दोपहरों और शामों में अपनी सेवाएं देते थे, उन्हें मार्किज़ द्वारा चित्रित गुलाब मिलते थे।)

"यह कितना उबाऊ है कि हम एक-दूसरे से केवल दूसरों के घरों में ही मिलते हैं। चूंकि आप मेरी चाची के घर रात के खाने पर मुझसे नहीं मिलेंगी, तो क्यों न आप मेरे साथ भोजन करें?" कई लोग जो किसी न किसी बहाने से आखिरी क्षण तक रुके रहे, लेकिन अंत में जाने की तैयारी कर रहे थे, उन्होंने देखा कि डचेस एक युवक से बात करने के लिए एक इतनी संकरी कुर्सी पर बैठ गई हैं कि उन दोनों का बैठना मुश्किल है। उन्हें लगा कि उन्हें गलत जानकारी मिली होगी, कि डचेस ही अलगाव चाहती हैं, ड्यूक नहीं, और वह भी मेरे कारण। इसके बाद उन्होंने यह खबर फैलाने में जल्दबाजी की। मुझे किसी और से बेहतर पता था कि यह झूठ है। लेकिन मुझे खुद आश्चर्य हुआ कि अलगाव के उन कठिन दौरों में से एक में, जब अलगाव अभी पूरा नहीं हुआ है और उसका असर दिखने लगा है, डचेस समाज से अलग होने के बजाय, उस व्यक्ति को आमंत्रित करने के लिए इतनी मेहनत कर रही हैं जिसे वह बहुत कम जानती हैं। मेरे मन में यह संदेह आया कि शायद ड्यूक ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो मुझे घर में रखने के खिलाफ था, और अब जब वह उसे छोड़कर जा रहा है, तो उसे अपने मनपसंद लोगों से घिरे रहने में कोई और बाधा नहीं दिख रही है।

एक मिनट पहले अगर किसी ने मुझे बताया होता कि श्रीमती डी गुएरमांटेस मुझे अपने यहाँ आने के लिए कहेंगी, और तो और उनके साथ भोजन करने के लिए, तो मैं स्तब्ध रह जाती। मुझे भली-भांति पता था कि गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम में वो खास शान-शौकत नहीं थी जो मैंने वहाँ रहने वालों के नाम से समझी थी। यह बात कि वह कमरा मेरे लिए वर्जित था, और मुझे उसे वही दर्जा देना पड़ा जो हम उपन्यासों में वर्णित या सपने में देखे ड्राइंग रूम को देते हैं, मुझे, यहाँ तक कि जब मुझे यकीन था कि वह किसी और ड्राइंग रूम जैसा ही है, तब भी उसे बिल्कुल अलग समझने पर मजबूर कर दिया। मेरे और उसके बीच वास्तविकता की सीमा थी। गुएरमांटेस के साथ भोजन करना ऐसा था मानो मैं किसी ऐसी जगह की यात्रा कर रही हूँ जिसे मैं लंबे समय से देखना चाहती थी, मानो मेरे मन की कोई इच्छा मेरी आँखों के सामने साकार हो रही हो, मानो मैं किसी सपने से परिचित हो रही हूँ। अधिक से अधिक, मैं यह अनुमान लगा सकता था कि यह उन रात्रिभोजों में से एक होगा जिसमें मेज़बान यह कहकर आमंत्रित करते हैं: "ज़रूर आइए; हमारे अलावा यहाँ कोई नहीं होगा," और ऐसा दिखावा करते हैं कि वे उस अजनबी को वही भय दे रहे हैं जो उन्हें स्वयं अपने अन्य मित्रों के

साथ उसके मेलजोल के विचार से महसूस होता है, और वास्तव में वे उस बाहरी व्यक्ति, जो पूरी तरह से असभ्य है, के अलगाव को एक ऐसे विशेषाधिकार में बदलना चाहते हैं जो केवल उनके घनिष्ठों के लिए आरक्षित हो, जिससे वे मित्रता कर रहे हैं। इसके विपरीत, मुझे लगा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस चाहती थीं कि मैं उनके द्वारा मुझे प्रदान की जाने वाली सबसे सुखद संगति का आनंद उठाऊं, और जब वह बोल रही थीं, तो उन्होंने मेरे सामने मानो फैब्रिस की चाची के घर की यात्रा की बैंगनी रंग की सुंदरता और काउंट मोस्का से परिचय के चमत्कार का चित्रण किया।

"शुक्रवार को, क्या आप नहीं आ सकते? कुछ ही लोग आ रहे हैं; प्रिंसेस डी पार्म, जो बहुत आकर्षक हैं, वैसे तो मैं आपको किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए नहीं कहूंगा जो अच्छा न हो।"

सामाजिक स्तर के उन मध्यवर्ती वर्गों में, जो निरंतर ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं, परिवार को उपेक्षित कर दिया जाता है, लेकिन फिर भी यह कुछ स्थिर वर्गों, जैसे निम्न मध्यम वर्ग और अर्ध-शाही अभिजात वर्ग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अर्ध-शाही अभिजात वर्ग स्वयं को ऊपर उठाने का प्रयास नहीं कर सकता, क्योंकि उसके अपने विशेष दृष्टिकोण से, उससे ऊपर कुछ भी नहीं है। उसकी 'चाची विलेपारिसिस' और रॉबर्ट द्वारा दिखाई गई मित्रता ने शायद मुझे, श्रीमती डी गुएरमांटेस और उनके दोस्तों के लिए, जो हमेशा अपने तक ही सीमित और एक छोटे से दायरे में रहते थे, एक विचित्र रुचि का पात्र बना दिया था, जिसका मुझे कोई आभास नहीं था।

उन दो रिश्तेदारों के बारे में उसे एक परिचित, रोजमर्रा की, घरेलू सी जानकारी थी, जो हमारी कल्पना से बिल्कुल अलग थी, जिसमें अगर हम शामिल हो जाते हैं, तो हमारे कर्म आँख से धूल के कण या श्वासनली से पानी की बूँद की तरह तुरंत बाहर नहीं निकल जाते, बल्कि अंकित हो जाते हैं, और वर्षों बाद भी, जब हम खुद उन्हें भूल चुके होते हैं, उस महल में जहाँ हम उन्हें संरक्षित पाकर आश्चर्यचकित होते हैं, जैसे कि हमारी अपनी लिखावट का एक पत्र, हस्ताक्षरों के एक अनमोल संग्रह के बीच में।

जो लोग सिर्फ फैशन के लिए होते हैं, वे अक्सर ऐसे दरवाजों पर पहरा लगवा देते हैं जहाँ लोग बिना इजाज़त के आते-जाते रहते हैं। लेकिन गुएरमांटेस का दरवाजा वैसा नहीं था। वहाँ से

शायद ही कभी कोई अजनबी गुजरता था। अगर कभी-कभार डचेस को किसी अजनबी के बारे में पता भी चल जाता, तो वह उससे मिलने वाले सामाजिक सम्मान के बारे में कभी सोचती भी नहीं, क्योंकि सम्मान तो वह देती थी, ले नहीं सकती थी। वह सिर्फ उसके असली गुणों के बारे में सोचती थी। श्रीमती डी विलेपारिसिस और सेंट-लूप दोनों ने मेरे गुणों की गवाही दी थी। निस्संदेह, अगर उन्होंने यह न देखा होता कि जब भी उन्हें मेरी ज़रूरत होती थी, वे मुझे कभी नहीं पा सकते थे, तो वह उन पर विश्वास न करतीं। इसलिए मैं सांसारिक चीजों को महत्व नहीं देता था, जो डचेस को इस बात का संकेत लगा कि वह अजनबी उन लोगों में गिना जाएगा जिन्हें वह 'अच्छे लोग' कहती थीं।

यह देखना दिलचस्प था कि जब कोई उनसे उन महिलाओं के बारे में बात करता जिनकी उन्हें परवाह नहीं थी, तो उनका चेहरा कैसे बदल जाता था जैसे ही उनमें से किसी एक का नाम लिया जाता, मान लीजिए, उनकी भाभी का। "ओह, वह कितनी आकर्षक हैं!" डचेस एक समझदारी भरे, आत्मविश्वास से भरे स्वर में कहतीं। इसका एकमात्र कारण वह यह बतातीं कि उस महिला ने मार्क्विज़ डी चौसेग्रोस और प्रिंसेस डी सिलिस्ट्री से परिचय कराने से इनकार कर दिया था। उन्होंने यह नहीं बताया कि उस महिला ने खुद डचेस डी गुएरमांटेस से भी परिचय कराने से इनकार कर दिया था। फिर भी, यह बात सच थी, और तब से डचेस का मन उस महिला के इरादों को समझने की कोशिश में लगा हुआ था जिसे जानना इतना मुश्किल था, और वह उनसे मिलने के लिए बेताब थीं। समाज में लोग इतने आदी होते हैं कि जो व्यक्ति उनसे दूर रहता है, वह उन्हें फीनिक्स की तरह लगता है और तुरंत उनका ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। क्या श्रीमती के मन में असली मकसद यही था? क्या यह डचेस डी गुएरमांटेस की वजह से था कि उन्होंने मुझे आमंत्रित किया (अब जबकि मैं उनसे प्रेम नहीं करता था) कि मैं उनके रिश्तेदारों के पीछे नहीं भागा, जबकि जाहिर तौर पर वे मेरे पीछे भाग रहे थे? मैं कह नहीं सकता। खैर, मुझे आमंत्रित करने का मन बना लेने के बाद, वह मुझे अपने पास मौजूद सबसे अच्छी संगति में बिठाकर सम्मानित करना चाहती थीं और अपने उन दोस्तों को दूर रखना चाहती थीं जिनकी उपस्थिति मुझे दोबारा आने से रोक सकती थी, जिन्हें वह उबाऊ समझती थीं। जब मैंने उन्हें अपने नियमित मार्ग से हटकर मेरे पास आकर बैठते देखा और मुझे रात के खाने पर आमंत्रित करते सुना, तो मुझे उनके इस अचानक बदले हुए रवैये का

कारण समझ नहीं आया। इस बारे में हमें स्पष्ट जानकारी न होने के कारण मैं कुछ कह नहीं सकता। हम अपने मन में उन लोगों की छवि बना लेते हैं जो हमें बहुत कम जानते हैं—जैसे कि मेरे मामले में डचेस डी गुएरमांटेस—जो हमारे बारे में केवल उन दुर्लभ क्षणों में सोचते हैं जब वे हमें देखते हैं। वास्तव में, यह आदर्श विस्मृति जिसमें हम उन्हें हमारे प्रति उदासीन समझते हैं, हमारी ओर से पूरी तरह से मनमानी धारणा है। इसलिए, जब हम एकांत मौन में, बादलों से रहित रात के समान, समाज की विभिन्न रानियों को अनंत दूरी पर आकाश में अपना मार्ग तय करते हुए कल्पना करते हैं, तो हम अनजाने में ही भय या प्रसन्नता से चौंक जाते हैं यदि उस तारामय ऊँचाई से, हमारे नाम से खुदे हुए उल्कापिंड की तरह, जिसे हम शुक्र या कैसियोपिया पर अज्ञात मानते थे, हमें रात्रिभोज का निमंत्रण या कोई दुर्भावनापूर्ण गपशप प्राप्त हो जाए।

शायद कभी-कभार, फारसी राजकुमारों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने एस्तेर की पुस्तक के अनुसार, अपने लेखकों से उन रजिस्टरों को पढ़वाकर सुनाते थे जिनमें उनकी सेवा में तत्परता दिखाने वाले उनके विषयों के नाम दर्ज थे, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने भी अपने शुभचिंतकों की सूची देखी होगी। मेरा नाम देखकर उन्होंने मन ही मन कहा था: "एक ऐसा व्यक्ति जिसे हमें किसी दिन भोजन पर आमंत्रित करना चाहिए।" लेकिन अन्य विचारों ने उनका ध्यान भटका दिया था।

(उभरती चिंताओं से घिरा, एक राजकुमार का मन)

नए विषयों की ओर हमेशा झुकाव रहता है।

जब तक कि उसने मुझे महल के द्वार पर मोर्दकै की तरह अकेले बैठे हुए नहीं देखा; और, मुझे देखकर उसकी स्मृति ताज़ा हो गई, और उसने अहासुएरस की तरह मुझ पर अपने उपहारों की बौछार करने की कोशिश की।

साथ ही, मुझे यह भी कहना होगा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस द्वारा मुझे भोजन पर आमंत्रित किए जाने पर जो आश्चर्य हुआ था, उसके बाद एक बिल्कुल अलग तरह का आश्चर्य हुआ। चूंकि मैंने यह तय किया था कि इस प्रारंभिक आश्चर्य को छिपाने के बजाय, अपनी खुशी को बढ़ा-चढ़ाकर व्यक्त करना मेरी ओर से अधिक विनम्रता और कृतज्ञता दर्शाएगा, इसलिए श्रीमती डी गुएरमांटेस, जो एक और अंतिम भोज में जाने की तैयारी कर रही थीं, ने मुझसे

लगभग स्पष्टीकरण देते हुए और इस डर से कि मैं यह सुनिश्चित नहीं कर पा रही थी कि वह कौन हैं, क्योंकि मैं उनके साथ भोजन पर आमंत्रित किए जाने पर इतनी आश्चर्यचकित लग रही थी, कहा: "आप जानती हैं कि मैं रॉबर्ट डी सेंट-लूप की चाची हूँ, जो आपके बहुत अच्छे मित्र हैं; इसके अलावा हम पहले भी मिल चुके हैं।" यह कहते हुए कि मुझे इसकी जानकारी है, मैंने आगे कहा कि मैं एम. डी चार्लस को भी जानती हूँ, "जिन्होंने बालबेक और पेरिस में मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया था।" डी गुएरमांटेस अवाक रह गईं, और उनकी आँखें मानो इस कथन की पुष्टि के लिए अपने आंतरिक घटनाओं के रजिस्टर के किसी पन्ने की ओर मुड़ गईं, जो पहले से ही भरा हुआ और पलटा हुआ था। "क्या, तो आप पलामेडे को जानते हैं?" श्रीमती डी गुएरमांटेस के होठों पर यह नाम एक अलग ही आकर्षण लिए हुए था, क्योंकि उन्होंने उस व्यक्ति के बारे में सहज सरलता से बात की थी जो सामाजिक रूप से इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति था, लेकिन उनके लिए वह केवल उनका बहनोई और चचेरा भाई था जिसके साथ वह पली-बढ़ी थीं। और डचेस डी गुएरमांटेस के जीवन की उस धुंधली उदासी पर, जिसमें वह पलामेडे नाम बसी थी, मानो उन लंबे गर्मी के दिनों की चमक बिखेर रही हो, जिनमें वह एक लड़की के रूप में गुएरमांटेस के बगीचे में उनके साथ खेलती थीं। इसके अलावा, उनके जीवन के इस लंबे बीते दौर में, ओरियान डी गुएरमांटेस और उनके चचेरे भाई पलामेडे उस रूप से बहुत अलग थे जो वे बाद में बने; विशेष रूप से एम. डी चार्लस कलात्मक कार्यों में पूरी तरह से लीन थे, जिनसे उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्ध में इतनी कुशलता से खुद को दूर रखा था। यह जानकर मैं दंग रह गया कि काले और पीले रंग के आइरिस फूलों से सजा वह विशाल पंखा उन्हीं ने चित्रित किया था जिसे डचेस इस समय खोल रही थीं। वे मुझे वह छोटी सी सोनातिना भी दिखा सकती थीं जो उन्होंने कभी उनके लिए रची थी। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि बैरन में ये सभी प्रतिभाएं थीं, जिनके बारे में उन्होंने कभी बात नहीं की। मैं यह भी बताना चाहूंगा कि एम. डी चार्लस को अपने परिवार द्वारा 'पालामेडे' कहलाना बिल्कुल पसंद नहीं था। यह आसानी से समझा जा सकता है कि उन्हें 'मेमे' नाम पसंद नहीं आया होगा। ये मूर्खतापूर्ण संक्षिप्ताक्षर अभिजात वर्ग की अपनी काव्य सौंदर्य को समझने में पूर्ण अक्षमता का संकेत हैं (यहूदी समुदाय में भी यही दोष देखा जा सकता है, क्योंकि लेडी इसराइल्स के एक भतीजे, जिनका नाम मूसा था, को आमतौर पर 'मोमो' के नाम से जाना जाता था), साथ ही साथ

उनकी इस चिंता का भी कि वे अभिजात वर्ग से संबंधित किसी भी चीज़ को कोई महत्व नहीं देते। इस संदर्भ में एम. डी चार्लस के पास काव्यात्मक कल्पना का अधिक भंडार और अधिक स्पष्ट गर्व था। लेकिन 'मेमे' के प्रति उनकी अरुचि का कारण यह नहीं हो सकता था, क्योंकि यह अरुचि पालामेडे जैसे उत्तम नाम पर भी लागू होती थी। वास्तव में, अपने शाही वंश को जानते हुए, वे चाहते थे कि उनके भाई और भाभी उन्हें 'चार्लस' कहकर पुकारें, ठीक वैसे ही जैसे रानी मैरी-एमिली और ड्यूक डी'ऑरलियन्स अपने बेटों, पोतों, भाइयों और भतीजों को 'जॉइनविले, नेमर्स, चार्ट्रेस, पेरिस' कहकर पुकारते थे।

"मेमे कितना पाखंडी है!" उसने हैरानी से कहा। "हमने घंटों उससे तुम्हारे बारे में बात की; उसने हमसे कहा कि वह तुमसे मिलकर बहुत खुश होगा, मानो उसने तुम्हें कभी देखा ही न हो। तुम्हें मानना पड़ेगा कि वह अजीब है, और - हालाँकि मेरे लिए अपने उस जीजा के बारे में ऐसा कहना ठीक नहीं है जिससे मैं बहुत प्यार करती हूँ और जिसकी मैं बहुत इज़्ज़त करती हूँ - कभी-कभी थोड़ा पागल भी हो जाता है।"

मुझे एम. डी चार्लस पर इस आखिरी विशेषण के प्रयोग से आश्चर्य हुआ और मैंने मन ही मन सोचा कि शायद यह आधा पागलपन ही कुछ बातों का कारण हो सकता है, जैसे कि उनका अपने ही प्रस्ताव पर इतना प्रसन्न होना कि मैं ब्लोच से उनकी माँ की निंदा करने को कहूँ। मैंने तय किया कि न केवल उनकी कही बातों से, बल्कि उनके कहने के तरीके से भी, एम. डी चार्लस थोड़े पागल जरूर होंगे। जब कोई पहली बार किसी वकील या अभिनेता को सुनता है, तो उसकी बातचीत के लहजे से बिल्कुल अलग होने पर आश्चर्य होता है। लेकिन, यह देखकर कि बाकी सभी को यह बिल्कुल स्वाभाविक लगता है, कोई इसके बारे में दूसरों से कुछ नहीं कहता, बल्कि खुद से भी कुछ नहीं कहता, बस उनकी प्रतिभा की सराहना करने में ही संतुष्ट हो जाता है। ज़्यादा से ज़्यादा, कोई थिएटर-फ्रांसे में किसी अभिनेता के बारे में सोच सकता है: "क्यों, अपनी उठी हुई बांह को स्वाभाविक रूप से गिरने देने के बजाय, वह उसे कम से कम दस मिनट तक रुक-रुक कर छोटे-छोटे झटकों में गिराता रहा?" या फिर लेबोरी के बारे में: "जब भी वह अपना मुंह खोलता था, तो सबसे सरल बातों को व्यक्त करने के लिए भी वह उन दुखद, अप्रत्याशित ध्वनियों का उच्चारण क्यों करता था?" लेकिन चूंकि हर कोई इन क्रियाओं को आवश्यक और स्वाभाविक मानता है, इसलिए कोई इनसे चौंकता नहीं है। तो, इस पर

विचार करने के बाद, मन में यह बात आई कि एम. डी चार्लस अपने बारे में अत्यधिक ज़ोर देकर, एक ऐसे लहजे में बात कर रहे थे जो सामान्य बातचीत जैसा बिल्कुल नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो किसी भी क्षण उन्हें टोकते हुए पूछा जा सकता है: "लेकिन आप इतना क्यों चिल्लाते हैं? आप इतने अपमानजनक क्यों हैं?" लेकिन ऐसा लग रहा था मानो सभी ने मौन रूप से मान लिया हो कि यह सब ठीक है। और व्यक्ति उस समूह में शामिल हो गया जो उसके उद्गारों पर तालियाँ बजा रहा था। लेकिन निश्चित रूप से, कुछ क्षणों में, एक अजनबी को लग सकता था कि वह किसी पागल की बड़बड़ाहट सुन रहा है।

"लेकिन क्या आपको यकीन है कि आप किसी और के बारे में नहीं सोच रहे हैं? क्या आपका मतलब सचमुच मेरे बहनोई पलामेडे से है?" डचेस ने अपनी स्वाभाविक सरलता में थोड़ी सी धृष्टता जोड़ते हुए कहा।

मैंने जवाब दिया कि मुझे पूरा यकीन है, और एम. डी चार्लस मेरा नाम सुनने में चूक गए होंगे।

"अच्छा! अब मैं आपसे विदा लेती हूँ," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, मानो उन्हें बिछड़ने का अफ़सोस हो। "मुझे प्रिंसेस डी लिग्ने के घर थोड़ी देर के लिए जाना है। आप वहाँ नहीं जा रही हैं? नहीं? आपको पार्टियाँ पसंद नहीं हैं? आप तो बड़ी समझदार हैं, वो तो हद से ज़्यादा उबाऊ होती हैं। काश मुझे जाना न पड़ता। लेकिन वो मेरी चचेरी बहन हैं; ऐसा करना शिष्टाचार के विरुद्ध होगा। मुझे अपने लिए अफ़सोस है, क्योंकि मैं आपको वहाँ ले जा सकती थी और बाद में वापस भी ला सकती थी। तो अब मैं अलविदा कहती हूँ और शुक्रवार का इंतज़ार करती हूँ।"

एम. डी चार्लस का एम. डी'आर्गेनकोर्ट के साथ मुझे देखकर शर्मिंदा होना तो ठीक था। लेकिन अपनी भाभी, जो उनके बारे में इतनी अच्छी राय रखती थीं, के सामने मेरा परिचय नकार देना, जबकि यह परिचय बिल्कुल स्वाभाविक था क्योंकि मैं उनकी चाची और भतीजे दोनों की मित्र थी, मेरी समझ से परे था।

मैं इस घटना का अपना वर्णन इस टिप्पणी के साथ समाप्त करूँगा कि एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो श्रीमती डी गुएरमांटेस में एक सच्ची महानता थी, जो इस बात में निहित थी कि उन्होंने अपनी स्मृति से उन बातों को पूरी तरह मिटा दिया जिन्हें अन्य लोग केवल आंशिक रूप से ही भूल पाते। यदि उन्होंने मुझे सुबह की सैर के दौरान उनका पीछा करते, उन्हें ढूंढते हुए न देखा

होता, यदि उन्होंने मेरे दैनिक अभिवादन का उत्तर क्रोध और अधीरता से न दिया होता, यदि उन्होंने सेंट-लूप के मुझे अपने घर आमंत्रित करने के अनुरोध को न ठुकराया होता, तो वे आज भी मेरा स्वागत इतने गरिमापूर्ण और शालीन तरीके से नहीं कर पातीं। उन्होंने न केवल अतीत की व्याख्याओं, संकेतों, इशारों या अस्पष्ट मुस्कानों में समय बर्बाद नहीं किया, बल्कि अतीत की किसी भी बात को याद किए बिना, बिना किसी संकोच के, उनकी वर्तमान सौहार्दता में उनकी राजसी कद-काठी के समान ही गर्व और सरलता झलकती थी। अतीत में किसी के प्रति उनके मन में जो भी आक्रोश रहा होगा, वह पूरी तरह से राख हो चुका था, राख उनकी स्मृति से, या कम से कम उनके व्यवहार से, पूरी तरह से मिट चुकी थी। जब भी उन्हें किसी बात को अत्यंत सरलता से कहने का अवसर मिलता, जिसे कई अन्य लोग पुरानी दुश्मनी और आरोप-प्रत्यारोप को पुनर्जीवित करने का बहाना बना देते, तो उनके चेहरे को देखकर मन की गहन पवित्रता का आभास होता था।

लेकिन अगर मुझे उसके मेरे प्रति विचार में आए बदलाव से आश्चर्य हुआ था, तो उससे कहीं अधिक आश्चर्य मुझे उसके प्रति अपनी भावनाओं में आए समान, बल्कि कहीं अधिक बड़े बदलाव को देखकर हुआ। क्या ऐसा कोई समय नहीं था जब मैं जीवन और शक्ति तभी प्राप्त कर पाता, जब—हमेशा हवाई महल बनाते हुए!—मुझे कोई ऐसा मिल जाता जो मुझे उसके घर का निमंत्रण दिलवा देता और इस शुरुआती वरदान के बाद, मेरे लगातार बढ़ते हुए आशावान हृदय के लिए कई और निमंत्रण दिलवा देता? वहाँ कोई रास्ता न मिलने के कारण ही मैं रॉबर्ट डी सेंट-लूप से मिलने के लिए पेरिस छोड़कर डोनसिएरेस चला गया था। और अब वास्तव में उन्हीं के एक पत्र के कारण मैं बेचैन था, लेकिन इस बार श्रीमती डी स्टर्मारिया के कारण, न कि श्रीमती डी गुएरमांटेस के कारण।

इस पार्टी के अपने विवरण को समाप्त करते हुए, मैं यह जोड़ना चाहूंगा कि इसमें एक घटना घटी, जिसका कुछ दिनों बाद खंडन किया गया, जिसने मुझे लंबे समय तक उलझन में रखा, ब्लोच के साथ मेरी दोस्ती को कुछ समय के लिए बाधित किया, और यह अपने आप में उन विचित्र विरोधाभासों में से एक है, जिसका स्पष्टीकरण इस कृति के अगले भाग में मिलेगा। श्रीमती डी विलेपारिसिस की पार्टी में, ब्लोच मुझसे लगातार इस बात का बखान कर रहा था कि एम. डी चार्लस ने उसके प्रति कितना दोस्ताना व्यवहार दिखाया। जब वह सड़क पर

उससे मिला, तो एम. डी चार्लस ने सीधे उसकी ओर देखा, मानो वह उसे पहचानता हो, उससे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता हो, और उसे अच्छी तरह जानता हो कि वह कौन है। पहले तो मैं मुस्कुराया, क्योंकि ब्लोच ने बालबेक के सामने एम. डी चार्लस के प्रति अपनी घृणा को इतनी तीव्रता से व्यक्त किया था। और मैंने बस यही सोचा कि ब्लोच, बर्गोट के मामले में अपने पिता की तरह, बैरन को 'वास्तव में जाने बिना' जानता था, और जिसे उसने दोस्ताना नजर समझा, वह उसकी अनमनेपन के कारण था। लेकिन अंततः ब्लोच इतना सटीक और आत्मविश्वासी हो गया कि दो-तीन मौकों पर एम. डी चार्लस उससे बात करना चाहते थे। मुझे याद आया कि मैंने बैरन से अपने दोस्त के बारे में बात की थी, जिन्होंने संयोगवश, जब हम इसी घर से साथ जा रहे थे, तो मुझसे उसके बारे में कई सवाल पूछे थे। इससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि ब्लोच झूठ नहीं बोल रहा था कि एम. डी चार्लस ने उसका नाम सुना था, उन्हें पता था कि वह मेरा दोस्त है, इत्यादि। और इसलिए, कुछ समय बाद, एक शाम थिएटर में, मैंने एम. डी चार्लस से पूछा कि क्या मैं ब्लोच का उनसे परिचय करा सकता हूँ, और उनकी सहमति मिलने पर, मैं अपने दोस्त की तलाश में निकल पड़ा। लेकिन जैसे ही एम. डी चार्लस की नज़र उस पर पड़ी, उनके चेहरे पर हैरानी का भाव आया, जिसे उन्होंने तुरंत दबा लिया, और वह गुस्से में भड़क उठा। उन्होंने न केवल ब्लोच से हाथ नहीं मिलाया, बल्कि जब भी ब्लोच उनसे बात करता, तो वे अत्यंत अभद्र तरीके से, क्रोधित और आहत करने वाले स्वर में जवाब देते। ब्लोच, जिसने अपने बयान के अनुसार, बैरन से तब तक केवल मुस्कानें ही पाई थीं, ने यह मान लिया कि मैंने उसकी प्रशंसा नहीं की बल्कि उसकी निंदा की थी। अपने संक्षिप्त भाषण में, जिसमें मैंने एम. डी चार्लस की औपचारिक प्रक्रिया के प्रति रुचि को जानते हुए, अपने मित्र के बारे में बताया था, इससे पहले कि उसका परिचय कराया जाए। ब्लोच टूटे हुए मनोबल के साथ हमें छोड़कर चला गया, मानो वह किसी ऐसे घोड़े पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो जो हमेशा लगाम को अपने दांतों में जकड़ने को तैयार हो, या उन लहरों के विपरीत तैरने की कोशिश कर रहा हो जो उसे लगातार कंकड़ पर पटक रही हों, और उसने छह महीने तक मुझसे फिर बात नहीं की।

श्रीमती डी स्टरमारिया के साथ रात्रिभोज से पहले के दिन मेरे लिए बिल्कुल भी सुखद नहीं थे, वास्तव में उन्हें गुजारना ही मेरे लिए एक बड़ी चुनौती थी। क्योंकि आम तौर पर, हमारे लक्ष्य से

हमारा अंतराल जितना कम होता है, वह हमें उतना ही लंबा लगता है, क्योंकि हम उसे मापने के लिए सूक्ष्म पैमाने का प्रयोग करते हैं, या शायद इसलिए कि हमें उसे मापने का ख्याल ही नहीं आता। हमें बताया जाता है कि पोपशाही सदियों के हिसाब से गणना करती है, और शायद वे समय की गणना के बारे में सोचते ही नहीं, क्योंकि उनका लक्ष्य अनंत काल है। मेरा लक्ष्य तो बस तीन दिन दूर था; मैं सेकंड गिन रहा था, मैं उन कल्पनाओं में खो गया था जो स्नेह की पहली हलचल होती हैं, ऐसे स्नेह जिन्हें हम स्त्री से प्रतिफलित न कर पाने से पागल कर देते हैं—वे ही स्नेह, बाकी सभी को छोड़कर। और, वास्तव में, यह सच है कि, सामान्यतः, किसी इच्छा की प्राप्ति में कठिनाई उस इच्छा को और बढ़ा देती है (कठिनाई, असंभवता नहीं, क्योंकि असंभवता तो उसे पूरी तरह दबा देती है), फिर भी, जब इच्छा पूरी तरह से शारीरिक हो, तो यह निश्चितता कि वह एक निश्चित समय पर पूरी होगी, अनिश्चितता से कम रोमांचक नहीं होती; लगभग एक चिंतित संदेह की तरह, संदेह का अभाव उस आनंद की प्रतीक्षा को असहनीय बना देता है जो निश्चित रूप से आने वाला है, क्योंकि यह उस प्रतीक्षा को अनगिनत बार दोहराई गई उपलब्धि बना देता है और हमारी पूर्वकल्पित कल्पनाओं की आवृत्ति से समय को इतने छोटे-छोटे खंडों में विभाजित कर देता है जितना कि पीड़ा से तराशा जा सकता है। मुझे जो चाहिए था वह था श्रीमती को प्राप्त करना। डी स्टरमारिया, क्योंकि पिछले कुछ दिनों से, निरंतर सक्रियता के साथ, मेरी इच्छाएँ मेरी कल्पना में, केवल इसी आनंद की तैयारी कर रही थीं, क्योंकि किसी अन्य प्रकार का आनंद (अर्थात, किसी अन्य स्त्री के साथ लिया गया आनंद) तैयार नहीं होता, आनंद तो केवल एक पूर्व इच्छा की पूर्ति है, और वह इच्छा हमेशा एक जैसी नहीं होती, बल्कि कल्पनाओं के अंतहीन संयोजनों, स्मृति की आकस्मिकताओं, स्वभाव की स्थिति, इच्छाओं की परिवर्तनशीलता के अनुसार बदलती रहती है, जिनमें से हाल ही में पूरी हुई इच्छा तब तक सुप्त रहती है जब तक कि उनकी संतुष्टि की निराशा कुछ हद तक भुला न दी जाए; मैं तैयार नहीं था, मैं पहले ही सामान्य इच्छाओं के मुख्य मार्ग से मुड़ चुका था और एक विशेष इच्छा के पगडंडी पर चल पड़ा था; मुझे—एक अलग मुलाकात की कामना करने के लिए—मुख्य मार्ग पर वापस आने और दूसरा रास्ता अपनाने से पहले बहुत दूर तक पीछे हटना पड़ता। श्रीमती डी स्टरमारिया पर अधिकार करने के लिए... बोइस डी बोलोग्न द्वीप पर, जहाँ मैंने श्रीमती डी स्टर्मारिया को अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित

किया था, उस आनंद की कल्पना मैं हर पल नए सिरे से करता था। अगर मैं उस द्वीप पर श्रीमती डी स्टर्मारिया के बिना भोजन करता, तो यह आनंद स्वतः ही समाप्त हो जाता; लेकिन शायद उतना ही कम होता अगर मैं उनके साथ कहीं और भोजन करता। इसके अलावा, जिस दृष्टिकोण से हम किसी आनंद की कल्पना करते हैं, वह उस स्त्री से पहले से मौजूद होता है, उस स्त्री के प्रकार से पहले से जो हमें वह आनंद दे सके। वे आनंद और स्थान दोनों को निर्धारित करते हैं, और इसी कारण हमारी चंचल कल्पना में बारी-बारी से यह या वह स्त्री, यह या वह दृश्य, यह या वह कमरा सामने लाते हैं, जिन्हें हम अन्य सप्ताहों में तिरस्कार के साथ खारिज कर देते। जिस दृष्टिकोण ने उसे जन्म दिया है, उसी की संतान, एक स्त्री हमें उस विशाल बिस्तर के बिना आकर्षित नहीं करेगी जिसमें हम उसके बगल में शांति पाते हैं, जबकि अन्य, जिन्हें अधिक गुप्त इरादे से दुलारने की आवश्यकता होती है, हवा से उड़ते पत्तों, रात में लहरते पानी की आवश्यकता होती है, और वे उतनी ही नाजुक और क्षणभंगुर होती हैं जितनी वे।

निस्संदेह, अतीत में, सेंट-लूप का पत्र मिलने से बहुत पहले और जब श्रीमती डी स्टरमारिया का कोई सवाल ही नहीं था, तब बोइस में स्थित वह द्वीप मुझे विशेष रूप से आनंद के लिए बना हुआ लगता था, क्योंकि मैं वहाँ जाकर आनंद न मिलने की कड़वाहट का अनुभव करता था। झील के किनारे से ही उस द्वीप तक जाया जाता है, और गर्मियों के आखिरी हफ्तों में पेरिस की वे महिलाएं जो अभी तक गाँव नहीं लौटी हैं, उसी किनारे पर सैर करती हैं। यह न जानते हुए कि उसे कहाँ ढूँढ़ें, या कहीं वह पेरिस छोड़कर तो नहीं चली गई, लोग उस लड़की को देखने की उम्मीद में भटकते रहते हैं जिससे उन्हें सीज़न के आखिरी बॉल में प्यार हो गया था, और जिससे अगली बसंत तक किसी ड्राइंग रूम में दोबारा मिलने का मौका नहीं मिलेगा। प्रियतम के प्रस्थान की पूर्व संध्या, या शायद कल का दिन, महसूस करते हुए, हम कांपते पानी के किनारे उन आकर्षक रास्तों पर चलते हैं, जहाँ एक लाल पत्ता अंतिम गुलाब की तरह खिल रहा है। हम उस क्षितिज को निहारते हैं जहाँ, उन दृश्यों के विपरीत, जिनके गुंबददार छतों के नीचे मोम की आकृतियाँ अग्रभूमि में चित्रित कैनवास को गहराई और विशालता का भ्रम प्रदान करती हैं, हमारी आँखें बिना किसी संक्रमण के सुसंस्कृत पार्क से मेउदोन और मोंट वैलेरियन की प्राकृतिक ऊँचाइयों तक पहुँचती हैं, और सीमा निर्धारित नहीं कर पातीं। वे

प्राकृतिक देश को माली की कारीगरी में अतिक्रमण करने देती हैं, जिसकी कृत्रिम सुंदरता को वे उसकी सीमाओं से कहीं आगे तक प्रक्षेपित करती हैं; ठीक वैसे ही जैसे वनस्पति उद्यान में खुले में पाले गए वे दुर्लभ पक्षी जो प्रतिदिन अपने पंखों की उड़ान की स्वतंत्रता में आसपास के जंगलों में एक अनोखी ध्वनि उत्पन्न करते हैं। ग्रीष्म ऋतु के अंतिम उत्सव और शीत ऋतु के निर्वासन के बीच, व्यक्ति आकस्मिक मुलाकातों और प्रेमी की उदासी की उस रोमांटिक दुनिया में बेचैनी से भटकता है, और उसे यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि यह मानचित्रित ब्रह्मांड से बाहर स्थित है, ठीक उसी तरह जैसे वर्साय में, छत से नीचे देखते हुए, एक वेधशाला जिसके चारों ओर बादल वैन डेर मेउलेन की शैली में नीले आकाश में एकत्रित हैं, प्रकृति की सीमाओं से ऊपर उठने के बाद, उसे सूचित किया जाए कि, जहाँ विशाल नहर के अंत में प्रकृति फिर से शुरू होती है, क्षितिज पर समुद्र की तरह चकाचौंध करने वाले गाँव, जिन्हें कोई ठीक से नहीं देख सकता, फ्लेरस या निमेग्यू कहलाते हैं।

और फिर, जब आखिरी गाड़ी गुजर जाती है, और मन में दर्द की एक लहर दौड़ जाती है कि वह अब नहीं आएगी, तो व्यक्ति द्वीप पर भोजन करने चला जाता है; शाम के अनंत रहस्यों का संकेत देते हुए कांपते चिनार के पेड़ों के ऊपर, हालांकि बिना किसी प्रतिक्रिया के, एक गुलाबी बादल शांत आकाश में जीवन का अंतिम स्पर्श बिखेरता है। बारिश की कुछ बूँदें पानी पर चुपचाप गिरती हैं, जो प्राचीन है लेकिन अभी भी अपनी दिव्य शैशवावस्था में है, हमेशा मौसम से रंगा हुआ है और बादलों और फूलों के प्रतिबिंबों को लगातार भूलता रहता है। और जब गेरेनियम के फूल अपने लाल रंग की चमक को तीव्र करके बढ़ते अंधेरे का व्यर्थ ही विरोध करते हैं, तो एक धुंध उठती है और अब सोए हुए द्वीप को घेर लेती है; व्यक्ति नम धुंध में पानी के किनारे चलता है, जहाँ ज़्यादा से ज़्यादा एक हंस का मौन गुजरना किसी को चौंका देता है, जैसे रात में बिस्तर पर, आँखें एक पल के लिए चौड़ी हो जाती हैं, और एक बच्चे की तेज़ मुस्कान दिखाई देती है जिसे जागते हुए नहीं देखा गया था। तब व्यक्ति अपने साथ एक प्रेमपूर्ण साथी रखना चाहेगा, खासकर तब जब वह स्वयं को अकेला महसूस करता है और स्वयं को दुनिया से बहुत दूर होने की कल्पना कर सकता है।

लेकिन इस द्वीप पर, जहाँ गर्मियों में भी अक्सर कोहरा छाया रहता था, अब जब सर्दियाँ आ गई थीं, यानी पतझड़ का आखिरी दौर, तो मैं श्रीमती डी स्टर्मारिया को कितनी खुशी से लाना

चाहता था। अगर रविवार से चल रहे मौसम ने मेरी कल्पनाओं में बसे दृश्यों को, जैसे दूसरे मौसम उन्हें सुहावना, चमकदार और इतालवी बना देते थे, धुंधला और समुद्री न बना दिया होता, तो कुछ ही दिनों में श्रीमती डी स्टर्मारिया को अपना बनाने की उम्मीद ही मेरी नीरस प्रेम-पीड़ित कल्पना में एक घंटे में बीस बार कोहरे का पर्दा उठाने के लिए काफी होती। बहरहाल, कल से पेरिस में भी छाए कोहरे ने न केवल मुझे उस युवती के जन्मस्थान की याद दिला दी, जिसे मैंने अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था, बल्कि चूंकि यह संभव था कि सूर्यास्त के बाद यह कोहरा शहर की गलियों की तुलना में कहीं अधिक घना होकर बोइस (वन क्षेत्र), विशेषकर झील के किनारों पर, छा जाता होगा, इसलिए मुझे लगा कि यह स्वान्स द्वीप को मेरे लिए उस ब्रेटन द्वीप जैसा बना देगा, जिसके समुद्री और धुंधले वातावरण ने मेरे मन में श्रीमती डी स्टरमारिया की धुंधली छवि को वस्त्र की तरह हमेशा लपेटे रखा था। बेशक, जब हम युवा होते हैं, उस उम्र में जब मैं मेसेग्लिस मार्ग पर सैर करता था, हमारी इच्छाएं, हमारा विश्वास एक स्त्री के वस्त्र को एक व्यक्तिगत व्यक्तित्व, एक परम सार प्रदान करते हैं। हम वास्तविकता की खोज करते हैं। लेकिन उसे हाथ से फिसलने देने के कारण हम अंततः यह पाते हैं कि उन सभी व्यर्थ प्रयासों के बाद, जिनसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ, कुछ ठोस शेष रहता है, जिसकी हम तलाश कर रहे थे। हम अलग होने लगते हैं, अपनी पसंद को पहचानने लगते हैं, उसे पाने की कोशिश करते हैं, चाहे किसी छल से ही क्यों न हो। फिर, खोए हुए विश्वास की अनुपस्थिति में, वेशभूषा एक जानबूझकर किए गए भ्रम के माध्यम से उस खालीपन को भर देती है। मुझे अच्छी तरह पता था कि घर से आधे घंटे की दूरी पर मैं ब्रिटनी में नहीं पहुँच जाऊँगा। लेकिन द्वीप की संध्या में, पानी के किनारे, श्रीमती डी स्टरमारिया के साथ हाथ में हाथ डालकर चलते हुए, मैं उन अन्य पुरुषों की तरह व्यवहार कर रहा था जो किसी मठ की दीवारों को भेदने में असमर्थ होते हुए भी, किसी स्त्री के साथ संबंध बनाने से पहले कम से कम उसे नन का वेश पहनाते हैं।

मैं उस महिला के साथ बैठकर लहरों की आवाज़ सुनने का भी इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि हमारे डिनर से एक दिन पहले पेरिस में तूफ़ान आ गया था। मैं अगले दिन के डिनर के लिए कमरा बुक करने (हालाँकि साल के इस समय द्वीप खाली था और रेस्टोरेंट सुनसान था) और खाना ऑर्डर करने के लिए द्वीप जाने से पहले अपनी दाढ़ी बना रहा था, तभी फ़्रांस्वा ने आकर

मुझे बताया कि अल्बर्टीन का फ़ोन आया था। मैंने उसे तुरंत अंदर बुलाया, इस बात की परवाह किए बिना कि वह मुझे दाढ़ी से बिगड़ा हुआ देखेगी, जिसके सामने बालबेक में मैं कभी भी खुद को इतना स्मार्ट नहीं समझ पाया था और जिसने मुझे तब उतनी ही बेचैनी और परेशानी दी थी जितनी अब मैडम डी स्टरमारिया दे रही थीं। मैं ठान चुका था कि बाद वाली को हमारी शाम से सबसे अच्छी छाप लेकर जाना चाहिए। इसलिए मैंने अल्बर्टीन से कहा कि वह मेरे साथ द्वीप पर खाना ऑर्डर करने के लिए तुरंत आ जाए। जिसे हम सब कुछ दे देते हैं, उसकी जगह इतनी जल्दी कोई और आ जाता है कि हम खुद को हर पल, बिना किसी भविष्य के इनाम की उम्मीद के, अपना सब कुछ नए सिरे से देते हुए पाकर हैरान रह जाते हैं। मेरी सलाह पर, अल्बर्टीन की भौंहों तक लटकती हुई टोपी के नीचे मुस्कुराता हुआ गुलाबी चेहरा थोड़ा झिझका। शायद उसके कुछ और इरादे थे; अगर ऐसा था तो उसने खुशी-खुशी उन्हें त्याग दिया, जिससे मुझे बहुत संतुष्टि मिली, क्योंकि मेरे लिए यह बेहद ज़रूरी था कि मेरे साथ एक ऐसी युवा गृहिणी हो जो खाना बनाने के बारे में मुझसे कहीं ज़्यादा जानती हो।

यह बिल्कुल सच है कि बालबेक में वह मेरे लिए बिल्कुल अलग थीं। लेकिन जिस स्त्री से हम प्रेम करते हैं, उसके साथ हमारा घनिष्ठ संबंध, भले ही उस समय हम उसे पर्याप्त करीबी न समझें, हमारे बीच, प्रेम के दौरान हमें पीड़ा देने वाली कमियों के बावजूद, ऐसे सामाजिक बंधन बनाता है जो हमारे प्रेम और यहाँ तक कि प्रेम की स्मृति से भी अधिक समय तक कायम रहते हैं। फिर, वह स्त्री जो हमारे लिए महज़ एक संपर्क सूत्र, दूसरों तक पहुँचने का एक रास्ता है, हम अपनी स्मृति से यह जानकर उतने ही आश्चर्यचकित और आनंदित होते हैं कि उस नाम का मूल अर्थ उस दूसरे प्राणी के लिए क्या था जो हम तब थे, मानो बुलेवार्ड डेस कैपुसिन्स या रू डू बैक में किसी टैक्सी ड्राइवर को पता देने के बाद, केवल उस व्यक्ति के बारे में सोचते हुए जिससे हम वहाँ मिलने जा रहे हैं, हम खुद को याद दिलाते हैं कि ये नाम कभी क्रमशः कैपुचिन ननों के थे जिनका मठ उस स्थान पर स्थित था और सीन नदी के पार नौका के थे।

उसी समय, मेरी बालबेक की इच्छाओं ने अल्बर्टीन के शरीर को इतनी उदारता से परिपक्व कर दिया था, उसमें इतने ताजे और मीठे स्वाद जमा कर दिए थे कि, जब हम बोइस से गुजर रहे थे, और हवा एक कुशल माली की तरह पेड़ों को हिला रही थी, फलों को गिरा रही थी, गिरे हुए पत्तों को उड़ा रही थी, तो मैंने खुद से कहा कि अगर सेंट-लूप के गलत होने या मेरे द्वारा

उनके पत्र को गलत समझने का कोई खतरा होता, जिससे श्रीमती डी स्टर्मारिया के साथ मेरा रात्रिभोज संतोषजनक परिणाम न दे पाता, तो मैं उसी शाम, बाद में, अल्बर्टीन से मिलने का समय तय कर लेता, ताकि एक विशुद्ध कामुक क्षण के लिए, उस शरीर को अपनी बाहों में थामे हुए, जिसकी मेरी जिज्ञासा ने बहुत पहले ही गणना कर ली थी, उसमें मौजूद सभी संभावित आकर्षणों का आकलन कर लिया था, श्रीमती डी स्टर्मारिया के लिए प्रेम के इस पहले चरण की भावनाओं और शायद पछतावे को भूल जाऊं। और निश्चित रूप से, अगर मुझे यह पता होता कि श्रीमती डी स्टरमारिया हमारी पहली मुलाकात में मुझ पर कोई कृपा नहीं करेंगी, तो उनके साथ बिताई जाने वाली मेरी शाम की तस्वीर कुछ निराशाजनक ही होती। मैं अपने अनुभव से भली-भांति जानता था कि किसी स्त्री के प्रति प्रेम के पहले चरण में, जिसे हम बिना जाने ही चाहते हैं, उसके अपरिचित स्वरूप से अधिक उसके उस विशेष स्वरूप से प्रेम करते हैं जिसमें वह डूबी हुई है—वास्तविक जगत में, यानी स्वयं में नहीं, बल्कि उससे हमारी मुलाकातों में, इन दो चरणों का प्रतिबिंब कितना विकृत हो जाता है। उससे बात किए बिना ही हम झिझकते रहते हैं, क्योंकि हम उसके काव्यात्मक आकर्षण से मोहित हो जाते हैं। क्या यह स्त्री ठीक रहेगी या कोई और? और फिर, हमारे सपने उसी के इर्द-गिर्द घूमने लगते हैं, उससे अलग उनका कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता। उससे होने वाली पहली मुलाकात में इस उभरते प्रेम का प्रतिबिंब दिखना चाहिए। पर ऐसा कुछ नहीं होता। मानो यह ज़रूरी हो कि हमारे भौतिक जीवन का भी पहला चरण हो, उससे पहले से ही प्यार हो जाने के कारण, हम उससे बड़ी ही साधारण तरीके से बात करते हैं: "मैंने आपको इस द्वीप पर भोजन के लिए इसलिए बुलाया क्योंकि मुझे लगा कि यहाँ का माहौल आपको अच्छा लगेगा। मुझे आपसे कुछ खास कहना नहीं है, क्या आप नहीं जानतीं? लेकिन मुझे डर है कि यहाँ थोड़ी नमी है और आपको ठंड लग सकती है—" "अरे नहीं, बिलकुल नहीं!" "आप तो बस शिष्टाचारवश कह रही हैं। ठीक है, महोदया, मैं आपको पंद्रह मिनट और ठंड से जूझने की इजाज़त देता हूँ, क्योंकि मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता, लेकिन पंद्रह मिनट में मैं आपको ज़बरदस्ती यहाँ से ले जाऊँगा। मैं नहीं चाहता कि आपको ठंड लग जाए।" और बिना कुछ और कहे हम उसे घर ले जाते हैं, उसके बारे में कुछ भी याद नहीं रहता, बस उसकी आँखों में एक खास चमक रह जाती है, और हम बस उससे दोबारा मिलने के बारे में सोचते रहते हैं। खैर, हमारी

दूसरी मुलाकात में (जब हमें उसकी वह चमक भी नहीं मिलती, जो उसकी एकमात्र याद थी, लेकिन फिर भी हम बस उससे दोबारा मिलने के बारे में सोच रहे होते हैं), पहला चरण बीत जाता है। इस बीच कुछ भी नहीं हुआ। फिर भी, रेस्टोरेंट के आराम या असुविधा के बारे में बात करने के बजाय, हम बिना किसी को चौंकाए, उस नए व्यक्ति से कहते हैं, जो हमें देखने में बिल्कुल साधारण लगती है, लेकिन जिसके बारे में हम सोचते हैं कि उसके जीवन के हर पल में लोग हमारे बारे में बातें कर रहे हैं: "हमें अपने रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। क्या आपको लगता है कि हम सफल होंगे? क्या आपको लगता है कि हम अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं—हमेशा के लिए खुशी से रह सकते हैं, और इस तरह की बातें?" लेकिन ये बातचीत की शुरुआत, जो पहले तो मामूली लगती है, फिर प्यार की ओर इशारा करती है, इसकी ज़रूरत नहीं थी; इसके लिए मैं सेंट-लूप के पत्र पर भरोसा कर सकता था। श्रीमती डी स्टरमारिया पहली ही नज़र में मेरे प्रति समर्पित हो जातीं, इसलिए मुझे अल्बर्टीन को बाद में शाम को अस्थायी रूप से बुलाने की ज़रूरत नहीं होती। यह अनावश्यक होता; रॉबर्ट कभी अतिशयोक्ति नहीं करते थे, और उनका पत्र स्पष्ट था।

अल्बर्टीन लगभग चुप ही रही, क्योंकि उसे पता था कि मेरा ध्यान कहीं और है। हम पैदल ही घने पेड़ों के बीच हरे-भरे, मानो पानी के अंदर बने गुफा जैसे इलाके में थोड़ा आगे बढ़े, जिनकी गुंबदनुमा चोटियों पर हवा के चलने और बारिश की बूंदों के गिरने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने सूखे पत्तों को पैरों से कुचला जो सीपियों की तरह मिट्टी में धंसे हुए थे, और अपनी छड़ी से गिरे हुए शाहबलूत के कांटे कुरेदने की कोशिश की जो समुद्री अर्चिन की तरह चुभ रहे थे।

डालियों पर लटके हुए आखिरी पत्ते, हवा से हिलते हुए, अपनी तनों की सीमा तक ही हवा का पीछा कर रहे थे, लेकिन कभी-कभी ये टूट जाते और ज़मीन पर गिर जाते, जहाँ से वे हवा को पकड़ने के लिए आगे बढ़ते। मैंने खुशी से सोचा कि अगर यही मौसम बना रहा तो कल यह द्वीप कितना और दूर हो जाएगा—और वैसे भी बिल्कुल सुनसान होगा। हम अपनी गाड़ी में वापस आ गए और जैसे ही तूफान थम गया, अल्बर्टीन ने मुझसे सेंट-क्लाउड तक उसे ले जाने के लिए कहा। जैसे ज़मीन पर उड़ते हुए पत्ते, वैसे ही बादलों के ऊपर हवा का पीछा कर रहे

थे। और प्रवासी शामों की एक धारा, जिसका एक शंकु के आकार का हिस्सा आकाश को काटता हुआ गुलाबी, नीला और हरा रंग की क्रमिक परतों को दृश्यमान बना रहा था, गर्म जलवायु की ओर प्रस्थान करने के लिए तैयार थी। संगमरमर की उस देवी को करीब से देखने के लिए, जिसे अपने आसन से छलांग लगाते हुए तराशा गया था और जो एक विशाल जंगल में अकेली थी, जो मानो उसी के लिए समर्पित था, और जिसने पौराणिक आतंक से उसे भर दिया था, आधा पशुवत, आधा दिव्य, उसके उन्मादी उछल-कूद के कारण, अल्बर्टीन एक घास वाली ढलान पर चढ़ गई जबकि मैं सड़क पर उसका इंतजार कर रहा था। नीचे से देखने पर, वह स्वयं अब वैसी खुरदरी और गोल-मटोल नहीं थी जैसी कुछ दिन पहले मेरे बिस्तर पर थी, जब मेरी नज़र उसके शरीर के पास पहुँचते ही उसके गले की बनावट स्पष्ट हो गई थी, बल्कि तराशी हुई और कोमल थी, मानो एक छोटी सी मूर्ति हो जिस पर बालबेक में बिताए हमारे सुखद पलों की छाप पड़ी हो। जब मैंने खुद को फिर से घर पर अकेला पाया, और मुझे याद आया कि मैंने उस दोपहर अल्बर्टीन के साथ ड्राइव की थी, और मुझे दो दिन बाद श्रीमती के साथ भोजन करना था... डी गुएरमांटेस और गिल्बर्ट के पत्र का जवाब देना था, इन तीनों महिलाओं से मैंने कभी प्यार किया था। यह सोचकर मैंने खुद से कहा कि हमारा सामाजिक जीवन, एक कलाकार के स्टूडियो की तरह, छोड़े गए रेखाचित्रों से भरा हुआ है, जिनमें हमने एक पल के लिए कल्पना की थी कि हम एक महान प्रेम की अपनी आवश्यकता को स्थायी रूप दे सकते हैं, लेकिन मुझे यह नहीं सूझा कि कभी-कभी, यदि रेखाचित्र बहुत पुराना न हो, तो ऐसा हो सकता है कि हम उस पर वापस लौटें और उससे एक पूरी तरह से अलग, और संभवतः मूल रूप से जो हमने योजना बनाई थी उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण कृति बना लें।
अगला दिन सर्द और सुहावना था; हवा में सर्दी का एहसास था—दरअसल, सर्दी इतनी बढ़ चुकी थी कि पहले से ही लूटे जा चुके बोइस में सुनहरे हरे रंग के कुछ गुंबदों का मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं था। जब मैं जागा, तो मैंने देखा, ठीक वैसे ही जैसे डोंसिएरेस की बैरक की खिड़की से दिखता था, एक समान, सफ़ेद धुंध सूरज की रोशनी में खूबसूरती से लटकी हुई थी, मानो बुनी हुई चीनी के जाले की तरह चिकनी और मीठी। फिर सूरज ढल गया, और दोपहर में धुंध और भी घनी हो गई। रात जल्दी हो गई, मैंने खाने की तैयारी की, लेकिन अभी निकलने का समय नहीं था; मैंने श्रीमती डी स्टरमारिया के लिए एक गाड़ी भेजने का फैसला

किया। मैं खुद उनके लिए गाड़ी में नहीं जाना चाहता था, क्योंकि मैं उन पर अपना साथ थोपना नहीं चाहता था, लेकिन मैंने ड्राइवर को उनके लिए एक नोट दिया जिसमें मैंने पूछा कि क्या उन्हें मेरे आने से कोई आपत्ति होगी। उनके जवाब का इंतज़ार करते हुए मैं अपने बिस्तर पर लेट गया, एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कीं, फिर उन्हें खोल दिया। पर्दों के ऊपर अब दिन के उजाले की एक पतली सी पट्टी के अलावा कुछ नहीं था जो धीरे-धीरे धुंधली होती जा रही थी। मुझे वह व्यर्थ समय याद आ गया, आनंद का वह विशाल कमरा, वह अंधकारमय, मनमोहक खालीपन जिसे मैंने बालबेक में जानना और आनंद लेना सीखा था, जब मैं अपने कमरे में अकेला था, जबकि बाकी सब भोजन कर रहे थे, मैंने बिना किसी अफसोस के अपने पर्दों के ऊपर से दिन के उजाले को फीका पड़ते देखा, यह जानते हुए कि, कुछ ही क्षणों में, बर्फीली ठंड के बाद, यह रिवेबेल के रोशन कमरों में और भी चकाचौंध भरी रोशनी के साथ पुनर्जीवित होने वाला है। मैं अपने बिस्तर से उछल पड़ा, अपनी काली टाई बाँधी, अपने बालों पर कंघी फेरी, बालबेक में किए गए देर से किए गए संवारने के अंतिम कार्य, मेरा ध्यान खुद पर नहीं बल्कि उन महिलाओं पर था जिनसे मैं रिवेबेल में मिलूंगा, जबकि मैं अपने कमरे के एक कोने में लगे दर्पण में उन्हें आशा भरी मुस्कान के साथ देख रहा था, ये कार्य, इसी कारण से, एक ऐसे मनोरंजन की घोषणा करते रहे जिसमें संगीत और रोशनी का मिश्रण होगा। जादुई संकेतों की तरह उन्होंने इस मनोरंजन को बुलाया, बल्कि प्रस्तुत किया; उनकी बदौलत मुझे इसके मादक और मनमोहक आकर्षण का उतना ही पूर्ण आनंद मिला जितना मुझे जुलाई के महीने में कॉम्ब्रे में मिला था, जब मैंने पैकिंग के बक्सों पर हथौड़ों की आवाज सुनी और अपने अंधेरे कमरे की ठंडक में गर्माहट और धूप का अनुभव किया।

साथ ही, अब वो मैडम डी स्टरमारिया नहीं थीं जिनसे मैं सबसे ज़्यादा मिलना चाहती थी। अब मजबूरी में मुझे उनके साथ ही अपनी शाम बितानी पड़ रही थी, और चूंकि मेरे माता-पिता के लौटने से पहले ये लगभग आखिरी शाम थी, तो मैं चाहती थी कि ये शाम खाली रहे और मैं रिवेबेल की कुछ महिलाओं से मिलने की कोशिश करूं। मैंने अपने हाथों को एक बार फिर धोया और खुशी के मारे चलते-चलते उन्हें सुखाया। मैं बंद डाइनिंग रूम से गुज़री। ऐसा लग रहा था कि उसमें एक दरवाज़ा है जो रोशन हॉल की तरफ खुलता है, लेकिन जिसे मैंने दरवाज़े की हल्की सी आवाज़ समझा था, जबकि असल में दरवाज़ा बंद था, वो दीवार पर लगे

शीशे में मेरे तौलिए का चमकता हुआ प्रतिबिंब था। ये शीशा माँ के लौटने से पहले अपनी जगह पर लगाने के लिए तैयार रखा गया था। मैंने घर के अलग-अलग हिस्सों में पाए जाने वाले उन सभी भ्रमों के बारे में सोचा, जो केवल दृष्टिगत नहीं थे। जब हम पहली बार वहाँ आए थे, तो मुझे लगा था कि हमारे पड़ोस में कोई कुत्ता रहता है, क्योंकि रसोई में एक खास पाइप से नल चालू करते ही लगातार, लगभग इंसानों जैसी भौंकने की आवाज़ आती थी। और बाहरी लैंडिंग का दरवाज़ा कभी अपने आप बंद नहीं होता था; सीढ़ियों पर हवा के झोंके से धीरे से अटक जाता था, और ऐसा करते समय वह टूटी-फूटी, मोहक, सिसकती हुई आवाज़ें निकालता था जो टैनहॉसर के ओवरचर के अंत में तीर्थयात्रियों के भजन के ऊपर सुनाई देती हैं। इसके अलावा, जैसे ही मैंने अपना तौलिया वापस रेलिंग पर रखा, मुझे इस शानदार सिम्फोनिक अंश का एक नया रूप सुनने का मौका मिला, क्योंकि घंटी बजते ही मैं जल्दी से बाहर भागा और ड्राइवर के लिए दरवाज़ा खोला जो श्रीमती डी स्टरमारिया का जवाब लेकर आया था। मुझे लगा था कि उसका संदेश होगा: "मैडम नीचे हैं," या "मैडम इंतज़ार कर रही हैं।" लेकिन उसके हाथ में एक पत्र था। श्रीमती डी स्टरमारिया ने क्या लिखा था, यह देखने से पहले मैं एक पल के लिए झिझक गई। कलम हाथ में लिए वह कुछ भी हो सकती थीं, लेकिन अब, स्वयं से विमुख होकर, भाग्य की एक शक्ति बनकर, अकेले ही उस राह पर चल रही थीं जिसे बदलने में वह पूरी तरह असमर्थ थीं। मैंने ड्राइवर से थोड़ी देर नीचे रुकने को कहा, हालाँकि वह कोहरे को कोस रहा था। उसके जाते ही मैंने लिफाफा खोला। उनके कार्ड पर, जिस पर विस्काउंटेस एलिक्स डी स्टरमारिया लिखा था, मेरी मेहमान ने लिखा था: "मुझे बहुत खेद है—दुर्भाग्यवश आज शाम बोइस द्वीप पर आपके साथ भोजन करने में असमर्थ हूँ। मैं इसका बेसब्री से इंतजार कर रही थी। मैं आपको स्टरमारिया से एक पत्र लिखूँगी। बहुत खेद है। सादर प्रणाम।" मैं सदमे से स्तब्ध खड़ी रह गई। मेरे पैरों के पास कार्ड और लिफाफा ऐसे पड़े थे जैसे गोली चलने के बाद खाली कारतूस। मैंने उन्हें उठाया और उनके संदेश को समझने की कोशिश की। "वह कहती है कि वह मेरे साथ बोइस द्वीप पर भोजन नहीं कर सकती। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह मेरे साथ कहीं और भोजन करेगी। मैं इतना नासमझ नहीं बनूँगा कि जाकर उसे ले आऊँ, लेकिन आखिरकार, यह एक काफी तर्कसंगत व्याख्या है।" और बोइस के उस द्वीप से, जहाँ पिछले कुछ दिनों से मेरे विचार श्रीमती डी

स्टर्मारिया के साथ पहले से ही जमे हुए थे, मैं उन्हें वापस अपने पास नहीं ला सका। मेरी इच्छा उस गुरुत्वाकर्षण बल के प्रति स्वतः ही प्रतिक्रिया कर रही थी जो उसे इतने घंटों से खींच रहा था, और इस संदेश के बावजूद, जो उस बल का प्रतिकार करने के लिए बहुत ताजा था, मैं सहज रूप से जाने के लिए तैयार होता रहा, ठीक वैसे ही जैसे एक छात्र, परीक्षकों द्वारा बार-बार पूछे जाने के बावजूद, एक और प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है। अंत में मैंने फ्रांस्वा को नीचे जाकर ड्राइवर को किराया देने के लिए कहने का फैसला किया। मैं गलियारे से आगे बढ़ता गया, उसे ढूंढे बिना। मैं भोजन कक्ष से गुजरा, जहाँ अचानक मेरे पैरों की आवाज नंगे तख्तों पर बंद हो गई, जो पहले हो रही थी, और एक ऐसी खामोशी छा गई, जिसका कारण समझने से पहले ही मुझे घुटन और कैद का एहसास होने लगा। ये कालीन थे, जिन्हें मेरे माता-पिता की वापसी को देखते हुए नौकरों ने फिर से बिछाना शुरू कर दिया था। ये कालीन धूप वाली सुबहों में बहुत अच्छे लगते हैं, जब उनकी अव्यवस्था के बीच सूरज ठहरता है और आपका इंतजार करता है, मानो कोई दोस्त आपको गाँव में दोपहर के भोजन के लिए ले जाने आया हो, और उन पर जंगल की छनती हुई रोशनी और छाया बिखेरता है। लेकिन अब इसके विपरीत, ये कालीन उस सर्द जेल की पहली परत बन गए थे, जिससे मुझे घर पर ही रहना और खाना खाना पड़ रहा था, और अब मैं जब चाहूँ तब भागने के लिए स्वतंत्र नहीं था।

"ध्यान रहे, कहीं फिसल न जाएँ, महोदय; अभी तक टांके नहीं लगे हैं," फ्रांस्वा ने मुझे पुकारा। "मुझे सिगरेट जला लेनी चाहिए थी। अरे बाप रे, 'सेक्टर' का महीना भी कब का खत्म हो गया, अच्छे दिन बीत गए।" देखते ही देखते सर्दी आ गई; खिड़की के कोने पर, मानो गैले के कांच में, जमी हुई बर्फ की एक लकीर सी दिखाई दी; और यहाँ तक कि चैंप्स-एलिसी में भी, जिन लड़कियों को देखने का इंतज़ार रहता था, उनकी जगह सिर्फ़ अकेली गौरैया ही नज़र आईं।

श्रीमती डी स्टर्मारिया से न मिल पाने के कारण मेरी पीड़ा और भी बढ़ गई क्योंकि उनके जवाब से मुझे यह लगा कि रविवार से लेकर अब तक मैं पल-पल इसी भोजन के लिए तरस रहा था, जबकि उन्होंने शायद इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था। बाद में मुझे पता चला कि उन्होंने अचानक एक युवक से प्रेम संबंध बना लिया था, जिससे वे शायद उस समय पहले से ही मिल रही थीं, और जिसने शायद उन्हें मेरा निमंत्रण भुला दिया था। अगर उन्हें याद होता तो वे उस गाड़ी का इंतज़ार क्यों करतीं, जिसे मैंने उनके लिए भेजा ही नहीं था, और मुझे यह

बताने के लिए कि वे कहीं और व्यस्त हैं। धुंध भरे द्वीप पर एक युवा सामंती युवती के मेरे सपनों ने एक ऐसे प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया था जो अभी तक अस्तित्व में ही नहीं था। अब मेरी निराशा, मेरा क्रोध, और मुझे ठुकराने वाली उस युवती को फिर से पाने की मेरी बेताब इच्छा, मेरी भावनाओं को जगाकर, उस संभावित प्रेम को निश्चित रूप देने में सक्षम हो गई, जिसे तब तक केवल मेरी कल्पना ने ही - और वह भी अस्पष्ट रूप से - मुझे दिया था।

हमारी यादों में कितनी ही ऐसी लड़कियाँ और युवतियाँ हैं, जिन्हें हम कितनी ही बार भूल चुके हैं? हर चेहरा अलग था, और हमने उनमें एक खास आकर्षण और उन्हें फिर से देखने की एक बेताब इच्छा जोड़ रखी थी, सिर्फ इसलिए कि आखिरी पल में वे हमसे दूर हो गईं। श्रीमती डी स्टरमारिया के मामले में इससे कहीं अधिक था, और अब मेरे लिए उनसे फिर से मिलना ही काफी था, ताकि मैं उन जीवंत लेकिन क्षणिक यादों को ताज़ा कर सकूँ, जिन्हें मेरी स्मृति, बिना इस ताज़गी के, हमारे अलग रहने के दौरान जीवित रखने की शक्ति नहीं रखती थी। परिस्थितियाँ मेरे खिलाफ थीं; मैं उनसे दोबारा नहीं मिल पाया। यह वह नहीं थीं जिनसे मैंने प्यार किया था, लेकिन ऐसा हो सकता था। और शायद सबसे क्रूर बात यह थी कि जो महान प्रेम मुझे जल्द ही मिलने वाला था, वह यह थी कि जब मैं उस शाम के बारे में सोचता था, तो मैं खुद से कहता था कि अगर बहुत ही साधारण परिस्थितियों में थोड़ा सा बदलाव होता, तो मेरा प्यार कहीं और, श्रीमती डी स्टरमारिया की ओर निर्देशित हो सकता था। इसलिए, जिस व्यक्ति ने मुझे इसके लिए प्रेरित किया था, उस पर इसका प्रयोग करना—जैसा कि मैं इतनी बेसब्री से मानना चाहता था—बिल्कुल आवश्यक और पूर्वनियोजित नहीं था।

फ्रांस्वा ने मुझे भोजन कक्ष में अकेला छोड़ते हुए कहा कि आग जलाने से पहले मेरा वहाँ रहना मूर्खता है। वह मेरे लिए खाना लेने गई, क्योंकि मेरे माता-पिता के लौटने से पहले ही, आज शाम से ही मेरा एकांतवास शुरू होने वाला था। मेरी नज़र कालीनों के एक बड़े से बंडल पर पड़ी, जो अभी भी लिपटा हुआ था और साइडबोर्ड के एक किनारे से टिका हुआ था। मैंने अपना सिर उसमें दबा लिया और उसकी धूल को अपने आँसुओं के साथ निगल लिया, जैसे यहूदी लोग शोक के समय अपने सिर पर राख लगाते थे, और मैं सिसकने लगी। मैं न केवल कमरे की ठंड से काँप उठी, बल्कि इसलिए भी कि तापमान में एक स्पष्ट गिरावट (खतरे के बावजूद और - शायद मुझे यह भी जोड़ना चाहिए - उस अप्रिय अनुभूति के बावजूद जिसका

हम कोई जवाब देने का प्रयास नहीं करते) एक विशेष प्रकार के आँसुओं के कारण होती है जो हमारी आँखों से बूँद-बूँद गिरते हैं, एक महीन, मर्मस्पर्शी, बर्फीली बारिश की तरह, और ऐसा लगता है जैसे वे कभी रुकेंगे नहीं। अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी:
"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? फ्रांस्वा ने मुझे बताया था कि आप भोजन कक्ष में होंगे। मैंने अंदर झाँक कर देखा कि क्या आप बाहर आकर कहीं भोजन करना चाहेंगे, अगर इससे आपके गले को कोई परेशानी न हो—बाहर इतना घना कोहरा है कि उसे चाकू से काटा जा सकता है।"
वह रॉबर्ट डी सेंट-लूप थे, जो उस सुबह पेरिस पहुंचे थे, जब मैंने सोचा था कि वह अभी भी मोरक्को में या समुद्र में होंगे।
मैंने पहले ही कहा है (वास्तव में, बालबेक में रॉबर्ट ने ही अनजाने में मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाया था) कि मैं मित्रता के बारे में क्या सोचता हूँ: यह इतनी तुच्छ बात है कि मुझे यह समझना कठिन लगता है कि प्रतिभा के धनी लोग—उदाहरण के लिए नीत्शे—इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं कि इसे बौद्धिक महत्व दें, और परिणामस्वरूप उन मित्रता से खुद को वंचित कर लें जिनमें बौद्धिक सम्मान का कोई स्थान नहीं होता। हाँ, मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि कोई व्यक्ति अपने प्रति इतनी ईमानदारी क्यों रखता है कि अंतरात्मा की झिझक के कारण वैगनर के संगीत से खुद को अलग कर ले, यह सोचते हुए कि सत्य को अभिव्यक्ति के उस तरीके से प्राप्त किया जा सकता है जो स्वाभाविक रूप से अस्पष्ट और अपर्याप्त है, जो हमारे सामान्य कार्यों और विशेष रूप से मित्रता के कार्यों से प्राप्त होता है, या इस तथ्य में कोई महत्व हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपना काम छोड़कर किसी मित्र से मिलने जाए और लूव्र के जलने की झूठी खबर सुनकर उसके साथ आंसू बहाए। बालबेक में मुझे यह समझ में आ गया था कि लड़कियों के एक समूह के साथ खेलने का आनंद, आध्यात्मिक जीवन के लिए उतना हानिकारक नहीं है, जितना कि मित्रता, जिसका पूरा प्रयास हमें अपने एकमात्र वास्तविक और (कला के माध्यम से छोड़कर) अव्यक्त हिस्से को एक सतही स्व के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है, जो दूसरों की तरह स्वयं में कोई आनंद नहीं पाता है, बल्कि इस भावना में एक अस्पष्ट, भावुक आकर्षण पाता है कि उसे बाहरी सहारे मिल रहे हैं, एक अजनबी व्यक्तित्व द्वारा आतिथ्य सत्कार किया जा रहा है, जिसके माध्यम से, वहाँ प्रदान की गई सुरक्षा में खुश होकर, वह अपने आराम को गर्मजोशी से अनुमोदन में बिखेरता है, और उन गुणों पर

आश्चर्य करता है जिन्हें वह दोष मानकर स्वयं में सुधारने का प्रयास करता है। इसके अलावा, मित्रता का तिरस्कार करने वाले भी, भ्रम और पश्चाताप दोनों के बिना, दुनिया के सबसे अच्छे मित्र हो सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई कलाकार अपने मन में एक उत्कृष्ट कृति लिए हुए, यह महसूस करते हुए कि उसका कर्तव्य जीना और अपना काम जारी रखना है, फिर भी स्वार्थी कहलाने से बचने के लिए, वह एक व्यर्थ उद्देश्य के लिए अपना जीवन बलिदान कर देता है, और यह बलिदान और भी अधिक वीरता से करता है क्योंकि जिन कारणों से वह अपना जीवन बलिदान नहीं करना चाहता था, वे निस्वार्थ थे। लेकिन मित्रता के बारे में मेरी राय चाहे जो भी हो, केवल उससे प्राप्त होने वाले सुख का उल्लेख करें, जो शारीरिक थकावट और मानसिक ऊब के बीच की किसी चीज़ के समान है, तो कोई भी पेय इतना घातक नहीं है कि वह कुछ क्षणों में हमें आवश्यक प्रेरणा, वह गर्माहट प्रदान करके मूल्यवान और स्फूर्तिदायक न बन जाए, जिसे हम स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकते।

अब मेरे मन में सेंट-लूप से यह कहने का ख्याल बिल्कुल नहीं आया कि वह मुझे रिवेबेल की कुछ महिलाओं से मिलवाने ले जाए (जैसा कि एक घंटे पहले मैं जाने के लिए तरस रही थी); श्रीमती डी स्टरमारिया से मिली निराशा का घाव अभी इतना ताजा था कि इतनी आसानी से भर नहीं सकता था, लेकिन जिस क्षण मेरे दिल में खुशी का कोई कारण नहीं बचा था, सेंट-लूप का अचानक मेरे पास आना दया, उल्लास और जीवन के एक अचानक दर्शन जैसा था, जो निस्संदेह मेरे लिए बाहरी थे, लेकिन उन्होंने स्वयं को मुझे अर्पित किया, बस इतना ही चाहा कि वे मेरे हो जाएं। वह स्वयं मेरी कृतज्ञता की चीख, मेरे स्नेह के आँसू नहीं समझ पाए। और फिर भी, उन मित्रों से अधिक रहस्यमय रूप से मार्मिक और क्या हो सकता है, चाहे वह राजनयिक हो, खोजकर्ता हो, पायलट हो या सेंट-लूप जैसा सैनिक हो, जिन्हें अगले दिन अपने देश के लिए रवाना होना होता है, जहाँ से वे न जाने कहाँ जाएँगे, और ऐसा लगता है कि वे हमारे साथ बिताई शाम में अपने लिए एक ऐसा प्रभाव बना लेते हैं जिसे देखकर हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं, क्योंकि यह दुर्लभ और क्षणभंगुर होता है, फिर भी उन्हें इतना सुखद लगता है, और यह देखकर हमें आश्चर्य होता है कि हम इसे और आगे नहीं बढ़ाते या बार-बार नहीं दोहराते। हमारे साथ भोजन करना, जो अपने आप में एक स्वाभाविक घटना है, इन यात्रियों को वही विचित्र और उत्कृष्ट आनंद प्रदान करता है जो हमारे रास्ते किसी एशियाई को देते हैं। हम साथ

में भोजन करने के लिए निकले, और जब मैं नीचे जा रहा था तो मुझे डोंसिएरेस की याद आई जहाँ मैं हर शाम रॉबर्ट से उसके रेस्तरां में मिलता था, और वहाँ के छोटे-छोटे भोजन कक्षों की याद आई जिन्हें मैं भूल गया था। मुझे इनमें से एक बात याद आई, जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। वह जगह उस होटल में नहीं थी जहाँ सेंट-लूप ने खाना खाया था, बल्कि एक दूसरे, कहीं ज़्यादा साधारण होटल में थी, जो एक सराय और गेस्ट हाउस का मिला-जुला रूप था। वहाँ मालकिन और उसकी एक नौकरानी मेहमानों की सेवा करती थीं। एक बार बर्फ़ीले तूफ़ान से बचने के लिए मुझे वहाँ शरण लेनी पड़ी थी। इसके अलावा, रॉबर्ट उस शाम होटल में खाना नहीं खाने वाला था और मुझे कहीं और जाने की ज़रूरत भी नहीं थी। मेरा खाना ऊपर, लकड़ी की दीवारों वाले एक छोटे से कमरे में लाया गया। खाने के दौरान लैंप बुझ गया और नौकरानी ने दो मोमबत्तियाँ जला दीं। मैंने यह जताते हुए कि मुझे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है, अपनी प्लेट आगे बढ़ाई, जबकि वह मुझे आलू परोस रही थी। मैंने उसका नंगा हाथ अपने हाथ में ले लिया, मानो उसे रास्ता दिखा रहा हो। जब मैंने देखा कि उसने हाथ नहीं हटाया, तो मैं उसे सहलाने लगा, फिर बिना कुछ कहे, उसे अपनी ओर खींच लिया, मोमबत्तियाँ बुझा दीं और उससे कहा कि मेरी जेब में कुछ पैसे ढूँढ़ ले। अगले कुछ दिनों तक मुझे ऐसा लगा कि शारीरिक सुख का सही आनंद लेने के लिए न केवल इस नौकर की, बल्कि उस लकड़ी के बने भोजन कक्ष की भी आवश्यकता थी, जो इतना दूरस्थ और एकांत था। फिर भी, सेंट-लूप और उनके मित्र जिस दूसरे कमरे में भोजन करते थे, मैं आदत और उनके प्रति मित्रता के कारण हर शाम वहीं लौटता था, जब तक कि मैंने डोंसिएरेस नहीं छोड़ दिया। लेकिन इस होटल के बारे में भी, जहाँ वह अपने मित्रों के साथ भोजन करते थे, मैंने बहुत पहले सोचना बंद कर दिया था; हम अपने अनुभव का बहुत कम उपयोग करते हैं, हम गर्मियों की शाम या सर्दियों की शुरुआती रातों में उन घंटों को अनदेखा कर देते हैं जिनमें हमें लगता था कि फिर भी शांति या आनंद का कुछ अंश समाहित हो सकता है। लेकिन वे घंटे पूरी तरह व्यर्थ नहीं जाते। जब वे बारी-बारी से आते हैं और हमें आनंद के नए क्षण सुनाते हैं, जो अपने आप में उतने ही नीरस रूप से गुजर जाते, तो दूसरे क्षण फिर से प्रकट होते हैं, अपने साथ एक समृद्ध संगीत की नींव, ठोस निरंतरता लाते हैं। इस तरह वे उस प्रकार के सुख में परिणत होते हैं जिसे हम केवल कभी-कभार ही पुनः प्राप्त कर पाते हैं, लेकिन जो निरंतर विद्यमान रहता है;

वर्तमान स्थिति में, यह सब कुछ त्यागकर एक आरामदायक वातावरण में भोजन करने का अवसर था, जो स्मृति की सहायता से प्रकृति के एक दृश्य में यात्रा के पुरस्कारों का संकेत देता है, एक ऐसे मित्र के साथ जो अपनी पूरी ऊर्जा, अपने स्नेह से हमारे सुप्त जीवन को जगाने वाला है, हमें एक ऐसा भावनात्मक आनंद प्रदान करने वाला है, जो हमारे अपने प्रयासों या सामाजिक मनोरंजन से प्राप्त होने वाली किसी भी चीज़ से बहुत अलग है; हम केवल उसके लिए ही जीवित रहने वाले हैं, मित्रता की प्रतिज्ञाएँ करने वाले हैं, जो उस क्षण में जन्मी हैं, उसी में कैद हैं, शायद कल पूरी न हों, लेकिन मुझे सेंट-लूप के समक्ष उन्हें लेने में कोई संकोच नहीं है, क्योंकि उस साहस के साथ जिसमें बहुत अधिक सामान्य ज्ञान और यह पूर्वाभास शामिल है कि मित्रता अपनी गहराई का पता नहीं लगा सकती, कल वह चला जाएगा।

द्वितीय

जैसे ही मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा, मानो मुझे डोनसिएरेस की वो शामें फिर से याद आ गईं, जब हम गली में पहुँचे, तो पल भर में लगभग पूरी तरह से छाए अंधेरे ने, जिसमें कोहरे ने मानो बत्तियों को बुझा दिया था, जो बहुत हल्की टिमटिमाती हुई दिखाई दे रही थीं, और वह भी केवल पास से देखने पर, मुझे वापस कॉम्ब्रे में रात के उस आगमन की याद दिला दी, जब वहाँ की गलियाँ अभी भी लंबे अंतराल पर ही रोशन होती थीं और कोई नम, गर्म, पवित्र अंधेरे में अपना रास्ता टटोलता हुआ चलता था, मानो क्रिसमस की चरनी का अंधेरा हो, जिसमें कहीं-कहीं मोमबत्ती की बत्ती की बत्ती मुश्किल से ही दिखाई दे रही हो। कॉम्ब्रे में बिताए उस साल (जिसकी कोई सटीक तारीख मैं नहीं बता सकता) और रिवेबेल की उन शामों के बीच, जो एक घंटे पहले मेरे खींचे हुए पर्दों के ऊपर प्रतिबिंबित हो रही थीं, कितना बड़ा अंतर था! उन्हें देखकर मेरे भीतर एक उत्साह जागा, जो शायद फलदायी होता अगर मुझे अकेला छोड़ दिया जाता और मुझे उन अनेक वर्षों की अनावश्यक बर्बादी से बचा लेता जो मुझे उस अदृश्य उद्देश्य के प्रकट होने से पहले झेलने थे, जिसका इतिहास ये ग्रंथ प्रस्तुत करते हैं। यदि वह रहस्योद्घाटन मुझे आज शाम ही हो जाता, तो जिस गाड़ी में मैं बैठा था, वह मेरे लिए डॉ. पर्सेपीड की गाड़ी से कहीं अधिक यादगार होती, जिसकी पिछली सीट पर बैठकर मैंने मार्टिनविले के शिखरों का वह छोटा सा रेखाचित्र बनाया था—जिस पर संयोगवश मैंने हाल ही में अपने हाथ रखे थे, उसमें कुछ बदलाव किए थे और उसे व्यर्थ ही फिगारो को भेज दिया था। क्या ऐसा इसलिए है कि हम अपने बीते वर्षों को निरंतर क्रम में, दिन-प्रतिदिन नहीं जीते, बल्कि एक ऐसी स्मृति में जीते हैं जो किसी सुबह या दोपहर की शीतलता या धूप से झुलसी गर्मी पर टिकी रहती है, किसी एकांत स्थान की छाया को ग्रहण करती है, घिरी हुई, अचल, रुकी हुई, खोई हुई, बाकी सभी से दूर होती है? क्या इसलिए कि न केवल बाहरी दुनिया में बल्कि हमारे सपनों और हमारे विकसित होते चरित्र में धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तन (वे परिवर्तन जो हमें जीवन भर एक से दूसरे, पूरी तरह से अलग समय में ले जाते रहे हैं) अनिवार्य रूप से लुप्त हो जाते हैं? क्या यही कारण है कि यदि हम किसी दूसरे वर्ष से ली गई किसी

अन्य स्मृति को पुनर्जीवित करते हैं, तो हम दोनों के बीच, अंतरालों के कारण, विस्मृति के विशाल विस्तारों के कारण, मानो ऊंचाई के अंतर की खाई या दो अलग-अलग गुणों की असंगति पाते हैं - जिस हवा में हम सांस लेते हैं और हमारी आंखों के सामने के दृश्य का रंग? लेकिन कॉम्ब्रे, डोनसिएरेस और रिवेबेल की जो यादें बारी-बारी से मेरे मन में आ रही थीं, उनके बीच मुझे समय की दूरी से कहीं अधिक का अहसास हो रहा था, उस दूरी का जो दो अलग-अलग ब्रह्मांडों के बीच होती है, जिनके भौतिक तत्व एक जैसे नहीं होते। अगर मैं उस तत्व को पुन: प्रस्तुत करने का प्रयास करता जिसमें रिवेबेल की मेरी सबसे तुच्छ यादें खुदी हुई प्रतीत होती थीं, तो मुझे गुलाबी नसों से सजी हुई सतह बनानी पड़ती, एक ऐसे पदार्थ को पारदर्शी, सघन, ताज़ा और प्रतिध्वनित करना पड़ता जो अब तक कॉम्ब्रे की खुरदरी काली बलुआ पत्थर की दीवारों के समान था। लेकिन रॉबर्ट ने ड्राइवर को निर्देश देने के बाद अब गाड़ी में मेरे साथ बैठ गया। मेरे सामने जो विचार प्रकट हुए थे, वे उड़ गए। विचार देवियाँ हैं जो कभी-कभी किसी अकेले मनुष्य को दर्शन देती हैं, सड़क के मोड़ पर, यहाँ तक कि उसके शयनकक्ष में सोते समय भी, जब वे द्वार पर खड़ी होकर उसे अपने संदेश की घोषणा करती हैं। लेकिन जैसे ही कोई साथी उसके साथ आता है, वे गायब हो जाते हैं; उसके साथियों की संगति में उन्हें कभी किसी ने नहीं देखा। और मैंने खुद को दोस्ती के सहारे ही खोया हुआ पाया। जब रॉबर्ट पहली बार आया था, तो उसने मुझे चेतावनी दी थी कि बाहर काफी घना कोहरा है, लेकिन जब हम अंदर बातें कर रहे थे, तब तक कोहरा और भी घना हो चुका था। अब वह केवल हल्की धुंध नहीं थी जिसे मैं द्वीप से उठते हुए और श्रीमती डी स्टरमारिया और मुझे घेरते हुए देखने की उम्मीद कर रहा था। हमसे कुछ ही फीट दूर सड़क की बत्तियाँ बुझ गईं और फिर रात हो गई, उतनी ही अंधेरी जितनी खुले मैदानों में, जंगल में, या बल्कि किसी शांत ब्रेटन द्वीप पर होती है जहाँ मैं जाना चाहता था; मैं खुद को खो बैठा, जैसे किसी उत्तरी समुद्र के सुनसान तट पर, जहाँ एकांत सराय तक पहुँचने से पहले बीस बार अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती है; कोहरा अब वह मृगतृष्णा नहीं रहा जिसकी तलाश की जाती है, बल्कि वह उन खतरों में से एक बन गया जिनसे लड़ना पड़ता है। इस प्रकार, सुरक्षित स्थान तक पहुँचने और अपना रास्ता खोजने में हमें कठिनाइयों, चिंताओं और अंत में उस आनंद का सामना करना पड़ा जो सुरक्षा, जिसे खोने का खतरा न हो, भ्रमित और अज्ञानी यात्री को देती

है। हमारी इस साहसिक यात्रा के दौरान केवल एक ही बात ने मेरे आनंद को लगभग नष्ट कर दिया, क्योंकि इसने मुझे क्षण भर के लिए क्रोधित और आश्चर्यचकित कर दिया। "तुम्हें पता है, मैंने ब्लोच से कहा था," सेंट-लूप ने अचानक मुझे बताया, "कि तुम उसके बारे में इतना अच्छा नहीं सोचते, कि तुम्हें वह कभी-कभी थोड़ा अशिष्ट लगता है। मैं ऐसा ही हूँ, तुम देखो, मैं चाहता हूँ कि लोग अपनी स्थिति जान लें," उसने संतुष्ट भाव से और ऐसे स्वर में अपनी बात समाप्त की जिसमें कोई उत्तर देने की गुंजाइश नहीं थी। मैं स्तब्ध रह गया। मुझे सेंट-लूप पर पूरा भरोसा था, उनकी मित्रता की वफादारी पर, और उन्होंने ब्लोच से जो कहा उससे यह भरोसा टूट गया। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उन्हें ऐसा करने से बचना चाहिए था, उनकी कमियों के साथ-साथ उनके गुणों के कारण भी, उनके उस अद्भुत शिष्टाचार के कारण जो विनम्रता को स्पष्टवादिता की कमी में बदल देता था। उनका विजयी भाव, क्या यह उस शर्मिंदगी को छुपाने का हमारा तरीका था जो हमें यह स्वीकार करने में होती है कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था, या इसका मतलब पूर्ण अचेतना थी; मूर्खता जिसने उस कमी को गुण बना दिया जिसे मैंने उनसे नहीं जोड़ा था; मेरे प्रति क्षणिक खराब मनोदशा जिसने उन्हें हमारी मित्रता समाप्त करने के लिए प्रेरित किया, या ब्लोच की संगति में क्षणिक खराब मनोदशा का शब्दों में संकेत, जिनसे उन्हें लगा कि उन्हें कुछ अप्रिय कहना ही होगा, भले ही इससे मेरी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचे? चाहे जो भी हो, जब वह यह भद्दी बातें कह रहा था, तो उसका चेहरा एक भयानक टेढ़ेपन से झुलसा हुआ था, जिसे मैंने उसे जानने के पूरे समय में केवल एक या दो बार ही देखा था। यह टेढ़ापन उसके चेहरे के लगभग बीचोंबीच से शुरू होकर उसके होठों तक पहुँचते-पहुँचते उन्हें एक घिनौनी, लगभग पशुवत, अभिव्यक्ति दे रहा था, जो क्षणिक थी और निस्संदेह वंशानुगत थी। ऐसे क्षणों में, जो शायद हर दूसरे साल में एक बार से ज़्यादा नहीं आते थे, उसके असली स्वरूप पर किसी पूर्वज के व्यक्तित्व का आंशिक प्रभाव पड़ता होगा, जिसकी छाया उस पर पड़ती थी। उसकी संतुष्ट मुद्रा की तरह ही, उसके शब्द: "मैं चाहता हूँ कि लोग जानें कि उनकी स्थिति क्या है," ने भी उसी संदेह को बढ़ावा दिया और इसी तरह की निंदा का पात्र होना चाहिए था। मेरा मन हुआ कि मैं उससे कहूँ कि यदि कोई चाहता है कि लोग जानें कि उनकी स्थिति क्या है, तो उसे इस तरह की स्पष्टवादिता को अपने निजी मामलों तक ही सीमित रखना चाहिए और दूसरों की कीमत पर आसानी से पुण्य नहीं कमाना चाहिए। लेकिन

तब तक गाड़ी रेस्तरां के बाहर रुक चुकी थी, जिसका विशाल अग्रभाग, कांच से जगमगाता और प्रकाश से चमकता हुआ, अंधेरे को चीरने में कामयाब रहा। रोशन आंतरिक भाग की आरामदायक रोशनी के साथ-साथ, कोहरा भी मानो बाहर फुटपाथ पर इंतज़ार कर रहा हो, मानो किसी को अंदर का रास्ता दिखाने के लिए, उन नौकरों की तरह जिनके चेहरे अपने मालिक की आतिथ्य सत्कार की भावना को दर्शाते हों; प्रकाश की सबसे कोमल छटाओं से भरा हुआ, यह उस अग्नि स्तंभ की तरह रास्ता दिखा रहा था जिसने इस्राएल के बच्चों का मार्गदर्शन किया था। संयोग से, उनमें से कई लोग अंदर मौजूद थे। क्योंकि यह वही जगह थी जहाँ ब्लोच और उसके दोस्त लंबे समय से आते-जाते रहते थे, कॉफी और राजनीतिक जिज्ञासा को शांत करने के लिए, जो साल में कम से कम एक बार ही होती है। हर मानसिक उत्तेजना एक ऐसा मूल्य पैदा करती है जो अन्य सभी से ऊपर होता है, एक ऐसा गुण जो व्यक्ति की बाकी आदतों से श्रेष्ठ होता है; ऐसा कोई भी शौक नहीं है जो इतना विकसित हो कि वह अपने चारों ओर एक ऐसा समाज न समेटे जिसे वह एकजुट करता है और जिसमें प्रत्येक सदस्य अपने साथियों का सम्मान ही जीवन से सबसे पहले चाहता है। यहाँ, उनके कैफ़े में, चाहे वह किसी छोटे से प्रांतीय शहर में ही क्यों न हो, आपको संगीत के प्रति जुनूनी लोग मिलेंगे; उनका अधिकांश समय, उनकी सारी अतिरिक्त धनराशि, चैंबर-कॉन्सर्ट, संगीत चर्चाओं की बैठकों, कैफ़े में व्यतीत होती है जहाँ व्यक्ति खुद को संगीतकारों के बीच पाता है और ऑर्केस्ट्रा के सदस्यों के साथ मेलजोल करता है। अन्य, उड़ान के शौकीन, हवाई अड्डे के शीर्ष पर स्थित कांच के बार में बूढ़े वेटर के साथ अच्छे संबंध बनाने की कोशिश करते हैं; किसी प्रकाशस्तंभ के कांच के पिंजरे की तरह हवा से सुरक्षित, वे एक ऐसे पायलट के साथ उड़ान भरते हुए देख सकते हैं जो उस दिन उड़ान नहीं भरने वाला है, जबकि दूसरा, जो कुछ क्षण पहले अदृश्य था, अचानक एक अरबी रॉक की गर्जना के साथ नीचे उतरता है। ज़ोला मुकदमे से उत्पन्न क्षणभंगुर भावनाओं को संजोने और उनका पता लगाने के लिए एकत्रित हुए छोटे समूह ने इस विशेष कैफे को भी उतना ही महत्व दिया। लेकिन उन्हें उन युवा रईसों द्वारा पसंद नहीं किया गया जो इसके बाकी ग्राहक थे और जिन्होंने एक दूसरे कमरे पर कब्जा कर लिया था, जो पहले कमरे से केवल पौधों की एक पंक्ति से ढकी एक कमजोर दीवार से अलग था। ये लोग ड्रेफस और उनके समर्थकों को गद्दार मानते थे, हालांकि पच्चीस साल बाद,

विचारों को खुद को वर्गीकृत करने का समय मिल चुका था और इतिहास के प्रकाश में ड्रेफसवाद को एक विशिष्ट पहचान मिल चुकी थी। इन्हीं युवा रईसों के बेटे, जो नृत्य के दीवाने बोल्शेविक थे, ने उन 'बुद्धिजीवियों' से सवाल करने पर कहा कि निस्संदेह, अगर वे उस समय जीवित होते, तो वे ड्रेफस का समर्थन करते, जबकि उन्हें उस महान मामले के बारे में कॉम्टेस एडमंड डी पोर्टेल्स या मार्क्विज़ डी गैलिफ़ेट से ज़्यादा स्पष्ट जानकारी नहीं थी, जो उनके जन्म के समय तक अन्य प्रख्यात हस्तियाँ बन चुकी थीं। क्योंकि कोहरे की उस रात, कैफ़े में बैठे रईस, जो आगे चलकर इन युवा बुद्धिजीवियों (जिन्हें बाद में ड्रेफसवादी कहा गया) के पिता बने, अभी भी कुंवारे थे। स्वाभाविक रूप से, उनके सभी परिवारों के मन में एक अमीर विवाह का विचार था, लेकिन उनमें से किसी ने भी अभी तक ऐसा विवाह नहीं किया था। हालांकि इस समृद्ध विवाह में अभी भी संभावनाएं थीं, लेकिन इसका एकमात्र प्रभाव, उनमें से कई की एक साथ महत्वाकांक्षा (वास्तव में कई उत्तराधिकारी थीं, लेकिन आखिरकार बड़े दहेज की संख्या उन लोगों की तुलना में काफी कम थी जो उनके लिए दावेदार थे), इन युवा पुरुषों के बीच एक निश्चित मात्रा में प्रतिस्पर्धा पैदा करना था।

दुर्भाग्यवश, सेंट-लूप ड्राइवर को यह समझाने के लिए एक मिनट के लिए बाहर रुक गए कि उन्हें रात के खाने के बाद हमें फिर से बुलाना है, इसलिए मुझे अकेले ही अंदर जाना पड़ा। पहली बात तो यह कि एक बार जब मैं उस घूमते हुए दरवाजे में फंस गया, जिससे मैं परिचित नहीं था, तो मुझे डर लगने लगा कि मैं उससे कभी बाहर नहीं निकल पाऊंगा। (शब्दों की सटीकता के प्रेमियों के लिए मैं यहाँ यह बताना चाहूंगा कि यह यंत्र, दिखने में भले ही शांत लगे, लेकिन इसे अंग्रेजी शब्द 'रिवॉल्विंग डोर' से 'रिवॉल्वर' कहा जाता है।) आज शाम, दुकानदार न तो बाहर के मौसम का सामना करने का साहस कर रहा था और न ही अपने ग्राहकों को अकेला छोड़ने का, इसलिए वह प्रवेश द्वार के पास खड़ा रहा ताकि नए आने वालों की खुशियों भरी शिकायतों को सुन सके, जो किसी जगह तक पहुँचने में कठिनाई और रास्ता भटकने के डर से संतुष्ट थे। हालाँकि, घूमते हुए शीशे से खुद को अलग करने में असमर्थ एक अजनबी को देखकर उसके मुस्कुराते हुए स्वागत की गर्माहट गायब हो गई। सामाजिक अज्ञानता के इस खुले प्रदर्शन ने उसे ऐसे भौंहें सिकोड़ने पर मजबूर कर दिया जैसे कोई परीक्षक जानबूझकर यह सूत्र न बोले: "गौरव ही प्रवेश है।" मेरी सबसे बड़ी गलती यह थी कि

मैं कुलीन वर्ग के लिए आरक्षित कमरे में बैठने चला गया, जहाँ से उसने मुझे तुरंत बाहर निकाल दिया और इतनी अशिष्टता से, कि सभी वेटर भी तुरंत उसी तरह व्यवहार करने लगे, मुझे दूसरे कमरे में एक जगह का इशारा किया। यह बात मुझे और भी बुरी लगी क्योंकि वह सीट भीड़ भरी कतार के बीच में थी और मेरे सामने यहूदियों के लिए आरक्षित दरवाजा था, जो घूमता नहीं था, इसलिए हर पल खुलता और बंद होता रहता था, जिससे मुझे भयानक ठंडी हवा का सामना करना पड़ता था। लेकिन मालिक ने मुझे वहाँ से हटाने से इनकार कर दिया और कहा: "नहीं महोदय, मैं आपके लिए पूरी जगह को अस्त-व्यस्त नहीं करवा सकता।" लेकिन फिलहाल, वह इस देर से आए और परेशानी पैदा करने वाले मेहमान को भूल गया था, क्योंकि वह हर नए आने वाले व्यक्ति के आगमन से इतना मोहित था कि वह अपनी बीयर, ठंडे चिकन का विंग या गर्म ग्रॉग (अब तो रात के खाने का समय बीत चुका था) मांगने से पहले, पुराने उपन्यासों की तरह, इस गर्मजोशी और सुरक्षा के आश्रय में प्रवेश करते ही अपने साहसिक कारनामों की कहानी सुनाकर अपना आभार व्यक्त करता था, जहां अभी-अभी जिन खतरों से बचकर आया था, उनके विपरीत माहौल में वह उल्लास और भाईचारे की भावना व्याप्त हो जाती थी जो शिविर की आग के चारों ओर एक खुशनुमा सामंजस्य पैदा करती है।

एक ने बताया कि उसकी गाड़ी, यह सोचकर कि वह पोंट डे ला कॉनकॉर्ड पहुँच गई है, इनवैलिड्स के तीन चक्कर लगा चुकी थी; दूसरे ने बताया कि उसकी गाड़ी, एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ से नीचे जाने की कोशिश में, रोंड पॉइंट पर पेड़ों के एक झुंड में जा घुसी, जहाँ से निकलने में उसे पौने घंटे लग गए। फिर कोहरे, ठंड और सड़कों की भयानक खामोशी पर विलाप शुरू हो गया, जिसे उसी असाधारण हंसमुख अंदाज में कहा और सुना गया, जिसका कारण कमरे का सुखद वातावरण था - जहाँ मैं बैठा था, उसके अलावा बाकी सब जगह गर्म था; चकाचौंध भरी रोशनी जो पहले से ही कम देखने की आदी हो चुकी आँखों को झनझना रही थी; और बातचीत की गूंज जो बहरे कानों में जान डाल रही थी।

नए आए लोगों के लिए चुप रहना ही सबसे बड़ी चुनौती थी। हर किसी के साथ हुई अनोखी घटना को वे अपनी जुबान पर ज़ुबान रखे हुए थे और उनकी निगाहें बातचीत शुरू करने के लिए किसी को ढूंढ रही थीं। दुकानदार ने तो सामाजिक मर्यादा ही खो दी थी। "श्रीमान प्रिंस

डी फ़ोइक्स पोर्ट सेंट-मार्टिन से आते हुए तीन बार रास्ता भटक गए," उन्होंने हंसते हुए बेझिजक कहा, मानो किसी का परिचय करा रहे हों, और एक इस्राइली वकील को उस प्रतिष्ठित रईस की ओर इशारा कर रहे थे, जो किसी और शाम को उनके बीच हरियाली की पट्टी से भी कहीं ज़्यादा मुश्किल बाधा होती। "तीन बार - सोचो तो ज़रा!" वकील ने अपनी टोपी छूते हुए कहा। राजकुमार को यह व्यक्तिगत रुचि बिल्कुल पसंद नहीं आई। वे एक ऐसे कुलीन वर्ग के सदस्य थे जिनके लिए अभद्रता करना, यहाँ तक कि अपने साथी रईसों का अपमान करना भी, जब वे बहुत ऊंचे दर्जे के न हों, एकमात्र पेशा लगता था। किसी के प्रणाम का जवाब न देना, और यदि कोई शिष्ट अजनबी फिर से वही गलती दोहराता, तो तिरस्कारपूर्ण हंसी हंसना या क्रोध से सिर झुका लेना, किसी ऐसे बुजुर्ग व्यक्ति को न जानने का नाटक करना जो उनकी मदद कर सकता था, और केवल ड्यूक और उनके करीबी मित्रों से ही हाथ मिलाना, जिन्हें ड्यूक उनसे मिलवाते थे - इन युवकों का, और विशेष रूप से प्रिंस डी फोइक्स का, यही रवैया था। इस तरह के रवैये को युवावस्था की असंतुलित मानसिकता ने बढ़ावा दिया (एक ऐसा दौर जिसमें, मध्यम वर्ग में भी, किसी को कृतघ्न और नीच समझा जाता है क्योंकि पत्नी की मृत्यु के बाद महीनों तक किसी को पत्र न लिखने के बाद, सड़क पर चलते समय उसे प्रणाम करना भी बंद कर दिया जाता है ताकि मामला सरल रहे), लेकिन सबसे बढ़कर यह अत्यधिक जातिगत घमंड से प्रेरित था। यह सच है कि कुछ मानसिक विकारों की तरह, जिनके लक्षण बुढ़ापे में कम हो जाते हैं, यह घमंड भी उन लोगों में धीरे-धीरे कम हो गया जो जवानी में इतने असहनीय थे। जवानी बीत जाने के बाद, शायद ही कोई अक्खड़पन में जकड़ा रहता है। उसने सोचा था कि दुनिया में बस यही एक चीज है; अचानक, एक राजकुमार होने के बावजूद, उसे पता चलता है कि संगीत, साहित्य और संसद में खड़े होने जैसी चीजें भी हैं। मानवीय मूल्यों का पैमाना भी उसी के अनुरूप बदल जाता है और वह उन लोगों से बातचीत करने लगता है जिन्हें कभी वह बिजली की एक चमक से मार डालता। यह उन लोगों के लिए सौभाग्य की बात है जिन्होंने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की है और जिनका चरित्र इतना विकसित हो चुका है कि वे चालीस की उम्र में उस शिष्टाचार और स्वागत को पाकर प्रसन्न होते हैं जो बीस की उम्र में उनसे बेरहमी से छीन लिया गया था।

जैसा कि मैंने प्रिंस डी फोइक्स का जिक्र किया है, यहाँ यह बताना शायद अनुचित नहीं होगा कि वह बारह या पंद्रह युवकों के एक समूह और चार लोगों के एक आंतरिक समूह से संबंधित थे। उन बारह या पंद्रह लोगों में यह विशेषता समान थी (जो राजकुमार में नहीं थी, मेरा मानना है) कि उनमें से प्रत्येक दुनिया को दोहरे रूप में देखता था। कर्ज में डूबे होने के कारण, वे अपने व्यापारियों के लिए कोई मायने नहीं रखते थे, भले ही वे उन्हें 'महाशय कॉम्टे', 'महाशय मार्क्विस', 'महाशय ड्यूक' कहकर संबोधित करने में आनंद लेते थे। वे प्रसिद्ध धनी विवाह (जिसे तब 'धनवानों का समूह' कहा जाता था) के माध्यम से अपनी संपत्ति को फिर से संवारने की उम्मीद करते थे और, चूंकि वे जिस मोटी दहेज राशि की लालसा रखते थे, उसकी संख्या अधिक से अधिक चार या पाँच थी, इसलिए उनमें से कई चुपचाप एक ही युवती पर नजर गड़ाए रहते थे। और यह राज़ इतनी अच्छी तरह छिपाकर रखा गया था कि जब उनमें से एक ने कैफ़े पहुँचकर घोषणा की: "मेरे प्यारे दोस्तों, मैं आप सभी को इतना प्यार करता हूँ कि मैडम डी'अम्ब्रेसैक से अपनी सगाई के बारे में बताए बिना नहीं रह सकता," तो वहाँ ज़ोरदार प्रतिक्रिया हुई। कई लोगों को लगा कि मैडम डी'अम्ब्रेसैक और उनके बीच शादी लगभग तय हो चुकी है, और वे हैरानी और गुस्से से अपनी चीख को रोक नहीं पाए। "तो तुम्हें शादी का विचार पसंद है, बीबी?" प्रिंस डी चैटेलराउल्ट अपनी हैरानी और निराशा में कांटा गिराते हुए बोले, क्योंकि उन्हें पूरी उम्मीद थी कि इसी मैडम डी'अम्ब्रेसैक की सगाई की घोषणा होगी, लेकिन उनके दूल्हे के रूप में खुद चैटेलराउल्ट होंगे। और भगवान ही जानता है कि उनके पिता ने बीबी की माँ के खिलाफ अम्ब्रेसैक परिवार को कितनी चालाकी से इशारे किए थे। "तो आपको लगता है कि शादीशुदा ज़िंदगी मज़ेदार होगी?" उन्होंने अपना सवाल बीबी से दोहराने की ज़हमत उठाई, जो इस सवाल का जवाब देने के लिए बेहतर तरीके से तैयार थीं, क्योंकि सगाई के अर्ध-आधिकारिक चरण में पहुँचने के बाद से उन्हें सही रवैया तय करने के लिए काफ़ी समय मिल गया था। बीबी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया: "मुझे शादी का विचार पसंद नहीं है, जो मुझे कभी ज़्यादा आकर्षित नहीं करता था, बल्कि डेज़ी डी'अम्ब्रेसैक से शादी करना पसंद है, जो मुझे बेहद आकर्षक लगती हैं।" इस जवाब में जो समय लगा, उतने में एम. डी चैटेलराउल्ट ने अपना संयम वापस पा लिया था, लेकिन वे सोच रहे थे कि उन्हें जल्द से जल्द मैडम डे ला कैनोर्क या मिस फोस्टर, उत्तराधिकारियों की सूची में दूसरे और तीसरे नंबर

पर, की ओर रुख़ बदलना होगा, अम्ब्रेसैक की शादी की उम्मीद कर रहे लेनदारों को किसी तरह शांत करना होगा और अंत में उन लोगों को समझाना होगा जिनसे उन्होंने भी कहा था कि मैडम डे ला कैनोर्क... डी'एम्ब्रेसाक ने बड़े ही आकर्षक अंदाज़ में कहा कि बिबी के लिए यह शादी तो ठीक थी, लेकिन अगर उन्होंने खुद बिबी से शादी की होती तो उनके पूरे परिवार वाले उन पर टूट पड़ते। उन्होंने कहा कि श्रीमती सोलेओन ने तो यहाँ तक कह दिया था कि वह उन्हें अपने घर में नहीं आने देंगी।

लेकिन अगर व्यापारियों, रेस्तरां मालिकों और ऐसे ही अन्य लोगों की नज़र में वे महत्वहीन लगते थे, तो इसके विपरीत, दोहरी शख्सियत होने के कारण, समाज में आते ही उनका मूल्यांकन उनकी दौलत के पतन और उसे सुधारने के लिए किए जाने वाले घिनौने कामों के आधार पर नहीं किया जाता था। वे फिर से 'महाराज', 'राजकुमार' या 'ड्यूक' बन जाते थे और उनकी पहचान केवल उनके रहन-सहन के आधार पर होती थी। एक ड्यूक, जो व्यावहारिक रूप से करोड़पति था और अपने व्यक्तित्व में हर संभव विशिष्टता समेटे हुए प्रतीत होता था, उन्हें प्राथमिकता देता था क्योंकि अपने-अपने घरानों के मुखिया होने के नाते, वे वंशानुक्रम से छोटे-छोटे क्षेत्रों के संप्रभु राजकुमार थे, जहाँ उन्हें मुद्रा बनाने आदि का अधिकार था। अक्सर इस कैफे में, उनमें से कोई एक दूसरे के आने पर अपनी नज़रें झुका लेता था ताकि नए आने वाले को अभिवादन करने के लिए बाध्य न होना पड़े। ऐसा इसलिए था क्योंकि धन की अपनी कल्पनाशील खोज में उसने एक बैंकर को भोजन पर आमंत्रित किया था। जब भी कोई संभ्रांत व्यक्ति इस आधार पर किसी बैंकर से संबंध स्थापित करता है, तो बैंकर उसे एक लाख फ्रैंक का नुकसान पहुंचाता है, लेकिन इससे वह संभ्रांत व्यक्ति किसी दूसरे बैंकर के साथ भी ऐसा ही करने से नहीं हिचकता। हम चर्चों में मोमबत्तियां जलाना और डॉक्टरों से परामर्श करना जारी रखते हैं।

लेकिन राजकुमार डी फ़ोइक्स, जो पहले से ही धनी थे, न केवल पंद्रह-पंद्रह नौजवानों के इस फैशनेबल समूह से संबंधित थे, बल्कि सेंट-लूप सहित चार लोगों के एक और भी खास और अटूट समूह का हिस्सा थे। इन चारों को कभी भी अलग-अलग नहीं बुलाया जाता था; इन्हें चार जिगोलो के नाम से जाना जाता था; ये हमेशा साथ-साथ सवारी करते देखे जाते थे; ग्रामीण घरों में इनकी मालकिनें इन्हें आपस में जुड़े हुए कमरे देती थीं; परिणामस्वरूप, खासकर चूंकि ये

चारों बेहद आकर्षक थे, इसलिए उनकी घनिष्ठता को लेकर अफवाहें फैलती रहीं। सेंट-लूप के मामले में मैं इन अफवाहों को सीधे तौर पर गलत साबित कर सकता था। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि अगर बाद में पता चले कि ये अफवाहें चारों के बारे में सच थीं, तो चारों में से हर एक को बाकी तीन के बारे में कुछ भी पता नहीं था। फिर भी, उनमें से हर एक ने दूसरों के बारे में जानने की पूरी कोशिश की, अपनी किसी इच्छा या (शायद) किसी नाराजगी को पूरा करने के लिए, शादी रोकने के लिए या उस दोस्त पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए जिसका रहस्य उन्होंने उजागर किया था। एक पाँचवाँ व्यक्ति (क्योंकि इन चार लोगों के समूहों में कभी केवल चार ही नहीं होते) इस प्लेटोनिक समूह में शामिल हो गया था, जो बाकी सभी से कहीं अधिक प्लेटोनिक था। लेकिन धार्मिक संशय ने उसे समूह के भंग होने के काफी समय बाद तक संयमित रखा, और वह स्वयं एक विवाहित व्यक्ति था, एक परिवार का पिता था, जो लूर्डेस में पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता था कि अगला बच्चा लड़का हो या लड़की, और प्रजनन काल के अंतराल में सैनिकों की खोज में समय व्यतीत करता था।

राजकुमार के शिष्टाचार के नियमों के बावजूद, यह तथ्य कि बैरिस्टर की टिप्पणी, हालांकि उनके सामने कही गई थी, सीधे उनसे संबोधित नहीं थी, ने उन्हें उतना क्रोधित नहीं किया जितना कि अन्यथा हो सकता था। इसके अलावा, यह शाम कुछ असाधारण थी। अंततः, बैरिस्टर के लिए राजकुमार डी फ़ोइक्स को जानने की उतनी ही कम संभावना थी जितनी उस कैब ड्राइवर के लिए जिसने उस कुलीन स्वामी को रेस्तरां तक पहुँचाया था। इसलिए, राजकुमार ने सोचा कि वह घमंडी लहजे में, मानो किसी 'अदृश्य व्यक्ति' से बात कर रहे हों, उस अजनबी को जवाब दे सकते हैं जो कोहरे के कारण किसी ऐसे यात्री की तरह था जिससे पृथ्वी के छोर पर स्थित किसी समुद्रतट पर मुलाकात होती है, जहाँ आकाश की सभी हवाएँ चलती हों या जो कोहरे से ढका हो: "रास्ता भटकना कोई बड़ी बात नहीं; परेशानी यह है कि आप उसे फिर से नहीं पा सकते।" इस कहावत की बुद्धिमत्ता ने रेस्तरां के मालिक को प्रभावित किया, क्योंकि उन्होंने इसे शाम के दौरान कई बार सुना था।

दरअसल, उनकी आदत थी कि वे जो कुछ भी सुनते या पढ़ते थे, उसकी तुलना पहले से ज्ञात प्रामाणिक सामग्री से करते थे, और यदि उन्हें कोई अंतर नहीं दिखता था तो वे प्रशंसा से भर जाते थे। इस मानसिकता को किसी भी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि

राजनीतिक चर्चाओं और समाचार पत्रों के पठन में इसका प्रयोग जनमत निर्माण करता है और इस प्रकार इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं को संभव बनाता है। अगादिर के समय में, जर्मन जमींदारों का एक समूह, केवल एक ग्राहक या समाचार पत्र की इस बात से प्रभावित होकर कि फ्रांस, इंग्लैंड और रूस जर्मनी को 'कुचलने' पर तुले हैं, युद्ध की संभावना पैदा कर दी, भले ही वास्तव में कोई युद्ध न हुआ हो। यदि इतिहासकारों ने लोगों के कार्यों को राजाओं की इच्छा से जोड़ने की प्रथा को त्यागने में कोई गलती नहीं की है, तो उन्हें इसके स्थान पर व्यक्ति के मनोविज्ञान को महत्वहीन मान लेना चाहिए।

राजनीति में, इस विशेष कैफे के मालिक ने कुछ समय से अपने शिष्य-शिक्षक के मन को ड्रेफस मामले के कुछ विशेष विवरणों पर केंद्रित कर रखा था। यदि उन्हें किसी ग्राहक की बातचीत या किसी समाचार पत्र के लेखों में वे शब्द नहीं मिलते जिनसे वे परिचित होते, तो वे लेख को उबाऊ या वक्ता को बेईमान बताते। लेकिन प्रिंस डी फॉक्स ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उन्हें अपनी बात पूरी करने का भी समय नहीं दिया। "बिल्कुल सही, प्रिंस, बिल्कुल सही," (जिसका अर्थ था 'बिना किसी गलती के दोहराया गया') "यह बिल्कुल वैसा ही है!" उन्होंने अरेबियन नाइट्स के पात्रों की तरह 'अत्यधिक तृप्ति की सीमा तक' विस्तार से कहा। लेकिन तब तक प्रिंस छोटे कमरे में गायब हो चुके थे। फिर, जैसे जीवन सबसे सनसनीखेज घटनाओं के बाद भी सामान्य रूप से चलने लगता है, धुंध के सागर से निकले लोग अपनी पसंद का खाना-पीना मंगवाने लगे; उनमें जॉकी क्लब के कुछ नौजवान भी थे, जिन्होंने असामान्य स्थिति को देखते हुए बड़े कमरे में दो मेजों पर बैठने में ज़रा भी संकोच नहीं किया और इस तरह वे मेरे काफ़ी करीब आ गए। इस तरह उस प्रलय ने छोटे कमरे और बड़े कमरे के बीच भी, कोहरे के सागर में लंबी यात्रा के बाद रेस्तरां के आराम से तरोताज़ा हुए इन सभी लोगों के बीच एक ऐसी आत्मीयता स्थापित कर दी थी, जिससे मैं अकेला अछूता था, ठीक उसी तरह जैसे नूह के जहाज़ में रही होगी। अचानक मैंने देखा कि मकान मालिक ने झुककर अभिवादन किया, और मुख्य वेटर भी पूरी तरह से उनका साथ देने के लिए दौड़ पड़े, जिससे सबकी निगाहें दरवाजे की ओर मुड़ गईं। "जल्दी करो, साइप्रियन को यहाँ भेजो, एम. ले मार्क्विस डी सेंट-लूप के लिए एक मेज लगाओ," मालिक ने कहा, जिसके लिए रॉबर्ट न केवल एक महान रईस थे, जिनका प्रिंस डी फ़ोइक्स की नज़रों में भी वास्तविक महत्व था,

बल्कि एक ऐसे ग्राहक थे जो मानो जीवन भर चार घोड़ों पर सवार होकर चलते थे और इस रेस्तरां में बहुत पैसा खर्च करते थे। बड़े कमरे में बैठे ग्राहक उत्सुकता से देख रहे थे, छोटे कमरे में बैठे लोगों ने अपने दोस्त को जूते पोंछते हुए देखकर एक साथ अभिवादन किया। लेकिन जैसे ही वह छोटे कमरे में जाने वाला था, उसकी नज़र बड़े कमरे में मुझ पर पड़ी। "हे भगवान!" वह चिल्लाया, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? और दरवाज़ा भी खुला है?" उसने गुस्से से मालिक की ओर देखते हुए कहा, जो दौड़कर दरवाज़ा बंद करने गया और सारा दोष अपने कर्मचारियों पर मढ़ते हुए बोला, "मैं तो हमेशा उन्हें दरवाज़ा बंद रखने को कहता हूँ।"

मुझे अपनी मेज हटानी पड़ी और रास्ते में आने वाली दूसरी मेजों को भी हटाना पड़ा ताकि मैं उन तक पहुँच सकूँ। "आप क्यों हटे? क्या आप उस छोटे से कमरे के बजाय यहीं खाना खाना पसंद करेंगे? अरे, बेचारे, आपको ठंड लग रही है। कृपया वह दरवाजा बंद रखें;" वह मालिक की ओर मुड़े। "अभी इसी वक्त, श्रीमान मार्क्विस; सज्जनों को इस कमरे से दूसरे दरवाजे से बाहर जाना होगा, बस।" और अपनी तत्परता दिखाने के लिए उन्होंने इस काम के लिए एक मुख्य वेटर और कई सहायकों को तैनात किया, और यह कहते हुए कि अगर यह ठीक से नहीं हुआ तो उन्हें भयानक सजा दी जाएगी। उन्होंने मेरे प्रति अत्यधिक सम्मान दिखाना शुरू कर दिया ताकि मैं भूल जाऊं कि यह सब मेरे आने पर नहीं बल्कि सेंट-लूप के आने के बाद शुरू हुआ था, और कहीं मैं यह न सोच लूँ कि यह उनके धनी और कुलीन ग्राहक द्वारा दिखाई गई मित्रता के कारण था, इसलिए वे बीच-बीच में मुझे एक हल्की सी मुस्कान देते थे जो मानो पूरी तरह से व्यक्तिगत सम्मान का संकेत देती थी।

मेरे पीछे बैठे एक ग्राहक की कही बात सुनकर मैंने एक पल के लिए अपना सिर घुमाया। मैंने "चिकन विंग, बहुत बढ़िया; और एक गिलास शैंपेन, बस थोड़ा सूखा नहीं" के बजाय अप्रत्याशित बात सुनी: "मुझे ग्लिसरीन पसंद है। जी हां, गरम, बहुत बढ़िया।" मैं देखना चाहता था कि वह तपस्वी कौन है जो खुद पर ऐसा कठोर आहार थोप रहा है। मैं जल्दी से सेंट-लूप की ओर मुड़ गया ताकि वह अजीबोगरीब खान-पान वाला व्यक्ति मुझे पहचान न ले। वह बस एक डॉक्टर थे, जिन्हें मैं जानता था, और एक अन्य ग्राहक, कोहरे का फायदा उठाकर कैफे में उनसे बात कर रहा था और उनकी पेशेवर सलाह ले रहा था। स्टॉकब्रोकरों की तरह, डॉक्टर भी प्रथम पुरुष एकवचन का प्रयोग करते हैं।

इसी बीच मैं सेंट-लूप का अध्ययन कर रहा था, और मेरे विचार अपने आप ही एक अलग दिशा में मुड़ गए। इस कैफ़े में, जिसे मैं पहले भी कई बार देख चुका था, बहुत से विदेशी, बुद्धिजीवी, हर तरह के उभरते हुए प्रतिभाशाली लोग मौजूद थे, जो अपने दिखावटी लबादों, 1830 के दशक की टाई और उससे भी ज़्यादा अपनी बेढंगी चालों से पैदा हुई हंसी को अनदेखा कर रहे थे। वे तो यहाँ तक कि जानबूझकर हंसी को भड़काते थे ताकि यह दिखा सकें कि उन्हें इसकी परवाह नहीं है, जबकि वे वास्तव में बौद्धिक और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण, अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति थे। वे उन लोगों को दूर भगाते थे—खासकर यहूदियों को, यानी उन यहूदियों को जो समाज में घुल-मिल नहीं पाए थे, क्योंकि दूसरे प्रकार के यहूदियों से हमारा कोई लेना-देना नहीं है—जो किसी भी तरह की विचित्रता या सनक को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे (जैसे ब्लोच ने अल्बर्टाइन को दूर भगाया था)। सामान्यतः, बाद में यह एहसास हुआ कि भले ही उनके बाल बहुत लंबे हों, नाक और आँखें बहुत बड़ी हों, और हाव-भाव बनावटी हों, फिर भी केवल इन्हीं के आधार पर उनका आकलन करना बचकाना था। उनमें भरपूर बुद्धि और जोश था, और वे ऐसे व्यक्ति थे जिनसे अंततः गहरा लगाव हो सकता था। यहूदियों में, विशेष रूप से, ऐसे बहुत कम लोग थे जिनके माता-पिता और रिश्तेदार हृदय की गर्मजोशी और खुले विचारों से रहित थे। इनकी तुलना में सेंट-लूप की माँ और ड्यूक डी गुएरमांटेस अपनी रूखेपन, सतही धार्मिकता (जो केवल खुले घोटालों की निंदा करती थी), और ईसाई धर्म के लिए दिए गए उनके बचाव (जो हमेशा एक विशुद्ध रूप से हिसाब-किताब करने वाले दिमाग के अप्रत्याशित मार्ग से) के कारण बेहद धनी विवाह की ओर ले जाता था) के कारण सबसे दयनीय प्रतीत होते थे। लेकिन सेंट-लूप में, सब कुछ कहने के बाद भी, उनके रिश्तेदारों की कमियों को चाहे जिस तरह से एक नए चरित्र में पिरोया गया हो, मन और हृदय की सबसे आकर्षक खुलापन व्याप्त था। और जब भी (फ्रांस की अमर महिमा के लिए यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए) ये गुण किसी सच्चे फ्रांसीसी व्यक्ति में पाए जाते हैं, चाहे वह कुलीन हो या आम आदमी, तो वे निखरते हैं—निखरना तो बहुत ही प्रबल शब्द होगा, क्योंकि उनमें एक संतुलन और संयम बना रहता है—और वे उस गरिमा के साथ प्रकट होते हैं जो कोई विदेशी आगंतुक, चाहे वह कितना भी प्रशंसनीय क्यों न हो, हमें नहीं दिखा पाता। इन बौद्धिक और नैतिक गुणों में निस्संदेह दूसरों का भी अपना हिस्सा है, और यदि हमें पहले उन

चीजों पर काबू पाना पड़े जो हमें विचलित करती हैं और जो हमें हंसाती हैं, तो भी ये गुण कम मूल्यवान नहीं रह जाते। लेकिन फिर भी यह एक सुखद बात है, और शायद यह केवल फ्रांसीसी विशेषता ही है कि जो न्यायसंगतता की दृष्टि से उत्तम है, जो हृदय और मन को भाता है, वह सर्वप्रथम आँखों को भाए, मनमोहक रंगों से परिपूर्ण हो, उत्कृष्ट रूप से तराशा हुआ हो, और सार और रूप दोनों में आंतरिक पूर्णता को प्रकट करे। मैंने सेंट-लूप के चेहरे का अध्ययन किया और मन ही मन कहा कि यह एक सुखद बात है जब शरीर की सुंदरता में कोई कमी नहीं होती, जो आंतरिक सुंदरता के लिए तैयारी करती है, और जब पंखनुमा नथुने उतने ही नाजुक और परिपूर्ण ढंग से फैले होते हैं जैसे कि कॉम्ब्रे के आसपास के खेतों में खिलने वाले फूलों पर मंडराने वाली छोटी तितलियों के पंख; और यह कि सच्ची कृति, जिसका रहस्य तेरहवीं शताब्दी में खोया नहीं था, जिसकी सुंदरता हमारे गिरजाघरों के विनाश के साथ भी नष्ट नहीं होगी, सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के पत्थर के देवदूतों में उतनी नहीं निहित है जितनी कि फ्रांस के युवा पुत्रों में, चाहे वे कुलीन हों, नागरिक हों या किसान हों, जिनके चेहरे उस कोमलता और साहस के साथ तराशे गए हैं जो वहां उतनी ही पारंपरिक हैं जितनी कि प्रसिद्ध बरामदे पर, लेकिन फिर भी रचनात्मक हैं।

दरवाजा बंद करवाने और हमारे खाने का ऑर्डर देने के लिए कुछ देर के लिए हमें छोड़कर जाने के बाद (उन्होंने हमें 'कसाई का मांस' चुनने पर बहुत ज़ोर दिया, क्योंकि मुर्गियाँ शायद कोई खास चीज़ नहीं थीं), दुकानदार वापस आकर हमें यह बताने आया कि अगर एम. ले मार्क्विस उन्हें हमारे बगल वाली मेज पर भोजन करने की अनुमति दें तो एम. ले प्रिंस डी फ़ोइक्स इसे अपना एहसान समझेंगे। "लेकिन वे सभी मेजें भरी हुई हैं," रॉबर्ट ने आपत्ति जताते हुए उन मेजों पर नज़र डाली जो मेरे रास्ते में रुकावट बन रही थीं। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर एम. ले मार्क्विस चाहें तो मैं आसानी से इन लोगों को दूसरी मेज पर जाने के लिए कह सकता हूँ। एम. ले मार्क्विस के लिए कुछ भी करना हमेशा खुशी की बात होती है!" "लेकिन आपको फैसला करना होगा," सेंट-लूप ने मुझसे कहा। "फ़ोइक्स एक अच्छा आदमी है, वह आपको बोर कर भी सकता है और नहीं भी; वैसे भी वह उनमें से ज़्यादातर लोगों की तरह मूर्ख नहीं है।" मैंने रॉबर्ट से कहा कि बेशक मैं उनके दोस्त से मिलना चाहूँगी, लेकिन अब जब मैं एक तरह से उनके साथ भोजन कर रही हूँ और बहुत खुश हूँ, तो मुझे उतना ही

अच्छा लगेगा अगर वह मेरे साथ अकेले हों। "राजकुमार का चोला बहुत बढ़िया है," दुकानदार ने हमारी बातचीत के बीच में दखल देते हुए कहा। "हाँ, मुझे पता है," सेंट-लूप ने कहा। मैं रॉबर्ट को बताना चाहती थी कि एम. डी चार्लस ने अपनी भाभी से मेरे बारे में किसी भी तरह की जानकारी होने से इनकार कर दिया था, और उनसे इसका कारण पूछना चाहती थी, लेकिन एम. डी फॉक्स के आने से ऐसा नहीं हो सका। यह देखने के लिए कि उनका अनुरोध स्वीकार किया गया है या नहीं, हमने उन्हें अपनी मेज के पास खड़े देखा। रॉबर्ट ने हमारा परिचय कराया, लेकिन अपने दोस्त से यह नहीं छिपाया कि चूंकि हमें कुछ बातें करनी हैं, इसलिए वह नहीं चाहेंगे कि उन्हें परेशान किया जाए। राजकुमार चले गए, और विदाई के समय उन्होंने मुझे झुककर प्रणाम किया और मुस्कुराते हुए सेंट-लूप की ओर इशारा किया, मानो वह उस मुलाकात के संक्षिप्त होने की जिम्मेदारी उन पर डाल रहे हों, जिसे राजकुमार स्वयं लंबा करना चाहते थे। जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ा, रॉबर्ट, मानो अचानक किसी विचार से प्रेरित होकर, अपने मित्र के पीछे दौड़ पड़ा और मुझसे कहा, "तुम यहीं रहो और अपना खाना खाओ, मैं एक पल में वापस आता हूँ"; और छोटे कमरे में गायब हो गया। मुझे यह सुनकर दुख हुआ कि मेरे पास बैठे कुछ होशियार नौजवान, जिन्हें मैं नहीं जानता था, लक्ज़मबर्ग के युवा वंशानुगत ग्रैंड ड्यूक (पूर्व में कॉम्टे डी नासाऊ) के बारे में सबसे बेतुकी और दुर्भावनापूर्ण कहानियाँ दोहरा रहे थे, जिनसे मैं बालबेक में मिला था और जिन्होंने मेरी दादी की बीमारी के समय मेरे प्रति इतनी कोमल सहानुभूति दिखाई थी। इनमें से एक युवा के अनुसार, उन्होंने डचेस डी गुएरमांटेस से कहा था: "मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी पत्नी के गुजरने पर सभी लोग उठ खड़े हों," जिस पर डचेस ने (मज़ाक में, अगर उन्होंने ऐसा कुछ कहा भी हो, तो उसमें सच्चाई की कमी थी, क्योंकि युवा राजकुमारी की दादी हमेशा से ही शिष्टाचार की प्रतीक थीं): "क्या वे आपकी पत्नी के गुजरने पर उठते हैं? खैर, यह तो उनकी दादी के ज़माने से बिल्कुल अलग है। वह तो सज्जनों से लेटने की उम्मीद करती थीं।" फिर किसी ने आरोप लगाया कि बालबेक में अपनी चाची प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग से मिलने और ग्रैंड होटल में ठहरने के दौरान, उन्होंने वहाँ के मैनेजर (मेरे दोस्त) से शिकायत की कि होटल के सामने, समुद्र के ऊपर लक्ज़मबर्ग का शाही झंडा नहीं फहराया गया था। और यह झंडा ब्रिटिश या इतालवी झंडों की तुलना में कम जाना-पहचाना और कम प्रचलित होने के कारण,

उसे एक झंडा लाने में कई दिन लग गए, जिससे युवा ग्रैंड ड्यूक को बहुत गुस्सा आया। मुझे इस कहानी पर ज़रा भी यकीन नहीं हुआ, लेकिन बालबेक पहुँचते ही मैंने प्रबंधक से पूछताछ करने का निश्चय कर लिया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह पूरी तरह मनगढ़ंत कहानी है। सेंट-लूप के लौटने का इंतज़ार करते हुए मैंने दुकानदार से मेरे लिए कुछ रोटी लाने को कहा। "ज़रूर, महाशय बैरन!" "मैं बैरन नहीं हूँ," मैंने उसे बताया। "अरे, क्षमा करें, महाशय कॉम्टे!" मेरे पास दूसरी बार विरोध करने का समय नहीं था, जिससे मुझे निश्चित रूप से मार्क्विस का पद मिल जाता; अपने तुरंत लौटने के वादे के मुताबिक, सेंट-लूप दरवाजे पर फिर से प्रकट हुआ, अपनी बांह पर प्रिंस डी फ़ोइक्स का मोटा विकुना लबादा लिए हुए, जिससे मैंने अनुमान लगाया कि उसने मुझे गर्म रखने के लिए इसे उधार लिया था। उसने मुझे उठने से मना किया और मेरी ओर आया, लेकिन अगर उसे अपनी जगह पर जाना था तो या तो मेरी मेज को फिर से हटाना पड़ेगा या मुझे अपनी सीट बदलनी पड़ेगी। बड़े कमरे में प्रवेश करते ही वह दीवारों के चारों ओर लगी लाल मखमली बेंचों में से एक पर फुर्ती से चढ़ गया। उस बेंच पर मेरे अलावा जॉकी क्लब के उसके तीन-चार दोस्त बैठे थे, जिन्हें दूसरे कमरे में जगह नहीं मिल पाई थी। मेजों और दीवार के बीच एक निश्चित ऊंचाई पर बिजली के तार लगे थे; सेंट-लूप ने बिना किसी झिझक के उन पर से छलांग लगा दी, मानो कोई घोड़ा स्टीपलचेज़ में भाग रहा हो। मुझे इस बात से थोड़ी शर्मिंदगी हुई कि यह सब उसने मेरे लिए किया और मुझे थोड़ी सी भी हलचल से बचाने के लिए, लेकिन साथ ही मैं अपने दोस्त की इस हवा में उड़ने की कलाबाजी की सटीकता पर चकित भी था; और इस मामले में मैं अकेला नहीं था; क्योंकि, हालांकि शायद वे किसी साधारण परिवार में जन्मे और कम उदार ग्राहक के ऐसे प्रदर्शन की सराहना नहीं करते, फिर भी मालिक और उसके कर्मचारी घुड़दौड़ देखने वालों की तरह मंत्रमुग्ध होकर खड़े थे। एक अधीनस्थ, मानो ज़मीन पर जड़वत खड़ा था, हाथ में एक थाली लिए वहीं अँधेरा मुँह खोले खड़ा था, जिसके लिए उसके पास बैठे कुछ लोग इंतज़ार कर रहे थे; और जब सेंट-लूप को अपने दोस्तों से आगे निकलने के लिए उनके पीछे बनी संकरी पट्टी पर चढ़ना पड़ा और अपनी बाहों के सहारे संतुलन बनाते हुए उस पर दौड़ने लगा, तो कमरे में मौजूद सभी लोगों ने दबी हुई तालियाँ बजाईं। जब वह मेरे पास आकर बैठा, तो वह एक सम्राट के सिंहासन के सामने एक आज्ञाकारी सरदार की तरह अचानक रुक गया, और

झुककर मुझे विनम्रता और समर्पण भाव से विकुना का लबादा सौंप दिया, जिसे उसने थोड़ी देर बाद मेरे बगल में बैठकर, बिना मेरे कुछ किए, मेरे कंधों पर एक हल्के लेकिन गर्म शॉल की तरह ओढ़ा दिया।

"वैसे, मुझे याद आया कि मेरे चाचा चार्लस आपसे कुछ कहना चाहते हैं। मैंने वादा किया था कि मैं आपको कल शाम उनके पास भेज दूंगा।"

मैं अभी उसी के बारे में आपसे बात करने वाला था। लेकिन कल शाम मैं आपकी चाची गुएरमांटेस के साथ भोजन कर रहा हूँ।

हाँ, कल ओरियान के यहाँ शानदार दावत है। मुझे बुलाया नहीं गया है। लेकिन मेरे चाचा पलामेडे नहीं चाहते कि तुम वहाँ जाओ। लगता है, तुम इससे बच नहीं सकते? खैर, फिर भी, बाद में मेरे चाचा के यहाँ चले जाना। मुझे यकीन है कि वो तुमसे मिलना चाहते हैं। देखो, तुम ग्यारह बजे तक आसानी से पहुँच सकते हो। ग्यारह बजे; भूलना मत; मैं उन्हें बता दूँगा। वो बहुत चिड़चिड़े हैं। अगर तुम नहीं पहुँचे तो वो तुम्हें कभी माफ़ नहीं करेंगे। और ओरियान की पार्टियाँ हमेशा जल्दी खत्म हो जाती हैं। अगर तुम सिर्फ़ वहाँ खाना खाने जा रहे हो तो ग्यारह बजे तक मेरे चाचा के यहाँ आसानी से पहुँच सकते हो। मुझे मोरक्को से स्थानांतरण के बारे में ओरियान से मिलने जाना चाहिए; मुझे अदला-बदली चाहिए। वो इस तरह की सभी चीज़ों में बहुत अच्छी हैं, और वो जनरल डी सेंट-जोसेफ से, जो उस शाखा को चलाते हैं, अपनी मनचाही चीज़ हासिल कर सकती हैं। लेकिन इस बारे में उन्हें कुछ मत बताना। मैंने इस बारे में उनसे बात कर ली है। प्रिंसेस डी पार्म, सब ठीक हो जाएगा। मोरक्को एक दिलचस्प जगह है। मैं आपको इसके बारे में बहुत कुछ बता सकती हूँ। वहाँ बहुत अच्छे लोग हैं। ऐसा लगता है जैसे वे मानसिक रूप से आपके ही स्तर पर हैं।

"क्या आपको नहीं लगता कि जर्मन लोग इस मुद्दे पर युद्ध छेड़ देंगे?"

नहीं; वे हमसे नाराज़ हैं, और आख़िरकार उन्हें नाराज़ होने का पूरा अधिकार है। लेकिन सम्राट शांति चाहते हैं। वे हमेशा हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि वे युद्ध चाहते हैं, ताकि हम हार मान लें। सरासर धोखा, जैसे पोकर में होता है। मोनाको का राजकुमार, विल्हेम के एजेंटों में से एक, आता है और हमें गुप्त रूप से बताता है कि जर्मनी हम पर हमला करेगा। तब हम हार मान लेते हैं। लेकिन अगर हम हार नहीं मानते, तो किसी भी रूप में युद्ध नहीं

होता। ज़रा सोचिए कि इन दिनों युद्ध कितना हास्यास्पद तमाशा होता। यह जलप्रलय और गोटरडैमरंग से भी कहीं बड़ी तबाही होती। बस इतना ही कि यह इतना लंबा नहीं चलता।

उन्होंने मुझसे मित्रता, स्नेह और खेद की बातें कीं, हालांकि अपने जैसे अन्य आगंतुकों की तरह वे भी अगली सुबह कुछ महीनों के लिए जा रहे थे, जो उन्हें ग्रामीण इलाकों में बिताने थे, और मोरक्को (या कहीं और) लौटते समय पेरिस में केवल दो रातें ही रुकेंगे; लेकिन उस शाम उन्होंने मेरे हृदय में उमड़ती भावनाओं को जिस तरह से व्यक्त किया, उससे मेरे हृदय में एक सुखद आभा उत्पन्न हुई। हमारी कभी-कभार होने वाली मुलाकातें, विशेष रूप से यह मुलाकात, मेरी यादों में एक विशिष्ट घटना बन गई है। उनके लिए भी, और मेरे लिए भी, यह मित्रता की शाम थी। फिर भी, उस क्षण उनके प्रति जो मित्रता मैंने महसूस की, मुझे डर था (और इसलिए इस विचार से मुझे कुछ खेद भी हुआ), वह वैसी नहीं थी जैसी वे मेरे मन में जगाना चाहते थे। उसे मेरी ओर दौड़ते हुए आते और अपने लक्ष्य तक पहुँचने पर सहजता से रुकते हुए देखकर मुझे जो आनंद मिला था, उससे मैं अभी भी भरा हुआ था। मुझे लगा कि यह आनंद इस बात में निहित था कि मैंने यह पहचान लिया था कि दीवार के सहारे, बेंच के साथ-साथ उसने जो भी हरकतें की थीं, उनमें से प्रत्येक का अपना अर्थ था, अपना कारण था, संभवतः सेंट-लूप के अपने व्यक्तिगत स्वभाव में, लेकिन उससे भी अधिक उस स्वभाव में जो उसे जन्म और पालन-पोषण से अपनी जाति से विरासत में मिला था।

सौंदर्य के क्षेत्र में नहीं बल्कि शिष्टाचार के क्षेत्र में उनकी रुचि की एक ऐसी निश्चितता थी, जिसने उन्हें परिस्थितियों के एक नए संयोजन का सामना करने पर सक्षम बनाया - ठीक उसी तरह जैसे एक संगीतकार को कोई ऐसा संगीत बजाने के लिए कहा जाता है जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा हो - आवश्यक भाव, आवश्यक गतियों को तुरंत समझ लेने और उचित तंत्र और तकनीक को लागू करने में; जिसने तब इस रुचि को किसी अन्य विचार के बंधन के बिना स्वयं को प्रदर्शित करने की अनुमति दी, जिससे मध्यम वर्ग का औसत युवक पंगु हो जाता, क्योंकि उसे न केवल परंपराओं की अवहेलना करके अजनबियों की नजरों में खुद को हास्यास्पद बनाने का डर होता, बल्कि अपने दोस्तों की नजरों में अत्यधिक विनम्र दिखने का भी डर होता; रॉबर्ट में इस बंधन का स्थान एक उच्च तिरस्कार ने ले लिया, जिसे निश्चित रूप से उन्होंने अपने दिल में कभी महसूस नहीं किया था, बल्कि अपने शरीर में विरासत में प्राप्त

किया था, और जिसने उनके पूर्वजों के अपने से निचले लोगों के प्रति ऐसी आत्मीयता का रवैया ढाला था, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह केवल उन लोगों को खुश और मोहित कर सकता है जिनके सामने इसे प्रदर्शित किया जाता है। अंत में, एक महान उदारता, जिसने अपने असीम प्राकृतिक लाभों की परवाह किए बिना (इस रेस्तरां में किए गए भव्य खर्च ने उन्हें, यहाँ और अन्य जगहों की तरह, सबसे फैशनेबल ग्राहक और सबका चहेता बना दिया था, एक ऐसी स्थिति जिसे पूरे स्थान पर न केवल वेटरों द्वारा बल्कि इसके सभी विशिष्ट युवा ग्राहकों द्वारा दिखाए गए सम्मान से रेखांकित किया गया था), उन्हें उन लाभों को पैरों तले रौंदने के लिए प्रेरित किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने वास्तव में और प्रतीकात्मक रूप से, बैंगनी रंग से सजी उन बेंचों को रौंद डाला था, एक विजय यात्रा की तरह जो मेरे मित्र को केवल इसलिए प्रसन्न करती थी क्योंकि इससे वह अधिक शालीनता और शीघ्रता से मेरे पास पहुँच सके; ये वे गुण थे, जो अभिजात वर्ग के लिए आवश्यक हैं, जो इस शरीर के खोल के माध्यम से, जो मेरे शरीर की तरह अपारदर्शी और अस्पष्ट नहीं था, बल्कि सार्थक और निर्मल था, एक कलाकृति के माध्यम से उस कर्मठ, ऊर्जावान शक्ति को प्रसारित करते थे जिसने इसे बनाया था और रॉबर्ट द्वारा दीवार के सहारे हल्के कदमों से किए गए इस चाल को संगमरमर की पट्टी पर शूरवीरों की पंक्ति की तरह बोधगम्य और आकर्षक बना दिया था। "अफ़सोस!" रॉबर्ट ने शायद सोचा होगा, "क्या यह सार्थक था कि मैं जन्म को तुच्छ समझकर, केवल न्याय और बुद्धि का सम्मान करते हुए बड़ा हुआ, अपने लिए चुने गए मित्रों की श्रेणी से बाहर के उन साथियों को चुना जो भद्दे और बेढंगे थे, बशर्ते उनमें वाक्पटुता का गुण हो, केवल मुझमें प्रकट होने वाले एकमात्र व्यक्तित्व के लिए, जो एक अनमोल स्मृति बनकर रह जाएगा, वह नहीं जिसे मेरी इच्छा ने, अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास से, मेरे स्वरूप में गढ़ा है, बल्कि वह जो मेरी रचना नहीं है, जो मैं स्वयं भी नहीं हूँ, जिसे मैंने हमेशा नापसंद किया है और जिस पर विजय पाने का प्रयास किया है; क्या यह सार्थक था कि मैं अपने चुने हुए मित्र से उतना ही प्रेम करूँ जितना मैंने उससे किया है, क्योंकि उसे मुझमें जो सबसे बड़ा आनंद मिल सकता है, वह है मुझसे कहीं अधिक व्यापक कुछ खोजना, एक ऐसा आनंद जो (जैसा कि वह कहता है, हालाँकि वह गंभीरता से इस पर विश्वास नहीं कर सकता) मित्रता का आनंद बिल्कुल नहीं है, बल्कि एक बौद्धिक और पृथक, एक प्रकार का कलात्मक आनंद है?" मुझे अब डर है कि सेंट-लूप ने भी

कभी-कभी यही सोचा होगा। यदि ऐसा है, तो वह गलत था। यदि उन्होंने (जैसा कि उन्होंने दृढ़तापूर्वक किया था) अपने शरीर की सहज कोमलता से कहीं अधिक उदात्त किसी चीज़ की चाह न रखी होती, यदि वे इतने लंबे समय तक कुलीन जन्म से जुड़े अभिमान से दूर न रहे होते, तो उनके व्यवहार में कुछ अधिक सधा हुआ, एक प्रकार का भारीपन, उनकी चपलता में एक आत्म-महत्वपूर्ण अशिष्टता होती। जिस प्रकार श्रीमती डी विलेपारिस के लिए अपनी बातचीत और संस्मरणों में बौद्धिक, तुच्छता का भाव लाने के लिए गंभीरता का एक मजबूत भाव आवश्यक था, उसी प्रकार, सेंट-लूप के शरीर में इतनी महानता का वास होने के लिए, पहले उनके मन को उच्चतर लक्ष्यों की ओर उन्मुख होने से विमुख होना पड़ा और फिर शरीर में समाहित होकर, अचेतन, उदात्त रेखाओं में स्थिर होना पड़ा। इस प्रकार उनकी मानसिक विशिष्टता शारीरिक विशिष्टता से भिन्न नहीं थी, जो अन्यथा अपूर्ण होती। एक कलाकार को अपने मन की गुणवत्ता को व्यक्त करने के लिए उसे सीधे अपने काम में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं होती; यह सचमुच कहा गया है कि ईश्वर की सर्वोच्च प्रशंसा नास्तिक द्वारा उनके इनकार में निहित है, जो सृष्टि को इतना परिपूर्ण पाते हैं कि उसे किसी सृष्टिकर्ता की आवश्यकता ही नहीं है। और मैं भली-भांति जानता था कि मैं उस युवक द्वारा दीवार पर अपने उड़ान पाठ्यक्रम की नक्काशी को खोलते हुए केवल एक कलाकृति की ही प्रशंसा नहीं कर रहा था; युवा राजकुमार (कैथरीन डी फॉक्स, नवार की रानी और चार्ल्स सप्तम की पोती के वंशज), जिन्हें उन्होंने अभी-अभी मेरे लिए छोड़ा था, जन्म और भाग्य से प्राप्त वे सभी संपदाएँ जो वे मेरे चरणों में अर्पित कर रहे थे, वे गौरवशाली और सुडौल पूर्वज जो उस आत्मविश्वास, चपलता और शिष्टाचार में जीवित थे जिसके साथ उन्होंने अब मेरे कांपते शरीर पर गर्म ऊनी लबादा लपेटा, क्या ये सभी उनके जीवन के उन पुराने मित्रों के समान नहीं थे, जिनसे मुझे उम्मीद हो सकती थी कि वे हमें हमेशा के लिए अलग रखेंगे, और जिन्हें, इसके विपरीत, वे मेरे लिए एक ऐसे चुनाव द्वारा बलिदान कर रहे थे जो केवल मन के उच्चतम स्थानों में ही किया जा सकता है, उस संप्रभु स्वतंत्रता के साथ जिसकी रॉबर्ट की गतिविधियाँ पूर्वसूचना थीं और जिसमें पूर्ण मित्रता साकार होती है?

एक गुरमांटेस के साथ घनिष्ठ मेलजोल—रॉबर्ट के साथ उस विशिष्टता के स्थान पर, जहाँ मानवता के प्रति वंशानुगत तिरस्कार केवल एक बाहरी आवरण था, जो एक वास्तविक नैतिक

विनम्रता का अवचेतन आकर्षण बन गया था—उस अशिष्ट अहंकार को कितना उजागर कर सकता था जिसे मैंने एम. डी चार्लस में नहीं, जिनमें कुछ विशिष्ट दोष थे, जिनका कारण मैं अब तक नहीं समझ पाया था, जो उनकी अभिजातीय आदतों पर आरोपित थे, बल्कि ड्यूक डी गुरमांटेस में देखा था। और फिर भी, उनकी सामान्य सादगी की छाप में, जिसने मेरी दादी को वर्षों पहले श्रीमती डी विलेपारिसिस के घर उनसे एक बार मिलने पर बहुत निराश किया था, ऐतिहासिक भव्यता की झलक भी शामिल थी, जिसके बारे में मुझे तब पता चला जब मैं सेंट-लूप के साथ बिताई शाम के बाद वाली शाम उनके घर भोजन करने गया।

जब मैं उनसे पहली बार उनकी चाची के ड्राइंग रूम में मिला था, तब न तो उनमें और न ही डचेस में ये अंतर मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दिए थे, ठीक उसी तरह जैसे पहली बार देखने पर मुझे वे अंतर समझ में नहीं आए थे जो बर्मा को उसके साथी खिलाड़ियों से अलग करते थे, खासकर इसलिए कि उसमें व्यक्तित्व किसी भी सामाजिक हस्ती की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली था, और ये अंतर तब और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं जब वस्तुएं अधिक वास्तविक और बुद्धि द्वारा अधिक बोधगम्य होती हैं। फिर भी, सामाजिक भेद की बारीकियाँ चाहे कितनी भी सूक्ष्म क्यों न हों (और वे इतनी सूक्ष्म हैं कि जब सैंट-बेउवे जैसे एक सटीक चित्रकार श्रीमती जियोफ्रिन, श्रीमती रेकामियर और श्रीमती डी बोइग्ने के सैलून के बीच अंतर की बारीकियों को इंगित करने का प्रयास करते हैं, तो वे इतनी समान दिखाई देती हैं कि लेखक को अज्ञात रहते हुए भी, उनके अन्वेषणों से उभरने वाला मूल सत्य उस जीवन शैली की शून्यता है), उनके साथ, और उसी कारण से जैसे बर्मा के साथ, जब गुएरमांटेस ने मुझे प्रभावित करना बंद कर दिया और उनकी मौलिकता की छोटी सी बूंद अब मेरी कल्पना द्वारा वाष्पीकृत नहीं हुई, तो मैं इसे, चाहे वह कितना भी अगोचर क्यों न हो, सारगर्भित और विश्लेषण करने में सक्षम था।

अपनी चाची की पार्टी में मुझसे बात करते समय डचेस ने अपने पति का कोई ज़िक्र नहीं किया था, इसलिए मुझे आश्चर्य हुआ कि तलाक की अफवाहों को देखते हुए, क्या वह रात्रिभोज में उपस्थित होंगे। लेकिन मेरी शंकाएँ शीघ्र ही दूर हो गईं, क्योंकि हॉल में खड़े नौकरों की भीड़ के बीच से, जो (शायद तब तक मुझे बेदखल किए गए कैबिनेट-मेकर के बच्चों की तरह ही देखते रहे होंगे, यानी अपने मालिक की तुलना में शायद अधिक सहानुभूति रखते हुए, लेकिन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे उसके घर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है) यह सोच रहे

होंगे कि इस सामाजिक क्रांति का कारण क्या हो सकता है, मैंने स्वयं एम. डी गुएरमांटेस को अपनी ओर आते देखा, जो मेरे आने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि मुझे अपने घर में स्वागत कर सकें और अपने हाथों से मेरा ओवरकोट उतार सकें।

"श्रीमती डी गुएरमांटेस बहुत प्रसन्न होंगी," उन्होंने बड़ी सहजता और विश्वास दिलाने वाले लहजे में मेरा अभिवादन किया। "चलिए, मैं आपके कपड़े उतारने में आपकी मदद कर देता हूँ।" (उन्हें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना दोस्ताना और हास्यपूर्ण लगा।) "मेरी पत्नी को ज़रा सा डर था कि आप हमें धोखा दे देंगे, हालाँकि आपने तारीख तय कर दी थी। हम दिन भर एक-दूसरे से यही कहते रहे: 'पक्का, वह कभी नहीं आएगा।' मुझे कहना पड़ेगा, श्रीमती डी गुएरमांटेस मुझसे बेहतर भविष्यवक्ता निकलीं। आपसे मिलना आसान नहीं है, और मुझे पूरा यकीन था कि आप हमें धोखा देंगे।" और ड्यूक इतना बुरा पति था, इतना क्रूर भी (लोगों का कहना था), कि उसके प्रति कृतज्ञता का भाव आता था, जैसे दुष्ट लोगों के कभी-कभार दिखाई देने वाली दयालुता के लिए, उन शब्दों 'श्रीमती डी गुएरमांटेस' के लिए, जिनसे ऐसा लग रहा था मानो वह डचेस पर अपना सुरक्षात्मक आवरण फैला रहा हो, मानो वह उसके साथ एक शरीर हो। इसी बीच, मेरा हाथ थामते हुए, वह मुझे अपने घर में लाने लगे और मेरा परिचय कराने लगे। जैसे किसी किसान के मुख से निकला कोई साधारण सा वाक्य हमें प्रसन्न कर देता है यदि वह किसी स्थानीय परंपरा के अस्तित्व की ओर इशारा करता हो, किसी ऐतिहासिक घटना का संकेत देता हो, जो शायद उस व्यक्ति को भी अज्ञात हो जो उसका उल्लेख कर रहा है; उसी प्रकार एम. डी गुएरमांटेस की यह विनम्रता, जो उन्होंने पूरी शाम मुझे दिखाई, मुझे कई शताब्दियों से चली आ रही आदतों, विशेष रूप से सत्रहवीं शताब्दी की आदतों के अवशेष के रूप में मोहित कर गई। बीते युगों के लोग हमें असीम रूप से दूर प्रतीत होते हैं। हम उनके द्वारा औपचारिक रूप से व्यक्त किए गए इरादों के अलावा किसी अन्य अंतर्निहित इरादे को मानने में खुद को उचित नहीं समझते; हम तब आश्चर्यचकित हो जाते हैं जब हमें होमर के किसी नायक में आज की हमारी भावनाओं से मिलती-जुलती कोई भावना दिखाई देती है, या कैनाई की लड़ाई के दौरान हैनिबल की किसी कुशल सामरिक चाल पर, जहाँ उसने दुश्मन को आश्चर्यचकित करने और उसे घेरने के लिए अपने किनारे को पीछे हटने दिया; ऐसा प्रतीत होता है कि हमने महाकाव्य कवि और प्यूनिक सेनापति को स्वयं से

उतना ही दूर समझा जितना किसी चिड़ियाघर में रखा कोई जानवर। यहाँ तक कि लुई 14वें के दरबार के कुछ व्यक्तियों में भी, जब हम उनके द्वारा किसी निम्न पदस्थ व्यक्ति को लिखे गए पत्रों में शिष्टाचार के संकेत पाते हैं, जो उनके किसी काम का नहीं था, तो हम अचंभित रह जाते हैं क्योंकि वे अचानक हमें विश्वासों की एक ऐसी दुनिया का खुलासा करते हैं, जो इन महान सज्जनों के बीच मौजूद है, जिसे वे कभी प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त नहीं करते, लेकिन जो उनके आचरण को नियंत्रित करती है, और विशेष रूप से यह विश्वास कि वे शिष्टाचारवश कुछ भावनाओं का दिखावा करने और मित्रता के कुछ दायित्वों को अत्यंत सावधानी से निभाने के लिए बाध्य हैं।

अतीत की यह काल्पनिक दूरी शायद उन चीजों में से एक है जो हमें यह समझने में मदद करती है कि कैसे महान लेखकों ने भी मैक्फर्सन के ओसियन जैसे साधारण रहस्यवादियों की रचनाओं में एक प्रेरणादायक सुंदरता पाई है। हमें यह उम्मीद बहुत कम थी कि दिवंगत कवियों के भी आधुनिक विचार हो सकते हैं, इसलिए जब हम किसी प्राचीन गेलिक कविता को पढ़ते हैं और उसमें कोई ऐसी रचना पाते हैं जिसे समकालीन लेखक ने केवल प्रतिभापूर्ण ही माना होता, तो हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं। एक प्रतिभाशाली अनुवादक को बस उस प्राचीन लेखक की रचनाओं में कुछ अंश जोड़ने होते हैं जिन्हें वह हमारे सामने कमोबेश सटीक रूप से पुन: प्रस्तुत करता है; ये अंश यदि किसी समकालीन नाम से अलग से प्रकाशित होते तो केवल मनोरंजक ही लगते; वह तुरंत अपने कवि को एक मार्मिक भव्यता प्रदान कर देता है, जिससे कवि एक ही समय में कई युगों के संगीत को बजाता हुआ प्रतीत होता है। यदि यह पुस्तक उसकी मूल रचना के रूप में प्रकाशित होती, तो यह अनुवादक केवल एक साधारण पुस्तक का ही अनुवाद कर पाता। अनुवाद के रूप में प्रकाशित होने पर यह किसी उत्कृष्ट कृति की तरह प्रतीत होती है। अतीत न केवल क्षणभंगुर नहीं है, बल्कि वर्तमान में भी बना रहता है। किसी युद्ध के शुरू होने के कुछ ही महीनों के भीतर जल्दबाजी में पारित किए गए कानून उसके परिणाम को प्रभावी ढंग से प्रभावित नहीं कर सकते; किसी अस्पष्ट अपराध के पंद्रह वर्षों के भीतर ही मजिस्ट्रेट को उससे जुड़े महत्वपूर्ण साक्ष्य नहीं मिल सकते; सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद भी, दूर देश के स्थानों के नामों और निवासियों के रीति-रिवाजों का अध्ययन करने वाला विद्वान उनसे ईसाई युग से भी बहुत पहले की कोई किंवदंती

निकाल सकता है, जो हेरोडोटस के समय में शायद समझ से परे, या वास्तव में भुला दी गई हो, और जो किसी चट्टान को दिए गए नाम में, एक धार्मिक अनुष्ठान में, वर्तमान से घिरी हुई, एक गहन, प्राचीन और स्थिर ऊर्जा की तरह विद्यमान है। इसी प्रकार, दरबारी जीवन की एक आभा, यद्यपि कहीं कम प्राचीन, एम. डी गुएरमांटेस के तौर-तरीकों में नहीं, जो अक्सर अशिष्ट थे, कम से कम उन्हें नियंत्रित करने वाले व्यक्ति के मन में तो थी ही। मुझे यह आभा फिर से महसूस हुई, जैसे प्राचीनता की गंध, जब मैं कुछ देर बाद ड्राइंग रूम में उनसे मिला। क्योंकि मैं वहां तुरंत नहीं गया था।

जब हम बाहरी हॉल से निकले, तो मैंने एम. डी गुएरमांटेस से कहा कि मैं उनके एल्स्टर परिवार से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। "मैं आपकी सेवा में हूँ। क्या एम. एल्स्टर आपके मित्र हैं? यदि हाँ, तो यह बहुत दुख की बात है, क्योंकि मैं उन्हें थोड़ा-बहुत जानता हूँ; वे एक मिलनसार व्यक्ति हैं, जिन्हें हमारे पूर्वज 'ईमानदार व्यक्ति' कहते थे; मैं उनसे आज रात हमारे यहाँ आने और भोजन करने का अनुरोध कर सकता था। मुझे यकीन है कि आपके साथ शाम बिताने का निमंत्रण पाकर वे बहुत प्रसन्न होते।" जब ड्यूक ने इस तरह पुराने तौर-तरीकों को अपनाने की कोशिश की, तो वे अनजाने में ही पुराने तौर-तरीकों में वापस लौट गए। मुझसे यह पूछने के बाद कि क्या मैं चित्रों को देखना चाहता हूँ, उन्होंने मुझे चित्रों तक पहुँचाया। हर दरवाजे पर वे मेरे लिए शालीनता से एक तरफ हट जाते थे और जब उन्हें मुझे रास्ता दिखाने के लिए आगे जाना पड़ता था, तो वे क्षमा मांगते थे। यह एक छोटा सा दृश्य था (जब से सेंट-साइमन ने बताया है कि गुएरमांटे परिवार के एक पूर्वज ने उन्हें अपने नगर के घर में उसी सलीके से मेहमाननवाज़ी की थी, जैसे एक सज्जन व्यक्ति के तुच्छ कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं)। यह दृश्य धीरे-धीरे हम तक पहुँचने से पहले कई अन्य गुएरमांटे परिवार के सदस्यों द्वारा अनगिनत अन्य आगंतुकों के लिए दोहराया गया होगा। और जैसा कि मैंने ड्यूक से कहा था कि मैं चित्रों के साथ कुछ मिनटों के लिए अकेला रहना चाहता हूँ, वे समझदारी से चले गए और मुझसे कहा कि जब मैं तैयार हो जाऊँ तो उन्हें ड्राइंग रूम में पाऊँगा।

लेकिन जैसे ही मैं एल्स्टर परिवार के सामने आया, मैं रात के खाने और समय के बारे में पूरी तरह भूल गया; यहाँ भी बालबेक की तरह मेरे सामने उस विचित्र रंगीन दुनिया के टुकड़े थे, जो उस महान चित्रकार की दृष्टि का मात्र प्रतिबिंब था, चीजों को देखने का उनका अनूठा

तरीका था, जिसे उनकी वाणी किसी भी तरह व्यक्त नहीं कर पाती थी। उनकी कलम से बनी पेंटिंग्स से ढकी दीवारों के हिस्से, जो एक-दूसरे से समरूप थे, किसी जादुई लालटेन की चमकदार छवियों की तरह थे, जो इस मामले में कलाकार का मस्तिष्क रहा होगा, और जिसकी विचित्रता का अंदाजा तब तक नहीं लगाया जा सकता था जब तक कि हम केवल उस व्यक्ति को जानते थे, जो ऐसा था जैसे किसी रंगीन स्लाइड को खांचे में डालने से पहले लोहे की लालटेन को अपना दीपक बंद करते हुए देखना। इन चित्रों में से कई ऐसे थे जो आम लोगों को सबसे बेतुके लगते थे, लेकिन मुझे बाकी चित्रों से ज़्यादा उनमें दिलचस्पी थी क्योंकि वे उन प्रकाशीय भ्रमों को दर्शाते थे जो हमें यह साबित करते हैं कि अगर हम तर्क का सहारा न लें तो हम वस्तुओं की पहचान करने में कभी सफल नहीं हो सकते। अंधेरे में गाड़ी चलाते समय कितनी बार ऐसा होता है कि हमें कुछ ही फीट दूर एक लंबी, रोशन सड़क दिखाई देती है, जबकि वास्तव में हमारी आँखों के सामने एक आयताकार दीवार का टुकड़ा होता है जिस पर तेज़ रोशनी पड़ रही होती है, जिससे हमें गहराई का भ्रम होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, क्या यह तर्कसंगत नहीं है कि हम किसी प्रतीकात्मकता के छल से नहीं, बल्कि अनुभव की जड़ तक ईमानदारी से लौटकर, उस एक चीज़ को दूसरी चीज़ से दर्शाएँ जिसे हमने पहले भ्रम में गलती से समझ लिया था? सतहें और आयतन वास्तव में उन वस्तुओं के नामों से स्वतंत्र होते हैं जो हमारी स्मृति उन्हें पहचानने के बाद उन पर थोप देती है। एल्स्टिर ने जो अभी महसूस किया था, उससे वह निकालने का प्रयास किया जो वह पहले से जानता था; उसका प्रयास अक्सर उन अनुभवों के समूह को तोड़ना था जिसे हम दृष्टि कहते हैं।

इन 'भयानक' कृतियों से घृणा करने वाले लोग यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि एल्स्टिर, शार्दिन, पेरोनो और ऐसे कई चित्रकारों की प्रशंसा करते थे जिन्हें समाज के आम लोग पसंद करते थे। उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि एल्स्टिर को भी वास्तविकता को चित्रित करने के प्रयास में (विशेष रूप से कुछ खास शैली के प्रति अपने लगाव को दर्शाते हुए) शार्दिन या पेरोनो के समान ही प्रयास करना पड़ा था, और इसलिए जब उन्होंने स्वयं के लिए काम करना बंद कर दिया, तो उन्होंने उनमें उसी तरह के प्रयास देखे, मानो वे उनकी अपनी कृतियों के अंश मात्र हों। समाज के इन लोगों ने एल्स्टिर के काम को समझने में उस कालिक परिप्रेक्ष्य को भी शामिल नहीं किया, जिसके कारण वे शार्दिन की चित्रकला को पसंद कर पाते

थे, या कम से कम बिना किसी असुविधा के देख पाते थे। फिर भी, उनमें से जो बड़े थे, उन्होंने शायद खुद को याद दिलाया होगा कि अपने जीवनकाल में, जैसे-जैसे समय बीतता गया, उन्होंने धीरे-धीरे देखा था कि इंग्रस की जिसे वे उत्कृष्ट कृति मानते थे और जिसे वे हमेशा के लिए 'भयानक' मानते थे (उदाहरण के लिए, मानेट की ओलंपिया), उनके बीच की खाई इतनी कम हो गई थी कि दोनों चित्र जुड़वाँ जैसे लगने लगे थे। लेकिन हम किसी भी सबक से कुछ नहीं सीखते क्योंकि हममें विशिष्ट से सामान्य की ओर पीछे की ओर जाने की समझ नहीं है, और हम हमेशा खुद को एक ऐसे अनुभव से गुजरते हुए नहीं देखते जिसका अतीत में कोई उदाहरण नहीं है।

दो चित्रों में एक ही व्यक्ति की छवि देखकर मैं भावुक हो गया (ये चित्र अधिक यथार्थवादी और पुराने ढंग के थे)। एक चित्र में वह अपने ड्राइंग रूम में शाम की पोशाक में था, जबकि दूसरे में किसी लोकप्रिय नौका विहार में फ्रॉक कोट और लंबी टोपी पहने हुए था, जहाँ उसका कोई काम नहीं था। इससे यह सिद्ध हुआ कि एल्स्टिर के लिए वह न केवल एक नियमित मॉडल था, बल्कि एक मित्र भी था, शायद एक संरक्षक जिसे वह अपनी तस्वीरों में शामिल करना पसंद करता था (जैसे कार्पैसिओ वेनिस के समकालीन जीवन से प्रमुख हस्तियों और उनकी हूबहू प्रतिकृतियों को शामिल किया करते थे), ठीक वैसे ही जैसे बीथोवेन को भी अपनी किसी पसंदीदा रचना के शीर्ष पर आर्चड्यूक रूडोल्फ का प्रिय नाम अंकित करने में आनंद आता था। इस नदी किनारे के उत्सव में कुछ जादुई सा था। नदी, महिलाओं की पोशाकें, नावों के पाल, और अनगिनत प्रतिबिंब एक अद्भुत दोपहर से एल्स्टिर द्वारा तराशे गए सुंदरता के इस छोटे से वर्गाकार पैनल में समाहित हो गए थे। एक महिला के पहनावे में जो बात मन को प्रसन्न करती थी, जो गर्मी और सांस फूलने के कारण नृत्य करते समय एक पल के लिए रुक गई थी, वही बात एक स्थिर पाल के कैनवास में, छोटे बंदरगाह के पानी में, लकड़ी के पुल में, पेड़ों की पत्तियों में और आकाश में भी उतनी ही आकर्षक थी। बालबेक में मैंने जो चित्र देखे थे, उनमें से एक में अस्पताल, नीले आसमान के नीचे गिरजाघर की तरह ही सुंदर लग रहा था, मानो (मध्ययुगीन चीजों के प्रेमी और कला प्रेमी एल्स्टिर की तुलना में सिद्धांतकार एल्स्टिर से कहीं अधिक साहसी होकर) कह रहा हो: "गॉथिक जैसी कोई चीज नहीं होती, उत्कृष्ट कृति जैसी कोई चीज नहीं होती; यह बेस्वाद अस्पताल भी उस शानदार बरामदे जितना ही अच्छा है,"

ठीक वैसे ही अब मुझे सुनाई दिया: "वह थोड़ी अशिष्ट महिला, जिसे एक समझदार व्यक्ति गुजरते समय देखने से भी परहेज करेगा, प्रकृति द्वारा उसके सामने रखी गई काव्यात्मक रचना से कुछ अलग कर देगी—उसकी पोशाक उसी प्रकाश को ग्रहण कर रही है जिस प्रकाश को उस नाव का पाल ग्रहण कर रहा है, और मूल्य और सुंदरता की कोई सीमा नहीं है; साधारण पोशाक और पाल, जो अपने आप में सुंदर है, दो दर्पण हैं जो एक ही चमक को प्रतिबिंबित कर रहे हैं; मूल्य सब चित्रकार की दृष्टि में है।" इस दृष्टि में घंटों की गति को उस प्रकाशमय क्षण में हमेशा के लिए कैद करने की क्षमता थी, जब महिला को गर्मी लगी और उसने नाचना बंद कर दिया, जब पेड़ छाया की एक पट्टी से घिरा हुआ था, जब पाल एक सुनहरी चमक पर फिसलते हुए प्रतीत हो रहे थे। लेकिन जिस प्रकार चित्रित क्षण इतनी तीव्रता से प्रभाव डालता है, उसी प्रकार यह स्थायी कैनवास एक क्षणिक अनुभूति देता है; ऐसा लगता है कि महिला जल्द ही इससे बाहर निकल जाएगी, नावें बह जाएंगी, रात छा जाएगी, आनंद समाप्त हो जाएगा, जीवन बीत जाएगा और इतने सारे प्रकाशों के एक साथ मिलन से प्रकाशित क्षण फिर कभी नहीं आएंगे। मैंने एल्स्टिर के प्रारंभिक काल की पौराणिक विषयों पर आधारित जलरंग चित्रों की एक श्रृंखला में क्षण के अर्थ का एक और पहलू पहचाना, जो वास्तव में काफी भिन्न था और इस कमरे की शोभा भी बढ़ा रहा था। कला पर 'उन्नत' विचार रखने वाले समाज के लोग इस प्रारंभिक शैली तक तो पहुँचे, लेकिन इससे आगे नहीं बढ़े। ये निस्संदेह उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ नहीं थीं, लेकिन विषय पर जिस ईमानदारी से विचार किया गया था, उससे इसकी स्वाभाविक शीतलता पिघल गई थी। उदाहरण के लिए, देवियों को ऐसे चित्रित किया गया था मानो वे किसी ऐसी प्रजाति के जीव हों जो अब जीवाश्म बन चुकी हो, लेकिन ऐसे जीव जिन्हें पौराणिक काल में शाम के समय, दो या तीन के समूह में, किसी पहाड़ी रास्ते से गुजरते देखना आश्चर्यजनक नहीं होता। कहीं-कहीं एक कवि, जो प्राणीविज्ञानी के लिए भी विशेष रुचि रखने वाली जाति का था (जिसमें एक प्रकार का लिंगहीनता का भाव था), एक देवी के साथ टहल रहा था, जैसा कि प्रकृति में विभिन्न लेकिन संबंधित प्रजातियों के जीव एक साथ रहते हैं। इन जलरंग चित्रों में से एक में एक कवि पहाड़ों पर लंबी यात्राओं से थका हुआ दिखाई देता है, जिसे एक सेंटॉर ने देखकर, उसकी कमजोरी पर दया करके, अपनी पीठ पर लाद लिया और घर ले जा रहा था। कई अन्य चित्रों में, विशाल भूदृश्य (जिसमें पौराणिक दृश्य,

शानदार नायक, एक छोटे से स्थान में समाए हुए थे और लगभग लुप्त हो गए थे) को, पर्वतों की चोटियों से लेकर समुद्र तक, इतनी सटीकता से चित्रित किया गया था कि यह घंटे से भी अधिक, मिनट-दर-मिनट यह बता देता था कि दिन का कौन सा समय है, डूबते सूरज के सटीक कोण और क्षणभंगुर छायाओं की बदौलत। इस प्रकार कलाकार ने इसे तात्कालिक बनाकर, अपनी कथा के प्रतीक को एक प्रकार की ऐतिहासिक वास्तविकता प्रदान की, मानो वह वास्तव में जी रहा हो, उसे चित्रित किया और उसे अतीत के एक निश्चित बिंदु पर स्थापित कर दिया।

जब मैं एल्स्टिर की पेंटिंग्स देख रहा था, तभी आने वाले मेहमानों की घंटी लगातार बज रही थी और मुझे एक सुखद बेहोशी में सुला रही थी। लेकिन घंटी की आवाज़ के बाद जो सन्नाटा छाया रहा, वह कुछ देर तक बना रहा और मुझे मेरे सपने से जगाने में कामयाब रहा—हालांकि उतनी तेज़ी से नहीं—ठीक वैसे ही जैसे लिंडोर के संगीत के बाद का सन्नाटा बार्टोलो को नींद से जगा देता है। मुझे डर था कि वे मुझे भूल गए हैं, खाना खाने बैठ गए हैं, और मैं जल्दी से ड्राइंग रूम की ओर चल पड़ा। एल्स्टिर गैलरी के दरवाज़े पर मुझे एक नौकर मेरा इंतज़ार करता मिला, जिसके बाल सफ़ेद थे, हालांकि उम्र या पाउडर की वजह से, यह मैं कह नहीं सकता, लेकिन उसका अंदाज़ किसी स्पेनिश मंत्री जैसा था, फिर भी वह मेरे साथ उसी सम्मान से पेश आ रहा था जैसे किसी राजा के साथ। उसके हाव-भाव से मुझे लगा कि वह कम से कम एक घंटे से मेरा इंतज़ार कर रहा होगा, और मुझे चिंता होने लगी कि मैंने खाने में कितनी देरी कर दी है, खासकर इसलिए क्योंकि मैंने एम. डी चार्लस के यहाँ ग्यारह बजे तक पहुँचने का वादा किया था।

स्पेन के मंत्री (रास्ते में मेरी मुलाकात उस नौकर से भी हुई जिसे चौकीदार सता रहा था। जब मैंने उसकी प्रेमिका के बारे में पूछा तो वह प्रसन्न हो उठा और बताया कि अगले ही दिन उन दोनों की छुट्टी है, इसलिए वह पूरा दिन उसके साथ बिता सकेगा, और उसने मैडम ला डचेस की उदारता की प्रशंसा की) मुझे ड्राइंग रूम तक ले गए, जहाँ मुझे डर था कि एम. डी गुएरमांटेस का मूड खराब होगा। इसके विपरीत, उन्होंने मेरा स्वागत बड़ी खुशी से किया, जो स्पष्ट रूप से कुछ हद तक बनावटी और शिष्टाचारवश थी, लेकिन सच्ची भी थी। यह खुशी उनके पेट की भूख से प्रेरित थी जो लंबे इंतजार के कारण बढ़ रही थी, और साथ ही उन्हें इस

बात का भी एहसास था कि कमरे में मौजूद अन्य सभी मेहमान भी अधीर थे। दरअसल, बाद में मुझे पता चला कि मैंने उन्हें लगभग पौने घंटे तक इंतजार करवाया था। ड्यूक डी गुएरमांटेस ने शायद सोचा होगा कि इस आम परेशानी को दो मिनट और बढ़ाने से यह और नहीं बढ़ेगी, और चूंकि उन्होंने शिष्टाचारवश भोजन कक्ष में जाने का क्षण इतनी देर तक टाल दिया था, इसलिए यह शिष्टाचार और भी पूर्ण होगा यदि वे तुरंत भोजन की घोषणा न करके मुझे यह विश्वास दिला सकें कि मैं देर से नहीं आई हूँ और वे मेरा इंतजार नहीं कर रहे थे। और इसलिए उन्होंने मुझसे पूछा, मानो भोजन से पहले अभी भी एक घंटा बाकी हो और कुछ मेहमान अभी तक न आए हों, कि मुझे उनके एल्स्टर्स कैसे लगे। लेकिन उसी समय, और अपने पेट की भूख को ज़ाहिर न होने देते हुए, ताकि एक पल भी बर्बाद न हो, उन्होंने डचेस के साथ मिलकर परिचय समारोह शुरू किया। तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरे आस-पास, मुझमें, जो आज शाम तक, मैडम के साथ अपने शुरुआती दिनों को छोड़कर, स्वान के ड्राइंग रूम में, मेरी माँ के घरों में, कॉम्ब्रे और पेरिस में, मैं हमारे मध्यवर्गीय वर्ग की गंभीर महिलाओं के व्यवहार का आदी था, जो या तो मेरी रक्षा करती थीं या मुझे एक बच्चे की तरह मानती थीं। यह परिवेश परिवर्तन वैसा ही था जैसे पार्सिफ़ल को अचानक पुष्प-कन्याओं के बीच ला खड़ा किया जाता है। अब जो महिलाएं मेरे चारों ओर थीं, उनके सीने पूरी तरह खुले हुए थे (उनका नग्न शरीर मिमोसा की लहराती टहनी के दोनों ओर या गुलाब की चौड़ी पंखुड़ियों के पीछे दिखाई दे रहा था)। वे अभिवादन का एक शब्द भी कहे बिना मुझे लंबे, स्नेहपूर्ण निगाहों से नहला सकती थीं, मानो केवल शर्म ही उन्हें मुझे चूमने से रोक रही हो। फिर भी, उनमें से कई नैतिक दृष्टि से अत्यंत सम्माननीय थीं; कई, सभी नहीं, क्योंकि सबसे गुणी महिलाओं को भी कमतर स्वभाव वाली महिलाओं से वैसी घृणा नहीं थी जैसी मेरी माँ को होती। सबूतों के बावजूद, अपने आचरण की मनमानी, जिसे संत जैसे मित्रों ने नकार दिया था, गुएरमांटेस की दुनिया में उन संबंधों की तुलना में कहीं कम मायने रखती थी जिन्हें बनाए रखने में कोई सक्षम था। ऐसा दिखावा किया जाता था कि उसे पता ही नहीं है कि उसकी मेज़बान का शरीर सभी के लिए उपलब्ध है, बशर्ते कि उसकी अतिथि सूची में कोई कमी न हो। ड्यूक ने अपने अन्य मेहमानों (जिनके बारे में वह लंबे समय से सब कुछ जानता था, और वे भी उसके बारे में) के लिए ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, बल्कि मेरे लिए विशेष रूप से ध्यान दिया, जिसकी श्रेष्ठता उसके

अनुभव से परे थी और जिसने उसके मन में लुई 14वें के दरबार के महान रईस द्वारा अपने आम मंत्रियों के प्रति रखे जाने वाले सम्मान के समान भाव जगाया। स्पष्ट रूप से, उसने सोचा कि मेरे द्वारा उसके अन्य मेहमानों को न जानने का कोई महत्व नहीं है - कम से कम मेरे लिए, हालांकि यह उनके लिए मायने रख सकता था - और जबकि मैं उसके कारण इस बात को लेकर चिंतित था कि मैं उन पर क्या प्रभाव डालूंगा, वह केवल इस बात पर विचार कर रहा था कि उसके मित्र मुझ पर क्या प्रभाव डालेंगे।

शुरुआत में ही मैं पूरी तरह से हैरान रह गया। ड्राइंग रूम में दाखिल होते ही एम. डी गुएरमांटेस ने मुझे डचेस से हाथ मिलाने का भी समय दिए बिना ही मुझे ऐसे ले गए, मानो मैं उनके लिए कोई सुखद आश्चर्य हूँ और कह रहे हों: "ये रहा तुम्हारा दोस्त! देखो, मैं इसे गर्दन से पकड़कर तुम्हारे पास ला रहा हूँ," एक छोटे कद की महिला की ओर। इसके बाद, ड्यूक के कहने पर मैं अभी उनकी कुर्सी तक पहुँचा ही था कि महिला ने अपनी बड़ी, कोमल, गहरी आँखों से लगातार मुझे वैसी ही हजारों मुस्कानें बिखेरनी शुरू कर दीं, जैसी हम किसी पुराने दोस्त को देखकर देते हैं जो शायद हमें पहचान न पाया हो। चूंकि मेरी भी यही स्थिति थी और मैं उन्हें पहचान नहीं पा रहा था, इसलिए उनके पास पहुँचते ही मैंने अपनी नज़रें उनसे हटा लीं ताकि परिचय होने तक मुझे जवाब न देना पड़े। इस बीच, महिला ने मेरे लिए बनी अपनी मुस्कान को अस्थिर बनाए रखा। वह ऐसी लग रही थी मानो वह इस बात से छुटकारा पाना चाहती हो और मुझसे यह सुनना चाहती हो: "अरे वाह, यह तो बहुत खुशी की बात है! जब मैं माँ को बताऊँगी कि मैं आपसे मिली हूँ, तो वह बहुत खुश होंगी!" मैं उसका नाम जानने के लिए उतनी ही बेचैन थी जितनी वह यह देखकर कि मैंने आखिरकार उसे नमस्कार किया, पूरी तरह से जानते हुए कि मैं क्या कर रही हूँ, ताकि वह मुस्कान जो अनिश्चित काल तक, किसी वाद्य यंत्र की धुन की तरह, रोके हुए थी, आखिरकार खुल जाए। लेकिन एम. डी गुएरमांटेस ने (कम से कम मेरे विचार से) इतनी बुरी तरह से बात संभाली कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने केवल अपना ही नाम सुना हो और मुझे अपनी उस अनजान दोस्त की पहचान का कोई सुराग नहीं मिला, जिसने मुझे खुद कभी अपना नाम बताना भी नहीं चाहा, क्योंकि हमारी घनिष्ठता का आधार, जिसने मुझे पूरी तरह से हैरान कर दिया था, उसे इतना स्पष्ट लग रहा था। दरअसल, जैसे ही मैं उसके पास पहुँची, उसने मुझे अपना हाथ नहीं बढ़ाया, बल्कि मेरा हाथ एक

परिचित अंदाज़ में थाम लिया और मुझसे ठीक वैसे ही बात की जैसे मैं भी उसके साथ उन सुखद यादों से वाकिफ थी, जिनमें वह खोई हुई थी। उसने मुझे बताया कि अल्बर्ट (जो मुझे समझ आया कि उसका बेटा था) मुझे न देख पाने से कितना दुखी होगा। मैंने याद करने की कोशिश की कि मेरे बचपन के दोस्तों में से किसका नाम अल्बर्ट था, और मुझे केवल ब्लोच का ही नाम याद आया, लेकिन मेरे सामने जो दिख रही थी वह ब्लोच की माँ नहीं हो सकती थी क्योंकि उसकी मृत्यु कुछ समय पहले हो चुकी थी। मैंने व्यर्थ ही उस अतीत की घटना को पहचानने की कोशिश की जो हम दोनों में समान थी और जिसकी ओर उसके विचार लौट आए थे। लेकिन मैं उसकी बड़ी, कोमल पुतलियों की पारदर्शी चमक के कारण उसे पहचान नहीं पा रहा था, जिनमें केवल उसकी मुस्कान ही झलक रही थी, ठीक वैसे ही जैसे कोई धुंधले शीशे के दूसरी ओर के परिदृश्य को नहीं पहचान सकता, चाहे उस पर सूरज की तेज रोशनी ही क्यों न पड़ रही हो। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मेरे पिता बहुत ज़्यादा काम तो नहीं कर रहे हैं, क्या मैं किसी शाम अल्बर्ट के साथ थिएटर नहीं आऊँगी, क्या अब मैं पहले से ज़्यादा तंदुरुस्त हूँ। जब मेरे जवाब, उस मानसिक अंधकार में डूबे होने के कारण, अस्पष्ट रूप से निकल रहे थे और मैं बस इतना ही कह पा रही थी कि उस शाम मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, तो उन्होंने खुद मेरे लिए एक कुर्सी आगे बढ़ा दी। उन्होंने मेरे माता-पिता के दोस्तों द्वारा की जाने वाली हर तरह की मेहनत की, जिसकी मुझे आदत नहीं थी। अंत में ड्यूक ने मुझे पहेली का हल बताया: "वह सोचती है कि तुम आकर्षक हो," उन्होंने मेरे कान में फुसफुसाया, जो मुझे किसी तरह लगा जैसे मैंने ये शब्द पहले भी सुने हों। ये वही शब्द थे जो श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मेरी दादी और मुझसे कहे थे जब हम लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी से मिले थे। सब कुछ स्पष्ट हो गया; अब जो महिला मेरे सामने थी, उसका श्रीमती डी लक्ज़मबर्ग से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन उनके साथ मेरी सेवा करने वाले व्यक्ति की भाषा से मैं उस व्यक्ति के स्वभाव को समझ गई। वह एक शाही परिवार से थी। उन्होंने इससे पहले न तो मेरे परिवार के बारे में सुना था और न ही मेरे बारे में, लेकिन एक कुलीन वंश की वंशज और दुनिया की सबसे बड़ी दौलत की धनी (क्योंकि प्रिंस डी पार्म की बेटी होने के नाते, उन्होंने एक समान रूप से कुलीन चचेरे भाई से शादी की थी), वे हमेशा अपने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, अपने पड़ोसी को, चाहे वह कितना भी गरीब या साधारण क्यों न हो, यह जताने की

कोशिश करती थीं कि वे उसे नीचा नहीं समझतीं। सच कहूँ तो, मैं उनकी मुस्कान से ही यह समझ सकता था। मैंने लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी को बालबेक के समुद्र तट पर मेरी दादी के लिए छोटे-छोटे राई के केक खरीदते देखा था, मानो चिड़ियाघर में पिंजरे में बंद हिरण को दे रही हों। लेकिन यह शाही खानदान की दूसरी राजकुमारी थीं जिनसे मेरा परिचय कराया गया था, और शायद मुझे माफ़ किया जा सकता है कि मैं उनमें महान लोगों की मित्रता के सामान्य गुणों को नहीं समझ पाया। इसके अलावा, क्या उन्होंने खुद मुझे इस मित्रता पर बहुत अधिक भरोसा न करने की चेतावनी नहीं दी थी? क्योंकि ड्यूशेस डी गुएरमांटेस, जिन्होंने ओपेरा-कॉमिक में दस्ताने पहने हाथ से मेरा इतने उत्साहपूर्वक अभिवादन किया था, सड़क पर मेरे द्वारा उनके सामने झुकने पर क्रोधित दिखाई दी थीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति किसी को एक बार सोने का सिक्का दे देने के बाद यह मान लेता है कि वह उसके प्रति किसी भी अन्य दायित्व से मुक्त हो गया है। जहाँ तक एम. डी चार्लस की बात है, उनके उतार-चढ़ाव तो और भी अधिक स्पष्ट थे। जबकि आगे चलकर मैंने, जैसा कि पाठक को पता चलेगा, बिल्कुल अलग तरह की महारानियों और रानियों को देखा है, ऐसी रानियाँ जो रानी की भूमिका निभाती हैं और अपने रीति-रिवाजों के अनुसार नहीं, बल्कि सार्डू के नाटकों की रानियों की तरह बोलती हैं।

यदि एम. डी गुएरमांटेस ने मुझे इतनी जल्दी पेश किया था, तो इसका कारण यह था कि किसी शाही व्यक्ति के लिए किसी अपरिचित व्यक्ति की पार्टी में उपस्थिति असहनीय स्थिति होती है जिसे एक पल के लिए भी सहन नहीं किया जा सकता। यह कुछ वैसी ही जल्दबाजी थी जैसी सेंट-लूप ने मुझे मेरी दादी से मिलवाने में दिखाई थी। इसी प्रकार, दरबार के पुराने जीवन के एक खंडित अवशेष के कारण, जिसे सामाजिक शिष्टाचार कहा जाता है और जो सतही नहीं है, बल्कि जिसमें एक अभिकेन्द्रीय प्रतिगमन द्वारा सतही ही सारगर्भित और गहन हो जाती है, ड्यूक और डचेस डी गुएरमांटेस दान, पवित्रता, दया और न्याय के कर्तव्यों से भी अधिक आवश्यक कर्तव्य मानते थे (जिनमें से कम से कम एक ने अक्सर उपेक्षा की थी), और राजकुमारी डी पार्म को कभी भी तीसरे व्यक्ति के अलावा किसी अन्य रूप में संबोधित न करने के अटल नियम को भी वे महत्वपूर्ण मानते थे।

अपने जीवन में कभी परमा न जा पाने के कारण (एक तीर्थयात्रा जिसकी मुझे बहुत पहले ईस्टर की छुट्टियों के बाद से ही बहुत तीव्र इच्छा थी), वहाँ की राजकुमारी से मिलने के लिए, जिनके बारे में मैं जानता था कि उस अद्वितीय शहर में उनका सबसे सुंदर महल है, जहाँ सब कुछ सुव्यवस्थित होना चाहिए, क्योंकि वह शहर बाकी दुनिया से अलग-थलग है, पॉलिश की हुई दीवारों के भीतर, उस वातावरण में, जो इटली के किसी छोटे शहर के पियाज़ा में सांस रोक देने वाली गर्मी की शाम की तरह घुटन भरा है, और उसके संक्षिप्त और लगभग मीठे नाम के साथ, निश्चित रूप से पल भर में उस सब की जगह ले लेता जिसकी मैंने अक्सर कल्पना करने की कोशिश की थी, जैसे कि पेरिस से हिले बिना ही परमा में आंशिक रूप से पहुँच जाना; यह कोरेगियो शहर की यात्रा की बीजगणितीय अभिव्यक्ति में, एक तरह से, उस अज्ञात मात्रा का एक सरल समीकरण था। लेकिन अगर मैंने कई वर्षों से—जैसे कोई इत्रकार चिकनाई के ठोस ढेर में सुगंध भरता है—राजकुमारी डी पार्म के नाम को हजारों वायलेट की सुगंध में समाहित कर दिया होता, तो बदले में, जब मेरी नजर राजकुमारी पर पड़ती, जिसके बारे में तब तक मैं कसम खाकर कहता था कि वह स्वयं सैनसेवेरिना ही होंगी, तो एक दूसरी प्रक्रिया शुरू हो जाती, जो कई महीनों के बीतने तक पूरी नहीं हुई, और जिसमें नए रासायनिक संयोजनों के माध्यम से राजकुमारी के नाम से वायलेट के सभी आवश्यक तेल और सभी स्टेंडहेलियन सुगंध को बाहर निकालना और उनके स्थान पर एक छोटी, सांवली महिला की छवि स्थापित करना शामिल था, जो अच्छे कार्यों में लीन थी, जिसकी मित्रता इतनी विनम्र थी कि तुरंत ही यह महसूस हो जाता था कि उस मित्रता की जड़ें कितने ऊंचे गौरव में निहित थीं। इसके अलावा, कुछ मामूली अंतरों को छोड़कर, वह किसी भी अन्य महान महिला की तरह ही थीं, लेकिन वह स्टेंडहैलियन शैली से उतनी ही अछूती थीं, जितनी कि उदाहरण के लिए पेरिस के यूरोप क्वार्टर में स्थित रू डे पार्मे सड़क है, जिसका नाम पर्मा के नाम से कहीं अधिक मिलता-जुलता है, और यह उस चार्टरहाउस की याद दिलाने के बजाय, जिसमें फैब्रिस ने अपने अंतिम दिन बिताए, सेंट-लाज़ारे स्टेशन के प्रतीक्षालय की याद दिलाती है।

उसकी मित्रता के दो कारण थे। पहला और अधिक सामान्य कारण वह शिक्षा थी जो राजाओं की इस पुत्री ने प्राप्त की थी। उसकी माँ (जो न केवल रक्त संबंध से यूरोप के सभी शाही परिवारों से जुड़ी थी, बल्कि पर्मा के ड्यूकल हाउस के विपरीत, किसी भी शासक राजकुमारी

से अधिक धनी थी) ने उसे बचपन से ही एक प्रचारक के दिखावटी विनम्रता के सिद्धांतों को सिखाया था; और आज बेटी के चेहरे की हर रेखा, उसके कंधों का घुमाव, उसकी बाहों की हर हरकत मानो यही सबक दोहरा रही थी: "याद रखो कि अगर ईश्वर ने तुम्हें सिंहासन की सीढ़ियों पर जन्म दिया है, तो इसे उन लोगों को नीचा दिखाने का कारण मत बनाओ जिन्हें ईश्वरीय कृपा ने (जिसके लिए उनके नाम की स्तुति हो) जन्म और भाग्य से श्रेष्ठ बनाया है। इसके विपरीत, तुम्हें छोटों का सम्मान करना चाहिए। तुम्हारे पूर्वज 647 ईस्वी से ट्रेव्स और जूलियर्स के राजकुमार थे: ईश्वर ने अपनी कृपा से यह तय किया है कि स्वेज नहर में लगभग सभी हिस्से और एडमंड डी रॉथ्सचाइल्ड से तीन गुना अधिक शाही डच तुम्हारे पास हों; तुम्हारी वंशावली 63 ईस्वी से वंशावली विशेषज्ञों द्वारा स्थापित की गई है; तुम्हारी दो भाभी हैं। इसलिए, अपने भाषण में कभी भी इन महान विशेषाधिकारों का जिक्र न करो, इसलिए नहीं कि वे अनिश्चित हैं (क्योंकि जाति की प्राचीनता को कोई नहीं बदल सकता, जबकि दुनिया को हमेशा पेट्रोल की आवश्यकता होगी), बल्कि इसलिए कि यह बताने का कोई फायदा नहीं है कि आप दूसरों से बेहतर कुल में जन्मे हैं या आपके सारे निवेश सोने के हैं, क्योंकि ये बातें तो सभी जानते ही हैं। जरूरतमंदों की मदद करें। जिन लोगों पर ईश्वर की कृपा है और जिन्होंने आपको अपने से नीचे स्थान दिया है, उनकी यथासंभव मदद करें, चाहे इससे आपकी पदवी पर कोई आंच न आए, यानी आर्थिक सहायता दें, यहां तक कि बीमार होने पर उनकी व्यक्तिगत सेवा भी करें, लेकिन (यह बात अच्छी तरह याद रखें) उन्हें कभी भी अपनी पार्टियों में आमंत्रित न करें, क्योंकि इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा और आपकी अपनी स्थिति कमजोर होकर आपके परोपकारी कार्यों का प्रभाव भी कम हो जाएगा।

और इसलिए, यहाँ तक कि जब वह किसी का भला नहीं कर सकती थी, तब भी राजकुमारी ने मूक भाषा के सभी बाहरी संकेतों से यह दिखाने का प्रयास किया, या यों कहें कि यह जताने दिया, कि वह स्वयं को उन लोगों से श्रेष्ठ नहीं समझती जिनके बीच वह थी। उसने उनमें से प्रत्येक के साथ उस आकर्षक शिष्टाचार का व्यवहार किया, जैसा कि सुसंस्कृत लोग अपने से निचले लोगों के साथ करते हैं, और स्वयं को उपयोगी बनाए रखने के लिए लगातार अपनी कुर्सी पीछे धकेलती रही ताकि अधिक जगह बन सके, मेरे दस्ताने पकड़ती रही, और मुझे वे सभी सेवाएँ प्रदान करती रही जो एक आम आदमी के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाती हैं, लेकिन

जो शाही महिलाएँ या, सहज रूप से और पेशेवर आदत के बल पर, सेवानिवृत्त नौकर बड़ी सहर्ष करते हैं।

लेकिन ड्यूक, जो परिचय का दौर जल्दी पूरा करने की जल्दी में लग रहे थे, मुझे पहले ही एक और फूल बेचने वाली युवती के पास ले गए। उसका नाम सुनकर मैंने उसे बताया कि मैं बालबेक से कुछ ही दूरी पर स्थित उसके देहाती घर के पास से गुज़रा था। "ओह, मुझे आपको वहाँ ले जाने में बहुत खुशी होती," उसने लगभग फुसफुसाते हुए, अपनी विनम्रता को दर्शाते हुए, लेकिन गहरी भावना से भरे स्वर में कहा, जिसमें एक असाधारण आनंद का अवसर खोने का अफ़सोस झलक रहा था; और एक अर्थपूर्ण नज़र से देखते हुए आगे कहा: "मुझे उम्मीद है कि आप किसी दिन फिर आएंगे। लेकिन मुझे कहना होगा कि मेरी चाची ब्रांकास का घर आपको और भी अधिक रुचिकर लगेगा। इसे मैन्सर्ड ने बनवाया था; यह प्रांत का रत्न है।" न केवल वह स्वयं मुझे अपना घर दिखाने के लिए प्रसन्न होतीं, बल्कि उनकी चाची ब्रानकास भी मुझे अपने घर में आमंत्रित करके उतनी ही प्रसन्न होतीं। ऐसा मुझे उस महिला ने आश्वासन दिया, जो स्पष्ट रूप से मानती थीं कि, विशेष रूप से ऐसे समय में जब देश ऐसे धनवानों के हाथों में जाने की प्रवृत्ति दिखा रहा था जिन्हें दुनियादारी का कोई ज्ञान नहीं था, यह महत्वपूर्ण था कि उच्च वर्ग के लोग अपने भाषणों से शाही आतिथ्य सत्कार की उच्च परंपराओं को बनाए रखें, ताकि वे किसी भी प्रकार से स्वयं को दोषी न ठहराएं। इसका एक कारण यह भी था कि, अपने क्षेत्र के अन्य लोगों की तरह, वह भी ऐसी बातें कहना चाहती थीं जिनसे संबोधित व्यक्ति को सबसे अधिक प्रसन्नता हो, ताकि वह स्वयं को सर्वोच्च समझे, उसे यह लगे कि वह लोगों को पत्र लिखकर उनकी प्रशंसा कर रहा है, कि वह उनका स्वागत करने वालों का सम्मान कर रहा है, और हर कोई उससे मिलने के लिए उत्सुक है। यह स्वीकार करना होगा कि दूसरों को स्वयं के बारे में यह सुखद धारणा देने की इच्छा मध्यम वर्ग में भी पाई जाती है। वहाँ हमें वह सौम्य स्वभाव देखने को मिलता है, जो किसी अन्य दोष की भरपाई करने वाले व्यक्तिगत गुण के रूप में प्रकट होता है, दुर्भाग्यवश सबसे भरोसेमंद पुरुष मित्रों में तो नहीं, लेकिन कम से कम सबसे मनमोहक महिला साथियों में अवश्य ही पाया जाता है। परन्तु वहाँ भी यह गुण केवल छिटपुट स्थानों में ही पनपता है। दूसरी ओर, अभिजात वर्ग के एक महत्वपूर्ण वर्ग में, यह विशेषता अब व्यक्तिगत नहीं रह गई है; शिक्षा द्वारा विकसित, व्यक्तिगत महानता के उस

विचार से पोषित जो किसी अपमान से नहीं डरता, जिसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं, जो यह जानता है कि मनभावन बनकर वह लोगों को प्रसन्न कर सकता है और ऐसा करने में आनंदित होता है, यह एक वर्ग का सामान्य लक्षण बन गया है। और यहाँ तक कि वे लोग भी, जिनमें अत्यधिक असंगत व्यक्तिगत दोष इसे अपने हृदय में धारण करने से रोकते हैं, अपनी शब्दावली या हावभाव में इसका अचेतन संकेत पाते हैं।

ड्यूक डी गुएरमांटेस ने प्रिंसेस डी पार्म के बारे में कहा, "वह बहुत ही अच्छी शख्सियत हैं, और जब वह चाहती हैं तो 'महान महिला' की भूमिका किसी और से बेहतर निभा सकती हैं।"

जब मुझे महिलाओं से मिलवाया जा रहा था, तभी पार्टी के एक सज्जन बेचैनी के लक्षण दिखाने लगे: ये थे कॉम्टे हैनिबल डी ब्रेओटे-कॉन्साल्वी। देर से आने के कारण उन्हें पार्टी के सदस्यों के बारे में जानने का समय नहीं मिला था, और जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो मुझे डचेस के नियमित समूह का सदस्य न समझकर, और इसलिए प्रवेश के लिए किसी असाधारण दावे को देखते हुए, उन्होंने अपनी एक आँख पर चश्मा लगाकर अपनी भौंहों के नीचे देख लिया, यह सोचकर कि इससे उन्हें यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि मैं किस तरह का व्यक्ति हूँ। वे जानते थे कि श्रीमती डी गुएरमांटेस के पास (वास्तव में श्रेष्ठ महिलाओं का अनमोल सामान) एक 'सैलून' था, यानी कभी-कभी अपने समूह में कुछ ऐसी हस्तियों को शामिल करना, जो हाल ही में किसी बीमारी के नए इलाज की खोज या किसी उत्कृष्ट कृति के निर्माण से प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी हों। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन को अभी इस सदमे से उबरना बाकी था कि इंग्लैंड के राजा और रानी के स्वागत के लिए आयोजित अपने समारोह में डचेस ने श्री डिटेल को आमंत्रित करने में कोई संकोच नहीं किया था। फाउबर्ग की वे चतुर महिलाएं जिन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था, बेहद दुखी थीं, क्योंकि उस विलक्षण प्रतिभा से मिलना उनके लिए बेहद रोमांचक होता। श्रीमती डी कौरवॉइसियर ने बताया कि श्री रिबोट भी वहां मौजूद थे, लेकिन यह पूरी तरह से मनगढ़ंत कहानी थी, जिसका उद्देश्य लोगों को यह विश्वास दिलाना था कि ओरियान अपने पति के लिए दूतावास भेजने की योजना बना रही थी। अंत में, घोर बदनामी की हद पार करते हुए, श्री डी गुएरमांटेस ने, मार्शल सैक्स को भी मात देने वाली शिष्टता के साथ, कॉमेडी फ्रांसेज़ के ग्रीन-रूम में जाकर श्रीमती रीचेंबर्ग से राजा के सामने कविता पाठ करने का अनुरोध किया, जो घटित हुआ और हार के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना बन

गई। इन सभी आश्चर्यों को याद करते हुए, जिन्हें उन्होंने पूरी तरह से स्वीकार किया था, और जिनकी उपस्थिति मात्र एक शोभा नहीं थी, बल्कि डचेस डी गुएरमांटेस की तरह किसी भी ड्राइंग रूम के लिए एक पवित्रता थी, एम. डी ब्रेउटे ने जब खुद से पूछा कि मैं कौन हो सकता हूँ, तो उन्हें लगा कि खोज का दायरा बहुत व्यापक है। एक क्षण के लिए एम. विडोर का नाम उनके मन में कौंधा, लेकिन उन्होंने फैसला किया कि मैं ऑर्गेनिस्ट बनने के लिए पर्याप्त उम्र का नहीं था, और एम. विडोर इतने आकर्षक नहीं थे कि उन्हें 'डेट पर बुलाया जाए'। कुल मिलाकर, मुझे स्वीडिश दूतावास में नए अटैची के रूप में मानना अधिक तर्कसंगत प्रतीत हुआ, जिनके बारे में उन्होंने सुना था, और वे मुझसे ऑस्कर के बारे में नवीनतम समाचार पूछने की तैयारी कर रहे थे, जिन्होंने कई बार उनका बहुत ही आतिथ्य सत्कार किया था; लेकिन जब ड्यूक ने मेरा परिचय कराते हुए एम. डी ब्रेउटे से मेरा नाम लिया, तो एम. डी ब्रेउटे को यह नाम बिल्कुल अपरिचित लगा और उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि मैं यहाँ मौजूद हूँ, इसलिए मैं किसी न किसी रूप में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हूँगा। ओरियान निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति को आमंत्रित नहीं करती जो प्रसिद्ध न हो, और वह सार्वजनिक जीवन में रहने वाले पुरुषों को अपने घर बुलाने में माहिर थी, और यह अनुपात निश्चित रूप से एक प्रतिशत से अधिक नहीं होता था, अन्यथा वह अपने घर का रुतबा कम कर देती। इसलिए एम. डी ब्रेउटे अपनी जीभ लपलपाने लगे और लालच से हवा को सूंघने लगे, उनकी भूख न केवल उस शानदार भोजन से बढ़ गई थी जिस पर वे भरोसा कर सकते थे, बल्कि उस पार्टी के माहौल से भी बढ़ गई थी, जिसे मेरी उपस्थिति निश्चित रूप से रोचक बना देगी, और जो उन्हें अगले दिन ड्यूक डी चार्ट्रेस के दोपहर के भोजन पर एक शानदार बातचीत का विषय प्रदान करेगी। वह अभी तक अपने मन में यह तय नहीं कर पाए थे कि मैं वही व्यक्ति हूँ जिसने कैंसर के इलाज के लिए सीरम पर प्रयोग किए थे, या फिर उस नए नाटक का लेखक हूँ जिसका पूर्वाभ्यास उस समय फ्रांस के थिएटर में चल रहा था; लेकिन, एक महान बुद्धिजीवी, 'यात्रियों की कहानियों' के एक महान संग्रहकर्ता होने के नाते, उन्होंने मेरे प्रति सम्मान का बढ़ता हुआ प्रदर्शन जारी रखा, आपसी समझ के संकेत दिए, और उनकी एक आँख के चश्मे से छनकर आती मुस्कानें दिखाई दीं; शायद इस गलत धारणा में कि मेरे जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति उन्हें और अधिक सम्मान देंगे यदि वह मुझमें यह भ्रम पैदा कर सकें कि उनके लिए, कॉम्टे डी ब्रेओटे-कॉन्साल्वी के

लिए, बौद्धिक विशेषाधिकार जन्म के विशेषाधिकारों से कम सम्मान के योग्य नहीं थे; या फिर अपनी संतुष्टि व्यक्त करने की आवश्यकता और उसे व्यक्त करने में कठिनाई के कारण, उस भाषा के ज्ञान की कमी के कारण जिसमें उसे मुझसे बात करनी चाहिए थी, मानो वास्तव में वह किसी ऐसे अज्ञात देश के 'मूल निवासियों' में से किसी एक के आमने-सामने आ गया हो, जहाँ उसका जहाज़ आकर अटक गया हो, और जिनसे, अंततः लाभ की आशा में, वह उनकी विचित्र रीति-रिवाजों को रुचिपूर्वक देखते हुए और अपनी मित्रता का प्रदर्शन करते हुए, या उनकी तरह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए बिना, अपने काँच के मोतियों के बदले शुतुरमुर्ग के अंडे और मसाले प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हो। उसकी खुशी का यथासंभव जवाब देने के बाद, मैंने ड्यूक डी चैटेलराउल्ट से हाथ मिलाया, जिनसे मैं पहले ही श्रीमती डी विलेपारिसिस के यहाँ मिल चुका था, और जिन्होंने मुझे बताया कि वे 'बेहद चालाक' थे। उनके सुनहरे बाल, धनुषाकार चेहरा, गालों की त्वचा के फीके पड़ते बिंदु - ये सभी विशेषताएं गुएरमांटेस की विशिष्ट पहचान थीं, जो सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी से हमारे पास मौजूद उस परिवार के चित्रों में देखी जा सकती हैं। लेकिन, चूंकि अब मुझे डचेस से प्रेम नहीं था, इसलिए एक युवक के रूप में उनका पुनर्जन्म मुझे बिल्कुल भी आकर्षित नहीं कर पाया। मैंने ड्यूक डी चैटेलराउल्ट की नाक की बनावट को इस तरह समझा, मानो वह किसी ऐसे चित्रकार की पहचान हो, जिसके काम का मैंने लंबे समय तक अध्ययन किया था, लेकिन जिसमें अब मेरी जरा भी रुचि नहीं थी। इसके बाद, मैंने प्रिंस डी फॉक्स को भी शुभ संध्या कहा, और मेरे हाथों की उंगलियों को भारी चोट लगी, जो कुचली और क्षत-विक्षत हो गईं। ये चोटें प्रिंस वॉन फैफेनहाइम के जर्मन हाथ मिलाने के अंदाज़ में लगीं, जो एम. डी नॉरपोइस के मित्र थे और जिनके चेहरे पर व्यंग्यात्मक या सौम्य मुस्कान थी। इस समूह में उपनामों के प्रति दीवानगी के कारण, प्रिंस वॉन को सर्वत्र प्रिंस वॉन के नाम से जाना जाता था, यहाँ तक कि वे स्वयं अपने पत्रों पर 'प्रिंस वॉन' या अपने करीबी लोगों को लिखते समय 'वॉन' लिखते थे। फिर भी, उनके तीन नामों को देखते हुए यह संक्षिप्त रूप समझ में आता था। लेकिन यह समझना उतना आसान नहीं था कि 'एलिजाबेथ' की जगह 'लिली' और 'बेबेथ' क्यों आने लगीं, ठीक वैसे ही जैसे एक दूसरी दुनिया में 'किकिस' की भरमार हो गई थी। यह समझा जा सकता है कि ये लोग, हालांकि अधिकांश मामलों में आलसी और हल्के-फुल्के स्वभाव के थे, उन्होंने

'मोंटेस्क्यू' का उच्चारण करने में लगने वाले कीमती समय को बचाने के लिए 'क्विउ' नाम अपना लिया होगा। लेकिन यह समझना इतना आसान नहीं है कि उन्होंने अपने एक चचेरे भाई का नाम 'फर्डिनेंड' के बजाय 'डिनैंड' रखकर क्या बचत की। हालांकि, यह नहीं सोचना चाहिए कि उपनाम गढ़ते समय गुएरमांटे परिवार हमेशा अक्षरों को छोटा या दोहराता था। इस प्रकार, दो बहनें, कॉम्टेस डी मोंटपेयरौक्स और विस्काउंटेस डी वेलुडे, जो दोनों ही बेहद हष्ट-पुष्ट थीं, हमेशा खुद को बिना किसी झुंझलाहट या दूसरों के मनोरंजन के, 'पेटिट' और 'मिग्नोन' के नाम से पुकारा जाता था, क्योंकि यह प्रथा बहुत पुरानी थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस, जो श्रीमती... डी मोंटपेयरौक्स, अगर उनकी सहेली गंभीर रूप से बीमार होतीं, तो आँखों में आँसू लिए बहन के पास दौड़कर जातीं और कहतीं: "मैंने सुना है कि पेटिट की हालत बहुत खराब है!" मैडम डी ल'एक्लिन, जो अपने बालों को ऐसे बैंड में बाँधती थीं कि उनके कान पूरी तरह से ढके रहते थे, उन्हें हमेशा 'खाली पेट' के अलावा किसी और नाम से नहीं पुकारा जाता था; कुछ मामलों में लोग पत्नी को इंगित करने के लिए पति के पहले या अंतिम नाम में बस एक 'ए' जोड़ देते थे। फाउबर्ग के सबसे कंजूस, सबसे नीच, सबसे अमानवीय आदमी का नाम राफेल रखा गया था, उसकी प्रेमिका, जो चट्टान से निकली हुई उसकी फूल थी, हमेशा खुद को 'राफेला' लिखती थी—लेकिन ये तो अनगिनत नियमों में से कुछ उदाहरण मात्र हैं, जिन पर हम अवसर मिलने पर बाद में लौट सकते हैं और उनमें से कुछ की व्याख्या कर सकते हैं। फिर मैंने ड्यूक से मुझे प्रिंस डी'एग्रीजेंट से मिलवाने के लिए कहा। "क्या! क्या आप कहना चाहते हैं कि आप हमारे उत्कृष्ट ग्रि-ग्रि को नहीं जानते!" एम. डी गुएरमांटेस ने कहा और मेरा नाम एम. डी'एग्रीजेंटे बताया। उनका अपना नाम, जिसका ज़िक्र फ़्रांस्वा अक्सर करती थीं, मुझे हमेशा रंगीन कांच की एक पारदर्शी चादर की तरह लगता था, जिसके आर-पार मैं बैंगनी सागर के किनारे, सुनहरे सूरज की तिरछी किरणों से नहाए हुए, एक प्राचीन शहर के गुलाबी संगमरमर के घन देख सकती थी। मुझे ज़रा भी शक नहीं था कि राजकुमार—जो किसी चमत्कारिक क्षण के लिए पेरिस से गुज़र रहे थे—स्वयं, उतने ही तेजस्वी सिसिलीई और भव्य रूप से परिपक्व, पूर्ण संप्रभु थे। अफ़सोस, जिस साधारण से व्यक्ति से मेरा परिचय कराया गया, और जिसने बड़ी सहजता से, जिसे वह सुरुचिपूर्ण समझता था, मुझे शुभ संध्या कहने के लिए मुड़ा, वह अपने नाम से उतना ही बेपरवाह था जितना कि किसी कलाकृति से, जिसका

सौंदर्य उसके व्यक्तित्व पर ज़रा भी झलके बिना, शायद कभी उसे निहारने के बिना भी। प्रिंस डी'एग्रीजेंट में राजसी गुणों का इतना अभाव था, ऐसा कुछ भी नहीं था जो गिरगेंटी की याद दिलाए। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उनका नाम, जो उनसे बिल्कुल अलग था और उनके व्यक्तित्व से किसी भी तरह से बंधा नहीं था, उनमें मौजूद किसी भी अस्पष्ट काव्यात्मक तत्व को अपनी ओर आकर्षित करने और उसे जादुई अक्षरों में समाहित करने की शक्ति रखता था। यदि ऐसा कोई कार्य हुआ भी था, तो वह निश्चित रूप से अत्यंत कुशलता से किया गया था, क्योंकि गुएरमांटेस के इस रिश्तेदार से आकर्षण का एक अंश भी नहीं बचा था। परिणामस्वरूप, वह एक ही समय में दुनिया का एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो प्रिंस डी'एग्रीजेंट था और शायद दुनिया के सभी व्यक्तियों में सबसे कम ऐसा व्यक्ति भी था। फिर भी, वह जो था उससे बहुत प्रसन्न था, ठीक वैसे ही जैसे एक बैंकर किसी खदान में कई शेयर रखने से प्रसन्न होता है, चाहे उस खदान का आकर्षक नाम इवानहो हो या प्रिमरोज़ हो, या उसे केवल प्रीमियर कहा जाता हो। इसी बीच, ये परिचयात्मक बातचीत, जिसे बताने में मुझे इतना समय लग गया, लेकिन जो मेरे कमरे में प्रवेश करते ही शुरू हुई और कुछ ही सेकंड तक चली, समाप्त होने वाली थी, और श्रीमती डी गुएरमांटेस लगभग विनती भरे स्वर में मुझसे कह रही थीं: "मुझे यकीन है कि बेसिन आपको इस तरह घुमाकर थका रहा है; हम चाहते हैं कि आप हमारे मित्रों से मिलें, लेकिन हम इससे कहीं अधिक चिंतित हैं कि आप थकें नहीं, ताकि आप बार-बार आएं," तभी ड्यूक ने कुछ अटपटे और संकोची अंदाज में हाथ हिलाकर (जैसा कि वे पिछले एक घंटे के दौरान किसी भी समय खुशी-खुशी कर देते, जो मेरे लिए उनके एल्स्टर्स के चिंतन से भरा हुआ था) संकेत दिया कि अब भोजन परोसा जा सकता है।

मुझे यह भी बताना चाहिए कि मेहमानों में से एक, एम. डी ग्रूची, अभी भी लापता थे। उनकी पत्नी, जो जन्म से गुएरमांटेस थीं, अकेले ही आई थीं, क्योंकि उनके पति को सीधे गाँव से आना था, जहाँ वे दिन भर शिकार कर रहे थे। यह एम. डी ग्रूची, प्रथम साम्राज्य के अपने हमनाम के वंशज थे, जिनके बारे में यह कहा गया है (जो कि बिल्कुल गलत है) कि वाटरलू की लड़ाई की शुरुआत में उनकी अनुपस्थिति नेपोलियन की हार का मुख्य कारण थी। वे एक प्रतिष्ठित परिवार से थे, जो कुछ कट्टरपंथियों की नज़र में शाही खानदान के लिए काफी अच्छा नहीं था। इस प्रकार, राजकुमार डी गुएरमांटेस, जिनकी अपनी रुचियाँ बाद के जीवन में अधिक

आसानी से संतुष्ट होने वाली थीं, अपनी भतीजियों से अक्सर कहते थे: "उस बेचारी श्रीमती डी गुएरमांटेस (विस्कोमटेस डी गुएरमांटेस, श्रीमती डी ग्रूची की माँ) के लिए कितना दुर्भाग्य है कि वह अपने किसी भी बच्चे की शादी करने में सफल नहीं हुई।" "लेकिन, चाचा, सबसे बड़ी बेटी ने एम. डी ग्रूची से शादी कर ली।" "मैं उसे पति नहीं कहूँगी! हालाँकि, लोग कहते हैं कि तुम्हारे चाचा फ़्रांस्वा ने सबसे छोटी वाली के लिए प्रस्ताव रखा है, तो शायद वे सभी कुंवारी नहीं मरेंगी।" खाना परोसने का आदेश देते ही, एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट के साथ, एक साथ कई दरवाज़े भोजन कक्ष के दोहरे दरवाज़े खुल गए; एक लॉर्ड चैंबरलेन की शान में एक चैंबरलेन ने प्रिंसेस डी पार्म के सामने झुककर यह खबर सुनाई, "मैडम को खाना परोसा जा चुका है," उसी लहजे में जैसे वह "मैडम की मृत्यु हो गई है" कहता, हालाँकि इससे सभा में कोई उदासी नहीं छाई क्योंकि वहाँ एक अनियंत्रित उल्लास का माहौल था और गर्मियों में 'रॉबिन्सन' में जैसे जोड़े एक के बाद एक भोजन कक्ष की ओर बढ़े, अपनी-अपनी जगहों पर पहुँचकर अलग हो गए जहाँ नौकरों ने उनके पीछे कुर्सियाँ लगा दीं; सबसे अंत में, मैडम... डी गुएरमांटेस मेरी ओर बढ़ीं ताकि मैं उन्हें मेज़ तक ले जा सकूँ। मुझे ज़रा भी झिझक महसूस नहीं हुई, जबकि मुझे डर था। एक शिकारी महिला की तरह, जिसकी शारीरिक शक्ति ने उसे सहजता से चलने-फिरने में सक्षम बना दिया है, उन्होंने निस्संदेह देखा कि मैं उनके गलत पक्ष में खड़ा हो गया हूँ। वे इतनी कुशलता से मेरे चारों ओर घूमीं कि मैंने पाया कि उनकी बांह मेरी बांह पर टिकी हुई है और एक सटीक और गरिमामय लय में सहजता से ढल रही है। मैंने इन गतिविधियों में और भी अधिक तत्परता से भाग लिया क्योंकि गुएरमांटेस इन्हें उतना ही महत्व देती थीं जितना कि किसी सच्चे विद्वान व्यक्ति के ज्ञान को, जिसकी संगति में कोई मूर्ख की संगति से भी कम भयभीत होता है। अन्य द्वार खुले और उनसे गरमागरम सूप अंदर आया, मानो भोजन किसी कुशल कठपुतली थिएटर में हो रहा हो, जहाँ युवा अतिथि के देर से आने पर, कठपुतली-चालक के इशारे पर, सारी मशीनरी गतिमान हो गई हो।

ड्यूक का यह संकेत संकोची और राजसी प्रभुत्वहीन था, जिसके जवाब में उन्होंने उस विशाल, अद्भुत, आज्ञाकारी और भव्य यांत्रिक और मानव निर्मित घड़ी को खोल दिया। उनके इस अनिश्चित हावभाव ने मेरे लिए उस दृश्य के प्रभाव को कम नहीं किया। क्योंकि मैं महसूस कर सकता था कि उनके इस संकोच और झिझक का कारण यह डर था कि कहीं मैं यह न

देख लूँ कि वे केवल मेरे भोजन शुरू करने का इंतज़ार कर रहे थे और काफी समय से इंतज़ार कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे श्रीमती डी गुएरमांटेस को डर था कि इतनी सारी तस्वीरें देखने के बाद मैं ऊब जाऊँगा और अगर उनके पति लगातार परिचय कराते रहे तो मैं उनके बीच आराम से नहीं बैठ पाऊँगा। इसलिए, इस हावभाव में भव्यता की कमी ने ही इसकी वास्तविक भव्यता को उजागर किया। ठीक वैसे ही, ड्यूक द्वारा अपने परिवेश की शान-शौकत के प्रति दिखाई गई उदासीनता ने भी, एक अतिथि के प्रति उनके सम्मान को दर्शाया, चाहे वह कितना भी महत्वहीन क्यों न हो, जिसे वे सम्मानित करना चाहते थे।

ऐसा नहीं था कि एम. डी गुएरमांटेस कुछ मामलों में बिल्कुल साधारण नहीं थे; वास्तव में, उनमें अत्यधिक धनवान व्यक्ति की कुछ हास्यास्पद कमजोरियाँ और एक नवसिखिए का अहंकार दिखाई देता था, जो वे निश्चित रूप से नहीं थे। लेकिन जिस प्रकार एक सरकारी अधिकारी या पादरी अपनी मामूली प्रतिभा को उन शक्तियों द्वारा अनंत रूप से कई गुना बढ़ता हुआ देखता है (जैसे समुद्र की पूरी लहर उसे पीछे धकेलती है), जिन पर वे भरोसा कर सकते हैं - फ्रांस की सरकार और कैथोलिक चर्च - उसी प्रकार एम. डी गुएरमांटेस एक अन्य शक्ति, अभिजात वर्ग की सच्ची शिष्टता से प्रेरित थे। इस शिष्टता ने कई लोगों के लिए एक सीमा निर्धारित कर दी थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर या एम. डी फोर्शेविल को अपने घर पर आमंत्रित नहीं किया होता। लेकिन जिस क्षण कोई भी (जैसा कि मेरे मामले में था) गुएरमांटेस की दुनिया में प्रवेश के योग्य प्रतीत हुआ, इस शिष्टाचार ने आतिथ्य सत्कार की सादगी के ऐसे खजाने को उजागर किया जो उन ऐतिहासिक कमरों या उनमें बचे अद्भुत फर्नीचर से भी कहीं अधिक शानदार थे, यदि ऐसा संभव हो तो।

जब एम. डी. गुएरमांटेस किसी को प्रसन्न करना चाहते थे, तो वे इस कला में निपुण थे कि वे अपने अतिथि को उस क्षण का प्रमुख व्यक्ति बना देते थे, जिससे वे परिस्थितियों और स्थान का भरपूर लाभ उठाते थे। निस्संदेह गुएरमांटेस में उनका 'सम्मान' और 'कृपा' एक अलग ही रूप धारण कर लेती। वे भोजन से पहले मुझे अकेले घुमाने के लिए अपनी गाड़ी मंगवा लेते। उनकी ऐसी ही शिष्टाचारमयता से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था, ठीक वैसे ही जैसे लुई 14 के काल के संस्मरणों को पढ़ते समय होता है, जब वे किसी से कृपा मांगने आए

व्यक्ति को विनम्रतापूर्वक, मुस्कुराते हुए और लगभग झुककर उत्तर देते हैं। हालांकि, दोनों ही मामलों में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह 'शिष्टता' शब्द के सख्त अर्थ से परे नहीं थी। लुई XIV (जिनकी उनके समय के कुलीन वर्ग के कट्टर समर्थक शिष्टाचार के प्रति उनकी कम परवाह के लिए आलोचना करते हैं, यहाँ तक कि सेंट-साइमन के अनुसार, फिलिप डी वालोइस या चार्ल्स V जैसे सम्राटों की तुलना में वे एक बहुत ही मामूली राजा थे) ने शाही परिवार के राजकुमारों और राजदूतों को यह बताने के लिए अत्यंत विस्तृत निर्देश तैयार करवाए कि उन्हें किन शासकों को प्राथमिकता देनी चाहिए। कुछ मामलों में, किसी निर्णय पर न पहुँच पाने के कारण एक समझौता किया गया जिसके तहत लुई XIV के पुत्र, महाशय, कुछ विदेशी शासकों का स्वागत केवल खुले में, बाहर ही करेंगे, ताकि यह न कहा जाए कि घर में प्रवेश करते समय एक ने दूसरे से पहले प्रवेश किया है; और इलेक्टर पैलेटाइन, ड्यूक डी शेवरूज़ को रात्रिभोज पर आमंत्रित करते हुए, अपने अतिथि के लिए जगह न बनाने के लिए बीमार होने का बहाना करते हैं, और वास्तव में उनके साथ भोजन करते हैं, लेकिन लेटकर, इस प्रकार समस्या से बचते हैं। राजा की सलाह पर, एम. ले ड्यूक, महाशय के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने के अवसरों से बचते हुए, अपने भाई, जो उनसे बेहद स्नेह रखते हैं, को अपने दरबार में बुलाने और उनसे अपनी कमीज छीनने का बहाना ढूंढ लेते हैं। लेकिन जैसे ही भावना गहरी होती है, जब दिल का मामला जुड़ जाता है, तो कर्तव्य का यह नियम, जो केवल शिष्टाचार के मामले में इतना कठोर होता है, पूरी तरह बदल जाता है। अपने भाई की मृत्यु के कुछ घंटों बाद, जो उनके सबसे प्रिय व्यक्तियों में से एक थे, जब महाशय, ड्यूक डी मोंटफोर्ट के शब्दों में, 'अभी भी तरोताजा' थे, लुई XIV ओपेरा के कुछ अंश गाते हुए दिखाई देते हैं, यह देखकर आश्चर्यचकित होते हैं कि डचेस डी बरगंडी, जो अपने शोक को छिपाने में कठिनाई महसूस कर रही थीं, इतनी दुखी क्यों दिख रही थीं, और दरबार की रौनक तुरंत बहाल करने की इच्छा रखते हुए, ताकि उनके दरबारी मेजों पर बैठने के लिए प्रोत्साहित हों, ड्यूक डी बरगंडी को ब्रेलन का खेल शुरू करने का आदेश देते हैं। खैर, न केवल उनकी सामाजिक और गहन गतिविधियों में, बल्कि एम. डी गुएरमांटेस के सबसे सहज कथनों, उनकी सामान्य चिंताओं और उनके द्वारा समय के सदुपयोग में भी एक समान विरोधाभास देखने को मिलता था; गुएरमांटेस अन्य मनुष्यों की तुलना में शोक के प्रति अधिक संवेदनशील

नहीं थे; वास्तव में यह कहा जा सकता है कि उनकी वास्तविक संवेदनशीलता कम थी; दूसरी ओर, उनके नाम लगभग हर दिन गॉलॉइस के सामाजिक कॉलम में दिखाई देते थे, क्योंकि वे असंख्य अंत्येष्टि समारोहों में शामिल होते थे और अपनी उपस्थिति दर्ज न कराना उनके कर्तव्य की अवहेलना मानी जाती थी। जिस प्रकार एक यात्री लगभग अपरिवर्तित रूप में घास-फूस की छतों वाले घरों, ज़ेनोफ़ोन या सेंट पॉल की दृष्टि में रहे छज्जों को पाता है, उसी प्रकार एम. डी गुएरमांटेस के व्यवहार में, जो अपनी विनम्रता से किसी का दिल पिघला देता था और अपनी कठोरता से उसे झकझोर देता था, मैंने दो शताब्दियों से अधिक समय बीत जाने के बाद भी लुई XIV के शासनकाल में दरबारी जीवन की उस विशिष्ट विकृति को बरकरार पाया, जो अंतरात्मा की सभी चिंताओं को भावनाओं और नैतिकता के मामलों से हटाकर विशुद्ध रूप से औपचारिक प्रश्नों पर लागू करती है।

तृतीय

प्रिंसेस डी पार्म द्वारा मेरे प्रति दिखाई गई मित्रता का दूसरा कारण अधिक व्यक्तिगत था। वह पहले से ही आश्वस्त थीं कि डचेस डी गुएरमांटेस के घर में उन्होंने जो कुछ भी देखा, चाहे लोग हों या वस्तुएँ, वह उनके घर की किसी भी चीज़ से कहीं बेहतर गुणवत्ता का था। यह सच है कि अपने सभी परिचित घरों में उनका व्यवहार ऐसा ही होता था; साधारण से साधारण व्यंजन या साधारण से साधारण फूलों पर भी वे इतनी प्रसन्न नहीं होती थीं कि अगले दिन सुबह अपने मुख्य रसोइए या मुख्य माली को, जो अच्छी तनख्वाह पाते थे और अपनी गाड़ियाँ खुद रखते थे, यह कहकर बुलाती थीं कि उन्हें उस व्यंजन के बारे में पूछताछ करने आना पड़ेगा जिसे वे नापसंद करते थे या उस प्रकार के कार्नेशन के बारे में टिप्पणी लेने आना पड़ेगा जो उतना उत्तम नहीं था, जिसमें उतनी सुंदर धारियाँ नहीं थीं और जो उतने बड़े फूल नहीं देता था जितने कि वे उनके घर पर लंबे समय से उगा रहे थे। लेकिन अगर राजकुमारी, जहाँ भी जातीं, सबसे आम चीजों को देखकर भी आश्चर्य जताती थीं, और यह दिखावा करती थीं कि उन्हें अपने उच्च पद और धन से ऐसा घमंड नहीं मिला है जिसे उनके शुरुआती शिक्षकों ने मना किया था, जिसे उनकी माँ ने हमेशा छिपाया था और जो उनके ईश्वर की दृष्टि में असहनीय था, तो दूसरी ओर, डचेस डी गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम को वह पूरी ईमानदारी से एक विशेष स्थान मानती थीं जहाँ वह आश्चर्य से आनंदित हो सकती थीं। कुछ हद तक, हालांकि इस मानसिकता को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं, गुएरमांटेस बाकी कुलीन समाज से अलग थे; वे अधिक विशिष्ट और परिष्कृत थे। पहली नज़र में उन्होंने मुझे इसके विपरीत धारणा दी थी; मैंने उन्हें अन्य सभी पुरुषों और महिलाओं के समान साधारण पाया था, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि उनसे मिलने से पहले मैंने उनमें, बालबेक, फ्लोरेंस और पर्मा की तरह, केवल नाम ही देखे थे। स्पष्टतः, इस ड्राइंग रूम में, जिन महिलाओं को मैंने चीनी मिट्टी की मूर्तियों के समान समझा था, वे वास्तव में अधिकांश महिलाओं के समान थीं। लेकिन, बालबेक या फ्लोरेंस की तरह ही, गुएरमांटे बहनों ने पहले तो अपने नाम के बजाय अपनी साथी महिलाओं से समानता के कारण कल्पना को निराश किया, लेकिन बाद में, हालांकि कुछ हद तक कम, कुछ विशिष्ट विशेषताओं के कारण बुद्धि को आकर्षित करने में सफल रहीं। उनकी शारीरिक बनावट,

उनकी त्वचा का रंग—एक विचित्र गुलाबी जो कभी-कभी बैंगनी में बदल जाता था—उनके बारीक बुने बालों की एक खास, लगभग चमकती हुई सफेदी, यहाँ तक कि पुरुषों में भी, जिनके बाल मुलायम सुनहरे गुच्छों में गुच्छेदार थे, आधे दीवार पर उगने वाली लाइकेन जैसे, आधे बिल्ली जैसे फर (एक चमकदार चमक जो बुद्धि की एक खास प्रतिभा से मेल खाती थी, क्योंकि अगर लोग गुएरमांटेस के रंग-रूप, गुएरमांटेस के बालों की बात करते थे, तो वे गुएरमांटेस की बुद्धि की भी बात करते थे, जैसे मोर्टेमार्ट्स की बुद्धि की—एक खास सामाजिक गुण जिसकी श्रेष्ठता लुई XIV के दिनों से पहले भी प्रसिद्ध थी और जब से उन्होंने खुद इसकी प्रसिद्धि प्रकाशित की है, तब से यह और भी अधिक सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त हो गई है), इन सब का मतलब यह था कि उस सामग्री में ही, चाहे वह कितनी भी कीमती क्यों न हो, जिसमें वे यहाँ-वहाँ समाए हुए पाए जाते थे, गुएरमांटेस पहचानने योग्य, आसानी से पता लगाने योग्य और अनुसरण करने योग्य बने रहे, जैसे नसें जिनकी पीलापन जैस्पर या गोमेद के एक ब्लॉक पर धारियाँ बनाती हैं, या, इससे भी बेहतर, जैसे... प्रकाश की उन लटों का लचीला लहराना, जिनके ढीले बाल एक काई-अगेट के किनारों के साथ लचीली किरणों की तरह दौड़ते हैं।

गुएरमांटे लोग—कम से कम वे जो इस नाम के योग्य थे—न केवल शारीरिक बनावट, बालों की सुंदरता और दृष्टि की पारदर्शिता में उत्कृष्ट थे, बल्कि उनके हाव-भाव, चलने का तरीका, झुकने का तरीका, हाथ मिलाने से पहले किसी की ओर देखने का तरीका और हाथ मिलाने का तरीका भी इतना अनोखा था कि वे समाज के एक आम आदमी से उतने ही अलग थे जितना कि कोई आम आदमी एक साधारण किसान से। और उनकी मित्रता के बावजूद, मन में यह सवाल उठता था: "क्या उन्हें वास्तव में यह अधिकार नहीं है, भले ही वे इसे त्याग दें, जब वे हमें चलते, झुकते, कमरे से बाहर निकलते या उन सभी कामों को करते हुए देखते हैं जो उनके द्वारा किए जाने पर अबाबील की उड़ान या गुलाब के फूल के तने पर झुकने की तरह सुंदर लगते हैं, तो वे सोचें: 'ये लोग हमारी जाति से अलग हैं, और हम ही सृष्टि के सच्चे स्वामी हैं।'?" बाद में मुझे एहसास हुआ कि गुएरमांटे लोग वास्तव में मुझे एक अलग जाति का मानते थे, लेकिन एक ऐसी जाति जिससे उन्हें ईर्ष्या होती थी क्योंकि मुझमें ऐसे गुण थे जिनके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था और जिन्हें वे अकेले ही महत्वपूर्ण मानते थे। और भी बाद में मुझे यह

महसूस हुआ कि यह विश्वास की घोषणा केवल आधी सच्ची थी और उनमें तिरस्कार या आश्चर्य प्रशंसा और ईर्ष्या के साथ-साथ मौजूद हो सकते थे। गुएरमांटे लोगों के लिए शारीरिक लचीलापन दो प्रकार से आवश्यक था; इसके एक रूप की बदौलत, जो निरंतर क्रियाशील रहता है, किसी भी क्षण, उदाहरण के लिए, यदि कोई पुरुष गुएरमांटेस किसी महिला को प्रणाम करने वाला होता, तो वह असममित गतियों की एक श्रृंखला के अस्थिर संतुलन से बनी अपनी एक आकृति प्रस्तुत करता, जिसमें घबराहट भरी क्षतिपूर्ति होती थी, एक पैर जानबूझकर या शिकार के मैदान में इतनी बार टूटने के कारण थोड़ा घिसटता था, कि दूसरे पैर के साथ तालमेल बनाए रखने के प्रयास में उसके धड़ में एक विचलन आ जाता था, जिसे एक कंधे का ऊपर की ओर धक्का एक प्रतिसंतुलन प्रदान करता था, जबकि एक आंख के सामने एक आंख का चश्मा स्थिर हो जाता था, ठीक उसी तरह जैसे माथे पर बालों का गुच्छा औपचारिक प्रणाम में नीचे किया जाता था; दूसरी लचीलता, जैसे लहर, हवा या समुद्र के मार्ग का आकार जो शंख या बर्तन पर संरक्षित होता है, एक प्रकार की निश्चित गतिशीलता में रूढ़िवादी थी, जो धनुषाकार नाक को घुमावदार बनाती थी, जो नीली, उभरी हुई आँखों के नीचे, अत्यधिक पतले होंठों के ऊपर, जिनसे महिलाओं में एक कर्कश आवाज निकलती थी, सोलहवीं शताब्दी में परजीवी और हेलेनाइजिंग वंशावलीकारों की सहृदयता द्वारा उनकी जाति को दिए गए शानदार मूल की याद दिलाती थी, जो निर्विवाद रूप से प्राचीन थी, लेकिन उस प्राचीनता की हद तक नहीं, जिसका उन्होंने दावा किया था जब उन्होंने इसके स्रोत के रूप में एक अप्सरा के एक दिव्य पक्षी द्वारा गर्भाधान की पौराणिक कथा का उल्लेख किया था।

गुएरमांटे परिवार बौद्धिक और शारीरिक दोनों ही दृष्टियों से समान रूप से मुहावरेदार था। राजकुमार गिल्बर्ट (पति, जिनके मन में 'मैरी-गिल्बर्ट' के बारे में पुराने विचार थे और जो अपनी पत्नी को गाड़ी में साथ जाते समय बाईं ओर बिठाते थे क्योंकि उनका वंश शाही होने के बावजूद उनसे निम्नतर था) को छोड़कर—हालांकि वह एक अपवाद थे और परिवार के बाकी सदस्यों के लिए हमेशा हंसी का पात्र बने रहते थे, जो उनके बारे में हमेशा नए-नए किस्से सुनाते रहते थे—गुएरमांटे परिवार, कुलीन वर्ग के बीच रहते हुए भी, कुलीनता को कोई महत्व नहीं देता था। सच कहें तो, गुरमांटेस परिवार से होने के कारण कुछ हद तक अलग और

अधिक आकर्षक बन चुकी डचेस डी गुरमांटेस के सिद्धांत, जिन्होंने बुद्धि को सर्वथा सर्वथा महत्व दिया और राजनीति में इतने समाजवादी थे कि मन में यह सवाल उठता था कि उनके महल में वह परिचित आत्मा कहाँ छिपी हो सकती है जिसका कर्तव्य अभिजात वर्ग के जीवन स्तर को बनाए रखना था, और जो हमेशा अदृश्य रहते हुए भी, कभी प्रवेश कक्ष में, कभी ड्राइंग रूम में, कभी ड्रेसिंग रूम में मंडराती रहती थी, और नौकरों को इस महिला की याद दिलाती थी जो उपाधियों में विश्वास नहीं करती थी कि उसे मैडम ला डचेस कहकर संबोधित किया जाए, और खुद को भी, जो केवल पढ़ने में रुचि रखती थी और व्यक्तियों का सम्मान नहीं करती थी, याद दिलाती थी कि आठ बजे अपनी भाभी के साथ रात के खाने पर जाना है और एक नीचा गाउन पहनना है।

वही जानी-पहचानी भावना श्रीमती डी गुएरमांटेस के लिए डचेसों के सामाजिक कर्तव्यों का प्रतीक थी, खासकर उन प्रमुख डचेसों का, जो उन्हीं की तरह करोड़पति थीं। यह कर्तव्य था उबाऊ चाय, भोजन और शाम की पार्टियों में बिताए जाने वाले समय का त्याग, जिसमें वह रोचक किताबें पढ़ सकती थीं, बारिश जैसी अप्रिय आवश्यकताओं के समान था। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने इसे स्वीकार कर लिया, अपने तीखे हास्य का प्रयोग करते हुए, लेकिन इसे स्वीकार करने का कोई औचित्य नहीं बताया। यह अजीब संयोग कि श्रीमती डी गुएरमांटेस का बटलर हमेशा उन्हें "मैडम ला डचेस" कहकर पुकारता था, जो केवल बुद्धि में विश्वास रखती थीं, उन्हें जरा भी चौंकाया नहीं। उनके मन में कभी यह विचार नहीं आया कि वह उनसे केवल 'मैडम' कहकर संबोधित करने का अनुरोध करें। अगर हम उनकी बात को पूरी तरह से समझ लें, तो शायद यह माना जा सकता है कि उस समय वह किसी और बात में व्यस्त थीं, इसलिए उन्होंने केवल 'मैडम' शब्द सुना और उसके साथ जुड़ा प्रत्यय उनकी नजर में नहीं आया। लेकिन, भले ही वह बहरेपन का नाटक करती हों, वह गूंगी नहीं थीं। दरअसल, जब भी उसे अपने पति को कोई संदेश देना होता था, तो वह बटलर से कहती थी: "महाशय ड्यूक को याद दिला देना—"

उस परिचित आत्मा के और भी काम थे, जिनमें से एक था उन्हें नैतिकता पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करना। यह सच है कि कुछ गुरमांटे बुद्धि में रुचि रखते थे और कुछ नैतिकता में, और ये दोनों वर्ग आमतौर पर एक जैसे नहीं थे। लेकिन पहले वर्ग के गुरमांटे—जिनमें एक

ऐसा गुरमांटे भी शामिल था जिसने चेक जाली बनाए थे, ताश में धोखा दिया था और जो उन सबमें सबसे मनमोहक था, जिसका मन हर नए और अच्छे विचार के लिए खुला था— नैतिकता पर दूसरों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से बोलते थे, और ठीक उसी लहजे में बोलते थे जैसे श्रीमती डी विलेपारिसिस बोलती थीं, उन क्षणों में जब परिचित आत्मा उस बूढ़ी महिला के मुख से अपनी अभिव्यक्ति करती थी। ऐसे ही क्षणों में गुरमांटे अचानक एक नौकरानी के बारे में लगभग वैसी ही बूढ़ी महिला जैसी, सौम्य और (क्योंकि उनमें खुद ज्यादा आकर्षण था) मार्किज़ से भी ज्यादा भावुक लहजा अपना लेते थे: "ऐसा लगता है कि उसका स्वभाव पूरी तरह से नेक है, वह बिल्कुल भी साधारण लड़की नहीं है, वह अच्छे माता-पिता की संतान होगी, वह निश्चित रूप से एक ऐसी लड़की है जो कभी भटकी नहीं है।" ऐसे क्षणों में, वह परिचित भावना एक स्वर का रूप ले लेती थी। लेकिन कभी-कभी यह हावभाव भी हो सकता था, चेहरे पर एक भाव, जो डचेस और उनके दादा मार्शल दोनों में समान था, एक प्रकार की अवर्णनीय कंपकंपी (जैसे सर्प की, बारका के कार्थेजियन परिवार की आत्मा) जिससे मेरा दिल कई बार सुबह की सैर के दौरान धड़क उठा था, जब श्रीमती डी गुएरमांटेस को पहचानने से पहले ही मुझे एक छोटी सी डेयरी के अंदर से उनकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई महसूस होती थीं। इस परिचित भावना ने एक ऐसी स्थिति में हस्तक्षेप किया जो न केवल गुएरमांटेस के लिए बल्कि कूर्वोइसियर परिवार के लिए भी महत्वहीन नहीं थी, जो परिवार का प्रतिद्वंद्वी गुट था और यद्यपि गुएरमांटेस की तरह ही उच्च वंश का था (वास्तव में, उनकी कूर्वोइसियर दादी के माध्यम से ही गुएरमांटेस ने उस जुनून को समझाया था जिसके कारण राजकुमार डी गुएरमांटेस हमेशा जन्म और उपाधियों के बारे में इस तरह बात करते थे मानो केवल वही मायने रखते हों), हर मायने में उनका विपरीत था। कूर्वोइसियर न केवल बुद्धि को उतना महत्व नहीं देते थे जितना गुएरमांटेस देते थे, बल्कि बुद्धि के बारे में उनकी सोच भी उनसे अलग थी। गुएरमांटेस के लिए (भले ही वह मूर्ख ही क्यों न हो) बुद्धिमान होने का अर्थ था तीक्ष्ण जुबान होना, चुभने वाली बातें कहने में सक्षम होना और बिना किसी परिणाम के बच निकलना; लेकिन इसका अर्थ यह भी था कि चित्रकला, संगीत, वास्तुकला में समान रूप से निपुण होना और अंग्रेजी बोलना आना। कूर्वोइसियरों की बुद्धि के प्रति धारणा कम अनुकूल थी, और यदि कोई वास्तव में उनकी दुनिया का न हो तो बुद्धिमान होना लगभग 'अपने माता-

पिता की हत्या करने' के बराबर था। उनके लिए बुद्धि एक चोर के औजार की तरह थी, जिसके द्वारा अनजान लोग भी सबसे प्रतिष्ठित ड्राइंग रूम के दरवाजे तोड़ देते थे, और कूर्वोइसियरों में यह सर्वविदित था कि 'इस तरह' के लोगों को अपने घर में रखने का अंततः खामियाजा भुगतना ही पड़ता है। समाज से इतर बुद्धिमान लोगों द्वारा दिए गए तुच्छ से तुच्छ कथनों पर भी कूर्वोइसियरों ने व्यवस्थित अविश्वास का भाव रखा। एक बार किसी ने टिप्पणी की: "लेकिन स्वान, पलामेडे से छोटा है," - "कम से कम वह ऐसा कहता तो है, और अगर वह ऐसा कहता है तो आप निश्चित रूप से मान लीजिए कि वह अपने हित में ऐसा कहता है!" - श्रीमती डी गैलार्डन ने जवाब दिया। इससे भी बेहतर, जब किसी ने गुएरमांटे परिवार द्वारा मेहमाननवाज़ी किए गए दो अत्यंत प्रतिष्ठित विदेशियों के बारे में कहा कि उनमें से एक को पहले भेजा गया था क्योंकि वह बड़ी थी: "लेकिन क्या वह सचमुच बड़ी है?" - श्रीमती डी गैलार्डन ने पूछा, इस तरह से नहीं जैसे कि उस तरह के व्यक्ति की कोई उम्र नहीं होती, बल्कि इस तरह जैसे कि संभवतः नागरिक या धार्मिक स्थिति, निश्चित परंपराओं से रहित होने के कारण, वे दोनों कमोबेश युवा थे, एक ही कूड़े के दो बिल्ली के बच्चों की तरह जिनके बीच केवल एक पशु चिकित्सक ही निर्णय लेने में सक्षम था। गुएरमांटे परिवार की तुलना में, कौरवॉइसियर परिवार ने एक तरह से कुलीन वर्ग की गरिमा को बनाए रखा, जिसका श्रेय उनकी संकीर्ण सोच और गहरी कड़वाहट को जाता है। जिस प्रकार गुएरमांटे परिवार (जिनके लिए शाही परिवारों और कुछ अन्य परिवारों जैसे लिग्नेस, ला ट्रेमोइल्स आदि के बाद, बाकी सभी एक आम कूड़ेदान में खो गए थे) अपने आसपास रहने वाले कई उच्च वंश के लोगों के प्रति उद्दंड थे, क्योंकि वे उन गौण भेदों पर ध्यान नहीं देते थे जिनसे कौरवॉइसियर परिवार अत्यधिक प्रभावित था, उसी प्रकार इन भेदों की अनुपस्थिति का उन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। कुछ महिलाएं, जिनका अपने मूल प्रांतों में कोई विशेष उच्च पद नहीं था, लेकिन जिनका विवाह शानदार ढंग से हुआ था, जो धनी, सुंदर और डचेस की प्रिय थीं, पेरिस के लिए, जहां लोग अपने 'पिता और माता' के बारे में ज्यादा नहीं जानते, एक उत्कृष्ट और विशिष्ट 'आयातित माल' थीं। ऐसा हो सकता था, हालांकि आम तौर पर नहीं, कि ऐसी महिलाएं, प्रिंसेस डी पार्म के माध्यम से या अपने स्वयं के आकर्षण के कारण, कुछ गुएरमांटेस के घर में आ जाती थीं। लेकिन इन महिलाओं के प्रति कौरवॉइसियर परिवार का आक्रोश असीम था। शाम

पांच से छह बजे के बीच अपने चचेरे भाई के घर पर ऐसे लोगों से मिलना, जिनके रिश्तेदारों के साथ उनके अपने रिश्तेदार पर्चे में घुलना-मिलना पसंद नहीं करते थे, उनके लिए क्रोध का एक बढ़ता हुआ स्रोत और वाक्पटुता का एक अटूट झंझट बन गया था। उदाहरण के लिए, जिस क्षण आकर्षक काउंटेस जी—— गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम में दाखिल हुईं, श्रीमती डी विलेबोन के चेहरे पर ठीक वही भाव आ गया जो तब आता जब उन्हें यह पंक्ति दोहराने के लिए कहा जाता:

और यदि उनमें से केवल एक ही दृढ़ रहे, तो वह निश्चित रूप से मैं ही होऊँगा।

एक ऐसी पंक्ति जो उनके लिए बिल्कुल अनजान थी। यह कौरवॉइसियर लगभग हर सोमवार को कॉम्टेस जी—— के कुछ ही फीट के भीतर क्रीम से भरा एक्लेयर खाती थी, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। और श्रीमती डी विलेबोन ने चुपके से स्वीकार किया कि वह समझ नहीं पा रही थीं कि उनकी चचेरी बहन गुएरमांटेस कैसे एक ऐसी महिला को अपने घर में आने दे सकती हैं जो शैतोडुन के दूसरे दर्जे के समाज में भी नहीं थी। "मुझे सचमुच समझ नहीं आता कि मेरी चचेरी बहन को इस बात पर इतना हंगामा क्यों करना चाहिए कि वह किसे जानती है; यह समाज का पूरा मजाक बना रही है!" श्रीमती डी विलेबोन ने चेहरे के भाव बदलते हुए, इस बार निराशा की एक धूर्त मुस्कान के साथ अपनी बात समाप्त की, जिसे एक नाटक में कविता की एक और पंक्ति के रूप में समझा जा सकता था, हालांकि वह इससे भी उतनी ही अपरिचित थीं जितनी पहली से:

ईश्वर की कृपा से, मेरा दुर्भाग्य मेरी आशा से कहीं अधिक है।

हम यहाँ कुछ घटनाओं का पूर्वाभास कर सकते हैं ताकि यह स्पष्ट हो सके कि श्रीमती डी विलेबोन द्वारा श्रीमती जी—— को नज़रअंदाज़ करने में दिखाई गई दृढ़ता (जो अगली पंक्ति में आशा से मेल खाती है) पूरी तरह व्यर्थ नहीं गई। श्रीमती जी——— की दृष्टि में, इसने श्रीमती डी विलेबोन को एक ऐसा सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया, यद्यपि वह विशुद्ध रूप से काल्पनिक था, कि जब श्रीमती जी—— की बेटी, जो उस समय के सबसे सुंदर और सबसे बड़ी उत्तराधिकारी थी, के विवाह का समय आया, तो लोग यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उसने एक के बाद एक सभी ड्यूकों के प्रस्ताव ठुकरा दिए। दरअसल, उसकी माँ,

शैतोडुन के कारण रू डे ग्रेनेल में हर हफ्ते होने वाले अपमानों को याद करते हुए, अपनी बेटी के लिए केवल एक ही संभावित पति के बारे में सोच सकती थी—एक विलेबोन पुत्र।
गुएरमांटे और कौरवॉइसियर परिवारों में एक समान विशेषता थी दूरियों को मापने की कला (जो अपने आप में अनंत विविधताओं वाली कला है)। गुएरमांटे लोगों का व्यवहार सबके प्रति एक जैसा नहीं था। फिर भी, उदाहरण के लिए, सभी गुएरमांटे, वे सभी जो वास्तव में गुएरमांटे थे, जब आपसे उनका परिचय कराया जाता था, तो वे एक प्रकार की रस्म अदा करते थे, मानो आपके सामने हाथ बढ़ाना ही किसी शूरवीर की उपाधि प्रदान करने जितना महत्वपूर्ण हो। जब कोई गुएरमांटे, चाहे वह बीस वर्ष से अधिक का ही क्यों न हो, अपने पूर्वजों के पदचिन्हों पर चल रहा हो, आपका नाम परिचय कराने वाले व्यक्ति के हाथों से सुनता था, तो वह आप पर इस तरह से निगाहें गड़ा देता था मानो उसने "आप कैसे हैं?" कहने का मन ही न बनाया हो। उसकी निगाहें आमतौर पर नीली होती थीं, हमेशा एक ठंडे लोहे के ब्लेड जैसी, जिसे वह आपके दिल की गहराइयों में उतारने के लिए तैयार लगता था। वास्तव में, गुएरमांटे परिवार यही कर रहा था, और उनमें से प्रत्येक स्वयं को उच्च कोटि का मनोवैज्ञानिक मानता था। उनका यह भी मानना था कि इस निरीक्षण से आगे आने वाले अभिवादन की विनम्रता बढ़ जाएगी, और वे आपको आपके गुणों से पूरी तरह अवगत कराए बिना ऐसा नहीं करेंगे। यह सब आपसे इतनी दूरी पर हुआ कि अगर यह हथियारों के आदान-प्रदान का मामूली सा मामला होता, तो भी हाथ मिलाने के लिए यह दूरी बहुत अधिक प्रतीत होती, और इस संबंध में इसका उतना ही भयावह प्रभाव पड़ा जितना कि दूसरे संबंध में। इसलिए, जब गुएरमांटेस ने आपके भीतर के गहरे रहस्यों को उजागर करते हुए और आपके सम्मान के अधिकार को स्पष्ट करते हुए एक तीव्र और घुमावदार प्रहार के बाद आपको अपने साथ शामिल होने योग्य समझा, तो पूरी तरह से फैली हुई भुजा के अंत में आपकी ओर बढ़ा हुआ उसका हाथ, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह आपसे एकल युद्ध के लिए तलवार ताने खड़ा हो। वास्तव में, उस समय वह हाथ गुएरमांटेस से इतना आगे था कि जब उसने बाद में अपना सिर झुकाया, तो यह पहचानना मुश्किल था कि वह आपको या अपने ही हाथ को प्रणाम कर रहा था। कुछ गुएरमांटेस, अनुपात की समझ न होने के कारण, या बार-बार एक ही बात दोहराने में असमर्थ होने के कारण, इससे भी आगे बढ़ गए और हर बार आपसे मिलने पर इस रस्म को नए सिरे से

दोहराते थे। यह देखते हुए कि अब उन्हें उस प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक जांच की कोई आवश्यकता नहीं थी जिसके लिए 'परिचित आत्मा' ने अपनी शक्तियां उन्हें सौंपी थीं और जिसका परिणाम उन्होंने संभवतः ध्यान में रखा था, हाथ मिलाने से पहले भेदक निगाहों का बार-बार आना केवल उनकी निगाहों में आई स्वतःस्फूर्तता या उनके द्वारा स्वयं में निहित किसी आकर्षण शक्ति से ही समझाया जा सकता था। कूर्वोइसियर, जिनका शारीरिक गठन भिन्न था, ने उस खोजी निगाह को आत्मसात करने का व्यर्थ प्रयास किया था और उन्हें एक प्रभुत्वपूर्ण कठोरता या तीव्र उदासीनता का सहारा लेना पड़ा था। दूसरी ओर, ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ असाधारण गुरमांटे महिलाओं ने कूर्वोइसियर से ही अभिवादन का स्त्री रूप उधार लिया था। जब आप उनमें से किसी एक से मिलते थे, तो वह आपको एक व्यापक प्रणाम करती थी जिसमें वह लगभग पैंतालीस डिग्री के कोण पर अपना सिर और धड़ आपकी ओर झुकाती थी, जबकि उसका शेष शरीर (जो कमरबंद तक बहुत ऊंचा था) स्थिर रहता था। लेकिन जैसे ही उसने अपने शरीर का ऊपरी हिस्सा आपकी ओर बढ़ाया, वैसे ही उसने लगभग उसी कोण से अचानक पीछे हटकर उसे ऊर्ध्वाधर रेखा से भी परे फेंक दिया। इस बाद के पीछे हटने से वह सब कुछ व्यर्थ हो गया जो आपको प्राप्त हुआ प्रतीत हो रहा था; जिस ज़मीन को आपने अपने लिए हासिल किया समझा था, वह द्वंद्वयुद्ध की तरह जीत भी नहीं रह गई; मूल स्थिति बरकरार रही। दूरी की पुनः स्थापना द्वारा सौहार्द का यही निरस्तीकरण (जो मूल रूप से कौरवॉइसियर की शैली थी और जिसका उद्देश्य यह दिखाना था कि पहले चरण में की गई प्रगति मात्र एक क्षणिक छल थी) कौरवॉइसियर की महिलाओं और गुएरमांटेस की महिलाओं दोनों में, आपके द्वारा उनसे प्राप्त पत्रों में, कम से कम आपकी जान-पहचान के शुरुआती दौर में, समान रूप से स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। पत्र के मुख्य भाग में शायद ऐसे वाक्य हों जैसे कोई केवल (आप मान लें) किसी मित्र को ही लिखता है, लेकिन उस महिला के साथ अपने ऐसे रिश्ते पर गर्व करने का आपका प्रयास व्यर्थ ही था, क्योंकि पत्र की शुरुआत 'महाशय' से हुई और अंत 'मेरे विशिष्ट भावों पर विश्वास करें' से हुआ। इसके बाद, इस ठंडे आरंभ और नीरस अंत के बीच, जिसने बाकी सब कुछ का अर्थ बदल दिया, (यदि यह आपके द्वारा भेजे गए शोक संदेश का उत्तर होता) गुएरमांटेस महिला के अपनी बहन को खोने के दुख, उनके बीच की घनिष्ठता, उनके ठहरने के स्थान की सुंदरता, और उनके नन्हे बच्चों के

आकर्षण में मिली सांत्वना का मार्मिक वर्णन होता। यह सब कुछ मुद्रित संग्रहों में मिलने वाले पत्रों जैसा ही था, जिसकी घनिष्ठता से आपके और लेखक के बीच उतनी ही घनिष्ठता का पता चलता है, जितनी कि यदि वह यंगर प्लिनी या मैडम डी सिमियान होतीं।

यह सच है कि कुछ गुएरमांटेस महिलाएं शुरू से ही आपको 'मेरी प्यारी दोस्त' या 'मेरी सहेलियां' कहकर पत्र लिखती थीं; ये हमेशा सबसे सरल स्वभाव की नहीं होती थीं, बल्कि वे होती थीं जो केवल राजाओं के समाज में रहती थीं और साथ ही 'हल्के स्वभाव' की थीं, और अपने अहंकार में यह विश्वास रखती थीं कि उनसे मिलने वाली हर चीज उन्हें आनंद देती है और अपने भ्रष्ट स्वभाव में वे अपने द्वारा दिए जाने वाले किसी भी सुख को अनमोल नहीं मानती थीं। हालांकि, लुई XIII के शासनकाल में एक ही पूर्वज का होना ही किसी युवा गुएरमांटेस के लिए मार्क्विज़ डी गुएरमांटेस के बारे में बात करते हुए "मेरी चाची एडम" कहने के लिए काफी था, गुएरमांटेस इतना बड़ा परिवार था कि इन साधारण रीति-रिवाजों में भी, जैसे कि किसी अजनबी से परिचय कराते समय झुकना, बहुत भिन्नता थी। किसी भी शिष्टाचार के प्रत्येक उप-भाग का अपना एक अलग तरीका होता था, जो माता-पिता से बच्चों को उसी तरह सौंपा जाता था जैसे मलहम बनाने का नुस्खा या जैम बनाने का कोई विशेष तरीका। इस प्रकार हमने देखा कि सेंट-लूप अपना हाथ ऐसे मिलाते थे मानो किसी का नाम सुनते ही अनायास ही, बिना आँखों का इशारा किए, बिना झुके। कोई भी दुर्भाग्यशाली आम आदमी, जो किसी विशेष कारण से—जो कि वैसे तो बहुत कम ही होता था—सेंट-लूप परिवार के किसी सदस्य से मिलता, इस अचानक और संक्षिप्त अभिवादन को देखकर, जो जानबूझकर अनदेखी का आभास देता था, यह सोचने में अपना दिमाग खपा देता कि आखिर गुरमांटे परिवार के पुरुष या महिला को उससे क्या शिकायत हो सकती है। और वह यह जानकर अत्यंत आश्चर्यचकित होता कि गुरमांटे परिवार ने परिचय कराने वाले को विशेष रूप से पत्र लिखकर बताया था कि वे उस अजनबी से मिलकर कितने प्रसन्न हुए थे और उससे दोबारा मिलने की आशा रखते थे। सेंट-लूप के यांत्रिक हाव-भाव जितने विशिष्ट थे, उतने ही जटिल और तीव्र उछल-कूद (जिन्हें एम. डी चार्लस ने हास्यास्पद बताया था) मार्क्विस डी फिएरबोइस के थे, और राजकुमार डी गुरमांटेस की चाल गंभीर और संयमित थी। लेकिन कलाकारों की

विशाल संख्या के कारण गुएरमांटेस बैले की कोरियोग्राफी की समृद्धि का वर्णन यहाँ करना असंभव है।

डचेस डी गुएरमांटेस के प्रति कौरवॉइसियर परिवार की घृणा की बात करें तो, जब तक वह अविवाहित थीं, तब तक वे उन पर दया कर सकते थे, क्योंकि उस समय वह अपेक्षाकृत गरीब थीं। दुर्भाग्य से, हर मौसम में एक विशेष प्रकार का रहस्यमय आवरण कौरवॉइसियर परिवार की संपत्ति को घेरे रहता था, जो चाहे कितनी भी अधिक क्यों न हो, अस्पष्ट ही रहती थी। पर्याप्त दहेज वाले युवा कौरवॉइसियर के लिए सबसे योग्य दूल्हा खोजना व्यर्थ ही होता था; अक्सर ऐसा होता था कि युवा जोड़े का पेरिस में अपना कोई घर नहीं होता था, वे शादी के मौसम में दूल्हे के माता-पिता के साथ रहने आते थे और बाकी साल ग्रामीण इलाके में एक ऐसे समाज में रहते थे जो भले ही शुद्ध था, लेकिन बिल्कुल साधारण था। जहां एक ओर सेंट-लूप, जो कर्ज़ में डूबा हुआ था, अपने घोड़ों से डोंसिएर्स को चकित कर देता था, वहीं दूसरी ओर बेहद अमीर कौरवॉइसियर हमेशा ट्राम से सफ़र करता था। इसी तरह (हालांकि कई साल पहले की बात है), मैडम डी गुएरमांटेस (ओरियान), जिसके पास एक पैसा भी नहीं था, अपने कपड़ों से सभी कौरवॉइसियरों से ज़्यादा हलचल मचाती थी। उसके कहे गए बेहद विवादास्पद शब्द उसके पहनावे और बालों के स्टाइल का एक तरह से विज्ञापन बन गए थे। उसने रूसी ग्रैंड ड्यूक से यह कहने की हिम्मत की थी: "महोदय, मैंने सुना है कि आप टॉल्स्टॉय की हत्या करवाना चाहते हैं?" एक डिनर पार्टी में, जिसमें किसी भी कौरवॉइसियर को बुलाया नहीं गया था, हालांकि उनमें से कोई भी टॉल्स्टॉय के बारे में ज़्यादा नहीं जानता था। अगर हम डॉवेजर डचेस डी गैलार्डन (राजकुमारी डी गैलार्डन की सास, जो उस समय अभी बच्ची ही थीं) के उदाहरण से अंदाजा लगाएं, तो उन्हें यूनानी लेखकों के बारे में बहुत कम जानकारी थी। ओरियान ने पांच वर्षों में एक बार भी उनसे मिलने नहीं आई थीं, इसलिए जब किसी ने उनसे इस अनुपस्थिति का कारण पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया: "लगता है वह समाज में अरस्तू (यानी अरिस्टोफेन्स) का पाठ करती हैं। मैं अपने घर में इस तरह की बात बर्दाश्त नहीं कर सकती!"

कोई कल्पना कर सकता है कि मैडम डी गुएरमांटेस द्वारा टॉल्स्टॉय पर किया गया यह 'हमला' कितना बड़ा रहा होगा, यदि इसने कौरवॉइसियरों को क्रोधित किया, तो गुएरमांटेस

को और उनसे जुड़े हर व्यक्ति को, न केवल निकट से बल्कि दूर से भी, कितना प्रसन्न किया होगा। डॉवेजर कॉम्टेस डी'आर्गेनकोर्ट (जन्म से सीनपोर्ट), जो हर तरह के लोगों का मनोरंजन करती थीं, क्योंकि वे एक पढ़ी-लिखी महिला थीं और अपने बेटे के घोर अभिमानी होने के बावजूद, अपने साहित्यिक मित्रों के सामने यह कहावत दोहराती थीं: "ओरियान डी गुएरमांटेस, आप जानते हैं; वह अंबर की तरह सुंदर हैं, बंदर की तरह शरारती हैं, अगर वह चाहें तो कुछ भी कर सकती हैं, उनके जलरंग किसी महान चित्रकार के योग्य हैं और वह अधिकांश महान कवियों से बेहतर कविताएँ लिखती हैं, और जहाँ तक परिवार की बात है, क्या आप नहीं जानते, आप इससे बेहतर कुछ कल्पना भी नहीं कर सकते, उनकी दादी मैडम डी मोंटपेंसियर थीं, और वह बिना किसी नाजायज विवाह के अठारहवीं ओरियान डी गुएरमांटेस हैं; यह सबसे शुद्ध रक्त है, पूरे फ्रांस में सबसे पुराना।" और इस तरह वे पाखंडी साहित्यकार, वे अर्ध-बुद्धिजीवी जो मैडम के पास जाते थे... डी'आर्गेनकोर्ट के लोगों ने ओरियान डी गुएरमांटेस की एक मानसिक छवि बनाई, जिनसे उन्हें व्यक्तिगत रूप से मिलने का कभी अवसर नहीं मिला, उन्हें राजकुमारी बदरौलबादौर से कहीं अधिक अद्भुत और असाधारण माना। यह जानकर कि इतनी महान हस्ती ने टॉल्स्टॉय को सर्वोपरि माना है, वे न केवल उनके लिए मरने को तैयार हो गए, बल्कि टॉल्स्टॉय के प्रति अपने प्रेम और ज़ारशाही के विरुद्ध लड़ने की अपनी इच्छा को भी नई शक्ति से जागृत कर लिया। ये उदारवादी विचार उनमें फीके पड़ सकते थे, वे उनके महत्व पर संदेह करने लग सकते थे, और उन्हें स्वीकार करने का साहस भी खो सकते थे, तभी अचानक मैडम डी गुएरमांटेस से, यानी एक ऐसी लड़की से जो निर्विवाद रूप से सुसंस्कृत और बोलने के लिए अधिकृत थी, जिसने अपने बालों को माथे पर सपाट रखा हुआ था (ऐसा कुछ जो कोई भी कूर्वोइसियर कभी नहीं करता), यह प्रबल समर्थन प्राप्त हुआ। कुछ वास्तविकताएँ, चाहे अच्छी हों या बुरी, इस तरह से हम पर अधिकार रखने वाले लोगों का समर्थन प्राप्त करके अत्यधिक लाभान्वित होती हैं। उदाहरण के लिए, कौरवॉइसियरों के बीच, सार्वजनिक सड़कों पर सौहार्दपूर्ण व्यवहार के अनुष्ठान में एक विशेष प्रकार का झुकना शामिल था, जो अपने आप में बहुत भद्दा और सौहार्दपूर्ण व्यवहार से बहुत दूर था, लेकिन लोग इसे किसी व्यक्ति को शुभ दिन कहने का विशिष्ट तरीका मानते थे, जिसके परिणामस्वरूप हर कोई, अपने चेहरे पर स्वागत की सहज मुस्कान को

दबाते हुए, इन ठंडे करुण करतूतों की नकल करने का प्रयास करता था। लेकिन आम तौर पर गुएरमांटे और विशेष रूप से ओरियान, इन रीति-रिवाजों से अन्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक परिचित होते हुए भी, यदि वे आपको किसी गाड़ी से देख लेते, तो हाथ हिलाकर आपका अभिवादन करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे, और ड्राइंग रूम में, कॉर्वाँइसियरों को उनके कठोर और अनुकरणात्मक प्रणाम करने के लिए छोड़कर, हवा में मनमोहक सम्मान का भाव प्रकट करते थे, अपने नीली आँखों में मुस्कान लिए किसी साथी की तरह हाथ बढ़ाते थे, जिससे अचानक, गुएरमांटे की बदौलत, उस स्मार्टनेस के सार में, जो तब तक थोड़ा खोखला और नीरस था, वह सब कुछ समाहित हो जाता था जिसे आप स्वाभाविक रूप से चाहते थे और जिसे आपने स्वयं को त्यागने के लिए विवश किया था - एक सच्चा स्वागत, सच्ची मित्रता का प्रवाह, सहजता। कुछ इसी तरह (हालांकि इस बार पुनर्वास का औचित्य शायद ही सिद्ध हो) वे लोग जो खराब संगीत और साधारण धुनों के प्रति सहज रुचि रखते हैं, जिनमें कुछ सहज और मोहक तत्व होता है, सिम्फोनिक संस्कृति की शिक्षा के बल पर उस रुचि को दबाने में सफल होते हैं। लेकिन जब वे इस मुकाम पर पहुँच जाते हैं, जब रिचर्ड स्ट्रॉस के शानदार ऑर्केस्ट्रल रंग से चकित होकर—और यह सही भी है—वे देखते हैं कि वह संगीतकार ऑबर के समान उदारता से सबसे साधारण धुनों को भी अपना लेता है, तो जिस चीज़ की वे पहले प्रशंसा करते थे, उसे अचानक इतने उच्च स्तर पर एक ऐसा औचित्य मिल जाता है जो उन्हें प्रसन्न करता है, और वे बिना किसी संकोच के और दोगुनी कृतज्ञता के साथ सैलोमे को सुनते समय उस चीज़ से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं जिसकी प्रशंसा करना उनके लिए लेस डायमांट्स डे ला कौरॉन में असंभव होता।

चाहे यह प्रामाणिक हो या नहीं, मैडम डी गुएरमांटेस द्वारा ग्रैंड ड्यूक को दिया गया जवाब, जो घर-घर में फैल गया, उस अवसर का लाभ उठाकर यह बताने का मौका दिया कि ओरियान को उस रात्रिभोज में किस तरह अत्यधिक दिखावे के साथ पेश किया गया था। लेकिन अगर ऐसी शान-शौकत (और यही वह बात है जिसने इसे कौरवॉइसियर परिवार के लिए अप्राप्य बना दिया) धन से नहीं बल्कि फिजूलखर्ची से उत्पन्न होती है, तो भी फिजूलखर्ची लंबे समय तक बनी रहती है यदि उसे धन का निरंतर समर्थन प्राप्त हो, जो उसे अपनी पूरी ऊर्जा खर्च करने की अनुमति देता है। ओरियान ही नहीं बल्कि मैडम द्वारा खुले तौर पर प्रचारित सिद्धांतों

को देखते हुए... डी विलेपारिसिस के विचारों के आधार पर, अर्थात् कुलीनता मायने नहीं रखती, पद-प्रतिष्ठा के बारे में सोचना निरर्थक है, धन का अर्थ सुख नहीं होता, और केवल बुद्धि, हृदय और प्रतिभा ही महत्वपूर्ण हैं, कूर्वोइसियरों का यह आशा करना उचित था कि मार्क्विज़ से प्राप्त प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप, ओरियान किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करेगी जो समाज से अलग हो, एक कलाकार, न्याय से भागा हुआ अपराधी, एक बदमाश, एक स्वतंत्र विचारक, और वह निश्चित रूप से उस श्रेणी में आ जाएगी जिसे कूर्वोइसियर 'नुकसानदायक' कहते थे। उनकी यह आशा और भी अधिक उचित थी क्योंकि श्रीमती डी विलेपारिसिस इस समय सामाजिक दृष्टि से एक कठिन संकट से गुजर रही थीं (जिन कुछ प्रतिभाशाली लोगों से मुझे उनके ड्राइंग रूम में मिलना था, उनमें से कोई भी अभी तक वहाँ नहीं आया था), और उन्होंने उस समाज के प्रति तीव्र घृणा व्यक्त की जिसने उन्हें अलग-थलग कर रखा था। यहां तक कि जब वह अपने भतीजे प्रिंस डी गुएरमांटेस का जिक्र करती, जिनसे वह अब भी मिलती थीं, तब भी वह उनका मजाक उड़ाने से नहीं रुक पाती थीं क्योंकि वह अपनी वंशावली को लेकर बहुत ही आशंकित थे। लेकिन जैसे ही ओरियान के लिए पति ढूंढने का सवाल आया, तब चाची और भतीजी द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रचारित सिद्धांत नहीं रहे, बल्कि उनकी जाति की रहस्यमय 'परिचित आत्मा' ने सारे काम संभाल लिए। ठीक उसी तरह जैसे मानो मैडम... डी विलेपारिसिस और ओरियान ने साहित्यिक योग्यता और चरित्र की गहराई के बजाय किराए के रिकॉर्ड और वंशानुक्रम के अलावा कभी किसी और चीज़ की बात नहीं की थी, और मानो कुछ दिनों के लिए मार्क्विज़ - जैसा कि अंततः वह होंगी - मृत और कॉम्ब्रे के चर्च में अपनी अर्थी पर थीं, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य मात्र गुएरमांटेस बनकर रह जाएगा, व्यक्तित्व और बपतिस्मा के नामों का त्याग कर दिया जाएगा, जिसकी गवाही कफ़न के विशाल काले वस्त्र पर बैंगनी रंग में एकल 'G' था, जिसके ऊपर ड्यूकल मुकुट था, सबसे धनी और सबसे कुलीन व्यक्ति पर, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सबसे योग्य कुंवारे पर, ड्यूक डी गुएरमांटेस के सबसे बड़े बेटे, प्रिंस डेस लाउम्स पर, परिचित आत्मा ने बौद्धिक, आलोचनात्मक, प्रचारक श्रीमती डी विलेपारिसिस की पसंद छोड़ दी थी। और शादी के दिन कुछ घंटों के लिए, श्रीमती... डी विलेपारिसिस ने अपने ड्राइंग रूम में उन सभी कुलीन व्यक्तियों का स्वागत किया, जिनका वह अक्सर उपहास करती थीं, और वास्तव में, वह अपने आमंत्रित आम लोगों के सामने भी

उन्हीं का उपहास करती थीं, जिन पर प्रिंस डेस लाउम्स ने अगले वर्ष 'संबंध तोड़ने' की तैयारी में तुरंत कार्ड छोड़ दिए थे। और फिर, कोर्टवॉइसियर परिवार की कड़वाहट को और बढ़ाते हुए, वही पुराने सिद्धांत, जो बुद्धि और प्रतिभा को ही सामाजिक श्रेष्ठता का एकमात्र आधार मानते थे, प्रिंसेस डेस लाउम्स के घर में उनकी शादी के तुरंत बाद फिर से अपने मूल रूप में लौट आए। और इस संदर्भ में, संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि सेंट-लूप का दृष्टिकोण, जब वह राहेल के साथ रहता था, राहेल की सहेलियों से मिलता-जुलता था और राहेल से विवाह करना चाहता था, परिवार में चाहे जो भी आक्रोश पैदा हुआ हो, गुएरमांटे परिवार की युवतियों के सामान्य दृष्टिकोण की तुलना में कम असत्य था। ये युवतियाँ बुद्धि के गुणों का उपदेश देती थीं, मानव समानता पर प्रश्न उठाने की संभावना को लगभग नकारती थीं, और अंततः उनका परिणाम वही होता था मानो वे विपरीत सिद्धांतों का पालन करतीं, यानी किसी अत्यंत धनी ड्यूक से विवाह करतीं। इसके विपरीत, सेंट-लूप ने अपने सिद्धांतों के अनुरूप ही कार्य किया, जिसके कारण लोग कहने लगे कि वह गलत राह पर चल रहा है। नैतिक दृष्टि से राहेल पूरी तरह से संतोषजनक नहीं थी। लेकिन यह बिल्कुल निश्चित नहीं है कि यदि वह केवल एक डचेस या करोड़ों की उत्तराधिकारी होती, तो श्रीमती डी मार्सेंटेस इस विवाह के पक्ष में नहीं होतीं।

खैर, मैडम डेस लाउम्स (अपने ससुर की मृत्यु के बाद कुछ समय बाद डचेस डी गुएरमांटेस) की बात पर लौटते हुए, यह कौरवॉइसियर परिवार के लिए आखिरी ठप्पा साबित हुआ कि युवा राजकुमारी के सिद्धांत, जो उनकी बातों में इस कदर समाए हुए थे, किसी भी तरह से उनके आचरण को निर्देशित नहीं कर रहे थे; परिणामस्वरूप, यह दर्शन (यदि इसे ऐसा कहा जा सकता है) गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम की अभिजात्य शान को जरा भी कम नहीं कर पाया। निस्संदेह, जिन लोगों को मैडम डी गुएरमांटेस ने आमंत्रित नहीं किया, उन्होंने सोचा होगा कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वे उतने बुद्धिमान नहीं थे, और एक धनी अमेरिकी महिला, जिसके पास पार्नी की कविताओं की एक छोटी सी पुरानी प्रति के अलावा कभी कोई किताब नहीं थी, जिसे उसके भीतरी कमरे की एक मेज पर उस 'काल' की होने के कारण सजाया गया था, ने डचेस डी गुएरमांटेस पर टिकी अपनी तीक्ष्ण निगाहों से यह दिखाया कि वह बौद्धिक चीजों को कितना महत्व देती थी, जब वह महिला ओपेरा में दिखाई दी। इसमें कोई शक नहीं कि श्रीमती

डी गुएरमांटेस किसी व्यक्ति का चयन उसकी बुद्धि के आधार पर करते समय पूरी तरह ईमानदार थीं। जब वे किसी महिला के बारे में कहतीं, "लगता है, वह बहुत आकर्षक है!" या किसी पुरुष के बारे में कहतीं कि वह "दुनिया का सबसे चतुर व्यक्ति" है, तो वे मानतीं कि उन्हें स्वीकार करने का एकमात्र कारण उनकी यह आकर्षण या चतुराई ही है, और इस अंतिम क्षण में उनकी सहज प्रवृत्ति बीच में नहीं आती; गुएरमांटेस परिवार जिस क्षेत्र में अपना निर्णय लेता था, उसके गुप्त प्रवेश द्वार पर गहराई से जड़ जमाए, यह सतर्क प्रवृत्ति उन्हें किसी पुरुष को चतुर या किसी महिला को आकर्षक मानने से रोकती थी, यदि उनका कोई सामाजिक मूल्य न हो, चाहे वह वास्तविक हो या संभावित। पुरुष को विद्वान तो कहा जाता था, लेकिन एक शब्दकोश की तरह, या इसके विपरीत, एक व्यापारी की मानसिकता वाला साधारण व्यक्ति, महिला को सुंदर तो कहा जाता था, लेकिन उसकी शैली बेहद खराब या बहुत ज्यादा बातूनी। जहाँ तक उन लोगों की बात है जिनकी कोई निश्चित सामाजिक स्थिति नहीं थी, वे तो सीधे-सीधे भयानक थे—कितने घमंडी! एम. डी ब्रेउटे, जिनका कंट्री हाउस गुएरमांटेस के घर के काफी करीब था, किसी भी उच्च पदस्थ व्यक्ति से मेलजोल नहीं रखते थे। लेकिन वे मन ही मन उन पर हंसते थे और अपना पूरा जीवन संग्रहालयों में बिताना चाहते थे। इसलिए, जब कोई एम. डी ब्रेउटे को घमंडी कहता, तो श्रीमती डी गुएरमांटेस को बहुत गुस्सा आता था। "घमंडी! बकवास! लेकिन, मेरे प्यारे दोस्त, तुम पागल हो गए होगे, बात तो बिलकुल उलट है। उन्हें बुद्धिमान लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं; वे किसी से भी अपना परिचय नहीं होने देते। मेरे घर में भी नहीं! अगर मैं उनसे किसी अनजान व्यक्ति से मिलने के लिए कहूँ, तो वे मुझे लगातार गालियाँ देते रहते हैं।" इसका यह मतलब नहीं था कि व्यवहार में भी गुएरमांटेस का रवैया कूर्वोइसियर परिवार से बिल्कुल अलग था। सकारात्मक रूप से देखा जाए तो, गुएरमांटेस और कूर्वोइसियर परिवारों के बीच यह अंतर पहले से ही बहुत अच्छे परिणाम देने लगा था। इस प्रकार, डचेस डी गुएरमांटेस, जो एक रहस्यमयी परिवेश में घिरी हुई थीं, जिसके कारण कई कवि उनके प्रति सम्मानजनक दूरी बनाए रखते हुए उनके स्वप्न देखते थे, ने उस पार्टी का आयोजन किया जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, जिसमें इंग्लैंड के राजा ने अन्यत्र की तुलना में कहीं अधिक आनंद लिया था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने, एक ऐसे व्यक्ति को जो कभी भी कूर्वोइसियर के दिमाग में नहीं आता, आमंत्रित करने का विचार किया था,

और वह दुस्साहस दिखाया था जिससे एक कूर्वोइसियर का साहस भी पीछे हट जाता, कि पहले उल्लेखित हस्तियों के अलावा, संगीतकार गैस्टन लेमेयर और नाटककार ग्रैंडमौगिन को भी आमंत्रित किया जाए। लेकिन बौद्धिकता का प्रभाव मुख्य रूप से नकारात्मक दृष्टिकोण से ही प्रकट हुआ। यदि राजकुमारी डेस लाउम्स से निमंत्रण मांगने वाले व्यक्ति का पद जितना ऊंचा होता जाता था, चतुराई और आकर्षण का आवश्यक गुणांक लगातार घटता जाता था, और यूरोप के प्रमुख शासकों में से एक होने पर शून्य हो जाता था, तो इसके विपरीत, शाही स्तर से जितना नीचे वे गिरते थे, गुणांक उतना ही बढ़ता जाता था। उदाहरण के लिए, प्रिंसेस डी पार्म की पार्टियों में कई ऐसे लोग होते थे जिन्हें उनकी रॉयल हाईनेस ने आमंत्रित किया था क्योंकि वे उन्हें बचपन से जानती थीं, या क्योंकि वे किसी डचेस से संबंधित थे, या किसी सम्राट के करीबी थे, जबकि वे स्वयं संभवतः बदसूरत, उबाऊ या मूर्ख थे; खैर, एक कौरवॉइसियर के लिए इनमें से कोई भी कारण: "प्रिंसेस डी पार्म की पसंदीदा", "डचेस डी अर्पाजोन की मां की तरफ से भतीजी", "हर साल स्पेन की रानी के साथ तीन महीने बिताती है", ऐसे लोगों को अपने घर आमंत्रित करने के लिए पर्याप्त होता, लेकिन श्रीमती... डी गुएरमांटेस, जिन्होंने दस वर्षों तक प्रिंसेस डी पार्म के घर में उनके अभिवादन को विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया था, ने उन्हें कभी भी अपने घर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी थी। उनका मानना था कि एक ड्राइंग रूम के लिए सामाजिक और भौतिक दोनों ही अर्थों में एक ही नियम लागू होता है, जहाँ कुछ ऐसे फर्नीचर के टुकड़े ही पर्याप्त होते हैं जिनमें कोई विशेष सुंदरता नहीं होती, बल्कि उन्हें कमरे को भरने और मालिक की संपत्ति का प्रतीक बनाने के लिए रखा जाता है, ताकि कमरा भद्दा लगे। ऐसा ड्राइंग रूम एक ऐसी किताब जैसा होता है जिसमें लेखक अपनी विद्वत्ता, प्रतिभा और धाराप्रवाह भाषा का उपयोग करने से खुद को रोक नहीं पाता। एक किताब की तरह, एक घर की तरह, एक 'सैलून' की गुणवत्ता, श्रीमती डी गुएरमांटेस का मानना था - और यह सही भी था - कि यह त्याग की नींव पर टिकी होती है।

प्रिंसेस डी पार्म की कई सहेलियाँ, जिनके साथ डचेस डी गुएरमांटेस वर्षों से एक ही पारंपरिक अभिवादन तक सीमित रहती थीं, या उन्हें कभी अपनी पार्टियों में आमंत्रित किए बिना या उनकी पार्टियों में जाए बिना उनके कार्ड लौटा देती थीं, इन कमियों के बारे में महारानी से दबे स्वर में शिकायत करती थीं, जो उन दिनों में जब एम. डी गुएरमांटेस अकेले उनसे मिलने आते

थे, तो उन्हें संकेत दे देती थीं। लेकिन धूर्त रईस, जो रखैलें रखने के कारण डचेस के लिए एक बुरा पति था, लेकिन ड्राइंग रूम की सुव्यवस्था (और उसकी अपनी बुद्धि, जो उसका मुख्य आकर्षण थी) से संबंधित हर चीज में उसका सबसे भरोसेमंद और सच्चा मित्र था, ने उत्तर दिया: "लेकिन क्या मेरी पत्नी उसे जानती है? जी हाँ! ओह, मुझे लगता है कि वह जानती है। लेकिन सच्चाई यह है, महोदया, कि ओरियान को महिलाओं की बातचीत पसंद नहीं है। वह श्रेष्ठ बुद्धि वाले लोगों के बीच रहती है - मैं उसका पति नहीं हूँ, मैं केवल पहला नौकर हूँ। कुछ गिनी-चुनी महिलाओं को छोड़कर, जो सभी बहुत ही चतुर हैं, बाकी महिलाओं से वह ऊब जाती है। निश्चित रूप से, महोदया, आपकी उच्चता, अपने सभी अच्छे विवेक के साथ, मुझे यह नहीं बताने वाली है कि मार्किज़ डी सोव्रे में कोई बुद्धि है। हाँ, मैं पूरी तरह समझता हूँ, राजकुमारी उसे दयालुतावश अपने यहाँ बुलाती है। इसके अलावा, आपकी उच्चता उसे जानती है। आप मुझे बता रहे हैं कि ओरियान उससे मिली है; यह बिल्कुल संभव है, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो बार। और फिर, मुझे आपको समझाना होगा..." महाराज, इसमें मेरी भी थोड़ी सी गलती है। मेरी पत्नी बहुत जल्दी थक जाती है, और वह हमेशा लोगों से मिलने-जुलने की इतनी इच्छुक रहती है कि अगर मैं उसे इजाज़त दे दूं तो वह लोगों से मिलना कभी बंद ही नहीं करेगी। कल शाम ही उसे बुखार था, वह डचेस डी बॉर्बन से न मिलने जाकर उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने से डर रही थी। मुझे सख्ती दिखानी पड़ी, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ; मैंने उन्हें गाड़ी लाने से साफ मना कर दिया। क्या आप जानती हैं, महोदया, मैं वास्तव में ओरियान को यह बताना पसंद नहीं करूँगा कि आपने श्रीमती डी सोव्रे के बारे में मुझसे बात की है। मेरी पत्नी महाराज के प्रति इतनी समर्पित है कि वह तुरंत श्रीमती डी सोव्रे को घर पर आमंत्रित करने जाएगी; इसका मतलब होगा एक और मुलाकात, और हमें उनकी बहन से दोस्ती करनी पड़ेगी, जिनके पति को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे लगता है कि अगर राजकुमारी को कोई आपत्ति नहीं है तो मैं ओरियान को इस बारे में कुछ भी नहीं बताऊँगा। इससे उन्हें बहुत तनाव और परेशानी से मुक्ति मिलेगी। और मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि इससे श्रीमती को कोई नुकसान नहीं होगा। डी सौव्रे। वह हर जगह जाती हैं, सबसे प्रतिष्ठित लोगों के बीच उठती-बैठती हैं। आप जानते हैं, हम ज़्यादा मेहमाननवाज़ी नहीं करते, बस कुछ छोटी-मोटी दोस्ताना दावतें ही होती हैं, श्रीमती डी सौव्रे तो

ऊब ही जाएँगी। प्रिंसेस डी पार्म, भोलापन से आश्वस्त थीं कि ड्यूक डी गुएरमांटेस उनकी यह विनती डचेस तक नहीं पहुँचाएँगे, और श्रीमती डी सौव्रे द्वारा चाहा गया निमंत्रण न मिलने से निराश थीं, लेकिन यह सोचकर और भी खुश थीं कि वह स्वयं इतने विशिष्ट परिवार की नियमित मेहमानों में से एक थीं। निस्संदेह इस संतुष्टि के कुछ नुकसान भी थे। इसलिए जब भी प्रिंसेस डी पार्म, श्रीमती डी गुएरमांटेस को अपनी पार्टियों में आमंत्रित करतीं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सोचना पड़ता था कि उनकी सूची में कोई और ऐसा व्यक्ति तो नहीं है जिसकी उपस्थिति डचेस को नाराज़ कर दे और वह दोबारा आने से मना कर दें।
आम तौर पर शाम को (रात के खाने के बाद, जो वह हमेशा बहुत जल्दी शुरू कर देती थीं, क्योंकि वह पुरानी परंपराओं का पालन करती थीं, और कम लोगों को बुलाती थीं) प्रिंसेस डी पार्म का ड्राइंग रूम उनके नियमित मेहमानों के लिए खुला रहता था, और आम तौर पर सभी उच्च वर्ग के कुलीन लोगों के लिए, चाहे वे फ्रांसीसी हों या विदेशी। उनके स्वागत का क्रम इस प्रकार था: भोजन कक्ष से बाहर आने पर राजकुमारी एक बड़ी गोल मेज के सामने सोफे पर बैठ जातीं और उनके साथ भोजन करने वाली दो सबसे महत्वपूर्ण महिलाओं से बातचीत करतीं, या फिर किसी पत्रिका पर नजर डालतीं, या कभी-कभी ताश खेलतीं (या खेलने का नाटक करतीं, जर्मन दरबारी रिवाज अपनाते हुए), या तो अकेले धैर्य का खेल खेलतीं या किसी प्रमुख व्यक्ति को अपना असली या काल्पनिक साथी चुनतीं। नौ बजे तक बड़े ड्राइंग रूम के दोहरे दरवाजे लगातार खुलते-बंद होते रहते थे, आगंतुकों को अंदर आने देने के लिए जो घर पर शांति से भोजन कर चुके थे (या यदि वे शहर में भोजन कर चुके थे तो अपने कैफे से जल्दी में निकलकर बाद में लौटने का वादा करते थे, क्योंकि उनका इरादा केवल एक दरवाजे से अंदर जाकर दूसरे से बाहर निकलने का था) ताकि राजकुमारी के समय के अनुसार चल सकें। इस बीच, राजकुमारी अपने खेल या बातचीत में मग्न रहती थीं और आने वालों को अनदेखा करने का दिखावा करती थीं। जब वे वास्तव में उनके पास आ गईं, तब जाकर वे विनम्रतापूर्वक अपनी सीट से उठीं और महिलाओं के लिए एक दोस्ताना मुस्कान दी। तब वे महिलाएं उनके सामने घुटने टेककर विनम्रतापूर्वक उनके सुंदर हाथ को छूतीं, जो बहुत नीचे लटका हुआ था, और उसे चूमतीं। लेकिन उस क्षण राजकुमारी, मानो वह हमेशा की तरह किसी औपचारिकता से आश्चर्यचकित हो गई हो, जिससे वह भली-भांति परिचित थी, घुटनों के

बल बैठी हुई महिला को मानो बलपूर्वक उठाया, और अतुलनीय शालीनता और मधुरता से उसके दोनों गालों पर चुंबन किया। यह शालीनता और मधुरता, आप कह सकते हैं, अतिथि के घुटने टेकने की विनम्रता पर निर्भर थी। यह संभव है; और ऐसा लगता है कि पद-भेद रहित समाज में शिष्टाचार लुप्त हो जाएगा, जैसा कि आमतौर पर माना जाता है, शिष्टाचार की कमी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि एक वर्ग से उस भेद के प्रति सम्मान का भाव समाप्त हो जाएगा जो प्रभावी होने के लिए काल्पनिक होना चाहिए, और उससे भी अधिक, दूसरे वर्ग से उस सौहार्द का भाव पूरी तरह से लुप्त हो जाएगा जिसके वितरण में व्यक्ति उदार होता है जब तक कि वह जानता है कि प्राप्तकर्ता के लिए इसका एक अनमोल मूल्य है, जो समानता पर आधारित दुनिया में, केवल एक वादे के मूल्य के समान कुछ भी नहीं रह जाएगा। लेकिन पुनर्निर्मित समाज में शिष्टाचार का लुप्त होना निश्चित नहीं है, और हम कभी-कभी यह मानने में जल्दबाजी करते हैं कि वर्तमान ही एकमात्र संभव स्थिति है। उच्च कोटि के बुद्धिमान लोगों का मत रहा है कि गणतंत्र में कूटनीति या विदेशी गठबंधन नहीं हो सकते, और हाल ही में, उनका यह मत रहा है कि किसान वर्ग चर्च और राज्य के पृथक्करण को सहन नहीं करेगा। आखिरकार, एकरूपता के स्तर पर आसीन समाज में शिष्टाचार का अस्तित्व रेल की व्यावहारिक सफलता या युद्ध में हवाई जहाज के उपयोग से अधिक चमत्कारिक नहीं होगा। इसके अलावा, यदि शिष्टाचार लुप्त भी हो जाए, तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह दर्शाता हो कि यह एक दुर्भाग्य होगा। अंत में, क्या समाज बाहरी रूप से अधिक लोकतांत्रिक होने के साथ-साथ गुप्त रूप से अधिक पदानुक्रमित नहीं हो जाएगा? यह अत्यधिक संभावित प्रतीत होता है। पोप की राजनीतिक शक्ति में तब से भारी वृद्धि हुई है जब से उनके पास न तो राज्य रहे हैं और न ही सेना; सत्रहवीं शताब्दी के एक धर्मनिष्ठ कैथोलिक के लिए हमारे गिरजाघरों का महत्व बीसवीं शताब्दी के एक नास्तिक के लिए उनके महत्व से कहीं कम था, और यदि प्रिंसेस डी पार्म किसी राज्य की संप्रभु शासक होतीं, तो निस्संदेह मैं उनके बारे में लगभग उसी तरह बोलने के लिए विवश महसूस करता जैसे मैं गणतंत्र के राष्ट्रपति के बारे में बोलता हूँ, अर्थात् बिल्कुल भी नहीं।

जैसे ही नवदीक्षित युवती को जमीन से उठाया गया और राजकुमारी ने उसे गले लगाया, राजकुमारी अपनी सीट पर वापस बैठ गई और धैर्य के अपने खेल में लौट आई, लेकिन सबसे

पहले, यदि नवदीक्षित युवती का कोई महत्व था, तो उसने उससे कुछ देर बातचीत की और उसे एक आरामकुर्सी पर बैठा दिया।

जब कमरा बहुत भीड़भाड़ वाला हो गया, तो दरबारी महिला, जिसे आवागमन नियंत्रित करना था, ने नियमित मेहमानों को एक विशाल हॉल में ले जाकर जगह खाली कर दी। यह हॉल ड्राइंग रूम से जुड़ा हुआ था, जो बॉर्बन परिवार के चित्रों और छोटी-मोटी यादगार वस्तुओं से भरा हुआ था। राजकुमारी की करीबी सहेलियाँ तब मार्गदर्शक की भूमिका निभाने के लिए आगे आतीं और रोचक किस्से सुनातीं, जिन्हें सुनने का धैर्य युवाओं में नहीं होता था। वे दिवंगत सम्राटों की कलाकृतियों को देखने की बजाय जीवित राजघराने के नजारे में अधिक रुचि रखते थे (और दरबारी महिला और दासियों द्वारा उनके सामने पेश किए जाने की संभावना भी रखते थे)। वे अपने संभावित परिचितों और मिलने वाले निमंत्रणों में इतने मशगूल थे कि बाद के वर्षों में भी उन्हें इस अमूल्य राजशाही अभिलेखागार संग्रहालय में क्या था, इसके बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी, और वे केवल अस्पष्ट रूप से याद कर सकते थे कि यह कैक्टस और विशाल ताड़ के पेड़ों से सजा हुआ था, जिसने सामाजिक भव्यता के इस केंद्र को जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन में स्थित ताड़ के पेड़ों के उद्यान जैसा रूप दिया था।

स्वाभाविक रूप से, आत्म-संयम के तौर पर, डचेस डी गुएरमांटेस कभी-कभी इन शामों में राजकुमारी से मिलने आती थीं, जो ड्यूक को समझाने-बुझाने के दौरान उन्हें हर समय अपने पास रखती थीं। लेकिन जिन शामों में डचेस भोजन करने आती थीं, राजकुमारी अपने नियमित मेहमानों को आमंत्रित न करने का ध्यान रखती थीं और मेज से उठते ही अपने दरवाजे दुनिया के लिए बंद कर लेती थीं, इस डर से कि मेहमानों की अधिक संख्या डचेस को नाराज न कर दे। ऐसी शामों में, यदि कोई भी वफादार व्यक्ति, जिसे पहले से सूचना नहीं मिली होती, शाही दरवाजे पर आता, तो उसे चौकीदार द्वारा सूचित किया जाता: "महामहिम आज शाम घर पर नहीं हैं," और वह वापस लौट जाता। लेकिन, इससे बहुत पहले ही, राजकुमारी के कई दोस्तों को पता चल जाता था कि उस दिन उन्हें उनके घर नहीं बुलाया जाएगा। ये विशेष प्रकार की पार्टियाँ होती थीं, एक ऐसा विशेषाधिकार जो उन बहुत से लोगों के लिए वर्जित था जो प्रवेश के लिए तरसते रहे होंगे। बाहर रखे गए लोग लगभग निश्चित रूप से चुने हुए लोगों की सूची बता सकते थे और आपस में चिढ़कर कहते थे: "आप तो जानते ही हैं कि ओरियान

डी गुएरमांटेस अपने पूरे दल के बिना कहीं नहीं जातीं।" इस दल की मदद से प्रिंसेस डी पार्म डचेस को उन लोगों से बचाने के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह घेरना चाहती थीं, जिन पर अच्छा प्रभाव पड़ने की संभावना कम थी। लेकिन डचेस के कुछ चहेतों, इस शानदार 'दल' के कई सदस्यों के साथ, प्रिंसेस डी पार्म को यह बात खटकती थी कि उन्हें ध्यान देने के लिए उन्हें अतिरिक्त प्रयास करने पड़ते थे, क्योंकि वे उन पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि राजकुमारी यह मानने को तैयार थीं कि डचेस डी गुएरमांटेस की संगति में उन्हें अपनी संगति से कहीं अधिक आनंद मिलता था। वह इस बात से इनकार नहीं कर सकती थीं कि डचेस के घर पर रहने के दिनों में हमेशा ही लोगों में उनके लिए आकर्षण का माहौल रहता था, या यह कि वह खुद भी अक्सर वहाँ तीन-चार शाही हस्तियों से मिलती थीं, जो उन पर अपना प्रभाव छोड़ने को ही काफी समझते थे। और भले ही वह ओरियान के विनोदी कथनों को याद करने, उसके गाउन की नकल करने, अपनी चाय पार्टियों में वही स्ट्रॉबेरी टार्ट्स परोसने की व्यर्थ कोशिश करती, ऐसे अवसर भी आते थे जब वह दोपहर भर एक दासी और किसी विदेशी दूतावास के सलाहकार के साथ अकेली रह जाती थी। और इसलिए जब भी (जैसा कि उदाहरण के लिए स्वान के मामले में पहले हुआ था) कोई ऐसा व्यक्ति होता था जो डचेस के घर एक-दो घंटे बिताए बिना एक दिन भी नहीं गुजारता था और हर दो साल में एक बार प्रिंसेस डी पार्म से मिलने जाता था, तो प्रिंसेस को ओरियान को खुश करने के लिए भी स्वान या जो भी वह होता, उसे रात के खाने पर आमंत्रित करने की कोई खास इच्छा नहीं होती थी। संक्षेप में, डचेस का अपने घर में होना राजकुमारी के लिए अंतहीन उलझन का स्रोत था, क्योंकि वह इस डर से ग्रस्त रहती थी कि ओरियान हर बात में कमी निकालेगी। लेकिन बदले में, और इसी कारण से, जब प्रिंसेस डी पार्म मैडम के साथ भोजन करने आती थीं... डी गुएरमांटेस को पहले से ही यकीन था कि सब कुछ एकदम सही और आनंददायक होगा; उन्हें बस एक ही डर था, और वो था उनकी अपनी समझ, याद रखने और संतुष्टि देने की अक्षमता, नए विचारों और लोगों को आत्मसात करने की अक्षमता। इसी कारण मेरी उपस्थिति ने उनका ध्यान आकर्षित किया और उनकी लालसा को जगाया, ठीक वैसे ही जैसे खाने की मेज को फलों की मालाओं से सजाने का कोई नया तरीका उन्हें आकर्षित करता है। उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि इन दोनों में से कौन सा आकर्षण अधिक विशिष्ट था, ओरियान की पार्टियों

की सफलता का रहस्य, और अपनी इस अनिश्चितता में उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि अगली डिनर पार्टी में वे दोनों तरीकों को आजमाएंगी। दरअसल, प्रिंसेस डी पार्म की डचेस के घर के प्रति उत्सुकता और उत्साह का पूरा औचित्य उस तत्व से था—मनोरंजक, खतरनाक, रोमांचक—जिसमें राजकुमारी चिंता, आश्चर्य और आनंद के मिश्रण के साथ गोता लगाती थीं (जैसे समुद्र तट पर उन दिनों में जब 'बड़ी लहरें' आती थीं और स्नान कराने वाले हमें उनके खतरे के बारे में चेतावनी देते थे, सिर्फ इसलिए कि उनमें से किसी को भी तैरना नहीं आता था)। वह उस माहौल से भयभीत, खुश और तरोताजा होकर निकलती थीं, और जिसे गुएरमांटे परिवार की चतुराई के रूप में जाना जाता था। गुएरमांटे परिवार की चतुराई—जो डचेस के अनुसार, वर्गाकार वृत्त की तरह ही अस्तित्वहीन थी, क्योंकि वह खुद को इसे रखने वाली एकमात्र गुएरमांटे मानती थीं—टूर्स के पोर्क पाई या रीम्स के बिस्कुट की तरह ही एक पारिवारिक प्रतिष्ठा थी। इसमें कोई संदेह नहीं (चूंकि बौद्धिक विलक्षणता को बनाए रखने के लिए बालों के रंग या त्वचा के रंग जैसे माध्यमों का प्रयोग नहीं किया जाता), डचेस के कुछ घनिष्ठ मित्र, जो उनके रक्त संबंध से संबंधित नहीं थे, फिर भी इस बुद्धि से संपन्न थे, जो दूसरी ओर कई गुएरमांटेस के दिमाग में समाहित नहीं हो पाई थी, क्योंकि वे किसी भी प्रकार की बुद्धि को आत्मसात करने के लिए बहुत अड़ियल थे। डचेस से संबंधित न होने वाले, इस गुएरमांटेस बुद्धि के धारकों में आम तौर पर यह विशेषता थी कि वे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, जो कला, कूटनीति, संसदीय वाक्पटुता या सेना जैसे किसी भी क्षेत्र में करियर के लिए उपयुक्त थे, लेकिन उन्होंने एक छोटे और घनिष्ठ समूह का जीवन पसंद किया। संभवतः इस पसंद का कारण मौलिकता, पहल, इच्छाशक्ति, स्वास्थ्य या भाग्य की कमी, या शायद अभिमान हो सकता है।

कुछ लोगों के मामले में (हालाँकि ये अपवाद थे, यह स्वीकार करना होगा) यदि गुएरमांटेस का ड्राइंग रूम उनके करियर में बाधा बना था, तो यह उनकी जानकारी के बिना हुआ था। इस प्रकार, एक डॉक्टर, एक चित्रकार और एक प्रतिभाशाली राजनयिक अपने उन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में असफल रहे, जिनके लिए वे अपने अधिकांश प्रतिस्पर्धियों की तुलना में कहीं अधिक प्रतिभाशाली थे, क्योंकि गुएरमांटेस के साथ उनकी मित्रता के कारण पहले दो को फैशनपरस्त और तीसरे को प्रतिक्रियावादी माना जाता था, जिसने तीनों को अपने

सहयोगियों की मान्यता प्राप्त करने से रोक दिया था। मध्ययुगीन गाउन और लाल टोपी, जिसे अभी भी संकायों के निर्वाचित कॉलेजों द्वारा पहना जाता है, एक संकीर्ण मानसिकता वाले अतीत, एक कठोर संप्रदायवाद से केवल एक बाहरी अवशेष से कहीं अधिक है (या कम से कम, कुछ समय पहले तक था)। सुनहरे लटकनों वाली टोपी के नीचे, यहूदियों के शंकुकार मुकुट में महायाजक की तरह, ड्रेफस मामले से पहले के वर्षों में भी 'प्रोफेसर' अभी भी कठोर पाखंडी विचारों में दृढ़ता से डूबे हुए थे। डु बोल्बोन दिल से एक कलाकार थे, लेकिन समाज की परवाह न करने के कारण वे सुरक्षित थे। कॉटार्ड हमेशा वर्दुरिन के घर पर रहते थे। लेकिन श्रीमती वर्दुरिन एक धैर्यवान महिला थीं; इसके अलावा, उनकी अशिष्टता ने उन्हें सुरक्षित रखा; अंततः, अपने घर पर वे संकाय के बाहर किसी का भी स्वागत नहीं करते थे, और उनके भोजों में कार्बोलिक की सुगंध फैली रहती थी। लेकिन शक्तिशाली निगमों में, जहाँ पूर्वाग्रहों की कठोरता सर्वोच्च ईमानदारी और नैतिकता की सर्वोच्च अवधारणाओं की कीमत होती है, जो ऐसे वातावरण में कमजोर पड़ जाती हैं जो शुरू में अधिक सहिष्णु और स्वतंत्र होता है, लेकिन बहुत जल्द ही भ्रष्ट हो जाता है, वहाँ एक प्रोफेसर, जो फर से सजे लाल साटन के गाउन में, वेनिस के ड्यूक (यानी ड्यूकल पैलेस में प्रतिष्ठित) की तरह, उतना ही गुणी और महान सिद्धांतों से गहराई से जुड़ा हुआ था, लेकिन किसी भी बाहरी तत्व के प्रति उतना ही निर्दयी था जितना कि वह दूसरा ड्यूक, उत्कृष्ट लेकिन क्रूर, जिसे हम एम. डी सेंट-साइमन के नाम से जानते हैं। यहाँ बाहरी व्यक्ति सांसारिक चिकित्सक था, जिसके तौर-तरीके और सामाजिक संबंध अलग थे। जिस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति की हम अभी बात कर रहे हैं, उसने अपनी गलती सुधारने के लिए, ताकि उसके सहकर्मी उस पर उसे नीचा न दिखाने का आरोप न लगाएं (एक फैशनेबल आदमी के अजीब विचार!), अगर वह अपनी पत्नी डचेस डी गुएरमांटेस को उनसे छुपाता, तो उसने मिश्रित रात्रिभोज पार्टियों का आयोजन करके उन्हें शांत करने की कोशिश की, जिनमें चिकित्सा तत्व को फैशनेबल माहौल में मिला दिया गया था। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि ऐसा करके उसने अपनी ही मौत का फरमान लिख दिया था, या यूं कहें कि उसे इसका पता बाद में चला, जब दस सदस्यीय परिषद को एक खाली पद भरना पड़ा, और हमेशा की तरह किसी दूसरे डॉक्टर का नाम, जो अधिक सामान्य था, शायद स्पष्ट रूप से हीन था, घातक कलश से निकला, जब प्राचीन संकाय से उनका 'वीटो'

उतना ही गंभीर, उतना ही बेतुका और उतना ही भयानक था जितना कि मोलियर की मृत्यु का फरमान सुनाने वाला 'ज्यूरो'। ऐसा ही उस चित्रकार के साथ हुआ जिसे हमेशा फैशनेबल आदमी का लेबल लगा दिया गया, जब कला में रुचि रखने वाले फैशनेबल लोग खुद को कलाकार कहलाने में सफल हो गए; ऐसा ही उस राजनयिक के साथ हुआ जिसके बहुत सारे प्रतिक्रियावादी संबंध थे।

लेकिन यह मामला सबसे दुर्लभ था। गुएरमांटेस ड्राइंग रूम में मुख्य रूप से जिस प्रकार के प्रतिष्ठित व्यक्ति आते थे, वे ऐसे लोग थे जिन्होंने स्वेच्छा से (या कम से कम वे ऐसा मानते थे) बाकी सब कुछ त्याग दिया था, वह सब कुछ जो गुएरमांटेस की बुद्धि, उनकी शिष्टता और उस अवर्णनीय आकर्षण के साथ असंगत था जो किसी भी 'कॉर्पोरेशन' के लिए अप्रिय था, चाहे वह कितना भी कम केंद्रीकृत क्यों न हो।

और जो लोग इस बात से अवगत थे कि बीते दिनों में डचेस के ड्राइंग रूम में आने वाले इन लोगों में से एक को सैलून का स्वर्ण पदक मिला था, कि दूसरे, बार काउंसिल के सचिव, ने चैंबर में शानदार शुरुआत की थी, कि तीसरे ने चार्ज डी'अफेयर्स के रूप में फ्रांस की कुशलतापूर्वक सेवा की थी, वे उन लोगों को 'असफल' मान सकते थे जिन्होंने अब बीस वर्षों से कुछ भी नहीं किया था। लेकिन ऐसे 'अच्छी तरह से सूचित' लोग कम ही थे, और संबंधित पक्ष स्वयं लोगों को याद दिलाने वाले अंतिम व्यक्ति होते, क्योंकि वे इन पुराने भेदों को अब इस गुएरमांटेस की हास्य-शैली के प्रकाश में मूल्यहीन पाते थे: क्योंकि क्या यह क्रमशः एक उबाऊ या एक दरबारी, और एक काउंटर-जम्पर के रूप में दो प्रतिष्ठित मंत्रियों की निंदा नहीं करता, एक थोड़ा गंभीर, दूसरा शब्दों के खेल का आदी, जिनकी प्रशंसा से अखबार हमेशा भरे रहते थे, लेकिन जिनकी संगति में श्रीमती... अगर मेज़बान की नासमझी से डी गुएरमांटेस को भोजन की मेज़ पर अपने बगल में बैठा दिया जाता, तो डी गुएरमांटेस जम्हाई लेने लगतीं और अधीरता के लक्षण दिखाने लगतीं। चूंकि उच्च कोटि का राजनेता होना डचेस की कृपा पाने का कोई कारण नहीं था, इसलिए उनके वे मित्र जिन्होंने राजघराने या सेवा का रास्ता पूरी तरह से त्याग दिया था, जिन्होंने कभी भी शाही दरबार में रहने की इच्छा नहीं रखी थी, जब वे प्रतिदिन अपनी प्रिय मित्र के साथ दोपहर का भोजन करने और बातचीत करने आते थे, या जब वे शाही हस्तियों के घरों में उनसे मिलते थे, जिनके बारे में वे वैसे तो बहुत कम सोचते थे

(या कम से कम वे ऐसा कहते थे), तो उन्हें लगता था कि उन्होंने बेहतर रास्ता चुना है, हालांकि उनकी उदासी भरी मुद्रा, यहां तक कि उल्लास के बीच भी, किसी न किसी तरह इस राय की सत्यता पर सवाल उठाती प्रतीत होती थी।

यह भी स्वीकार करना होगा कि गुएरमांटे परिवार के सामाजिक जीवन की परिष्कृतता और बातचीत की सूक्ष्मता में, भले ही वह थोड़ी-बहुत ही क्यों न रही हो, वास्तविकता का एक अंश भी निहित था। कोई भी आधिकारिक पदवी श्रीमती डी गुएरमांटे के कुछ चुनिंदा मित्रों की स्वीकृति के बराबर नहीं थी, जिन्हें सबसे शक्तिशाली मंत्री भी अपने घरों में आमंत्रित नहीं कर पाए थे। यदि इस बैठक कक्ष में इतनी सारी बौद्धिक महत्वाकांक्षाएँ, इतने महान प्रयास भी हमेशा के लिए दफ़न हो गए, तो भी कम से कम उनकी राख से सभ्य समाज के सबसे दुर्लभ फूल खिल उठे। निश्चित रूप से बुद्धिवान व्यक्ति, उदाहरण के लिए स्वान, स्वयं को वास्तविक योग्यता वाले व्यक्तियों से श्रेष्ठ मानते थे, जिन्हें वे तुच्छ समझते थे, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि डचेस डी गुएरमांटे के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज बुद्धि नहीं थी; उनके अनुसार, यह मानवीय बुद्धि का वह श्रेष्ठ, अधिक उत्कृष्ट रूप था जिसे प्रतिभा की शाब्दिक विविधता तक पहुँचाया गया था—हास्य। और बहुत पहले वर्दुरिन के यहाँ जब स्वान ने ब्रिचोट और एल्स्टिर की निंदा की, एक को पांडित्यपूर्ण और दूसरे को मसखरा कहा, दोनों की प्रतिभा और ज्ञान के बावजूद, तो यह गुएरमांटेस की भावना का प्रभाव ही था जिसने उन्हें ऐसा मानने पर मजबूर किया। वह कभी भी उनमें से किसी को भी डचेस के सामने पेश करने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि वह सहज रूप से जानता था कि डचेस ब्रिचोट के एकालापों और एल्स्टिर की बातों को किस भाव से सुनेगी, क्योंकि गुएरमांटेस की भावना दिखावटी और लंबे-चौड़े भाषण को, चाहे वह गंभीर हो या हास्यास्पद, दोनों ही तरह से असहनीय मूर्खता मानती थी।

सच्चे और जीवंत गुएरमांटे संगीतकारों की बात करें तो, यदि गुएरमांटे भावना ने उन्हें उस तरह से आत्मसात नहीं किया, जैसा कि उदाहरण के तौर पर उन साहित्यिक मंडलों में देखा जाता है, जहाँ हर कोई अपने शब्दों के उच्चारण, अपने विचारों को व्यक्त करने और परिणामस्वरूप सोचने का एक समान तरीका अपनाता है, तो निश्चित रूप से इसका कारण यह नहीं था कि विशुद्ध रूप से सामाजिक समूहों में मौलिकता अधिक प्रबल होती है या वहाँ अनुकरण में कोई बाधा उत्पन्न करती है। लेकिन अनुकरण केवल किसी अजेय मौलिकता के

अभाव पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि इसके लिए श्रवण शक्ति की सापेक्ष सूक्ष्मता की भी आवश्यकता होती है, जो सबसे पहले व्यक्ति को यह पहचानने में सक्षम बनाती है कि बाद में किसका अनुकरण करना है। जबकि कई गुएरमांटे संगीतकार ऐसे भी थे जिनमें यह संगीतमय बोध उतना ही पूरी तरह से अनुपस्थित था जितना कि कौरवॉइसियर संगीतकारों में।

उदाहरण के तौर पर, नकल करने को ही लें (या गुएरमांटे परिवार में इसे 'नकल करना' कहा जाता था)। मैडम डी गुएरमांटे इसमें भले ही पूरी तरह सफल हो जाती थीं, लेकिन कोर्टवॉइसियर परिवार उन्हें समझने में इतना असमर्थ था मानो वे पुरुष और महिलाओं की जगह खरगोशों का झुंड हों, क्योंकि उनमें कभी इतनी समझ ही नहीं थी कि वे उस खास दोष या उच्चारण को देख सकें जिसकी नकल करने की डचेस कोशिश कर रही थीं। जब वह ड्यूक डी लिमोज की 'नकल करती' थीं, तो कोर्टवॉइसियर विरोध करते थे: "अरे नहीं, वह तो ऐसे बोलते ही नहीं! मैं उनसे कल ही बेबेथ के यहाँ रात के खाने पर मिला था; उन्होंने मुझसे पूरी शाम बात की और वह बिल्कुल भी ऐसे नहीं बोले!" जबकि किसी भी स्तर की सुसंस्कृत गुरमांटेस ने कहा: "वाह, ओरियान कितनी मजेदार है! अजीब बात यह है कि जब वह उसकी नकल करती है तो वह बिल्कुल उसी की तरह दिखती है! मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं उसे सुन रहा हूँ। ओरियान, हमें थोड़ा और लिमोज सुनाओ!" अब ये गुरमांटेस (और जरूरी नहीं कि परिवार के वे कुछ असाधारण सदस्य जो डचेस द्वारा ड्यूक डी लिमोज की नकल करने पर प्रशंसापूर्वक कहते थे, "ओह, तुमने सचमुच उसकी नकल कर ली है," या "तुम उसकी नकल कर लेती हो") श्रीमती डी गुरमांटेस के अनुसार वास्तव में बुद्धिहीन हो सकते थे (और इस मामले में वह सही थीं); फिर भी, उसकी बातें सुनने और दोहराने के कारण वे कमोबेश उसके बोलने के तरीके, लोगों की आलोचना करने के उसके अंदाज़ की नकल करने लगे थे, जिसे स्वान, ड्यूक की तरह ही, उसकी बातों को कहने का 'तरीका' कहा करता था। इस तरह उनकी बातचीत में कुछ ऐसा प्रस्तुत होता था जो कौरवॉइसियरों को ओरियान की चतुराई से 'भयानक रूप से मिलता-जुलता' लगता था और वे सब मिलकर उसे 'गुएरमांटे परिवार की चतुराई' कहते थे। चूंकि ये गुएरमांटे परिवार के लोग उसके लिए न केवल रिश्तेदार थे बल्कि प्रशंसक भी थे, ओरियान (जो परिवार के बाकी सदस्यों से सख्ती से दूरी बनाए रखती थी और

अब अपने बचपन में उन पर किए गए अपमानों का बदला अपने तिरस्कार से ले रही थी) समय-समय पर उनसे मिलने जाती थी, आमतौर पर ड्यूक के साथ, उस मौसम में जब वह उसके साथ यात्रा पर जाती थी। ये मुलाकातें ऐतिहासिक घटनाएँ थीं। भूतल पर स्थित अपने बड़े से ड्राइंग रूम में बैठी राजकुमारी एपिने का दिल तेज़ी से धड़कने लगा, जब उसने दूर से, किसी साधारण सी आग की पहली लौ की तरह, या किसी अनपेक्षित आक्रमण की 'जांच' की तरह, आंगन को धीरे-धीरे तिरछे पार करते हुए देखा। डचेस एक मनमोहक टोपी पहने, तिरछी दिशा में धूप से बचने के लिए एक छाता पकड़े हुए थी, जिससे गर्मियों की खुशबू आ रही थी। "अरे, देखो ओरियन आ रही है!" वह 'सावधान!' कहते हुए अपने मेहमानों को एक समझदारी भरी चेतावनी देने लगी, ताकि उन्हें व्यवस्थित रूप से पीछे हटने और बिना घबराए कमरों को खाली करने का समय मिल सके। उपस्थित लोगों में से आधे लोग रुकने की हिम्मत नहीं कर पाए और तुरंत उठकर जाने लगे। "लेकिन नहीं, क्यों? फिर से बैठ जाइए, मैं आपको थोड़ी देर और रोकना चाहती हूँ," राजकुमारी ने बेपरवाह लहजे में और सहजता से (खुद को एक महान महिला दिखाने के लिए) कहा, लेकिन उसकी आवाज़ अचानक बनावटी सी लगी। "लेकिन आप लोग आपस में बात करना चाहेंगे।" "सच में, आपको इतनी जल्दी है? अच्छा, मैं आकर आपसे मिल लेती हूँ," घर की मालकिन ने उन लोगों को जाते देखकर खुशी जताई। ड्यूक और डचेस ने उन लोगों का बहुत ही विनम्रता से अभिवादन किया, जिन्हें वे वर्षों से वहाँ नियमित रूप से देखते आ रहे थे, हालाँकि इस वजह से वे उन्हें बेहतर तरीके से जान नहीं पाए थे। वहीं, उन लोगों ने भी बदले में उन्हें बस 'शुभ दिन' कहा, क्योंकि उन्हें लगा कि यह अधिक समझदारी भरा कदम होगा। उनके कमरे से निकलते ही ड्यूक ने बड़े ही सौम्य ढंग से पूछना शुरू कर दिया कि वे कौन हैं, ताकि ऐसा लगे कि उन्हें उन लोगों के गुणों में दिलचस्पी है, जिन्हें वे खुद, भाग्य की विडंबना या ओरियान की खराब मानसिक स्थिति के कारण, अपने घर में कभी नहीं देख पाए थे। "बताइए, गुलाबी टोपी वाली वह छोटी महिला कौन थी?" "अरे, मेरे प्यारे चचेरे भाई, आपने उन्हें सैकड़ों बार देखा होगा, वे विस्काउंटेस डी टूर्स हैं, जो लामारज़ेल थीं।" "लेकिन, क्या आप जानते हैं, वह काफी सुंदर है; वह चतुर भी लगती है; अगर उसके ऊपरी होंठ में थोड़ी सी खामी न होती तो वह वाकई दिलकश होती। अगर कोई विस्काउंट डी टूर्स है, तो उसका समय बुरा नहीं बीत सकता। ओरियान, क्या आप जानती हैं कि उसकी भौहें

और उसके बालों का स्टाइल मुझे किसकी याद दिलाता है? आपकी चचेरी बहन हेडविज डी लिग्ने की।" डचेस डी गुएरमांटेस, जो खुद के अलावा किसी और महिला की सुंदरता की बात सुनकर उदास हो जाती थीं, ने बातचीत वहीं रोक दी। उन्होंने अपने पति की इस कमजोरी को नजरअंदाज कर दिया था कि वह यह जताते थे कि उन्हें उन लोगों के बारे में सब कुछ पता है जो उनके घर नहीं आते, जिससे उन्हें लगता था कि वह अपनी पत्नी से ज्यादा गंभीर स्वभाव के हैं। "लेकिन," उन्होंने अचानक जोर देकर कहा, "आपने लामारज़ेल का नाम लिया। मुझे याद है, जब मैं चैंबर में था, तो मैंने एक बहुत ही शानदार भाषण सुना था..." "वह उस युवती के चाचा थे जिसे आपने अभी देखा।" "सचमुच! क्या प्रतिभा है! नहीं, मेरी प्यारी बच्ची," उन्होंने विस्काउंटेस डी'एग्रेमोंट को आश्वस्त किया, जिन्हें श्रीमती डी गुएरमांटेस बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं, लेकिन जो राजकुमारी डी'एपिने के ड्राइंग रूम से हिलने से इनकार कर रही थीं, जहाँ उन्होंने स्वेच्छा से नौकरानी की भूमिका निभाई (और घर लौटने पर अपनी नौकरानी को थप्पड़ मारने के लिए तैयार थीं), वहीं बैठी रहीं, भ्रमित, आँसुओं से भरी हुई, लेकिन जब ड्यूक दंपति कमरे में आए तो वह वहीं रुक गईं, उनके लबादे लिए, खुद को उपयोगी बनाने की कोशिश की, अगले कमरे में जाने का विनम्र प्रस्ताव दिया, "आपको हमारे लिए चाय नहीं बनानी है, हमें बस बैठकर शांति से बात करने दीजिए, हम सीधे-सादे लोग हैं, सचमुच, ईमानदारी से। इसके अलावा," उन्होंने राजकुमारी डी'एपिने की ओर मुड़ते हुए कहा (एग्रेमोंट महिला को शरमाते हुए, विनम्र, महत्वाकांक्षी और उत्साह से भरा छोड़कर), "हम आपको केवल पंद्रह मिनट दे सकते हैं।" ये पंद्रह मिनट पूरी तरह से उन मजाकिया बातों के प्रदर्शन में बीत गए जो डचेस ने पिछले सप्ताह कही थीं, और जिनका जिक्र वह खुद निश्चित रूप से नहीं करतीं यदि उनके पति ने बड़ी चतुराई से, उन घटनाओं का हवाला देते हुए उन्हें फटकार लगाने का नाटक करके, मानो उनकी इच्छा के विरुद्ध ही, उन्हें उन बातों को दोहराने के लिए मजबूर न किया होता।

राजकुमारी एपिने, जो अपनी चचेरी बहन को बहुत पसंद करती थीं और जानती थीं कि उन्हें तारीफें बहुत अच्छी लगती हैं, उनकी टोपी, धूप से बचने के चश्मे और उनकी हाजिरजवाबी की तारीफ करते-करते मानो मानो आनंद से भर उठीं। ड्यूक ने अपने चिड़चिड़े स्वर में, जिसे उन्होंने अब व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ मिला लिया था ताकि उनकी नाराजगी को गंभीरता से

न लिया जाए, कहा, "उनके कपड़ों के बारे में जितनी चाहें उतनी बातें कर लें, लेकिन भगवान के लिए उनकी हाजिरजवाबी की बात न करें, मुझे तो इतनी हाजिरजवाब पत्नी न पाकर बहुत खुशी होगी। आप शायद मेरे भाई पलामेडे के बारे में उनके द्वारा किए गए उस भयंकर मजाक का जिक्र कर रही हैं।" वह आगे बोले, यह जानते हुए कि राजकुमारी और परिवार के बाकी सदस्यों ने अभी तक वह मजाक नहीं सुना था, और अपनी पत्नी को दिखाने का मौका पाकर बहुत खुश थे। "सबसे पहले तो मुझे यह बात बिल्कुल शोभा नहीं देती कि कोई ऐसा व्यक्ति, जिसने कभी-कभी, मैं मानता हूँ, कुछ अच्छी बातें भी कही हैं, भद्दे चुटकुले सुनाए, खासकर मेरे भाई के बारे में, जो बहुत जल्दी बुरा मान जाता है, और अगर इससे उसका मुझसे झगड़ा हो जाए, तो यह तो हद से ज़्यादा अच्छा होगा।" "लेकिन हमने तो इसके बारे में एक शब्द भी नहीं सुना! ओरियान का एक चुटकुला! ज़रूर मज़ेदार होगा। अरे, हमें बताओ!" "नहीं, नहीं," ड्यूक ने अपनी बात जारी रखी, अभी भी नाराज़ था लेकिन उसके चेहरे पर थोड़ी चौड़ी मुस्कान थी, "मुझे बहुत खुशी है कि आपने इसके बारे में नहीं सुना। सच में, मैं अपने भाई को बहुत प्यार करता हूँ।" "सुनो, बेसिन," डचेस ने बीच में टोकते हुए कहा, अब उनके पति की बात को आगे बढ़ाने का समय आ गया था, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम ऐसा क्यों कह रहे हो कि इससे पलामेडे को बुरा लग सकता है, तुम अच्छी तरह जानते हो कि ऐसा कुछ नहीं होगा। वह इतना समझदार है कि एक बेवकूफी भरे मजाक से परेशान नहीं होगा जिसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। तुम उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर रहे हो कि मैंने कुछ बुरा कहा है; मैंने तो बस एक टिप्पणी की थी जो बिल्कुल भी हास्यास्पद नहीं थी, तुम ही इसे इतना महत्वपूर्ण बना रहे हो कि इस पर गुस्सा कर रहे हो। मुझे तुम्हारी बात समझ नहीं आ रही।" "तुम हमें बहुत उत्तेजित कर रहे हो, आखिर बात क्या है?" "अरे, जाहिर है कुछ गंभीर नहीं!" एम. डी गुएरमांटेस चिल्लाए। "तुमने शायद सुना होगा कि मेरे भाई ने ब्रेज़े, जो जगह उसे अपनी पत्नी से मिली थी, अपनी बहन मार्सेंटेस को देने की पेशकश की थी।" "हाँ, लेकिन हमें बताया गया कि वह इसे नहीं चाहती थी, उसे देश का वह हिस्सा पसंद नहीं था, वहाँ की जलवायु उसे रास नहीं आती थी।" "खैर, किसी ने मेरी पत्नी को ये सब बताया था और कहा था कि अगर मेरा भाई ये जगह हमारी बहन को दे रहा है तो उसे खुश करने के लिए नहीं, बल्कि चिढ़ाने के लिए। 'चार्लस कितना चिढ़ाने वाला है!' असल में उन्होंने यही कहा था। खैर, आप

जानते हैं ब्रेज़े, ये एक शाही जागीर है, मैं कहूँ तो इसकी कीमत लाखों में है, ये कभी राजसी भूमि का हिस्सा हुआ करती थी, इसमें पूरे फ्रांस के सबसे खूबसूरत जंगलों में से एक शामिल है। ऐसे बहुत से लोग होंगे जिन्हें इस तरह चिढ़ाए जाने में बहुत खुशी होगी। और इसलिए जब ओरियान ने सुना कि चार्लस को 'चिढ़ाने वाला' कहा जा रहा है क्योंकि वो इतनी शानदार संपत्ति दान कर रहा है, तो वो खुद को रोक नहीं पाई और बिना सोचे-समझे, मैं मानता हूँ, उसके मुँह से निकली बात में कोई दुर्भावना नहीं थी, क्योंकि ये बिजली की तरह कौंधी: 'चिढ़ाने वाला, चिढ़ाने वाला? तो फिर ये चिढ़ाने वाला ऑगस्टस ही होगा।'" "आप समझ गए होंगे," उसने अपनी रूठी हुई आवाज़ में कहा, पहले उसने अपनी पत्नी के व्यंग्य के प्रभाव का आकलन करने के लिए कमरे में एक सरसरी नज़र डाली—और उसे इस बात पर कुछ संदेह भी था कि मैडम ने कितना व्यंग्य किया है। डी'एपिने को प्राचीन इतिहास की अच्छी जानकारी थी, "आप समझ रहे हैं ना, यह रोमन सम्राट ऑगस्टस सीज़र का ज़िक्र है; यह बहुत ही बेवकूफी भरा है, शब्दों का घटिया खेल है, ओरियान के बिल्कुल भी लायक नहीं। और फिर, देखिए, मैं अपनी पत्नी से ज़्यादा सावधान हूँ, अगर मुझमें उसकी जैसी हाज़िरजवाबी नहीं है, तो मैं इसके परिणामों के बारे में सोचता हूँ; अगर कोई इतनी नासमझी करे कि मेरे भाई को यह बात बता दे, तो उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। और तो और," उन्होंने आगे कहा, "क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, पलामेडे बहुत ही घमंडी और नखरेबाज़ है, गपशप करने का शौकीन है, और इस तरह की बातों में लगा रहता है, इसलिए ब्रेज़े को सौंपने के सवाल को छोड़ दें तो आपको मानना पड़ेगा कि 'एग्जॉस्टस को चिढ़ाने वाला' शब्द उस पर बिल्कुल फिट बैठता है। यही बात मेरी पत्नी की टिप्पणियों को सही ठहराती है; भले ही वह कभी-कभी हद से ज़्यादा अभद्र भाषा का इस्तेमाल करती है, फिर भी वह हमेशा हाज़िरजवाब होती है और लोगों का सही-सही वर्णन करती है।"

और इस तरह, कभी 'टीज़र ऑगस्टस' की बदौलत, तो कभी किसी और वजह से, ड्यूक और डचेस की अपने रिश्तेदारों से मुलाकातों ने किस्सों का भंडार भर दिया, और इन मुलाकातों से पैदा हुई भावनाएँ उस चमकीली महिला और उसके 'निर्माता' के जाने के बाद भी लंबे समय तक बनी रहीं। उनकी मेज़बान मनोरंजन में मौजूद खास लोगों (जो कमरे में रह गए थे) के साथ ओरियान की कही हुई चतुर बातों को दोहराकर शुरुआत करतीं। "क्या आपने 'टीज़र

ऑगस्टस' नहीं सुना?" प्रिंसेस डी एपिने ने पूछा। "हाँ," मार्क्विज़ डी बावेनो ने शरमाते हुए जवाब दिया, "प्रिंसेस डी सारसीना (ला रोशेफौकॉल्ड वाली) ने इसका ज़िक्र मुझसे किया था, ठीक उन्हीं शब्दों में नहीं। लेकिन बेशक, कमरे में मेरी चचेरी बहन के सामने इसे इस तरह दोहराते हुए सुनना कहीं ज़्यादा दिलचस्प था," उन्होंने आगे कहा, मानो वह किसी ऐसे गीत के बारे में बात कर रही हों जिसे खुद संगीतकार ने गाया हो। “हम ओरियान के नवीनतम प्रदर्शन की बात कर रहे थे—वह अभी-अभी यहाँ आई थीं,” मेज़बान ने उस आगंतुक का स्वागत किया जो एक घंटा पहले न आने पर निराश हो गई। “क्या! ओरियान यहाँ आई थीं?” “हाँ, आपको थोड़ा पहले आना चाहिए था,” प्रिंसेस डी एपिने ने उन्हें बताया, फटकार लगाते हुए नहीं बल्कि यह समझाते हुए कि उनकी लापरवाही के कारण उन्होंने क्या-क्या खो दिया। अगर वह ‘सृष्टि की रचना’ या श्रीमती कार्वाल्हो के अंतिम प्रदर्शन में उपस्थित नहीं थीं, तो यह केवल उनकी ही गलती थी। “ओरियान के नवीनतम प्रदर्शन के बारे में आपका क्या विचार है? मुझे कहना होगा, मुझे ‘टीज़र ऑगस्टस’ बहुत पसंद आया,” और यह कहावत अगले दिन दोपहर के भोजन पर कुछ खास आमंत्रित मित्रों के सामने फिर से दोहराई गई, और पूरे सप्ताह विभिन्न रूपों में सामने आती रही। दरअसल, उसी सप्ताह प्रिंसेस डी पार्म से मिलने आईं प्रिंसेस ने इस अवसर का लाभ उठाकर पूछा कि क्या महारानी ने यह व्यंग्य सुना है, और इसे उन्हें दोहराया। "आह! टीज़र ऑगस्टस," प्रिंसेस डी पार्म ने कहा, उनकी आँखें सहज प्रशंसा से चौड़ी हो गईं, जिसके लिए उन्होंने एक पूरक स्पष्टीकरण की मांग की, जिसे श्रीमती डी एपिने ने देने में संकोच नहीं किया। "मुझे कहना होगा, 'टीज़र ऑगस्टस' एक 'वाक्य रचना' के रूप में मुझे बहुत पसंद आया," उन्होंने निष्कर्ष निकाला। वास्तव में, 'वाक्य रचना' शब्द इस शब्द-खेल पर बिल्कुल भी लागू नहीं होता था, लेकिन प्रिंसेस डी एपिने, जिन्होंने गुएरमांटेस की भावना को आत्मसात करने का दावा किया था, ने ओरियान से 'वाक्य रचना' और 'वाक्य रचना' शब्दों को उधार लिया था और उनका प्रयोग बिना किसी भेदभाव के किया था। प्रिंसेस डी पार्म, जो श्रीमती डी एपिने को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थीं, जिन्हें वह साधारण मानती थीं, कंजूस समझती थीं और कोर्टवॉइसियर परिवार के हवाले से मानती थीं कि वह द्वेषपूर्ण हैं, उन्होंने इस शब्द 'वाक्य रचना' को पहचान लिया, जिसे उन्होंने श्रीमती डी एपिने को प्रयोग करते हुए सुना था। डी गुएरमांटेस से प्रेरणा ली, लेकिन वह खुद नहीं जानती

थी कि इसे कब और कैसे लागू करना है। उसे लगा कि असल में 'टीज़र ऑगस्टस' का आकर्षण उसकी 'वाक्य रचना' में ही निहित है, और उस साधारण और कंजूस महिला के प्रति अपनी अरुचि को पूरी तरह से भुलाए बिना, वह गुएरमांटेस की भावना से परिपूर्ण व्यक्ति के प्रति प्रशंसा के आवेश को दबा नहीं सकी, जो इतनी प्रबल थी कि वह राजकुमारी डी एपिने को ओपेरा में आमंत्रित करने ही वाली थी। उसे केवल इस विचार ने रोका कि शायद पहले श्रीमती डी गुएरमांटेस से परामर्श करना अधिक बुद्धिमानी होगी। जहाँ तक श्रीमती की बात है... डी'एपिने, जो कौरवॉइसियर परिवार के विपरीत, ओरियान पर बहुत ध्यान देती थीं और वास्तव में उनसे स्नेह करती थीं, लेकिन उनके उच्च कोटि के मित्रों से ईर्ष्या करती थीं और डचेस द्वारा उनकी कंजूसी के कारण सबके सामने उनका मज़ाक उड़ाए जाने से थोड़ी चिढ़ती थीं, उन्होंने घर लौटने पर बताया कि प्रिंसेस डी पार्म को 'टीज़र ऑगस्टस' का अर्थ समझाने में कितना प्रयास करना पड़ा और कहा कि ओरियान कितनी घमंडी होगी जो ऐसी मूर्ख को अपने मित्रों में रखती है। "अगर मैं चाहती भी तो प्रिंसेस डी पार्म से कभी मिल नहीं पाती," उन्होंने अपने साथ भोजन कर रहे मित्रों को बताया। "श्रीमान डी'एपिने ने एक पल के लिए भी इसकी अनुमति नहीं दी होती, क्योंकि वह अनैतिक थीं," उन्होंने राजकुमारी के कुछ विशुद्ध रूप से काल्पनिक दुराचारों का जिक्र करते हुए समझाया। "लेकिन अगर मेरे पति के विचार इतने सख्त न भी होते, तो भी मैं उससे कभी दोस्ती नहीं कर पाती। मुझे नहीं पता कि ओरियान उसे हर दूसरे दिन कैसे देख पाती है। मैं साल में एक बार वहाँ जाती हूँ, और मेरे लिए तो बस इतना ही काफी होता है कि मैं अपनी मुलाकात का इंतज़ार करती रहूँ।" जहाँ तक उन कौरवॉइसियरों की बात है जो मैडम डी गुएरमांटेस के आने वाले दिन विक्टर्निएन के घर पर मौजूद थे, डचेस के आने पर वे आम तौर पर वहाँ से भाग जाते थे क्योंकि उन्हें वहाँ किए गए 'हास्यास्पद सलामों' से बहुत गुस्सा आता था। 'टीज़र ऑगस्टस' की दोपहर को केवल एक ही व्यक्ति वहाँ रुका रहा। उसे पूरी बात समझ में नहीं आई, लेकिन एक शिक्षित व्यक्ति होने के नाते उसे कुछ हद तक समझ में आ गई। और कौरवॉइसियर परिवार यह बात बार-बार दोहराता रहा कि ओरियान ने चाचा पलामेडे को 'सीज़र ऑगस्टस' कहा था, जो उनके अनुसार उनका पर्याप्त वर्णन था, लेकिन ओरियान के बारे में यह अंतहीन चर्चा क्यों? वे आगे बोले, "लोग एक रानी के बारे में इतना हंगामा क्यों मचा रहे हैं? आखिर ओरियान है क्या? मैं

यह नहीं कहता कि गुएरमांटे परिवार पुराना नहीं है, लेकिन कौरवॉइसियर परिवार भी पद, प्राचीनता और विवाह के मामले में उतना ही श्रेष्ठ है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वर्ण वस्त्र के मैदान में, जब इंग्लैंड के राजा ने फ्रांस्वा प्रथम से पूछा कि वहाँ उपस्थित सामंतों में सबसे श्रेष्ठ कौन है, तो फ्रांस के राजा ने कहा, 'महाराज, कौरवॉइसियर।'" लेकिन अगर सभी कौरवॉइसियर परिवार कमरे में रहकर उनकी बातें सुनते भी, तो भी ओरियान की बातें अनसुनी रह जातीं, क्योंकि जिन घटनाओं के आधार पर वे ये बातें कहते थे, उन्हें वे बिल्कुल अलग नजरिए से देखते। उदाहरण के लिए, यदि किसी पार्टी के बीच में, एक कौरवॉइसियर को कुर्सियों की कमी महसूस होती, या यदि वह किसी ऐसे अतिथि का अभिवादन करते समय गलत नाम का उपयोग करती जिसका चेहरा उसे याद नहीं था, या यदि उसका कोई नौकर कुछ मूर्खतापूर्ण कह देता, तो कौरवॉइसियर, अत्यंत क्रोधित, चेहरे पर लाली और उत्तेजना से कांपते हुए, ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर खेद व्यक्त करती। और जब कमरे में कोई आगंतुक होता और ओरियान के आने की उम्मीद होती, तो वह चिंतित और दबंग स्वर में पूछती: "क्या आप उसे जानते हैं?", इस डर से कि यदि आगंतुक उसे नहीं जानता तो उसकी उपस्थिति ओरियान पर बुरा प्रभाव डाल सकती है। लेकिन श्रीमती... इसके विपरीत, डी गुएरमांटेस ने ऐसी घटनाओं से ऐसी कहानियों के अवसर निकाले जिनसे गुएरमांटेस हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते थे, जिससे किसी को भी उनसे ईर्ष्या करने पर मजबूर होना पड़ता था कि उनके पास कुर्सियों की कमी हो गई थी, उन्होंने खुद कोई गलती की थी या अपने नौकर से गलती करवाई थी, या उनकी पार्टी में कोई ऐसा व्यक्ति था जिसे कोई नहीं जानता था। ठीक उसी तरह जैसे किसी को इस बात के लिए आभारी होना चाहिए कि महान लेखकों को पुरुषों द्वारा दूर रखा गया और महिलाओं द्वारा धोखा दिया गया, जबकि उनके अपमान और पीड़ाएं यदि उनकी प्रतिभा की प्रत्यक्ष प्रेरणा नहीं थीं, तो कम से कम उनकी रचनाओं का विषय तो थीं।

कूर्वोइसियर परिवार उस नवाचार की भावना के स्तर तक नहीं पहुँच सका जो डचेस डी गुएरमांटेस ने समाज में लाई थी और जिसे उन्होंने अपनी अचूक अंतर्दृष्टि से तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर कलात्मक रूप दिया था। यदि वे केवल तार्किक नियमों का पालन करते, तो परिणाम उतने ही दुर्भाग्यपूर्ण होते जितने कि प्रेम या राजनीति में सफल होने की चाह में बुस्सी डी'अम्बोइस के कारनामों को अपने दैनिक जीवन में दोहराने का

प्रयास करते। यदि कूर्वोइसियर परिवार किसी पारिवारिक भोज या किसी राजकुमार के स्वागत में भोज देता, तो उनके लिए अपने बेटे के किसी मित्र जैसे किसी प्रसिद्ध बुद्धिमान व्यक्ति को आमंत्रित करना एक ऐसी विसंगति प्रतीत होती थी जिसके गंभीर परिणाम हो सकते थे। एक कूर्वोइसियर, जिसके पिता साम्राज्य के मंत्री रह चुके थे, को राजकुमारी मैथिल्डे के स्वागत में दोपहर का भोज देना पड़ा, तो उसने एक ज्यामितीय सूत्र से यह निष्कर्ष निकाला कि वह केवल बोनापार्ट समर्थकों को ही आमंत्रित कर सकती है। जबकि वह उनमें से किसी को भी व्यावहारिक रूप से नहीं जानती थी। उनकी जान-पहचान की सभी बुद्धिमान महिलाओं और सभी मनोरंजक पुरुषों को बेरहमी से बाहर रखा गया था, क्योंकि उनके वैधवादी विचारों या संपर्कों के कारण, कौरवॉइसियर के तर्क के अनुसार, वे आसानी से महारानी को नाराज़ कर सकते थे। महारानी, जो अपने घर में फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के संभ्रांत लोगों का स्वागत करती थीं, यह देखकर काफी आश्चर्यचकित हुईं कि श्रीमती डी कौरवॉइसियर के यहाँ केवल एक कुख्यात बूढ़ा परजीवी था जिसका पति शाही प्रीफेक्ट रह चुका था, डाक निदेशक की विधवा और कुछ अन्य लोग थे जो नेपोलियन के प्रति अपनी वफादारी, मूर्खता और सुस्ती के लिए जाने जाते थे। राजकुमारी मैथिल्डे ने अपनी संप्रभु कृपा की उदार और ताजगी भरी बौछार इन दयनीय लोगों पर जरा भी नहीं रोकी, जिन्हें डचेस डी गुएरमांटेस ने राजकुमारी के मनोरंजन के समय आमंत्रित न करने का पूरा ध्यान रखा था। बोनापार्टवाद के बारे में किसी भी अमूर्त तर्क के बिना, उन्होंने उनकी जगह उन सभी सुंदरियों, प्रतिभाओं और हस्तियों को आमंत्रित किया, जो किसी सूक्ष्म छठी इंद्रिय के प्रयोग से उन्हें यह आभास कराती थीं कि सम्राट की भतीजी को वे शाही परिवार से संबंधित होने पर भी स्वीकार्य होंगी। ड्यूक डी औमाले भी उपस्थित थे, और जब उन्होंने राजकुमारी को वापस बुलाते हुए, श्रीमती डी गुएरमांटेस को, जो झुककर उनके हाथ को चूमने की कोशिश कर रही थीं, जमीन से उठाया और उनके दोनों गालों पर आलिंगन किया, तो उन्होंने अपने दिल की गहराई से डचेस को आश्वस्त किया कि उन्होंने इससे अधिक आनंदमय दोपहर कभी नहीं बिताई थी और न ही इतना आनंददायक भोज देखा था। प्रिंसेस डी पार्म सामाजिक मामलों में नवाचार करने में असमर्थता के मामले में कौरवॉइसियर परिवार से थीं, लेकिन कौरवॉइसियर परिवार के विपरीत, डचेस डी गुएरमांटेस द्वारा उन्हें लगातार आश्चर्यचकित किए जाने से उनके मन में

उनके प्रति घृणा नहीं, बल्कि प्रशंसा की भावना उत्पन्न होती थी। राजकुमारी की शिक्षा की अत्यंत पिछड़ी स्थिति ने इस आश्चर्य को और भी बढ़ा दिया था। श्रीमती डी गुएरमांटेस स्वयं अपनी अपेक्षा से कहीं कम उन्नत थीं। लेकिन उनके लिए इतना ही काफी था कि वे श्रीमती डी गुएरमांटेस से थोड़ा आगे थीं। डी पार्म उस महिला को स्तब्ध करने के लिए, और जैसा कि प्रत्येक पीढ़ी के आलोचक अपने पूर्ववर्तियों द्वारा स्वीकृत सत्यों के ठीक विपरीत बात कहने तक ही सीमित रहते हैं, उन्हें केवल इतना कहना था कि बुर्जुआ वर्ग के कट्टर शत्रु फ्लाउबर्ट स्वयं पूर्णतः बुर्जुआ थे, या वैगनर के संगीत में इतालवी संगीत का भरपूर प्रभाव था, ताकि राजकुमारी के समक्ष, हर बार एक तूफानी समुद्र में तैराक की आँखों के सामने की तरह, ऐसे क्षितिज खुल सकें जो उनके लिए अकल्पनीय प्रतीत होते थे और हमेशा के लिए अस्पष्ट बने रहते थे। यह स्तब्धता न केवल कलाकृतियों बल्कि उनके परिचित व्यक्तियों और समसामयिक घटनाओं के संबंध में बोले गए विरोधाभासों के कारण भी थी। निस्संदेह, मैडम को जो अक्षमता रोक रही थी, वह यह थी कि... डी पार्म द्वारा गुएरमांटे परिवार की सच्ची बुद्धिमत्ता को उस बुद्धिमत्ता के कुछ प्रारंभिक रूपों से अलग करने में असमर्थता (जिसके कारण वह कुछ विशेष रूप से कुछ महिला गुएरमांटे सदस्यों की उच्च बौद्धिक क्षमता में विश्वास करती थी, जिनके बारे में डचेस को मुस्कुराते हुए यह कहते हुए सुनकर वह चकित रह गई थी कि वे केवल मूर्ख थीं) उस आश्चर्य के कारणों में से एक थी जो राजकुमारी को श्रीमती डी गुएरमांटे को अन्य लोगों की आलोचना करते हुए सुनकर हमेशा महसूस होता था। लेकिन एक और कारण भी था, जिसे मैंने, जो उस समय लोगों की तुलना में किताबों को और जीवन की तुलना में साहित्य को बेहतर जानता था, अपने आप को यह सोचकर समझाया कि डचेस, इस सांसारिक जीवन को जीते हुए, जिसकी निष्क्रियता और निष्फलता एक सच्ची सामाजिक गतिविधि के लिए वही है जो कला में आलोचना सृजन के लिए है, अपने आसपास के लोगों तक दृष्टिकोण की अस्थिरता, उस तर्कवादी की बेचैन प्यास को फैलाती है जो अपने अत्यधिक शुष्क मन को शांत करने के लिए किसी भी ऐसे विरोधाभास की खोज में जाता है जो अभी भी अपेक्षाकृत नया है, और इस ताज़ा राय को बनाए रखने में कोई संकोच नहीं करेगा कि वास्तव में महान इफ़िजेनी पिकिनी की है न कि ग्लक की, और ज़रूरत पड़ने पर सच्ची फ्रेड्रे प्रैडन की है।

जब एक बुद्धिमान, शिक्षित और हाज़िरजवाब महिला का विवाह एक शर्मीले और गंवार व्यक्ति से हुआ, जिसे लोग कभी देखते तो थे पर कभी बोलते नहीं थे, तो श्रीमती डी गुएरमांटेस को एक दिन न केवल पत्नी की निंदा करने में, बल्कि पति को 'खोजने' में भी एक दुर्लभ बौद्धिक आनंद मिला। उदाहरण के लिए, कैम्ब्रेमर परिवार में, यदि वह उस समय समाज के उस वर्ग में रहतीं, तो उन्होंने यह फरमान जारी किया होता कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर मूर्ख थीं, और वास्तव में दिलचस्प व्यक्ति, जिसे गलत समझा गया, मनमोहक, एक बकबक करने वाली पत्नी द्वारा चुप करा दिया गया था, लेकिन स्वयं उससे हज़ार गुना अधिक मूल्यवान था, वह मार्किस था, और यह घोषणा करते समय डचेस को वैसी ही ताजगी महसूस होती जैसी उस आलोचक को होती है जो सत्तर वर्षों तक लोगों द्वारा हर्नानी की प्रशंसा किए जाने के बाद, ले लियोन अमोरक्स के प्रति अपनी पसंद स्वीकार करता है। और इसी मनमानी नवीनताओं की अस्वस्थ आवश्यकता से, यदि बचपन से ही हर कोई एक आदर्श पत्नी, एक सच्ची संत, पर एक बदमाश से शादी करने के लिए तरस खाता रहा होता, तो एक दिन श्रीमती... डी गुएरमांटेस का दावा था कि यह बदमाश शायद एक तुच्छ व्यक्ति था, लेकिन उसका दिल सोने का था, जिसे उसकी पत्नी की कठोरता ने सबसे असंगत काम करने पर मजबूर कर दिया था। मैं जानता था कि आलोचना न केवल सदियों के लंबे समय में विभिन्न कृतियों पर, बल्कि एक ही कृति के विभिन्न भागों पर भी अपनी भूमिका निभाती है, जो लंबे समय से प्रतिभाशाली मानी जाने वाली चीजों को फिर से छाया में धकेल देती है और जो स्थायी गुमनामी में डूबी हुई प्रतीत होती है, उसे उभरने का मौका देती है। मैंने न केवल बेलिनी, विंटरहाल्टर, जेसुइट वास्तुकारों, एक पुनर्स्थापनाकालीन कैबिनेट निर्माता को उन प्रतिभाशाली लोगों का स्थान लेते देखा था जिन्हें 'थका हुआ' कहा जाता था, केवल इसलिए कि उन्होंने बुद्धिजीवियों के आलसी दिमागों को थका दिया था, जैसे न्यूरोस्थेनिक हमेशा थकते और बदलते रहते हैं; मैंने सैंटे-ब्यूव में बारी-बारी से आलोचक और कवि को तरजीह दी जाती देखी थी, जबकि मुसेट को उनकी कविता के संदर्भ में कुछ मामूली रचनाओं को छोड़कर खारिज कर दिया गया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ निबंधकार तब गलत हो जाते हैं जब वे ले सिड या पोलियुक्टे के सबसे प्रसिद्ध दृश्यों के ऊपर ले मेंट्यूर का कोई भाषण रख देते हैं, जो एक पुराने नक्शे की तरह, उस समय के पेरिस के बारे में जानकारी प्रदान करता है, लेकिन उनकी यह पसंद, यदि सौंदर्य संबंधी

विचारों से नहीं तो कम से कम दस्तावेजी रुचि से उचित ठहराई जाती है, फिर भी हमारी बेकाबू आलोचना के लिए बहुत तर्कसंगत है। यह मोलियर की पूरी रचना को एल'एटोर्डी की एक पंक्ति से बदल देगी, और यहां तक कि जब यह वैगनर के ट्रिस्टन को उबाऊ घोषित करती है, तब भी शिकार के गुजरने के बिंदु पर 'सींगों पर एक मनमोहक स्वर' को स्वीकार कर लेगी। स्वाद की इस गिरावट ने मुझे वह समझने में मदद की जिसके बारे में श्रीमती... डी गुएरमांटेस ने तब प्रमाण दिया जब उन्होंने यह निर्णय लिया कि उनकी दुनिया का एक व्यक्ति, जिसे एक अच्छा इंसान लेकिन मूर्ख माना जाता था, अहंकार का एक राक्षस था, जितना लोग सोचते थे उससे कहीं अधिक तीक्ष्ण—कि एक अन्य व्यक्ति जो अपनी उदारता के लिए व्यापक रूप से जाना जाता था, वह लालच का साक्षात रूप हो सकता है, कि एक अच्छी माँ अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देती थी, और एक महिला जिसे आम तौर पर दुष्ट माना जाता था, वास्तव में सबसे नेक भावनाओं से प्रेरित थी। मानो समाज में जीवन की निरर्थकता से बिगड़ी हुई, श्रीमती डी गुएरमांटेस की बुद्धि और दूरदृष्टि... डी गुएरमांटेस का स्वभाव इतना अस्थिर था कि मोह के तुरंत बाद घृणा उत्पन्न हो जाती थी (जिससे वह उस तरह की चतुराई से फिर से आकर्षित होने के लिए तैयार रहती थी जिसे उसने पहले चाहा और फिर त्याग दिया था)। किसी दयालु पुरुष में जो आकर्षण उसने महसूस किया था, वह तब भी नहीं बदलता था जब वह उससे बार-बार मिलने आता था, उससे बहुत अधिक अपेक्षा रखता था, जिसे वह उसे देने में असमर्थ थी। यह आकर्षण एक झुंझलाहट में बदल जाता था जिसे वह अपने प्रशंसक के कारण समझती थी, लेकिन वास्तव में यह इस तथ्य के कारण था कि जब कोई केवल आनंद की तलाश करता है तो आनंद प्राप्त करना पूरी तरह असंभव है। डचेस के निर्णय में होने वाले बदलावों से कोई नहीं बख्शा जाता था, सिवाय उसके पति के। केवल वही उससे कभी प्यार नहीं करता था; उसमें उसने हमेशा एक कठोर चरित्र देखा था, जो उसकी सनक से बेपरवाह, उसकी सुंदरता का तिरस्कार करने वाला, हिंसक, कभी न झुकने वाली इच्छाशक्ति वाला था, जिस तरह के स्वभाव में केवल घबराए हुए लोग ही शांति पा सकते हैं। दूसरी ओर, एम. डी गुएरमांटेस एक ही प्रकार की स्त्री सौंदर्य की तलाश में थे, लेकिन वे इसे अपनी रखैलियों में खोजते रहते थे जिन्हें वे लगातार बदलते रहते थे। उनके जाने के बाद, उनका उपहास करने के लिए, उनके पास केवल एक ही स्थायी और समान साथी होती थी, जो अक्सर अपनी

बकबक से उन्हें चिढ़ाती थी, लेकिन वे जानते थे कि हर कोई उसे कुलीन वर्ग की सबसे सुंदर, सबसे गुणी, सबसे चतुर और सबसे पढ़ी-लिखी सदस्य मानता था। एम. डी गुएरमांटेस खुद को भाग्यशाली मानते थे कि उन्हें ऐसी पत्नी मिली, जो उनकी सभी अनियमितताओं को छुपाती थी, दुनिया में किसी और से बेहतर मेहमाननवाज़ी करती थी और उनके ड्राइंग रूम को फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में सबसे बेहतरीन स्थान दिलाती थी। वे स्वयं भी इस आम राय से सहमत थे; अक्सर उनके प्रति चिड़चिड़े होने के बावजूद, उन्हें उस पर गर्व था। यदि वह जितना कंजूस था उतना ही नखरेबाज़ भी, तो वह दान-पुण्य या नौकरों के लिए मामूली रकम भी देने से इनकार कर देता था, फिर भी वह उस पर सबसे आलीशान कपड़े पहनने और पेरिस के सबसे बेहतरीन घोड़ों पर सवार होने पर ज़ोर देता था। जब भी श्रीमती डी गुएरमांटेस अपने किसी मित्र के गुणों और दोषों के संदर्भ में, जिन्हें वह अचानक उलट देती थीं, कोई नया और दिलचस्प विरोधाभास गढ़तीं, तो वह उसे उन लोगों के सामने आज़माने के लिए उत्सुक रहतीं जो उसका आनंद ले सकें, ताकि उसकी मनोवैज्ञानिक मौलिकता को उजागर किया जा सके और उसकी तीक्ष्णता को चमकाया जा सके। निस्संदेह, ये नए विचार आम तौर पर पुराने विचारों से ज़्यादा सत्य नहीं होते थे, बल्कि अक्सर कम ही होते थे; लेकिन उनमें निहित यही मनमाना और अनिश्चित नवीनता का तत्व उन्हें कुछ बौद्धिक बना देता था जिससे उनका संचार रोमांचक हो जाता था। जिस मरीज़ पर डचेस अपनी मनोवैज्ञानिक कुशलता का प्रयोग कर रही थीं, वह आम तौर पर उनका घनिष्ठ मित्र होता था, और जिन लोगों को वह अपनी खोज के बारे में बताना चाहती थीं, वे इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ थे कि वह अभी भी उनकी कृपा के शिखर पर नहीं था; इस प्रकार, श्रीमती डी गुएरमांटेस की एक अतुलनीय मित्र, भावुक, कोमल और समर्पित होने की प्रतिष्ठा ने उनके लिए स्वयं हमला करना कठिन बना दिया; वह अधिक से अधिक बाद में हस्तक्षेप कर सकती थीं, मानो विवश होकर, शांत करने के लिए एक प्रतिक्रिया देकर, दिखावटी तौर पर खंडन करते हुए, लेकिन वास्तव में उस साथी का समर्थन करते हुए जिसने उन्हें उकसाने का बीड़ा उठाया था; यही वह हिस्सा था जिसमें एम. डी गुएरमांटेस निपुण थीं।

सामाजिक गतिविधियों की बात करें तो, श्रीमती डी गुएरमांटेस को इनमें अप्रत्याशित निर्णय व्यक्त करने में एक और प्रकार का आनंद मिलता था, जो मनमाना और भव्य दोनों था। ये

निर्णय राजकुमारी डी पार्म को निरंतर और अत्यंत आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित करते थे। लेकिन डचेस के इस आनंद को समझने के लिए मैंने साहित्यिक आलोचना की बजाय राजनीतिक जीवन और संसदीय बहसों की रिपोर्टों का अध्ययन करने का प्रयास किया। श्रीमती डी गुएरमांटेस द्वारा अपने परिवेश के लोगों के बीच मूल्यों के पैमाने को लगातार उलट-पुलट करने वाले उनके क्रमिक और विरोधाभासी फरमान अब उन्हें विचलित करने के लिए पर्याप्त नहीं थे। इसलिए, उन्होंने अपने सामाजिक व्यवहार को व्यवस्थित करने के तरीके में भी, जिसमें उन्होंने फैशन से संबंधित अपने सबसे तुच्छ निर्णयों को भी दर्ज किया, उन कृत्रिम भावनाओं का स्वाद चखने और उन आकस्मिक दायित्वों को पूरा करने का प्रयास किया जो संसद की धारणाओं को उत्तेजित करते हैं और राजनेताओं के दिमाग पर कब्जा कर लेते हैं। हम जानते हैं कि जब कोई मंत्री सदन को यह समझाता है कि वह अपने आचरण के उस मार्ग का अनुसरण करने में सही था जो वास्तव में एक सामान्य व्यक्ति को, जो अगली सुबह अखबार में बैठक की रिपोर्ट पढ़ता है, बिल्कुल सीधा-सादा प्रतीत होता है, तब भी वह पाठक अचानक विचलित हो जाता है और यह संदेह करने लगता है कि क्या मंत्री के आचरण को मंजूरी देना उसका सही निर्णय था, जब वह देखता है कि मंत्री का भाषण एक जीवंत आंदोलन के साथ सुना गया और उसमें निंदात्मक अभिव्यक्तियों की भरमार थी, जैसे कि: "यह बेहद गंभीर है!" एक ऐसे उप-प्रतिनिधि द्वारा कहा गया जिसका नाम और उपाधियाँ इतनी लंबी हैं, और रिपोर्ट में इसके बाद की हरकतें इतनी ज़ोरदार थीं कि पूरे व्यवधान में "यह बेहद गंभीर है!" शब्द एक अलेक्जेंड्राइन में अर्धवाक्य से भी कम जगह घेरते हैं। उदाहरण के लिए, उन दिनों में जब एम. डी गुएरमांटेस, प्रिंस डेस लाउम्स, सदन में बैठे थे, पेरिस के समाचार पत्रों में कभी-कभार यह पढ़ा जाता था, हालांकि यह मुख्य रूप से मेसेग्लिस डिवीजन के लिए होता था, ताकि वहां के मतदाताओं को यह दिखाया जा सके कि उन्होंने अपना वोट किसी निष्क्रिय या आवाजहीन अनिवार्य प्रतिनिधि को नहीं दिया था।

(श्रीमान डी गुएरमांटेस-बॉयलॉन, प्रिंस डेस लाउम्स: "यह गंभीर है!" मध्य और कुछ दक्षिणपंथी बेंचों से "वाह वाह!" की आवाज़ें आईं, अति वामपंथी से ज़ोरदार उद्गार सुनाई दिए।)

सामान्य बुद्धि वाला पाठक अब भी विद्वान मंत्री में थोड़ी सी आस्था रखता है, लेकिन वक्ता के उत्तर देने के लिए खड़े होने के पहले ही शब्दों से उसका हृदय एक नए सिरे से धड़कने लगता है:

"मुझे जो आश्चर्य हुआ, बल्कि यह कहना गलत नहीं होगा कि मैं स्तब्ध रह गया" (सदन के दाहिनी ओर तीव्र संवेदना) "वह उस व्यक्ति के शब्दों को सुनकर हुआ जो, मेरा अनुमान है, अभी भी सरकार का सदस्य है" (तालियों की गड़गड़ाहट)... इसके बाद डाक और तार मंत्रालय के कई अवर सचिव अपने प्रतिनिधियों के बिना मंत्री पीठ के चारों ओर जमा हो गए। फिर अपनी सीट से उठकर उन्होंने सहमति में सिर हिलाया।

तालियों की यह गड़गड़ाहट एक समझदार पाठक के मन में बची हुई आखिरी बची हुई प्रतिरोध की भावना को भी क्षीण कर देती है; वह इसे सदन का अपमान, वास्तव में एक घिनौनी प्रक्रिया मानता है, जो अपने आप में महत्वहीन है; यह कोई सामान्य कार्रवाई हो सकती है जैसे कि अमीरों से गरीबों की तुलना में अधिक कर वसूलना, किसी अन्याय को उजागर करना, युद्ध की जगह शांति को प्राथमिकता देना; वह इसे निंदनीय पाएगा और इसमें उन सिद्धांतों का उल्लंघन देखेगा जिन पर उसने वास्तव में कभी विचार नहीं किया था, जो मानव हृदय में अंकित नहीं हैं, लेकिन जो इसके द्वारा उत्पन्न होने वाली जयजयकार और एकत्रित होने वाले बहुमत के कारण उसे अत्यधिक प्रभावित करते हैं।

साथ ही यह भी समझना आवश्यक है कि राजनीतिज्ञ की वह सूक्ष्मता, जिसने मुझे गुएरमांटेस समूह और बाद में समाज के अन्य समूहों को समझने में मदद की, वास्तव में 'छिपी हुई बातों को समझना' के रूप में वर्णित व्याख्या की एक विशेष बारीकी का विकृत रूप मात्र है। यदि प्रतिनिधि सभाओं में इस गुण के विकृत रूप के कारण बेतुकापन होता है, तो इसी गुण के अभाव में आम जनता में भी उतनी ही मूर्खता होती है, जो हर बात को 'शाब्दिक' रूप से लेती है, जो किसी उच्च पदाधिकारी को 'उसके स्वयं के अनुरोध पर' पद से हटाए जाने पर बर्खास्तगी का संदेह नहीं करती और कहती है: "उसे बर्खास्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसने स्वयं सेवानिवृत्ति की छुट्टी मांगी थी"—यह एक हार है जब रूसी एक रणनीतिक चाल द्वारा पहले से तैयार की गई मजबूत स्थिति पर पीछे हट जाते हैं, एक इनकार है जब एक प्रांत ने जर्मन सम्राट से अपनी स्वतंत्रता की मांग की, तो सम्राट ने उसे धार्मिक स्वायत्तता प्रदान कर

दी। इसके अलावा, (चैंबर की इन बैठकों पर लौटते हुए) यह भी संभव है कि जब बैठकें शुरू होती हैं तो प्रतिनिधि स्वयं उस समझदार व्यक्ति की तरह होते हैं जो प्रकाशित रिपोर्ट को पढ़ेगा। यह जानकर कि हड़ताल पर बैठे कुछ श्रमिकों ने एक मंत्री से बातचीत करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे हैं, वे आपस में मासूमियत से पूछ सकते हैं: "देखो, वे क्या बात कर रहे होंगे; उम्मीद है कि सब कुछ सुलझ गया होगा," ठीक उसी समय जब मंत्री स्वयं गंभीर मौन में मंच पर आते हैं, जिस पर पहले से ही बनावटी भावनाएं हावी हो चुकी होती हैं। मंत्री के पहले शब्द: "मुझे सदन को यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं है कि सरकार के कर्तव्य के प्रति मेरी भावना इतनी प्रबल है कि मैंने ऐसे प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात नहीं की, जिसका संज्ञान मुझे सौंपी गई प्राधिकारियों द्वारा नहीं लिया जा सकता था," एक नाटकीय प्रभाव पैदा करते हैं, क्योंकि यही एक ऐसी संभावना थी जिसकी सांसदों की सामान्य बुद्धि ने कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन ठीक इसी नाटकीय प्रभाव के कारण उनका इतनी तालियों से स्वागत किया जाता है कि कई मिनट बीत जाने के बाद ही मंत्री अपनी बात कह पाते हैं, वही मंत्री जो अपनी कुर्सी पर लौटने पर अपने सहयोगियों की बधाई प्राप्त करेंगे। हम उस दिन की तरह ही बेहद आहत हैं जब उसी मंत्री ने विपक्ष का समर्थन कर रहे नगर परिषद के अध्यक्ष को एक बड़े आधिकारिक स्वागत समारोह में आमंत्रित करने में विफल रहे थे, और हम घोषणा करते हैं कि इस अवसर पर भी उन्होंने अन्य अवसरों की तरह ही सच्ची राजनेता की भूमिका निभाई है।

अपने जीवन के इस दौर में, एम. डी गुएरमांटेस अक्सर उन सांसदों की भीड़ में शामिल होते थे जो मंत्री को बधाई देने आते थे, जिससे कोर्टवॉइसियर परिवार को काफी आपत्ति होती थी। मैंने बाद में सुना है कि जब वे सदन में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे और मंत्री पद या दूतावास से जुड़े होने की चर्चा में थे, तब भी जब कोई मित्र उनसे कोई मदद मांगने आता था, तो वे ड्यूक डी गुएरमांटेस को छोड़कर बाकी सभी महत्वपूर्ण राजनेताओं की तुलना में कहीं अधिक सरल और सरल व्यवहार करते थे। क्योंकि अगर वे कहते थे कि कुलीनता से कोई फर्क नहीं पड़ता, कि वे अपने साथी सांसदों को बराबर मानते हैं, तो वे इस बात पर एक पल के लिए भी विश्वास नहीं करते थे। वे राजनीतिक महत्व को महत्व देने का दिखावा करते थे, लेकिन वास्तव में उसे तुच्छ समझते थे, और चूंकि वे अपनी नजरों में एम. डी गुएरमांटेस ही

बने रहे, इसलिए उच्च पद का वह बोझ उन पर नहीं पड़ा जो अन्य राजनेताओं को पहुंच से बाहर कर देता है। और इस तरह उनके स्वाभिमान ने न केवल उनके दिखावटी सौहार्दपूर्ण व्यवहार को, बल्कि उनकी वास्तविक सादगी को भी हर हमले से सुरक्षित रखा।

राजनीतिज्ञों द्वारा लिए जाने वाले उन बनावटी और भावुक फैसलों की बात करें तो, श्रीमती डी गुएरमांटेस, गुएरमांटे परिवार, कौरवॉइसियर परिवार, फाउबर्ग परिवार और सबसे बढ़कर प्रिंसेस डी पार्म के लिए कम परेशान करने वाली नहीं थीं। उनकी आदत थी कि वे ऐसे अस्पष्ट फरमान जारी करती थीं जिनके पीछे छिपे सिद्धांत महसूस किए जा सकते थे, और जितना कम उनसे उम्मीद की जाती थी, उतना ही वे और भी प्रभावशाली लगते थे। अगर नए ग्रीक मंत्री का कोई फैंसी ड्रेस बॉल होता, तो हर कोई एक पोशाक चुनता और दूसरों से पूछता कि डचेस क्या पहनेंगी। किसी ने सोचा कि वह डचेस डी बरगंडी के रूप में आएंगी, किसी ने दुजाबार की राजकुमारी का रूप संभावित बताया, और किसी ने साइकी का। अंत में, एक कौरवॉइसियर ने उनसे पूछा: "ओरियान, आप क्या पहनने वाली हैं?" तो उन्होंने एक ऐसा जवाब दिया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी: "अरे, कुछ भी नहीं!" जिससे हर तरफ चर्चा छिड़ गई, क्योंकि इससे ओरियान की राय का पता चल गया कि नए ग्रीक मंत्री की वास्तविक सामाजिक स्थिति क्या है और उनके प्रति उचित रवैया क्या होना चाहिए, यानी वह राय जो पहले से ही अपेक्षित थी, कि एक डचेस से इस नए मंत्री द्वारा आयोजित फैंसी ड्रेस बॉल में शामिल होने की उम्मीद नहीं थी: "मुझे नहीं लगता कि ग्रीक मंत्री के घर जाने की कोई आवश्यकता है; मैं उन्हें नहीं जानती; मैं ग्रीक नहीं हूँ; मुझे इन लोगों के घर क्यों जाना चाहिए, मेरा इनसे कोई लेना-देना नहीं है?" डचेस ने कहा। "लेकिन वहाँ तो सब लोग होंगे, लोग कहते हैं कि यह बहुत ही शानदार होने वाला है!" श्रीमती डी गैलार्डन चिल्लाईं। "फिर भी, कभी-कभी अपने घर की आग के पास बैठना भी उतना ही सुखद होता है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उत्तर दिया। कूर्वोइसियर इस बात को पचा नहीं पाए, लेकिन गुएरमांटेस ने, बिना उसकी नकल किए, अपनी चचेरी बहन के रवैये का समर्थन किया। "स्वाभाविक रूप से, हर कोई ओरियन की तरह सभी परंपराओं को तोड़ने की स्थिति में नहीं होता। लेकिन अगर आप इसे एक दृष्टिकोण से देखें तो आप यह नहीं कह सकते कि इन सभी विदेशियों के चरणों में गिरकर खुद को न जाने कहाँ से प्रकट करने की हमारी इच्छा में वह वास्तव में गलत थीं।" स्वाभाविक

रूप से, यह जानते हुए कि किसी भी रवैये से किस तरह की टिप्पणियाँ होंगी, श्रीमती डी गुएरमांटेस को उस पार्टी में जाने में उतना ही आनंद आता था, जिसमें उनकी मेज़बान ने उनके आने की उम्मीद नहीं की थी, जितना कि घर पर रहने या उस रात अपने पति के साथ नाटक देखने में, जिस पार्टी में 'हर कोई जा रहा था', या फिर, जब लोग यह कल्पना करते थे कि वह किसी ऐतिहासिक मुकुट से सबसे कीमती हीरों को भी फीका कर देंगी, तो वह बिना किसी गहने के और उस पोशाक से अलग शैली में कमरे में प्रवेश करती थीं, जिसे गलत तरीके से उस अवसर के लिए आवश्यक माना गया था। हालांकि वह ड्रेफस की विरोधी थीं (ड्रेफस की निर्दोषता में अपना विश्वास बरकरार रखते हुए, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अपना जीवन सामाजिक जगत में केवल अमूर्त विचारों में विश्वास करते हुए बिताया), उन्होंने प्रिंसेस डी लिग्ने के यहाँ एक पार्टी में जबरदस्त सनसनी पैदा कर दी थी। सबसे पहले तो जनरल मर्सियर के कमरे में प्रवेश करने पर सभी महिलाओं के खड़े होने के बाद भी वह बैठी रहीं, और फिर जब एक राष्ट्रवादी वक्ता ने सभा को संबोधित करना शुरू किया तो वह उठकर ऊँची आवाज़ में अपनी गाड़ी माँगने लगीं, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह समाज को राजनीति की चर्चा के लिए उपयुक्त नहीं मानती थीं। गुड फ्राइडे के एक संगीत कार्यक्रम में सभी का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो गया, जिसमें वोल्टेयर की अनुयायी होने के बावजूद वह नहीं रुकीं क्योंकि उन्हें मंच पर ईसा मसीह का ज़िक्र करना अनुचित लगा। हम जानते हैं कि समाज की महानतम अभिनेत्रियों के लिए भी साल का वह समय कितना महत्वपूर्ण होता है जब मनोरंजन का दौर शुरू होता है: इतना अधिक कि मार्किज़ डी'अमोनकोर्ट, जो हमेशा कुछ न कुछ कहने की ज़िद और नासमझी के कारण खुद को मूर्ख साबित कर देती थीं, ने अपने पिता एम. डी मोंटमोरेंसी की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने आए किसी व्यक्ति को जवाब दिया था: "और भी दुखद बात यह है कि यह ऐसे समय में हुआ है जब आईना पूरी तरह से कार्डों से भरा हुआ है!" खैर, सामाजिक वर्ष के इस महत्वपूर्ण समय में, जब लोगों ने डचेस डी गुएरमांटेस को रात्रिभोज के लिए आमंत्रित किया, यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास करते हुए कि वह पहले से ही किसी कार्यक्रम में व्यस्त न हों, तो उन्होंने मना कर दिया, उस एक कारण से जिसके बारे में समाज में किसी ने कभी सोचा भी नहीं होगा; वह नॉर्वे के बेहद दिलचस्प समुद्री तटों पर एक क्रूज यात्रा शुरू कर रही थीं। समाज के लोग स्तब्ध रह गए, और

डचेस के उदाहरण का अनुसरण करने का कोई विचार किए बिना भी, उनके इस कार्य से उन्हें वही राहत मिली जो कांट को पढ़ने पर मिलती है, जब नियतिवाद के सबसे कठोर प्रमाण के बाद यह पता चलता है कि आवश्यकता के संसार के ऊपर स्वतंत्रता का संसार है। हर वह आविष्कार जिसके बारे में पहले किसी ने सोचा भी नहीं होता, उन लोगों की भी रुचि जगाता है जिन्हें उससे कोई लाभ नहीं मिलता। भाप से चलने वाले जलमार्गों का आविष्कार उस निष्क्रिय समय में, जिसे 'सीज़न' कहा जाता है, उनके उपयोग की तुलना में एक छोटी सी बात थी। यह विचार कि कोई भी स्वेच्छा से सौ रात्रिभोज या दोपहर के भोजन, उससे दोगुनी दोपहर की चाय, उससे तीन गुनी शाम की पार्टियाँ, ओपेरा में सबसे शानदार सोमवार और फ़्रांसे में मंगलवार को छोड़कर नॉर्वेजियन फ़्योर्ड्स घूमने जा सकता है, कौरवॉइस के निवासियों को 'बीस हज़ार लीग समुद्र के नीचे' की कहानी से ज़्यादा समझ से परे नहीं लगा, लेकिन फिर भी उन्हें स्वतंत्रता और आकर्षण का वैसा ही अनुभव हुआ। इसलिए शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब कोई न कोई यह न पूछता हो, न केवल: "क्या तुमने ओरियान का नवीनतम चुटकुला सुना है?" बल्कि "क्या तुम्हें ओरियान का नवीनतम चुटकुला पता है?" और 'ओरियान का नवीनतम चुटकुला' और 'ओरियान का नवीनतम चुटकुला' दोनों पर यही टिप्पणी होती: "ओरियान की यही खासियत है!" "क्या यह बिल्कुल ओरियान जैसा नहीं है?" उदाहरण के लिए, ओरियान की नवीनतम घटना यह हो सकती है कि एक देशभक्तिपूर्ण संस्था की ओर से मैकोन के बिशप कार्डिनल X— (जिनके बारे में एम. डी गुएरमांटेस हमेशा 'मोंसियर डी मैस्कॉन' कहकर संबोधित करते थे, यह सोचकर कि यह 'पुरानी फ्रांसीसी भाषा' है) को पत्र लिखते समय, जब हर कोई यह कल्पना करने की कोशिश कर रहा था कि पत्र किस रूप में होगा, और शुरुआती शब्दों को लेकर कोई कठिनाई नहीं थी, चुनाव 'एमिनेंस' या 'मोनसिग्नर' के बीच था, लेकिन बाकी के शब्दों को लेकर असमंजस में था, तो ओरियान के पत्र ने, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, 'मोंसियर ले कार्डिनल' से शुरुआत की, जो एक पुराने अकादमिक रूप का अनुसरण करता था, या: 'माई कजिन', यह शब्द चर्च के राजकुमारों, गुएरमांटेस और ताजपोशी के बादशाहों के बीच प्रचलित था, जो ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि वह उन सभी को 'अपनी उचित और पवित्र शरण में' ले लें। ओरियान की 'नवीनतम रचना' के विषय पर चर्चा शुरू करने के लिए इतना ही काफी था कि एक ऐसे प्रदर्शन में, जिसमें पूरा

पेरिस मौजूद था और एक बेहद मनमोहक नाटक प्रस्तुत किया जा रहा था, जब लोगों ने प्रिंसेस डी पार्म, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस और उन्हें आमंत्रित करने वाली अनगिनत अन्य महिलाओं के बॉक्स में श्रीमती डी गुएरमांटेस को ढूंढा, तो उन्होंने उन्हें अकेले, काले वस्त्र पहने, सिर पर एक छोटी सी टोपी लगाए, उस स्टॉल में बैठे हुए पाया, जहाँ वे पर्दा उठने से पहले ही पहुँच गई थीं। "जब कोई नाटक सुनने लायक हो, तो बेहतर सुनाई देता है," उन्होंने समझाया, जिससे कोर्टवॉइसियर परिवार चौंक गया और गुएरमांटेस और प्रिंसेस डी पार्म, जो अचानक यह जानकर हैरान रह गईं कि नाटक की शुरुआत सुनने का 'फैशन' अधिक आधुनिक है, और यह किसी बड़े रात्रिभोज के बाद अंतिम दृश्य के लिए आने और पहले कहीं और 'जाने' की तुलना में कहीं अधिक मौलिकता और बुद्धिमत्ता का प्रमाण है (जो ओरियान से आने पर उन्हें आश्चर्यचकित नहीं करना चाहिए)। राजकुमारी डी पार्म को पता था कि अगर वह श्रीमती डी गुएरमांटेस से कोई साहित्यिक या सामाजिक प्रश्न पूछती हैं, तो उन्हें कई तरह के आश्चर्यों के लिए तैयार रहना चाहिए। इसका एक परिणाम यह था कि ओरियान के यहाँ होने वाले इन रात्रिभोजों के दौरान, उनकी राजसी गरिमा कभी भी किसी भी विषय पर उस असहज और मंत्रमुग्ध कर देने वाली सावधानी के साथ ही बात करती थीं, जैसे कोई स्नान करने वाला दो लहरों के बीच से निकलता है।

फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के लिए फैशन तय करने वाले तीन-चार अन्य लगभग समान ड्राइंग-रूमों में अनुपस्थित तत्वों में से, जो डचेस डी गुएरमांटेस के ड्राइंग-रूम को उनसे अलग करते थे, ठीक वैसे ही जैसे लाइबनिज़ मानते हैं कि प्रत्येक एकात्मक इकाई, संपूर्ण ब्रह्मांड को प्रतिबिंबित करते हुए, उसमें अपना कुछ अंश जोड़ती है, उनमें से एक सबसे कम आकर्षक ड्राइंग-रूम नियमित रूप से एक या दो बेहद खूबसूरत महिलाओं से सुसज्जित होता था, जिनका वहां होने का एकमात्र कारण उनकी सुंदरता और एम. डी गुएरमांटेस द्वारा उनका उपयोग था, और जिनकी उपस्थिति, अन्य ड्राइंग-रूमों में कुछ अन्यथा अस्पष्ट चित्रों की तरह, तुरंत यह प्रकट करती थी कि इस घर में पति नारी सौंदर्य का एक उत्साही प्रशंसक था। वे सभी कमोबेश एक जैसी थीं, क्योंकि ड्यूक को बड़ी महिलाओं का शौक था, जो एक साथ प्रतिमा जैसी और लचीले अंगों वाली हों, जो मिलो की वीनस और समोथ्रेसियन विजय के बीच की श्रेणी की हों; अक्सर गोरी, कभी-कभार सांवली, कभी-कभी भूरे बालों वाली, जैसे कि हाल

ही में इस रात्रिभोज में उपस्थित विस्काउंटेस डी'अर्पाजोन, जिनसे वह इतना प्यार करते थे कि लंबे समय तक उन्होंने उन्हें प्रतिदिन दस टेलीग्राम भेजने के लिए बाध्य किया था (जिससे डचेस थोड़ी नाराज़ हो जाती थीं), जब वह गुएरमांटेस में थे तो कबूतर के माध्यम से उनसे पत्र व्यवहार करते थे, और जिनसे वह लंबे समय तक खुद को अलग करने में इतने असमर्थ थे कि एक सर्दी जो उन्हें परमा में बितानी पड़ी, वह उनसे मिलने के लिए नियमित रूप से हर हफ्ते पेरिस वापस यात्रा करते थे, ट्रेन में दो दिन बिताते थे।

आम तौर पर ये खूबसूरत 'सुंदरियाँ' उसकी रखैलें हुआ करती थीं, लेकिन अब नहीं थीं (जैसा कि श्रीमती डी'अर्पाजोन के मामले में था) या होने ही वाली थीं। संभवतः, डचेस का उनकी नज़र में जो महत्व था और उसके घर आमंत्रित होने की आशा, हालाँकि वे स्वयं पूरी तरह से कुलीन थीं, लेकिन फिर भी प्रथम श्रेणी की नहीं थीं, ने उन्हें ड्यूक की सुंदरता और उदारता से भी अधिक, उसकी इच्छाओं के आगे झुकने के लिए प्रेरित किया था। ऐसा नहीं था कि डचेस ने उनके अपने घर में प्रवेश करने में कोई अपूरणीय बाधा डाली हो: वह जानती थी कि उनमें से एक से अधिक में उसे एक सहयोगी मिल गया था, जिसकी बदौलत उसे वे हज़ार चीज़ें मिली थीं जो वह चाहती थी, लेकिन जिन्हें एम. डी गुएरमांटेस ने अपनी पत्नी को तब तक निर्दयतापूर्वक मना कर दिया था जब तक कि वह किसी और से प्रेम नहीं कर रहा था। और इसलिए, डचेस द्वारा उन्हें तब तक आमंत्रित न किए जाने का कारण, जब तक ड्यूक के साथ उनकी घनिष्ठता काफी बढ़ चुकी थी, मुख्यतः यह था कि जब भी उन्होंने प्रेम के गहरे सागर में कदम रखा था, उन्होंने केवल एक संक्षिप्त प्रेम प्रसंग की ही कल्पना की थी, जिसके बदले में वे अपनी पत्नी का निमंत्रण ही पर्याप्त समझते थे। फिर भी, उन्होंने खुद को इससे कहीं कम के बदले, वास्तव में एक पहले चुंबन के लिए, यह पेशकश करते हुए पाया, क्योंकि एक ऐसा प्रतिरोध सामने आ गया था जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, या फिर कोई प्रतिरोध हुआ ही नहीं था। प्रेम में अक्सर ऐसा होता है कि कृतज्ञता, सुख देने की इच्छा, हमें दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा और स्वार्थ की सीमा से परे उदार बना देती है। लेकिन फिर इस प्रस्ताव को साकार करने में परस्पर विरोधी परिस्थितियाँ बाधा बन गईं। पहली बात तो यह थी कि एम. डी गुएरमांटेस के प्रेम का जवाब देने वाली सभी महिलाओं को, और कभी-कभी तो तब भी जब उन्होंने स्वयं को उनके हवाले नहीं किया था, उन्होंने एक-एक करके दुनिया से

अलग कर दिया था। उन्होंने उन्हें किसी से भी मिलने नहीं दिया, लगभग सारा समय उनके साथ बिताया, उनके बच्चों की शिक्षा का ध्यान रखा, जिन्हें बाद में कुछ मौखिक समानताओं के आधार पर, कभी-कभी एक छोटा भाई या बहन भेंट करने का अवसर मिला। और इसलिए, यदि संबंध की शुरुआत में, श्रीमती डी गुएरमांटेस से परिचय की संभावना, जो ड्यूक के मन में कभी नहीं आई थी, उनकी प्रेमिका के विचारों में काफी हद तक समा गई थी, तो उनके संबंध ने स्वयं ही महिला के दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल दिया था; ड्यूक अब उनके लिए केवल पेरिस की सबसे बुद्धिमान महिला के पति नहीं थे, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति थे जिनसे उनकी नई प्रेमिका को प्रेम हो गया था, एक ऐसा व्यक्ति जिसने उन्हें अधिक विलासितापूर्ण जीवन शैली के साधन और झुकाव प्रदान किए थे और उनके मन में सामाजिक और भौतिक लाभ के प्रश्नों के सापेक्ष महत्व को बदल दिया था; जबकि कभी-कभी श्रीमती डी गुएरमांटेस के प्रति एक मिश्रित ईर्ष्या, जिसमें ये सभी कारक शामिल थे, ड्यूक की प्रेमिकाओं को प्रेरित करती थी। लेकिन यह मामला सबसे दुर्लभ था; इसके अलावा, जब परिचय का निर्धारित दिन अंततः आ गया (उस समय तक ड्यूक की इस मामले में लगभग सारी रुचि समाप्त हो चुकी थी, उनके कार्य, बाकी सभी की तरह, आमतौर पर पिछली कार्रवाइयों से निर्देशित होते थे जिनका मूल उद्देश्य पहले ही समाप्त हो चुका था), तो अक्सर ऐसा होता था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस ही उस महिला से परिचय प्राप्त करना चाहती थीं, जिसमें उन्हें अपने कठोर पति के विरुद्ध एक मूल्यवान सहयोगी मिलने की आशा थी और जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता थी। इसका यह अर्थ नहीं है कि, अपने घर में कुछ दुर्लभ क्षणों को छोड़कर, जहाँ डचेस के अधिक बोलने पर वह कुछ शब्द बोल देते थे या, इससे भी अधिक भयावह, ऐसी चुप्पी साध लेते थे जिससे वह अवाक रह जाती थीं, श्री डी गुएरमांटेस ने अपनी पत्नी के साथ अपने बाहरी संबंधों में उन औपचारिकताओं का पालन नहीं किया जिन्हें शिष्टाचार कहा जाता है। जो लोग इन्हें नहीं जानते वे आसानी से गलत समझ सकते हैं। कभी-कभी डौविल में घुड़दौड़, जलमार्गों पर सैर और शिकार के लिए गुएरमांटेस लौटने के बीच, पेरिस में बिताए जाने वाले कुछ हफ्तों में, चूंकि डचेस को कैफे-कॉन्सर्ट बहुत पसंद थे, ड्यूक उनके साथ शाम बिताने के लिए इनमें से किसी एक में चले जाते थे। दर्शकों ने तुरंत देखा कि उन छोटे खुले बॉक्सों में से एक में, जिसमें मुश्किल से दो लोगों के बैठने की जगह होती है, यह हरक्यूलिस अपने 'सिगरेट' (क्योंकि फ्रांस

में हम हर उस चीज़ को, जो कमोबेश ब्रिटिश है, वह नाम देते हैं जो इंग्लैंड में नहीं है) के साथ, एक आंख में मोनोकल लगाए, अपने गोल-मटोल लेकिन सुडौल हाथ में, जिसकी अनामिका उंगली पर एक नीलम चमक रहा था, एक मोटी सिगार पकड़े हुए, जिससे वह बीच-बीच में धुआं खींचते थे, उनकी निगाहें ज्यादातर मंच पर टिकी रहती थीं, लेकिन जब उनकी नजरें दर्शकों पर पड़ती थीं, जिनमें से कोई भी उन्हें नहीं जानता था, तो वे उन्हें कोमलता, संयम, शिष्टाचार और विचारशीलता के भाव से नरम कर देते थे। जब कोई कविता ड्यूक को मनोरंजक और कुछ हद तक अभद्र न लगे, तो वह मुस्कुराते हुए अपनी पत्नी की ओर मुड़ जाते, और अपनी सौम्य समझदारी भरी मुस्कान से उन्हें उस नए गीत से उत्पन्न निर्दोष आनंद में शामिल होने देते। और दर्शक शायद यह मान लें कि दुनिया में इससे बेहतर पति कोई नहीं हो सकता, और डचेस से अधिक ईर्ष्या करने योग्य कोई नहीं हो सकता—वह स्त्री जिसके बाहर ड्यूक के जीवन की हर रुचि थी, वह स्त्री जिससे उन्हें प्रेम नहीं था, जिसके प्रति वह लगातार बेवफा रहे थे; जब डचेस थक जातीं, तो वे देखते कि एम. डी गुएरमांटेस उठते, अपने हाथों से उनका लबादा पहनाते, उनके हारों को इस तरह व्यवस्थित करते कि वे अस्तर में न फंसें, और उनके लिए सड़क तक जाने का रास्ता बड़ी सावधानी और सम्मानपूर्वक साफ करते, जिसे डचेस एक अनुभवी स्त्री की शीतलता से स्वीकार करतीं, जो ऐसे व्यवहार को केवल औपचारिक शिष्टाचार समझती है, कभी-कभी उस निराश जीवनसाथी की थोड़ी व्यंग्यात्मक कड़वाहट के साथ भी, जिसके पास तोड़ने के लिए कोई भ्रम नहीं बचा होता। लेकिन इन बाहरी दिखावों के बावजूद (उस शिष्टता का एक और तत्व जिसने कर्तव्य को हमारे अस्तित्व की गहराई से सतह पर ला दिया है, एक ऐसे दौर में जो अब बीत चुका है लेकिन इसके बचे हुए लोगों के लिए अभी भी जारी है) डचेस का जीवन किसी भी तरह से आसान नहीं था। एम. डी गुएरमांटेस कभी उदार या मानवीय नहीं बनीं, सिवाय एक नई रखैल के, जो आम तौर पर डचेस का पक्ष लेती थी; डचेस को लगा कि अब उनके लिए अपने से निचले लोगों के प्रति उदारता, गरीबों को दान देना, और बाद में खुद के लिए एक नई और शानदार मोटर-कार खरीदना भी संभव हो गया है। लेकिन मैडम डी गुएरमांटेस में उन लोगों के प्रति जो उन्हें बहुत आज्ञाकारी लगते थे, जो चिढ़ जल्दी ही पैदा हो जाती थी, उससे ड्यूक

की रखैलें भी अछूती नहीं रहीं। जल्द ही डचेस उनसे ऊब गईं। साथ ही, इसी समय, ड्यूक और मैडम डी अर्पाजोन के बीच घनिष्ठता समाप्त होने लगी। एक और रखैल का उदय हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि एम. डी गुएरमांटेस का उन सभी के प्रति जो प्रेम था, वह एक दिन फिर से प्रकट होने लगेगा; सबसे पहले, मरते समय इस प्रेम ने उन्हें सुंदर संगमरमर की मूर्तियों की तरह विरासत में दिया—ड्यूक के लिए सुंदर संगमरमर की मूर्तियाँ, जो आंशिक रूप से एक कलाकार बन गईं, क्योंकि उन्होंने उनसे प्रेम किया था और अब उन रेखाओं के प्रति संवेदनशील हो गए थे जिन्हें वे प्रेम के बिना सराह नहीं पाते—जिसने डचेस के ड्राइंग रूम में उनके उन रूपों को एक साथ ला दिया जो लंबे समय से शत्रुतापूर्ण थे, ईर्ष्या और झगड़ों से ग्रस्त थे, और अंततः मित्रता की शांति में सामंजस्य स्थापित कर लिया; इसके अलावा, यह मित्रता स्वयं उस प्रेम का परिणाम थी जिसने एम. डी गुएरमांटेस को अपनी प्रेमिकाओं में उन गुणों को देखने के लिए प्रेरित किया जो प्रत्येक मनुष्य में मौजूद होते हैं लेकिन केवल इंद्रियजन्य दृष्टि से ही देखे जा सकते हैं, यहाँ तक कि पूर्व प्रेमिका, जो 'सबसे अच्छी साथी' बन गई है और एक के लिए दुनिया में कुछ भी कर सकती है, एक ऐसे मान्यता प्राप्त प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की जाती है जैसे कि वह डॉक्टर या पिता जो वास्तव में डॉक्टर या पिता नहीं बल्कि एक मित्र है। लेकिन बदलाव के दौर में, जिस महिला को एम. डी गुएरमांटेस छोड़ने की तैयारी कर रही थीं, वह अपनी किस्मत पर विलाप करने लगी, तमाशा करने लगी, अपनी मांगें मनवाने लगी, अविवेकी व्यवहार करने लगी और एक उपद्रव बन गई। ड्यूक को उससे नफरत होने लगी। तब श्रीमती डी गुएरमांटेस को उस व्यक्ति की वास्तविक या काल्पनिक कमियों को उजागर करने का मौका मिला, जिसने उन्हें परेशान किया था। एक दयालु महिला के रूप में जानी जाने वाली श्रीमती डी गुएरमांटेस ने परित्यक्त मालकिन के फोन संदेशों, गोपनीय बातों और आंसुओं को सुना और कोई शिकायत नहीं की। उन्होंने उन पर हँसा, पहले अपने पति के साथ, फिर कुछ चुनिंदा दोस्तों के साथ। और यह सोचकर कि उस बेचारी के प्रति दिखाई गई दया ने उन्हें उसका मज़ाक उड़ाने का अधिकार दे दिया है, यहाँ तक कि उसके सामने भी, चाहे वह महिला कुछ भी कहे, बशर्ते कि इसे उस चरित्र की बेतुकी विशेषताओं में शामिल किया जा सके जिसे उस नीच और डचेस ने हाल ही

में उनके लिए गढ़ा था, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने... डी गुएरमांटेस ने अपने पति के साथ व्यंग्यात्मक मिलीभगत भरी नजरों का आदान-प्रदान करने में जरा भी संकोच नहीं किया।
इसी बीच, जब प्रिंसेस डी पार्म मेज पर बैठीं, तो उन्हें याद आया कि उन्होंने एक अन्य राजकुमारी को ओपेरा में आमंत्रित करने के बारे में सोचा था, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि इससे श्रीमती डी गुएरमांटेस को किसी भी तरह से ठेस न पहुंचे, वे उनसे बात करने की तैयारी कर रही थीं। ठीक उसी समय एम. डी ग्रूची ने प्रवेश किया, जिनका गाउन, रेल पटरी पर किसी रुकावट के कारण, एक घंटे से रुका हुआ था। उन्होंने हर संभव बहाना बनाया। अगर उनकी पत्नी एक कूर्वोइसियर होतीं, तो शर्म से मर जातीं। लेकिन श्रीमती डी ग्रूची यूं ही गुएरमांटेस नहीं थीं। जब उनके पति देर से आने के लिए माफी मांग रहे थे:
"मैं समझ गई," उसने बीच में टोकते हुए कहा, "कि छोटी-छोटी चीजों में भी देर से पहुंचना आपके परिवार की परंपरा है।"
"बैठ जाओ, चिड़चिड़े, और उन्हें तुम्हारा मजाक उड़ाने मत दो," ड्यूक ने कहा।
मुझे उम्मीद है कि मैं समय के साथ चलता हूँ, फिर भी मुझे यह स्वीकार करना होगा कि वाटरलू की लड़ाई के अपने फायदे थे, क्योंकि इसने बॉर्बोन वंश की पुनर्स्थापना की, और उससे भी बेहतर, एक ऐसे तरीके से जिसने उन्हें अलोकप्रिय बना दिया। लेकिन तुम तो बिलकुल मूर्ख लगते हो!
"खैर, दरअसल, मुझे काफी अच्छा शिकार मिला है। मैं कल डचेस को तीतरों के छह जोड़े भेजने की अनुमति ले रहा हूँ।"
श्रीमती डी गुएरमांटेस की आँखों में एक विचार कौंध गया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि श्री डी ग्राउची को तीतर भेजने की परेशानी नहीं उठानी चाहिए। और उन्होंने उस मंगेतर नौकर को इशारा किया जिससे मैंने एल्स्टिर कमरे से लौटते समय कुछ शब्द कहे थे:
"पौलेन," उसने उससे कहा, "तुम कल जाओगे और एम. ले कॉम्टे के तीतर ले आओगे और उन्हें सीधे वापस ले आओगे—तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं होगी ना, चिड़चिड़े, अगर मैं तुम्हारे लिए कुछ छोटे-मोटे उपहार बना दूं। बेसिन और मैं अकेले पूरे एक दर्जन तीतर नहीं खा सकते।"
"लेकिन परसों—कल—काफी जल्दी होगा," एम. डी ग्रूची ने कहा।

"नहीं, कल मुझे ज्यादा बेहतर लगेगा," डचेस ने जोर देकर कहा।
पौलिन का चेहरा पीला पड़ गया था; अपनी प्रेमिका से मिलने का उनका वादा अब टूट जाएगा। डचेस के लिए यह काफी था, जो हर किसी में मानवीय रुचि दिखाने का दिखावा करती थीं। उन्होंने पौलिन से कहा, "मुझे पता है कि आज आपकी छुट्टी है, आपको बस जॉर्जेस के साथ कपड़े बदलने हैं; वह कल छुट्टी ले सकते हैं और परसों यहीं रह सकते हैं।"
लेकिन अगले दिन, पौलेन की प्रेमिका खाली नहीं होगी। उस दिन छुट्टी का उनके लिए कोई महत्व नहीं था। जैसे ही वह कमरे से बाहर निकले, सभी ने डचेस की अपने नौकरों के प्रति रुचि की प्रशंसा की। "लेकिन मैं उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती हूँ जैसा मैं चाहती हूँ कि लोग मेरे साथ करें।" "बिल्कुल सही। वे कह सकते हैं कि उन्हें आपके साथ एक अच्छी जगह मिल गई है।" "ओह, ऐसा कुछ खास नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि वे सभी मुझे पसंद करते हैं। वह एक थोड़ा परेशान करने वाला है क्योंकि वह प्यार में है। वह हमेशा उदास चेहरा बनाकर घूमता रहता है।"
इसी समय पौलेन फिर प्रकट हुए। "आप बिलकुल सही कह रहे हैं," एम. डी ग्रौची ने कहा, "वह मुस्कुराता हुआ नहीं लग रहा है। उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना पड़ता है, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा नहीं।" "मैं मानती हूँ कि मैं कोई बहुत बुरी मालकिन नहीं हूँ। उसे दिन भर कुछ नहीं करना होगा सिवाय तुम्हारे तीतरों को बुलाने के, घर में बैठे-बैठे कुछ न करने और अपना हिस्सा खाने के।" "ऐसे बहुत से लोग हैं जो उसकी जगह होना चाहेंगे," एम. डी ग्रौची ने कहा, क्योंकि ईर्ष्या इंसान को अंधा बना देती है।
"ओरियान," प्रिंसेस डी पार्म ने कहना शुरू किया, "पिछले दिनों आपकी चचेरी बहन ह्यूडिकोर्ट मुझसे मिलने आई थीं; बेशक वह बहुत बुद्धिमान महिला हैं—वह गुएरमांटेस हैं, इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन लोग कहते हैं कि उनकी ज़बान बहुत तीखी है।" ड्यूक ने अपनी पत्नी को जानबूझकर अचंभित नज़रों से देखा। श्रीमती डी गुएरमांटेस मुस्कुराने लगीं। धीरे-धीरे राजकुमारी को उनके हाव-भाव समझ में आ गए। "लेकिन...क्या आपका मतलब यह है कि आप मुझसे सहमत नहीं हैं?" वह बढ़ती बेचैनी के साथ हकलाते हुए बोलीं। "सच में महोदया, यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है कि आप बेसिन के चेहरों पर ध्यान नहीं देतीं। बेसिन, आप हमारी चचेरी बहनों के बारे में बुरी बातें न कहें।" "क्या वह उन्हें

बहुत दुष्ट समझते हैं?" राजकुमारी ने तेज़ी से पूछा। "अरे नहीं!" डचेस ने जवाब दिया। "मुझे नहीं पता किसने आपकी महारानी को बताया कि वह द्वेषपूर्ण है। इसके विपरीत, वह एक उत्कृष्ट प्राणी है जिसने कभी किसी के बारे में कोई बुराई नहीं कही, न ही किसी को कोई नुकसान पहुँचाया।" "आह!" श्रीमती डी पार्म ने बड़ी राहत के साथ आह भरी। "मुझे कहना होगा कि मैंने खुद कभी कुछ ऐसा नहीं देखा। लेकिन मैं जानती हूँ कि जब कोई इतना बुद्धिमान होता है तो थोड़ा द्वेषपूर्ण होना अक्सर मुश्किल होता है..." "आह! अब यह एक ऐसा गुण है जो उसमें और भी कम है।" "बुद्धि की कमी?" स्तब्ध राजकुमारी ने पूछा। "अरे, ओरियान," ड्यूक ने दबी आवाज़ में बीच में टोकते हुए, अपने दाएं और बाएं ओर मज़ाकिया नज़रें डालते हुए कहा, "तुमने राजकुमारी को यह कहते सुना कि वह एक श्रेष्ठ महिला है।" "लेकिन क्या वह नहीं है?" "कम से कम छाती के माप में तो श्रेष्ठ है।" "उसकी बात मत सुनो, महोदया, वह ईमानदार नहीं है; वह बिल्कुल मूर्ख है," श्रीमती डी पार्म की आवाज़ तेज़ और कर्कश थी। डी गुएरमांटेस, जो ड्यूक से भी कहीं ज़्यादा 'पुरानी फ्रांसीसी' थीं, अक्सर जानबूझकर अपने पति की लेस-नेकक्लॉथ वाली, नाजुक शैली के विपरीत, लेकिन वास्तव में कहीं अधिक सूक्ष्म, एक तरह के लगभग देहाती उच्चारण के साथ, जिसमें मिट्टी का एक कठोर और मनमोहक स्वाद था, वैसी ही फ्रांसीसी बनने की कोशिश करती थीं। "लेकिन वह दुनिया की सबसे अच्छी महिला हैं। इसके अलावा, मुझे सच में नहीं लगता कि जब कोई चीज़ इस हद तक पहुँच जाती है तो उसे मूर्खता कहा जा सकता है। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी किसी ऐसी महिला से मिला हूँ; वह एक विशेषज्ञ का मामला है, उनमें कुछ विकृत है, वह एक तरह की 'मासूम' या 'मंदबुद्धि' या 'अवरुद्ध विकास' वाली हैं, जैसे कि आप मेलोड्रामा या 'ल'अर्लेसिएन' में देखते हैं। जब वह मुझसे मिलने आती हैं, तो मैं हमेशा खुद से पूछता हूँ कि क्या वह क्षण तो नहीं आ गया जब उनकी बुद्धि का विस्फोट होने वाला है, जो मुझे हमेशा थोड़ा घबरा देता है।" राजकुमारी इन बातों से मंत्रमुग्ध हो गईं, लेकिन पिछले फैसले से अचंभित रह गईं। उन्होंने कहा, "उन्होंने और श्रीमती डी'एपिने ने मुझसे वही दोहराया जो आपने 'टीज़र ऑगस्टस' के बारे में कहा था। यह बहुत ही मजेदार है।"

एम. डी गुएरमांटेस ने मुझे मज़ाक समझाया। मैं उन्हें बताना चाहता था कि उनका भाई, जो मुझे न जानने का नाटक कर रहा था, उसी शाम ग्यारह बजे मेरा इंतज़ार कर रहा था। लेकिन

मैंने रॉबर्ट से नहीं पूछा था कि क्या मैं इस मुलाकात का ज़िक्र कर सकता हूँ, और चूंकि एम. डी चार्लस ने लगभग खुद मुझसे मुलाकात तय की थी, जो डचेस को बताई गई उनकी बात के बिल्कुल उलट थी, इसलिए मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, "'टीज़र ऑगस्टस' बुरा नहीं था, लेकिन मैडम डी हेउडिकोर्ट ने शायद आपको इससे बेहतर बात नहीं बताई होगी जो ओरियान ने उन्हें दोपहर के भोजन के निमंत्रण के जवाब में कही थी।" "जी हाँ, बिल्कुल! बताइए!" "अब बेसिन, तुम चुप रहो; पहली बात तो यह है कि यह एक बेवकूफी भरी टिप्पणी थी, और इससे राजकुमारी मुझे अपनी मूर्ख चचेरी बहन से भी नीचा समझेगी। हालाँकि मुझे नहीं पता कि मैं उसे अपनी चचेरी बहन क्यों कहूँ। वह बेसिन की चचेरी बहनों में से एक है। फिर भी, मुझे लगता है कि वह किसी न किसी तरह से मुझसे संबंधित है।" "ओह!" प्रिंसेस डी पार्मे यह सोचकर चौंक उठीं कि वह मैडम डी गुएरमांटेस को मूर्ख समझ सकती हैं, और असहाय होकर विरोध करते हुए कहा कि कोई भी बात डचेस को उनके सम्मान के उच्च स्थान से नीचे नहीं ला सकती। "इसके अलावा, हमने पहले ही उनकी बुद्धिमत्ता को कम कर दिया है; क्योंकि मैंने उनसे जो कहा है, उससे उनके कुछ अन्य अच्छे गुणों को भी नकारा जा रहा है, इसलिए मुझे इसे दोहराना उचित नहीं लगता।" "'उन्हें नकारना!' 'अनुचित!' वह कितनी अच्छी तरह से अपनी बात कहती हैं!" ड्यूक ने डचेस की प्रशंसा पाने के लिए व्यंग्य का दिखावा करते हुए कहा। "तो फिर, बेसिन, आपको अपनी पत्नी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।" "मुझे आपकी महामहिम को समझाना चाहिए," ड्यूक ने आगे कहा, "कि ओरियान की चचेरी बहन श्रेष्ठ, अच्छी, हष्ट-पुष्ट, जो भी आप कहना चाहें, हो सकती हैं, लेकिन वह बिल्कुल भी - मैं क्या कहूँ - खर्चीली नहीं हैं।" "नहीं, मुझे पता है, वह बहुत कंजूस हैं," राजकुमारी ने बीच में ही कहा। "मुझे यह शब्द इस्तेमाल करने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए थी, लेकिन आपने बिल्कुल सही शब्द चुना है। आप इसे उनके घर के कामकाज में, और खासकर खाना पकाने में देख सकते हैं, जो बेहतरीन तो है, लेकिन बहुत ही सीमित मात्रा में।" "जिससे कुछ मज़ेदार दृश्य बनते हैं," एम. डी ब्रेउटे ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा। "उदाहरण के लिए, मेरे प्यारे बेसिन, मैं एक दिन ह्यूडिकोर्ट में था, जब आपका, ओरियान और आपका इंतज़ार हो रहा था। उन्होंने बहुत ही शानदार तैयारियाँ की थीं, लेकिन दोपहर में एक नौकर एक टेलीग्राम लेकर आया जिसमें लिखा था कि आप नहीं आ रहे हैं।"

"इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ!" डचेस ने कहा, जो न केवल आसानी से उपलब्ध नहीं थीं, बल्कि लोगों को यह बात पता होना भी पसंद करती थीं। "आपके चचेरे भाई ने टेलीग्राम पढ़ा, बहुत दुखी हुए, फिर तुरंत, अपना आपा खोए बिना, खुद से कहा कि मुझ जैसे मामूली आदमी के लिए बेवजह खर्च करने का कोई मतलब नहीं है, और नौकर को वापस बुला लिया। 'रसोइए से कहिए कि चिकन न पकाए!'" वह उसके पीछे चिल्लाई। और उस शाम मैंने उसे बटलर से पूछते सुना: 'तो? कल का बचा हुआ गोमांस कहाँ है? क्या तुम हमें वह नहीं दोगे?' "फिर भी, यह मानना पड़ेगा कि वहाँ का माहौल बहुत ही बढ़िया होता है," ड्यूक ने कहा, जिन्हें लगा कि इस भाषा का प्रयोग करके वे पुराने विचारों वाले व्यक्ति हैं। "मुझे ऐसा कोई घर नहीं पता जहाँ इससे बेहतर खाना मिलता हो।" "या इससे कम," डचेस ने कहा। "यह काफी पौष्टिक है और मेरे जैसे गंवार के लिए काफी है," ड्यूक ने आगे कहा, "इससे भूख भी बनी रहती है।" "ओह, अगर इसे इलाज के तौर पर लिया जाए, तो यह निश्चित रूप से विलासिता से कहीं अधिक स्वास्थ्यवर्धक है। ऐसा नहीं है कि यह उतना अच्छा है," मैडम डी गुएरमांटेस ने कहा, जो इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं थीं कि 'पेरिस में सबसे अच्छी मेज' का खिताब उनके घर के अलावा किसी और को दिया जाए। "मेरी चचेरी बहन के साथ भी ठीक वैसा ही है जैसा उन कंजूस लेखकों के साथ होता है जो हर पंद्रह साल में एक-एक्ट का नाटक या एक सॉनेट लिखते हैं। ऐसी चीज़ें जिन्हें लोग छोटी-मोटी कृति कहते हैं, छोटी-छोटी चीज़ें जो अनमोल रत्न होती हैं, असल में वही चीज़ जिससे मुझे दुनिया में सबसे ज़्यादा नफ़रत है। ज़ेनाइड के यहाँ खाना बुरा नहीं है, लेकिन अगर वह इतनी कंजूस न होती तो खाना और भी साधारण लगता। उसका रसोइया कुछ चीज़ें बहुत अच्छी बनाता है, और कुछ बिगाड़ देता है। मैंने वहाँ भी कई बार बहुत ही खराब खाना खाया है, जैसा कि ज़्यादातर घरों में होता है, बस वहाँ मुझे उतना नुकसान नहीं हुआ क्योंकि पेट मात्रा के प्रति ज़्यादा संवेदनशील होता है, गुणवत्ता के प्रति नहीं।" “खैर, कहानी को आगे बढ़ाते हुए,” ड्यूक ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, “ज़ेनाइड ने ज़िद की कि ओरियान को वहाँ दोपहर के भोजन पर जाना चाहिए, और चूंकि मेरी पत्नी को कहीं बाहर जाना ज़्यादा पसंद नहीं है, इसलिए उसने मना कर दिया। वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि एक साधारण भोजन के बहाने उसे किसी भव्य भोज में न फँसाया जाए, और उसने यह पता लगाने की व्यर्थ कोशिश की कि उस पार्टी में और कौन-

कौन शामिल होने वाला है। ‘तुम्हें ज़रूर आना चाहिए,’ ज़ेनाइड ने खाने की सभी स्वादिष्ट चीज़ों का बखान करते हुए ज़ोर देकर कहा। ‘तुम्हें शाहबलूत की प्यूरी मिलेगी, मुझे इससे ज़्यादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, और वहाँ सात छोटी-छोटी शाही मिठाइयाँ होंगी।’ ‘सात छोटी-छोटी मिठाइयाँ!’ ओरियान चिल्लाई, ‘इसका मतलब है कि हम कम से कम आठ लोग होंगे!’” कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया, और फिर राजकुमारी को बात समझ में आ गई और वह बिजली की गड़गड़ाहट की तरह ज़ोर से हँस पड़ी। "आह! 'तो हम आठ हो जाएँगे,' - कितना सुंदर है। कितना बढ़िया कहा है!" उसने बड़ी मुश्किल से मैडम डी'एपिने के कहे उस भाव को दोहराया, जो इस बार ज़्यादा सटीक था। "ओरियान, राजकुमारी ने बड़ी प्यारी बात कही, उन्होंने कहा कि तुम्हारी बात बहुत अच्छी थी।" "लेकिन, मेरी प्यारी, तुम मुझे कुछ नया नहीं बता रही हो। मैं जानती हूँ कि राजकुमारी कितनी चतुर हैं," मैडम डी'गुएरमांटेस ने जवाब दिया, जो एक शाही व्यक्ति द्वारा कही गई बात को तुरंत समझ गई, और वह भी अपनी चतुराई की तारीफ़ में। "मुझे बहुत गर्व है कि महोदया ने मेरे विनम्र शब्दों की सराहना की। हालाँकि, मुझे याद नहीं कि मैंने कभी ऐसा कुछ कहा हो, और अगर कहा भी हो तो अपनी चचेरी बहन की चापलूसी करने के लिए ही कहा होगा, क्योंकि अगर उन्होंने सात 'मुँह भर' मंगवाए होते, तो मुँह, अगर मैं कहूँ तो, पूरे एक दर्जन होते, शायद इससे भी ज़्यादा।" "उनके पास एम. डी बोर्नियर की सभी पांडुलिपियाँ हुआ करती थीं," राजकुमारी ने श्रीमती डी हेउडिकोर्ट के बारे में बात करते हुए कहा, और उस महिला के साथ अपने संबंधों के उत्कृष्ट कारणों का पूरा फायदा उठाने के लिए उत्सुक थीं। "उन्होंने शायद सपना देखा होगा, मुझे नहीं लगता कि वह उन्हें कभी जानती भी थीं," डचेस ने कहा। "उनके बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि वह एक ही समय में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोगों के साथ पत्राचार करते थे," विस्काउंटेस डी अर्पाजोन ने कहा, जो यूरोप के प्रमुख ड्यूकल और यहां तक कि शासक परिवारों से संबद्ध थीं, और हमेशा इस तथ्य को लोगों को याद दिलाने में प्रसन्न होती थीं। "निश्चित रूप से, ओरियान," एम. डी गुएरमांटेस ने गुप्त इरादे से कहा, "आप उस रात्रिभोज को नहीं भूल सकतीं जहाँ एम. डी बोर्नियर आपके बगल में बैठे थे!" "लेकिन, बेसिन," डचेस ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, "अगर आपका मतलब यह बताना है कि मैं एम. डी बोर्नियर को जानती थी, तो हाँ, बिल्कुल जानती थी। वह कई बार मुझसे मिलने भी आए थे, लेकिन मैं

उन्हें कभी घर पर आमंत्रित नहीं कर पाई क्योंकि मुझे हमेशा बाद में घर को फॉर्मोल से कीटाणुरहित करवाना पड़ता। जहाँ तक उस रात्रिभोज की बात है जिसका आप ज़िक्र कर रहे हैं, मुझे वह अच्छी तरह याद है, लेकिन वह निश्चित रूप से ज़ेनाइड के घर पर नहीं था, जिसने अपने जीवन में कभी बोर्नियर को देखा भी नहीं था, और अगर आप उससे फिली डी रोलैंड के बारे में बात करते, तो शायद वह सोचती कि आपका मतलब बोनापार्ट की किसी राजकुमारी से है, जिसके बारे में कहा जाता था कि एक समय उसकी सगाई ग्रीस के राजा के बेटे से हुई थी; नहीं, वह ऑस्ट्रियाई दूतावास में था। प्यारे होयोस ने सोचा कि वह मुझे एक बड़ा तोहफा दे रहा है, उस चिड़चिड़े शिक्षाविद को मेरी कुर्सी के बगल में बिठाकर। मुझे लगा जैसे मेरे बगल में घुड़सवार पुलिस की एक टुकड़ी बैठी हो। मुझे पूरे रात्रिभोज के दौरान अपनी नाक को जितना हो सके बंद रखना पड़ा; जब तक ग्रुयेर चीज़ नहीं आई, तब तक मैंने साँस लेने की हिम्मत नहीं की।" एम. डी गुएरमांटेस, जिनका गुप्त उद्देश्य पूरा हो चुका था, ने डचेस की विनोदपूर्ण बातों का असर जानने के लिए अपने मेहमानों के चेहरों का चुपके से निरीक्षण किया। "आप पत्राचार की बात कर रहे थे; मुझे कहना होगा, मुझे गैम्बेटा बहुत ही प्रशंसनीय लगीं," उन्होंने आगे कहा, यह दिखाने के लिए कि उन्हें एक सर्वहारा और क्रांतिकारी व्यक्ति में रुचि लेने से कोई डर नहीं था। एम. डी ब्रेउटे, जिन्होंने इस साहसिक कार्य की चमक को पूरी तरह से सराहा, एक चमकती और स्नेही नज़र से चारों ओर देखा, जिसके बाद उन्होंने अपना एक आँख का चश्मा पोंछा।

“हे भगवान, वो फिली डे रोलैंड तो हद से ज़्यादा उबाऊ है,” एम. डे गुएरमांटेस ने उस संतुष्टि के साथ कहा जो उन्हें उस रचना से अपनी श्रेष्ठता का एहसास होने से मिली थी जिसने उन्हें इतना ऊबाया था, शायद उस सुखद एहसास से भी जो किसी अच्छे भोजन के बीच में आता है, जब कोई अतीत की उस भयानक शाम को याद करता है। “फिर भी, उसमें कुछ बहुत अच्छी पंक्तियाँ थीं, और देशभक्ति की भावना भी थी।”

मैंने यह स्पष्ट कर दिया कि मुझे एम. डी बोर्नियर के लिए कोई प्रशंसा नहीं थी। "सचमुच! आपको उनमें कोई कमी निकालनी है?" ड्यूक ने जिज्ञासा भरे लहजे में पूछा, क्योंकि उनका हमेशा यही मानना था कि जब कोई किसी आदमी की बुराई करता है तो वह किसी व्यक्तिगत द्वेष के कारण ही होता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी औरत की तारीफ करना किसी प्रेम प्रसंग

की शुरुआत का संकेत होता है। "मुझे लगता है कि आप उन पर बुरी नज़र रखे हुए हैं। उन्होंने आपका क्या बिगाड़ा है? आपको हमें बताना ही होगा। हाँ, ज़रूर कोई राज़ होगा, वरना आप उनकी बुराई नहीं करतीं। यह बहुत लंबा-चौड़ा है, फिली डी रोलैंड, लेकिन कुछ हिस्सों में काफी तीखा है।" "तीखा शब्द उस लेखक के लिए बिल्कुल सही है जिसकी गंध इतनी तीखी थी," मैडम डी गुएरमांटेस ने व्यंग्यपूर्वक बीच में कहा। "अगर यह बेचारा लड़का कभी उनके आमने-सामने आ जाता, तो मैं समझ सकती हूँ कि उसकी नाक में उनकी गंध बसी रहती!" "महोदया, मुझे यह स्वीकार करना होगा," ड्यूक ने राजकुमारी डी पार्म को संबोधित करते हुए कहा, "कि रोलैंड की पत्नी के अलावा, साहित्य और संगीत में भी मैं बेहद पुराने ख्यालों का हूँ; कोई भी पुरानी गायिका मेरे लिए बासी नहीं हो सकती। शायद आपको विश्वास न हो, लेकिन शाम को, अगर मेरी पत्नी पियानो बजाने बैठती है, तो मैं खुद को ऑबर या बोइल्डियू, या यहाँ तक कि बीथोवेन की कोई पुरानी धुन बजाने के लिए कहता हुआ पाता हूँ! यही वो संगीत है जो मुझे भाता है। जहाँ तक वैगनर की बात है, उसे सुनते ही मुझे नींद आ जाती है।" "आप गलत हैं," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, "अपनी असहनीय लंबी-चौड़ी बातों के बावजूद, वैगनर एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। लोहेनग्रिन एक उत्कृष्ट रचना है। ट्रिस्टन में भी कुछ मनोरंजक अंश बिखरे हुए हैं। और फ्लाइंग डचमैन में स्पिनर्स का कोरस एक अद्भुत रचना है।" "क्या मैं सही नहीं हूँ, बाबल," एम. डी गुएरमांटेस ने एम. डी ब्रेउटे की ओर मुड़ते हुए कहा, "हमें जो पसंद है वह यह है:

कुलीन मंडली की बैठकें

वे सभी इस मनमोहक प्रवास का भरपूर आनंद उठाते हैं।

यह स्वादिष्ट है। और फ्रा डियावोलो, और मैजिक फ्लूट, और शैलेट, और मैरिज ऑफ फिगारो, और डायमंड्स डे ला कौरॉन—ये सब आपके लिए संगीत हैं! साहित्य में भी यही बात है। उदाहरण के लिए, मुझे बाल्ज़ाक, बाल डे सियोक्स, मोहिकन्स डे पेरिस बहुत पसंद हैं। "ओह, मेरी प्यारी, अगर तुम बाल्ज़ाक के बारे में बात करना शुरू करोगी, तो हम कभी खत्म नहीं कर पाएंगे; थोड़ा रुको, इसे किसी शाम के लिए रखो जब मेमे यहाँ हों।" वह तो और भी बेहतर है, उसे सब कुछ कंठस्थ याद है।" अपनी पत्नी के बीच में टोकने से चिढ़कर, ड्यूक ने कुछ सेकंड के लिए उसे एक भयावह चुप्पी के घेरे में रखा। और उसकी शिकारी जैसी आँखें

मुझे भरी हुई पिस्तौलों के जोड़े की याद दिला रही थीं। इस बीच, श्रीमती डी'अर्पाजोन, प्रिंसेस डी पार्म के साथ दुखद और अन्य प्रकार की कविताओं पर कई टिप्पणियाँ कर रही थीं, जो मुझे तब तक स्पष्ट रूप से समझ नहीं आईं जब तक मैंने श्रीमती डी'अर्पाजोन की निम्नलिखित बातें नहीं सुनीं: "ओह, महोदया बिल्कुल सही हैं; मैं पूरी तरह से मानती हूँ कि वह दुनिया को बदसूरत बना देता है, क्योंकि वह बदसूरती और सुंदरता के बीच अंतर नहीं कर पाता, या यूँ कहें कि उसका असहनीय घमंड उसे यह विश्वास दिलाता है कि वह जो कुछ भी कहता है वह सुंदर है; मैं आपकी बात से सहमत हूँ कि जिस रचना की हम चर्चा कर रहे हैं उसमें कुछ हास्यास्पद बातें हैं, बिल्कुल समझ से परे, स्वाद की त्रुटियाँ हैं, इसे समझना कठिन है, इसे पढ़ना उतना ही मुश्किल है जितना कि रूसी या चीनी में लिखा हुआ, क्योंकि यह निश्चित रूप से फ्रेंच को छोड़कर दुनिया की कोई भी भाषा है, फिर भी जब कोई इसे पढ़ने का प्रयास करता है, तो उसे कितना भरपूर इनाम मिलता है, यह कल्पना से भरपूर है! इस छोटे से व्याख्यान के शुरुआती वाक्य मुझसे छूट गए थे। अंत में मुझे न केवल यह समझ आया कि सुंदरता और कुरूपता में अंतर करने में असमर्थ कवि विक्टर ह्यूगो थे, बल्कि यह भी कि वह कविता जो चीनी या रूसी जितनी कठिन थी,

जब बच्चा आता है, तो परिवार का घेरा
जोरदार तालियाँ बजीं।

कवि के प्रारंभिक काल की एक रचना, जो शायद लीजेंड डेस सिएकल्स के विक्टर ह्यूगो की तुलना में मैडम डेसौलियर्स के अधिक निकट है। मैडम डी'अर्पाजोन को बेतुका कहकर निंदा करने के बजाय, मैंने उन्हें (उस मेज पर बैठी एकमात्र महिला, जो इतनी सहज और साधारण थी, जिस पर मैं इतनी गहरी निराशा के साथ बैठा था) अपनी कल्पना में उस लेस वाली टोपी के साथ देखा, जिसके दोनों ओर लंबे घुमावदार बाल लटक रहे थे, जिसे मैडम डी रेमुसैट, मैडम डी ब्रोगली, मैडम डी सेंट-औलारी, उन सभी प्रतिष्ठित महिलाओं ने पहना था, जो अपने आकर्षक पत्रों में सोफोक्लीज, शिलर और इमिटेशन के अंशों को इतनी विद्वता और उपयुक्तता के साथ उद्धृत करती हैं, लेकिन जिनमें रोमांटिक कवियों की प्रारंभिक कविता ने मेरी दादी के लिए स्टीफन मल्लरमे की नवीनतम कविताओं से अविभाज्य चिंता और थकावट पैदा कर दी थी। "श्रीमती डी'अर्पाजोन को कविता बहुत पसंद है," भाषण के जोशीले लहजे से

प्रभावित होकर राजकुमारी डी पार्म ने अपनी मेज़बान से कहा। "नहीं; उन्हें इसके बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने दबी आवाज़ में उत्तर दिया, इस बात का फायदा उठाते हुए कि श्रीमती डी'अर्पाजोन, जो जनरल डी ब्यूट्रेलिस द्वारा उठाए गए एक आपत्ति का जवाब दे रही थीं, अपनी बात पर इतनी मग्न थीं कि डचेस की फुसफुसाहट को सुन ही नहीं पाईं। "जब से उसे त्यागा गया है, वह साहित्यिक बन गई है। महाराज, मैं आपको बता सकती हूँ कि इसका सारा बोझ मुझे ही उठाना पड़ता है, क्योंकि जब भी बेसिन उससे मिलने नहीं आता, तो वह फूट-फूटकर रोती हुई मेरे पास आती है, और ऐसा लगभग हर दिन होता है। वैसे भी, अगर वह उसे ऊबा देती है, तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है, और मैं उसे उसके पास जाने के लिए मजबूर भी नहीं कर सकती, हालाँकि मैं चाहती हूँ कि वह उसके प्रति थोड़ा और वफादार रहे, क्योंकि तब मुझे भी उसे इतना नहीं देखना पड़ेगा। लेकिन वह उसे पागल कर देती है, और इसमें कोई असामान्य बात नहीं है। वह बुरी लड़की नहीं है, लेकिन वह इतनी उबाऊ है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। और यह सब इसलिए क्योंकि बेसिन ने लगभग एक साल तक उसके साथ मेरे साथ बेवफाई करने का ठान लिया था। और ऊपर से एक नौकर भी है जिसे एक वेश्या से प्यार हो गया है और अगर मैं उस लड़की से आधे घंटे के लिए अपना काम छोड़कर मेरे साथ चाय पीने आने का अनुरोध नहीं करती, तो वह मुँह फुलाकर घूमता रहता है! ओह! ज़िंदगी सच में बहुत उबाऊ है!" डचेस ने सुस्ती से अपनी बात समाप्त की। श्रीमती डी'अर्पाजोन, श्री डी गुएरमांटेस को मुख्य रूप से इसलिए ऊब रही थीं क्योंकि उन्हें हाल ही में किसी और से प्रेम हो गया था, जिनसे मुझे बाद में पता चला कि वे मार्क्विस डी सर्जिस-ले-ड्यूक थीं। इस समय, छुट्टी से वंचित नौकर मेज पर सेवा कर रहा था। और मुझे लगा कि वह अभी भी उदास है और बड़ी मुश्किल से यह काम कर रहा है, क्योंकि मैंने देखा कि श्री डी चैटेलराउल्ट को व्यंजन देते समय उसने इतनी बेढंगी तरह से काम किया कि ड्यूक की कोहनी कई बार उससे टकरा गई। युवा ड्यूक शरमाते हुए नौकर से ज़रा भी नाराज़ नहीं थे, बल्कि अपनी नीली आँखों में मुस्कान लिए उसकी ओर देख रहे थे। मुझे लगा कि मेहमान का यह अच्छा व्यवहार उनके दयालु हृदय का संकेत था। लेकिन उनकी मुस्कान के बने रहने से मुझे लगा कि नौकर की परेशानी को भांपते हुए, शायद उनके मन में एक शरारती खुशी थी। "लेकिन, मेरी प्यारी, तुम जानती हो कि जब तुम हमें विक्टर ह्यूगो के बारे

में बताती हो तो तुम कोई नई खोज का खुलासा नहीं कर रही हो," डचेस ने आगे कहा, इस बार उन्होंने मैडम डी'अर्पाजोन को संबोधित किया, जिन्हें उन्होंने अभी-अभी जनरल से परेशान भाव से मुंह मोड़ते हुए देखा था। "आपको उस युवा प्रतिभा से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। हर कोई जानता है कि उसमें प्रतिभा है। लेकिन विक्टर ह्यूगो की आखिरी दौर की रचनाएँ, 'लेजेंड डेस सिएकल्स', जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हैं, बेहद घृणित हैं। लेकिन 'फ्यूइल्स डी'ऑटोमने' और 'चैंट्स डू क्रेपुस्कुल' में एक कवि, एक सच्चे कवि की रचनाएँ भरपूर हैं! 'कंटेंप्लेशन्स' में भी," डचेस ने आगे कहा, जिनसे उनके श्रोताओं में से कोई भी असहमत होने की हिम्मत नहीं करता था, और इसका अच्छा कारण भी था, "कुछ बहुत ही सुंदर रचनाएँ हैं। लेकिन मैं स्वीकार करती हूँ कि मैं 'क्रेपुस्कुल' से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करती! और फिर विक्टर ह्यूगो की कुछ बेहतरीन कविताओं में, और वास्तव में ऐसी कुछ कविताएँ हैं, अक्सर एक विचार, यहाँ तक कि एक गहरा विचार भी मिलता है।" और उचित भावपूर्ण ढंग से, अपनी आवाज़ की पूरी ताकत से उस दुख भरे विचार को व्यक्त करते हुए, उसे अपनी आवाज़ की सीमा से परे कहीं स्थापित करते हुए, और अपने सामने एक आकर्षक, स्वप्निल निगाह टिकाते हुए, डचेस ने धीरे-धीरे कहा: "यह लो:

दर्द एक फल है, इसे भगवान नहीं उगाते।
वह शाखा अभी भी इतनी कमजोर है कि उसका भार नहीं सह सकती।
या फिर, इससे भी बेहतर:
मृत्यु का समय बहुत कम होता है।
अफसोस, ताबूत में वे चूर-चूर हो जाते हैं।
हमारे दिल की धड़कन से भी धीमी गति से!

और, जब निराशा की मुस्कान उनके शोकग्रस्त होठों पर एक सुंदर लहर के साथ सिकुड़ गई, तो डचेस ने अपनी आकर्षक, निर्मल नीली आँखों से श्रीमती डी'अर्पाजोन पर स्वप्निल निगाहें गड़ा दीं। मैं उनकी आँखों को पहचानने लगा था, साथ ही उनकी भारी, कर्कश आवाज़ को भी। उन आँखों और उस आवाज़ में, मैंने कॉम्ब्रे के आसपास की प्रकृति के जीवन का बहुत कुछ देखा। निश्चित रूप से, जिस बनावटीपन से वह आवाज़ कभी-कभी मिट्टी की कठोरता को उजागर करती थी, उसमें एक से अधिक तत्व थे: गुएरमांटेस परिवार की एक शाखा की

पूरी तरह से प्रांतीय उत्पत्ति, जो लंबे समय से बाकी की तुलना में अधिक स्थानीय, अधिक कठोर, अधिक जंगली और अधिक उत्तेजक रही थी; और साथ ही वास्तव में प्रतिष्ठित लोगों और उन चतुर लोगों का रिवाज जो जानते हैं कि विशिष्टता का अर्थ बोलने में लाउडस्पीकर रखना नहीं है, और उन रईसों का रिवाज जो मध्यम वर्ग की तुलना में अपने किसानों के साथ अधिक आसानी से मेलजोल रखते हैं; ये सभी विशेषताएँ श्रीमती की शाही स्थिति में झलकती थीं। डी गुएरमांटेस ने उसे हर पाल फैलाते ही अपनी प्रतिभा को और अधिक आसानी से प्रदर्शित करने में सक्षम बनाया। ऐसा प्रतीत होता है कि यही आवाज़ उसकी कुछ बहनों में भी थी, जिनसे वह घृणा करती थी, और जो उससे कम बुद्धिमान थीं और लगभग साधारण विवाहों में बंधी थीं (यदि हम इस क्रियाविशेषण का प्रयोग उन गुमनाम रईसों से विवाह के लिए कर सकते हैं जो अपनी प्रांतीय जागीरों में जमे हुए थे, या पेरिस में, एक साधारण से फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में), उनमें भी यही आवाज़ थी, लेकिन उन्होंने इसे अपने वश में कर लिया था, सुधारा था, जितना संभव हो सके नरम किया था, ठीक वैसे ही जैसे हममें से बहुत कम ही लोग अपनी मौलिकता का दावा करते हैं और सबसे स्वीकृत मॉडलों की नकल करने में खुद को लगन से नहीं लगाते। लेकिन ओरियान अपनी बहनों की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिमान, कहीं अधिक धनी और सबसे बढ़कर, कहीं अधिक फैशनेबल थी। प्रिंसेस डेस लाउम्स के रूप में, उसने वेल्स के राजकुमार की संगति में इतनी प्रभावी ढंग से व्यवहार किया था कि उसे एहसास हो गया था कि उसकी यह बेमेल आवाज एक आकर्षण है, और उसने सामाजिक व्यवस्था में, मौलिकता के साहस के साथ, सफलता से पुरस्कृत होकर, वही हासिल किया जो नाट्य जगत में रेजेन और जीन ग्रैनियर (स्वाभाविक रूप से, इन दोनों अभिनेत्रियों के गुणों और प्रतिभाओं के बीच कोई तुलना नहीं है) ने किया था - कुछ प्रशंसनीय और विशिष्ट जिसे संभवतः कुछ रेजेन और ग्रैनियर बहनों ने, जिन्हें कोई नहीं जानता, एक दोष के रूप में छिपाने का प्रयास किया था।

अपनी स्थानीय मौलिकता प्रदर्शित करने के इन सभी कारणों के साथ-साथ, श्रीमती डी गुएरमांटेस के पसंदीदा लेखकों - मेरिमी, मेलहाक और हालेवी - ने प्राकृतिकता के प्रति सम्मान के साथ-साथ गद्य के प्रति एक ऐसी भावना भी पैदा की, जिससे उन्होंने कविता की रचना की और एक विशुद्ध सामाजिक भावना विकसित की, जिसने मेरी आँखों के सामने दूर-

दराज के परिदृश्यों को जीवंत कर दिया। इसके अलावा, डचेस इन प्रभावों के साथ-साथ अपने स्वयं के कलात्मक शोध को जोड़ते हुए, अपने अधिकांश शब्दों के लिए उस उच्चारण को चुनने में पूरी तरह सक्षम थीं जो उन्हें सबसे अधिक 'फ्रांसीसी' और सबसे अधिक 'शैम्पेनोइस' लगता था, क्योंकि अपनी भाभी मार्सेंटेस की तरह पूरी तरह से नहीं, लेकिन उन्होंने शायद ही कभी किसी पुराने फ्रांसीसी लेखक द्वारा प्रयुक्त शुद्ध शब्दावली के अलावा किसी और शब्द का प्रयोग किया हो। और जब कोई आधुनिक भाषा के मिश्रित मिश्रण से ऊब जाता था, तो यह जानते हुए भी कि वह बहुत कम विचार व्यक्त करती थीं, श्रीमती की बातें सुनना एक पूर्ण सुकून था। डी गुएरमांटेस—लगभग वही अनुभूति, मानो कोई उनके साथ एकांत में हो और वे अपने शब्दों के प्रवाह को संयमित और और भी स्पष्ट कर दें, जैसा कि किसी पुराने गीत को सुनते समय होती है। फिर, जब मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को देखा, जब मैंने उन्हें सुना, तो मुझे उनकी आँखों की शाश्वत और शांत दोपहर में एक कैदी की तरह, हे डे फ़्रांस या शैम्पेन का आकाश फैला हुआ दिखाई दिया, धूसर-नीला, तिरछा, उसी झुकाव के कोण के साथ जैसा सेंट-लूप की आँखों में था।

इस प्रकार, इन विभिन्न रचनाओं के माध्यम से, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एक साथ सबसे प्राचीन कुलीन फ्रांस को व्यक्त किया, फिर एक बहुत बाद के स्रोत से, उस तरीके को दर्शाया जिसमें डचेस डी ब्रोगली ने जुलाई राजशाही के तहत विक्टर ह्यूगो का आनंद लिया होगा और उनकी आलोचना की होगी, और अंत में, मेरिमी और मेलहाक से उत्पन्न साहित्य के प्रति उनकी गहरी रुचि को भी दिखाया। इनमें से पहली रचना ने मुझे दूसरी से अधिक आकर्षित किया, और फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की मेरी तीर्थयात्रा और आगमन की निराशाओं के लिए मुझे अधिक सांत्वना दी, क्योंकि यह मेरी कल्पना से बहुत अलग था; लेकिन फिर भी दूसरी रचना मुझे अंतिम से अधिक पसंद आई। क्योंकि, जब तक श्रीमती डी गुएरमांटेस लगभग सहज रूप से, केवल एक गुएरमांटेस के रूप में थीं, तब तक उनका पैलेरोनवाद, युवा डुमास के प्रति उनकी रुचि, प्रतिबिंबित और सुविचारित थी। चूंकि यह रुचि मेरी अपनी रुचि के बिल्कुल विपरीत थी, इसलिए जब वह मुझसे फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के बारे में बात करती थी, तो मुझे लगता था कि वह साहित्य के क्षेत्र में काफी उपयोगी थी, और जब वह साहित्य के बारे में बात

करती थी तो वह मुझे कभी भी इतनी मूर्खतापूर्ण तरीके से फाउबर्ग सेंट-जर्मेन जैसी नहीं लगती थी।

इस आखिरी उद्धरण से प्रभावित होकर, श्रीमती डी'अर्पाजोन ने कहा: "'Ces reliques du cœur ont aussi leur poussière!'—श्रीमान, कृपया इसे मेरे पंखे पर लिख दें," उन्होंने एम. डी गुएरमांटेस से कहा। "बेचारी औरत, मुझे उस पर तरस आता है!" प्रिंसेस डी पार्म ने श्रीमती डी गुएरमांटेस से कहा। "नहीं, सच में, महोदया, आपको इतना कठोर नहीं होना चाहिए, उसे वही मिला है जिसकी वह हकदार थी।" "लेकिन—मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें—वह वास्तव में उससे उतना ही प्यार करती है!" "अरे, बिलकुल नहीं; वह इसके काबिल नहीं है; वह सोचती है कि वह उससे प्यार करती है, ठीक वैसे ही जैसे अभी उसने सोचा था कि वह विक्टर ह्यूगो की कविता 'मुसेट' दोहरा रही है। सुनिए," डचेस उदास स्वर में बोली, "किसी भी सच्ची भावना से मुझसे ज़्यादा कोई प्रभावित नहीं होगा। लेकिन मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। कल ही उसने बेसिन के साथ बहुत हंगामा किया। महाराज को लगता है कि शायद ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह दूसरी महिलाओं से प्यार करता है, क्योंकि अब वह उससे प्यार नहीं करता; बिलकुल नहीं, ऐसा इसलिए था क्योंकि वह उसके बेटों को जॉकी के लिए नहीं छोड़ रहा था। क्या महोदया इसे प्रेम में डूबी स्त्री का व्यवहार कहती हैं? नहीं; मैं और आगे जाऊँगी;" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने सटीक ढंग से कहा, "वह एक विलक्षण असंवेदनशील व्यक्ति है।" इस बीच, श्री डी गुएरमांटेस ने संतुष्टि से चमकती आँखों से अपनी पत्नी को विक्टर ह्यूगो के बारे में सीधे-सीधे बात करते और उनकी कविताएँ उद्धृत करते हुए सुना। डचेस उन्हें अक्सर परेशान करती थी; ऐसे क्षणों में उसे उस पर गर्व होता था। "ओरियान सचमुच असाधारण है। वह किसी भी विषय पर बात कर सकती है, उसने सब कुछ पढ़ा है। उसने शायद ही कभी सोचा होगा कि आज शाम की बातचीत विक्टर ह्यूगो पर केंद्रित होगी। आप कोई भी विषय उठा लें, वह तैयार रहती है, वह सबसे विद्वान विद्वानों के साथ भी अपनी बात रख सकती है। यह युवक तो उससे बहुत प्रभावित हुआ होगा।"

"चलिए, विषय बदल लेते हैं," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने आगे कहा, "क्योंकि वह बहुत जल्दी भावुक हो जाती हैं। आप मुझे काफी पुराने ख्यालों वाली समझेंगी," उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा। "मुझे पता है कि आजकल कविता में विचारों की परवाह करना, ऐसी कविता जिसमें

कुछ चिंतन हो, कमजोरी समझा जाता है।" "पुराने ख्यालों वाली?" प्रिंसेस डी पार्म ने पूछा, इस अप्रत्याशित बदलाव से उनके शरीर में एक हल्की सी सिहरन दौड़ गई थी, हालांकि वह जानती थीं कि डचेस डी गुएरमांटेस की बातचीत में हमेशा उनके लिए ये लगातार और सुखद झटके, सांस रोक देने वाली घबराहट और एक ऐसी थकावट होती थी जिसके बाद उनके विचार सहज रूप से ड्रेसिंग रूम में पैर धोने और 'रक्त संचार को बहाल करने' के लिए तेज चलने की आवश्यकता की ओर मुड़ जाते थे।
"मैं तो नहीं, ओरियान," श्रीमती डी ब्रिसैक ने कहा, "मुझे विक्टर ह्यूगो के विचारों से ज़रा भी आपत्ति नहीं है, बल्कि इसके विपरीत, लेकिन मुझे उनकी उन विचारों को घोर कुरूपता में तलाशने पर आपत्ति है। आख़िरकार, साहित्य में कुरूपता से हमारा परिचय तो उन्होंने ही कराया है। वास्तविक जीवन में पहले से ही काफ़ी कुरूप चीज़ें मौजूद हैं। पढ़ते समय हमें कम से कम इसे भूलने की अनुमति क्यों नहीं दी जा सकती? एक ऐसा कष्टदायक दृश्य, जिससे हमें वास्तविक जीवन में मुंह मोड़ लेना चाहिए, वही विक्टर ह्यूगो को आकर्षित करता है।"

"विक्टर ह्यूगो, ज़ोला जितने यथार्थवादी तो नहीं हैं, है ना?" प्रिंसेस डी पार्म ने पूछा। ज़ोला के नाम से एम. डी बोट्रेलिस के चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। जनरल का ड्रेफस-विरोध इतना गहरा था कि उन्हें उसे ज़ाहिर करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। और जब भी कोई इन विषयों पर बात छेड़ता, तो उनकी भलमनसाहत भरी चुप्पी, किसी भी आम इंसान के दिल को उसी नज़ाकत के सबूत के तौर पर छू जाती थी—ठीक वैसी ही नज़ाकत जैसी कोई पादरी आपके धार्मिक कर्तव्यों का ज़िक्र करने से बचते हुए दिखाता है; या कोई फाइनेंसर, जो इस बात का ध्यान रखता है कि वह आपको उन कंपनियों में निवेश करने की सलाह न दे जिन पर उसका खुद का नियंत्रण है; या कोई ताक़तवर आदमी, जो मेमने जैसी नरमी से पेश आता है और आपके जबड़े पर मुक्का नहीं मारता। "मुझे पता है कि आप एडमिरल जुरियन डी ला ग्रेवियर के रिश्तेदार हैं," प्रिंसेस डी पार्म की 'लेडी-इन-वेटिंग' (परिचारिका), एमएमई. डी वारम्बोन ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा—वह एक बेहतरीन, लेकिन सीमित सोच वाली महिला थीं, जिन्हें ड्यूक की माँ ने पहले प्रिंसेस की सेवा के लिए नियुक्त किया था। उन्होंने

इससे पहले मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा था, और उसके बाद भी—प्रिंसेस के समझाने और मेरे बार-बार इनकार करने के बावजूद—मैं उनके मन से यह बात कभी नहीं निकाल पाया कि मेरा किसी न किसी तरह उस 'एकेडमिशियन एडमिरल' से कोई संबंध है, जिनसे मैं पूरी तरह अनजान था। प्रिंसेस डी पार्म की परिचारिका का मुझमें एडमिरल जुरियन डी ला ग्रेवियर का भतीजा देखने का यह ज़िद भरा आग्रह, अपने आप में एक आम किस्म की बेवकूफी ही थी। लेकिन उन्होंने जो गलती की, वह उन तमाम दूसरी गलतियों का बस एक चरम उदाहरण थी —जो कम गंभीर, ज़्यादा पेचीदा, अनजाने में या जान-बूझकर की जाती हैं—और जो समाज द्वारा किसी व्यक्ति के नाम के साथ लगाए गए 'लेबल' पर हमेशा चिपकी रहती हैं। मुझे याद है कि गुएरमांटेस परिवार के एक मित्र ने मुझसे मिलने की बड़ी तीव्र इच्छा ज़ाहिर की थी, और इसका कारण उन्होंने यह बताया कि मैं उनकी चचेरी बहन, एमएमई. डी चौसेग्रोस का बहुत अच्छा दोस्त हूँ। "वह बहुत ही प्यारी इंसान हैं, और आपको बहुत पसंद करती हैं।" मैंने पूरी ईमानदारी से—हालाँकि बिल्कुल व्यर्थ ही—इस बात पर ज़ोर दिया कि ज़रूर कोई गलतफहमी हुई है, क्योंकि मैं एमएमई. डी चौसेग्रोस को जानता ही नहीं था। "तो फिर आप उनकी बहन को जानते होंगे; बात तो एक ही है। वह आपसे स्कॉटलैंड में मिली थीं।" मैं कभी स्कॉटलैंड नहीं गया था, और अपनी ईमानदारी के चलते, मैंने एक बेकार की सावधानी बरती —मैंने अपने बताने वाले को यह बात बता दी। यह खुद मादाम दे शॉसेग्रोस ही थीं जिन्होंने कहा था कि वे मुझे जानती हैं, और इसमें कोई शक नहीं कि किसी शुरुआती गलतफहमी के कारण वे सचमुच ऐसा मानती भी थीं; क्योंकि उस समय के बाद से, जब भी वे मुझे देखतीं, तो मुझसे हाथ मिलाने से कभी नहीं चूकतीं। और चूंकि, आखिर जिस दुनिया में मैं उठता-बैठता था, ठीक उसी दुनिया में मादाम दे शॉसेग्रोस भी आती-जाती थीं, इसलिए मेरी विनम्रता का कोई तुक या कारण नहीं था। यह कहना कि मैं शॉसेग्रोस परिवार के बहुत करीब था, सचमुच एक गलती थी; लेकिन सामाजिक नज़रिए से, यह मेरी हैसियत के बराबर ही था—अगर कोई मुझ जैसे इतने कम उम्र के आदमी की 'सामाजिक हैसियत' की बात कर सकता हो। इसलिए इस बात से ज़रा भी फर्क नहीं पड़ता था कि गुएरमांत परिवार की यह दोस्त मेरे बारे में सिर्फ़ गलत बातें ही बताती थी; (सांसारिक नज़रिए से) उसने मेरे बारे में अपनी जो राय बना रखी थी, उसमें उसने न तो मुझे नीचा दिखाया और न ही ऊँचा उठाया। और आखिर में, हममें से जो

लोग पेशेवर अभिनेता नहीं हैं, उनके लिए हमेशा एक ही किरदार में जीने की ऊब कुछ पल के लिए दूर हो जाती है—मानो हम मंच पर अभिनय करने चले गए हों—जब कोई दूसरा व्यक्ति हमारे बारे में कोई गलत राय बना लेता है; वह कल्पना कर लेता है कि हम किसी ऐसी महिला के दोस्त हैं जिसे हम जानते भी नहीं, और यह मान लेता है कि हम किसी ऐसे विदेशी देश की मज़ेदार सैर पर मिले थे, जहाँ हम कभी गए ही नहीं। गलतियाँ अक्सर बढ़ती जाती हैं, और जब तक उनमें उस गलती जैसी अड़ियल ज़िद न हो—जो इस मामले में हुई थी—तब तक वे नुकसानदेह नहीं होतीं। यह गलती मादाम दे पार्म की उस मंदबुद्धि 'लेडी-इन-वेटिंग' (परिचारिका) ने की थी, और मेरे बार-बार मना करने के बावजूद, उसने अपनी पूरी ज़िंदगी यह गलती दोहराई; वह इस बात पर हमेशा के लिए अड़ी रही कि मेरा उस उबाऊ एडमिरल जूरियन दे ला ग्रेविएर से कोई रिश्ता है। ड्यूक ने मुझसे राज़ की बात बताते हुए कहा, "उसका दिमाग कुछ ठीक नहीं है, और इसके अलावा, उसे इतनी ज़्यादा शराब नहीं पीनी चाहिए। मुझे लगता है कि वह थोड़ी-बहुत शराब के नशे में है।" असल में, मादाम दे वाराम्बोन ने पानी के अलावा कुछ भी नहीं पिया था; लेकिन ड्यूक को अपनी पसंदीदा 'अलंकारिक भाषा' (figures of speech) इस्तेमाल करने का मौका ढूँढ़ना अच्छा लगता था। "लेकिन ज़ोला कोई यथार्थवादी नहीं हैं, मैडम, वे तो एक कवि हैं!" मैडम डी गुएरमांटेस ने कहा। उन्होंने हाल के वर्षों में पढ़े गए आलोचनात्मक निबंधों से प्रेरणा ली थी और उन्हें अपनी निजी प्रतिभा के अनुरूप ढाल लिया था। अब तक इस 'बुद्धिमत्ता के स्नान' के दौरान, जिसमें उन्हें सुखद रूप से झटके लग रहे थे—यह स्नान उन्होंने खुद अपने लिए तैयार किया था और आज शाम वे इसमें डुबकी लगा रही थीं; उन्हें लग रहा था कि यह उनके स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से लाभदायक होगा—वे विरोधाभासों की उन लहरों के साथ बहती जा रही थीं जो एक के बाद एक उठती और टूटती जा रही थीं। लेकिन तभी, उन सभी लहरों में से सबसे विशाल लहर के सामने आते ही, प्रिंसेस डी पार्म इस डर से उछल पड़ीं कि कहीं वे उस लहर की चपेट में आकर गिर न पड़ें। और फिर, एक रुंधी हुई आवाज़ में—मानो उनकी साँस ही अटक गई हो—उन्होंने हाँफते हुए कहा: "ज़ोला... एक कवि!" "अरे, हाँ," डचेस ने हँसते हुए जवाब दिया; वे प्रिंसेस की इस घबराहट भरी प्रतिक्रिया को देखकर मंत्रमुग्ध हो गई थीं। "महामहिम, आपने ज़रूर गौर किया होगा कि वे जिस भी चीज़ को छूते हैं, उसे कितना विशाल और भव्य बना देते

हैं। आप शायद मुझसे पूछेंगी कि वे आखिर किस चीज़ को छूते हैं—छिः, ऐसा सोचना भी पाप है! लेकिन वे उसे कुछ ऐसा बना देते हैं..."
विशालकाय। उसका गोबर का ढेर तो महाकाव्य जैसा है। वह तो नालियों का होमर है! "उसके पास कैम्ब्रोन का शब्द छापने के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं है।" अत्यधिक थकावट महसूस होने के बावजूद, राजकुमारी मंत्रमुग्ध थीं; उन्होंने पहले कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया था। वह शॉनब्रुन के निमंत्रण के बदले भी, Mme. de Guermantes के यहाँ होने वाली इन शानदार डिनर-पार्टियों को नहीं छोड़तीं—भले ही शॉनब्रुन का निमंत्रण ही एकमात्र ऐसी चीज़ थी जिससे उन्हें सचमुच गर्व महसूस होता था—क्योंकि ये पार्टियाँ तीखी और हाजिरजवाबी से भरी बातों के कारण बेहद उत्साहवर्धक होती थीं। "वह इसे बड़े 'C' से लिखता है," Mme. d'Arpajon चिल्लाईं। "मुझे लगता है, प्यारे, वह इसे बड़े 'M' से लिखता है," Mme. de Guermantes ने जवाब दिया, और अपने पति के साथ एक शरारती नज़र का आदान-प्रदान किया, जिसका मतलब था: "क्या तुमने कभी इतना बड़ा बेवकूफ देखा है?" "ज़रा एक मिनट रुको।" Mme. de Guermantes मेरी ओर मुड़ीं, और मुझ पर एक कोमल, मुस्कुराती हुई नज़र डाली; क्योंकि एक कुशल मेज़बान होने के नाते, वह उस कलाकार के बारे में अपना ज्ञान प्रदर्शित करने के लिए उत्सुक थीं जिसमें मेरी विशेष रुचि थी—और यदि मुझे आवश्यकता हो, तो मुझे भी अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का अवसर देना चाहती थीं। "रुको," उन्होंने मुझे आग्रह करते हुए कहा, और धीरे से अपना पंखों वाला पंखा हिलाया; इस क्षण उन्हें पूरी तरह से एहसास था कि वह आतिथ्य-सत्कार के अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से पालन कर रही हैं, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनमें कोई कमी न रह जाए, उन्होंने नौकरों को भी इशारा किया कि वे मुझे और एस्पैरागस और मौसलीन सॉस परोसें। "रुको, मुझे पूरा यकीन है कि ज़ोला ने वास्तव में एल्सटिर पर एक निबंध लिखा है—वही चित्रकार जिसकी कलाकृतियाँ तुम अभी देख रहे थे—सच कहूँ तो, उसकी कलाकृतियों में से केवल यही मुझे पसंद हैं," उन्होंने अपनी बात समाप्त की। असल में, वह एल्सटिर के काम से नफ़रत करती थीं, लेकिन अपने ही घर में रखी किसी भी चीज़ में उन्हें एक अनोखा गुण नज़र आता था। मैंने M. de Guermantes से पूछा कि क्या वह उस लंबे हैट वाले सज्जन का नाम जानते हैं, जो भीड़ वाली तस्वीर में दिखाई दे रहे थे; मैंने उन्हें उसी व्यक्ति के रूप में पहचाना

जिसका चित्र Guermantes के पास भी था और जिसे उन्होंने दूसरी तस्वीर के बगल में ही टांग रखा था। ये दोनों ही चित्र लगभग एक ही शुरुआती दौर के थे, जब एल्सटिर की अपनी शैली अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई थी और वह माने (Manet) से कुछ हद तक प्रेरणा लेते थे। "हे भगवान, हाँ," उन्होंने जवाब दिया, "मैं जानता हूँ कि वह एक काफी जाना-माना व्यक्ति है, और अपने क्षेत्र में बिल्कुल भी बेवकूफ नहीं है, लेकिन मुझे नाम याद रखने की आदत नहीं है।" ...नाम। वह मेरी ज़बान पर ही है, मॉन्सियर... मॉन्सियर... ओह, खैर, कोई बात नहीं, मुझे याद नहीं आ रहा। स्वान आपको बता पाएँगे, उन्हीं ने मैडम डे गुएरमांटेस से वह सारा सामान खरीदवाया था; वह हमेशा बहुत ही नेकदिल रहती हैं, अगर वह किसी काम के लिए मना करती हैं तो उन्हें डर लगता है कि कहीं लोगों की भावनाएँ आहत न हो जाएँ; सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि उन्होंने हमें बहुत सारा बेकार का कबाड़ थमा दिया है। मैं आपको बस इतना बता सकता हूँ कि जिस सज्जन की आप बात कर रहे हैं, वह मॉन्सियर एल्स्टिर के लिए एक तरह के संरक्षक रहे हैं; उन्होंने ही एल्स्टिर को शुरुआत करने में मदद की और अक्सर उनसे पेंटिंग्स खरीदकर उन्हें मुश्किल हालात से बाहर निकाला। इस आदमी का सम्मान करने के लिए—अगर आप इस तरह की चीज़ को सम्मान कह सकते हैं—उन्होंने उसे उस भीड़ के बीच खड़े हुए चित्रित किया है, जहाँ अपने 'संडे-गो-टू-मीटिंग' (खास मौकों पर पहने जाने वाले) पहनावे के साथ वह काफी अजीब लग रहा है। वह अपने तरीके से भले ही कोई बड़ा आदमी हो, लेकिन उसे साफ तौर पर यह नहीं पता कि 'टॉप हैट' (ऊँची टोपी) पहनने का सही समय और जगह क्या है। अपने सिर पर वह टोपी पहने हुए, उन सभी बिना टोपी वाली लड़कियों के बीच, वह किसी छोटे-मोटे देहाती वकील जैसा लग रहा है जो शहर की चकाचौंध में खो गया हो। लेकिन मुझे बताइए, आप तो उसकी पेंटिंग्स के दीवाने लग रहे हैं। अगर मुझे पहले से पता होता, तो मैं इस विषय पर ठीक से जानकारी हासिल कर लेता। ऐसा नहीं है कि मॉन्सियर एल्स्टिर के काम का मतलब समझने के लिए किसी को अपना दिमाग खपाने की ज़रूरत हो, जैसा कि कोई इंग्रेस की 'द सोर्स' या पॉल डेलारोश की 'प्रिंसेस इन द टावर' जैसी पेंटिंग्स के लिए करता है। उनके काम में जिस चीज़ की तारीफ़ की जाती है, वह यह है कि वह बहुत ही बारीकी से देखा-परखा गया, मज़ेदार और पेरिसियाई है; और फिर इंसान अगली चीज़ की ओर बढ़ जाता है। इस तरह की चीज़ों को देखने के लिए किसी

विशेषज्ञ होने की ज़रूरत नहीं है। मुझे बेशक पता है कि ये सिर्फ़ स्केच हैं, फिर भी मुझे खुद ऐसा नहीं लगता कि वह इनमें काफ़ी मेहनत करते हैं। स्वान इस बात पर अड़े हुए थे कि हमें 'ए बंडल ऑफ़ एस्पैरगस' (शतावरी का एक गट्ठर) खरीदना ही चाहिए। असल में, वह पेंटिंग कई दिनों तक हमारे घर में ही रही। उस पेंटिंग में और कुछ नहीं था—बस शतावरी का एक गट्ठर, बिल्कुल वैसा ही जैसा आप अभी खा रहे हैं। लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि मैंने मॉन्सियर एल्स्टिर की उस शतावरी को 'हज़म' करने से साफ़ मना कर दिया। उन्होंने उसके लिए तीन सौ फ़्रैंक माँगे थे। शतावरी के एक गट्ठर के लिए तीन सौ फ़्रैंक! एक लुई—बस इतनी ही उनकी कीमत है, भले ही वे बेमौसम के हों। मुझे यह थोड़ा ज़्यादा ही लगा। जब वह अपनी तस्वीरों में असली लोगों को भी शामिल करता है, तो उसमें कुछ ऐसा घटियापन, कुछ ऐसा नुकसानदेह पहलू नज़र आता है जो मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आता। मुझे यह देखकर हैरानी होती है कि आपके जैसा कोमल मन और बेहतरीन दिमाग ऐसी चीज़ों की तारीफ़ करता है।" "मुझे समझ नहीं आता कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, बेसिन," डचेस ने बीच में टोकते हुए कहा; उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि कोई भी उसके कमरों में रखी किसी भी चीज़ की बुराई करे। "मैं यह मानने को बिल्कुल भी तैयार नहीं हूँ कि एल्स्टिर की तस्वीरों में कुछ भी खास नहीं है। आप चाहें तो उन्हें पसंद करें या न करें। लेकिन उनमें हमेशा प्रतिभा की कमी नहीं होती। और आपको यह तो मानना ही पड़ेगा कि जो तस्वीरें मैंने खरीदी हैं, वे बेहद खूबसूरत हैं।" "खैर, ओरियन, इस तरह की चीज़ों के मामले में, मैं तो हज़ार गुना ज़्यादा M. Vibert की उस छोटी सी पेंटिंग को लेना पसंद करूँगा, जिसे हमने वॉटर-कलर प्रदर्शनी में देखा था। उसमें वैसे तो कुछ खास नहीं है—अगर आप चाहें, तो उसे अपनी हथेली पर भी उठा सकते हैं—लेकिन आप उसमें उस कलाकार की कला देख सकते हैं..."

"हर तरह से: वह बिना नहाया-धोया, बिजूका जैसा दिखने वाला मिशनरी, जो उस सजे-धजे पादरी के सामने खड़ा है, जो अपने छोटे कुत्ते से करतब करवा रहा है—यह बारीकी की एक बेहतरीन छोटी सी कविता है, और सच कहूँ तो, यह बहुत गहरी बात कहती है।" "मुझे लगता है कि आप एम. एल्स्टिर को जानते हैं," डचेस ने मुझसे कहा, "एक इंसान के तौर पर, वह काफी मिलनसार हैं।" "वह बुद्धिमान हैं," ड्यूक ने कहा; "जब कोई उनसे बात करता है, तो

उसे हैरानी होती है कि उनकी पेंटिंग इतनी भद्दी कैसे हो सकती है।" "वह सिर्फ़ बुद्धिमान ही नहीं, बल्कि सचमुच काफी चालाक भी हैं," डचेस ने उस आत्मविश्वास भरे आलोचनात्मक लहजे में कहा, जो किसी ऐसे व्यक्ति का होता है जिसे पता हो कि वह किस बारे में बात कर रही है। "क्या उन्होंने कभी तुम्हारा पोर्ट्रेट बनाना शुरू नहीं किया था, ओरियन?" प्रिंसेस डी पार्म ने पूछा। "हाँ, झींगा-गुलाबी रंग में," एमएमई. डी गुएरमांटेस ने जवाब दिया, "लेकिन उस पोर्ट्रेट की वजह से उनका नाम इतिहास में अमर नहीं होने वाला। वह एक बहुत ही भयानक चीज़ है; बेसिन तो उसे नष्ट ही करवा देना चाहते थे।" यह आखिरी बात एमएमई. डी गुएरमांटेस अक्सर कहा करती थीं। लेकिन कभी-कभी उस पेंटिंग के बारे में उनकी राय बिल्कुल अलग होती थी: "मुझे उनकी पेंटिंग पसंद नहीं है, लेकिन एक बार उन्होंने मेरा एक बहुत अच्छा पोर्ट्रेट बनाया था।" इन दोनों में से पहली राय वह आमतौर पर उन लोगों को देती थीं, जो डचेस से उनके पोर्ट्रेट के बारे में बात करते थे; और दूसरी राय वह उन लोगों को देती थीं, जो उस पोर्ट्रेट का ज़िक्र नहीं करते थे—और जिन्हें वह बड़ी उत्सुकता से बताना चाहती थीं कि ऐसा कोई पोर्ट्रेट मौजूद भी है। पहली राय के पीछे उनका नखरा था, तो दूसरी राय के पीछे उनका घमंड। "तुम्हारा पोर्ट्रेट भयानक दिखे—ऐसा कैसे हो सकता है! अगर ऐसा है, तो वह पोर्ट्रेट हो ही नहीं सकता, वह तो एक झूठ है; मुझे तो ब्रश पकड़ना भी ठीक से नहीं आता, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं तुम्हारा पोर्ट्रेट बनाऊँ—बस तुम्हें वैसा ही बना दूँ जैसा तुम मुझे दिखती हो—तो वह एक बेहतरीन कलाकृति (masterpiece) बनेगी," प्रिंसेस डी पार्म ने बड़ी मासूमियत से कहा। "शायद वह मुझे वैसा ही देखते हैं, जैसा मैं खुद को देखती हूँ —बिना किसी बनावटी आकर्षण के," डचेस डी गुएरमांटेस ने कहा। उनके चेहरे पर उस समय एक उदास, शर्मीली और मनुहार करती हुई मुस्कान थी—उन्हें लगा कि इस तरह वह एल्स्टिर की बनाई हुई पेंटिंग से बिल्कुल अलग नज़र आएँगी। "वह पोर्ट्रेट तो एमएमई. को ज़रूर पसंद आना चाहिए।" "डी गैलार्डन," ड्यूक ने कहा। "क्योंकि वह तस्वीरों के बारे में कुछ नहीं जानती?" प्रिंसेस डी पार्म ने पूछा, जो जानती थीं कि मैडम डी गुएरमांटेस अपनी चचेरी बहन के प्रति असीम तिरस्कार रखती थीं। "लेकिन वह बहुत अच्छी महिला हैं, है ना?" ड्यूक ने गहरे आश्चर्य का भाव दिखाया। "अरे, बेसिन, क्या तुम्हें नहीं दिखता कि प्रिंसेस तुम्हारा मज़ाक उड़ा रही हैं?" (प्रिंसेस ने कभी ऐसी कोई चीज़ करने का सपना भी नहीं देखा था।)

"वह तुम्हारी तरह ही जानती है कि गैलार्डोनेट एक पुराना ज़हर है," मैडम डी गुएरमांटेस ने बात जारी रखी, जिनकी शब्दावली—जो आमतौर पर इन्हीं पुरानी अभिव्यक्तियों तक सीमित थी—उतनी ही स्वादिष्ट थी जितनी कि पैम्पिल की बेहतरीन किताबों में मिलने वाले वे व्यंजन; ऐसे व्यंजन जो असल ज़िंदगी में अब बहुत दुर्लभ हो गए हैं—जिनमें जेली, मक्खन, ग्रेवी और बटेर सब कुछ असली होता है, जिनमें किसी भी तरह की मिलावट की गुंजाइश नहीं होती, और जिनमें नमक भी खास तौर पर ब्रिटनी के नमक-दलदलों से मंगाया जाता है। उनके लहजे और शब्दों के चुनाव से ऐसा लगता था कि डचेस की बातचीत की बुनियाद सीधे गुएरमांटेस से ही आई है। इस तरह, डचेस अपने भतीजे सेंट-लूप से बिल्कुल अलग थीं—जो न जाने कितने नए विचारों और अभिव्यक्तियों का शिकार था। जब किसी का मन कांट के विचारों और बॉदलेयर की अभिलाषाओं से उद्वेलित हो, तो हेनरी IV जैसी उत्कृष्ट फ्रेंच लिखना मुश्किल होता है; इसका अर्थ यह था कि डचेस की भाषा की यह शुद्धता ही उनकी सीमाओं का संकेत थी, और यह कि उनमें—उनकी बुद्धि और उनकी संवेदनशीलता दोनों ही—हर तरह के नएपन से अछूती रही थीं। यहाँ भी, मैडम डी गुएरमांटेस का मन मुझे ठीक इसी वजह से आकर्षित करता था—क्योंकि वह उन चीज़ों को बाहर रखता था (जो ठीक मेरे अपने विचारों का ही विषय थीं), और उन सभी चीज़ों को सहेजकर रखता था जिन्हें इस 'बहिष्कार' के बल पर बचाया जा सका था; यह थी उन सुडौल शरीरों की मोहक ऊर्जा, जिसे सोचने की थका देने वाली ज़रूरत, किसी नैतिक चिंता या मानसिक उथल-पुथल ने कभी विकृत नहीं किया था। उनका मन—जिसकी बनावट मेरे अपने मन से कहीं अधिक प्राचीन थी—मेरे लिए ठीक उसी चीज़ के समान था जो मुझे समुद्र तट पर लड़कियों के उस छोटे से समूह के जुलूस को देखकर महसूस हुई थी। मैडम डी गुएरमांटेस ने मुझे—अपनी स्वाभाविक विनम्रता और दूसरों की बौद्धिक गरिमा के प्रति उचित सम्मान के द्वारा—वश में करके और नियंत्रित करके, वह सारी ऊर्जा और... कॉम्ब्रे के आस-पास के एक कुलीन परिवार की एक छोटी, क्रूर लड़की का आकर्षण—जिसे बचपन से ही घुड़सवारी की आदत थी, जो बिल्लियों को सताती थी, खरगोशों की आँखें निकाल लेती थी; और हालाँकि वह सदाचार की एक मिसाल बनी रही, फिर भी कुछ साल पहले वह प्रिंस डी सागन की सबसे शानदार प्रेमिका भी बन सकती थी। बस, वह यह समझने में असमर्थ थी कि मैं उसमें क्या खोज रहा था—उसके ऐतिहासिक नाम

का आकर्षण, और उसका वह छोटा सा अंश जो मुझे उसमें मिला था—गुएरमांटेस की एक ग्रामीण विरासत। क्या हमारे संबंध एक ऐसी गलतफहमी पर आधारित थे, जो तब सामने आए बिना नहीं रह सकती थी, जब मेरी श्रद्धा—उस अपेक्षाकृत श्रेष्ठ महिला के लिए होने के बजाय, जैसा कि वह खुद को मानती थी—किसी अन्य ऐसी ही साधारण महिला की ओर मुड़ जाती, जिसमें भी वही अनजाने आकर्षण की झलक हो? एक ऐसी गलतफहमी जो पूरी तरह से स्वाभाविक है, और जो मुझ जैसे एक युवा स्वप्नदर्शी और दुनियादारी जानने वाली एक महिला के बीच हमेशा बनी रहेगी—एक ऐसी गलतफहमी, जो फिर भी, गहरे तौर पर...

...उसे परेशान करती हैं, जब तक कि उसने अपनी कल्पना शक्ति की प्रकृति को नहीं पहचान लिया है और उन अनिवार्य निराशाओं का अपना हिस्सा नहीं पा लिया है, जो उसे लोगों में—ठीक वैसे ही जैसे थिएटर में, अपनी यात्राओं में और वास्तव में प्रेम में—मिलनी ही हैं। एम. डी गुएरमांटेस ने (एल्स्टिर के एस्पैरगस और फ़ाइनेंसियर चिकन के बाद लाए गए एस्पैरगस के बाद) यह घोषणा की कि खुले आसमान के नीचे उगाए गए हरे एस्पैरगस—जिनके बारे में एक आकर्षक लेखक, जो अपना नाम 'ई. डी क्लेरमोंट-टोनरे' लिखते हैं, ने बड़े ही अनोखे अंदाज़ में कहा है कि "उनमें अपनी बहनों जैसी प्रभावशाली कड़ापन नहीं होता"—उन्हें अंडों के साथ खाया जाना चाहिए। एम. डी ब्रियोते ने जवाब दिया, "जैसा कि लोग कहते हैं, 'एक आदमी का भोजन दूसरे के लिए ज़हर हो सकता है'।" "चीन के कैंटन प्रांत में, किसी के सामने परोसी जाने वाली सबसे बड़ी स्वादिष्ट चीज़, पूरी तरह से सड़े हुए 'ऑर्टोलन' पक्षी के अंडों की एक डिश होती है।" एम. डी ब्रियोते—जिन्होंने 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' पत्रिका में मॉर्मन लोगों पर एक निबंध लिखा था—केवल सबसे कुलीन और संभ्रांत लोगों के ही बीच उठते-बैठते थे; लेकिन इन लोगों में भी वे केवल उन्हीं के यहाँ जाते थे जिनकी बौद्धिक क्षमता की कोई विशेष प्रतिष्ठा होती थी। इसका नतीजा यह होता था कि यदि वे किसी महिला के घर नियमित रूप से जाते थे, तो इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि उस महिला का अपना एक 'साहित्यिक-सामाजिक जमावड़ा' (salon) है। वे समाज से घृणा करने का दिखावा करते थे, और अपनी हर 'डचेस' (कुलीन महिला) को बारी-बारी से यह यकीन दिलाते थे कि वे केवल उसकी बुद्धिमत्ता और सुंदरता के कारण ही उससे मिलने आते हैं। वे सभी उनकी बात पर

यकीन कर लेती थीं। जब भी, दिल में भारी उदासी लिए हुए, वे प्रिंसेस डी पार्म के यहाँ किसी बड़ी पार्टी में जाने के लिए खुद को राज़ी करते थे, तो वे उन सभी महिलाओं को अपने साथ चलने के लिए बुला लेते थे—ताकि उनका हौसला बना रहे—और इस तरह वे वहाँ भी केवल अपने करीबी लोगों के एक छोटे से समूह के बीच ही घूमते हुए प्रतीत होते थे। ताकि एक बुद्धिजीवी के तौर पर उनकी प्रतिष्ठा, उनकी सांसारिक सफलता के बाद भी बनी रहे, और 'गुएरमांटेस' लोगों की सोच के कुछ सिद्धांतों को अपनाते हुए, वे नाच-गाने के मौसम के चरम पर भी, कुलीन महिलाओं के साथ लंबी-लंबी वैज्ञानिक यात्राओं पर निकल पड़ते थे। और जब कोई महिला—जो दिखावा करने वाली (snob) होती थी, और जिसके पास अभी तक समाज में कोई निश्चित स्थान नहीं बना होता था—हर जगह आने-जाने लगती थी, तो वे उस महिला को जानने या उससे परिचय करने से इनकार करने में बड़ी ही ज़बरदस्त और अड़ियल हठ दिखाते थे। अहंकारियों के प्रति उसकी नफ़रत असल में उसके अपने अहंकार का ही एक रूप थी, लेकिन इसने सीधे-सादे लोगों को (यानी, हर किसी को) यह यकीन दिला दिया कि वह अहंकार से पूरी तरह मुक्त है। "बाबल को तो हमेशा सब कुछ पता होता है," डचेस डी गुएरमांटेस ने हैरानी से कहा। "मुझे लगता है कि वह देश कितना प्यारा होगा, जहाँ आप पूरी तरह से निश्चिंत हो सकते हैं कि आपका दूधवाला आपको सचमुच सड़े हुए अंडे देगा—ऐसे अंडे जो किसी धूमकेतु वाले साल के हों। मैं खुद को उन अंडों में अपनी ब्रेड और मक्खन डुबोकर खाते हुए देख सकती हूँ। मुझे कहना पड़ेगा, आपको मौसी मैडलीन (श्रीमती डी विलेपैरिसिस) के यहाँ भी बिल्कुल वैसी ही चीज़ें मिलती हैं, जहाँ हर चीज़ सड़ी-गली हालत में परोसी जाती है—अंडे भी।" फिर, जब श्रीमती डी अर्पाजोन ने इस पर आपत्ति जताई, तो वह बोलीं, "लेकिन मेरी प्यारी फिली, तुम यह बात उतनी ही अच्छी तरह जानती हो जितनी मैं। तुम तो अंडे के अंदर मुर्गी को भी देख सकती हो। मुझे बस यह समझ नहीं आता कि वे अंडे से बाहर गिरते क्यों नहीं हैं। वहाँ तुम्हें ऑमलेट नहीं मिलता, बल्कि पूरा का पूरा मुर्गियों का बाड़ा ही मिल जाता है। तुमने कल रात वहाँ खाने पर न आकर बहुत समझदारी दिखाई; वहाँ तो कार्बोलिक एसिड में पकी हुई एक मछली परोसी गई थी! मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ, वह कोई खाने की मेज़ नहीं थी, बल्कि किसी ऑपरेशन-टेबल जैसी लग रही थी। सच कहूँ तो, नॉरपोइस ने वफ़ादारी की हद ही पार कर दी—उसने तो और खाना भी माँग लिया!" "मुझे

लगता है कि मैंने तुम्हें भी उस रात खाने पर वहीं देखा था, जब उसने श्री ब्लोच पर ज़ोरदार हमला किया था" (श्री डी गुएरमांटेस, शायद किसी यहूदी नाम को और भी ज़्यादा विदेशी दिखाने के लिए, 'ब्लोच' शब्द में आने वाले 'ch' का उच्चारण 'k' की तरह नहीं, बल्कि जर्मन शब्द 'hoch' की तरह करते थे) "जब श्री ब्लोच ने किसी 'पोइट' (कवि) के बारे में कहा था कि वह बहुत ही 'महान' है। चैटलेरॉल्ट ने तो श्री ब्लोच की टांगें तोड़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह बेचारा कुछ भी समझ नहीं पाया और उसे लगा कि मेरे भतीजे ने जो लात मारी है, वह उसके ठीक सामने बैठी किसी युवती के लिए थी।" (इस मोड़ पर, एम. डी गुएरमांटेस का चेहरा थोड़ा लाल हो गया।) "उन्हें यह एहसास नहीं था कि वे अपने 'शानदार' शब्दों को, जिन्हें वे हर जगह ऐसे ही उछाल रहे थे, इस्तेमाल करके हमारी मौसी को परेशान कर रहे थे। संक्षेप में, मौसी मैडलीन, जो अपनी ज़बान पर काबू नहीं रखतीं, उन पर बरस पड़ीं: 'सच में, जनाब, तो फिर एम. डी बॉसुएट के लिए आपने कौन सा विशेषण बचाकर रखा है?'" (एम. डी गुएरमांटेस को लगता था कि, जब किसी मशहूर नाम का ज़िक्र किया जाए, तो 'मोंसियर' और किसी अन्य शब्द का इस्तेमाल करना पूरी तरह से 'पुराने ज़माने का' तरीका है।) "इससे उन्हें अपनी औकात का पता चल गया, बिल्कुल सही।" "और इस एम. ब्लोच ने क्या जवाब दिया?" एमएमई. डी गुएरमांटेस की ओर से एक बेपरवाह लहजे में यह सवाल आया; उनके पास उस पल कोई नया विचार नहीं सूझ रहा था, इसलिए उन्हें लगा कि उन्हें अपने पति के जर्मन लहजे की नकल करनी चाहिए। "आह! मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ, एम. ब्लोच ने और इंतज़ार नहीं किया, वे अभी भी भाग ही रहे हैं।" "हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है कि उस शाम मैंने आपको वहाँ देखा था," एमएमई. डी गुएरमांटेस ने ज़ोर देकर कहा, मानो उनकी तरफ से कही गई इस याद में मेरे लिए कुछ बहुत ही तारीफ़ के काबिल बात छिपी हो। "मेरी मौसी के यहाँ हमेशा ही बहुत दिलचस्प माहौल रहता है। पिछली पार्टी में जो उन्होंने दी थी—और हाँ, उसी में मैं आपसे मिली थी—मैं आपसे पूछना चाहती थी कि वह बुज़ुर्ग सज्जन, जो हमारे पास से गुज़रे थे जहाँ हम बैठे थे, क्या वे फ्रांकोइस कोपी नहीं थे? आपको तो ज़रूर पता होगा कि कौन कौन है," उन्होंने आगे कहा; वे कवियों और कविता के साथ मेरे संबंधों से सचमुच ईर्ष्या करती थीं, और साथ ही मेरे प्रति 'लिहाज़' दिखाते हुए, वे मुझे दूसरों की नज़रों में एक बेहतर मुकाम पर पहुँचाना चाहती थीं।

दूसरे मेहमानों में एक नौजवान भी था जो साहित्य का बहुत अच्छा जानकार था। मैंने डचेस को यकीन दिलाया कि मैंने Mme. de Villeparisis की पार्टी में कोई मशहूर हस्ती नहीं देखी। "क्या!" उसने हैरानी से जवाब दिया, जिससे पता चला कि साहित्यकारों के लिए उसका आदर और समाज के लिए उसकी नफ़रत, जितनी वह कहती थी—शायद जितनी वह सोचती भी थी —उससे कहीं ज़्यादा ऊपरी थी। "क्या! वहाँ कोई मशहूर लेखक नहीं थे! तुमने तो मुझे हैरान ही कर दिया! अरे, मैंने तो वहाँ हर तरह के बिल्कुल ही अजीब लोग देखे!" मुझे वह शाम एक बहुत ही मामूली सी घटना की वजह से साफ़-साफ़ याद है, जो उस पार्टी में हुई थी। Mme. de Villeparisis ने Bloch का परिचय Mme. Alphonse de Rothschild से करवाया था, लेकिन मेरे दोस्त ने नाम ठीक से सुना नहीं और यह सोचकर कि वह किसी बुज़ुर्ग अंग्रेज़ महिला से बात कर रहा है जो थोड़ी सी पागल है, उस ऐतिहासिक सुंदरी की बकबक भरी बातों का जवाब सिर्फ़ एक-दो शब्दों में ही दिया। तभी Mme. de Villeparisis ने जब उसका परिचय किसी और से करवाया, तो इस बार बिल्कुल साफ़-साफ़ कहा: "Baronne Alphonse de Rothschild।" यह सुनते ही Bloch की नसों में अचानक और एक साथ लाखों और सामाजिक रुतबे से जुड़े इतने सारे विचार दौड़ गए—जिन्हें अलग-अलग करके समझना ज़्यादा समझदारी होती—कि मानो एक पल के लिए उसका दिल और दिमाग दोनों ही काम करना बंद कर गए हों। उसने उस प्यारी बुज़ुर्ग महिला के सामने ही ज़ोर से कहा: "काश मुझे पहले पता होता!" यह एक ऐसी बेवकूफ़ी भरी बात थी जिसकी वजह से वह कम से कम एक हफ़्ते तक सो नहीं पाया। उसकी यह बात कोई बहुत ज़्यादा दिलचस्प तो नहीं थी, लेकिन मुझे यह इस बात के सबूत के तौर पर याद रह गई कि कभी-कभी इस ज़िंदगी में, किसी बहुत गहरी भावना के असर में आकर, लोग वही कह देते हैं जो उनके मन में होता है। "मुझे लगता है कि Mme. de Villeparisis पूरी तरह से... नैतिक नहीं हैं," Princesse de Parme ने कहा। वह जानती थी कि अच्छे लोग डचेस की मौसी के यहाँ नहीं जाते थे, और डचेस की अपनी बातों से उसे यह भी समझ आ गया था कि अब उसके बारे में खुलकर बात की जा सकती है। लेकिन, जब Mme. de Guermantes को यह आलोचना पसंद नहीं आई, तो उसने झट से आगे कहा: "हालाँकि, ज़ाहिर है, इतनी ऊँची दर्जे की समझदारी हर चीज़ को माफ़ कर देती

है।" "लेकिन आप भी मेरी मौसी के बारे में वही राय रखती हैं जो बाकी सब रखते हैं," डचेस ने जवाब दिया, "जो कि, सच कहूँ तो, पूरी तरह से गलत है। ठीक यही बात तो मेमे (Mémé) कल ही मुझसे कह रही थीं।" वह शरमा गईं; उनकी आँखों में एक ऐसी याद की झलक तैर गई जिससे मैं अनजान था। मैंने यह अंदाज़ा लगाया कि एम. डी शार्लस ने उनसे मेरा न्योता रद्द करने के लिए कहा होगा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने रॉबर्ट को भेजकर मुझसे कहा था कि मैं उनके घर न जाऊँ। मुझे ऐसा लगा कि वह शर्म—जो मेरे लिए उतनी ही समझ से बाहर थी—जिसने ड्यूक के गालों को तब लाल कर दिया था जब उन्होंने अपने भाई का ज़िक्र किया था, उसका कारण यह नहीं हो सकता। "मेरी बेचारी मौसी—उनकी छवि हमेशा एक 'पुराने ज़माने की महिला' के तौर पर बनी रहेगी, एक ऐसी महिला जिसकी हाज़िरजवाबी बेमिसाल थी और जिसके जज़्बात बेकाबू थे। और सच कहूँ तो, पेरिस में उनसे ज़्यादा 'मध्यम-वर्गीय', गंभीर और साधारण सोच वाला कोई और इंसान नहीं है। उन्हें इतिहास में 'कला की संरक्षक' के तौर पर याद किया जाएगा—जिसका मतलब यह है कि वह कभी एक महान चित्रकार की प्रेमिका थीं, हालाँकि वह चित्रकार उन्हें कभी यह समझा ही नहीं पाया कि 'चित्र' असल में होता क्या है; और जहाँ तक उनकी निजी ज़िंदगी की बात है—तो वह एक 'बिगड़ी हुई औरत' होने से कोसों दूर थीं; वह तो शादी-शुदा ज़िंदगी के लिए ही बनी थीं, बचपन से ही उनके स्वभाव में एक आदर्श पत्नी के गुण कूट-कूटकर भरे थे। यही वजह है कि जब वह अपने पति को (जो कि वैसे भी एक घटिया इंसान था) अपने साथ रखने में नाकाम रहीं, तो उसके बाद उन्होंने जितने भी प्रेम-संबंध बनाए—उन सभी को उन्होंने उतनी ही गंभीरता से लिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई 'पवित्र विवाह' हो; वही संवेदनशीलता, वही झगड़े, और वही वफ़ादारी। इसी से यह साबित होता है कि ऐसे रिश्ते अक्सर सबसे ज़्यादा सच्चे होते हैं; आप पाएँगे कि पतियों के मुकाबले ऐसे 'प्रेमी' ज़्यादा होते हैं जो अपने बिछड़ने वाले साथी के गम में पूरी तरह टूट जाते हैं।" "फिर भी, ओरियन, अगर आप अपने जीजाजी पालामेडे का ही उदाहरण लें—जिनके बारे में आप अभी बात कर रही थीं—तो दुनिया की कोई भी प्रेमिका यह सपना भी नहीं देख सकती कि उसके गुज़र जाने पर उसे उतना शोक मनाया जाएगा, जितना उस बेचारी 'मैडम डी शार्लस' के लिए मनाया गया।" "आह!" डचेस ने जवाब दिया, "महामहिम, आपको मुझे इस बात की इजाज़त देनी होगी कि मैं इस मामले में उनसे पूरी तरह सहमत नहीं हूँ। हर

इंसान यह नहीं चाहता कि उसके गुज़रने पर ठीक एक ही तरीके से शोक मनाया जाए; हम सभी की अपनी-अपनी पसंद होती है।" "फिर भी, उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्हें एक तरह से 'पूजना' ही शुरू कर दिया था। यह सच है कि लोग कभी-कभी मरे हुए लोगों के लिए ऐसे काम कर जाते हैं, जो शायद वे उनके जीवित रहते कभी न करते।" "एक बात तो यह है," मैडम ने पलटकर जवाब दिया। डी गुएरमांटेस ने एक स्वप्निल लहजे में कहा, जो उनके मज़ाकिया इरादे को छिपा रहा था, "हम उनके अंतिम संस्कार में जाते हैं, जो हम जीवित लोगों के लिए कभी नहीं करते!" एम. डी ब्रियोटे ने एम. डी गुएरमांटेस की ओर एक शरारती नज़र डाली, मानो वह डचेस की हाज़िरजवाबी पर उन्हें हँसाने की कोशिश कर रहे हों। "साथ ही, मैं साफ़-साफ़ मानती हूँ," एम. डी गुएरमांटेस ने आगे कहा, "कि जिस तरह से मैं चाहूँगी कि मेरा कोई प्रेमी मेरे लिए शोक मनाए, वह वैसा बिल्कुल नहीं होगा जैसा मेरे देवर ने अपनाया था।" ड्यूक का चेहरा तमतमा गया। उन्हें अपनी पत्नी का इस तरह जल्दबाज़ी में राय देना पसंद नहीं था, खासकर एम. डी चार्लस के बारे में। "तुम बहुत ज़्यादा नखरे दिखाती हो। उसका शोक सबके लिए एक मिसाल था," उन्होंने उसे सख़्ती से डांटा। लेकिन डचेस में अपने पति से पेश आने का वह साहस था जो जानवर सिखाने वालों में होता है, या उन लोगों में जो किसी पागल के साथ रहते हैं और उसे नाराज़ करने से नहीं डरते। "ओह, ठीक है, जैसा तुम चाहो—वह सचमुच एक मिसाल है, मैंने कभी नहीं कहा कि वह नहीं है; वह हर रोज़ कब्रिस्तान जाता है और उसे बताता है कि उसने आज दोपहर के खाने पर कितने लोगों को बुलाया था; वह उसे बहुत याद करता है..."

...बहुत ज़्यादा, लेकिन—ठीक वैसे ही जैसे वह किसी चचेरे भाई, दादी या बहन के लिए शोक मनाता। यह किसी पति का शोक नहीं है। यह सच है कि वे दोनों संत-तुल्य थे, और यही बात इसे और भी असाधारण बनाती है।" M. de Guermantes, अपनी पत्नी की बकबक से चिढ़कर, अपनी पहले से ही भरी हुई आँखों से उस पर एक भयानक, स्थिर नज़र जमा दी। "मैं बेचारी Mémé के बारे में कुछ भी बुरा नहीं कहना चाहती—जो, वैसे, आज शाम आ नहीं

सकी," डचेस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं पूरी तरह मानती हूँ कि उसके जैसा कोई नहीं है; वह बहुत ही प्यारा है। उसमें एक ऐसी नज़ाकत और दिल की ऐसी गरमाहट है, जो आमतौर पर पुरुषों में देखने को नहीं मिलती। Mémé का दिल तो बिल्कुल औरतों जैसा है!" "तुम जो कह रही हो, वह बिल्कुल बेतुका है," M. de Guermantes ने तीखे स्वर में बात काटते हुए कहा। "Mémé में औरतों जैसी कोई बात नहीं है; मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता, जो उससे ज़्यादा मर्दाना हो।" "लेकिन मैं यह कहाँ कह रही हूँ कि उसमें ज़रा भी औरतों जैसी कोई बात है? कम-से-कम मेरी बात समझने की ज़हमत तो उठाओ," डचेस ने पलटकर जवाब दिया। "जब भी कोई उसके भाई का ज़िक्र करता है, तो वह हमेशा ऐसा ही हो जाता है," उसने Princesse de Parme की ओर मुड़ते हुए अपनी बात में जोड़ा। "यह बहुत ही प्यारा है; उसे इस तरह बोलते सुनना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। दो भाइयों के बीच का आपसी प्यार—इससे बढ़कर अच्छी चीज़ और कोई हो ही नहीं सकती," Princess ने जवाब दिया—ठीक वैसे ही, जैसे कोई आम इंसान जवाब देता। क्योंकि यह मुमकिन है कि कोई जन्म से तो शाही खानदान का हो, लेकिन मानसिक रूप से उसका जुड़ाव पूरी तरह से आम लोगों की दुनिया से हो।

“ओरियान, जैसा कि हम आपके परिवार के बारे में बात कर रहे हैं,” राजकुमारी ने कहा, “मैंने कल आपके भतीजे सेंट-लूप को देखा था; मुझे लगता है कि वह आपसे कुछ काम करवाना चाहते हैं।” ड्यूक डी गुएरमांटेस ने अपना गंभीर माथा सिकोड़ा। जब वह स्वयं कोई सेवा करने के इच्छुक नहीं थे, तो उन्होंने अपनी पत्नी को यह ज़िम्मेदारी लेने से मना किया, क्योंकि वह जानते थे कि अंत में बात वही होगी और जिन लोगों से डचेस को मदद मांगनी पड़ेगी, वे इसे घर के सामूहिक खर्चे के रूप में ही लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे यह अनुरोध केवल पति द्वारा किया गया हो। “उन्होंने मुझे इसके बारे में खुद क्यों नहीं बताया?” डचेस ने कहा। "वह कल यहाँ आया था और कुछ घंटे रुका, और भगवान ही जानता है कि उसने खुद को कितना उबाऊ बना लिया। अगर उसमें हमारे कई परिचितों की तरह मूर्ख बने रहने की समझ होती, तो वह किसी और से ज़्यादा मूर्ख नहीं होता। उसकी ज्ञान की आड़ ही इतनी भयानक है। वह

खुले दिमाग से रहना चाहता है—उन सभी चीजों के लिए खुला दिमाग रखना चाहता है जिन्हें वह नहीं समझता। वह आपसे मोरक्को के बारे में बात करता है। यह बेहद निराशाजनक है।"
"राहेल की वजह से वह वहाँ वापस नहीं जा सकता," प्रिंस डी फ़ोइक्स ने कहा। "ज़रूर, अब जब उन्होंने रिश्ता तोड़ दिया है," एम. डी ब्रेउटे ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "रिश्ता तोड़ने की बात तो दूर, मैंने उसे कुछ दिन पहले रॉबर्ट के कमरे में देखा था, वे बिल्कुल भी ऐसे नहीं लग रहे थे जैसे उनका झगड़ा हुआ हो, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ," प्रिंस डी फ़ोइक्स ने जवाब दिया, जिन्हें रॉबर्ट की शादी की संभावनाओं को नुकसान पहुँचाने वाली हर अफवाह फैलाने का शौक था, और शायद इसी वजह से वे उस रिश्ते के बीच-बीच में फिर से शुरू होने की अफवाहों से गुमराह हो गए थे जो लगभग खत्म हो चुका था।
"राहेल मुझसे तुम्हारे बारे में बात कर रही थी, मैं उसे सुबह-सुबह शैंप्स-एलिसी जाते हुए ऐसे ही देखती हूँ; वह एक तरह से बेफिक्र रहती है, जैसा कि तुम कहते हो, 'बिना किसी बंधन के', एक तरह की 'डेम ऑक्स कैमेलियास', हालांकि यह सिर्फ एक लाक्षणिक अर्थ है।" यह बात प्रिंस वॉन ने मुझसे कही थी, जिन्हें हमेशा फ्रांसीसी साहित्य और पेरिस के मुहावरों से परिचित होने का दिखावा करना पसंद था।
"अरे वाह, ये तो मोरक्को ही था!" राजकुमारी ने इस मौके का फायदा उठाते हुए कहा। "मोरक्को में उसे आखिर क्या चाहिए?" एम. डी गुएरमांटेस ने सख्ती से पूछा; "ओरियान वहाँ उसके लिए कुछ भी नहीं कर सकती, जैसा कि वह अच्छी तरह जानता है।" "उसे लगता है कि उसने ही रणनीति का आविष्कार किया है," मैडम डी गुएरमांटेस ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "और फिर वो छोटी-छोटी बातों के लिए भी अटपटे शब्दों का इस्तेमाल करता है, फिर भी वो अपने पत्रों में गलतियाँ करने से नहीं रुकता। पिछले दिन उसने घोषणा की कि उसे कुछ बेहतरीन आलू मिले हैं और उसने एक शानदार स्टेज बॉक्स लिया है।" "वो लैटिन बोलता है," ड्यूक ने और भी आगे बढ़कर कहा। "क्या! लैटिन?" राजकुमारी चौंक गई। "सच में! अगर मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ तो महोदया ओरियान से पूछ सकती हैं।" "जी हाँ, बिल्कुल, महोदया; उस दिन उन्होंने बिना सोचे-समझे सीधे हमसे कहा: 'मुझे 'सिक ट्रांजिट ग्लोरिया मुंडी' का इससे अधिक मार्मिक उदाहरण नहीं पता।' मैं अब यह वाक्यांश आपके सामने दोहरा सकती हूँ क्योंकि अनगिनत पूछताछ और भाषाविदों की मदद से हम इसे पुनः तैयार करने में सफल

रहे, लेकिन रॉबर्ट ने इसे बिना रुके ही बोल दिया, यह समझना मुश्किल था कि इसमें लैटिन शब्द भी हैं, वह बिल्कुल 'मलाडे इमेजिनेयर' के किसी पात्र की तरह थे। और यह सब ऑस्ट्रिया की महारानी की मृत्यु के संदर्भ में था!" "बेचारी औरत!" राजकुमारी चिल्लाई, "वह कितनी अद्भुत महिला थीं।" "हाँ," डचेस ने उत्तर दिया, "थोड़ी पागल, थोड़ी जिद्दी, लेकिन वह एक बहुत अच्छी महिला थीं, एक दयालु, नेक दिल वाली पागल; उनके बारे में एक ही बात जो मुझे कभी समझ नहीं आई, वह यह थी कि उन्होंने अपने दाँतों को अपने अनुरूप क्यों नहीं बनवाया; वे हमेशा वाक्य के बीच में ही ढीले हो जाते थे और उन्हें बीच में ही रुकना पड़ता था वरना वे उन्हें निगल जातीं।" “राहेल मुझसे तुम्हारे बारे में बात कर रही थी, उसने मुझे बताया कि युवा सेंट-लूप तुम्हारी पूजा करता है, वह उससे ज़्यादा तुम्हें पसंद करता है,” राजकुमार वॉन ने मुझसे कहा, बोलते समय वह राक्षस की तरह खाना खा रहा था, उसका चेहरा लाल था, और उसकी लगातार मुस्कान से उसके दांत दिख रहे थे। “लेकिन अगर ऐसा है तो वह मुझसे ईर्ष्या करती होगी और मुझसे नफरत करती होगी,” मैंने कहा। “बिल्कुल नहीं, उसने तुम्हारे बारे में बहुत अच्छी बातें बताईं। अगर राजकुमार डी फ़ोइक्स की प्रेमिका उसे छोड़कर तुम्हें पसंद करती तो शायद उसे ईर्ष्या होती। समझ नहीं आया? मेरे साथ घर चलो, मैं तुम्हें सब समझा देता हूँ।” “मुझे खेद है कि मैं नहीं आ सकता, मुझे ग्यारह बजे एम. डी चार्लस के पास जाना है।” "कल उन्होंने मुझे आज शाम अपने साथ भोजन करने के लिए बुलाया था, लेकिन पौने ग्यारह बजे के बाद आने को मना किया था। लेकिन अगर आपको उनके पास जाना ही है, तो कम से कम मेरे साथ थिएटर फ़्रांसे तक आ जाइए, आप आस-पास ही रहेंगे," राजकुमार ने कहा, और उन्हें यकीनन लगा होगा कि इस आखिरी शब्द का अर्थ 'निकटता' या शायद 'केंद्र' था।

लेकिन उनके खुरदुरे, फिर भी आकर्षक लाल चेहरे पर उभरी हुई आँखों ने मुझे डरा दिया और मैंने यह कहकर मना कर दिया कि मेरा एक मित्र मुझसे मिलने आ रहा है। मुझे यह जवाब किसी भी तरह से अपमानजनक नहीं लगा। हालाँकि, राजकुमार ने शायद इसका कुछ और ही अर्थ निकाला, क्योंकि उन्होंने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा।

"मुझे सचमुच नेपल्स की रानी से मिलने जाना चाहिए; उनके लिए यह कितना दुख की बात होगी," प्रिंसेस डी पार्म ने कहा (या कम से कम मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने कहा)। क्योंकि

उनके शब्द मुझे अस्पष्ट रूप से ही सुनाई दिए, क्योंकि प्रिंस वॉन ने मुझसे धीमी आवाज़ में बात की थी, और शायद उन्हें डर था कि अगर वे ज़ोर से बोलेंगे तो प्रिंस डी फॉक्स उन्हें सुन लेंगे। "अरे नहीं!" डचेस ने जवाब दिया, "मुझे नहीं लगता कि यह कोई दुख की बात है।" "बिल्कुल नहीं! तुम हमेशा हद से ज़्यादा बोलती हो, ओरियान," एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, और चट्टान के उस हिस्से पर खड़े हो गए जो लहर का सामना करके उसे और ऊँचा उछाल देता है। "बेसिन मुझसे भी बेहतर जानता है कि मैं सच कह रही हूँ," डचेस ने जवाब दिया, "लेकिन उसे लगता है कि आपको देखकर उसे गंभीर दिखना पड़ेगा, महोदया, और उसे डर है कि मैं आपको चौंका दूँगी।" "ओह, कृपया नहीं, मैं आपसे विनती करती हूँ," प्रिंसेस डी पार्म ने डचेस डी गुएरमांटेस के यहाँ बिताए उन स्वादिष्ट शुक्रवारों के अपने विवरण में ज़रा से भी बदलाव के डर से चीखते हुए कहा, यह वर्जित फल जिसे चखने का अधिकार स्वयं स्वीडन की रानी को अभी तक नहीं मिला था। "क्यों, यह स्वयं बेसिन ही था जिसे उसने बताया, जब उसने उससे उचित रूप से दुखी भाव से कहा: 'लेकिन रानी शोक में हैं; कृपया, महामहिम, यह किसके लिए इतना बड़ा शोक है?' - 'नहीं, यह गहरा शोक नहीं है, यह हल्का शोक है, बिल्कुल हल्का शोक है, यह मेरी बहन के लिए है।' सच तो यह है कि वह इससे बहुत खुश है, जैसा कि बेसिन अच्छी तरह जानती है। उसने हमें उसी शाम एक पार्टी में बुलाया और मुझे दो मोती दिए। काश, उसकी बहन की मौत हर दिन होती! बहन की मौत पर रोने के बजाय, वह खूब हंस रही थी। शायद वह मन ही मन रॉबर्ट की तरह कह रही होगी, 'समय कैसे बीतता है — मैं भूल ही जाती हूं,' उसने विनम्रता से कहा, जबकि वह जानती थी कि सब कुछ कैसे बीतता है।

यह सब कहते हुए श्रीमती डी गुएरमांटेस केवल व्यंग्य कर रही थीं, और पूरी तरह से बनावटीपन से, क्योंकि नेपल्स की रानी, डचेस डी एलेनकॉन की तरह, एक दुखद भाग्य की शिकार थीं, उनका हृदय अत्यंत दयालु था और वे अपने रिश्तेदारों के लिए पूरी ईमानदारी से शोक मना रही थीं। श्रीमती डी गुएरमांटेस अपनी चचेरी बहनों, उन कुलीन बवेरियन बहनों को इतनी अच्छी तरह जानती थीं कि उन्हें इस बात का पता होना स्वाभाविक था। "वह मोरक्को वापस नहीं जाना चाहते," प्रिंसेस डी पार्म ने कहा, रॉबर्ट के नाम का सहारा लेते हुए, जो श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अनजाने में ही उन्हें बताया था। "मुझे लगता है कि आप जनरल डी

मॉन्सरफ्यूइल को जानती हैं।" "थोड़ा-बहुत," डचेस ने उत्तर दिया, जो उस अधिकारी की घनिष्ठ मित्र थीं। राजकुमारी ने बताया कि सेंट-लूप क्या चाहते थे। "अरे वाह, हाँ, अगर मैं उन्हें देखूँ तो—संभव है कि मैं उनसे मिल सकूँ," डचेस ने इनकार न करते हुए जवाब दिया, क्योंकि जनरल डी मॉन्सरफ्यूइल से मिलने के अवसर उनसे कुछ माँगने की बात आते ही तेज़ी से कम होते जा रहे थे। हालाँकि, इस अनिश्चितता से ड्यूक संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने अपनी पत्नी को बीच में ही रोकते हुए कहा: "तुम अच्छी तरह जानती हो कि तुम उनसे नहीं मिल पाओगी, ओरियान, और इसके अलावा तुमने उनसे दो चीज़ें माँगी हैं जो उन्होंने नहीं की हैं। मेरी पत्नी को लोगों की भलाई करने का बहुत शौक है," वे और भी ज़्यादा क्रोधित होते हुए बोले, ताकि राजकुमारी को अपना अनुरोध वापस लेने के लिए मजबूर कर सकें, बिना उनकी पत्नी के अच्छे स्वभाव पर कोई सवाल उठाए और ताकि श्रीमती डी पार्म सारा दोष उनके अपने चरित्र पर डाल दें, जो मूल रूप से बाधा डालने वाला था। “रॉबर्ट मॉन्सरफ्यूइल से जो चाहे हासिल कर सकता था। लेकिन, क्योंकि उसे खुद नहीं पता कि वह क्या चाहता है, इसलिए वह हमसे ही माँग करवाता है क्योंकि वह जानता है कि इस पूरे मामले को बिगाड़ने का इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है। ओरियान ने मॉन्सरफ्यूइल से बहुत सारी कृपाएँ माँगी हैं। अब अगर वह भी कुछ माँगे तो मॉन्सरफ्यूइल के लिए मना करने का एक बहाना बन जाएगा।” “ओह, तो फिर बेहतर होगा कि डचेस कुछ न करें,” श्रीमती डी पार्म ने कहा। “बिल्कुल!” ड्यूक ने बात खत्म करते हुए कहा। “बेचारे जनरल, वह फिर से चुनाव हार गए,” राजकुमारी ने रॉबर्ट से ध्यान हटाने के लिए कहा। “ओह, यह कोई गंभीर बात नहीं है, यह तो सिर्फ सातवीं बार है,” ड्यूक ने कहा, जो खुद राजनीति से रिटायर होने के कारण दूसरों की चुनाव हार की खबरें सुनकर काफी खुश होते थे। “उन्होंने अपनी पत्नी को एक और बच्चा देकर खुद को तसल्ली दी है।” “क्या! क्या बेचारी श्रीमती डी मॉन्सरफ्यूइल फिर से किसी दिलचस्प हालत में हैं?” राजकुमारी चिल्लाईं। "क्यों नहीं," ड्यूक ने जवाब दिया, "यह वही डिवीजन है जहां बेचारा जनरल कभी भी प्रवेश करने में असफल नहीं हुआ है।"

इसके बाद के समय में मुझे लगातार ऐसे भोजों में आमंत्रित किया जाता रहा, भले ही मैं एक छोटे समूह के साथ ही क्यों न होता, जिनमें मैंने कभी कल्पना की थी कि अतिथि संत-चैपल में प्रेरितों की तरह बैठे हैं। वे वास्तव में वहाँ प्रारंभिक ईसाइयों की तरह एकत्रित होते थे, न केवल

भौतिक पोषण प्राप्त करने के लिए, जो संयोगवश उत्तम था, बल्कि एक प्रकार के सामाजिक यूखारिस्ट में भाग लेने के लिए; कुछ रात्रिभोजों के दौरान, मैं अपने मेज़बानों के सभी मित्रों से परिचित हो गया, वे मित्र जिनके प्रति उन्होंने मुझे एक ऐसा स्नेहपूर्ण संरक्षण दिया (जैसे कि उनके मन में मेरे लिए हमेशा से एक प्रकार का माता-पिता जैसा स्नेह रहा हो) कि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जो ड्यूक और डचेस के प्रति अपने कर्तव्य में चूक न करता यदि उसने मेरे नाम को अपनी सूची में शामिल किए बिना कोई भोज आयोजित किया होता। और उसी समय, जब मैं गुएरमांटेस के तहखानों में छिपी हुई उन यकेम वाइन में से एक की चुस्की ले रहा था, तो मैंने ड्यूक द्वारा स्वयं सावधानीपूर्वक तैयार और संशोधित की गई विभिन्न व्यंजनों के अनुसार तैयार किए गए ऑर्टोलन का स्वाद चखा। हालाँकि, जो व्यक्ति पहले ही कई बार उस रहस्यमय भोज में शामिल हो चुका था, उसके लिए उसका सेवन अनिवार्य नहीं था। भोजन के बाद, श्रीमान और श्रीमती डी गुएरमांटेस के पुराने मित्र उनसे मिलने आए, 'दांतों की तीलियों के साथ,' जैसा कि श्रीमती ने बताया। स्वान ने बिना किसी उम्मीद के कहा होगा, और सर्दियों में बड़े ड्राइंग रूम की रोशन और गर्म रोशनी में एक कप टिल्यूल (एक प्रकार का पेय) लिया होगा, और गर्मियों में बाहर बगीचे के छोटे से आयताकार हिस्से के अंधेरे में एक गिलास संतरे का जूस पिया होगा। बगीचे में उन शामों में गुएरमांटे परिवार के बीच संतरे के जूस के अलावा किसी और चीज़ का कोई ज़िक्र नहीं था। इसका एक तरह का रस्मी महत्व था। अन्य पेय पदार्थ शामिल करना परंपरा का उल्लंघन माना जाता, ठीक वैसे ही जैसे फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में कोई बड़ा उत्सव नाटक या संगीत होने पर उत्सव नहीं रह जाता। यह माना जाता है कि आप लोग—भले ही आप पाँच सौ हों—केवल राजकुमारी डी गुएरमांटे से मिलने आए हैं। लोग मेरे प्रभाव पर आश्चर्यचकित होते थे क्योंकि मैं इस संतरे के जूस में उबले हुए चेरी या नाशपाती के रस से भरा एक जग डलवाने में सक्षम था। इस वजह से मुझे प्रिंस डी'एग्रीजेंट से चिढ़ होने लगी, जो उन सभी लोगों की तरह थे जिनमें कल्पनाशीलता की कमी तो थी, लेकिन लालच नहीं था, और वे इस बात में गहरी दिलचस्पी लेते थे कि कोई क्या पी रहा है और थोड़ा सा चखने की अनुमति मांगते थे। इसका मतलब यह था कि हर बार, मिस्टर डी'एग्रीजेंट मेरा हिस्सा कम करके मेरा आनंद खराब कर देते थे। क्योंकि इस फल के रस की प्यास बुझाने के लिए कभी भी पर्याप्त मात्रा नहीं दी जा सकती। इससे ज्यादा निराशाजनक

कुछ नहीं हो सकता कि फल के रंग को स्वाद में इस तरह बदल दिया जाए कि वह पकने के बाद अपने खिलने के बीते मौसम में वापस चला गया हो। बसंत ऋतु में बगीचे की तरह लालिमा लिए, या शायद फलों के पेड़ों के नीचे बहने वाली ठंडी हवा की तरह रंगहीन, यह रस बूंद-बूंद करके सांस लेने और निहारने देता है, और मिस्टर डी'एग्रीजेंट मुझे नियमित रूप से इसे पूरा पीने से रोकते थे। इन सब के बावजूद, पारंपरिक संतरे का रस टिल्यूल की तरह बना रहा। इन साधारण समारोहों में भी सामाजिक मेलजोल का उतना ही अच्छा प्रबंध किया गया था। इस लिहाज से, निस्संदेह, श्रीमान और श्रीमती डी गुएरमांटेस के मित्र, जैसा कि मैंने शुरू में सोचा था, अपने बाहरी रूप-रंग से कहीं अधिक भिन्न थे। कई बुजुर्ग पुरुष डचेस से मिलने आते थे, और उन्हें हमेशा की तरह पेय पदार्थ भी मिलता था, लेकिन उनका स्वागत अक्सर सौहार्दपूर्ण नहीं होता था। यह घमंड के कारण तो नहीं हो सकता था, क्योंकि वे स्वयं एक ऐसे उच्च वर्ग के थे जिनसे कोई श्रेष्ठ नहीं था; न ही वैभव के प्रति प्रेम के कारण; शायद उन्हें वैभव पसंद था, लेकिन यदि सामाजिक परिस्थितियाँ इतनी कठोर न होतीं, तो वे वैभव का एक शानदार उदाहरण देख रहे होते, क्योंकि इन्हीं शामों को एक बेहद धनी फाइनेंसर की आकर्षक पत्नी स्पेन के राजा के लिए दो दिनों तक आयोजित अपने भव्य शिकार समारोह में उन्हें शामिल करने के लिए दुनिया का कुछ भी देने को तैयार थीं। फिर भी उन्होंने उनका निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था, और श्रीमती डी गुएरमांटेस के घर पर होने की जानकारी लेने के लिए वे हर बार ज़रूर आते थे। उन्हें इस बात का भी यकीन नहीं था कि उन्हें वहाँ ऐसे विचार मिलेंगे जो पूरी तरह से उनके अपने विचारों से मेल खाते हों, या कोई गहरी भावनाएँ; श्रीमती डी गुएरमांटेस कभी-कभी ड्रेफस मामले, गणतंत्र, धर्म-विरोधी कानूनों, या यहाँ तक कि दबे स्वर में खुद पर, अपनी कमजोरियों पर, अपनी बातचीत की नीरसता पर ऐसी टिप्पणियाँ कर देती थीं, जिन्हें उन्हें अनदेखा करने का दिखावा करना पड़ता था। निस्संदेह, यदि वे वहाँ आने की अपनी आदत बनाए रखते थे, तो यह सांसारिक चीजों में उनके उत्कृष्ट प्रशिक्षण, सामाजिक भोजन की उत्तम गुणवत्ता के प्रति उनकी स्पष्ट जागरूकता, उसके परिचित, आश्वस्त करने वाले, रसदार स्वाद के प्रति उनकी जागरूकता, जो मिलावट या दोष से मुक्त होता था, जिसकी उत्पत्ति और इतिहास से वे उतनी ही अच्छी तरह परिचित थे जितनी कि उन्हें भोजन परोसने वाली महिला, और इस मामले में वे खुद की कल्पना से कहीं अधिक

'महान' बने रहते थे। अब, इस अवसर पर, रात के खाने के बाद जिन आगंतुकों से मेरा परिचय कराया गया, उनमें संयोग से वही जनरल डी मॉन्सेरफ्यूइल भी थे जिनके बारे में प्रिंसेस डी पार्म बात कर रही थीं, जबकि श्रीमती... डी गुएरमांटेस, जिनके ड्राइंग रूम में वे अक्सर आते-जाते थे, उन्हें पता नहीं था कि वे उस शाम वहाँ होंगे। मेरा नाम सुनते ही उन्होंने मेरे सामने ऐसे झुककर प्रणाम किया मानो मैं सर्वोच्च युद्ध परिषद का अध्यक्ष हूँ। मैंने सोचा था कि यह शायद किसी गहरी अनिच्छा के कारण था, जिसमें ड्यूक, प्रेम में नहीं तो बुद्धि में, अपनी पत्नी के साथी थे, कि डचेस ने अपने भतीजे को एम. डी मॉन्सेरफ्यूइल से मिलवाने से लगभग इनकार कर दिया था। और मुझे इसमें एक ऐसी उदासीनता दिखाई दी जो और भी निंदनीय थी क्योंकि राजकुमारी के कुछ शब्दों से मुझे ऐसा लगा था कि रॉबर्ट एक खतरनाक पद पर थे जहाँ से उन्हें हटाना बुद्धिमानी होगी। लेकिन यह श्रीमती की वास्तविक दुर्भावना के कारण था। डी गुएरमांटेस, मुझे बहुत गुस्सा आया जब प्रिंसेस डी पार्म ने दबी आवाज़ में सुझाव दिया कि वह खुद कुछ कह सकती हैं और जनरल के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का हवाला देते हुए, डचेस ने उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की। "लेकिन महोदया," वह चिल्लाईं, "मोंसरफ्यूइल का नई सरकार में कोई रुतबा या प्रभाव नहीं है। आप अपनी बात व्यर्थ ही कहेंगी।" "मुझे लगता है वह हमारी बातें सुन सकता है," राजकुमारी ने डचेस को इशारा करते हुए कहा कि वह इतनी ज़ोर से न बोले। अपनी आवाज़ धीमी किए बिना: "महामहिम, डरने की ज़रूरत नहीं है, वह बिल्कुल बहरा है," डचेस ने कहा, उनका हर शब्द जनरल तक स्पष्ट रूप से पहुँचा। "बात यह है कि मुझे लगता है एम. डी सेंट-लूप एक ऐसी जगह पर हैं जो बहुत सुरक्षित नहीं है," राजकुमारी ने कहा। "अब क्या किया जाए?" डचेस ने जवाब दिया। "वह भी बाकी सब लोगों की तरह ही मुश्किल में है, फर्क सिर्फ इतना है कि उसने खुद ही वहाँ भेजे जाने की गुजारिश की थी। वैसे, नहीं, यह जगह सच में खतरनाक नहीं है; अगर होती, तो आप समझ सकते हैं कि मैं उसकी मदद करने के लिए कितना बेताब होता। मुझे रात के खाने के दौरान संत-जोसेफ से इस बारे में बात करनी चाहिए थी। उनका प्रभाव कहीं ज्यादा है और वे वाकई मेहनती हैं। लेकिन, जैसा कि आप देख रहे हैं, वे अब नहीं रहे। फिर भी, उनसे पूछना इस संत-जोसेफ से पूछने से कहीं ज्यादा आसान होगा, जिनके तीन बेटे इस समय मोरक्को में हैं और उन्होंने उन्हें छुड़ाने के लिए अर्जी देने से इनकार कर दिया है; वे शायद इस बात पर आपत्ति जताएँ। चूंकि

महाराज इस पर जोर दे रहे हैं, तो मैं संत-जोसेफ से बात करूँगा—अगर मैं उनसे दोबारा मिलूँ, या फिर ब्यूट्रेलिस से। लेकिन अगर मैं उनमें से किसी से भी न मिलूँ, तो आपको रॉबर्ट पर दया नहीं दिखानी चाहिए। हमें कल ही ठीक-ठीक बताया गया था कि वह कहाँ है। मुझे यकीन है कि वह इससे बेहतर जगह की कामना नहीं कर सकता।"

"कितना सुंदर फूल है! मैंने ऐसा फूल पहले कभी नहीं देखा। ओरियन, तुम्हारे जैसा कोई नहीं है जिसके घर में इतनी अद्‌भुत चीज़ें हों," प्रिंसेस डी पार्म ने कहा। उन्हें डर था कि कहीं जनरल डी मॉन्सरफ्यूइल ने डचेस की बातें सुन न ली हों, इसलिए अब वह बातचीत का विषय बदलना चाहती थीं। मैंने देखा और उस पौधे को पहचान लिया, जिसे मैंने एल्स्टिर को बनाते हुए देखा था। "मुझे बहुत खुशी है कि तुम्हें ये पसंद आए; ये बहुत प्यारे हैं। ज़रा इनके छोटे-छोटे बैंगनी मखमली कॉलर तो देखो! इनमें बस एक ही कमी है—जैसा कि बहुत सुंदर और अच्छे कपड़े पहनने वाले लोगों के साथ भी हो सकता है—कि इनका नाम बहुत ही भद्दा है और इनमें से बहुत बुरी गंध आती है। इसके बावजूद, मुझे ये बहुत पसंद हैं। लेकिन, दुख की बात यह है कि ये मुरझा रहे हैं।" "लेकिन ये तो गमले में उग रहे हैं, ये कटे हुए फूल तो नहीं हैं," प्रिंसेस ने कहा। "नहीं," डचेस ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "लेकिन बात तो वही है, क्योंकि ये सभी 'महिलाएँ' हैं। यह एक ऐसा पौधा है जिसमें 'महिलाएँ' और 'पुरुष' एक ही तने पर नहीं उगते। मैं उन लोगों जैसी हूँ जो अपने घर में 'मादा कुत्ता' पालते हैं। मुझे अपने फूलों के लिए एक 'पति' ढूँढ़ना पड़ता है। वरना, मुझे कोई 'बच्चे' नहीं मिलेंगे!" "यह तो बहुत ही अजीब बात है। क्या तुम यह कहना चाहती हो कि प्रकृति में...?" "हाँ! कुछ ऐसे कीड़े होते हैं जिनका काम शादी करवाना होता है—ठीक वैसे ही जैसे राजा-रानियों की शादी में होता है—यानी किसी और के ज़रिए, बिना दूल्हा-दुल्हन के एक-दूसरे को देखे। और इसलिए, मैं आपको यकीन दिलाती हूँ, मैं हमेशा अपने नौकर से कहती हूँ कि वह मेरे पौधे को जितनी बार हो सके खिड़की पर रखे—कभी आँगन की तरफ़, तो कभी बगीचे की तरफ़—इस उम्मीद में कि वह ज़रूरी कीड़ा वहाँ आ जाए। लेकिन इसकी संभावना बहुत कम है। ज़रा सोचिए, सबसे पहले तो उसे अपनी ही प्रजाति और विपरीत लिंग के किसी दूसरे कीड़े द्वारा देखा जाना चाहिए; और फिर उसके मन में यह ख्याल आना चाहिए कि वह हमारे घर आकर 'विज़िटिंग कार्ड'

(मुलाक़ात का संदेश) छोड़ जाए। अब तक तो वह आया नहीं है; मुझे लगता है कि मेरा पौधा अभी भी 'निर्दोष जीवन' के प्रतीक—सफेद फूल—का हकदार है, लेकिन सच कहूँ तो, थोड़ी-बहुत 'बेशर्मी' (यानी शादी) मुझे ज़्यादा पसंद आती। हमारे आँगन में जो शानदार पेड़ लगा है, उसके साथ भी ठीक यही हाल है; वह बिना संतान के ही मर जाएगा, क्योंकि वह ऐसी प्रजाति का है जो इन इलाकों में बहुत ही दुर्लभ है। उसके मामले में, शादी को पूरा करने का ज़िम्मा हवा पर होता है, लेकिन आँगन की दीवार थोड़ी ज़्यादा ही ऊँची है।" "अरे हाँ, बिल्कुल सही कहा," एम. डी ब्रियोते ने कहा, "आपको बस उस पेड़ की चोटी से दो-एक इंच काट देना चाहिए; बस इतना ही काफ़ी होगा। कुछ ऐसे काम होते हैं जिन्हें करने का तरीका हर किसी को पता होना चाहिए। डचेस, आज शाम आपने हमें जो बेहतरीन आइसक्रीम खिलाई, उसमें वनीला का जो स्वाद था, वह 'वनीला ट्री' (वनीला का पेड़) नाम के एक पौधे से आता है। इस पौधे में ऐसे फूल खिलते हैं जिनमें नर और मादा—दोनों तरह के अंग होते हैं, लेकिन उनके बीच एक तरह की ठोस दीवार खड़ी होती है, जो उन्हें आपस में मिलने से रोकती है। और इसलिए, हमें उन फूलों से कभी कोई फल नहीं मिल पाता था—जब तक कि रीयूनियन द्वीप का रहने वाला एक युवा अश्वेत (नीग्रो) युवक, जिसका नाम 'एल्बिन्स' था (वैसे, किसी अश्वेत व्यक्ति के लिए यह नाम थोड़ा अजीब है, क्योंकि 'एल्बिन्स' का मतलब 'सफेद' होता है), उसे एक शानदार विचार नहीं सूझा: उसने एक सुई की नोक का इस्तेमाल करके उन अलग-अलग अंगों को आपस में मिला दिया।" "बाबाल, तुम तो कमाल के हो! तुम्हें तो हर चीज़ के बारे में पता है," डचेस खुशी से चिल्लाईं। "लेकिन ओरियान, तुमने भी तो मुझे ऐसी-ऐसी बातें बताई हैं जिनके बारे में मुझे ज़रा भी जानकारी नहीं थी," प्रिंसेस डी पार्म ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा। "मुझे आपकी महारानी को यह समझाना होगा कि यह स्वान ही है जिसने हमेशा मुझसे वनस्पति विज्ञान के बारे में सारी बातें की हैं। कभी-कभी जब हम किसी टी-पार्टी या संगीत समारोह में जाने से ऊब जाते थे, तो हम देहात की ओर निकल पड़ते थे, और वह मुझे फूलों के बीच होने वाले असाधारण 'विवाह' दिखाते थे—जो इंसानी शादियों में जाने से कहीं ज़्यादा मज़ेदार होता था—न कोई शादी का नाश्ता और न ही चर्च में भीड़-भाड़। हमारे पास कभी भी बहुत दूर जाने का समय नहीं होता था। अब जब मोटर-कारें आ गई हैं, तो यह बहुत ही आनंददायक होगा। दुर्भाग्य से, इस बीच उन्होंने खुद एक और भी ज़्यादा चौंकाने वाली शादी

कर ली है, जिससे सब कुछ बहुत मुश्किल हो गया है। ओह, मैडम, ज़िंदगी एक बहुत ही भयानक चीज़ है; हम अपना सारा समय ऐसी चीज़ें करने में बिताते हैं जिनसे हम ऊब जाते हैं, और जब महज़ इत्तेफ़ाक से हमारी मुलाक़ात किसी ऐसे व्यक्ति से होती है जिसके साथ हम जाकर सचमुच कोई दिलचस्प चीज़ देख सकते हैं, तो उसे स्वान जैसी शादी करनी पड़ जाती है। अपने वनस्पति अभियानों को छोड़ने और किसी घटिया इंसान से मिलने के लिए मजबूर होने—इन दो विकल्पों के सामने, मैंने पहली वाली मुसीबत को चुना। इसके अलावा, जब बात यहाँ तक आ ही गई है, तो इतनी दूर जाने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी। ऐसा लगता है कि यहाँ, मेरे अपने छोटे से बगीचे में, आधी रात के मुकाबले दिन-दहाड़े ज़्यादा अजीबोगरीब चीज़ें होती हैं—ठीक वैसे ही जैसे 'बोइस डे बोलोग्ने' में होती हैं! बस फ़र्क इतना है कि उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता, क्योंकि फूलों के बीच यह सब बहुत ही सादगी से होता है; आप देखते हैं कि नारंगी रंग की एक छोटी सी बौछार होती है, या फिर कोई धूल से सनी हुई मक्खी अपने पैर पोंछने या नहाने के लिए आती है, और फिर रेंगते हुए फूल के अंदर चली जाती है। और बस, काम हो जाता है!" "जिस कैबिनेट पर यह पौधा रखा है, वह भी बहुत शानदार है; मुझे लगता है कि यह 'एम्पायर' शैली का है," राजकुमारी ने कहा। वह डार्विन और उनके अनुयायियों के कार्यों से परिचित नहीं थीं, इसलिए वह डचेस की इन मज़ाकिया बातों का मतलब नहीं समझ पाईं। "यह बहुत प्यारा है, है ना? मुझे बहुत खुशी है कि मैडम को यह पसंद आया," डचेस ने जवाब दिया, "यह एक बहुत ही शानदार कलाकृति है। मुझे आपको यह बताना ही होगा कि मुझे हमेशा से ही 'एम्पायर' शैली बहुत पसंद रही है—तब भी, जब यह फ़ैशन में नहीं थी। मुझे याद है, 'गुएरमांटेस' में मेरी अपनी सास के साथ इस बात पर बहुत ज़बरदस्त अनबन हो गई थी, क्योंकि मैंने उन्हें ऊपर अटारी से कुछ चीज़ें नीचे लाने के लिए कह दिया था।"

...वो सारा शानदार 'एम्पायर' स्टाइल का फ़र्नीचर जो बेसिन को मोंटेस्क्यू परिवार से विरासत में मिला था, और जिसका इस्तेमाल उसने उस हिस्से को सजाने के लिए किया था जहाँ हम रहते थे।" एम. डे गुएरमांटेस मुस्कुराए। फिर भी उन्हें यह ज़रूर याद रहा होगा कि असल में घटनाएँ बिल्कुल अलग तरह से घटी थीं। लेकिन, प्रिंसेस डे लॉम्स की अपनी सास के 'बुरे

ज़ौक़' पर की गई मज़ाकिया टिप्पणियाँ उस थोड़े समय के दौरान एक परंपरा बन गई थीं, जब प्रिंस अपनी पत्नी के प्यार में डूबे हुए थे; प्रिंस का अपनी पत्नी के प्रति प्यार तो शायद खत्म हो गया था, लेकिन अपनी सास की बौद्धिक कमज़ोरी के प्रति उनकी अवमानना बनी रही—एक ऐसी अवमानना जो, फिर भी, उनके प्रति काफ़ी लगाव और सम्मान के साथ-साथ चलती थी। "इयेना परिवार के पास भी वैसी ही आरामकुर्सी है जिस पर 'वेडवुड' के मेडल लगे हैं; वह बहुत प्यारी चीज़ है, लेकिन मुझे अपनी वाली ज़्यादा पसंद है," डचेस ने उसी निष्पक्ष भाव से कहा, मानो चर्चा में शामिल उन दोनों चीज़ों में से कोई भी उनकी अपनी न हो। "बेशक, मुझे पता है कि उनके पास कुछ ऐसी अद्भुत चीज़ें हैं जो मेरे पास नहीं हैं।" प्रिंसेस डे पार्म चुप रहीं। "लेकिन यह बिल्कुल सच है; आपकी हाईनेस ने उनका संग्रह (कलेक्शन) नहीं देखा है। ओह, आपको सचमुच किसी दिन मेरे साथ वहाँ चलना चाहिए; यह पेरिस की सबसे शानदार चीज़ों में से एक है। आप तो यही कहेंगी कि मानो कोई संग्रहालय (म्यूज़ियम) ही जीवंत हो उठा हो।" और चूँकि यह सुझाव डचेस की 'गुएरमांटेस-शैली' वाली सबसे साहसी हरकतों में से एक था—क्योंकि प्रिंसेस डे पार्म की नज़र में इयेना परिवार के लोग केवल 'पद-हड़पने वाले' (usurpers) थे, और उनका बेटा भी उन्हीं की तरह 'ड्यूक डे गुआस्टाला' की उपाधि धारण करता था—इसलिए, इस बात को कहते हुए, मैडम डे गुएरमांटेस खुद को रोक नहीं पाईं (अपनी मौलिकता के प्रति उनका प्रेम, प्रिंसेस डे पार्म के प्रति अपेक्षित सम्मान पर इतना हावी हो गया था) और उन्होंने अपने अन्य मेहमानों की ओर देखकर एक शरारती, मुस्कुराती हुई नज़र डाली। उन मेहमानों ने भी मुस्कुराने की कोशिश की—वे एक साथ ही डरे हुए, हैरान-परेशान, और सबसे बढ़कर इस बात से बेहद खुश थे कि वे 'ओरियन' की इस बिल्कुल 'ताज़ा' और अनोखी बात के प्रत्यक्ष गवाह बन रहे थे, और इसे अपने साथ 'बिल्कुल गरमा-गरम' (ताज़ा-ताज़ा) ले जा सकते थे। उन्हें बस आधा ही झटका लगा था, क्योंकि वे जानते थे कि डचेस में यह हुनर था कि वह किसी बड़ी सफलता को और भी ज़्यादा रोमांचक और मज़ेदार बनाने के लिए, कोर्टवाज़ियर के सारे पूर्वाग्रहों को दरकिनार कर देती थी। क्या उसने पिछले कुछ सालों में प्रिंसेस मैथिल्डे और ड्यूक डी'ओमाले को एक साथ नहीं मिलाया था? वही ड्यूक जिसने प्रिंसेस के अपने भाई को वह मशहूर खत लिखा था: "मेरे परिवार में सभी पुरुष बहादुर हैं और स्त्रियाँ पवित्र"? और चूँकि राजकुमार उन पलों में भी शाही ही बने रहते

हैं, जब वे यह भूलने की कोशिश करते हैं कि वे राजकुमार हैं, इसलिए ड्यूक डी'ओमाले और प्रिंसेस मैथिल्डे ने मैडम डी गुएरमांटेस के यहाँ इतना ज़्यादा आनंद लिया था कि उसके बाद उन्होंने एक रक्षात्मक गठबंधन बना लिया था। उनमें अतीत को भुला देने की वैसी ही क्षमता थी, जैसी लुई XVIII ने तब दिखाई थी, जब उन्होंने फूशे को अपना मंत्री बनाया था—वही फूशे जिसने उनके भाई को मृत्युदंड देने के पक्ष में वोट दिया था। मैडम डी गुएरमांटेस अब प्रिंसेस मूरत और नेपल्स की रानी के बीच मुलाकात करवाने की वैसी ही एक योजना पर काम कर रही थीं। इसी बीच, प्रिंसेस डी पार्म उतनी ही शर्मिंदा नज़र आईं, जितने कि नीदरलैंड्स और बेल्जियम के सिंहासन के वारिस—जिन्हें क्रमशः 'प्रिंस ऑफ़ ऑरेंज' और 'ड्यूक ऑफ़ ब्राबैंट' कहा जाता है—शायद तब होते, जब कोई उन्हें एम. डी मेली नेस्ले (प्रिंस ऑफ़ ऑरेंज) और एम. डी चार्लस (ड्यूक ऑफ़ ब्राबैंट) से मिलवाने की पेशकश करता। लेकिन, इससे पहले कि कुछ और हो पाता, डचेस—जिसे स्वान और एम. डी चार्लस ने मिलकर (हालाँकि चार्लस तो 'इएनास' के अस्तित्व को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करने पर अड़े हुए थे) बड़ी मुश्किल से 'एम्पायर शैली' की तारीफ़ करना सिखाया था—अचानक बोल उठीं: "सच कहूँ, मैडम, मैं आपको बता नहीं सकती कि आपको वह जगह कितनी खूबसूरत लगेगी! मुझे यह मानना पड़ेगा कि 'एम्पायर शैली' ने हमेशा से ही मुझे अपनी ओर आकर्षित किया है। लेकिन 'इएनास' के यहाँ तो यह सचमुच किसी भ्रम या मायाजाल जैसा लगता है।" "उस तरह का—मैं क्या कहूँ—मिस्र के अभियान से आया हुआ प्रभाव, और साथ ही प्राचीन काल से हमारे अपने समय तक का विस्तार—वो सारी चीज़ें जो हमारे घरों में घुस आती हैं; सोफ़ों के पैरों के पास दुबककर बैठने वाले स्फिंक्स; मोमबत्ती-दानों से लिपटे हुए साँप; एक विशालकाय 'म्यूज़' (कला की देवी) जो आपके लिए एक छोटी सी मशाल थामे खड़ी है ताकि आप 'बुइयोट' (ताश का खेल) खेल सकें, या जो चुपके से मेंटलपीस पर चढ़ गई है और आपकी घड़ी के सहारे टिकी हुई है; और फिर वो सारी 'पोम्पेई' शैली की लालटेनें; नाव के आकार के छोटे-छोटे बिस्तर—जो ऐसे लगते हैं मानो अभी-अभी नील नदी में तैरते हुए मिले हों, जिन्हें देखकर आपको उम्मीद होती है कि अभी मूसा उनमें से बाहर निकलेंगे; और बिस्तर के पास रखी मेज़ों पर सरपट दौड़ते हुए प्राचीन रथ..." "वो 'एम्पायर' शैली की कुर्सियाँ बैठने में बहुत आरामदायक नहीं होतीं," राजकुमारी ने धीरे से कहा। "नहीं," डचेस ने सहमति जताई,

"लेकिन," उसने तुरंत मुस्कुराते हुए अपनी बात पर ज़ोर देते हुए आगे कहा: "मुझे उन महोगनी की सीटों पर—जो रूबी रंग के मखमल या हरे रेशम से ढकी होती हैं—बैठकर थोड़ा असहज महसूस करना अच्छा लगता है। मुझे उस योद्धा जैसी असहजता पसंद है, जो 'कुरुले' (शासकीय) कुर्सी के अलावा और कुछ नहीं समझता, और जो अपने मुख्य बैठक-कक्ष के बीचों-बीच अपने 'फ़ैसेस' (अधिकार-चिह्न) को एक-दूसरे पर चढ़ाकर रखता है और अपनी विजय-मालाओं का ढेर लगा देता है। मैं आपको यकीन दिला सकती हूँ कि 'येना' परिवार के घर में, कोई भी व्यक्ति एक पल के लिए भी यह सोचने के लिए नहीं रुकता कि वह कितना आरामदायक महसूस कर रहा है—खासकर तब, जब उसके ठीक सामने दीवार पर 'फ्रेस्को' शैली में बनी हुई, विजय की देवी (Victory) की एक विशाल और मज़बूत तस्वीर दिखाई देती है। मेरे पति शायद यह कहेंगे कि मैं एक बहुत ही बुरी राजभक्त हूँ, लेकिन जैसा कि आप जानती हैं, मैं मौजूदा व्यवस्था से बहुत ज़्यादा असंतुष्ट हूँ; मैं आपको यकीन दिला सकती हूँ कि उन लोगों के घर में जाकर..."

...सभी बड़े 'N's और सभी मधुमक्खियों से प्यार करना चाहिए। हे भगवान, आखिर हमारे राजाओं के राज में, इतने सालों तक हमें कोई बहुत ज़्यादा शान-शौकत तो मिली नहीं थी; और इसलिए, ये योद्धा जो इतनी सारी मुकुटें घर ले आए कि उन्होंने उन्हें कुर्सियों की बाजुओं पर भी सजा दिया—मुझे कहना पड़ेगा कि मुझे यह सब बहुत ही आकर्षक लगता है! आपकी महारानी को सचमुच ऐसा करना चाहिए।" "क्यों, मेरी प्यारी, अगर तुम्हें ऐसा लगता है," राजकुमारी ने कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि यह इतना आसान नहीं होगा।" "लेकिन महारानी पाएंगी कि सब कुछ बहुत आसानी से हो जाएगा। वे बहुत अच्छे लोग हैं, और बेवकूफ़ बिल्कुल नहीं हैं। हम वहाँ मादाम दे शेवरूज़ को भी ले गए थे," डचेस ने आगे कहा, यह जानते हुए कि इस उदाहरण का कितना असर होगा, "वह तो मंत्रमुग्ध ही हो गईं। उनका बेटा सचमुच बहुत ही मिलनसार है। मैं कुछ ऐसा कहने जा रही हूँ जो शायद पूरी तरह से उचित न हो," उसने बात जारी रखी, "लेकिन उसके पास एक बेडरूम है, और उससे भी ज़्यादा खास बात यह है कि उसमें एक ऐसा बिस्तर है, जिस पर मैं सोना बहुत पसंद करूँगी—बेशक उसके बिना! और इससे भी ज़्यादा अनुचित बात यह है कि एक बार जब वह बीमार था और उसी बिस्तर पर लेटा हुआ था, तो मैं उससे मिलने गई थी। उसके बगल में, बिस्तर के

फ्रेम पर एक लंबी 'सायरन' की आकृति बनी हुई थी, जो पूरी लंबाई में फैली हुई थी—एक बेहद खूबसूरत चीज़, जिसकी पूंछ 'मदर-ऑफ़-पर्ल' (सीप की चमक) से बनी थी और जिसके हाथ में किसी तरह के कमल के फूल थे।" "मैं आपको यकीन दिलाती हूँ," मैडम डी गुएरमांटेस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। उन्होंने अपनी बोलने की गति धीमी कर दी ताकि वे शब्द और भी ज़्यादा उभरकर सामने आएँ—जिन शब्दों को वे अपने सुंदर होठों की बनावट से गढ़ती हुई लग रही थीं, और जिन्हें वे अपने लंबे, हाव-भाव से भरे हाथों से खींचकर बाहर निकाल रही थीं। बोलते समय उनकी नज़र राजकुमारी पर टिकी हुई थी—एक कोमल, स्थिर और गहरी नज़र। "कि खजूर के पत्तों और बगल में रखे सुनहरे ताज के साथ, वह दृश्य बेहद मार्मिक था; यह बिल्कुल गुस्ताव मोरो की पेंटिंग 'डेथ एंड द यंग मैन' (मृत्यु और युवा पुरुष) की ही तरह सजाया गया था (आपकी महारानी, ज़ाहिर है, उस महान कृति के बारे में जानती ही होंगी)।" राजकुमारी डी पार्म, जो उस चित्रकार का नाम तक नहीं जानती थीं, उन्होंने अपने सिर को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया और बड़े उत्साह से मुस्कुराईं, ताकि वे उस चित्र के प्रति अपनी तारीफ़ ज़ाहिर कर सकें। लेकिन उनके हाव-भाव की वह तीव्रता उस रोशनी की जगह नहीं ले सकती थी—वह रोशनी जो हमारी आँखों से तब तक गायब रहती है, जब तक हम यह नहीं समझ जाते कि लोग हमसे क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं। "एक सुंदर लड़का, है ना?" उन्होंने पूछा। "नहीं, क्योंकि वह तो बिल्कुल एक टैपिर (एक तरह का जानवर) जैसा दिखता है। उसकी आँखें कुछ-कुछ वैसी ही हैं, जैसी किसी परदे पर बनी 'क्वीन हॉर्टेंस' की होती हैं। लेकिन शायद उसने यह नतीजा निकाल लिया है कि किसी पुरुष का ऐसा दिखना थोड़ा बेतुका है; इसलिए वह समानता उसके गालों की उस चमकदार सतह के नीचे कहीं खो गई है—जिस सतह के कारण वह असल में एक 'ममलुक' (प्राचीन मिस्र का सैनिक) जैसा दिखता है। उसे देखकर ऐसा लगता है, मानो हर सुबह कोई पॉलिश करने वाला उसके पास आता होगा।" "स्वान," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—अब वे वापस उस युवा ड्यूक के बिस्तर वाले प्रसंग पर लौट आई थीं—"उस 'सायरन' (आकर्षक स्त्री) और गुस्ताव मोरो की 'मृत्यु' वाली पेंटिंग के बीच की समानता देखकर हैरान रह गया था। लेकिन इसके अलावा," उन्होंने आगे जोड़ा—उनकी बोलने की गति अब तेज़ हो गई थी, हालाँकि लहजा अभी भी गंभीर था, ताकि सुनने वालों को और ज़्यादा हँसी आए—"वहाँ असल में ऐसा कुछ भी

नहीं था जो हमें चौंका सके; क्योंकि वह तो बस एक मामूली ज़ुकाम था, और वह युवा पुरुष पूरी तरह से ठीक हो गया।" "लोग कहते हैं कि वह एक घमंडी (snob) आदमी है?" एम. डी ब्रियोटे ने बीच में टोकते हुए पूछा। उनकी आँखों में एक शरारती चमक थी; वे उम्मीद कर रहे थे कि उन्हें भी उतना ही सटीक जवाब मिलेगा, मानो उन्होंने यह पूछा हो: "लोग मुझे बताते हैं कि उसके दाहिने हाथ में सिर्फ़ चार उंगलियाँ हैं।" "क्या सचमुच ऐसा है?" "हे भगवान—नहीं," मैडम डी गुर्मान्टेस ने एक प्यारी सी, दयालु मुस्कान के साथ जवाब दिया। "शायद देखने में वह थोड़ा-सा घमंडी लग सकता है, क्योंकि वह बहुत कम उम्र का है; लेकिन अगर मुझे पता चले कि वह सच में ऐसा है, तो मुझे हैरानी होगी—क्योंकि वह बहुत समझदार है," उन्होंने आगे कहा, मानो उनके मन में घमंड और समझदारी के बीच कोई मेल ही न हो। "उसमें हाज़िरजवाबी भी है; मैंने उसे कई बार बहुत मज़ेदार बातें करते सुना है," उन्होंने फिर कहा, किसी पारखी और विशेषज्ञ की तरह हँसते हुए—जैसे किसी व्यक्ति को 'मज़ेदार' बताने के लिए खुद बोलने वाले के चेहरे पर भी खुशी झलकनी ज़रूरी हो; या फिर जैसे बोलते समय ड्यूक डी गुआस्टाला की कही मज़ेदार बातें उनके ज़हन में ताज़ा हो रही हों। "खैर, चूंकि वह कहीं आता-जाता नहीं, इसलिए उसे अपना घमंड दिखाने का ज़्यादा मौका भी नहीं मिलता होगा," उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा—यह भूलते हुए कि उनकी इस बात से प्रिंसेस डी पार्म को उससे मेल-जोल बढ़ाने की कोई खास प्रेरणा नहीं मिलेगी। "मैं यह सोचे बिना नहीं रह पाती कि प्रिंस डी गुर्मान्टेस—जो उसे 'मैडम इएना' कहकर बुलाते हैं—क्या कहेंगे, अगर उन्हें पता चले कि मैं उससे मिलने गई थी।" "क्या!" डचेस ने बड़े ही जोश और हैरानी से कहा। "क्या तुम्हें नहीं पता कि हमने ही गिल्बर्ट को—" (अब उन्हें उस चीज़ को गिल्बर्ट को दे देने का बहुत पछतावा हो रहा था) "—एक पूरा का पूरा 'कार्ड-रूम' (ताश खेलने का कमरा) दे दिया था? वह 'एम्पायर स्टाइल' में बना था, जो हमें 'क्यू-क्यू' से मिला था, और वह सचमुच एक बेमिसाल चीज़ है! यहाँ उसे रखने की जगह नहीं थी, हालाँकि मुझे लगता है कि वह उसके पास होने के बजाय यहाँ ज़्यादा अच्छा लगता। वह चीज़ बेहद खूबसूरत है—आधी 'एट्रस्कन' शैली की, और आधी 'मिस्र' शैली की..." "'मिस्र' शैली की?" प्रिंसेस ने हैरानी से पूछा—जिन्हें 'एट्रस्कन' शब्द का मतलब कुछ खास समझ नहीं आया था। "हाँ, सच कहूँ तो—तुम जानती ही हो—दोनों का थोड़ा-थोड़ा मेल है। स्वान ने हमें यह बताया था; उसने मुझे सब कुछ

समझाया भी था—लेकिन तुम तो जानती ही हो, मैं कितनी बुद्धू हूँ।" "लेकिन फिर, मैडम, एक बात जो ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि एम्पायर कैबिनेट बनाने वालों का 'मिस्र' ऐतिहासिक मिस्र से बिल्कुल अलग है; न ही उनका 'रोम' असली रोमनों से मेल खाता है, और न ही उनकी 'एत्रुरिया'..." "बिल्कुल सही," राजकुमारी ने कहा। "नहीं, यह कुछ वैसा ही है जैसा कि दूसरे एम्पायर के ज़माने में 'लुई XV पोशाक' कहा जाता था—उस समय की बात, जब अन्ना डी मोंची और प्यारी ब्रिगोड की माँ अभी लड़कियाँ ही थीं। बेसिन अभी-अभी आपसे बात कर ही रहे थे..."

अब बीथोवेन के बारे में बात करते हैं। हमने कुछ दिन पहले उनका एक संगीत सुना था जो सचमुच बहुत अच्छा था, हालाँकि थोड़ा कड़ा था, और उसमें एक रूसी धुन थी। यह सोचकर दुख होता है कि उन्हें लगा था कि वह धुन रूसी है। ठीक वैसे ही, जैसे चीनी चित्रकारों को लगता था कि वे बेलिनी की नकल कर रहे हैं। इसके अलावा, एक ही देश में भी, जब भी कोई चीज़ों को थोड़े नए नज़रिए से देखना शुरू करता है, तो हज़ार में से नौ सौ निन्यानवे लोग यह देख ही नहीं पाते कि वह उनके सामने क्या पेश कर रहा है। उन्हें यह समझने में कम से कम चालीस साल लग जाते हैं।" "चालीस साल!" राजकुमारी ने घबराकर कहा। "हाँ, बिल्कुल," डचेस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, और अपनी बातों में और भी ज़ोर देते हुए (जो असल में मेरी ही बातें थीं, क्योंकि मैंने अभी-अभी उनसे ऐसा ही एक विचार ज़ाहिर किया था) —अपनी बोलने की खास शैली की वजह से, जो छपी हुई किताब में 'इटैलिक्स' (तिरछे अक्षरों) के बराबर होती है—उन्होंने आगे कहा: "यह किसी ऐसी प्रजाति के पहले अकेले सदस्य जैसा है जो अभी अस्तित्व में नहीं है, लेकिन भविष्य में उसकी संख्या बढ़ने वाली है; एक ऐसा सदस्य जिसके पास एक ऐसी खास समझ है जो उसकी पीढ़ी के बाकी इंसानों के पास नहीं है। मैं खुद को इसका उदाहरण नहीं दे सकती, क्योंकि इसके विपरीत, मुझे तो हमेशा से ही कोई भी दिलचस्प रचना शुरू से ही पसंद आई है, चाहे वह कितनी भी नई क्यों न हो। लेकिन सच कहूँ तो, कुछ दिन पहले मैं ग्रैंड डचेस के साथ लूव्र म्यूज़ियम में थी और हम इत्तेफ़ाक से मानेट की 'ओलंपिया' पेंटिंग के सामने से गुज़रे। आजकल तो कोई भी उसे देखकर ज़रा भी हैरान नहीं होता। वह तो बिल्कुल इंग्रेस की पेंटिंग जैसी लगती है! और फिर भी, भगवान ही जानता है कि उस पेंटिंग के लिए मुझे कितनी बहसें करनी पड़ीं, जो मुझे पूरी

तरह पसंद तो नहीं है, लेकिन यह बात पक्की है कि वह किसी की बनाई हुई रचना है।" "और क्या ग्रैंड डचेस ठीक हैं?" प्रिंसेस डी पार्म ने पूछा, जिनके लिए ज़ार की चाची, मानेट की मॉडल के मुकाबले कहीं ज़्यादा जानी-पहचानी थीं। "हाँ; हमने आपके बारे में बात की। आखिर," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—अपने विचार पर अड़ी रहते हुए —"असल बात तो यह है, जैसा कि मेरे जीजा पालामेड हमेशा कहते हैं, कि हमारे और बाकी दुनिया के बीच एक अजीब भाषा की दीवार खड़ी होती है। हालाँकि मैं यह मानती हूँ कि गिल्बर्ट के मामले में यह बात सबसे ज़्यादा सच साबित होती है।" अगर आपको Iénas के यहाँ जाना अच्छा लगता है, तो आपमें इतनी समझ तो है ही कि आप अपने कामों को इस बात से तय न होने दें कि वह बेचारा आदमी क्या सोचेगा—जो कि एक प्यारा, सीधा-सादा इंसान है, लेकिन असल में एक बिल्कुल ही अलग दुनिया में रहता है। मुझे अपने कोचवान, यहाँ तक कि अपने घोड़ों के भी ज़्यादा करीब और अपना जैसा महसूस होता है, बजाय उस आदमी के जो बार-बार इस बात पर अटका रहता है कि Philip the Bold या Louis the Fat के ज़माने में लोग क्या सोचते होंगे। ज़रा सोचिए, जब वह गाँव-देहात में घूमने निकलता है, तो अपने रास्ते से किसानों को हटाने के लिए एक छड़ी साथ ले जाता है—बिल्कुल ही दोस्ताना अंदाज़ में—और कहता है: 'चलो हटो, मसखरों!' सच कहूँ तो, जब वह मुझसे बात करता है, तो मुझे उतनी ही हैरानी होती है, जितनी तब होती अगर पुराने गोथिक मकबरों पर लेटी हुई किसी मूर्ति ने मुझसे बात की होती। यह बात अपनी जगह ठीक है कि वह 'ज़िंदा पत्थर' मेरा चचेरा भाई है; लेकिन वह मुझे डरा देता है, और मेरे मन में बस यही ख्याल आता है कि उसे उसके 'मध्ययुग' में ही रहने दिया जाए। इसके अलावा, मैं यह पूरी तरह मानती हूँ कि उसने कभी किसी का कत्ल नहीं किया है।" "मैं अभी-अभी Mme. de Villeparisis के यहाँ रात के खाने पर उससे मिलकर आया हूँ," जनरल ने कहा—लेकिन डचेस की इन मज़ाकिया बातों पर न तो वह मुस्कुराया और न ही उसने उनका समर्थन किया। "क्या M. de Norpois भी वहाँ थे?" Prince Von ने पूछा—जिसका ध्यान अभी भी 'नैतिक विज्ञान अकादमी' (Academy of Moral Sciences) पर ही अटका हुआ था। "अरे, हाँ," जनरल ने कहा। "असल में, वह आपके सम्राट के बारे में ही बात कर रहे थे।" "ऐसा लगता है कि सम्राट William बहुत ही बुद्धिमान हैं, लेकिन उन्हें Elstir की चित्रकारी पसंद नहीं है। ऐसा नहीं है कि मैं उनके खिलाफ कुछ कह

रही हूँ," डचेस ने कहा, "मैं उनकी बात से पूरी तरह सहमत हूँ। हालाँकि Elstir ने मेरा एक बहुत ही बढ़िया चित्र बनाया है। क्या आपने उसे नहीं देखा? वह बिल्कुल भी मेरे जैसा नहीं दिखता, लेकिन वह कला का एक बेमिसाल नमूना है। जब कोई उनके सामने चित्र बनवाने के लिए बैठता है, तो वह बहुत ही दिलचस्प बातें करते हैं। उन्होंने मुझे एक छोटी-सी बुढ़िया जैसा बना दिया है। यह Hals की मशहूर पेंटिंग 'Regents of the Hospital' की शैली में बना है।" "मुझे उम्मीद है कि आप उन 'महान चीज़ों' (sublimities) के बारे में जानते होंगे—जैसा कि मेरा भतीजा अक्सर कहा करता है," डचेस ने मेरी ओर मुड़ते हुए, अपने काले पंखों वाले पंखे को धीरे से हिलाते हुए कहा। अपनी कुर्सी पर बिल्कुल सीधी बैठी हुई, उसने बड़े ही शान से अपना सिर पीछे की ओर उछाला; क्योंकि, हालाँकि वह हमेशा से एक 'बड़ी महिला' (great lady) थी, फिर भी उसमें 'बड़ी महिला' होने का दिखावा करने की भी थोड़ी-बहुत आदत थी। मैंने कहा कि मैं एक बार एम्स्टर्डम और द हेग गया था, लेकिन अपने मन में किसी तरह का भ्रम पैदा होने से बचने के लिए—क्योंकि मेरे पास समय बहुत कम था—मैंने हार्लेम को छोड़ दिया था। "आह! द हेग! क्या शानदार गैलरी है!" एम. डी गुएरमांटेस ने उत्साह से कहा। मैंने उनसे कहा कि उन्होंने यकीनन वर्मीर की 'स्ट्रीट इन डेल्फ़्ट' (Street in Delft) की तारीफ़ की होगी। लेकिन ड्यूक विद्वान कम और घमंडी ज़्यादा था। इसलिए, उसने बड़े ही आत्म-संतुष्ट लहजे में जवाब देकर ही संतोष कर लिया—जैसा कि उसकी आदत थी, जब भी कोई उससे किसी गैलरी या 'सैलून' में लगी किसी ऐसी पेंटिंग के बारे में बात करता था, जिसे उसे याद नहीं होता था कि उसने कभी देखा है। "अगर वह देखने लायक है, तो मैंने उसे ज़रूर देखा होगा!" "क्या? आप हॉलैंड गए, और आपने हार्लेम नहीं देखा!" डचेस ने हैरानी से कहा। "अरे, भले ही आपके पास उस जगह पर बिताने के लिए सिर्फ़ पंद्रह मिनट ही क्यों न होते, फिर भी उन 'हॉल्स' (Halses) की पेंटिंग्स को देखना एक असाधारण अनुभव होता। मैं यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं करती कि कोई भी व्यक्ति, जो उन्हें किसी चलती हुई ट्राम-गाड़ी के ऊपर से बस एक झलक ही क्यों न देख ले—बिना रुके हुए—यह मानकर कि उन्हें बाहर लटकाया गया है..."

"...सड़क पर कोई नई चीज़ देखकर, वह अपनी आँखें काफ़ी चौड़ी कर लेता।" इस बात ने मुझे चौंका दिया, क्योंकि इससे यह गलतफ़हमी ज़ाहिर होती थी कि हमारे मन में कलात्मक प्रभाव किस तरह बनते हैं; और इसलिए भी, क्योंकि ऐसा लगता था कि इसका मतलब यह है कि ऐसी स्थिति में हमारी आँख महज़ एक रिकॉर्डिंग मशीन है, जो पल भर में तस्वीरें खींच लेती है।

एम. डी गुएरमांटेस, इस बात से प्रसन्न थे कि उनकी पत्नी मुझसे उन विषयों पर इतनी अच्छी जानकारी के साथ बात कर रही हैं जिनमें मेरी रुचि थी। उन्होंने अपनी पत्नी के शानदार व्यक्तित्व को निहारा, फ्रांज हाल्स के बारे में उनकी बातें सुनीं और सोचा: "वह तो हर चीज़ पर हावी हैं! हमारा युवा मित्र घर जाकर कह सकता है कि उसने पुराने ज़माने की एक महान महिला को देखा है, शब्द के पूर्ण अर्थ में, जिनके जैसी आज कहीं नहीं मिल सकती।" इस प्रकार मैंने उन दोनों को देखा, गुएरमांटेस नाम से अलग, जिसमें मैंने बहुत पहले उनके एक अकल्पनीय जीवन की कल्पना की थी, अब अन्य पुरुषों और महिलाओं की तरह, बस अपने समकालीनों से थोड़ा पीछे, और वह भी एक समान रूप से नहीं, जैसा कि फाउबर्ग के कई घरों में होता है, जहाँ पत्नी ने सुनहरे युग में रुकने का अच्छा विवेक दिखाया है, और पति दुर्भाग्य से इतिहास के पुराने दौर में चला गया है, वह अभी भी लुई XV बनी हुई है जबकि उसका साथी आडंबरपूर्ण लुई-फिलिप है। यह जानकर मुझे पहले निराशा हुई थी कि श्रीमती डी गुएरमांटेस अन्य महिलाओं जैसी ही थीं; लेकिन अब, स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में और इन सभी बेहतरीन वाइन के साथ, यह लगभग एक चमत्कार जैसा लग रहा था। डॉन जॉन ऑफ ऑस्ट्रिया, इसाबेला डी'एस्टे, जो हमारे लिए नामों की दुनिया में स्थित हैं, इतिहास के महान पन्नों से उतना ही कम संबंध रखते हैं जितना कि मेसेग्लिस परंपरा का गुएरमांटेस परिवार से था। इसाबेला डी'एस्टे निस्संदेह वास्तव में एक बहुत ही साधारण राजकुमारी थीं, उन राजकुमारियों के समान जिन्हें लुई XIV के शासनकाल में दरबार में कोई विशेष स्थान नहीं मिला था। लेकिन हमें एक अद्वितीय और इसलिए अतुलनीय व्यक्तित्व वाली प्रतीत होने के कारण, हम उनकी महानता को कमतर नहीं मान सकते, इसलिए लुई XIV के साथ रात्रिभोज हमें केवल कुछ हद तक रोचक लगेगा, जबकि इसाबेला डी'एस्टे से मिलने पर हम

स्वयं को एक अलौकिक प्रेम कहानी की नायिका के दर्शन करते हुए पाएंगे। खैर, इसाबेला डी'एस्टे का अध्ययन करने के बाद, उन्हें धैर्यपूर्वक परीलोक की दुनिया से इतिहास की दुनिया में स्थानांतरित करने के बाद, जब हमने यह स्थापित कर लिया कि उनके जीवन, उनके विचारों में उस रहस्यमय विचित्रता का कोई अंश नहीं था जिसका संकेत हमें उनके नाम से मिला था, तो इस निराशा के पूर्ण होने पर हम इस राजकुमारी के प्रति असीम कृतज्ञता महसूस करते हैं कि उन्हें मांटेग्ना के चित्रों का लगभग उतना ही ज्ञान था जितना कि अब तक हमारे द्वारा तिरस्कृत और, जैसा कि फ्रांस्वा ने कहा होगा, धूल से भी नीचे रखे गए एम. लाफेनेस्ट्रे का था। गुएरमांटेस नाम की दुर्गम ऊंचाइयों को छूने के बाद, डचेस के जीवन की भीतरी ढलान पर उतरते हुए, मैंने वहाँ विक्टर ह्यूगो, फ्रांज हाल्स और, मुझे खेद है, विबर्ट जैसे परिचित नामों को देखकर वही विस्मय महसूस किया जो एक अन्वेषक को मध्य अमेरिका या उत्तरी अफ्रीका की किसी जंगली घाटी में मूल निवासियों के रीति-रिवाजों की विलक्षणता, उसकी भौगोलिक दूरी, वहाँ की वनस्पति की विचित्रता की कल्पना करने के बाद, विशाल एलोवेरा या मैनचिनेल की बाड़ से गुजरने के बाद, ऐसे निवासियों को देखकर होता है जो (कभी-कभी वास्तव में एक रोमन थिएटर के खंडहरों के बीच और वीनस को समर्पित एक स्तंभ के नीचे) मेरोप या अल्जायर को पढ़ने में लगे होते हैं। और इसी प्रकार, मध्य वर्ग की उन शिक्षित महिलाओं से इतनी दूर, इतनी अलग, इतनी श्रेष्ठ, वह संस्कृति जिससे श्रीमती... डी गुएरमांटेस ने बिना किसी स्वार्थ या महत्वाकांक्षा के, उन लोगों के स्तर तक खुद को उतार डाला था जिन्हें वह कभी जान भी नहीं सकती थीं। उनका चरित्र, एक राजनेता या डॉक्टर के फोनीशियन पुरातत्व के ज्ञान जैसा था—जो सराहनीय और लगभग निरर्थक होते हुए भी दिल को छू लेने वाला था। "मैं आपको एक बहुत ही बढ़िया तस्वीर दिखा सकती थी," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने हाल्स के बारे में बात करते हुए कहा, "कुछ लोग कहते हैं कि यह सबसे बेहतरीन है, जो मुझे मेरे एक जर्मन चचेरे भाई ने विरासत में दी थी। दुर्भाग्य से, यह महल में 'गिरवी' रखी हुई निकली—आप यह मुहावरा नहीं जानते, न ही मैं," उन्होंने पुरानी परंपराओं का मज़ाक उड़ाते हुए कहा (जिससे उन्हें लगता था कि वह आधुनिक दिखती हैं)। "मुझे खुशी है कि आपने मेरी एल्स्टर्स देखी, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अगर मैं आपको अपनी हाल्स, यह 'गिरवी' रखी हुई तस्वीर दिखा पाती, तो मुझे और भी अधिक खुशी होती।" “मैं उसे जानता हूँ,”

प्रिंस वॉन ने कहा, “वह हेस्से के ग्रैंड ड्यूक का हाल्स है।” “बिल्कुल सही; उनके भाई ने मेरी बहन से शादी की थी,” एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, “और उनकी माँ और ओरियान की माँ भी चचेरी बहनें थीं।” “लेकिन जहाँ तक एम. एल्स्टिर का सवाल है,” प्रिंस ने आगे कहा, “मैं उनके काम के बारे में कोई राय रखे बिना, जो मुझे नहीं पता, यह कहने की हिम्मत करूँगा कि सम्राट उनसे जिस नफरत से भरे हैं, उसे उनके खिलाफ नहीं गिना जाना चाहिए। सम्राट असाधारण बुद्धि के धनी हैं।” "हाँ, मैं उनसे दो बार रात के खाने पर मिली हूँ, एक बार मेरी चाची सागन के यहाँ और एक बार मेरी चाची राडज़िविल के यहाँ, और मुझे कहना होगा कि मैंने उन्हें काफी असामान्य पाया। मुझे वे बिल्कुल भी सरल नहीं लगे! लेकिन उनमें कुछ मनोरंजक है, कुछ 'बनावटी'," उन्होंने शब्द को अलग करते हुए कहा, "जैसे हरा कार्नेशन, यानी एक ऐसी चीज़ जो मुझे आश्चर्यचकित करती है और मुझे बहुत पसंद नहीं आती, एक ऐसी चीज़ जिसे बनाना किसी के लिए आश्चर्यजनक हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि अगर वह न भी बनी होती तो बेहतर होता। मुझे उम्मीद है कि मैं आपको चौंका नहीं रही हूँ।" "सम्राट असाधारण बुद्धि के व्यक्ति हैं," राजकुमार ने आगे कहा, "वे कला के प्रति बेहद भावुक हैं, कलाकृतियों के लिए उनका स्वाद लगभग अचूक है, अगर कोई चीज़ अच्छी होती है तो वे उसे तुरंत पहचान लेते हैं और नापसंद करने लगते हैं। अगर वे किसी चीज़ से नफरत करते हैं तो इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता, वह चीज़ उत्कृष्ट होती है।" सभी मुस्कुराए। "आपने मेरे मन को शांत कर दिया," डचेस ने कहा। "मैं सम्राट की तुलना करना चाहूँगा," राजकुमार ने आगे कहा, जो 'पुरातत्वविद्' शब्द का सही उच्चारण नहीं जानता था (यानी, जैसे कि यह 'आर्कियोलॉजिस्ट' लिखा जाता हो), और इस शब्द का प्रयोग करने का कोई मौका नहीं छोड़ता था, "बर्लिन में हमारे एक पुराने पुरातत्वविद् से," (लेकिन राजकुमार ने 'आर्शियोलॉजिस्ट' कहा)। "अगर आप उसे किसी असली असीरियन प्राचीन वस्तु के सामने रख दें, तो वह रो पड़ता है। लेकिन अगर वह आधुनिक नकली वस्तु हो, अगर वह वास्तव में पुरानी न हो, तो वह नहीं रोता। इसलिए, जब वे यह जानना चाहते हैं कि कोई पुरातत्व संबंधी वस्तु वास्तव में पुरानी है या नहीं, तो वे उसे उस पुराने पुरातत्वविद् के पास ले जाते हैं। अगर वह रोता है, तो वे उस वस्तु को संग्रहालय के लिए खरीद लेते हैं। अगर उसकी आँखें सूखी रहती हैं, तो वे उसे विक्रेता को वापस भेज देते हैं और उस पर धोखाधड़ी का मुकदमा चलाते

हैं। खैर, जब भी मैं पॉट्सडैम में भोजन करता हूँ, अगर सम्राट मुझसे किसी नाटक के बारे में कहता है: 'राजकुमार, आपको वह अवश्य देखना चाहिए, यह प्रतिभा का काम है,' तो मैं उसे न देखने का मन बना लेता हूँ; और जब मैं उसे सुनता हूँ..." एक प्रदर्शनी के खिलाफ भयंकर विरोध जताते हुए, मैं उसे देखने के लिए पहले अवसर पर ही दौड़ पड़ता हूँ। "नॉरपोइस तो अंग्रेज़ी-फ्रांसीसी समझौते के पक्ष में हैं, है ना?" एम. डी गुएरमांटेस ने कहा। "इससे तुम्हें क्या फायदा होगा?" प्रिंस वॉन ने पूछा, जो अंग्रेजों को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, उनकी आवाज़ में चिड़चिड़ाहट और चालाकी दोनों झलक रही थी। "अंग्रेज़ बड़े ही मूर्ख हैं। मैं जानता हूँ कि वे सैनिक बनकर आपकी मदद नहीं करेंगे। लेकिन फिर भी, उनके जनरलों की मूर्खता से तो उनका अंदाज़ा लगाया ही जा सकता है। मेरा एक दोस्त कुछ दिन पहले बोअर नेता बोथा से बात कर रहा था। उसने मेरे दोस्त से कहा: 'ऐसी सेना तो भयानक है। वैसे तो मुझे अंग्रेज़ पसंद हैं, लेकिन ज़रा सोचिए कि मैं, जो कि एक किसान हूँ, उन्हें हर लड़ाई में हरा दूँ। और आखिरी लड़ाई में, जब मुझे अपनी सेना से बीस गुना ज़्यादा ताकतवर सेना के सामने हार माननी पड़ी, और मजबूरी में आत्मसमर्पण करना पड़ा, तब भी मैं दो हज़ार कैदियों को पकड़ने में कामयाब रहा! यह काफी था, क्योंकि मैं तो सिर्फ़ किसानों की सेना का नेतृत्व कर रहा था, लेकिन अगर उन बेचारे मूर्खों को कभी किसी यूरोपीय सेना का सामना करना पड़े, तो सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि उनका क्या हाल होगा!' इसके अलावा, आप बस यह देख लीजिए कि उनका राजा, जिसे आप भी मेरी तरह जानते हैं, इंग्लैंड में कितना बड़ा आदमी माना जाता है।" मैं इन कहानियों को मुश्किल से ही सुनता था, वैसी कहानियाँ जो एम. डी नॉरपोइस मेरे पिता को सुनाया करते थे; इनसे मेरे पसंदीदा विचारों को कोई पोषण नहीं मिलता था; और इसके अलावा, अगर उनमें वो तत्व होते भी जो उनमें नहीं थे, तो भी उन्हें बहुत ही रोमांचक होना पड़ता ताकि उन पलों में मेरा अंतर्मन जागृत हो सके जब मैं अपने ही शरीर, अपने सँवारे हुए बालों, अपनी कड़क कमीज़ में डूबा रहता था, यानी कि मैं जीवन के सुख का कोई भी अंश महसूस नहीं कर पाता था। "ओह, मैं आपसे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, जिन्हें लगता था कि जर्मन राजकुमार में शिष्टाचार की कमी है, "मुझे राजा एडवर्ड आकर्षक, बहुत सरल और लोगों की सोच से कहीं अधिक चतुर लगते हैं। और रानी, आज भी, दुनिया में सबसे खूबसूरत चीज हैं जो मैंने कभी देखी हैं।" "लेकिन, मैडम

ला डचेस," राजकुमार ने गुस्से में कहा, और उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि उनकी बात से महारानी नाराज हो रही हैं, "आपको मानना पड़ेगा कि अगर वेल्स के राजकुमार एक आम इंसान होते, तो शायद ही कोई ऐसा क्लब होता जो उन्हें बहिष्कृत न कर देता, और कोई भी उनसे हाथ मिलाने को तैयार नहीं होता। महारानी आकर्षक, बेहद मधुर और संयमित हैं। लेकिन फिर भी, एक ऐसे शाही जोड़े के बारे में कुछ चौंकाने वाली बात है जो सचमुच अपनी प्रजा के भरोसे जीते हैं, जो बड़े यहूदी फाइनेंसरों से अपने सारे बिल चुकाते हैं, और बदले में उन्हें बैरोनेट बना देते हैं। यह बुल्गारिया के राजकुमार जैसा है..." "वह हमारे चचेरे भाई हैं," डचेस ने बीच में कहा। "वह एक चतुर व्यक्ति हैं।" "वह मेरा भी है, लेकिन हम उसे इस वजह से अच्छा आदमी नहीं मानते। नहीं, तुम्हें हमसे दोस्ती करनी चाहिए, यह सम्राट की दिली तमन्ना है, लेकिन वह चाहते हैं कि यह दोस्ती दिल से हो। वह कहते हैं: 'मैं तो हाथ में हाथ डाले देखना चाहता हूँ, न कि टोपी लहराते हुए।' इससे तुम अजेय हो जाओगी। यह एम. डी नॉरपोइस द्वारा प्रचारित एंग्लो-फ्रेंच दोस्ती से कहीं अधिक व्यावहारिक होगा।" "तुम उसे जानती ही हो," डचेस ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, ताकि मैं बातचीत से बाहर न रह जाऊँ। मुझे याद आया कि एम. डी नॉरपोइस ने कहा था कि एक बार मैं ऐसा लग रहा था जैसे मैं उनका हाथ चूमना चाहती हूँ, और मुझे लगा कि उन्होंने यह कहानी मैडम डी गुएरमांटेस को भी सुनाई होगी, और किसी भी हालत में उन्होंने मेरे बारे में उनसे केवल दुर्भावना से ही बात की होगी, क्योंकि मेरे पिता के साथ दोस्ती होने के बावजूद उन्होंने मुझे इतना हास्यास्पद दिखाने में कोई संकोच नहीं किया था। इसलिए मैंने वह नहीं किया जो एक समझदार आदमी करता। वह कहता कि उसे एम. डी नॉरपोइस से घृणा है और उसने उसे यह दिखा भी दिया है; वह ऐसा इसलिए कहता ताकि वह राजदूत के झूठे आरोपों का जानबूझकर कारण होने का दिखावा कर सके, जो कि झूठ और सोची-समझी बदले की कार्रवाई के अलावा कुछ नहीं होते। दूसरी ओर, मैंने कहा कि मुझे बड़े अफ़सोस के साथ यह आशंका है कि एम. डी नॉरपोइस मुझे पसंद नहीं करते। "आप बिलकुल गलत हैं," डचेस ने उत्तर दिया, "वह वास्तव में आपको बहुत पसंद करते हैं। आप बेसिन से पूछ सकते हैं, क्योंकि अगर लोग मुझे केवल अच्छी बातें कहने वाली के रूप में देखते हैं, तो वह निश्चित रूप से ऐसा नहीं कहते। वह आपको बताएगा कि हमने नॉरपोइस को किसी के बारे में इतनी अच्छी बातें करते हुए कभी

नहीं सुना, जितनी उन्होंने आपके बारे में हमसे कीं। और अभी कुछ दिन पहले ही वह आपको मंत्रालय में एक अच्छा पद देना चाहते थे। चूंकि वह जानते थे कि आप बहुत मजबूत नहीं हैं और इसे स्वीकार नहीं कर सकतीं, इसलिए उन्होंने आपके पिता से अपने इस अच्छे विचार का जिक्र न करने की शिष्टता दिखाई, जिनके लिए उनके मन में असीम श्रद्धा है।" एम. डी नॉरपोइस वह आखिरी व्यक्ति थे जिनसे मुझे किसी भी तरह की व्यावहारिक मदद की उम्मीद थी। सच तो यह था कि उनका स्वभाव व्यंग्यात्मक और कुछ हद तक द्वेषपूर्ण था। जो लोग मेरी तरह उनके बाहरी रूप-रंग से प्रभावित हो गए थे, जैसे कोई संत लुई बलूत के पेड़ के नीचे न्याय कर रहा हो, या उनके मधुर होठों से निकलने वाली दया से भरी आवाज़ से, उन्हें लगा कि उनके साथ जानबूझकर विश्वासघात किया गया है, जब उन्हें पता चला कि उनके बारे में एक ऐसे व्यक्ति ने झूठा आरोप लगाया है जो हमेशा अपने भाषण में दिल से बोलता हुआ प्रतीत होता था। ऐसे झूठे आरोप लगाना उनके लिए आम बात थी। लेकिन इससे उन्हें लोगों के प्रति आकर्षण महसूस करने, अपनी पसंद के लोगों की प्रशंसा करने और यह दिखाने में आनंद लेने से नहीं रोका कि वे उनके काम आ सकते हैं। "मुझे इस बात पर ज़रा भी आश्चर्य नहीं है कि वे आपकी सराहना करते हैं," श्रीमती ने कहा। डी गुएरमांटेस, "वह एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। और मैं पूरी तरह समझ सकती हूँ," उन्होंने बाकी लोगों के लिए कहा, विवाह के एक उद्देश्य की ओर इशारा करते हुए जिसके बारे में मैंने कुछ नहीं सुना था, "कि मेरी चाची, जो लंबे समय से एक बूढ़ी रखैल के रूप में उनका मनोरंजन नहीं कर रही हैं, एक युवा पत्नी के रूप में उनके लिए बहुत उपयोगी न लगें। खासकर इसलिए कि मैं समझती हूँ कि रखैल के रूप में भी उन्होंने वर्षों से कोई व्यावहारिक उद्देश्य पूरा नहीं किया है, वह किसी और चीज़ से ज़्यादा अपनी भक्ति में डूबी रहती हैं। बोआज-नोरपोइस, विक्टर ह्यूगो के शब्दों में कह सकते हैं:

जिस महिला के साथ मैंने शारीरिक संबंध बनाए थे, उससे मिले हुए काफी समय हो गया है।
हे प्रभु, मैंने अपना बिस्तर छोड़कर आपका बिस्तर ग्रहण कर लिया है!

सचमुच, मेरी बेचारी चाची उन अग्रणी कलाकारों की तरह हैं जिन्होंने जीवन भर अकादमी के खिलाफ आवाज़ उठाई और अंत में अपनी एक छोटी अकादमी शुरू कर दी, या उन पदच्युत पुजारियों की तरह हैं जो अपना निजी धर्म स्थापित कर लेते हैं। उन्हें या तो अपने पद पर बने

रहना चाहिए, या अपने पेशे से दूर रहना चाहिए। और कौन जानता है," डचेस ने चिंतनशील स्वर में कहा, "हो सकता है यह उनके विधवापन की तैयारी हो, इससे दुखद कुछ नहीं कि कोई व्यक्ति ऐसे वस्त्र न पहने जिसे पहनने का उसे अधिकार न हो।" "आह! अगर श्रीमती डी विलेपारिसिस श्रीमती डी नॉरपोइस बन जाएं, तो मुझे सच में लगता है कि हमारे चचेरे भाई गिल्बर्ट बिस्तर पर पड़ जाएंगे," जनरल डी मॉन्सरफ्यूइल ने कहा। "प्रिंस डी गुएरमांटेस एक आकर्षक व्यक्ति हैं, लेकिन वे वास्तव में जन्म और शिष्टाचार के मामलों में बहुत उलझे रहते हैं," प्रिंसेस डी पार्म ने कहा। "मैं उनके साथ कुछ दिन बिताने के लिए गाँव गई थी, जब दुर्भाग्य से राजकुमारी बीमार होकर बिस्तर पर थीं।" मेरे साथ पेटिट भी थीं। (यह मैडम डी'हुनोलस्टीन का उपनाम था क्योंकि वह बहुत मोटी थीं।) "राजकुमार सीढ़ियों के नीचे मुझसे मिलने आए और पेटिट को न देखने का नाटक किया। हम पहली मंजिल पर, स्वागत कक्षों के दरवाजे तक गए, और फिर मेरे लिए रास्ता बनाते हुए पीछे हटकर उन्होंने कहा: 'ओह, कैसी हैं आप, मैडम डी'हुनोलस्टीन?' (अलग होने के बाद से वह अब हमेशा उन्हें इसी नाम से पुकारते हैं) पेटिट को पहली बार देखने का नाटक करते हुए, ताकि उन्हें यह दिखाया जा सके कि वह सीढ़ियों के नीचे उनका स्वागत करने नहीं आए थे।" "इससे मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। मुझे आपको बताने की जरूरत नहीं है," ड्यूक ने कहा, जो खुद को बेहद आधुनिक, जन्म से ही दुनिया के किसी भी व्यक्ति से अधिक तिरस्कारपूर्ण और वास्तव में एक रिपब्लिकन मानते थे, "कि मेरे और मेरी चचेरी बहन के बीच बहुत कम विचार मिलते हैं। महोदया कल्पना कर सकती हैं कि हम अधिकांश विषयों पर दिन और रात की तरह एकमत नहीं हैं।" लेकिन मुझे कहना ही होगा कि अगर मेरी चाची नॉरपोइस से शादी करतीं, तो मैं एक बार गिल्बर्ट की राय से सहमत होती। फ्लोरिमोंड डी गुइज़ की बेटी होना और फिर ऐसी शादी करना, जैसा कि कहावत है, बिल्ली को हंसाने के लिए काफी होगा; मैं और क्या कह सकती हूँ?" ड्यूक के ये आखिरी शब्द, जो वे आमतौर पर वाक्य के बीच में बोलते थे, यहाँ बिल्कुल अनावश्यक थे। लेकिन उन्हें इन्हें कहने की निरंतर आवश्यकता महसूस होती थी, जिसके कारण वे इन्हें भाषण के अंत तक टाल देते थे, अगर उन्हें कहीं और इनके लिए जगह नहीं मिलती थी। उनके लिए, अन्य बातों के अलावा, ये लगभग छंदशास्त्र का प्रश्न था। "लेकिन याद

रखना," उन्होंने आगे कहा, "कि नॉरपोइस अच्छे खानदान के, अच्छे ओहदे वाले, शिष्ट सज्जन हैं।"

"मेरी बात सुनो, बेसिन, अगर तुम गिल्बर्ट की भाषा में बात करने वाले हो तो उसका मज़ाक उड़ाना तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद नहीं है," मैडम डी गुएरमांटेस ने कहा, जिनके लिए किसी परिवार की 'अच्छाई', शराब की तरह ही, उसकी उम्र में निहित थी। लेकिन, अपने चचेरे भाई से कम स्पष्टवादी और अपने पति से ज़्यादा सूक्ष्म, उन्होंने अपनी बातचीत में कभी भी गुएरमांटेस की भावना के साथ खिलवाड़ न करने का ध्यान रखा और अपनी वाणी में पद-प्रतिष्ठा का तिरस्कार किया, जबकि अपने कार्यों से उसका सम्मान करने के लिए हमेशा तत्पर रहीं। "लेकिन क्या आप किसी तरह के चचेरे भाई-बहन नहीं हैं?" जनरल डी मॉन्सरफ्यूइल ने पूछा। "मुझे याद है कि नॉरपोइस ने ला रोशेफौकॉल्ड से शादी की थी।" “बिल्कुल नहीं, वह ड्यूक्स डी ला रोशेफौकॉल्ड की शाखा से थीं, मेरी दादी ड्यूक्स डी डूडोविल से थीं। वह परिवार के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति एडुआर्ड कोको की सगी दादी थीं,” ड्यूक ने जवाब दिया, जिनकी बुद्धिमत्ता की धारणाएँ कुछ सतही थीं, “और लुई 14 के समय से इन दोनों शाखाओं में आपस में विवाह नहीं हुए हैं; संबंध काफी दूर का होगा।” “वाह, यह तो दिलचस्प है; मुझे यह कभी पता नहीं था,” जनरल ने कहा। “हालाँकि,” एम. डी गुएरमांटेस ने आगे कहा, “मुझे लगता है कि उनकी माँ ड्यूक डी मोंटमोरेंसी की बहन थीं, और मूल रूप से उनकी शादी ला टूर डी औवेर्ग्ने से हुई थी। लेकिन चूंकि वे मोंटमोरेंसी नाममात्र के ही मोंटमोरेंसी हैं, जबकि वे ला टूर डी औवेर्ग्ने बिल्कुल भी ला टूर डी औवेर्ग्ने नहीं हैं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि इससे उन्हें कोई विशेष सम्मान मिलता है। वे कहते हैं—और यह बात अधिक प्रासंगिक होनी चाहिए—कि वे सेंट्रेल्स के वंशज हैं, और हम स्वयं भी उनके वंशज हैं...।”

कॉम्ब्रे में एक रुए डे सैंट्रेल्स नाम की गली थी, जिसके बारे में मैंने पहले कभी सोचा भी नहीं था। यह रुए डे ला ब्रेटोनरी से रुए डे ल'ओइसो तक जाती थी। और चूंकि जोन ऑफ आर्क के साथी सैंट्रेल्स ने एक गुएरमांटेस से शादी करके कॉम्ब्रे काउंटी को उस परिवार के अधीन कर दिया था, इसलिए सेंट-हिलैरे की एक खिड़की के नीचे उनके और गुएरमांटेस के प्रतीक चिन्ह एक साथ अंकित थे। मुझे फिर से गहरे बलुआ पत्थर की सीढ़ियों का दृश्य दिखाई दिया, और एक ध्वनि की लय ने मेरे कानों में गुएरमांटेस नाम को उसी भूली हुई स्वर में पहुँचा दिया, जिस

स्वर में मैं इसे बहुत पहले सुना करता था, जो उस स्वर से कितना अलग था जिसमें इसका उपयोग उन मिलनसार मेजबानों के लिए किया जा रहा था जिनके साथ मैं आज शाम भोजन कर रहा था। यदि मेरे लिए डचेस डी गुएरमांटेस नाम एक सामूहिक नाम था, तो यह केवल इतिहास में ही नहीं, बल्कि उन सभी महिलाओं के नाम के संचय के कारण भी था जिन्होंने इसे क्रमिक रूप से धारण किया था, और मेरे अपने छोटे से जीवन में भी, जिसने इस एक डचेस डी गुएरमांटेस में ही कई अलग-अलग महिलाओं को देखा था, जिनमें से प्रत्येक अगली के पर्याप्त स्थिरता प्राप्त करते ही लुप्त हो जाती थी। शब्द सदियों में अपना अर्थ उतना नहीं बदलते जितना नाम कुछ ही वर्षों में बदल जाते हैं। हमारी स्मृति और हमारा हृदय इतना विशाल नहीं है कि हम निष्ठावान बने रह सकें। हमारे मानसिक क्षेत्र में इतनी जगह नहीं है कि हम मृतकों को भी जीवितों के साथ-साथ रख सकें। हम अतीत पर ही निर्माण करने के लिए बाध्य हैं, जो केवल एक आकस्मिक खोज से ही सामने आता है, जैसे कि सेंट्रेल्स नाम ने अभी-अभी मेरे मन में उत्पन्न किया था। मुझे लगा कि यह सब समझाना व्यर्थ होगा, और वास्तव में कुछ देर पहले ही मैंने अप्रत्यक्ष रूप से झूठ बोला था जब मैंने एम. डी गुएरमांटेस के इस सवाल का जवाब नहीं दिया था: "क्या आप हमारे पुराने चालाक व्यक्ति को नहीं जानते?" शायद उन्हें अच्छी तरह पता था कि मैं उन्हें जानता था, और यह केवल अच्छे संस्कार के कारण ही था कि उन्होंने इस प्रश्न पर जोर नहीं दिया।

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझे मेरे विचारों से बाहर निकाला। "सच में, मुझे ये सब बहुत नीरस लगता है। सुनो, मेरी पार्टियों में हमेशा इतना उबाऊ माहौल नहीं होता। मुझे उम्मीद है कि आप जल्द ही फिर से आएंगे और दावत देंगे, लेकिन अगली बार कोई औपचारिक मेहमान नहीं आएंगे," उन्होंने धीरे से कहा, न तो वे अपने घर के उस आकर्षण को समझ पा रही थीं और न ही उनमें इतनी विनम्रता थी कि वे मुझे केवल एक ऐसे उद्यान के रूप में ही संतुष्ट कर सकें, जो पुराने जमाने के पौधों से भरा हो।

श्रीमती डी गुएरमांटेस को जो मेरी उम्मीदों पर खरा न उतरना लगा, वही अंततः मेरे लिए एक बड़ी निराशा साबित हुआ—क्योंकि ड्यूक और जनरल अब बिना रुके वंशों पर चर्चा करते रहे। अब तक मैं ऐसा क्यों नहीं सोच पा रहा था? रात के खाने पर मेरे साथ बैठे हर मेहमान ने, उस रहस्यमय नाम को छुपाते हुए, जिसे मैं केवल दूर से जानता था और जिसके बारे में सपने

देखता था, और अपने शरीर और बुद्धि से, जो मेरे सभी परिचित लोगों के समान या उनसे कमतर थी, मुझे वैसी ही भद्दी और अशिष्टता का आभास दिया, जैसा कि डेनमार्क के एल्सीनोर बंदरगाह में प्रवेश करते ही हैमलेट के किसी भी भावुक प्रशंसक को होता है। निस्संदेह, वे भौगोलिक क्षेत्र और वह प्राचीन अतीत, जिसने उनके नामों में वनभूमि और गॉथिक घंटाघरों को जगह दी है, ने कुछ हद तक उनके चेहरे, उनकी बुद्धि और उनके पूर्वाग्रहों को आकार दिया है, लेकिन उनमें वह प्रभाव केवल कारण और परिणाम के समान ही जीवित रहा है, यानी एक ऐसी चीज जिसे मस्तिष्क समझ सकता है, लेकिन कल्पना उसे किसी भी तरह से बोध नहीं कर सकती।

और इन पुराने पूर्वाग्रहों ने श्रीमान और श्रीमती डी गुएरमांटेस के मित्रों को उनकी लुप्त कविता की याद दिला दी। निःसंदेह, कुलीनों के वे भाव, जो उन्हें भाषा के विद्वान, व्युत्पत्तिशास्त्री बनाते हैं, न कि शब्दों की भाषा के, बल्कि नामों की भाषा के (और यह भी, मध्यम वर्ग के अज्ञानी जनसमूह की तुलना में अपेक्षाकृत कम है, क्योंकि यदि समान स्तर पर एक धर्मनिष्ठ कैथोलिक एक स्वतंत्र विचारक की तुलना में धार्मिक अनुष्ठानों के विवरण पर प्रश्नों का बेहतर उत्तर दे सकता है, तो दूसरी ओर एक पादरी-विरोधी पुरातत्वविद् अक्सर अपने पल्ली पुरोहित को उसके अपने चर्च से संबंधित हर बात पर भी अंक दे सकता है), यदि हम सत्य, अर्थात् भावना तक ही सीमित रहें, तो इन महान सज्जनों के लिए उनमें वह आकर्षण नहीं था जो एक साधारण व्यक्ति के लिए होता। वे शायद मुझसे बेहतर जानते थे कि डचेस डी गुइज़ क्लीव्स, ऑरलियन्स और पोर्सियन की राजकुमारी थीं, और बाकी सभी की भी, लेकिन इन सभी नामों को जानने से बहुत पहले ही वे डचेस डी गुइज़ का चेहरा पहचान चुके थे, जो आगे चलकर इन नामों से उनके सामने प्रकट होता था। मैंने परी से शुरुआत की थी—अगर उसका भाग्य शीघ्र ही नष्ट होना था—और उन्होंने स्त्री से।

मध्यमवर्गीय परिवारों में कभी-कभी ईर्ष्या पनपने लगती है यदि छोटी बहन की शादी बड़ी बहन से पहले हो जाती है। इसलिए अभिजात वर्ग, विशेष रूप से कौरवॉइसियर और गुएरमांटे भी, ने अपनी उदात्त महानता को साधारण घरेलू श्रेष्ठताओं तक सीमित कर दिया, एक ऐसी बचकानी व्यवस्था के द्वारा जिसे मैंने मूल रूप से (और यही बात मुझे इसमें एकमात्र आकर्षण प्रदान करती है) किताबों में पढ़ा था। क्या यह ऐसा नहीं लगता मानो टैलेमेंट डेस रेओक्स

रोहन परिवार के बजाय गुएरमांटे परिवार की बात कर रहे हों, जब वे स्पष्ट संतुष्टि के साथ बताते हैं कि कैसे एम. डे गुएमेनी ने अपने भाई से कहा: "तुम अंदर आ सकते हो; यह लूव्र संग्रहालय नहीं है!" और शेवेलियर डे रोहन (क्योंकि वह ड्यूक डे क्लेरमोंट का नाजायज बेटा था) के बारे में कहा: "खैर, वह एक राजकुमार है।" इस सारी बातचीत में मुझे बस एक ही बात परेशान कर रही थी कि लक्ज़मबर्ग के आकर्षक वंशानुगत ग्रैंड ड्यूक के बारे में फैलाई जा रही बेतुकी कहानियों को इस ड्राइंग-रूम में भी उतना ही सच माना जा रहा था जितना सेंट-लूप के दोस्तों के बीच। ज़ाहिर है, यह एक ऐसी महामारी थी जो शायद एक या दो साल से ज़्यादा नहीं टिकती, लेकिन इस बीच इसने सभी को अपनी चपेट में ले लिया था। लोग वही पुरानी कहानियाँ दोहरा रहे थे, या उनमें उतनी ही झूठी बातें जोड़कर उन्हें और भी दिलचस्प बना रहे थे। मुझे पता चला कि लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी, अपने भतीजे का बचाव करते हुए, हमले के लिए हथियार मुहैया करा रही थीं। "उसका साथ देना तुम्हारी गलती है," एम. डी गुएरमांटेस ने मुझसे कहा, जैसा कि सेंट-लूप ने मुझे पहले कहा था। "हमारे परिवार की राय को तो छोड़ ही दीजिए, जो उनके बारे में एकमत हैं, आप उनके नौकरों से ही बात कर लीजिए, आखिर वही तो उन्हें सबसे अच्छे से जानते हैं। एम. डी लक्ज़मबर्ग ने अपने छोटे नीग्रो सेवक को अपने भतीजे को सौंप दिया। नीग्रो रोते हुए लौटा: 'ग्रैंड ड्यूक ने मुझे पीटा; मैं कोई बुरा लड़का नहीं हूँ; ग्रैंड ड्यूक बदमाश आदमी हैं,' ये तो हद से ज़्यादा है। और मैं कुछ हद तक कह सकता हूँ, वो ओरियान का चचेरा भाई है।" वैसे, मैं ये नहीं बता सकता कि आज शाम मैंने कितनी बार 'चचेरा भाई' शब्द सुना। एक तरफ, एम. डी गुएरमांटेस, लगभग हर नाम पर हैरानी जताते हुए कहते थे: "लेकिन वो ओरियान का चचेरा भाई है!" जैसे कोई व्यक्ति जंगल में खो जाने पर, कुछ ही किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद, एक धातु की प्लेट पर विपरीत दिशाओं में इशारा करते हुए दो तीरों के सिरों पर लिखे शब्द "बेल्वेडेयर कैसिमिर-पेरियर" और "क्रॉइक्स डू ग्रैंड-वेन्यूर" पढ़ता है और समझ जाता है कि वह सही रास्ते पर है, उसे अचानक खुशी होती है। दूसरी ओर, रात के खाने के बाद आई तुर्की की राजदूत ने 'चचेरा भाई' शब्द का प्रयोग बिल्कुल अलग संदर्भ में किया (जो यहाँ प्रचलित नियम का अपवाद था)। सामाजिक महत्वाकांक्षा से ओतप्रोत और ज्ञान को आत्मसात करने की असाधारण क्षमता से संपन्न, वह दस हजार लोगों के पलायन की कहानी या पक्षियों में यौन विकृति के

विवरण को समान सहजता से ग्रहण कर लेती थी। राजनीतिक अर्थव्यवस्था, मानसिक विकारों, हस्तमैथुन के विभिन्न रूपों या एपिकुरस के दर्शन से संबंधित किसी भी नवीनतम जर्मन प्रकाशन पर उसे 'अटकना' असंभव था। वैसे तो, उसकी बातें सुनना खतरनाक था, क्योंकि वह हमेशा गलतियां करती रहती थी; वह आपको बेदाग चरित्र वाली महिलाओं को सबसे भ्रष्ट चरित्र वाली बता देती थी; वह आपको ऐसे सज्जन से सावधान कर देती थी जिनके इरादे पूरी तरह से नेक थे; और वह आपको इस तरह के किस्से सुनाती थी जो किसी किताब से निकले हुए लगते थे, इसलिए नहीं कि वे गंभीर थे, बल्कि इसलिए कि वे बेहद अविश्वसनीय थे।

उस समय समाज में उनका बहुत कम स्वागत होता था। कुछ हफ़्तों से वे डचेस डी गुएरमांटेस जैसी प्रतिष्ठित महिलाओं के घरों में जाती रही थीं, लेकिन मजबूरीवश वे आमतौर पर सबसे कुलीन परिवारों तक ही सीमित रहती थीं, उन गुमनाम वंशजों तक जिन्हें गुएरमांटेस परिवार अब नहीं जानता था। उन्हें उम्मीद थी कि अपने कम प्रसिद्ध मित्रों के सबसे ऐतिहासिक नामों का उल्लेख करके वे खुद को एक फैशनेबल शख्सियत साबित कर सकेंगी। तभी श्री डी गुएरमांटेस, यह सोचकर कि वे उन लोगों की बात कर रही हैं जो अक्सर उनके यहाँ भोजन करते थे, एक बार फिर एक प्रसिद्ध व्यक्ति को देखकर खुशी से झूम उठे और जोश से चिल्लाए: "अरे, ये तो ओरियान के चचेरे भाई हैं! मैं इन्हें अपने नाम की तरह जानता हूँ। ये रुए वनेउ में रहते हैं। इनकी माँ मैडम डी उज़ेस थीं।" राजदूत को यह स्वीकार करना पड़ा कि उनका नमूना एक साधारण शिकार था। उसने एम. डी गुएरमांटेस के दोस्तों से अपने दोस्तों को जोड़ने की कोशिश की, और बीच में ही टोकते हुए बोली: "मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि आप किसकी बात कर रहे हैं। नहीं, वे नहीं, वे चचेरे भाई-बहन हैं।" लेकिन उस अभागी राजदूत द्वारा शुरू किया गया यह उलटा प्रहार ज़्यादा दूर तक नहीं जा सका। एम. डी गुएरमांटेस ने रुचि खोते हुए उत्तर दिया: "ओह, तो मुझे नहीं पता कि आप किसके बारे में बात कर रही हैं।" राजदूत ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि अगर वह उन लोगों के 'चचेरे भाई-बहनों' से ज़्यादा करीबी किसी को नहीं जानती थी जिन्हें उसे व्यक्तिगत रूप से जानना चाहिए था, तो अक्सर ये 'चचेरे भाई-बहन' रिश्तेदार भी नहीं होते थे। फिर एम. डी गुएरमांटेस के मुँह से "लेकिन वह ओरियान की चचेरी बहन है!" शब्दों की एक नई लहर दौड़ जाती, जो ड्यूक के

लिए कुछ विशेषणों के समान ही व्यावहारिक मूल्य रखती थी, जो रोमन कवियों के लिए उपयोगी होते थे क्योंकि वे उन्हें अपने हेक्सामीटर के लिए डैक्टिल या स्पॉन्डी प्रदान करते थे। कम से कम "लेकिन वह ओरियान की चचेरी बहन है!" का विस्फोट तो होता ही था। मुझे यह बात प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के संदर्भ में बिल्कुल स्वाभाविक लगी, जो वास्तव में डचेस से बहुत करीबी रिश्तेदार थीं। राजदूत को इस राजकुमारी से कोई खास लगाव नहीं था। उन्होंने दबी आवाज़ में मुझसे कहा: "वह मूर्ख है। नहीं, वह उतनी सुंदर नहीं है जितनी सब कहते हैं। यह दावा हड़पा हुआ है। खैर," उन्होंने चिंतनशील, अस्वीकारी और दृढ़ भाव से आगे कहा, "मुझे वह बिल्कुल भी पसंद नहीं है।" लेकिन अक्सर रिश्तेदारी इससे कहीं आगे तक फैली हुई थी, श्रीमती डी गुएरमांटेस उन महिलाओं को 'आंटी' कहकर संबोधित करना सम्मान की बात मानती थीं, जिनके साथ लुई XV तक के पूर्वज को ढूंढना असंभव होता। जैसे, जब भी समय की 'कठिनाई' के कारण किसी करोड़पति महिला का विवाह किसी ऐसे राजकुमार से हुआ, जिसके परदादा ने, ओरियान की तरह ही, लूवोइस की पुत्री से विवाह किया था, तो उस सुंदर अमेरिकी महिला के लिए सबसे बड़ी खुशी यह थी कि होटल डी गुएरमांटेस में पहली बार जाने के बाद, जहाँ संयोगवश उसका स्वागत कुछ हद तक ठंडा किया गया और उससे तीखे सवाल-जवाब किए गए, वह श्रीमती डी गुएरमांटेस को 'आंटी' कह सके, जो उसे मातृत्व भरी मुस्कान के साथ ऐसा करने देती थीं। लेकिन मुझे इस बात से कोई लेना-देना नहीं था कि श्री डी गुएरमांटेस और श्री डी मॉन्सेरफ्यूइल के लिए जन्म का क्या अर्थ था; इस विषय पर उनकी बातचीत में मैं केवल एक काव्यात्मक आनंद की तलाश करता था। स्वयं इस बात से अवगत हुए बिना, उन्होंने मुझे यह आनंद उसी प्रकार प्रदान किया जैसे कोई मजदूर या नाविक मिट्टी या ज्वार-भाटे के बारे में बात करते हैं, ऐसी वास्तविकताएँ जो उनके अपने जीवन से इतनी दूर थीं कि वे उस सुंदरता का आनंद लेने में सक्षम नहीं थे जिसे मैंने व्यक्तिगत रूप से उनसे प्राप्त करने का प्रयास किया।

कभी-कभी कोई नाम मुझे किसी जाति की बजाय किसी विशेष तथ्य, किसी तिथि की याद दिलाता था। जब मैंने श्री डी गुएरमांटेस को यह कहते सुना कि श्री डी ब्रेउटे की माता चोइसुल और उनकी नानी लुसिंगे थीं, तो मुझे ऐसा लगा मानो मैं साधारण सी कमीज़ के नीचे, जिस पर अभी भी दो क्रिस्टल के गोलों में मोती जड़े थे, श्रीमती डी प्रस्लिन और ड्यूक डी बेरी के हृदयों

की पवित्रता देख सकता हूँ। कुछ अन्य हृदय अधिक आकर्षक थे: श्रीमती डी टैलिएन या श्रीमती डी सब्रान के सुंदर और लहराते बाल।

अपने पूर्वजों के बारे में अपनी पत्नी से कहीं अधिक जानकार, एम. डी गुएरमांटेस के पास ऐसी यादें थीं जिनसे उनकी बातचीत में एक ऐसे प्राचीन महल का आभास होता था, जो अपने असली खजानों से रहित होने के बावजूद, प्रामाणिक, उदासीन और राजसी तस्वीरों से भरा हुआ था, और जो समग्र रूप से देखने में बेहद खूबसूरत लगती थीं। प्रिंस डी'एग्रीजेंटे ने जब पूछा कि प्रिंस वॉन ने ड्यूक डी'औमाले के बारे में बात करते हुए 'मेरे चाचा' क्यों कहा, तो एम. डी गुएरमांटेस ने उत्तर दिया: "क्योंकि उनकी मां के भाई, ड्यूक ऑफ वुर्टेमबर्ग ने लुई-फिलिप की बेटी से शादी की थी।" मैं तुरंत ही एक ऐसे संदूक के चिंतन में खो गया, जैसा कार्पैसियो या मेमलिंग चित्रित करते थे। इसके पहले पैनल से लेकर, जिसमें राजकुमारी अपने भाई ड्यूक डी'ऑरलियन्स के विवाह समारोह में एक सादी बगीचे की पोशाक पहने हुए दिखाई देती हैं, जो इस बात का संकेत है कि वह उन राजदूतों के खाली हाथ लौटने से नाराज थीं, जिन्हें सिरैक्यूज़ के राजकुमार से उनका हाथ मांगने के लिए भेजा गया था, और अंतिम पैनल तक, जिसमें उन्होंने फैंटेसी नामक उस महल में एक बेटे, ड्यूक ऑफ वुर्टेमबर्ग (राजकुमार का चचेरा भाई, जिससे मैं रात के खाने पर मिला था) को जन्म दिया था, जो कुछ खास परिवारों की तरह ही कुलीन स्थान हैं। इसके अलावा, ये महल एक पीढ़ी से भी अधिक समय तक जीवित रहते हैं और एक से अधिक ऐतिहासिक हस्तियों से जुड़े होते हैं। विशेष रूप से इस एक में, बेयरुथ की मार्ग्रैविन, इस दूसरी कुछ हद तक काल्पनिक राजकुमारी (ड्यूक डी'ऑरलियन्स की बहन), जिनके बारे में कहा जाता था कि उनके पति के महल का नाम उन्हें विशेष रूप से आकर्षित करता था, बवेरिया के राजा, और अंत में प्रिंस वॉन, जिनके लिए यह केवल उनका अपना डाक पता था, जिस पर उन्होंने ड्यूक डी गुएरमांटेस से उन्हें पत्र लिखने के लिए कहा था, क्योंकि उन्हें यह विरासत में मिला था, और उन्होंने इसे केवल वैगनर उत्सवों के दौरान प्रिंस डी पोलिग्नैक, एक अन्य रमणीय 'काल्पनिक व्यक्ति' को दिया था, की यादें साथ-साथ जीवित हैं। जब एम. डी गुएरमांटेस, यह समझाने के लिए कि उनका मैडम डी'अर्पाजोन से क्या संबंध था, इतनी दूर और इतनी सरलता से, तीन या पांच पूर्वजों के जुड़े हाथों से बनी कड़ी को मैरी-लुईस या कोलबर्ट तक ले जाने के लिए बाध्य हुए, तो भी हर मामले

में बात वही थी; एक महान ऐतिहासिक घटना केवल क्षणिक रूप से, छिपी हुई, अस्वाभाविक, संकुचित रूप में, एक संपत्ति के नाम पर, एक महिला के ईसाई नामों में प्रकट हुई, जिसे इसलिए चुना गया क्योंकि वह लुई-फिलिप और मैरी-एमिली की पोती थी, जिन्हें अब फ्रांसीसी राजा और रानी के रूप में नहीं, बल्कि केवल इस हद तक माना जाता था कि दादा-दादी के रूप में उन्होंने एक विरासत छोड़ी थी। (हम बाल्ज़ाक की रचनाओं के एक गजेटियर में अन्य कारणों से देखते हैं, जहाँ सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को केवल कॉमेडी ह्यूमेन से उनके संबंध के अनुसार ही दर्शाया गया है, नेपोलियन को रास्टिग्नैक की तुलना में काफी कम स्थान दिया गया है, और वह स्थान भी केवल इसलिए दिया गया है क्योंकि उन्होंने एक बार सिंक-सिग्न की युवतियों से बात की थी।) इसी प्रकार, अभिजात वर्ग, अपनी भारी संरचना में, दुर्लभ खिड़कियों से युक्त, जो कम रोशनी आने देती हैं, रोमनस्क युग की वास्तुकला के समान ही उड़ने में असमर्थता और साथ ही उसी विशाल और अंधी शक्ति को दर्शाते हुए, हमारे संपूर्ण इतिहास को समाहित करता है, उसे कैद करता है, उस पर हावी हो जाता है।

इस प्रकार मेरी स्मृति के रिक्त स्थान धीरे-धीरे उन नामों से भर गए जो क्रमबद्ध होते हुए, एक दूसरे के संबंध में स्वयं को व्यवस्थित करते हुए, और एक दूसरे से बढ़ते हुए असंख्य संबंधों द्वारा जुड़ते हुए, कला की उन पूर्ण कृतियों के समान थे जिनमें कोई भी स्पर्श अलग-थलग नहीं होता, जिसमें प्रत्येक भाग बदले में शेष भाग से एक औचित्य प्राप्त करता है जिसे वह स्वयं उन पर लागू करता है।

बातचीत के दौरान एम. डी लक्समबर्ग का नाम फिर से सामने आने पर, तुर्की की राजदूत ने हमें बताया कि कैसे युवा दुल्हन के दादा (जिन्होंने आटे और अनाज से वह अपार संपत्ति अर्जित की थी) ने एम. डी लक्समबर्ग को दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया था, लेकिन उन्होंने लिफाफे पर "एम. फलां-फलां, मिलर" लिखकर मना कर दिया था, जिस पर दादा ने जवाब दिया था: "मुझे और भी निराशा हुई है कि आप नहीं आ सके, मेरे प्रिय मित्र, क्योंकि मैं आपकी संगति का बहुत ही अंतरंग रूप से आनंद ले पाता, क्योंकि हम एक बहुत ही अंतरंग समूह थे, केवल हम दोनों ही होते, और वहाँ केवल मिलर, उनका बेटा और आप ही होते।" यह कहानी न केवल मुझे पूरी तरह से अरुचिकर लगी, क्योंकि मैं जानता था कि मेरे प्रिय एम. डी नासाऊ के लिए अपनी पत्नी के दादा (जिनकी संपत्ति उन्हें विरासत में मिलने वाली थी) को पत्र

लिखना और उन्हें 'मिलर' कहकर संबोधित करना असंभव था; लेकिन इसके अलावा, इसकी मूर्खता शुरू से ही स्पष्ट हो गई थी, 'मिलर' शब्द को स्पष्ट रूप से ला फॉन्टेन की कहानी के शीर्षक तक ले जाने के लिए ही घसीटा गया था। लेकिन फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में इतनी मूर्खता है, जब उसमें दुर्भावना भी जुड़ जाती है, कि उन्होंने यह मान लिया कि पत्र भेजा गया था और दादाजी, जिनके बारे में सभी ने तुरंत विश्वासपूर्वक घोषणा की थी कि वे एक असाधारण व्यक्ति हैं, ने अपने दामाद से कहीं अधिक चतुराई दिखाई थी। ड्यूक डी चैटेलराउल्ट ने इस कहानी का फायदा उठाकर वह कहानी सुनाने की कोशिश की जो मैंने कैफे में सुनी थी: "सभी को लेट जाना पड़ा!" - लेकिन जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, या एम. डी लक्समबर्ग के इस दावे का जिक्र किया कि उनकी पत्नी की उपस्थिति में एम. डी गुएरमांटेस को खड़ा होना चाहिए, डचेस ने विरोध करते हुए उन्हें रोक दिया: "नहीं, वह बहुत बेतुके हैं, लेकिन इतने बुरे नहीं।" मुझे निजी तौर पर पूरा यकीन था कि एम. डी लक्समबर्ग के बारे में फैलाई गई ये सभी कहानियाँ एक समान रूप से झूठी थीं, और जब भी मैं किसी भी प्रतिष्ठित अभिनेता या दर्शक से आमने-सामने होता, तो मुझे वही विरोधाभास सुनने को मिलता। फिर भी, मैंने खुद से पूछा कि क्या श्रीमती डी गुएरमांटेस द्वारा अभी-अभी व्यक्त किया गया विरोधाभास सत्य के प्रति सम्मान से प्रेरित था या आत्मसम्मान से। दोनों ही मामलों में, बाद वाला गुण द्वेष में बदल गया, क्योंकि वह हंसते हुए आगे बोली: "ऐसा नहीं है कि मेरा भी उसके साथ थोड़ा-बहुत प्रेम प्रसंग नहीं रहा, क्योंकि उसने मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया था, ताकि मैं लक्ज़मबर्ग की ग्रैंड डचेस से मिल सकूँ, जिसे वह अपनी चाची को पत्र लिखते समय अपनी पत्नी के रूप में बड़े ही सलीके से संबोधित करता है। मैंने खेद व्यक्त करते हुए जवाब भेजा और आगे लिखा: 'लक्ज़मबर्ग की ग्रैंड डचेस' (उल्टे कॉमा में) के लिए, उन्हें बता दें कि अगर वह मुझसे मिलने आ रही हैं तो मैं हर गुरुवार को शाम पांच बजे के बाद घर पर होती हूँ। मेरा एक और छोटा-सा प्रेम प्रसंग भी रहा। संयोग से लक्ज़मबर्ग में होने के कारण, मैंने उन्हें फोन किया और मुझे फोन करने के लिए कहा। महामहिम दोपहर के भोजन के लिए जा रहे थे, अभी-अभी भोजन से उठे थे, दो घंटे बीत गए और कुछ नहीं हुआ; तो फिर मैंने दूसरा तरीका अपनाया: 'क्या आप कॉम्टे डी नासाऊ से कहेंगे कि वे आकर मुझसे बात करें?' बात चुभ गई, और वह उसी क्षण फोन पर थे।" डचेस की कहानी पर सब लोग हँसे, और इसी तरह की दूसरी कहानियों

पर भी, जो कि (मुझे पूरा यकीन है) उतनी ही झूठी थीं। क्योंकि इस लक्ज़मबर्ग-नासाउ से ज़्यादा बुद्धिमान, बेहतर, सभ्य, एक शब्द में कहें तो, ज़्यादा उत्कृष्ट व्यक्ति से मैं कभी नहीं मिला। आगे चलकर पता चलेगा कि मैं ही सही था। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अपने तीखे हमलों के बीच भी, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उनके लिए कुछ अच्छे शब्द कहे। उन्होंने हमें बताया, "वह हमेशा ऐसे नहीं थे।" "कहानी की किताब के उस आदमी की तरह, जो खुद को राजा समझता है, उसका दिमाग खराब होने से पहले, वह मूर्ख नहीं था, और वास्तव में अपनी सगाई के शुरुआती दिनों में वह इसके बारे में बहुत ही अच्छे तरीके से बात करता था, जैसे कि उसने कभी सपने में भी ऐसा नहीं सोचा होगा: 'यह तो किसी परी कथा जैसा है; मुझे लक्ज़मबर्ग में एक परी रथ में प्रवेश करना होगा,' उसने अपने चाचा डी'ओर्नेसन से कहा, जिन्होंने जवाब दिया - क्योंकि आप जानते हैं कि लक्ज़मबर्ग कोई बहुत बड़ा शहर नहीं है: 'एक परी रथ! मुझे डर है, मेरे प्यारे, आप इसे अंदर नहीं ले जा पाएंगे। मेरा सुझाव है कि आप एक बकरी की गाड़ी ले लें।' इससे नासाऊ को न केवल कोई आपत्ति नहीं हुई, बल्कि वह हमें यह कहानी सुनाने वाला पहला व्यक्ति था, और इस पर हँसा भी।" "ओर्नेसन एक मजाकिया आदमी है, और उसके पास मजाकिया होने का हर कारण है; उसकी माँ मोंटजू थी। बेचारा ओर्नेसन अब बहुत बुरी हालत में है।" इस नाम में बासी चुटकुलों के अंतहीन सिलसिले को रोकने का जादुई गुण था। दरअसल, एम. डी गुएरमांटेस को यह समझाना पड़ा कि एम. डी'ओर्नेसन की परदादी, टिमोलोन डी लोरेन की पत्नी मैरी डी कैस्टिल मोंटजू की बहन थीं, और इस तरह ओरियान की चाची थीं। इसके परिणामस्वरूप बातचीत वंशावलियों की ओर मुड़ गई, जबकि एक मूर्ख तुर्की राजदूत ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: "लगता है आप ड्यूक की नज़रों में बहुत अच्छे हैं; सावधान रहें!" और जब मैंने स्पष्टीकरण मांगा, तो उसने कहा: "मेरा मतलब है, आप समझ रही हैं ना, वह ऐसा आदमी है जिस पर कोई अपनी बेटी को तो सुरक्षित रूप से सौंप सकता है, लेकिन अपने बेटे को नहीं।" अब अगर इसके विपरीत, कभी कोई ऐसा व्यक्ति हुआ हो जो पूरी तरह से और केवल महिलाओं का प्रेमी हो, तो वह निश्चित रूप से ड्यूक डी गुएरमांटेस ही थे। त्रुटि की स्थिति, वह झूठ जिसे मूर्खतापूर्ण ढंग से सत्य मान लिया गया था, राजदूत के लिए एक ऐसे अत्यावश्यक तत्व के समान थी जिससे वह अलग नहीं हो सकती थी। "उनके भाई मेमे, जो संयोगवश, बिल्कुल अलग कारणों से"

(उन्होंने उनके सामने सिर नहीं झुकाया) "मुझसे पूरी तरह असहमत हैं, ड्यूक के नैतिक मूल्यों से वास्तव में दुखी हैं। उनकी चाची विलेपारिसिस भी। आह, अब, मैं उनकी कितनी प्रशंसा करती हूँ! वह एक संत जैसी महिला हैं, अतीत की महान महिलाओं का सच्चा उदाहरण। न केवल उनका वास्तविक सद्गुण अद्भुत है, बल्कि उनका संयम भी। वह आज भी राजदूत नॉरपोइस को 'महाशय' कहकर संबोधित करती हैं, जिनसे वह हर दिन मिलती हैं, और जिन्होंने, वैसे, तुर्की में अपनी एक उत्कृष्ट छाप छोड़ी है।"

मैंने राजदूत को जवाब तक नहीं दिया, ताकि मैं वंशावलियों को सुन सकूँ। वे सभी महत्वपूर्ण नहीं थीं। बातचीत के दौरान एक अप्रत्याशित गठबंधन का ज़िक्र आया, जिसके बारे में एम. डी गुएरमांटेस ने मुझे बताया कि यह एक बेमेल गठबंधन था, लेकिन फिर भी आकर्षक था, क्योंकि जुलाई राजशाही के तहत ड्यूक डी गुएरमांटेस और ड्यूक डी फेज़ेन्साक का एक प्रख्यात नाविक की दो बेहद खूबसूरत बेटियों से मिलन होने से, दोनों डचेस को एक अनोखी, मध्यमवर्गीय और 'लुई फिलीपीकली' भारतीय शैली की सुंदरता प्राप्त हुई। या फिर, लुई XIV के शासनकाल में, एक नॉरपोइस ने ड्यूक डी मोर्टेमार्ट की बेटी से शादी की थी, जिसका गौरवशाली खिताब, उस युग की दूरदर्शिता में, नॉरपोइस नाम को - जिसे मैंने रंगहीन पाया था और जिसे मैं आधुनिक मान सकता था - एक पुराने पदक की तरह गहराई से उकेर दिया था। और इन मामलों में, ऐसा नहीं था कि केवल कम प्रसिद्ध नाम को ही इस जुड़ाव से लाभ हुआ; दूसरा नाम, जो अपनी चमक के कारण सामान्य हो गया था, इस नए और अधिक अस्पष्ट पहलू में मुझे अधिक प्रभावशाली लगा, ठीक वैसे ही जैसे किसी प्रतिभाशाली रंगसाज़ द्वारा बनाए गए चित्रों में सबसे आकर्षक चित्र कभी-कभी वह होता है जो पूरी तरह से काला होता है। जिस अचानक गतिशीलता के साथ ये सभी नाम मुझे संपन्न प्रतीत हुए, जैसे वे उन अन्य नामों के साथ अपना स्थान ग्रहण करने के लिए उभरे जिनसे मुझे उन्हें दूर होना चाहिए था, वह केवल मेरी अज्ञानता के कारण नहीं थी; मेरे मन में वे जो देश-नृत्य कर रहे थे, उन्हें उन्होंने उन युगों में भी उतनी ही सहजता से किया था, जब एक उपाधि, हमेशा एक भूमि के टुकड़े से जुड़ी होने के कारण, एक परिवार से दूसरे परिवार तक उसका अनुसरण करती थी, इतना अधिक कि, उदाहरण के लिए, ड्यूक डी नेमर्स या ड्यूक डी शेवरूज़ की उपाधि की सूक्ष्म सामंती संरचना में, मैं क्रमिक रूप से छिपी हुई उपाधियों को खोज सका, जैसे कि एक साधु-केकड़े के

आतिथ्यपूर्ण निवास में, एक गाइज़, एक प्रिंस ऑफ सवॉय, एक ऑरलियन्स, एक लुयनेस। कभी-कभी कई लोग एक ही खोल के लिए प्रतिस्पर्धा करते थे: ऑरेंज की रियासत के लिए नीदरलैंड का शाही घराना और एम.एम. डी मैली-नेस्ले; ब्राबेंट की डची के लिए बैरन डी चार्लस और बेल्जियम का शाही घराना; नेपल्स के राजकुमार, परमा के ड्यूक, रेगियो के ड्यूक की उपाधियों के लिए कई अन्य। कभी-कभी यह इसके विपरीत होता था; यह इमारत इतने लंबे समय से वीरान पड़ी थी कि मेरे मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आया था कि किसी ग्रामीण घर का यह नाम, अपेक्षाकृत हाल के समय में, किसी परिवार का नाम हो सकता है। इसलिए, जब एम. डी. गुएरमांटेस ने एम. डी. मॉन्सेरफ्यूइल के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा: "नहीं, मेरी चचेरी बहन एक कट्टर राजशाही समर्थक थी; वह मार्किस डी. फेटेर्न की बेटी थी, जिसने चौआन विद्रोह में कुछ भूमिका निभाई थी," तो बालबेक में रहने के दौरान मेरे लिए जो नाम केवल एक ग्रामीण घर का था, उसे एक पारिवारिक नाम बनते देखकर, जो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था, मुझे वैसा ही आश्चर्य हुआ जैसा किसी परी कथा को पढ़ते समय होता है, जहाँ बुर्ज और छत जीवित हो उठते हैं और पुरुष-महिला में बदल जाते हैं। इस अर्थ में, हम कह सकते हैं कि इतिहास, यहाँ तक कि केवल पारिवारिक इतिहास भी, घर के पुराने पत्थरों को जीवन प्रदान करता है। पेरिस के समाज में ऐसे कई पुरुष रहे हैं जिन्होंने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो अपनी प्रतिष्ठा या बुद्धिमत्ता के लिए बेहद लोकप्रिय थे, और ड्यूक डी गुएरमांटेस या ड्यूक डी ला ट्रेमोइल के समान ही उच्च कुल के थे। अब वे विस्मृति में खो गए हैं क्योंकि उनके कोई वंशज नहीं हैं, और उनका नाम, जो अब हमें सुनाई नहीं देता, एक अज्ञात नाम जैसा लगता है; अधिक से अधिक, किसी ऐसी वस्तु का नाम जिसके नीचे हम कभी किसी व्यक्ति का नाम खोजने की कल्पना भी नहीं करते, किसी देहाती घर या किसी दूरदराज के गाँव में जीवित है। वह दिन दूर नहीं जब बरगंडी के मध्य में स्थित छोटे से गाँव चार्लस में रुककर उसके गिरजाघर को देखने वाला यात्री, यदि पर्याप्त रुचि न दिखाए या बहुत जल्दी में हो, तो इस बात से अनभिज्ञ होकर लौट जाएगा कि यह नाम, चार्लस, उस व्यक्ति का था जो देश के सर्वोच्च लोगों में शुमार था। इस विचार ने मुझे याद दिलाया कि जाने का समय हो गया था, और जब मैं एम. डी गुएरमांटेस को वंशावलियों के बारे में बात करते हुए सुन रहा था, तब वह समय निकट आ रहा था जब मैंने उनके भाई से मिलने का वादा किया था। "कौन

जानता है," मैं सोचता रहा, "कि क्या एक दिन गुएरमांटेस खुद एक स्थान-नाम से अधिक कुछ नहीं रह जाएगा, सिवाय उन पुरातत्वविदों के लिए जो संयोगवश कॉम्ब्रे में रुकते हैं और गिल्बर्ट द बैड की खिड़की के नीचे खड़े होकर थियोडोर के उत्तराधिकारी द्वारा दिए गए विवरण को सुनने या क्यूरे की मार्गदर्शिका को पढ़ने का धैर्य रखते हैं?" लेकिन जब तक एक महान नाम विलुप्त नहीं हो जाता, तब तक वह उन पुरुषों और महिलाओं को दिन के उजाले में रखता है जो इसे धारण करते हैं; और इसमें कोई संदेह नहीं है कि, कुछ हद तक, इन परिवारों की प्रतिष्ठा ने मेरी दृष्टि में जो रुचि पैदा की, वह इस तथ्य में निहित थी कि आज से शुरू करके, कोई भी उनके बढ़ते क्रम का अनुसरण करते हुए, चौदहवीं शताब्दी से बहुत आगे तक जा सकता है, और एम. डी चार्लस, प्रिंस डी एग्रीजेंटे, प्रिंसेस डी पार्म के सभी पूर्वजों की डायरी और पत्राचार प्राप्त कर सकता है, एक ऐसे अतीत में जिसमें एक घने अंधेरे ने एक मध्यमवर्गीय परिवार की उत्पत्ति को ढक रखा था, और जिसमें हम एक नाम के उज्ज्वल पूर्वव्यापी प्रक्षेपण में, कुछ तंत्रिका संबंधी लक्षणों, कुछ दुर्गुणों, एक या दूसरे गुएरमांटे परिवार के विकारों की उत्पत्ति और निरंतरता को देख सकते हैं। वर्तमान समय के अपने हमनामों के साथ लगभग रोग संबंधी रूप से समान, वे सदियों से अपने पत्र-व्यवहार करने वालों की विस्मयकारी रुचि को जगाते रहे हैं, चाहे वे प्रिंसेस पैलेटाइन और मैडम डी मोट्टेविले से पहले के हों या प्रिंस डी लिग्ने के बाद के।

हालांकि, मेरी ऐतिहासिक जिज्ञासा मेरे सौंदर्यबोध के आगे फीकी पड़ गई। उद्धृत नामों ने डचेस के मेहमानों को मानो उनके वास्तविक स्वरूप से विमुख कर दिया। चाहे वे स्वयं को प्रिंस डी'एग्रीजेंट या डी सिस्टिरा ही क्यों न कहते हों, उनके शरीर और सामान्य बुद्धि या बुद्धिहीनता के मुखौटे ने उन्हें साधारण मनुष्यों में बदल दिया था। स्थिति इतनी विमुख हो गई थी कि मुझे लगा मानो मैं ड्यूक के दरवाजे पर दहलीज पर नहीं, बल्कि नामों की जादुई दुनिया के सुदूर छोर पर आ गया हूँ। प्रिंस डी'एग्रीजेंट स्वयं, जैसे ही मैंने सुना कि उनकी माता का नाम दमास था, जो ड्यूक ऑफ मोडेना की पोती थीं, एक अस्थिर रासायनिक मिश्रण से मुक्त होकर, उस चेहरे और वाणी से मुक्त हो गए जिसने उन्हें पहचानने से रोका था, और दमास और मोडेना के साथ जुड़ गए, जो स्वयं मात्र उपाधियाँ थीं, एक ऐसा संयोजन जो कहीं अधिक मोहक था। प्रत्येक नाम, किसी दूसरे नाम के आकर्षण से विस्थापित हो जाता है,

जिसके साथ मैंने कभी किसी प्रकार की समानता का अनुमान नहीं लगाया था। यह नाम मेरे मस्तिष्क में अपनी उस अविचल स्थिति को छोड़ देता है, जहाँ परिचितता ने उसे धूमिल कर दिया था, और मोर्टेमार्ट, स्टुअर्ट या बॉर्बन वंशों से जुड़ने के लिए तेजी से आगे बढ़ता है, उनके साथ अत्यंत सुंदर डिजाइन और निरंतर बदलते रंग की शाखाएँ खींचता है। गुएरमांटेस नाम को उन सभी सुंदर नामों से—जो विलुप्त हो चुके थे, और इसलिए और भी अधिक चमक के साथ पुनर्जीवित हुए—जिनके साथ इसका संबंध मुझे अब पता चला, एक नया अर्थ और उद्देश्य प्राप्त होता है, जो विशुद्ध रूप से काव्यात्मक है। अधिक से अधिक, उस ऊँचे तने से फूटने वाली प्रत्येक शाखा के छोर पर, मैं इसे किसी बुद्धिमान राजा या प्रख्यात राजकुमारी के चेहरे पर खिलते हुए देख सकता था, जैसे हेनरी चतुर्थ के पिता या डचेस डी लोंग्यूविल। लेकिन चूंकि ये चेहरे, जो इस मामले में मेरे आस-पास के लोगों से भिन्न थे, शारीरिक अनुभव या फैशनेबल साधारणता के किसी भी निशान से मेरे लिए फीके नहीं पड़े थे, इसलिए वे अपनी सुंदर रूपरेखा और इंद्रधनुषी चमक में, उन नामों के साथ समरूप बने रहे जो नियमित अंतराल पर, प्रत्येक अलग-अलग रंग के साथ, गुएरमांटेस के वंशावली वृक्ष से अलग हो गए थे, और कांच के पेड़ के दोनों ओर खिलने वाली कलियों - पारदर्शी, एकांतर, बहुरंगी - को किसी भी बाहरी या अपारदर्शी पदार्थ से विचलित नहीं करते थे (जैसे, पुरानी जेसी खिड़कियों में, यीशु के पूर्वज)।

मैंने पहले ही कई बार चुपके से निकल जाने की कोशिश की थी, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि मेरी उपस्थिति से उस सभा का माहौल तुच्छ हो गया था, हालांकि वह उन सभाओं में से एक थी जिसे मैंने लंबे समय से बेहद खूबसूरत माना था—और निस्संदेह वह खूबसूरत होती अगर वहाँ कोई असुविधाजनक गवाह मौजूद न होता। कम से कम मेरे जाने से अन्य मेहमानों को, उस अपवित्र घुसपैठिए के चले जाने के बाद, आपस में एक गुप्त बैठक करने का मौका मिल जाता। वे उन रहस्यों का जश्न मनाने के लिए स्वतंत्र होते जिनके लिए वे एकत्रित हुए थे, क्योंकि जाहिर तौर पर वे फ्रांज हाल्स या लालच के बारे में बात करने के लिए तो नहीं आए थे, और न ही उस तरह से जैसे मध्यमवर्गीय समाज में लोग बात करते हैं। उन्होंने तुच्छ बातों के अलावा कुछ नहीं कहा, निस्संदेह इसलिए क्योंकि मैं कमरे में था, और इन सभी सुंदर महिलाओं को अलग-थलग देखकर मुझे कुछ खेद हुआ कि मैं अपनी उपस्थिति से उन्हें

फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सबसे कीमती ड्राइंग रूम में उस रहस्यमय जीवन को जारी रखने से रोक रहा था। लेकिन जिस प्रस्थान के लिए मैं हर पल प्रयास कर रहा था, उसे श्रीमान और श्रीमती डी गुएरमांटेस ने त्याग की भावना से इतना आगे बढ़ाया कि मुझे कमरे में ही रोककर उसे स्थगित कर दिया। इससे भी अधिक विचित्र बात यह थी कि कई महिलाएं जो जल्दी-जल्दी, प्रसन्नतापूर्वक, सुंदर वस्त्रों से सजी-धजी, गहनों से लदी हुई, उस पार्टी में शामिल होने के लिए आई थीं, जो मेरी गलती के कारण ही, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के अलावा अन्य जगहों पर होने वाली पार्टियों से किसी भी मायने में भिन्न नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे बालबेक में कोई व्यक्ति खुद को उस शहर से अलग नहीं पाता जिसे उसकी आंखें देखने की आदी हैं—उनमें से कई महिलाएं बिल्कुल भी निराश हुए बिना चली गईं, जबकि उनके निराश होने का पूरा कारण था, बल्कि उन्होंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को उस सुखद शाम के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया, मानो अन्य दिनों में, जिन दिनों मैं उपस्थित नहीं होता था, कुछ और होता ही नहीं था।

क्या वाकई इन सभी लोगों ने ऐसे ही भोजों के लिए सज-धज कर खुद को तैयार किया था और मध्यमवर्गीय महिलाओं को अपने इतने खास ड्राइंग रूम में आने से रोका था? अगर मैं अनुपस्थित होती तो क्या यही हाल होता? यह शक एक पल के लिए मेरे मन में उठा, लेकिन यह बहुत बेतुका था। सामान्य बुद्धि ने मुझे इसे नज़रअंदाज़ करने में सक्षम बनाया। और फिर, अगर मैंने इसे अपना लिया होता, तो कॉम्ब्रे के बाद से पहले ही इतनी बदनाम हो चुकी गुएरमांटेस नाम की क्या प्रतिष्ठा बचती?

मुझे यह बात समझ में आई कि ये फूल बेचने वाली महिलाएं, अजीब तरह से, या तो किसी दूसरे व्यक्ति को खुश करने के लिए तैयार थीं या उसे खुश करने के लिए उत्सुक थीं। उनमें से एक से अधिक, जिनसे मैंने पूरी शाम के दौरान दो-तीन से अधिक आकस्मिक टिप्पणियां नहीं की थीं, जिनकी मूर्खता ने मुझे शर्मिंदा कर दिया था, ड्राइंग रूम छोड़ने से पहले मेरे पास आईं और अपनी कोमल प्रेम भरी निगाहों से मुझे देखते हुए, बोलते समय अपने सीने पर लटकी ऑर्किड की माला को सीधा करते हुए, मुझसे मिलने और मुझसे बात करने में उन्हें कितनी गहरी खुशी हुई थी—यह एक अप्रत्यक्ष संकेत था कि वह मुझे रात के खाने पर आमंत्रित करना चाहती हैं—और उन्होंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ 'दिन तय' करने के बाद 'कुछ व्यवस्था' करने की इच्छा व्यक्त की। इनमें से कोई भी फूल बेचने वाली महिला राजकुमारी डी

पार्म के आने से पहले कमरे से नहीं निकली। उस महिला की उपस्थिति—राजकुमारी के सामने कभी विदा नहीं होना चाहिए—उन दो कारणों में से एक थी, जिनमें से किसी का भी मैंने अनुमान नहीं लगाया था, जिसके लिए डचेस ने मुझे रुकने पर इतना ज़ोर दिया था। जैसे ही श्रीमती डी पार्म उठीं, ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें मुक्ति दे दी हो। सभी महिलाओं ने राजकुमारी के सामने घुटने टेके, जिन्होंने उन्हें ज़मीन से उठाया, और उन्हें राजकुमारी से एक चुंबन के रूप में, और एक आशीर्वाद के रूप में, जो उन्होंने घुटने टेककर मांगा था, अपने लबादे और रथ मांगने की अनुमति मिली। इसके परिणामस्वरूप, मुख्य द्वार पर, फ्रांस के इतिहास के महान नामों का एक ज़ोरदार पाठ हुआ। राजकुमारी डी पार्म ने श्रीमती डी गुएरमांटेस को ठंड लगने के डर से नीचे हॉल में उनके साथ जाने से मना कर दिया था, और ड्यूक ने कहा था: "ओरियान, चूंकि महोदया आपको अनुमति दे रही हैं, तो याद रखना कि डॉक्टर ने तुम्हें क्या बताया था।"

"मुझे पूरा यकीन है कि प्रिंसेस डी पार्म को आपके साथ रात्रिभोज करके बहुत प्रसन्नता हुई होगी।" मैं उनका अंदाज़ा जानता था। ड्यूक मुझसे यह कहने के लिए ड्राइंग रूम के उस पार तक आए थे, मानो मुझे कोई डिप्लोमा दे रहे हों या बिस्कुट से भरी थाली भेंट कर रहे हों। और उनके बोलते समय जो आनंद झलक रहा था और जिससे उनके चेहरे पर क्षण भर के लिए एक मधुर भाव आ गया था, उससे मैंने अनुमान लगाया कि यह उनके लिए एक ऐसा प्रयास था जिसे वे अपने जीवन के अंत तक करते रहेंगे, ठीक वैसे ही जैसे कोई सम्मानजनक और आसान पद होता है, जिसे लकवाग्रस्त होने पर भी व्यक्ति को बनाए रखने की अनुमति होती है।

जैसे ही मैं जाने ही वाली थी, मेरी दासी ड्राइंग रूम में फिर से आ गई। वह कुछ खूबसूरत कार्नेशन फूल ले जाना भूल गई थी, जो गुएरमांटेस से भेजे गए थे और डचेस ने श्रीमती डी पार्म को भेंट किए थे। दासी का चेहरा थोड़ा लाल हो गया था, ऐसा लग रहा था जैसे उसे अभी-अभी डांट पड़ी हो, क्योंकि राजकुमारी, जो बाकी सभी के प्रति इतनी दयालु थीं, अपनी दासी की मूर्खता पर अपना धैर्य नहीं रख पा रही थीं। इसलिए दासी ने फूल उठाए और जल्दी से भाग गई, लेकिन अपनी सहजता और स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए जाते हुए मुझसे कहा: "राजकुमारी कहती हैं कि मैं उन्हें इंतज़ार करवा रही हूँ; वह जाना चाहती हैं और कार्नेशन भी

लेना चाहती हैं। हे भगवान! मैं कोई छोटी चिड़िया नहीं हूँ, मैं एक साथ दो जगहों पर नहीं हो सकती।"

अफसोस! राजघराने से पहले न जाने का नियम ही एकमात्र नियम नहीं था। मैं तुरंत नहीं जा सका, क्योंकि एक और नियम था: वह प्रसिद्ध भव्यता, जो कौरवॉइसियरों को ज्ञात नहीं थी, जिसके साथ गुएरमांटे परिवार, चाहे वे धनी हों या लगभग कंगाल, अपने मित्रों के सत्कार में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते थे, न केवल भौतिक भव्यता थी, जैसा कि मैंने अक्सर रॉबर्ट डी सेंट-लूप के साथ अनुभव किया था, बल्कि आकर्षक शब्दों, विनम्र कार्यों का एक भव्य प्रदर्शन भी था, एक संपूर्ण शाब्दिक लालित्य प्रणाली जो उनके भीतर के एक सच्चे खजाने से पोषित थी। लेकिन चूंकि यह अंतिम, फैशनेबल जीवन की निष्क्रियता में, अनुपलब्ध रहता है, इसलिए यह कभी-कभी विस्तारित होता था, एक प्रकार के क्षणिक प्रवाह में एक आउटलेट की तलाश करता था, जो और भी तीव्र होता था, जिससे श्रीमती डी गुएरमांटे में, किसी को स्वयं के लिए एक वास्तविक स्नेह का अनुमान लगाने की प्रेरणा मिल सकती थी। दरअसल, जब उसने अपने अंदर के भावों को उमड़ने दिया, तो उसे उस पल यह एहसास हुआ, क्योंकि उस समय वह अपने मित्र (पुरुष या स्त्री) की संगति में एक प्रकार का नशा पाती थी, जो किसी भी तरह से कामुक नहीं था, बल्कि संगीत के कुछ लोगों में उत्पन्न होने वाले नशे के समान था; वह अचानक अपनी चोली से एक फूल या एक पदक निकालती और उसे उस व्यक्ति को भेंट करती जिसके साथ वह शाम को और लंबा खींचना चाहती थी, साथ ही साथ एक उदास भावना भी रखती कि इस तरह का लंबा समय केवल व्यर्थ की बातों में ही परिणत हो सकता था, जिसमें उस तंत्रिका सुख, उस क्षणिक भावना का कोई अंश नहीं होता, जो वसंत के पहले गर्म दिनों की तरह थकान और पछतावे की छाप छोड़ जाती है। जहाँ तक उस मित्र की बात है, उसके लिए इन वादों पर आँख बंद करके विश्वास करना उचित नहीं था, जो उसने अब तक सुनी किसी भी बात से कहीं अधिक उत्साहवर्धक थे। ये स्त्रियाँ, जो क्षण की मिठास को इतनी गहराई से महसूस करती हैं कि उसे एक ऐसी कोमलता और गरिमा के साथ प्रस्तुत करती हैं, जो सामान्य प्राणियों में संभव नहीं होती, और फिर अगले क्षण के आते-आते उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं बचता। उनका स्नेह उस उमंग से परे नहीं टिकता जिसने उसे प्रेरित किया था; और जिस सूक्ष्म बुद्धि ने उन्हें उन सभी बातों को समझने और कहने के लिए प्रेरित

किया था जो आप सुनना चाहते थे, वही सूक्ष्म बुद्धि उन्हें कुछ दिनों बाद आपकी मूर्खताओं को पकड़ने और उनका उपयोग अपने किसी अन्य आगंतुक का मनोरंजन करने के लिए करने की अनुमति देगी, जिसके साथ वे उन क्षणभंगुर 'संगीतमय क्षणों' में से एक का आनंद ले रही होंगी।

हॉल में, जहाँ मैंने एक नौकर से अपने स्नोबूट्स मांगे, जो मैं बर्फ से बचाव के लिए लाया था, क्योंकि बर्फ के कुछ टुकड़े पहले ही गिर चुके थे और तेज़ी से कीचड़ में बदल रहे थे, मुझे यह एहसास नहीं था कि वे फैशन में बिल्कुल भी नहीं हैं, मुझे चारों ओर तिरस्कार भरी मुस्कान देखकर शर्मिंदगी महसूस हुई, जो तब और बढ़ गई जब मैंने देखा कि श्रीमती डी पार्म अभी भी वहीं खड़ी हैं और मुझे अपने अमेरिकी 'रबर' बूट्स पहनते हुए देख रही हैं। राजकुमारी मेरी ओर आईं। "ओह! कितना अच्छा विचार है!" उन्होंने कहा, "यह कितना व्यावहारिक है! आपके लिए एक समझदार आदमी है। महोदया, हमें भी ऐसे ही बूट्स लेने होंगे," उन्होंने अपनी दासी से कहा, जबकि नौकरों का उपहास सम्मान में बदल गया और अन्य मेहमान मेरे चारों ओर जमा हो गए यह पूछने के लिए कि मुझे ये अद्भुत बूट्स कहाँ से मिले। "इन्हें पहनने के बाद, आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, चाहे फिर से बर्फबारी शुरू हो जाए और आपको लंबा रास्ता तय करना हो। आप मौसम से स्वतंत्र हैं," राजकुमारी ने मुझसे कहा। "ओह! अगर ऐसी नौबत आई, तो महाराज निश्चिंत रहें," दासी ने समझदारी भरे लहजे में बीच में कहा, "फिर कभी बर्फ नहीं गिरेगी।" "आपको क्या पता, महोदया?" उत्कृष्ट राजकुमारी डी पार्म ने तीखे स्वर में कहा, जो अपनी दासी की कठोर त्वचा को भेदने में सक्षम थीं। "मैं महाराज को आश्वस्त कर सकती हूँ, फिर कभी बर्फ नहीं गिर सकती। यह भौतिक रूप से असंभव है।" "लेकिन क्यों?" "अब बर्फ नहीं गिर सकती, उन्होंने इसे रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए हैं, उन्होंने सड़कों पर नमक डाल दिया है!" भोली-भाली दासी ने न तो राजकुमारी के गुस्से पर ध्यान दिया और न ही अपने बाकी श्रोताओं की हंसी पर, क्योंकि चुप रहने के बजाय उसने मुझसे एक सौम्य मुस्कान के साथ कहा, एडमिरल जुरियन डी ला ग्रेवियर से किसी भी संबंध से इनकार करने के मेरे बार-बार के प्रयासों पर ध्यान न देते हुए: "वैसे भी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस सज्जन के पैर तो समुद्री यात्रा के लिए बहुत मजबूत होंगे। जो खून में होता है!"

फिर, प्रिंसेस डी पार्म को उनकी गाड़ी तक पहुँचाने के बाद, एम. डी गुएरमांटेस ने मेरा ओवरकोट पकड़ते हुए मुझसे कहा: "मुझे आपकी खाल उतारने में आपकी मदद करने दीजिए।" इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करते समय उन्होंने मुस्कुराना भी बंद कर दिया था, क्योंकि गुएरमांटेस के सादगीपूर्ण दिखावे के कारण, जो लोग सबसे अधिक साधारण थे, वे भी कुलीन बन गए थे।

एक ऐसा उत्साह जो कृत्रिम होने के कारण उदासी में बदल गया, वही उत्साह मैंने भी, हालांकि श्रीमती डी गुएरमांटेस से बिल्कुल अलग तरीके से, तब महसूस किया जब मैं अंततः उनके घर से निकलकर उस गाड़ी में बैठा जो मुझे एम. डी चार्लस के घर ले जा रही थी। हम अपनी इच्छा से दो शक्तियों में से किसी एक के प्रति समर्पित हो सकते हैं, जिनमें से एक हमारे भीतर उत्पन्न होती है, हमारी गहरी भावनाओं से निकलती है, और दूसरी हमें बाहर से मिलती है। पहली शक्ति अपने साथ स्वाभाविक रूप से आनंद लाती है, वह आनंद जो सृजनकर्ता के जीवन से उत्पन्न होता है। दूसरी शक्ति, जो हमारे भीतर वह गति उत्पन्न करने का प्रयास करती है जिससे हमारे बाहर के लोग प्रभावित होते हैं, आनंद से भरी नहीं होती; लेकिन हम प्रतिक्रिया के आघात से, एक ऐसे बनावटी नशे से, जो शीघ्र ही ऊब और उदासी में बदल जाता है, उसमें आनंद जोड़ सकते हैं, जिससे फैशनपरस्त लोगों के उदास चेहरे और वे सभी मानसिक स्थितियां उत्पन्न होती हैं जो उन्हें आत्महत्या की ओर ले जा सकती हैं। खैर, एम. डी चार्लस के पास ले जा रही गाड़ी में, मैं एक अलग तरह के उत्साह से भर गया, जो व्यक्तिगत अनुभव से मिलने वाले उत्साह से बिलकुल अलग था। ऐसा उत्साह मुझे दूसरी गाड़ियों में भी मिला था, जैसे कि एक बार कॉम्ब्रे में, डॉ. पर्सेपीड की बग्घी में, जहाँ से मैंने डूबते सूरज की रोशनी में मार्टिनविले के शिखर देखे थे, और एक दिन बालबेक में, श्रीमती डी विलेपारिसिस की बग्घी में, जब मैंने पेड़ों की कतार को देखकर याद आने वाली किसी स्मृति को पहचानने की कोशिश की थी। लेकिन इस तीसरी गाड़ी में, मेरे मन में वे सारी बातें गूंज रही थीं जो मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस के खाने की मेज पर बहुत उबाऊ लगती थीं, जैसे कि प्रिंस वॉन की जर्मन सम्राट, जनरल बोथा और ब्रिटिश सेना के बारे में कहानियां। मैंने उन्हें आंतरिक स्टीरियोस्कोप के फ्रेम में डाल दिया था, जिसके लेंसों के माध्यम से, जब हम स्वयं नहीं रह जाते, जब हम समाज की भावना से ओतप्रोत हो जाते हैं, और दूसरों से ही अपना जीवन प्राप्त करना चाहते हैं, तो

हम उनके कहे और किए गए कार्यों को उजागर कर देते हैं। जैसे कोई नशे में धुत व्यक्ति अपने सेवक के प्रति कोमल भावनाओं से भर जाता है, वैसे ही मैं अपने सौभाग्य पर आश्चर्यचकित था, एक ऐसा सौभाग्य जिसका मुझे उस समय एहसास नहीं था, कि मुझे एक ऐसे व्यक्ति के साथ भोजन करने का अवसर मिला जो विलियम द्वितीय को इतनी अच्छी तरह जानता था, और जिसने उनके बारे में ऐसी कहानियाँ सुनाई थीं जो सचमुच हास्यपूर्ण थीं। और, जब मैंने राजकुमार के जर्मन लहजे में जनरल बोथा की कहानी दोहराई, तो मैं ज़ोर से हँस पड़ा, मानो यह हँसी, कुछ खास तरह की तालियों की तरह जो आंतरिक प्रशंसा को बढ़ाती हैं, कहानी के हास्य तत्व की पुष्टि के लिए आवश्यक थी। आवर्धक लेंसों के माध्यम से, मैडम के भी... डी गुएरमांटेस के वे कथन जो मुझे मूर्खतापूर्ण लगे थे (जैसे कि हाल्स की उन तस्वीरों के बारे में जो ट्राम के डिब्बे की छत से देखनी चाहिए), उनमें एक असाधारण जीवंतता और गहराई आ गई। और मुझे कहना होगा कि, भले ही यह उत्साह जल्दी ही शांत हो गया, लेकिन यह पूरी तरह से अनुचित नहीं था। जैसे कभी-कभी ऐसा दिन आ सकता है जब हम उस व्यक्ति को जानकर खुश होते हैं जिसे हम दुनिया में सबसे ज़्यादा नापसंद करते हैं, क्योंकि वह उस लड़की से जुड़ा होता है जिससे हम प्यार करते हैं, जिससे वह हमारा परिचय करा सकता है, और इस प्रकार हमें उपयोगिता और संतुष्टि दोनों प्रदान करता है, वे गुण जिनमें हम उसे पूरी तरह से नदारद मानते थे, ठीक वैसे ही कोई भी बातचीत या व्यक्तिगत संबंध ऐसा नहीं है जिससे हम निश्चित न हों कि हमें एक दिन कोई लाभ नहीं मिलेगा। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझसे उन तस्वीरों के बारे में जो कहा था जिन्हें ट्राम के डिब्बे से भी देखना दिलचस्प होगा, वह असत्य था, लेकिन उसमें सत्य का एक अंश था जो बाद में मेरे लिए मूल्यवान साबित हुआ।

इसी प्रकार, विक्टर ह्यूगो की जिन पंक्तियों को मैंने उसे उद्धृत करते हुए सुना था, यह स्वीकार करना होगा कि वे उस काल से पहले की थीं जब वे एक नए व्यक्ति से कहीं अधिक बन गए थे, जिस काल में उन्होंने विकास के क्रम में एक ऐसी साहित्यिक विधा को प्रकाश में लाया था जो तब तक अज्ञात थी, और जो उस समय मौजूद किसी भी विधा से कहीं अधिक जटिल थी। इन प्रारंभिक कविताओं में, विक्टर ह्यूगो अब भी एक विचारक हैं, प्रकृति की तरह केवल चिंतन के लिए सामग्री प्रदान करने से संतुष्ट नहीं हैं। उस समय उन्होंने अपने 'विचारों' को सबसे सीधे रूप में व्यक्त किया, लगभग उसी अर्थ में जिस अर्थ में ड्यूक ने इस शब्द का

प्रयोग किया था, जब उन्हें लगा कि गुएरमांटेस में उनकी बड़ी पार्टियों में मेहमानों द्वारा आगंतुक पुस्तिका में अपने हस्ताक्षर के साथ दार्शनिक-काव्यात्मक चिंतन लिखना पुराना और असुविधाजनक है, तो वे नौसिखियों को विनम्र स्वर में चेतावनी देते थे: "अपने नाम लिखो, मेरे प्रिय मित्र, लेकिन कृपया 'विचार' मत लिखो!" दरअसल, विक्टर ह्यूगो के इन्हीं 'विचारों' (जो लेजेंड डेस सिएकल्स में लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित हैं, ठीक वैसे ही जैसे वैगनर की बाद की शैली में 'धुनें' अनुपस्थित हैं) की श्रीमती डी गुएरमांटेस ने प्रारंभिक ह्यूगो रचनाओं में प्रशंसा की थी। और वह पूरी तरह से गलत भी नहीं थीं। वे विचार मार्मिक थे, और उनके चारों ओर, उनके स्वरूप में अभी तक वह गहराई नहीं आई थी जो उन्हें बाद के वर्षों में प्राप्त होनी थी, शब्दों का प्रवाह और समृद्ध रूप से अभिव्यक्त तुकबंदी उन्हें कॉर्नेल की पंक्तियों से अतुलनीय बना देती थी, उदाहरण के लिए, वे पंक्तियाँ जिनमें एक रोमांटिसवाद, जो रुक-रुक कर, संयमित और इसलिए और भी अधिक मार्मिक है, फिर भी जीवन के भौतिक स्रोतों तक नहीं पहुंचा है, उस अचेतन और सामान्यीकृत जीव को संशोधित नहीं किया है जिसमें विचार सुप्त है। और इसलिए मैं अब तक ह्यूगो की बाद की रचनाओं तक ही सीमित रहकर गलत था। बेशक, प्रारंभिक रचनाओं का केवल एक अंश ही श्रीमती डी गुएरमांटेस ने सराहा था। डी गुएरमांटेस अपनी बातचीत को अलंकृत करने की आदी थीं। लेकिन इस तरह से किसी पंक्ति को उद्धृत करने मात्र से ही उसका आकर्षण दस गुना बढ़ जाता है। इस रात्रिभोज के दौरान मेरे मन में जो पंक्तियाँ आईं या बार-बार मेरे दिमाग में लौटीं, वे एक-एक करके चुम्बकित होती गईं, और इतनी शक्ति से उन कविताओं को अपनी ओर खींच लाईं जिनमें वे सामान्यतः समाहित थीं, कि मेरे चुम्बकित हाथ उस बल के विरुद्ध अड़तालीस घंटे से अधिक समय तक टिक नहीं सके जो उन्हें उस पुस्तक की ओर खींच रहा था जिसमें ओरिएंटल्स और चैंट्स डू क्रेपुस्कुल बंधी हुई थीं। मैंने फ्रैंचाइज़ के नौकर को कोसते हुए कहा कि उसने फ्यूइल्स डी'ऑटोमने की मेरी प्रति अपने पैतृक गाँव को उपहार में दे दी थी, और उसे बिना एक पल भी गंवाए मेरे लिए दूसरी प्रति लाने के लिए भेज दिया। मैंने इन पुस्तकों को शुरू से अंत तक पढ़ा और मन की शांति तभी पाई जब अचानक मुझे वे पंक्तियाँ मिलीं, जो उस प्रकाश में मेरा इंतजार कर रही थीं जिसमें उन्होंने उन्हें नहलाया था, जिन्हें मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को उद्धृत करते हुए सुना था। इन सभी कारणों से, डचेस के साथ बातचीत उन खोजों के समान

थी जो हम किसी पुराने, अपूर्ण, ज्ञान के विकास में असमर्थ, लगभग हर उस चीज़ से रहित, जिसे हम महत्व देते हैं, लेकिन जो हमें कभी-कभी कुछ रोचक जानकारी प्रदान करती है, उदाहरण के लिए किसी उत्कृष्ट अंश का उद्धरण जिसे हम नहीं जानते थे और जिसे बाद के वर्षों में याद करके हमें खुशी होती है कि हमें इसका ज्ञान एक महान व्यक्ति के आलीशान महल से मिला था। फिर, जब हमें बाल्ज़ाक की 'चार्टरियूज़' की प्रस्तावना या जौबर्ट के कुछ अप्रकाशित पत्र मिलते हैं, तो हम वहाँ बिताए जीवन के मूल्य को बढ़ा-चढ़ाकर बताने के लिए प्रेरित होते हैं, जिसकी निरर्थक तुच्छता को हम उस एक शाम के इस अप्रत्याशित लाभ के लिए भूल जाते हैं।

इस दृष्टिकोण से देखें तो, भले ही आधुनिक जगत शुरुआत में मेरी कल्पना की अपेक्षा को पूरा करने में असमर्थ रहा हो, और परिणामस्वरूप मुझे अन्य जगतों से अपनी समानताओं से ही प्रभावित करे, न कि उनकी भिन्नता से, फिर भी धीरे-धीरे यह मेरे सामने एक बिल्कुल अलग रूप में प्रकट हुआ। महान रईस ही लगभग एकमात्र ऐसे लोग हैं जिनके बारे में किसानों जितना ज्ञान प्राप्त होता है; उनकी बातचीत भूमि, घरों, पुराने रीति-रिवाजों और उन सभी चीजों से सजी होती है जिनके बारे में धनवान जगत को गहरी अज्ञानता है। यहाँ तक कि अगर सबसे संयमित आकांक्षाओं वाला अभिजात भी अपने समय को पीछे छोड़ चुका है, तब भी जब वह अपने बचपन को याद करता है, तो उसकी माँ, उसके चाचा, उसकी परदादी उसे उस जीवन की परिस्थितियों से अवगत कराते हैं जो आज लगभग अज्ञात है। समकालीन शव के मृत्यु कक्ष में श्रीमती डी गुएरमांटेस ने पारंपरिक रीति-रिवाजों से हुई सभी कमियों को इंगित नहीं किया होगा, बल्कि उन्हें तुरंत पहचान लिया होगा। वह एक अंत्येष्टि में महिलाओं को पुरुषों के साथ घुलते-मिलते देखकर स्तब्ध रह गईं, जबकि वहाँ एक विशेष समारोह होना चाहिए था जो केवल महिलाओं के लिए ही आयोजित किया जाना था। जहाँ तक कफ़न की बात है, जिसके उपयोग के बारे में ब्लोच ने संभवतः अंतिम संस्कारों की रिपोर्टों में वर्णित कफ़न वाहकों के कारण यह माना होगा कि यह केवल ताबूतों तक ही सीमित है, वहीं एम. डी गुएरमांटेस को वह समय याद था जब उन्होंने बचपन में एम. डी मैली-नेस्ले की शादी में इसे ले जाते हुए देखा था। जहाँ सेंट-लूप ने आधुनिक शैली के कैरिएर्स और फर्नीचर खरीदने के लिए अपनी अमूल्य 'वंशावली वृक्ष', बुइलॉन परिवार के पुराने चित्र और लुई XIII के पत्र बेच दिए थे, वहीं एम. और

श्रीमती डी गुएरमांटेस, एक ऐसी भावना से प्रेरित होकर जिसमें कला के प्रति प्रज्वलित प्रेम ने शायद ही कोई भूमिका निभाई हो, और जिसने उन्हें स्वयं पहले से भी अधिक महत्वहीन बना दिया हो, अपने अद्भुत बुले फर्नीचर को अपने पास रखा था, जो एक कलाकार के लिए एक अलग ही तरह से आकर्षक चित्र प्रस्तुत करता था। एक साहित्यकार भी उनकी बातचीत से मंत्रमुग्ध हो जाता, जो उसके लिए—एक भूखे व्यक्ति को दूसरे भूखे व्यक्ति की संगति की आवश्यकता नहीं होती—उन सभी अभिव्यक्तियों का एक जीवंत शब्दकोश होती, जो दिन-प्रतिदिन भुलाई जा रही हैं: सेंट-जोसेफ की टाई, नीले रंग को समर्पित बच्चे, इत्यादि, जो आज केवल उन्हीं लोगों के बीच पाई जाती हैं जिन्होंने स्वयं को अतीत का मित्रवत और परोपकारी संरक्षक बना लिया है। एक लेखक को अन्य लेखकों की तुलना में उनके बीच जो आनंद मिलता है, वह खतरे से रहित नहीं है, क्योंकि इस बात का जोखिम रहता है कि वह यह मानने लगे कि अतीत की चीजों में स्वयं एक आकर्षण है, और वह उन्हें अपने काम में हूबहू उतार दे, जो उस स्थिति में निष्कलंक होगा, और एक नीरसता उत्पन्न करेगा जिसके लिए वह इस विचार से स्वयं को सांत्वना देगा: "यह आकर्षक है क्योंकि यह सच है; लोग इसी तरह बात करते हैं।" श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ इन अभिजात्य बातचीत में एक और आकर्षण था, वह था उत्कृष्ट फ्रेंच में व्यक्त किया जाना। इसी कारण से उन्होंने डचेस को 'वियाटिकम', 'कॉस्मिक', 'पाइथियन', 'प्री-एमिनेंट' जैसे शब्दों पर हँसने की अनुमति दी, जिनका उपयोग सेंट-लूप किया करते थे - ठीक उसी तरह जैसे वे अपने बिंग फर्नीचर के बारे में करते थे।

चतुर्थ

जब सब कुछ कह-सुन लिया गया, तो इस मामले में यह अनुभव उससे बहुत अलग था जो मैंने हॉथॉर्न के पेड़ों के पास या मेडलीन का टुकड़ा चखते समय महसूस किया था; Mme. de Guermantes के यहाँ सुनी गई कहानियाँ मेरे लिए अब भी पराई ही बनी रहीं। अगर कोई पल भर के लिए मेरे भीतर झाँकता—जिस पर उन कहानियों का असर केवल शारीरिक रूप से ही था—तो उसे यही लगता कि ये कहानियाँ सामाजिक प्रकृति की हैं, न कि व्यक्तिगत, और इसलिए वे मुझसे बाहर निकलने के लिए बेचैन हैं। मैं गाड़ी में अपनी सीट पर किसी देवी की पुजारिन की तरह बेचैनी से करवटें बदल रहा था। मैं एक और दावत का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, जहाँ मैं खुद Mme. de Guermantes के लिए एक तरह का 'प्रिंस वॉन' बन सकूँ और उन कहानियों को दोहरा सकूँ। इस बीच, जब मैं मन ही मन उन कहानियों को बुदबुदाता, तो मेरे होंठ काँपने लगते; मैं अपने मन को वापस एकाग्र करने की व्यर्थ कोशिश करता, जो किसी अपकेंद्रीय बल (centrifugal force) की तरह मुझसे दूर भागा जा रहा था। और इसलिए, एक ऐसी गाड़ी में—जहाँ बातचीत की कमी को पूरा करने के लिए मैं ज़ोर-ज़ोर से खुद से ही बातें करके अपना मन बहला रहा था—उन कहानियों का पूरा बोझ अकेले ढोते रहने की बेचैनी से मुक्ति पाने के लिए, मैंने M. de Charlus के दरवाज़े की घंटी बजाई। इंतज़ार के उस पूरे समय के दौरान—जब एक नौकर मुझे एक ड्राइंग-रूम में ले गया था, जहाँ मैं इतना ज़्यादा उत्तेजित था कि कमरे में रखी चीज़ों पर मेरा ध्यान ही नहीं गया—मैंने खुद से ही लंबी-लंबी बातें करते हुए समय बिताया; मैं मन ही मन उन सारी बातों का पूर्वाभ्यास कर रहा था जो मुझे M. de Charlus को बतानी थीं, और इस बात पर मैंने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया कि शायद उन्हें भी मुझसे कुछ कहना हो। मुझे उन कहानियों को M. de Charlus को सुनाने की इतनी तीव्र इच्छा हो रही थी कि यह सोचकर मुझे बहुत निराशा हुई कि शायद घर के मालिक अब तक सो चुके होंगे, और मुझे घर लौटकर, शब्दों के इस नशे को अकेले ही सोकर उतारना पड़ेगा। असल में, मैंने अभी-अभी गौर किया था कि मुझे उस कमरे में बैठे हुए पच्चीस मिनट बीत चुके थे—और शायद लोग मेरे बारे में भूल ही गए थे—एक ऐसा कमरा जिसके बारे में, इतने लंबे इंतज़ार के बावजूद, मैं बस इतना ही कह सकता था कि वह बहुत

बड़ा था, उसका रंग कुछ हरापन लिए हुए था, और उसमें ढेर सारे चित्र (portraits) टंगे हुए थे। बोलने की ज़रूरत इंसान को न सिर्फ़ सुनने से रोकती है, बल्कि चीज़ों को देखने से भी रोकती है; और इस मामले में, मेरे आस-पास के माहौल का कोई भी ज़िक्र न करना, मेरी अंदरूनी हालत का ही ज़िक्र करने जैसा है। मैं कमरे से बाहर निकलने की तैयारी कर रहा था, ताकि किसी से बात कर सकूँ; और अगर मुझे कोई न मिलता, तो मैं वापस हॉल में जाकर, किसी से दरवाज़ा खुलवाकर बाहर निकल जाता। तभी, जैसे ही मैं अपनी कुर्सी से उठा और फ़र्श पर बने मोज़ेक डिज़ाइन पर कुछ कदम चला, एक नौकर अंदर आया—उसके चेहरे पर परेशानी साफ़ झलक रही थी। उसने मुझसे कहा, "सर, बैरन साहब आज शाम से ही बहुत व्यस्त हैं। अभी भी कई लोग उनसे मिलने का इंतज़ार कर रहे हैं। मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि वे आपसे मिल लें; मैंने सेक्रेटरी को दो बार फ़ोन भी कर दिया है।" "नहीं, प्लीज़, आप परेशान न हों। मेरी बैरन साहब से मिलने की अपॉइंटमेंट थी, लेकिन अब काफ़ी देर हो चुकी है; और अगर वे आज शाम व्यस्त हैं, तो मैं किसी और दिन आ जाऊँगा।" "अरे नहीं, सर! आप ऐसे मत जाइए," नौकर चिल्लाया। "बैरन साहब नाराज़ हो सकते हैं। मैं एक बार फिर कोशिश करता हूँ।" मुझे बैरन डी चार्लस के नौकरों और अपने मालिक के प्रति उनकी वफ़ादारी के बारे में सुनी हुई बातें याद आ गईं। उनके बारे में यह तो नहीं कहा जा सकता था—जैसा कि प्रिंस डी कोंटी के बारे में कहा जाता था—कि वे अपने नौकरों को भी उतना ही खुश करने की कोशिश करते थे, जितना कि मंत्रियों को; लेकिन उनमें यह हुनर ज़रूर था कि वे अपने नौकरों से छोटी-से-छोटी चीज़ भी इस तरह माँगते थे, जैसे वे उन पर कोई निजी एहसान कर रहे हों। नतीजा यह होता था कि रात के समय, जब उनके निजी नौकर एक सम्मानजनक दूरी पर उनके चारों ओर जमा होते थे, और वे उन पर एक नज़र डालने के बाद कहते थे, "कोइग्नेट, मोमबत्ती लाओ!" या "ड्यूक्रेट, नाइटशर्ट लाओ!" तो बाकी नौकर मन ही मन ईर्ष्या करते हुए वहाँ से हट जाते थे—उन्हें उस नौकर से जलन होती थी, जिसे मालिक का खास प्यार मिला होता था। असल में, उनमें से दो नौकर—जो एक-दूसरे को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे—हमेशा एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे रहते थे। अगर बैरन साहब अपने तय समय से पहले ही ऊपर अपने कमरे में चले जाते थे, तो वे दोनों कोई-न-कोई मामूली-सा बहाना बनाकर बैरन साहब को कोई संदेश देने पहुँच जाते थे; उनकी उम्मीद यह होती थी कि

शायद आज शाम मोमबत्ती या नाइटशर्ट की ज़िम्मेदारी उन्हें ही सौंप दी जाएगी। अगर वह अपनी ड्यूटी के दायरे से बाहर किसी विषय पर उनमें से किसी एक से सीधे कुछ शब्द कहते थे—और खासकर अगर सर्दियों में, बगीचे में, यह जानते हुए कि उनके किसी कोचवान को ज़ुकाम हो गया है, वह दस मिनट बाद उससे कहते थे: "अपनी टोपी पहन लो!"—तो बाकी लोग उस आदमी से अगले पखवाड़े तक बात नहीं करते थे, क्योंकि उन्हें उस बड़े सम्मान से जलन होती थी जो उसे मिला था। मैंने दस मिनट और इंतज़ार किया, और फिर, मुझसे यह अनुरोध करने के बाद कि मैं ज़्यादा देर न रुकूँ क्योंकि M. le Baron थके हुए थे और उन्हें कई बहुत ज़रूरी लोगों को वापस भेजना पड़ा था जिन्होंने उनसे कई दिन पहले मिलने का समय तय किया था, उन्होंने मुझे उनके सामने पेश किया। M. de Charlus ने अपने आस-पास जो माहौल बना रखा था, वह मुझे उनके भाई Guermantes की सादगी के मुकाबले बहुत कम प्रभावशाली लगा; लेकिन दरवाज़ा पहले से ही खुला था, मैं Baron को देख सकता था—एक चीनी ड्रेसिंग-गाउन पहने, गला खुला हुआ, सोफ़े पर लेटे हुए। उसी पल मेरी नज़र एक ऊँची टोपी पर पड़ी, जिसकी सतह शीशे की तरह चमक रही थी; उसे एक केप के साथ कुर्सी पर रखा गया था, मानो Baron अभी-अभी अंदर आए हों। नौकर चला गया। मुझे लगा कि

M. de Charlus मेरा स्वागत करने के लिए खड़े हो जाते थे। बिना हिले-डुले, उन्होंने अपनी दो कठोर आँखें मुझ पर गड़ा दीं। मैं उनकी ओर बढ़ा और 'शुभ संध्या' कहा; उन्होंने न तो हाथ बढ़ाया, न कोई जवाब दिया, और न ही मुझे बैठने के लिए कुर्सी दी। कुछ पल की चुप्पी के बाद, मैंने उनसे पूछा—ठीक वैसे ही जैसे कोई किसी बदतमीज़ डॉक्टर से पूछता है—कि क्या मेरे लिए खड़े रहना ज़रूरी है? मैंने यह बात बिना किसी बुरे इरादे के कही थी, लेकिन मेरे शब्दों से M. de Charlus के चेहरे पर छाई ठंडी नाराज़गी और भी ज़्यादा बढ़ गई। मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि अपने घर में, गाँव में—यानी Château de Charlus में—रात के खाने के बाद उनकी एक आदत थी (उन्हें राजा की तरह पेश आना बहुत पसंद था) कि वे स्मोकिंग-रूम में एक आरामकुर्सी पर पसरकर बैठ जाते थे और अपने मेहमानों को अपने चारों ओर खड़े रहने देते थे। वे किसी एक से सिगरेट जलाने के लिए आग माँगते, किसी दूसरे को सिगार पेश करते, और फिर कुछ मिनटों के अंतराल के बाद कहते: "लेकिन

Argencourt, तुम बैठ क्यों नहीं जाते? एक कुर्सी ले लो, मेरे प्यारे दोस्त," और इसी तरह की बातें करते। वे जान-बूझकर उन्हें इसलिए खड़ा रखते थे ताकि उन्हें यह याद दिला सकें कि बैठने की अनुमति उन्हें उन्हीं से मिली है। "उस Louis XIV वाली कुर्सी पर बैठो," उन्होंने बड़े ही रोबदार अंदाज़ में मुझे जवाब दिया; ऐसा लग रहा था मानो वे मुझे बैठने के लिए आमंत्रित करने के बजाय, मुझसे और भी ज़्यादा दूर हटने के लिए मजबूर कर रहे हों। मैंने एक ऐसी आरामकुर्सी चुनी जो तुलनात्मक रूप से उनके ज़्यादा करीब थी। "आह! तो तुम इसे Louis XIV वाली कुर्सी कहते हो? मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा बहुत अच्छी हुई है," उन्होंने मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहा। मैं इतना ज़्यादा हक्का-बक्का रह गया कि मैं अपनी जगह से ज़रा भी नहीं हिला—न तो घर छोड़कर जाने के लिए (जैसा कि मुझे कर देना चाहिए था), और न ही अपनी कुर्सी बदलने के लिए (जैसा कि वे चाहते थे)। "सर," उसने अगली बार मुझसे कहा, अपने हर शब्द को तौलते हुए—जिनमें से ज़्यादा गुस्ताख़ शब्दों के आगे उसने दोहरे व्यंजन जोड़ दिए थे—"वह मुलाक़ात, जो मैंने एक ऐसे व्यक्ति के कहने पर आपको देने की कृपा की है जो अपना नाम गुप्त रखना चाहता है, हमारे संबंधों का अंतिम पड़ाव होगी। मैं आपसे यह नहीं छिपाऊँगा कि मुझे बेहतर की उम्मीद थी! शायद मैं शब्दों के अर्थ को थोड़ा ज़्यादा ही खींच रहा होऊँगा—जो किसी को नहीं करना चाहिए, यहाँ तक कि उन लोगों के साथ भी जो शब्दों का मोल नहीं जानते, केवल अपने आत्म-सम्मान की ख़ातिर—अगर मैं आपसे यह कहूँ कि मुझे आपकी ओर एक ख़ास तरह का खिंचाव महसूस हुआ था। हालाँकि, मुझे लगता है कि परोपकार—अपने सबसे सक्रिय और रक्षात्मक अर्थ में—न तो मेरी भावनाओं से ज़्यादा होगा और न ही उससे ज़्यादा, जो मैं दिखाने का इरादा रखता था। पेरिस लौटते ही, जब आप अभी भी बालबेक में थे, मैंने आपको यह संकेत दे दिया था कि आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं।" मैं, जिसे अच्छी तरह याद था कि बालबेक में M. de Charlus ने कितनी गालियों की बौछार करते हुए मुझसे विदा ली थी, सहज ही विरोध का एक इशारा कर बैठा। "क्या!" वह गुस्से से चिल्लाया—और सचमुच, उसका चेहरा—जो ऐंठा हुआ और सफ़ेद पड़ गया था—उसके सामान्य चेहरे से उतना ही अलग था, जितना कि तूफ़ानी सुबह में समुद्र का चेहरा बदल जाता है; जब उसकी जानी-पहचानी मुस्कुराती हुई सतह के बजाय, कोई झाग और फुहारों के बीच हज़ारों साँपों को बल खाते हुए देखता है—"क्या तुम यह दिखावा करना

चाहते हो कि तुम्हें मेरा संदेश नहीं मिला—जो लगभग एक घोषणा ही थी—कि तुम्हें मुझे याद रखना है? मैंने तुम्हें जो किताब भेजी थी, उसके कवर के चारों ओर किस तरह की सजावट बनी हुई थी?" "कुछ बहुत ही सुंदर, आपस में गुंथी हुई मालाएँ, जिन पर नक्काशीदार आकृतियाँ बनी हुई थीं," मैंने उसे बताया। "आह!" उसने तिरस्कार भरे अंदाज़ में जवाब दिया, "ये नौजवान फ़्रांसीसी हमारे देश के खज़ानों के बारे में बहुत कम जानते हैं। उस नौजवान बर्लिनवासी के बारे में क्या कहा जाएगा जिसने कभी 'वाल्क्यूरे' (Walküre) के बारे में सुना ही न हो? इसके अलावा, तुम्हारी आँखें तो हैं, पर तुम देखते नहीं; क्योंकि तुमने खुद मुझे बताया था कि तुम उस खास खजाने के सामने दो घंटे तक खड़े रहे थे। मैं देख सकता हूँ कि तुम्हें फूलों के बारे में उतना ही कम पता है जितना कि शैलियों (styles) के बारे में; यह मत कहना कि तुम्हें शैलियों के बारे में पता है," उसने गुस्से में चीखते हुए कहा, "तुम तो मुझे यह भी नहीं बता सकते कि तुम किस चीज़ पर बैठे हो। तुम अपने पिछले हिस्से के लिए एक 'डायरेक्टरी शॉफ़्यूज़' (Directory chauffeuse) को 'लुई XIV बर्गेयर' (Louis XIV bergère) समझकर इस्तेमाल कर रहे हो। किसी दिन तुम मैडम डी विलेपैरिस के घुटनों को बैठने की जगह समझ बैठोगे, और तब तुम सब कुछ गड़बड़ कर दोगे। यह बिल्कुल वैसा ही है; तुमने बर्गोट की किताब की बाइंडिंग पर बालबेक चर्च के दरवाज़े के ऊपर बने 'मायोसोटिस' (myosotis) फूल के लिंटल को भी नहीं पहचाना। क्या तुम्हें यह कहने का इससे ज़्यादा साफ़ तरीका हो सकता था: 'मुझे मत भूलना!'?" मैंने एम. डी चार्लस की ओर देखा। निस्संदेह, उसका शानदार सिर—भले ही वह देखने में अरुचिकर था—फिर भी उसके किसी भी रिश्तेदार के सिर से कहीं ज़्यादा बेहतर था; तुम उसे एक 'अपोलो' (Apollo) कह सकते थे जो अब बूढ़ा हो गया हो; लेकिन उसके दुष्ट मुँह के कोनों से जैतून जैसे रंग का, पित्त-भरा रस टपकने को तैयार लगता था; जहाँ तक बुद्धि की बात है, कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता था कि उसकी बुद्धि का दायरा बहुत विशाल था, और उसने ऐसी कई चीज़ों को अपने भीतर समेट रखा था जो उसके भाई गुएरमांटेस के लिए हमेशा अनजान ही रहनी थीं। लेकिन वह अपने सारे द्वेषों को जिन भी सुंदर शब्दों से सजाकर पेश करता हो, यह महसूस होता था कि—चाहे उस समय उसके मन में अपमानित गर्व हो, या प्रेम में मिली निराशा, या कोई पुरानी रंजिश, या परपीड़क वृत्ति (sadism), या दूसरों को छेड़ने का शौक, या कोई पक्का जुनून—यह आदमी हत्या करने

में भी सक्षम था; और वह अपने तर्क-बल से यह साबित कर सकता था कि उसने जो किया वह बिल्कुल सही था, और नैतिक कद के मामले में वह अपने भाई, अपनी भाभी, या बाकी किसी भी रिश्तेदार से सौ गुना ज़्यादा श्रेष्ठ था। "बिल्कुल वैसे ही, जैसे वेलाज़क्वेज़ की पेंटिंग 'लांसेज़' (Lances) में," उसने आगे कहा, "विजेता उस व्यक्ति की ओर बढ़ता है जिसका पद उससे नीचा होता है—जैसा कि हर कुलीन व्यक्ति का कर्तव्य होता है..."

क्योंकि मैं सब कुछ था और तुम कुछ भी नहीं, इसलिए तुम्हारी तरफ पहला कदम मैंने ही बढ़ाया था। तुमने मेरे उस काम का जवाब एक बेवकूफी भरे तरीके से दिया है, जिसे मैं खुद 'महानता का काम' नहीं कह सकता। लेकिन मैंने खुद को निराश नहीं होने दिया। हमारा धर्म हमें सब्र सिखाता है। मैंने तुम्हारे प्रति जो सब्र दिखाया है, मुझे उम्मीद है कि उसका श्रेय मुझे ही मिलेगा; और साथ ही, जिस बात को कोई 'बदतमीज़ी' कह सकता था—अगर तुम्हारे बस में होता कि तुम मुझसे, जो तुमसे हर मामले में कहीं ज़्यादा ऊँचा है, बदतमीज़ी कर सको—उस पर मैंने सिर्फ़ मुस्कुरा दिया। लेकिन खैर, जनाब, अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं रह गया है। मैंने तुम्हें उस कसौटी पर कसा है, जिसे हमारी दुनिया के एक जाने-माने इंसान ने बड़े ही अनोखे अंदाज़ में 'बेहद ज़्यादा दोस्ती की कसौटी' नाम दिया है; और जिसे वह सही ही सबसे भयानक कसौटी मानता है—एक ऐसी कसौटी जो अच्छे अनाज को बेकार घास-फूस से अलग कर सकती है। मैं तुम्हें इस बात के लिए दोष नहीं दे सकता कि तुम इस कसौटी पर खरे नहीं उतरे, क्योंकि जो लोग इसमें कामयाब होते हैं, उनकी संख्या बहुत कम है। लेकिन कम-से-कम—और यही वह नतीजा है जो मैं इस धरती पर हमारी आखिरी बातचीत के आधार पर निकाल सकता हूँ—कम-से-कम मैं तुम्हारी उन झूठी और बदनाम करने वाली मनगढ़ंत बातों को अब और नहीं सुनना चाहता। अब तक मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि M. de Charlus का गुस्सा किसी ऐसी बात की वजह से भड़का होगा, जो उनके बारे में किसी ने कही हो और उन्हें दोबारा बताई गई हो; मैंने अपनी याददाश्त टटोली; मैंने उनके बारे में किसी से भी कोई बात नहीं की थी। ज़रूर किसी शरारती इंसान ने यह सारी कहानी गढ़ ली होगी। मैंने M. de Charlus के सामने ज़ोर देकर कहा कि मैंने उनके बारे में बिल्कुल भी कुछ नहीं कहा था। "मुझे नहीं लगता कि मैंने Mme. de Guermantes से यह कहकर आपको नाराज़ किया होगा कि मैं आपका दोस्त हूँ।" उन्होंने तिरस्कार भरी मुस्कान दी, अपनी आवाज़

को सबसे ऊँचे सुर तक पहुँचाया, और फिर—बिना किसी ज़ोर के, एक बेहद तीखी और ढिठाई भरी लय में—बोले: "ओह! जनाब," उन्होंने कहा—धीरे-धीरे अपनी आवाज़ को वापस सामान्य लय में लाते हुए, और इस उतरते हुए सुरों के अजीब से उतार-चढ़ाव का मज़ा लेते हुए —"मुझे लगता है कि आप खुद के साथ ही नाइंसाफ़ी कर रहे हैं, जब आप खुद पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि आपने ऐसा कहा था कि हम दोस्त हैं।" "मैं किसी ऐसे व्यक्ति से शब्दों की बहुत ज़्यादा सटीकता की उम्मीद नहीं करता, जो चिपेनडेल के किसी टुकड़े को आसानी से रोकोको कुर्सी समझ ले; लेकिन सच कहूँ तो मुझे विश्वास नहीं होता," वह आगे बोला, उसकी आवाज़ में एक ऐसी कोमलता थी जो धीरे-धीरे और भी ज़्यादा लुभावनी होती गई, और उसके होठों पर एक प्यारी सी मुस्कान तैरने लगी, "मुझे विश्वास नहीं होता कि तुमने कभी यह कहा होगा, या सोचा होगा, कि हम दोस्त थे! जहाँ तक तुम्हारी इस शेखी की बात है कि तुम्हें मुझसे मिलवाया गया था, तुमने मुझसे बात की थी, मुझे थोड़ा-बहुत जानते थे, और लगभग बिना माँगे ही तुम्हें एक दिन मेरी पनाह में आने का मौका मिल गया था—तो इसके विपरीत, मुझे तुम्हारा ऐसा करना बहुत ही स्वाभाविक और समझदारी भरा लगता है। हमारी उम्र में जो इतना ज़्यादा फ़र्क है, उसकी वजह से मैं बिना किसी हिचकिचाहट के यह मान सकता हूँ कि वह मुलाक़ात, वे बातचीत, और भविष्य के रिश्तों की वह धुंधली सी उम्मीद—ये सब तुम्हारे लिए थे। मैं इसे 'सम्मान' तो नहीं कहूँगा, लेकिन फिर भी, कुल मिलाकर, यह एक ऐसा 'फ़ायदा' था जिसके बारे में मेरा मानना है कि तुम्हारी बेवकूफ़ी इसे ज़ाहिर करने में नहीं, बल्कि इसे सँभालकर न रख पाने में थी। मैं तो यहाँ तक कहूँगा," वह आगे बोला, अचानक एक पल के लिए अपने घमंडी गुस्से से हटकर एक ऐसी कोमलता में डूबते हुए जिसमें उदासी की इतनी गहरी झलक थी कि मुझे लगा वह अभी रो पड़ेगा, "कि जब तुमने पेरिस में मेरे द्वारा दिए गए प्रस्ताव का कोई जवाब नहीं दिया, तो मुझे तुम्हारा यह काम इतना अजीब और अनसुना सा लगा—खासकर तुमसे, जिसे देखकर मुझे लगा था कि तुम बहुत अच्छी परवरिश वाले और एक अच्छे 'बुर्जुआ' (मध्यम-वर्गीय) परिवार से हो," (इस विशेषण को बोलते समय उसकी आवाज़ में थोड़ी सी बदतमीज़ी की झलक सुनाई दी) "कि मैं इतना बेवकूफ़ निकला कि मैंने मन ही मन तरह-तरह के बहाने गढ़ लिए—ऐसे बहाने जो असल में कभी होते ही नहीं —जैसे कि चिट्ठियों का खो जाना, या पते का गलत लिखा जाना। मैं अब देख सकता हूँ कि मेरी

तरफ़ से यह बहुत बड़ी बेवकूफ़ी थी; लेकिन सेंट बोनावेंचर तो यह मानना ज़्यादा पसंद करते थे कि एक बैल भी उड़ सकता है, बजाय इसके कि उनका भाई झूठ बोल सकता है। खैर, अब वह सब बात खत्म हो चुकी है; तुम्हें वह विचार पसंद नहीं आया, तो अब इस पर और कुछ कहने को नहीं है। मुझे बस इतना लगता है कि तुम्हें थोड़ी सी कोशिश करनी चाहिए थी," (और उसकी आवाज़ में सचमुच रोने की सी झलक थी) "भले ही सिर्फ़ मेरी उम्र का लिहाज़ करते हुए ही सही, तुम्हें मुझे एक चिट्ठी लिख देनी चाहिए थी। मैंने तुम्हारे लिए कुछ बेहद लुभावनी चीज़ों की कल्पना की थी और उनकी योजना बनाई थी—और इस बात का भी पूरा ध्यान रखा था कि मैं तुम्हें उन चीज़ों के बारे में कुछ भी न बताऊँ।" आपने यह जाने बिना ही मना करना बेहतर समझा कि वे क्या थे; यह आपका मामला है। लेकिन, जैसा कि मैं आपसे कहता हूँ, कोई भी हमेशा लिख सकता है। आपकी जगह पर, और सच कहूँ तो अपनी जगह पर भी, मैंने ऐसा ही किया होता। इसी वजह से, मुझे अपनी जगह आपकी जगह से ज़्यादा पसंद है—मैं 'इसी वजह से' इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मेरा मानना है कि हम सब बराबर हैं, और मुझे हमारे कई ड्यूक्स (dukes) की तुलना में एक समझदार मज़दूर के लिए ज़्यादा हमदर्दी महसूस होती है। लेकिन मैं यह कह सकता हूँ कि मुझे अपनी जगह आपकी जगह से ज़्यादा पसंद है, क्योंकि जो कुछ आपने किया है—अपनी पूरी ज़िंदगी में, जो अब काफ़ी लंबी होती जा रही है—मुझे एहसास है कि मैंने वह कभी नहीं किया।" उनका सिर रोशनी से दूसरी तरफ़ मुड़ा हुआ था, और मैं यह नहीं देख पा रहा था कि क्या उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे, जैसा कि उनकी आवाज़ सुनकर मुझे लगा था। "मैंने आपसे कहा था कि मैंने आपकी तरफ़ सौ कदम बढ़ाए थे; उसका एकमात्र नतीजा यह हुआ कि..."

...ताकि आप मुझसे दो सौ की रकम वापस ले लें। अब पीछे हटने की बारी मेरी है, और अब हम एक-दूसरे को नहीं जानेंगे। मैं आपका नाम नहीं, बल्कि आपकी कहानी याद रखूँगा; ताकि जब कभी मुझे यह मानने का मन करे कि इंसानों के दिल अच्छे होते हैं, उनके तौर-तरीके अच्छे होते हैं, या उनमें कम-से-कम इतनी समझ तो होती ही है कि वे किसी बेमिसाल मौके को हाथ से जाने न दें—तो मुझे याद आ जाए कि मैं उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा ऊँचा दर्जा दे रहा हूँ। नहीं, आपने जो कहा कि आप मुझे जानते हैं—और यह सच भी था (क्योंकि अब से यह सच नहीं रहेगा)—उसे मैं बिल्कुल स्वाभाविक मानता हूँ; और मैं इसे एक तरह की

'श्रद्धांजलि' समझता हूँ—यानी, कोई सुखद बात। अफ़सोस की बात है कि दूसरी जगहों पर और दूसरे हालात में, आपने कुछ ऐसी बातें कही हैं जो बिल्कुल ही अलग किस्म की थीं।" "जनाब, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे आपकी बेइज़्ज़ती हो।" "और कौन कहता है कि मेरी बेइज़्ज़ती हुई है?" वह गुस्से से चिल्लाया; जिस सीट पर वह अब तक बेजान-सा लेटा हुआ था, उस पर वह अचानक तनकर बैठ गया। उसके चेहरे पर पीली-सी, झागदार नसें तन गईं; उसकी आवाज़ कभी तीखी हो जाती, तो कभी भारी—ठीक वैसे ही, जैसे कोई तूफ़ान अपने पूरे शोर-शराबे के साथ उमड़ पड़ता है। (वह जिस ज़ोरदार अंदाज़ में बात करता था—जिसे सुनकर सड़क पर चलते अजनबी भी पीछे मुड़कर देखने लगते थे—वह ज़ोर अब सौ गुना बढ़ गया था। यह ठीक वैसा ही था, जैसे पियानो पर बजाया गया कोई ज़ोरदार सुर (forte), जब किसी पूरे ऑर्केस्ट्रा द्वारा बजाया जाता है, तो उसकी ताक़त सौ गुना बढ़ जाती है और वह 'फ़ोर्टिसिमो' (fortissimo) में बदल जाता है। एम. डी. शार्लस दहाड़ उठा।) "क्या आपको लगता है कि मेरी बेज़्ज़ती करना आपके बस की बात है? ज़ाहिर है, आपको यह पता ही नहीं है कि आप किससे बात कर रहे हैं?" "क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारी तरह के पाँच सौ छोटे-मोटे लोगों का ज़हरीला थूक, जो एक-दूसरे पर जमा हो, मेरे महान पैरों की उंगलियों के सिरे को भी भिगो पाएगा?" इससे ठीक एक पल पहले, M. de Charlus को यह समझाने की मेरी इच्छा कि मैंने उनके बारे में कभी कुछ बुरा नहीं कहा, न ही किसी और को कहते सुना, एक पागलपन भरे गुस्से में बदल गई थी; यह गुस्सा उन शब्दों के कारण पैदा हुआ था, जो मेरी नज़र में, पूरी तरह से उनके बेहिसाब घमंड की वजह से उनके मुँह से निकले थे। शायद वे शब्द सचमुच, कुछ हद तक तो, इसी घमंड का नतीजा थे। बाकी लगभग सब कुछ एक ऐसी भावना से उपजा था जिसके बारे में मुझे उस समय तक कोई जानकारी नहीं थी, और इसलिए उस भावना को ठीक से न समझने के लिए मुझे दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। कम से कम, इस अनजान तत्व को छोड़ दें तो, अगर मुझे Mme. de Guermantes के शब्द याद होते, तो मैं उनके घमंड के साथ-साथ उनके व्यवहार में पागलपन का भी कुछ अंश देख पाता। लेकिन उस पल, पागलपन का विचार मेरे दिमाग में आया ही नहीं। मेरी नज़र में, उनके अंदर सिर्फ़ घमंड था, और मेरे अंदर सिर्फ़ गुस्सा। यह गुस्सा (ठीक उस पल जब M. de Charlus ने चिल्लाना बंद किया, ताकि वे अपने 'महान पैरों'

का ज़िक्र कर सकें—एक ऐसी शान के साथ जिसमें एक अजीब सी बनावटी मुस्कान और अपने 'तुच्छ निंदकों' के प्रति घिनौनी नफ़रत भी झलक रही थी)—यह गुस्सा अब और काबू में नहीं रह सका। एक अचानक और ज़ोरदार हरकत के साथ, मैं किसी चीज़ पर वार करना चाहता था; लेकिन, समझदारी का एक बचा-खुचा अंश मुझे उस आदमी का सम्मान करने से रोक रहा था जो मुझसे उम्र में बहुत बड़ा था—और यहाँ तक कि, कला के नमूनों के तौर पर उनकी गरिमा को देखते हुए, उनके आस-पास रखे जर्मन चीनी-मिट्टी के बर्तनों को भी नुकसान पहुँचाने से रोक रहा था। इसलिए, मैंने खुद को Baron की नई रेशमी टोपी पर झोंक दिया; उसे ज़मीन पर पटक दिया, उसे पैरों से रौंद डाला, और आँखें मूंदकर उसके टुकड़े-टुकड़े करने लगा। मैंने टोपी का किनारा तोड़ डाला, उसके ऊपरी हिस्से को दो टुकड़ों में फाड़ दिया—और इस दौरान M. de Charlus की ज़ोरदार चीख-पुकार पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, जो लगातार गूंज रही थी। फिर, कमरे से बाहर निकलने के लिए उसे पार करते हुए, मैंने दरवाज़ा खोला। दरवाज़े के दोनों ओर—जिसे देखकर मैं पूरी तरह से हक्का-बक्का रह गया—दो नौकर (footmen) खड़े थे; वे धीरे-धीरे वहाँ से हट गए, ताकि ऐसा लगे कि वे तो बस अपने काम के सिलसिले में इत्तेफ़ाक से वहाँ से गुज़र रहे थे। (बाद में मुझे उनके नाम पता चले; एक का नाम Burnier था, और दूसरे का Charmel।) उनकी धीमी चाल को देखकर जो सफ़ाई पेश करने की कोशिश की जा रही थी, उस पर मुझे एक पल के लिए भी यक़ीन नहीं हुआ। मुझे पेश किया। इसकी संभावना बहुत कम थी; बाकी तीन बातें मुझे ज़्यादा मुमकिन लगीं; पहली यह कि बैरन कभी-कभी ऐसे मेहमानों की मेहमाननवाज़ी करते थे जिनके ख़िलाफ़—क्योंकि उन्हें शायद मदद की ज़रूरत पड़ सकती थी (लेकिन क्यों?)—उन्हें अपने पास ही अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात रखना ज़रूरी लगता था। दूसरी बात यह थी कि, जिज्ञासावश, वे दरवाज़े के सुराख़ से सुनने के लिए रुक गए थे, यह सोचे बिना कि मैं इतनी जल्दी बाहर आ जाऊँगा। तीसरी बात यह थी कि, M. de Charlus ने मेरे साथ जो पूरा नाटक रचा और खेला था, वह पहले से ही तैयार था और उन्होंने खुद ही उन्हें सुनने के लिए कहा था—शायद तमाशे के प्रति अपने प्रेम के कारण, और साथ ही शायद इस सोच के साथ कि 'अब तुम सीखो' (nunc erudimini), जिससे हर किसी को कोई न कोई फ़ायदा ज़रूर होगा।

मेरे गुस्से से एम. डी चार्लस का गुस्सा शांत नहीं हुआ था; मेरे कमरे से चले जाने से उन्हें बहुत तकलीफ हुई; उन्होंने मुझे वापस बुलाया, अपने नौकरों से भी मुझे वापस बुलवाया, और अंत में, यह भूलकर कि कुछ ही पल पहले जब उन्होंने अपने 'शानदार पैर की उंगलियों' की बात की थी, तो उन्होंने मुझे अपने देवत्व का साक्षी बनाने का सोचा था, पूरी रफ्तार से मेरे पीछे दौड़े, हॉल में मुझे पकड़ लिया और दरवाज़ा रोककर खड़े हो गए। "अरे, अब," उन्होंने कहा, "बचकाना हरकतें मत करो; एक मिनट के लिए वापस आ जाओ; जो अच्छे से प्यार करता है, वह अच्छे से सबक सिखाता है, और अगर मैंने तुम्हें अच्छे से सबक सिखाया है तो इसलिए कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।" मेरा गुस्सा शांत हो गया था; मैंने 'सबक सिखाना' शब्द को अनसुना कर दिया और बैरन के पीछे-पीछे चला गया, जिन्होंने एक नौकर को बुलाकर बिना किसी झिझक के टूटी हुई टोपी के टुकड़े हटाने का आदेश दिया, और उसकी जगह दूसरी टोपी रख दी। “अगर आप मुझे बताएँगे, महोदय, कि किसने मेरे साथ विश्वासघात किया है,” मैंने एम. डी चार्लस से कहा, “मैं यहाँ रुककर उसका नाम पता करूँगा और उस धोखेबाज़ का पर्दाफ़ाश करूँगा।” “कौन? क्या आप नहीं जानते? क्या आपको अपनी कही हुई बातें याद नहीं रहतीं? क्या आपको लगता है कि जो लोग मुझे ये बातें बताकर मेरी मदद करते हैं, वे पहले गोपनीयता की माँग नहीं करते? और क्या आपको लगता है कि मैं उस व्यक्ति को धोखा दूँगा जिसे मैंने वचन दिया है?” “महोदय, तो क्या आपके लिए मुझे बताना असंभव है?” मैंने एम. डी चार्लस के बारे में किससे बात की होगी, यह पता लगाने की पूरी कोशिश करते हुए (और किसी को न ढूंढ पाते हुए) पूछा। “क्या आपने मुझे यह कहते हुए नहीं सुना कि मैंने अपने मुखबिर को गोपनीयता का वचन दिया था?” उन्होंने चिड़चिड़े स्वर में कहा। "मैं देखता हूँ कि तुम नीच बातों के प्रति अपने लगाव के साथ-साथ व्यर्थ की ज़िद भी करते हो। तुम्हें कम से कम इतनी समझ तो होनी चाहिए कि अंतिम बातचीत से कुछ सीख सको, और कुछ ऐसा कह सको जिसका कोई मतलब न हो।" "महोदय," मैंने उनसे दूर हटते हुए उत्तर दिया, "आप मेरा अपमान कर रहे हैं; मैं निहत्था हूँ, क्योंकि आप मुझसे कई गुना बड़े हैं, हम बराबरी के नहीं हैं; दूसरी ओर, मैं आपको मना नहीं सकता; मैं पहले ही आपसे शपथ लेकर कह चुका हूँ कि मैंने कुछ नहीं कहा।" "तो मैं झूठ बोल रहा हूँ?" वह एक भयानक स्वर में चिल्लाए, और एक छलांग लगाकर मेरे बिल्कुल करीब आ गए। "किसी ने तुम्हें गलत जानकारी दी है।" फिर

एक कोमल, स्नेहपूर्ण, उदास स्वर में, जैसे उन सिम्फनी में होता है जो विभिन्न भागों के बीच बिना किसी विराम के बजाई जाती हैं, जिनमें एक सुंदर, मनमोहक और सुखद स्केर्ज़ो, शुरुआती पन्नों की गड़गड़ाहट के बाद आता है: "यह बिल्कुल संभव है," उन्होंने मुझसे कहा। "आम तौर पर, सुनी-सुनाई बात शायद ही कभी सच होती है। अगर आपने मुझसे मिलने के उन अवसरों का लाभ नहीं उठाया जो मैंने आपको दिए थे, और रोज़मर्रा की बातचीत के उस खुलेपन से, जिससे विश्वास पैदा होता है, मुझे उस शब्द का एकमात्र और अचूक उपाय नहीं दिया जिसने आपको गद्दार साबित कर दिया, तो यह आपकी गलती है। चाहे सच हो या झूठ, बात अपना असर दिखा चुकी है। मैं उस छाप से कभी छुटकारा नहीं पा सकता जो इसने मुझ पर छोड़ी है। मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो अच्छी तरह से सुधारता है, वह अच्छी तरह से प्यार करता है, क्योंकि मैंने आपको अच्छी तरह से सुधारा है, लेकिन अब मैं आपसे प्यार नहीं करता।" यह कहते हुए उसने मुझे बैठने के लिए मजबूर किया और घंटी बजा दी। एक दूसरा नौकर आया। "कुछ पीने के लिए लाओ और गाड़ी मंगवाओ।" मैंने कहा कि मुझे प्यास नहीं लगी है और वैसे भी एक गाड़ी इंतज़ार कर रही है। "उन्होंने शायद उसे पैसे देकर भेज दिया होगा," उसने मुझसे कहा, "आपको इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपको घर ले जाने के लिए एक गाड़ी मंगवा रहा हूँ... अगर आपको समय की चिंता है... तो मैं आपको यहाँ एक कमरा दे सकता था..." मैंने कहा कि मेरी माँ बेचैन होंगी। "आह! बिल्कुल, हाँ। खैर, सच हो या झूठ, इस बात ने अपना असर दिखा दिया है। मेरा स्नेह, थोड़ा समय से पहले ही, बहुत जल्दी पनप गया था, और उन सेब के पेड़ों की तरह, जिनके बारे में आपने बालबेक में इतनी काव्यात्मकता से बात की थी, यह पहली ठंड को सहन नहीं कर पाया।" अगर एम. डी चार्लस का मेरे प्रति स्नेह टूटा न होता, तो वे शायद ही कुछ और करते, क्योंकि मुझे यह आश्वासन देते हुए कि अब हम एक-दूसरे को नहीं जानते, उन्होंने मुझे बिठाया, पानी पिलाया, रात रुकने के लिए कहा, और अब मुझे घर छोड़ने जा रहे थे। उनके चेहरे पर सचमुच उस पल का डर था जब उन्हें मुझसे अलग होना पड़ेगा और खुद को अकेला पाना पड़ेगा, ठीक उसी तरह का थोड़ा सा चिंतित भय जो उनकी भाभी और चचेरी बहन गुएरमांटेस को भी महसूस हुआ था जब उन्होंने मुझे थोड़ी देर और रुकने के लिए मजबूर करने की कोशिश की थी, मेरे लिए उसी क्षणिक स्नेह के साथ, गुजरते हुए पल को लंबा करने के उसी प्रयास के साथ। “दुर्भाग्यवश,”

उसने आगे कहा, “मेरे पास उस चीज़ को फिर से जीवित करने की शक्ति नहीं है जो एक बार नष्ट हो चुकी है। तुम्हारे लिए मेरा स्नेह पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। कुछ भी इसे पुनर्जीवित नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि यह स्वीकार करना मेरे लिए अनुचित नहीं है कि मुझे इसका खेद है। मैं हमेशा खुद को विक्टर ह्यूगो के बोआज की तरह महसूस करता हूँ: 'मैं विधवा और अकेला हूँ, और अंधकार मुझ पर छा रहा है।'”

मैं उसके साथ फिर से उस बड़े हरे रंग के ड्राइंग रूम से गुज़रा। मैंने उससे बड़ी सहजता से कहा कि मुझे वह कितना सुंदर लगा। "है ना?" उसने जवाब दिया। किसी चीज़ से लगाव होना अच्छी बात है। लकड़ी का काम बगार्ड का है। सबसे आकर्षक बात यह है कि इसे बोवेस की कुर्सियों और कंसोल से मेल खाने के लिए बनाया गया था। आप ध्यान दें, इसमें वही सजावटी डिज़ाइन दोहराया गया है। पहले इसे देखने के लिए केवल दो ही जगहें थीं, लूव्र और एम. डी'हिन्निसडाल का घर। लेकिन स्वाभाविक रूप से, जैसे ही मैंने इस गली में आकर रहने का फैसला किया, चिमे परिवार का एक पुराना घर सामने आ गया जिसे पहले किसी ने नहीं देखा था क्योंकि इसे खास तौर पर मेरे लिए ही यहाँ लाया गया था। कुल मिलाकर, यह अच्छा है। शायद यह और बेहतर हो सकता था, लेकिन आखिरकार यह बुरा भी नहीं है। कुछ सुंदर चीज़ें हैं, है ना? ये मेरे चाचाओं, पोलैंड के राजा और इंग्लैंड के राजा के चित्र हैं, जो मिग्नार्ड ने बनाए हैं। लेकिन मैं आपको यह सब क्यों बता रहा हूँ? आप भी मेरी तरह जानते होंगे, आप इसी कमरे में इंतज़ार कर रहे थे। नहीं? आह, तो उन्होंने आपको नीले ड्राइंग रूम में बिठाया होगा," उन्होंने एक खास अंदाज़ में कहा। शायद यह मेरी अरुचि के कारण मेरी गुस्ताखी थी, या फिर यह न पूछने की मेरी व्यक्तिगत श्रेष्ठता थी कि मुझे कहाँ इंतज़ार कराया जा रहा था। "देखो, इस अलमारी में मेरे पास श्रीमती एलिज़ाबेथ, प्रिंसेस डी लैम्बेल और महारानी द्वारा पहनी गई सभी टोपियाँ हैं। इनमें तुम्हारी कोई दिलचस्पी नहीं है, ऐसा लगता है जैसे तुम देख ही नहीं सकते। शायद तुम्हें ऑप्टिक नर्व की कोई बीमारी है। अगर तुम्हें इस तरह की सुंदरता ज़्यादा पसंद है, तो यहाँ टर्नर का बनाया हुआ एक इंद्रधनुष है जो इन दो रेम्ब्रांट चित्रों के बीच से चमकने लगा है, हमारे मेल-मिलाप के प्रतीक के रूप में। सुनो: बीथोवेन उनसे मिलने आए हैं।" और सचमुच, कोई पास ही कहीं, पहली मंज़िल पर, संगीतकारों के एक समूह द्वारा बजाए जा रहे पास्टोरल सिम्फनी के तीसरे भाग, 'तूफ़ान के बाद की खुशी' के पहले सुर सुन सकता

था। मैंने मासूमियत से पूछा कि वे इसे कैसे बजा रहे थे, और संगीतकार कौन थे। “अरे, खैर, कोई नहीं जानता। कोई कभी नहीं जान सकता। ये अदृश्य संगीत हैं। सुंदर है ना?” उन्होंने मुझसे थोड़ी अभद्रता भरे लहजे में कहा, जिसमें फिर भी स्वान का प्रभाव और लहजा झलक रहा था। “लेकिन तुम्हें इसकी उतनी ही परवाह है जितनी मछली को छोटे सेबों की। तुम घर जाना चाहते हो, चाहे तुम्हें बीथोवेन के लिए हो या मेरे लिए। तुम अपना खुद का फैसला और निंदा कर रहे हो,” उन्होंने स्नेहपूर्ण और उदास स्वर में कहा, जब मेरे जाने का समय आ गया था। “तुम मुझे घर तक साथ न चलने के लिए क्षमा करोगे, क्योंकि शिष्टाचार यही कहता है,” उन्होंने मुझसे कहा। “चूंकि मैंने तुमसे दोबारा न मिलने का फैसला कर लिया है, इसलिए तुम्हारे साथ पाँच मिनट और बिताने से मुझे कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन मैं थका हुआ हूँ, और मुझे बहुत काम करना है।” और फिर, यह देखकर कि रात सुहाना था: "ठीक है, हाँ, मैं गाड़ी में आऊँगा, चाँद बहुत सुंदर है जिसे मैं तुम्हें घर छोड़ने के बाद जंगल से निहारूँगा। क्या, तुम्हें दाढ़ी बनाना नहीं आता; बाहर खाना खाने के बाद भी, यहाँ कुछ बाल रह गए हैं," उसने मेरी ठुड्डी को दो उंगलियों के बीच पकड़ते हुए कहा, मानो चुम्बकित होकर, जो एक पल के प्रतिरोध के बाद नाई की उंगलियों की तरह मेरे कानों तक पहुँच गईं। "आह! तुम्हारे जैसे किसी के साथ जंगल में 'चाँद की नीली रोशनी' देखना कितना सुखद होगा," उसने अचानक और लगभग अनैच्छिक कोमलता से मुझसे कहा, फिर उदास स्वर में: "तुम वैसे भी अच्छे हो; तुम किसी से भी ज़्यादा अच्छे हो सकते हो," उसने पिता तुल्य भाव से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। "सच कहूँ तो, मुझे तुम पहले बिल्कुल महत्वहीन लगे थे।" मुझे सोचना चाहिए था कि वह मुझे इतना शांत क्यों समझता होगा। मुझे बस याद आया कि लगभग आधे घंटे पहले उसने मुझसे कितने गुस्से से बात की थी। इसके बावजूद मुझे ऐसा लगा कि फिलहाल वह सच में गंभीर है, कि उसकी दयालुता मेरी उस लगभग उन्मादी और अहंकारी अवस्था पर हावी हो रही है। गाड़ी हमारे पास ही खड़ी थी, और फिर भी उसने बातचीत को लंबा खींच दिया। "चलो," उसने अचानक कहा, "अंदर आ जाओ, पाँच मिनट में हम तुम्हारे दरवाजे पर होंगे। और मैं तुम्हें शुभ रात्रि कहूँगा, जिससे हमारे रिश्ते हमेशा के लिए खत्म हो जाएँगे। बेहतर है कि हम हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं, जैसे संगीत में एक सुर में।" इन गंभीर बयानों के बावजूद कि हम फिर कभी नहीं मिलेंगे, मैं कसम खा सकता था कि एम. डी

चार्लस, जो शाम को पहले खुद को भूल जाने से नाराज़ थे और मेरी भावनाओं को ठेस पहुँचाने से डरते थे, मुझे दोबारा देखकर नाराज़ नहीं होते। और मैं गलत भी नहीं था, क्योंकि एक पल बाद ही उन्होंने कहा: "देखो, अब," उन्होंने कहा, "अगर मैं सबसे ज़रूरी बात भूल न गया हूँ। तुम्हारी दादी की याद में, मैंने तुम्हारे लिए मैडम डी सेविग्ने की एक विशेष प्रति छपवाई है। यही वह चीज़ है जो हमारी इस मुलाकात को आखिरी होने से बचाएगी। हमें इस बात से तसल्ली लेनी चाहिए कि जटिल मामले एक दिन में सुलझते नहीं हैं। ज़रा देखो, वियना कांग्रेस में कितना समय लगा था।" "लेकिन मैं आपको परेशान किए बिना इसे मंगवा सकता हूँ," मैंने विनम्रता से कहा। "चुप रहो, छोटे मूर्ख," उन्होंने गुस्से से जवाब दिया, "और मेरे द्वारा शायद (मैं निश्चित रूप से नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि हो सकता है कि मेरे नौकरों में से कोई तुम्हें ये प्रतियाँ सौंपे) स्वागत किए जाने के सम्मान को छोटी बात न समझो।" फिर, खुद को संभालते हुए उन्होंने कहा: "मैं इन शब्दों के साथ तुमसे विदा नहीं लेना चाहता। सर्वोपरि शांति के समक्ष कोई असहमति नहीं।" ऐसा लग रहा था कि वह अपनी घबराहट के कारण असहमति भरे कठोर शब्दों के बाद तुरंत घर लौटने से डर रहा था। "क्या आप बोइस आना चाहेंगे?" उसने मुझसे प्रश्नवाचक से अधिक सकारात्मक स्वर में पूछा, और मुझे लगा कि ऐसा इसलिए नहीं था कि वह मुझे प्रस्ताव देना नहीं चाहता था, बल्कि इसलिए था कि उसे डर था कि उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँच सकती है। "अच्छा, ठीक है," वह हमारी विदाई को टालते हुए बोला, "यह वह समय है जब, जैसा कि व्हिस्लर कहते हैं, बुर्जुआ सोने जाते हैं" (शायद अब वह मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाना चाहता था) "और चीजों को देखने का सही समय है। लेकिन आप तो यह भी नहीं जानते कि व्हिस्लर कौन थे!" मैंने बातचीत का विषय बदल दिया और उससे पूछा कि क्या प्रिंसेस डी'इना एक बुद्धिमान व्यक्ति थीं। एम. डी चार्लस ने मुझे रोका और अब तक के सबसे तिरस्कारपूर्ण लहजे में मुझसे कहा, "ओह! महोदय, आप एक ऐसी नामकरण प्रणाली की बात कर रहे हैं जिससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। ताहिती लोगों में शायद कोई कुलीन वर्ग हो, लेकिन मुझे स्वीकार करना होगा कि मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता। आपने अभी जिस नाम का ज़िक्र किया है, वह अजीब बात है कि कुछ ही दिन पहले मेरे कानों में गूंजा था। किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें युवा ड्यूक डी गुआस्टाला से मिलवाने की अनुमति दूंगा। यह अनुरोध सुनकर मैं चकित रह गया, क्योंकि ड्यूक डी

गुआस्टाला को मुझसे मिलने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह मेरे चचेरे भाई हैं और मुझे जीवन भर से जानते हैं; वह प्रिंसेस डी पार्म के पुत्र हैं और एक अच्छे संस्कार वाले युवा रिश्तेदार होने के नाते, वह नव वर्ष के दिन मुझसे मिलने और सम्मान व्यक्त करने अवश्य आते हैं। लेकिन, पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि यह मेरे रिश्तेदार की बात नहीं थी, बल्कि उनके पुत्र की बात थी। जिस व्यक्ति में आपकी रुचि है। चूंकि उस उपाधि की कोई राजकुमारी नहीं है, इसलिए मैंने सोचा कि मेरा मित्र पोंट डी'इना के नीचे सो रही किसी अय्याश महिला की बात कर रहा होगा, जिसने बड़े ही आकर्षक ढंग से प्रिंसेस डी'इना की उपाधि धारण कर ली हो, ठीक वैसे ही जैसे लोग बैटिनोल्स के पैंथर या स्टील किंग की बात करते हैं। लेकिन नहीं, बात एक अमीर व्यक्ति की थी जिसके पास कुछ अद्भुत फर्नीचर है जिसे मैंने एक प्रदर्शनी में देखा और सराहा था, और जिसकी यह खासियत है कि वह अपने मालिक के नाम से भी बढ़कर असली है। इस स्वघोषित ड्यूक डी गुआस्टाला के बारे में, मैंने सोचा कि वह मेरे सचिव का स्टॉकब्रोकर होगा; पैसे से तो बहुत सी चीजें खरीदी जा सकती हैं। लेकिन नहीं; ऐसा लगता है कि सम्राट ने ही इन लोगों को ऐसी उपाधि देकर अपना मनोरंजन किया जो देने का अधिकार ही नहीं था। यह शायद सत्ता का प्रदर्शन था, या अज्ञानता का, या दुर्भावना का; किसी भी मामले में, मुझे लगता है कि इन अनजान हथियाने वालों के साथ यह एक बेहद घिनौना खेल था। लेकिन सच में, मैं आपको कुछ बताकर आपकी मदद नहीं कर सकता। इस मामले पर कुछ जानकारी? मेरी जानकारी फाउबर्ग सेंट-जर्मेन तक ही सीमित है, जहाँ सभी कूर्वोइसियर और गैलार्डन के बीच, अगर आप किसी तरह परिचय प्राप्त कर सकें, तो आपको बाल्ज़ाक की कहानियों से निकली हुई कई खस्ताहाल बिल्लियाँ मिलेंगी जो आपका मनोरंजन करेंगी। ज़ाहिर है, इन सबका प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की स्थिति से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन मेरे और मेरे 'ओपन, सेसम' के बिना उनके द्वार तक पहुँचना असंभव है। "यह वास्तव में बहुत सुंदर है, है ना, महोदय, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस का महल?" "ओह, यह बहुत सुंदर नहीं है। यह दुनिया की सबसे सुंदर चीज़ है। बेशक, स्वयं राजकुमारी के बाद।" "क्या प्रिंसेस डी गुएरमांटेस, डचेस डी गुएरमांटेस से बेहतर हैं?" "ओह! कोई तुलना ही नहीं है।" (यह ध्यान देने योग्य है कि समाज में जब भी लोगों में थोड़ी सी भी कल्पनाशीलता

होती है, तो वे अपनी भावनाओं या झगड़ों के अनुरूप उन लोगों को ताज पहनाते या गद्दी से हटा देते हैं जिनकी स्थिति सबसे ठोस और अपरिवर्तनीय प्रतीत होती है।)

"ड्यूशेस डी गुएरमांटेस" (शायद उन्हें 'ओरियान' न कहकर, वह मेरे और उनके बीच एक दूरी बनाए रखना चाहते थे) "मनमोहक हैं, आपकी कल्पना से कहीं अधिक श्रेष्ठ। लेकिन, आखिरकार, वह अपनी चचेरी बहन से अतुलनीय हैं। राजकुमारी बिल्कुल वैसी ही हैं जैसा बाज़ारों में लोग राजकुमारी मेटर्निच के बारे में सोचते होंगे, लेकिन बूढ़े मेटर्निच का मानना था कि उन्होंने वैगनर की शुरुआत की थी, क्योंकि वह विक्टर मौरेल को जानती थीं। राजकुमारी डी गुएरमांटेस, या यूँ कहें कि उनकी माँ, स्वयं उस व्यक्ति को जानती थीं। यह एक विशिष्टता है, और उस महिला की अविश्वसनीय सुंदरता का तो कहना ही क्या! और एस्थर के बगीचे तो बस देखने लायक हैं!" "क्या उन्हें देखा नहीं जा सकता?" "नहीं, आपको आमंत्रित किया जाना चाहिए, लेकिन वे मेरे हस्तक्षेप के बिना किसी को आमंत्रित नहीं करते।" लेकिन इस प्रस्ताव का लालच मुझ पर डालने के तुरंत बाद, उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया, क्योंकि हम मेरे दरवाजे पर पहुँच चुके थे। "मेरी भूमिका पूरी हो गई है, महोदय, मैं बस ये कुछ शब्द ही कहूँगा। शायद किसी दिन कोई और भी आपको अपना स्नेह अर्पित करेगा, जैसा मैंने किया है। इस उदाहरण को अपने लिए सीख समझें। इसे नज़रअंदाज़ न करें। स्नेह हमेशा अनमोल होता है। इस जीवन में जो कुछ मनुष्य स्वयं नहीं कर सकता, क्योंकि कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं न तो माँग सकता है, न कर सकता है, न चाह सकता है और न सीख सकता है, वह मनुष्य संगति में कर सकता है, और इसके लिए बाल्ज़ाक की कहानी की तरह तेरह वर्ष का होना या 'द थ्री मस्केटियर्स' की कहानी की तरह चार वर्ष का होना आवश्यक नहीं है। अलविदा।"

वह थका हुआ महसूस कर रहा होगा और चांदनी देखने जाने का विचार छोड़ दिया होगा, क्योंकि उसने मुझसे अपने कोचवान को घर जाने के लिए कहने को कहा। तुरंत ही उसने एक तीखा इशारा किया मानो उसने अपना इरादा बदल लिया हो। लेकिन मैं पहले ही आदेश दे चुका था, और समय बर्बाद न करने के लिए, घंटी बजाने के लिए आगे बढ़ गया, बिना यह सोचे कि मैं एम. डी चार्लस को जर्मन सम्राट और जनरल बोथा के बारे में बताने वाला था, वे

कहानियाँ जो एक घंटे पहले मेरे लिए एक जुनून थीं, लेकिन उसके अप्रत्याशित और निराशाजनक स्वागत ने उन्हें मेरे दिमाग से पूरी तरह से मिटा दिया था।

अपने कमरे में प्रवेश करते ही मैंने अपनी मेज पर एक पत्र देखा जो फ्रैंचाइज़ के युवा नौकर ने अपने एक मित्र को लिखा था और वहीं छोड़ दिया था। अब जब मेरी माँ घर से बाहर थीं, तो उसे कोई भी स्वतंत्रता लेने में कोई संकोच नहीं था; और इस पत्र को पढ़ने की गलती हम दोनों में से मेरी ही थी, क्योंकि यह बिना लिफाफे के मेरे सामने फैला पड़ा था और (जो मेरा एकमात्र बहाना था) मानो मेरी आँखों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

प्रिय मित्र और चचेरे भाई,

आशा है आप अच्छे स्वास्थ्य में होंगे, और सभी युवा भी, विशेषकर मेरे धर्मपुत्र जोसेफ, जिनसे अभी तक मिलने का सौभाग्य नहीं मिला है, लेकिन जिन्हें मैं आप सभी से अधिक अपना धर्मपुत्र मानता हूँ। हृदय के इन अवशेषों की भी अपनी राख है, उनके पवित्र अवशेषों पर हमें हाथ नहीं लगाना चाहिए। इसके अलावा, प्रिय मित्र और चचेरे भाई, कौन कह सकता है कि कल आप और आपकी प्रिय पत्नी, मेरी चचेरी बहन मैरी, दोनों समुद्र की गहराई में नहीं गिरेंगे, जैसे कोई नाविक ऊँचे मस्तूल से चिपका रहता है, क्योंकि यह जीवन एक अंधेरी घाटी के समान है। प्रिय मित्र, मुझे आपको बताना होगा कि मेरा मुख्य व्यवसाय, जो आपको निश्चित रूप से आश्चर्यचकित करेगा, अब कविता है, जिससे मुझे बेहद प्यार है, क्योंकि किसी न किसी तरह समय तो गुजारना ही पड़ता है। इसलिए प्रिय मित्र, अगर मैंने आपके पिछले पत्र का उत्तर अब तक नहीं दिया है तो ज्यादा आश्चर्यचकित न हों, क्षमा के स्थान पर विस्मृति को आने दें। जैसा कि आप जानते हैं, मैडम की माँ असहनीय पीड़ा के बीच गुजर गईं, जिसने उन्हें पूरी तरह से थका दिया था, क्योंकि उन्होंने तीन डॉक्टरों को दिखाया था। उनके अंतिम संस्कार का दिन... यह सभी के लिए एक शानदार दिन था। महोदय के सभी रिश्तेदार और कई मंत्री भी बड़ी संख्या में आए थे। उन्हें कब्रिस्तान तक पहुँचने में दो घंटे से अधिक समय लगा, जिसे देखकर आप सभी अपने गाँव में आँखें चौड़ी कर लेंगे, क्योंकि माँ मिचू के लिए तो ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। इसलिए मेरा पूरा जीवन एक लंबी सिसकी ही हो सकता है। मैं हाल ही में सीखी मोटरसाइकिल से खूब मनोरंजन कर रहा हूँ। मेरे प्यारे दोस्तों, अगर मैं अचानक पूरी रफ्तार से लेस इकोर्सेस पहुँच जाऊँ तो आप क्या कहेंगे? लेकिन इस विषय पर मैं अब और

चुप नहीं रहूँगा, क्योंकि मुझे लगता है कि दुःख का उन्माद बुद्धि को बहा ले जाता है। मैं डचेस डी गुएरमांटेस के साथ समय बिता रहा हूँ, जिनके नाम आपने हमारे अनपढ़ गाँवों में कभी नहीं सुने होंगे। इसलिए मुझे रेसीन, विक्टर ह्यूगो, पेजेस चॉइसिस डी चेनडोल, अल्फ्रेड डी मुसेट की रचनाएँ भेजने में खुशी हो रही है, क्योंकि मैं उस भूमि को शुद्ध करना चाहता हूँ जहाँ मैंने अज्ञानता का प्रकाश देखा है जो निश्चित रूप से अपराध की ओर ले जाता है। मुझे कुछ और सूझ नहीं रहा है। आपको और भी बहुत कुछ कहना है और लंबी उड़ान से थके हुए पेलिकन की तरह आपको मेरी शुभकामनाएं भेज रहा हूं, साथ ही आपकी पत्नी, मेरे धर्मपुत्र और आपकी बहन रोज़ को भी। ईश्वर करे कि उनके बारे में कभी ऐसा न कहा जाए: "रोज़, वह तो गुलाबों की तरह ही जीती थीं," जैसा कि विक्टर ह्यूगो, आर्वर्स के सॉनेट, अल्फ्रेड डी मुसेट और उन सभी महान प्रतिभाओं ने कहा है, जिन्हें इसी कारण से जोन ऑफ आर्क की तरह जलते हुए फांसी के तख्ते पर मरना पड़ा। आपके अगले पत्र की शीघ्र प्रतीक्षा है, भाई के स्नेह भरे चुंबन स्वीकार करें।

"पेरिगोट (जोसेफ)।"

हम जीवन के हर उस रूप की ओर आकर्षित होते हैं जो हमें कुछ अज्ञात और विचित्र सा लगता है, एक ऐसे अंतिम भ्रम की ओर जो अभी तक टूटा नहीं है। इसके बावजूद, वे रहस्यमयी बातें जिनके माध्यम से एम. डी चार्लस ने मुझे राजकुमारी डी गुएरमांटेस को एक असाधारण प्राणी के रूप में कल्पना करने के लिए प्रेरित किया था, जो मेरे जानने वाले किसी भी व्यक्ति से अलग थीं, उस स्तब्धता को समझाने के लिए पर्याप्त नहीं थीं जिसमें मैं डूब गया था, और जिसके बाद मुझे यह डर सताने लगा कि कहीं मैं किसी ऐसे व्यक्ति के बुरे मजाक का शिकार तो नहीं हो गया हूँ जो मुझे किसी ऐसे घर के दरवाजे पर भेजना चाहता है जहाँ मुझे आमंत्रित नहीं किया गया था। डचेस के साथ रात्रिभोज के लगभग दो महीने बाद, जब वह कान्स में थीं, मैंने एक लिफाफा खोला जिसकी बनावट देखकर मुझे नहीं लगा था कि उसमें कुछ असामान्य है, और उसमें एक कार्ड पर ये शब्द खुदे हुए थे: "राजकुमारी डी गुएरमांटेस, जन्म से डचेस एन बवेरिया, घर पर, ——वीं।" इसमें कोई शक नहीं कि प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ आमंत्रित होना, सामाजिक दृष्टि से, डचेस के साथ भोजन करने से शायद ही ज़्यादा मुश्किल था, और वंश-विज्ञान के मेरे थोड़े से ज्ञान ने मुझे सिखाया था कि राजकुमार की

उपाधि ड्यूक की उपाधि से श्रेष्ठ नहीं होती। इसके अलावा, मैंने खुद से कहा कि एक समाज की महिला की बुद्धिमत्ता, एम. डी चार्लस के बताए अनुसार, उसकी समताप मंडली की अन्य महिलाओं से उतनी भिन्न नहीं हो सकती, न ही समाज की किसी अन्य महिला से। लेकिन मेरी कल्पना, एल्स्टिर की तरह, जो प्रकृति के नियमों के ज्ञान के बिना परिप्रेक्ष्य का प्रभाव उत्पन्न करने में लगी थी, मेरे लिए वह नहीं दर्शाती थी जो मैं जानती थी, बल्कि वह दर्शाती थी जो वह देखती थी; यानी वह जो नाम उसे दिखाता था। अब, डचेस से मिलने से पहले ही, राजकुमारी की उपाधि से पहले लगा गुएरमांटेस नाम, किसी स्वर, रंग या मात्रा की तरह, गणितीय या सौंदर्य संबंधी चिह्न द्वारा आसपास के मूल्यों से गहराई से संशोधित होकर, मेरे लिए कुछ बिल्कुल अलग ही विचार प्रस्तुत कर रहा था। उस शीर्षक को देखते ही मन में स्वाभाविक रूप से लुई XIII और लुई XIV के दिनों की यादें, अंग्रेजी दरबार, स्कॉटलैंड की रानी, डचेस डी'औमाले की यादें ताजा हो जाती हैं; और मैंने प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के टाउन हाउस की कल्पना की, जहाँ डचेस डी लोंग्यूविले और महान कोंडे अक्सर आते-जाते थे, जिनकी उपस्थिति के कारण मेरे लिए कभी भी वहाँ जाना लगभग असंभव था।

एम. डी चार्लस ने मुझे जो कुछ बताया था, उनमें से कई बातों ने मेरी कल्पना को एक ज़बरदस्त प्रेरणा दी और मुझे यह भुला दिया कि मैडम डी गुएरमांटेस के यहाँ वास्तविकता ने मुझे कितना निराश किया था (इस लिहाज़ से लोगों के नाम जगहों के नामों की तरह होते हैं), और मेरी कल्पना ओरियान की चचेरी बहन की ओर झुक गई। वैसे भी, एम. डी चार्लस ने समाज में लोगों के काल्पनिक मूल्य और विविधता के बारे में मुझे कई बार गुमराह किया, क्योंकि वे स्वयं भी कई बार गुमराह हो जाते थे। और शायद इसका कारण यह था कि वे कुछ नहीं करते थे, न लिखते थे, न चित्रकारी करते थे, यहाँ तक कि गंभीरता से कुछ पढ़ते भी नहीं थे। लेकिन समाज के लोगों से कई गुना श्रेष्ठ होने के बावजूद, अगर उन्होंने अपनी बातचीत के लिए सामग्री उन्हीं से और उनके द्वारा प्रस्तुत तमाशे से ली थी, तो शायद इसी कारण वे उन्हें समझ नहीं पाए। एक कलाकार के रूप में, वे समाज के लोगों के भ्रामक आकर्षण को ही उजागर कर सकते थे। लेकिन वे इसे केवल कलाकारों के सामने ही उजागर कर सकते थे, जिनके संबंध में उन्हें एस्किमो लोगों के बीच बारहसिंगे जैसी भूमिका निभाने वाला कहा जा सकता है। यह बहुमूल्य जानवर बंजर चट्टानों से उनके लिए लाइकेन और काई उखाड़ता है,

जिन्हें वे स्वयं न तो खोज सकते हैं और न ही उपयोग कर सकते हैं, लेकिन एक बार जब बारहसिंगा उन्हें पचा लेता है, तो वे सुदूर उत्तर के निवासियों के लिए भोजन का एक पौष्टिक रूप बन जाते हैं।

इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि एम. डी. चार्लस द्वारा समाज के जो चित्र बनाए गए थे, वे उनकी तीव्र घृणाओं और भावुक स्नेह के मिश्रण से जीवंत हो उठे थे। घृणा मुख्य रूप से युवा पुरुषों के प्रति निर्देशित थी, जबकि स्नेह मुख्य रूप से कुछ महिलाओं के प्रति था।

यदि इनमें से राजकुमारी डी गुएरमांटेस को एम. डी चार्लस द्वारा सर्वोच्च सिंहासन पर बिठाया गया था, तो उनके चचेरे भाई के निवास स्थान 'अगम्य अलादीन के महल' के बारे में उनके रहस्यमय शब्द मेरी अचंभे को समझाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। विभिन्न व्यक्तिपरक दृष्टिकोणों के कारण, जिनके बारे में मुझे बाद में बात करनी होगी, इन कृत्रिम अतिशयोक्तियों में जो भी हो, तथ्य यह है कि इन सभी व्यक्तियों में एक निश्चित वस्तुनिष्ठ वास्तविकता है, और परिणामस्वरूप उनमें अंतर है। और जब बात उस पर आती है, तो यह अन्यथा कैसे हो सकता है? वह मानवता जिसके साथ हम रहते हैं और जो हमारे सपनों से बहुत कम मिलती-जुलती है, फिर भी वही है जिसका वर्णन हमने प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संस्मरणों और पत्रों में देखा है और जिसे जानने की इच्छा हमारे मन में रही है। रात के खाने पर मिले उस महत्वहीन बूढ़े व्यक्ति ने ही वह गर्व भरा पत्र लिखा था, जिसे (1870 के युद्ध पर एक पुस्तक में) हमने भावुकता से पढ़ा था, राजकुमार फ्रेडरिक-कार्ल को। हम खाने की मेज पर ऊब जाते हैं क्योंकि हमारी कल्पना शक्ति अनुपस्थित होती है, और क्योंकि मेज हमारा साथ दे रही होती है, इसलिए हम किताब में रुचि लेते हैं। लेकिन यहाँ जिन लोगों की बात हो रही है, वे सब एक ही हैं। हम श्रीमती डी पोम्पाडोर को जानना चाहते थे, जो कला की इतनी मूल्यवान संरक्षक थीं, और हम उनकी संगति में उतने ही ऊब जाते जितने कि आधुनिक एगेरियाओं की संगति में, जिनके घरों में हम दोबारा जाने की हिम्मत नहीं कर पाते, क्योंकि वे हमें इतनी नीरस लगती हैं। फिर भी, यह तथ्य बना रहता है कि ये अंतर मौजूद हैं। लोग कभी भी एक-दूसरे के बिल्कुल समान नहीं होते, हमारे प्रति उनका व्यवहार, एक समान स्तर की मित्रता में भी, ऐसे अंतर प्रकट करता है जो अंततः क्षतिपूर्ति प्रदान करते हैं। जब मैं श्रीमती डी मोंटमोरेंसी को जानता था, तो उन्हें मुझसे अप्रिय बातें कहना पसंद था, लेकिन अगर मुझे किसी सेवा की आवश्यकता होती, तो वह मेरे

लिए उसे प्रभावी ढंग से प्राप्त करने की आशा में, बिना किसी लागत की परवाह किए, अपनी सारी साख लुटा देतीं। जबकि कुछ अन्य महिला, श्रीमती... उदाहरण के लिए, डी गुएरमांटेस कभी मेरी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थीं, मेरे बारे में हमेशा वही कहती थीं जिससे मुझे खुशी मिले, उन्होंने मुझ पर मित्रता के वे सभी प्रतीक बरसाए जो गुएरमांटेस परिवार के समृद्ध जीवन शैली का हिस्सा थे, लेकिन अगर मैंने उनसे इसके अलावा कोई छोटी सी भी चीज़ माँगी होती, तो वह मेरे लिए उसे लाने के लिए एक इंच भी नहीं हिलतीं, ठीक वैसे ही जैसे उन देहाती घरों में होता है जहाँ एक कार और एक खास नौकर तो होता है, लेकिन एक गिलास साइडर मिलना नामुमकिन होता है, जिसके लिए पार्टी के आयोजनों में कोई व्यवस्था नहीं की गई होती। मेरे लिए सच्ची मित्र कौन थी, श्रीमती डी मोंटमोरेंसी, जो मुझे परेशान करने में हमेशा खुश रहती थीं और मेरी मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहती थीं, या श्रीमती डी गुएरमांटेस, जो मेरे द्वारा किए गए जरा से अपमान से भी दुखी हो जाती थीं और मेरी मदद करने के लिए जरा सा भी प्रयास करने में असमर्थ थीं? मानव मन के प्रकार इतने विविध और विपरीत हैं, न केवल साहित्य में बल्कि समाज में भी, कि बॉडेलेयर और मेरिमी ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिन्हें एक-दूसरे को तुच्छ समझने का अधिकार है। ये विशिष्टताएँ प्रत्येक व्यक्ति में दृष्टिकोण, वाणी और कर्मों की एक ऐसी सुसंगत और निरंकुश प्रणाली का निर्माण करती रहती हैं कि जब हम किसी के भी साथ होते हैं तो उसकी प्रणाली हमें बाकी सभी से श्रेष्ठ प्रतीत होती है। श्रीमती डी गुएरमांटेस के मामले में, उनके मन के प्रकार से प्रमेय की तरह निकाले गए उनके शब्द मुझे एकमात्र ऐसे शब्द प्रतीत हुए जो कहे जा सकते थे। और मैं भी उनके इस विचार से सहमत था जब उन्होंने मुझसे कहा कि श्रीमती डी मोंटमोरेंसी मूर्ख थीं और उन सभी चीजों के प्रति खुला दिमाग रखती थीं जिन्हें वह समझ नहीं पाती थीं, या जब उस महिला की किसी द्वेषपूर्ण टिप्पणी को सुनकर उन्होंने कहा: "इसे आप अच्छी स्त्री कहते हैं; इसे मैं राक्षस कहती हूँ।" लेकिन वास्तविकता का यह अत्याचार, जो हमारे सामने है, दीपक की रोशनी की यह अधिकता जो भोर को—जो पहले से ही दूर है—एक धुंधली सी याद की तरह फीका कर देती है, श्रीमती डी गुएरमांटेस से दूर होने पर गायब हो गई, और एक दूसरी महिला ने मुझसे कहा, खुद को मेरे स्तर पर रखते हुए और डचेस को हम दोनों से बहुत नीचे मानते हुए: "ओरियान को वास्तव में किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति में कोई

दिलचस्पी नहीं है," या यहाँ तक कि (जो श्रीमती डी गुएरमांटेस की उपस्थिति में मानना असंभव लगता, क्योंकि उन्होंने खुद इसके विपरीत ज़ोर से कहा था): "ओरियान घमंडी है।" यह देखते हुए कि कोई भी गणितीय प्रक्रिया श्रीमती डी अर्पाजोन और श्रीमती डी मोंटपेंसियर को तुलनीय मात्राओं में परिवर्तित नहीं कर सकती, मेरे लिए यह उत्तर देना असंभव होता, यदि किसी ने मुझसे पूछा होता कि मुझे दोनों में से कौन श्रेष्ठ लगती है।

अब, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के ड्राइंग रूम की खासियतों में से सबसे ज़्यादा चर्चित विशेषता एक खास तरह का अलगाव था, जिसका कुछ कारण राजकुमारी का शाही खानदान था, लेकिन खास तौर पर राजकुमार के लगभग जड़े हुए कुलीन पूर्वाग्रह थे। संयोगवश, ड्यूक और डचेस ने मेरे सामने इन पूर्वाग्रहों का मज़ाक उड़ाने में कोई संकोच नहीं किया था, और स्वाभाविक रूप से इसी वजह से मुझे यह पहले से भी ज़्यादा असंभव लगने लगा था कि मुझे उस व्यक्ति द्वारा पार्टी में आमंत्रित किया गया हो जो केवल राजघरानों और ड्यूकों को ही महत्व देता था, और हर डिनर पार्टी में इस बात पर हंगामा करता था कि उसे वह स्थान नहीं मिला जिसके वह लुई XIV के शासनकाल में हकदार था, एक ऐसा स्थान जिसके बारे में इतिहास और वंशावली के मामलों में अपने अपार ज्ञान के कारण केवल वही जानता था। इसी कारण, समाज के कई लोग ड्यूक और डचेस को उनके चचेरे भाइयों से अलग करने वाली विशेषताओं का श्रेय देते थे। "ड्यूक और डचेस कहीं अधिक आधुनिक, कहीं अधिक बुद्धिमान हैं, वे दूसरे दंपत्ति की तरह सिर्फ इस बात पर ध्यान नहीं देते कि किसी के पास कितने कमरे हैं, उनका घर उनके चचेरे भाइयों के घर से तीन सौ साल आगे है," ये आम टिप्पणियां थीं, जिनकी याद आते ही मैं निमंत्रण पत्र को देखते हुए कांप उठा, जिस पर उन्होंने लिखा था कि यह किसी शरारती व्यक्ति द्वारा भेजा गया हो सकता है।

अगर ड्यूक और डचेस अभी भी कान्स में न होते, तो मैं उनसे यह पता लगाने की कोशिश कर सकता था कि मुझे मिला निमंत्रण असली था या नहीं। यह संदेह की स्थिति जिसमें मैं डूब गया था, जैसा कि मैंने कुछ समय के लिए खुद को तसल्ली देते हुए सोचा था, किसी ऐसी भावना के कारण नहीं थी जो एक फैशनेबल व्यक्ति महसूस नहीं करता और जिसे, परिणामस्वरूप, एक लेखक को, भले ही वह अपने लेखन के अलावा फैशनेबल वर्ग से संबंधित हो, पूरी तरह से 'निष्पक्ष' होने और प्रत्येक वर्ग को अलग-अलग चित्रित करने के लिए

पुन: प्रस्तुत करना चाहिए। दरअसल, अभी कुछ ही दिन पहले, संस्मरणों की एक आकर्षक पुस्तक में, मुझे ठीक वैसी ही अनिश्चितताओं का विवरण मिला, जैसी प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के कार्ड ने मुझे महसूस करवाई थीं। "जॉर्जेस और मैं" (या "हेली और मैं," मेरे पास संदर्भ की पुष्टि करने के लिए पुस्तक उपलब्ध नहीं है) "श्रीमती डेलेसेर्ट के यहाँ आमंत्रित किए जाने के लिए इतने उत्सुक थे कि उनका निमंत्रण मिलने पर, हमने यह सुनिश्चित करना उचित समझा कि हम अप्रैल फूल के किसी मज़ाक का शिकार तो नहीं हो रहे हैं।" अब, लेखक कोई और नहीं बल्कि कॉम्टे डी'हॉसनविल (वही जिन्होंने ड्यूक डी ब्रोगली की बेटी से विवाह किया था) हैं और दूसरा युवक जो 'स्वतंत्र रूप से' यह सुनिश्चित करता है कि उसके साथ कोई मज़ाक नहीं किया जा रहा है, वह, चाहे उसका नाम जॉर्जेस हो या हेली, श्रीमती डी'हॉसनविल के दो घनिष्ठ मित्रों में से एक है, या तो एम. डी'हारकोर्ट या प्रिंस डी शैले।

जिस दिन प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पर पार्टी होनी थी, उसी दिन मुझे पता चला कि ड्यूक और डचेस पेरिस लौट आए हैं। राजकुमारी के भोज के कारण तो वे वापस नहीं आए थे, लेकिन उनके एक चचेरे भाई की तबीयत बहुत खराब थी, और इसके अलावा ड्यूक उसी रात होने वाले एक उत्सव में बहुत व्यस्त थे, जिसमें उन्हें खुद लुई 11 के रूप में और उनकी पत्नी को बवेरिया की इसाबेल के रूप में उपस्थित होना था। इसलिए मैंने उस सुबह उनसे मिलने जाने का निश्चय किया। लेकिन, जल्दी बाहर जाने के कारण, वे अभी तक नहीं लौटे थे; मैंने सबसे पहले एक छोटे से कमरे से, जो मुझे उनकी गाड़ी के आने का इंतज़ार करने के लिए एक अच्छी जगह लग रही थी, उनकी गाड़ी के आने का इंतज़ार किया। दरअसल, मैंने अपनी वेधशाला का चुनाव बहुत ही गलत किया था, जहाँ से मैं मुश्किल से अपने आँगन को देख पा रहा था, लेकिन मैं कई अन्य आँगन देख पा रहा था, और यह, हालांकि मेरे लिए किसी काम का नहीं था, कुछ समय के लिए मेरे मन में बसा रहा। ऐसा केवल वेनिस में ही नहीं है कि किसी को एक साथ कई घरों के ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं जो चित्रकारों को इतना आकर्षित करते हैं; पेरिस में भी ठीक ऐसा ही है। और मैं वेनिस का उदाहरण यूं ही नहीं दे रहा। पेरिस के कुछ गरीब इलाके सुबह के समय वेनिस के गरीब इलाकों की याद दिलाते हैं, जहां सूरज की किरणें ऊंची-चौड़ी चिमनियों पर पड़ती हैं और उन्हें बेहद चटख गुलाबी और लाल रंग देती हैं; घरों के ऊपर खिले फूलों का पूरा बगीचा ऐसा लगता है मानो किसी बगीचे में डेल्फ़्ट या हार्लेम के

ट्यूलिप प्रेमी ने लगाया हो। और फिर, घरों की अत्यधिक निकटता, जिनकी खिड़कियाँ एक साझा आँगन की ओर आमने-सामने खुलती हैं, प्रत्येक खिड़की को एक ऐसे फ्रेम में बदल देती है जिसमें एक रसोइया स्वप्निल होकर नीचे ज़मीन को निहार रहा होता है, और उससे कुछ दूरी पर एक लड़की के बाल एक बूढ़ी औरत संवार रही होती है जिसका चेहरा, छाया में मुश्किल से पहचाना जा सकता है, किसी चुड़ैल जैसा दिखता है: इस प्रकार प्रत्येक आँगन अपने भीतर सभी ध्वनियों को दबाकर, खिड़कियों के बंद होने से जगमगाते आयताकार फ्रेमों की एक श्रृंखला में मौन भावों की एक श्रृंखला को दृश्यमान छोड़कर, बगल के घर के लिए एक प्रदर्शनी का काम करता है, जिसमें सौ डच चित्र पंक्तियों में टंगे होते हैं। निश्चित रूप से होटल डी गुएरमांटेस से वैसा दृश्य नहीं दिखता था, लेकिन कुछ विचित्र दृश्य भी थे, विशेष रूप से उस विचित्र त्रिकोणमितीय बिंदु से जहाँ मैंने खुद को स्थापित किया था और जहाँ से मेरी निगाहें निकट की उन ऊँचाइयों पर ही टिकी रहती थीं जो अपेक्षाकृत अस्पष्ट भूखंडों द्वारा निर्मित थीं, जो एक खड़ी ढलान पर, मार्क्विज़ डी प्लासैक और श्रीमती के महल से पहले स्थित थीं। डी ट्रेस्मेस, एम. डी गुएरमांटेस के चचेरे भाई (उच्चतम श्रेणी के), जिन्हें मैं नहीं जानता था। मेरे और इस घर (जो उनके पिता, एम. डी ब्रेक्विग्नी का था) के बीच केवल नीची इमारतों के ब्लॉक थे, जो हर संभव दिशा में फैले हुए थे और दृश्य को अवरुद्ध किए बिना, अपने तिरछे परिप्रेक्ष्य से दूरी को बढ़ा रहे थे। कोच-हाउस का लाल टाइलों वाला बुर्ज, जिसमें मार्क्विस डी फ्रेकोर्ट अपनी गाड़ियाँ रखते थे, वास्तव में एक ऊंचे शिखर पर समाप्त होता था, लेकिन इतना पतला था कि कुछ भी नहीं छिपाता था, और स्विट्जरलैंड की उन सुरम्य पुरानी इमारतों की याद दिलाता था जो पहाड़ की तलहटी में एकांत में खड़ी होती हैं। मेरी नज़र जिन सभी अस्पष्ट और भिन्न बिंदुओं पर टिकी थी, उन्होंने श्रीमती डी प्लासैक के घर को, जो वास्तव में काफी पास था लेकिन अल्पाइन परिदृश्य की तरह काल्पनिक रूप से दूर प्रतीत होता था, मानो वह हमसे कई गलियों या पहाड़ियों की श्रृंखला से अलग हो। जब इसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ, जो सूर्य की रोशनी में चट्टानी क्रिस्टल के टुकड़ों की तरह चमक रही थीं, कमरों में हवा आने देने के लिए खोली गईं, तो एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक नौकरों को देखते हुए, जिन्हें स्पष्ट रूप से देखना असंभव था लेकिन जो कालीन झाड़ते हुए दिखाई दे रहे थे, वही आनंद महसूस हुआ जैसा टर्नर या एल्स्टिर के किसी परिदृश्य में सेंट-गोथर्ड पर्वतमाला की विभिन्न ऊँचाइयों पर

किसी मेल-कोच में बैठे यात्री या गाइड को देखने पर होता है। लेकिन जिस स्थिति में मैं बैठा था, वहाँ से मुझे श्रीमान या श्रीमती डी गुएरमांटेस के आने का न देख पाने का खतरा था, इसलिए दोपहर में जब मुझे अपना अवलोकन फिर से शुरू करने का समय मिला, तो मैं सीढ़ियों पर खड़ा हो गया, जहाँ से गाड़ी के द्वार का खुलना मेरी नज़र से नहीं बच सकता था, और मैंने खुद को इसी सीढ़ी पर स्थापित कर लिया, हालाँकि वहाँ ब्रेकिन्नी-ट्रेस्मेस हवेली की अल्पाइन सुंदरता दिखाई नहीं दे रही थी, जो दूरी के कारण छोटे-छोटे दिखाई दे रहे नौकरों के साथ सफाई में व्यस्त होकर मनमोहक लग रही थी। अब सीढ़ियों पर मेरा यह इंतज़ार मेरे लिए इतने गंभीर परिणाम लेकर आया, और मुझे एक ऐसी तस्वीर दिखाई दी जो अब टर्नर की शैली से प्रेरित नहीं थी, बल्कि नैतिक थी, और इतनी महत्वपूर्ण थी कि इसका वर्णन कुछ समय के लिए स्थगित करना बेहतर होगा। पहले मैं गुएरमांटे परिवार से मिलने का वर्णन कर देता हूँ, जब मुझे पता चला कि वे घर लौट आए हैं। पुस्तकालय में केवल ड्यूक ने ही मेरा स्वागत किया। जैसे ही मैं अंदर गया, वहाँ से बर्फ जैसे सफेद बालों वाला एक छोटा सा आदमी निकला, जिसके चेहरे पर गरीबी झलक रही थी, और उसने गले में एक छोटा सा काला कपड़ा बांध रखा था, जैसा कि कॉम्ब्रे के वकील और मेरे दादाजी के कई दोस्त पहनते थे, लेकिन वह उनसे कहीं अधिक संकोची लग रहा था। उसने मुझे कई बार झुककर प्रणाम किया और मेरे उसके पास से गुजरने तक नीचे जाने से साफ इनकार कर दिया। ड्यूक ने पुस्तकालय से उसके पीछे कुछ चिल्लाया जो मुझे समझ नहीं आया, और दूसरे ने दीवार की ओर इशारा करते हुए और प्रणाम किए, क्योंकि ड्यूक उसे देख नहीं पा रहे थे, लेकिन फिर भी वह बार-बार ऐसा करता रहा, जैसे टेलीफोन पर बात कर रहे लोगों के चेहरों पर निरर्थक मुस्कान हो; उनकी आवाज़ पतली और सुरीली थी, और उन्होंने एक व्यापारी की विनम्रता से मुझे फिर से नमस्कार किया। और सच कहें तो, वे कॉम्ब्रे के एक व्यापारी ही लग रहे थे, क्योंकि उनका अंदाज़ बिल्कुल देहाती, पुराने ज़माने का और सौम्य था, ठीक वैसे ही जैसे वहाँ के आम लोगों, वहाँ के विनम्र बुज़ुर्गों का होता है। कमरे में प्रवेश करते ही ड्यूक ने मुझसे कहा, "आप एक मिनट में ओरियान से मिलेंगे।" "क्योंकि स्वान अभी आ रहा है और माल्टा के सिक्कों पर अपनी किताब के प्रूफ ला रहा है, और उससे भी बुरी बात, एक बहुत बड़ी तस्वीर जो उसने हर सिक्के के दोनों तरफ दिखाते हुए खिंचवाई है, इसलिए ओरियान ने जल्दी तैयार होना

बेहतर समझा ताकि वह रात के खाने के समय तक उसके साथ रह सके। हमारे घर में पहले से ही इतना सामान भरा पड़ा है कि हमें समझ नहीं आ रहा कि हम उसे कहाँ रखें, और मैं सोच रहा हूँ कि आखिर हम इस तस्वीर को कहाँ रखेंगे। लेकिन मेरी पत्नी बहुत ही नेक दिल है, जिसे लोगों को खुश करना बहुत पसंद है। उसने सोचा कि स्वान से यह पूछना शिष्टाचार होगा कि वह उसे एक ही शीट पर उन सभी ग्रैंड मास्टर्स के सिर दिखाए जिनके पदक उसे रोड्स में मिले हैं। मैंने माल्टा कहा था, है ना? यह रोड्स है, लेकिन ये सब एक ही ऑर्डर ऑफ सेंट जॉन ऑफ जेरूसलम हैं। असल में, उसे इनमें दिलचस्पी सिर्फ इसलिए है क्योंकि स्वान ने इसे अपना शौक बना लिया है। हमारा परिवार इस पूरी कहानी में बहुत उलझा हुआ है; अभी भी।" आज, मेरे भाई, जिन्हें आप जानते हैं, माल्टा के सर्वोच्च गणमान्य व्यक्तियों में से एक हैं। लेकिन अगर मैंने यह सब ओरियान को बताया होता, तो वह मेरी बात सुनती ही नहीं। दूसरी ओर, स्वान के टेम्प्लर्स पर शोध (यह आश्चर्यजनक है कि एक धर्म के लोगों में दूसरे धर्म के अध्ययन के लिए कितना जुनून होता है) ने उन्हें रोड्स के शूरवीरों के इतिहास तक पहुँचाया, जो टेम्प्लर्स के उत्तराधिकारी थे, और ओरियान ने तुरंत इन शूरवीरों के प्रमुखों को देखने की ज़िद की। साइप्रस के राजा लुसिग्नन्स, जिनसे हम सीधे वंशज हैं, की तुलना में वे वास्तव में बहुत छोटे थे। लेकिन अब तक, क्योंकि स्वान ने उनके बारे में बात नहीं की है, ओरियान लुसिग्नन्स के बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहती। मैं ड्यूक को तुरंत यह नहीं समझा सका कि मैं क्यों आया था। हुआ यह कि कई रिश्तेदार या दोस्त, जिनमें श्रीमती भी शामिल थीं... डी सिलिस्ट्री और डचेस डी मोंट्रोस, डचेस से मिलने आईं, जो अक्सर भोजन से पहले घर पर होती थीं। उन्हें वहाँ न पाकर वे कुछ देर ड्यूक के साथ रुक गईं। इन दोनों महिलाओं में से पहली (राजकुमारी डी सिलिस्ट्री), सादे वस्त्रों में, रूखे लेकिन दोस्ताना स्वभाव की थीं और उनके हाथ में एक छड़ी थी। पहले तो मुझे लगा कि कहीं उन्हें चोट तो नहीं लगी या वे अपंग तो नहीं हैं। लेकिन इसके विपरीत, वे पूरी तरह से सतर्क थीं। उन्होंने ड्यूक से उनके एक चचेरे भाई के बारे में खेदपूर्वक बताया—जो गुएरमांटेस परिवार से नहीं थे, बल्कि अगर संभव होता तो और भी प्रतिष्ठित थे—जिनका स्वास्थ्य, जो कुछ समय से गंभीर था, अचानक बिगड़ गया था। लेकिन यह स्पष्ट था कि ड्यूक, अपने चचेरे भाई की हालत पर दया से भरे हुए थे और बार-बार कह रहे थे, "बेचारी माँ! वह कितना अच्छा आदमी है!" और उन्होंने उनके ठीक होने

की अच्छी भविष्यवाणी की थी। असल बात यह थी कि जिस रात्रिभोज में ड्यूक को उपस्थित होना था, वह उन्हें पसंद आया, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ की बड़ी पार्टी में भी उन्हें कोई ऊब नहीं हुई, लेकिन सबसे बढ़कर उन्हें सुबह एक बजे अपनी पत्नी के साथ एक भव्य रात्रिभोज और वेशभूषा समारोह में जाना था, जिसके लिए उनके लिए लुई XI की वेशभूषा और उनकी पत्नी के लिए बवेरिया की इसाबेल की वेशभूषा तैयार रखी थी। और ड्यूक ने ठान लिया था कि इन सभी खुशियों के बीच वे सम्मानित अमानियन डी ओसमंड के कष्टों से विचलित नहीं होंगे। छड़ी लिए दो अन्य महिलाएं, श्रीमती डी प्लासैक और श्रीमती डी ट्रेस्मेस, दोनों कॉम्टे डी ब्रेक्विग्नी की बेटियाँ, बेसिन से मिलने आईं और कहा कि चचेरी बहन मामा की हालत ने अब आशा की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी है। ड्यूक ने अपने कंधे उचकाए और बातचीत का रुख बदलते हुए पूछा कि क्या वे उस शाम मैरी-गिल्बर्ट के यहाँ जा रही हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि वे ऐसा नहीं कर रही थीं, क्योंकि अमानियन अपनी अंतिम पीड़ा में था। वास्तव में, उन्होंने उस रात्रिभोज से खुद को अलग कर लिया था जिसमें ड्यूक जा रहे थे। उन्होंने आगे अन्य अतिथियों के नाम गिनाए: राजा थियोडोसियस का भाई, इन्फेंटा मारिया कॉन्सेप्सियन, इत्यादि। चूंकि मार्क्विस डी'ऑसमंड का उनसे संबंध बेसिन की तुलना में कम था, इसलिए ड्यूक को उनका 'पक्ष बदलना' अपने आचरण पर एक प्रकार का अप्रत्यक्ष आरोप लगा। और इसलिए, यद्यपि वे डचेस से मिलने (या बल्कि उन्हें अपने चचेरे भाई की बीमारी की भयावह प्रकृति के बारे में बताने, जो उनके रिश्तेदारों के लिए सामाजिक समारोहों में शामिल होने के अनुकूल नहीं थी) के लिए ब्रेक्विग्नी हवेली की ऊंचाइयों से नीचे आई थीं, वे ज्यादा देर नहीं रुकीं, और अपने-अपने अल्पेनस्टॉक से लैस होकर, वालपर्ज और डोरोथी (दोनों बहनों के यही नाम थे) अपने किले की ओर ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर वापस चल पड़ीं। मैंने कभी गुएरमांटे परिवार से यह पूछने के बारे में नहीं सोचा कि फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के एक खास हिस्से में आम तौर पर दिखने वाली इन छड़ियों का क्या मतलब है। शायद, पूरे इलाके को अपना अधिकार क्षेत्र मानते हुए और टैक्सी किराए पर लेने की परवाह न करते हुए, वे लंबी सैर पर जाने के आदी थे, जिसके लिए शिकार में अत्यधिक लिप्तता और घुड़सवारी से गिरने के कारण हुए किसी पुराने फ्रैक्चर, या फिर बाएं किनारे और पुराने ग्रामीण घरों की नमी के कारण होने वाले गठिया ने उन्हें छड़ी की ज़रूरत महसूस कराई होगी। शायद वे उस इलाके

में किसी लंबी यात्रा पर नहीं निकले थे, बल्कि केवल अपने बगीचे (जो डचेस के बगीचे से ज़्यादा दूर नहीं था) में स्टू बनाने के लिए ज़रूरी फल तोड़ने आए थे और घर लौटते समय श्रीमती डी गुएरमांटे को शुभ संध्या कहने के लिए रुके थे, हालांकि वे कैंची या पानी देने वाला डिब्बा उनके घर नहीं लाए थे। ड्यूक को यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि मैं पेरिस लौटने के तुरंत बाद उनसे मिलने आया था। लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि मैं उनकी पत्नी से यह पता लगाने आया हूँ कि क्या उनके चचेरे भाई ने सचमुच मुझे आमंत्रित किया था, तो उनका चेहरा उतर आया। मैंने उन सेवाओं में से एक का जिक्र किया था जिन्हें एम. और मैडम डी गुएरमांटेस करना पसंद नहीं करते थे। ड्यूक ने मुझे समझाया कि अब बहुत देर हो चुकी है, कि अगर राजकुमारी ने मुझे निमंत्रण नहीं भेजा होता तो ऐसा लगता कि वह उनसे निमंत्रण मांग रहे हैं, कि उनके चचेरे भाइयों ने उन्हें पहले भी एक बार निमंत्रण देने से मना कर दिया था, और वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनकी यात्रा सूची में हस्तक्षेप करने या 'दखलंदाजी' करने जैसा नहीं दिखना चाहते थे। अंततः, उन्हें इस बात का भी यकीन नहीं था कि वे और उनकी पत्नी, जो उस शाम बाहर खाना खाने जा रहे थे, बाद में सीधे घर नहीं लौटेंगे। ऐसे में, राजकुमारी की पार्टी में न जाने का उनका सबसे अच्छा बहाना यही होगा कि वे पेरिस लौटने की बात राजकुमारी से छुपा लें, बजाय इसके कि वे उन्हें तुरंत सूचित कर दें, जैसा कि उन्हें करना ही पड़ता अगर वे उन्हें कोई पत्र भेजते या मेरे बारे में उनसे फोन पर बात करते। और तब तक तो निश्चित रूप से बहुत देर हो चुकी होती, क्योंकि संभवतः राजकुमारी के मेहमानों की सूची अब तक बंद हो चुकी होती। "क्या तुम किसी तरह से उनसे नाराज़ तो नहीं हो गए?" उन्होंने संदेह भरे लहजे में पूछा। गुएरमांटे परिवार हमेशा इस डर में जी रहा था कि उन्हें समाज के नवीनतम झगड़ों की जानकारी नहीं मिलेगी, और इस तरह लोग उनके सहारे फिर से अपनी साख हासिल करने की कोशिश करेंगे। अंत में, ड्यूक की आदत थी कि वे हर उस फैसले को अपने ऊपर ले लेते थे जो शायद बहुत अच्छा न लगे: "सुनो, मेरे बच्चे," उन्होंने अचानक मुझसे कहा, मानो यह विचार अभी-अभी उनके मन में आया हो, "मैं ओरियान को इस बारे में बिल्कुल भी नहीं बताना चाहता कि तुमने मुझसे इस विषय पर बात की है। तुम जानते हो कि वह कितनी दयालु है; इसके अलावा, वह तुम्हारा बहुत सम्मान करती है, वह चाहे मैं कुछ भी कहूँ, अपने चचेरे भाई को बुलवाने पर अड़ी रहेगी, और अगर वह खाने के

बाद थकी हुई है, तो कोई चारा नहीं होगा, उसे पार्टी में जाना ही पड़ेगा। नहीं, मैं उसे इस बारे में बिलकुल कुछ नहीं कहूँगा। वैसे भी, तुम उससे एक मिनट में मिल जाओगे। लेकिन इस बारे में एक शब्द भी मत कहना, मैं तुमसे विनती करता हूँ। अगर तुम पार्टी में जाने का फैसला करते हो, तो मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि तुम्हारे साथ वहाँ शाम बिताना हमारे लिए कितना सुखद होगा।" मानवता को प्रेरित करने वाले उद्देश्य इतने पवित्र हैं कि जिनके समक्ष उनका आह्वान किया जाता है, वे उनके आगे न झुकें, चाहे वे सच्चे हों या न हों; मैं एक पल के लिए भी अपने निमंत्रण के सापेक्ष महत्व और श्रीमती डी गुएरमांटेस की संभावित थकान के बीच संतुलन बनाने की कोशिश नहीं करना चाहता था, और मैंने उनसे अपनी यात्रा के उद्देश्य के बारे में बात न करने का वादा किया, ठीक वैसे ही जैसे मैं उस छोटे से नाटक में बहक गया था जो श्री डी गुएरमांटेस ने मेरे लिए रचा था। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि राजकुमारी के यहाँ श्रीमती डी स्टरमारिया से मिलने की कोई संभावना है। "नहीं," उन्होंने एक विशेषज्ञ की तरह जवाब दिया; "आप जिस नाम का ज़िक्र कर रहे हैं, उसे मैंने क्लब के सदस्यों की सूची में देखा है, इसलिए मैं उसे जानता हूँ। ये लोग गिल्बर्ट के क्लब में जाने वाले लोगों में से बिल्कुल नहीं हैं। वहाँ आपको कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जो हद से ज़्यादा सलीकेदार और बेहद उबाऊ न हो। वहाँ आपको ऐसी डचेस मिलेंगी जिनके पास ऐसे खिताब होंगे जो सालों पहले विलुप्त हो चुके थे और जिन्हें इस मौके के लिए पुनर्जीवित किया गया है। वहाँ ढेरों राजदूत, कई सारे कोबर्ग, विदेशी राजघराने के लोग होंगे, लेकिन आपको स्टर्मारिया का नामोनिशान भी नहीं मिलेगा। गिल्बर्ट तो ऐसी बात सोचकर ही बीमार पड़ जाएँगे।"

"ज़रा रुकिए, आपको चित्रकला का शौक है, तो मैं आपको अपने चचेरे भाई से खरीदी हुई एक शानदार पेंटिंग दिखाना चाहता हूँ, जो मैंने एल्स्टर पेंटिंग के बदले में ली थी, जो हमें बिल्कुल पसंद नहीं आई। मुझे यह फिलिप डी शैम्पेन की पेंटिंग बताकर बेची गई थी, लेकिन मेरा मानना है कि यह किसी और भी महान कलाकार की कृति है। क्या आप मेरी राय जानना चाहेंगे? मेरा मानना है कि यह वेलास्केज़ की कृति है, और उनके सबसे उत्तम काल की है," ड्यूक ने मेरी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, मानो मेरी राय जानना चाहते हों या उसे और पुख्ता करना चाहते हों। तभी एक नौकर अंदर आया। "श्रीमती ला डचेस ने मुझे श्रीमान ले

ड्यूक से पूछने को कहा है कि क्या श्रीमान ले ड्यूक श्रीमान स्वान से मिलने की कृपा करेंगे, क्योंकि श्रीमती ला डचेस अभी पूरी तरह तैयार नहीं हैं।" "श्रीमान स्वान को अंदर ले आइए," ड्यूक ने अपनी घड़ी देखकर कहा, क्योंकि उन्हें कपड़े बदलने जाने से पहले अभी कुछ मिनट बाकी थे। “स्वाभाविक रूप से मेरी पत्नी, जिसने उसे आने के लिए कहा था, तैयार नहीं है। मैरी-गिल्बर्ट की पार्टी के बारे में स्वान के सामने कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं है,” ड्यूक ने कहा। “मुझे नहीं पता कि उसे आमंत्रित किया गया है या नहीं। गिल्बर्ट उसे बहुत पसंद करता है, क्योंकि वह उसे ड्यूक डी बेरी का असली पोता मानता है, लेकिन यह एक लंबी कहानी है। (अन्यथा, आप कल्पना कर सकते हैं! मेरा चचेरा भाई, जो एक मील दूर से भी किसी यहूदी को देखकर बौखला जाता है।) लेकिन अब, क्या आप नहीं देखते, ड्रेफस मामले ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। स्वान को यह समझ लेना चाहिए था कि उसे उन लोगों से हर तरह का संबंध तोड़ देना चाहिए, जिनके बारे में वह सबसे अपमानजनक बातें कहता है।” ड्यूक ने नौकर को वापस बुलाया यह जानने के लिए कि क्या चचेरे भाई ऑसमंड के यहाँ पूछताछ करने भेजा गया व्यक्ति लौट आया है। उसकी योजना इस प्रकार थी: जैसा कि वह मानता था, और सही भी था, कि उसका चचेरा भाई मर रहा है, वह उसकी मृत्यु से पहले, यानी शोक मनाने से पहले, उसके बारे में खबर प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। एक बार जब आधिकारिक तौर पर यह पुष्टि हो गई कि अमानियन अभी भी जीवित है, तो वह बिना किसी चिंता के अपने भोजन, राजकुमार की पार्टी, और आधी रात के उस उत्सव में शामिल हो सकता था, जिसमें वह लुई XI के रूप में उपस्थित होगा, और एक नई प्रेमिका के साथ बेहद रोमांचक मुलाकात करेगा, और अगले दिन तक कोई और पूछताछ नहीं करेगा, जब तक कि उसके सुख समाप्त नहीं हो जाते। फिर अगर चचेरे भाई का रात में निधन हो गया होता तो शोक मनाया जाता। "नहीं, श्रीमान ड्यूक, वह अभी तक वापस नहीं आया है।" "हे भगवान! इस घर में आखिरी मिनट तक कुछ भी नहीं किया जाता," ड्यूक यह सोचकर चिल्लाया कि अमानियन अभी भी शाम के अखबार के लिए अपनी मौत का नाटक कर सकता है, और इस तरह उसे अपने उत्सव से वंचित कर सकता है। उसने टेम्प्स अखबार मंगवाया, जिसमें कुछ भी नहीं था। मैंने स्वान को लंबे समय से नहीं देखा था, और पहले तो मैंने खुद से पूछा कि क्या पुराने दिनों में वह अपनी मूंछें काटता था, या उसके बाल सामने से सीधे ऊपर की ओर कंघी

किए हुए नहीं थे, क्योंकि मुझे उसमें कुछ बदलाव नज़र आया; दरअसल, बीमारी के कारण उनका रूप काफी बदल गया था, और बीमारी चेहरे में ऐसे गहरे बदलाव लाती है जैसे दाढ़ी बढ़ाने या बालों की मांग बदलने से आते हैं। (स्वान की बीमारी वही थी जिसने उनकी माँ की जान ले ली थी, और उन्हें भी ठीक उसी उम्र में यह बीमारी हुई थी जिस उम्र में वह अब थे। सच तो यह है कि वंशानुक्रम के कारण हमारा जीवन रहस्यमय संकेतों और भविष्यवाणियों से इतना भरा हुआ है मानो दुनिया में सचमुच जादूगर हों। और जिस प्रकार सामान्य रूप से मनुष्य के जीवन की एक निश्चित अवधि होती है, उसी प्रकार विशेष रूप से परिवारों के लिए भी होती है, यानी किसी भी परिवार में, उन सदस्यों के लिए जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते हों।) स्वान ने अपनी पत्नी की तरह ही सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़े पहने थे, जो उनके वर्तमान स्वरूप और अतीत के स्वरूप को दर्शाते थे। मोती जैसे भूरे रंग के फ्रॉक-कोट में, जो उनके लंबे कद को और भी उभार रहा था, वे दुबले-पतले थे, उनके सफेद दस्तानों पर काले रंग की कढ़ाई थी। उन्होंने एक खास तरह की चौड़ी ग्रे टोपी पहन रखी थी, जिसे डेलियन ने अब केवल उन्हीं के लिए, प्रिंस डी सागन, मार्क्विस डी मोडेन, एम. चार्ल्स हास और कॉम्टे लुई डी ट्यूरेन के लिए बनाना बंद कर दिया था। मैं उनके मनमोहक मुस्कान और स्नेहपूर्ण हाथ मिलाने के तरीके से आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि मैंने सोचा था कि इतने लंबे अंतराल के बाद वे मुझे तुरंत नहीं पहचान पाएंगे। मैंने उन्हें अपनी हैरानी बताई; उन्होंने इसे हंसी के ठहाके, थोड़ी सी नाराजगी और मेरे हाथ को और कसकर पकड़कर सुना, मानो यह सोचना कि वे मुझे नहीं पहचानते, उनके दिमाग की कार्यप्रणाली या उनके स्नेह की सच्चाई पर संदेह पैदा कर रहा हो। और फिर भी यही हुआ; उन्होंने मुझे नहीं पहचाना, जैसा कि मुझे बहुत बाद में पता चला, कई मिनट बाद जब उन्होंने मेरा नाम सुना। लेकिन उनके चेहरे, उनकी वाणी, और मुझसे कही गई बातों में कोई बदलाव नहीं आया जिससे यह पता चले कि एम. डी गुएरमांटेस के एक आकस्मिक शब्द ने उन्हें सामाजिक खेल में इतनी महारत और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ महारत हासिल करने में सक्षम बनाया था। इसके अलावा, उन्होंने अपने व्यवहार में सहजता और व्यक्तिगत पहल को भी शामिल किया, यहाँ तक कि अपने पहनावे में भी, जो गुएरमांटेस परिवार की विशेषता थी। इस प्रकार, उस बूढ़े क्लब सदस्य ने, मुझे बिना पहचाने, जो अभिवादन किया, वह किसी औपचारिक व्यक्ति के ठंडे और कठोर अभिवादन

जैसा नहीं था, बल्कि सच्ची मित्रता और आकर्षण से भरा अभिवादन था, जैसा कि उदाहरण के लिए डचेस डी गुएरमांटेस में था (यहाँ तक कि अगर वह आपको सड़क पर मिलतीं, तो आपके झुकने से पहले ही वह आप पर मुस्कुरा देती थीं), जो फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की महिलाओं के बीच प्रचलित अधिक यांत्रिक अभिवादन के विपरीत था। ठीक उसी तरह, एक बार फिर, टोपी, जिसे उन्होंने एक लुप्त होती प्रथा के अनुरूप अपने पैरों के पास ज़मीन पर रखा था, हरे चमड़े से ढकी हुई थी, जो आमतौर पर नहीं किया जाता था, क्योंकि उनके अनुसार, इससे टोपी ज़्यादा साफ़ रहती थी, असल में इसलिए कि यह बहुत आकर्षक लगती थी। "अब, चार्ल्स, तुम तो बड़े माहिर हो, आओ और देखो कि मैं तुम्हें क्या दिखाने वाला हूँ, इसके बाद, मेरे बच्चों, मैं थोड़ी देर के लिए तुम्हें अकेला छोड़ने की अनुमति माँगूँगा, ताकि मैं जाकर अपने कपड़े बदल सकूँ, इसके अलावा, मुझे लगता है कि ओरियान भी जल्द ही आ जाएगी।" और उन्होंने स्वान को अपनी 'वेलाज़क्वेज़' पेंटिंग दिखाई। "लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसे जानता हूँ," स्वान ने एक बीमार आदमी के मुँह से कहा, जिसके लिए बोलना भी एक मुश्किल काम था। "हाँ," ड्यूक ने कहा, विशेषज्ञ द्वारा अपनी प्रशंसा व्यक्त करने में लगे समय के कारण वह गंभीर हो गए थे। "तुमने शायद इसे गिल्बर्ट के यहाँ देखा होगा।" "ओह, हाँ, बिल्कुल, मुझे याद है।" "तुम्हें क्या लगता है यह क्या है?" "अच्छा, अगर यह गिल्बर्ट से आया है, तो शायद यह आपके पूर्वजों में से एक होगा," स्वान ने व्यंग्य और सम्मान के मिश्रण के साथ कहा, उस महानता के प्रति जिसे वह तिरस्कार करना असभ्य और बेतुका समझते, लेकिन अच्छे स्वाद के कारण उन्होंने केवल एक चंचल संदर्भ देना पसंद किया।

"हाँ, बिल्कुल," ड्यूक ने सीधे-सीधे कहा। "यह बोसन है, और मुझे याद नहीं कितने डी गुएरमांटेस हैं। वैसे मुझे इसकी कोई परवाह नहीं। तुम जानते हो कि मैं अपने चचेरे भाई जितना सामंती नहीं हूँ। मैंने रिगाउड, मिग्नार्ड, यहाँ तक कि वेलास्केज़ के नाम भी सुने हैं!" वह आगे बोले, स्वान पर एक पूछताछकर्ता और जल्लाद जैसी निगाहें गड़ाए, मानो उसके मन की बात जानना चाहते हों और उसकी प्रतिक्रिया को प्रभावित करना चाहते हों। "अच्छा," उन्होंने अपनी बात समाप्त की, क्योंकि जब उन्हें कृत्रिम रूप से वह राय उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया जाता था जिसे वह सुनना चाहते थे, तो कुछ क्षणों के बाद उन्हें यह विश्वास हो जाता था कि यह स्वाभाविक रूप से निकली है; "अरे, अब चापलूसी छोड़ो, क्या तुम्हें लगता है कि यह

उन महान कलाकारों में से किसी एक की रचना है जिनका मैंने जिक्र किया है?" "नहीं," स्वान ने कहा। "लेकिन आखिरकार, मुझे इन सब चीजों के बारे में कुछ नहीं पता, ये तय करना मेरा काम नहीं है कि कैनवास पर किसने रंग लगाया। लेकिन आप तो शौकिया कलाकार हैं, इस विषय के उस्ताद हैं, आप इसे किसका काम मानते हैं? आप इतने तो जानकार हैं कि आपको कुछ तो अंदाजा होगा। आप इसे क्या कहेंगे?" स्वान तस्वीर के सामने एक पल के लिए हिचकिचाए, जिसे वे स्पष्ट रूप से बेहद खराब मानते थे। "एक घटिया मज़ाक!" उन्होंने ड्यूक को देखकर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, जो गुस्से से भर उठे। जब उनका गुस्सा शांत हुआ: "आप दोनों अच्छे दोस्त बनिए, ओरियान का इंतज़ार कीजिए, मुझे जाकर अपनी स्वैलो-टेल्स पहननी है और फिर मैं आप लोगों के पास आऊंगा। मैं अपनी पत्नी को संदेश भेज दूंगा कि आप दोनों उसका इंतज़ार कर रहे हैं।" मैंने स्वान से ड्रेफस मामले के बारे में एक-दो मिनट बात की और उनसे पूछा कि आखिर सभी गुएरमांटे ड्रेफस विरोधी क्यों थे। “सबसे पहले तो इसलिए कि ये सभी लोग मूलतः यहूदी-विरोधी हैं,” स्वान ने उत्तर दिया, जो अपने अनुभव से भली-भांति जानता था कि उनमें से कुछ लोग यहूदी-विरोधी नहीं थे, परन्तु किसी भी मुद्दे का पूरे दिल से समर्थन करने वाले हर व्यक्ति की तरह, उसने दूसरों की असहमति को समझाने के लिए यह तर्क दिया कि उनमें कोई पूर्वकल्पित कारण है, कोई पूर्वाग्रह है जिसके विरुद्ध कुछ नहीं किया जा सकता, बजाय उन कारणों के जिन पर चर्चा की जा सकती थी। इसके अतिरिक्त, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर, एक थके-हारे जानवर की तरह जिसे लगातार धकेला जा रहा हो, उसने इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई और अपने पूर्वजों की आध्यात्मिक शरण में लौट रहा था। “हाँ, प्रिंस डी गुएरमांटेस,” मैंने कहा, “यह सच है, मैंने सुना है कि वह यहूदी-विरोधी थे।” "अरे, वो आदमी! मैं तो उसके बारे में सोच भी नहीं रहा था। वो इस मामले को इस हद तक ले जाता है कि जब वो सेना में था और उसे भयानक दांत दर्द हुआ, तो उसने जिले के इकलौते दंत चिकित्सक के पास जाने के बजाय दर्द को चुपचाप सहना बेहतर समझा, जो संयोग से एक यहूदी था। और बाद में उसने अपने महल के एक हिस्से में लगी आग को पूरी तरह जलने दिया, क्योंकि उसे बगल वाले घर में आग बुझाने के लिए यंत्र मंगवाने पड़ते, जो रॉथ्सचाइल्ड परिवार का है।" "क्या आप आज शाम वहाँ होंगे?" "हाँ," स्वान ने उत्तर दिया, "हालाँकि मैं बहुत थका हुआ हूँ। लेकिन उसने मुझे तार भेजा है कि

उसे मुझसे कुछ कहना है। मुझे लगता है कि अगले कुछ दिनों में मेरी तबीयत इतनी खराब रहेगी कि मैं वहाँ या घर पर उससे मिलने नहीं जा पाऊँगा; इससे मुझे बहुत बुरा लगेगा, इसलिए मैं इसे अभी निपटा लेना चाहता हूँ।" "लेकिन ड्यूक डी गुएरमांटेस यहूदी-विरोधी नहीं है?" “आप अच्छी तरह देख सकते हैं कि वह ऐसा ही है, क्योंकि वह ड्रेफस का विरोधी है,” स्वान ने तार्किक त्रुटि को समझे बिना उत्तर दिया। “लेकिन मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस है कि मैंने उस आदमी को निराश किया—मेरा मतलब ड्यूक से है—उसके मिग्नार्ड या जो भी वह उसे कहता है, उसकी प्रशंसा न करके।” “लेकिन खैर,” मैंने ड्रेफस के मामले पर लौटते हुए कहा, “डचेस, वह अब बुद्धिमान है।” “हाँ, वह आकर्षक है। हालाँकि, मेरे विचार से, वह तब और भी आकर्षक थी जब वह प्रिंसेस डेस लाउम्स के नाम से जानी जाती थी। उसका दिमाग कुछ ज़्यादा तीखा हो गया है, युवावस्था में वह बहुत कोमल थी, लेकिन आख़िरकार, चाहे जवान हो या बूढ़ा, पुरुष हो या महिला, आप क्या उम्मीद कर सकते हैं, ये सभी लोग अलग-अलग नस्ल के हैं, कोई भी हज़ार साल के सामंतवाद को अपने खून में बिना किसी दंड के नहीं रख सकता। स्वाभाविक रूप से वे सोचते हैं कि उनकी राय में इसका कोई महत्व नहीं है।” फिर भी, रॉबर्ट डी सेंट-लूप एक ड्रेफसार्ड हैं। "अहा! बहुत अच्छा, खासकर इसलिए कि आप जानते हैं कि उनकी माँ बेहद 'और' हैं। मैंने सुना था कि वह हैं, लेकिन मुझे इस बात का यकीन नहीं था। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे आश्चर्य नहीं है, वह बहुत बुद्धिमान हैं। यह बहुत अच्छी बात है।"

ड्रेफसवाद ने स्वान के मन में असाधारण सरलता ला दी थी और चीजों को देखने के उनके तरीके में एक आवेगशीलता, एक असंगति पैदा कर दी थी जो ओडेट से उनके विवाह के समान प्रभावों से भी कहीं अधिक स्पष्ट थी; जाति के इस नए नुकसान को एक तरह का पुनर्निर्माण कहना अधिक उचित होगा, और यह पूरी तरह से उनके लिए सराहनीय था, क्योंकि इसने उन्हें उन रास्तों पर वापस ला दिया जिन पर उनके पूर्वज चले थे और जिनसे वे अभिजात वर्ग के साथ घुलने-मिलने के लिए दूर हो गए थे। लेकिन स्वान, ठीक उसी क्षण जब उन्हें अपनी जाति से विरासत में मिले गुणों के कारण इतनी स्पष्टता से उस सत्य को समझने का अवसर मिला था जो अभी भी संभ्रांत लोगों से छिपा हुआ था, फिर भी हास्यास्पद रूप से अंधे साबित हुए। उन्होंने अपनी सभी प्रशंसाओं और सभी तिरस्कारों को एक नए मानदंड,

ड्रेफसवाद की कसौटी पर परखा। श्रीमती बोंटेम्प्स के ड्रेफस-विरोधी रवैये ने उन्हें मूर्ख समझने पर मजबूर कर दिया, यह उतना ही आश्चर्यजनक नहीं था जितना कि उनके पहले विवाह के समय उन्हें बुद्धिमान समझना। यह भी कोई गंभीर बात नहीं थी कि नई लहर ने उनके राजनीतिक विचारों को भी प्रभावित किया और उन्हें यह भूलने पर मजबूर कर दिया कि उन्होंने क्लेमेंसो को एक ब्रिटिश जासूस (यह बात गुएरमांटेस के लिए एक बेतुकी बात थी) के रूप में देखा था, जिसे वे अब हमेशा अंतरात्मा की आवाज सुनने वाला, कोमली की तरह लोहे का आदमी बताते थे। "नहीं, नहीं, मैंने तुम्हें ऐसा कुछ नहीं कहा। तुम किसी और के बारे में सोच रहे हो।" लेकिन, उनके राजनीतिक विचारों को भेदते हुए, इस लहर ने स्वान के साहित्यिक विचारों को भी उलट दिया और यहाँ तक कि उन्हें व्यक्त करने के उनके तरीके को भी प्रभावित किया। बैरेस अपनी सारी प्रतिभा खो चुके थे, और उनके शुरुआती दिनों की किताबें भी कमजोर थीं, उन्हें दोबारा पढ़ना मुश्किल था। "आप कोशिश करके देखिए, आपको पता चलेगा कि आप अंत तक संघर्ष नहीं कर सकते। क्लेमेंसो से कितना फर्क है! व्यक्तिगत रूप से, मैं पादरी-विरोधी नहीं हूँ, लेकिन जब आप उनकी तुलना करेंगे तो आपको पता चलेगा कि बैरेस रीढ़विहीन है। बूढ़ा क्लेमेंसो तो बहुत ही महान व्यक्ति है। उसे भाषा का कितना ज्ञान है!" हालाँकि, ड्रेफस-विरोधी इन मूर्खताओं की आलोचना करने की स्थिति में नहीं थे। उन्होंने समझाया कि कोई व्यक्ति यहूदी मूल का होने के कारण ड्रेफसवादी कहलाता है। यदि सैनीएट जैसे एक अभ्यास करने वाले कैथोलिक को भी नए सिरे से परीक्षण के लिए चुना गया, तो इसका कारण यह था कि उसे श्रीमती वर्दुरिन ने घेर लिया था, जो एक उग्र कट्टरपंथी की तरह व्यवहार करती थीं। वह सबसे बढ़कर 'पादरी' के खिलाफ थीं। सैनीएट धूर्त से ज्यादा मूर्ख था, और उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मालकिन उसे कितना नुकसान पहुँचा रही थी। यदि आप यह बताते कि ब्रिचोट भी श्रीमती वर्दुरिन का उतना ही मित्र था... वेरडुरिन और पैट्री फ़्रांसेज़ के सदस्य थे, क्योंकि वे ज़्यादा बुद्धिमान थे। "क्या आप उन्हें कभी-कभार देखते हैं?" मैंने स्वान से सेंट-लूप के बारे में पूछा। "नहीं, कभी नहीं। उन्होंने मुझे कुछ दिन पहले पत्र लिखा था, उम्मीद करते हुए कि मैं ड्यूक डी मौची और कई अन्य लोगों से जॉकी में उनके लिए वोट देने को कहूँगा, जहाँ उनका चुनाव डाक से चिट्ठी की तरह हुआ।"

"इस मामले के बावजूद!" "यह सवाल कभी उठा ही नहीं। लेकिन मुझे आपको बताना होगा कि जब से यह सब शुरू हुआ है, मैंने उस जगह पर कभी कदम नहीं रखा।"

M. de Guermantes लौटे, और जल्द ही उनकी पत्नी भी उनके साथ आ मिलीं; वे शाम के लिए पूरी तरह तैयार थीं—लंबी कद-काठी वाली और गर्व से भरी हुई, उन्होंने लाल साटन का गाउन पहना था जिसके घेरे पर चमकीले सितारे जड़े थे। उनके बालों में बैंगनी रंग का रंगा हुआ शुतुरमुर्ग का एक लंबा पंख लगा था, और कंधों पर उसी लाल रंग का एक ट्यूल स्कार्फ़ था जैसा कि उनके गाउन का रंग था। "अपने हैट में चमड़े की लाइनिंग लगवाना कितना अच्छा लगता है," डचेस ने कहा, जिनकी नज़र से कोई भी छोटी-बड़ी बात नहीं चूकती थी। "वैसे, चार्ल्स, तुम्हारे साथ तो हर चीज़ हमेशा ही मनमोहक होती है—चाहे वह तुम्हारा पहनावा हो, तुम्हारी बातें हों, तुम्हारी पढ़ाई हो या फिर तुम्हारे काम।" इस बीच, स्वान, जो ज़ाहिर तौर पर उनकी बातें नहीं सुन रहा था, डचेस को ऐसे निहार रहा था जैसे कोई कला-पारखी किसी महान चित्रकार की कृति का अध्ययन करता हो; फिर उसने डचेस की नज़रों से नज़रें मिलाईं और अपने होठों से एक ऐसा हाव-भाव बनाया जिसका अर्थ था: 'अरे, कमाल है!' Mme. de Guermantes खिलखिलाकर हँस पड़ीं। "तो, तुम्हें मेरा पहनावा पसंद आया? मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन मुझे यह भी कहना पड़ेगा कि मुझे यह खुद ज़्यादा पसंद नहीं आया," उन्होंने थोड़ा रूठने वाले अंदाज़ में आगे कहा। "हे भगवान! तैयार होकर बाहर जाना कितना उबाऊ काम है, जबकि मन तो बस घर पर ही रहने का करता है!" "ये माणिक (rubies) कितने शानदार हैं!" "आह! मेरे प्यारे चार्ल्स, कम-से-कम यह तो साफ़ पता चलता है कि तुम्हें अपनी कही बात की पूरी समझ है; तुम उस गँवार Monserfeuil जैसे नहीं हो, जिसने मुझसे पूछा था कि क्या ये असली हैं। मुझे कहना पड़ेगा कि मैंने पहले कभी ऐसे माणिक नहीं देखे। ये मुझे ग्रैंड डचेस ने तोहफ़े में दिए थे। मेरी पसंद के हिसाब से ये थोड़े ज़्यादा ही बड़े हैं—बिल्कुल किनारे तक भरे हुए वाइन के गिलासों जैसे लगते हैं—लेकिन मैंने इन्हें इसलिए पहना है क्योंकि आज शाम Marie–Gilbert के यहाँ हमारी मुलाक़ात ग्रैंड डचेस से होने वाली है," Mme. de Guermantes ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा; उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इस बात को कहकर उन्होंने ड्यूक द्वारा पहले कही गई बातों का ही खंडन कर दिया था।

"राजकुमारी के यहाँ आज क्या कार्यक्रम है?" स्वान ने पूछा। "लगभग कुछ भी नहीं," ड्यूक ने झट से जवाब दिया; दरअसल, स्वान के इस सवाल से उन्हें लगा था कि शायद स्वान को उस कार्यक्रम का न्योता नहीं मिला है। "वह क्या है, बेसिन? जब सारी सड़कें और झाड़ियाँ छान मारी जाएँगी? तब तो वहाँ जानलेवा भीड़ होगी। हाँ, एक चीज़ जो बहुत सुंदर होगी," उसने स्वान की ओर हसरत भरी नज़रों से देखते हुए आगे कहा, "अगर हवा में जो तूफ़ान मुझे अभी महसूस हो रहा है, वह न बरसे, तो वे शानदार बगीचे देखने लायक होंगे। तुम उन्हें जानते ही होगे, ज़ाहिर है। मैं एक महीना पहले वहाँ थी, उस समय जब लिलैक के फूल खिले हुए थे; तुम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि वे कितने प्यारे लग रहे थे। और फिर वह फव्वारा—सच कहूँ तो, वह बिल्कुल पेरिस के वर्साय जैसा है।" "राजकुमारी किस तरह की इंसान हैं?" मैंने पूछा। "अरे, तुम तो अच्छी तरह जानते हो—तुमने उन्हें यहाँ देखा है—वह दिन की रोशनी जितनी ही सुंदर हैं, लेकिन थोड़ी बेवकूफ़ भी हैं। अपनी तमाम जर्मन-शैली वाली अकड़ के बावजूद, वह बहुत अच्छी हैं—नेकी और बेवकूफ़ी भरी गलतियों से लबरेज़।" स्वान इतना समझदार था कि वह यह भांप गया कि डचेस अपनी इस बात-चीत के ज़रिए 'गुएरमांटेस की हाज़िरजवाबी' दिखाने की कोशिश कर रही थी—और वह भी बिना किसी खास मेहनत के, क्योंकि वह तो बस अपनी ही एक पुरानी कहावत को थोड़े कम निखरे हुए रूप में पेश कर रही थी। फिर भी, डचेस को यह दिखाने के लिए कि वह उसकी मज़ाकिया बनने की कोशिश की कद्र करता है —और मानो वह सचमुच मज़ाकिया बन पाने में कामयाब हो गई हो—उसने थोड़ी बनावटी मुस्कान के साथ जवाब दिया। उसकी इस खास तरह की बनावटीपन ने मुझे ठीक वैसी ही अजीब-सी बेचैनी का एहसास कराया, जैसा मुझे बहुत पहले तब होता था, जब मैं अपने माता-पिता को एम. विंतेउइल के साथ समाज के कुछ तबकों में फैली 'गिरावट' पर चर्चा करते सुनता था (जबकि वे अच्छी तरह जानते थे कि मोंटजूवेन में तो उससे कहीं ज़्यादा बड़ी गिरावट का राज था); या जब लेग्रांडिन बेवकूफ़ों को रिझाने के लिए अपनी बातों को सजा-संवारकर पेश करता था—ऐसे नाज़ुक और पेचीदा शब्द चुनता था, जिनके बारे में वह बखूबी जानता था कि अमीर या 'स्मार्ट' मगर अनपढ़ लोग उन्हें समझ ही नहीं पाएँगे। "अरे, ओरियान, यह तुम क्या कह रही हो?" एम. दे गुएरमांटेस बीच में ही बोल पड़े। "मैरी बेवकूफ़ है? अरे, उसने तो सब कुछ पढ़ रखा है; वह तो संगीत की इतनी अच्छी जानकार है कि पूछो मत!"

"लेकिन, मेरे प्यारे छोटे बेसिन, तुम तो एक नवजात शिशु जितने ही भोले हो। जैसे कि कोई यह सब होने के साथ-साथ थोड़ा बेवकूफ़ भी न हो। 'बेवकूफ़' शब्द थोड़ा ज़्यादा ही कड़ा है; नहीं, वह तो हमेशा ख्यालों में खोई रहती है—वह हेसे-डार्मस्टाड्ट है, पवित्र रोमन साम्राज्य है, और न जाने क्या-क्या। उसका बोलने का अंदाज़ ही मुझे थका देता है। लेकिन मैं यह ज़रूर मानती हूँ कि वह एक बड़ी प्यारी-सी पगली है। ज़रा सोचो तो—अपने जर्मन सिंहासन को छोड़कर, बिल्कुल आम लोगों की तरह, एक साधारण नागरिक से शादी करने चली गई। यह सच है कि उसने उसे खुद चुना था! हाँ, यह बिल्कुल सच है," उसने मेरी तरफ़ मुड़ते हुए आगे कहा, "तुम गिल्बर्ट को नहीं जानते। मैं तुम्हें उसके बारे में थोड़ा बताती हूँ—एक बार तो वह इसलिए बिस्तर पकड़कर बैठ गया था, क्योंकि मैंने मैडम कार्नोट के यहाँ अपना विज़िटिंग कार्ड छोड़ दिया था..." "लेकिन, मेरे प्यारे चार्ल्स," डचेस ने बात बदलते हुए कहा—जब उसने देखा कि कार्नोट्स के यहाँ कार्ड छोड़ने वाली कहानी सुनकर एम. डी गुएरमांटेस थोड़े चिढ़ गए हैं—"तुम्हें पता है, तुमने मुझे अब तक 'नाइट्स ऑफ़ रोड्स' वाली वह फ़ोटो नहीं भेजी है, जिनसे मुझे तुम्हारी वजह से प्यार हो गया है, और मैं उनसे मिलने के लिए बहुत बेताब हूँ।" इस बीच, ड्यूक ने अपनी पत्नी के चेहरे से अपनी नज़रें नहीं हटाई थीं। "ओरियन, कम-से-कम तुम यह कहानी ठीक से तो सुनाओ—आधी-अधूरी क्यों बता रही हो? मुझे यह साफ़ कर देना चाहिए," उसने स्वान को संबोधित करते हुए बात सुधारी, "कि उस समय की ब्रिटिश राजदूत —जो कि एक बहुत ही नेक महिला थीं, लेकिन हमेशा ख्यालों में खोई रहती थीं और अजीब-अजीब तरह के मेल-जोल बिठाने की आदी थीं—उनके मन में एक बड़ा ही अनोखा विचार आया: उन्होंने हमें, राष्ट्रपति और उनकी पत्नी के साथ, एक ही जगह पर दावत के लिए बुला लिया। हम सब—यहाँ तक कि ओरियन भी—यह देखकर काफ़ी हैरान रह गए थे, ख़ास तौर पर..."

क्योंकि एम्बेसड्रेस उन लोगों के बारे में काफी कुछ जानती थीं जिन्हें हम जानते थे, इसलिए उन्होंने हमें—और वह भी ऐसी बेमेल महफ़िल में—बुलाने की गलती नहीं की। वहाँ एक मंत्री भी थे जो एक धोखेबाज़ थे; खैर, मैं उन सब बातों को छोड़ देता हूँ। हमें समय पर चेतावनी नहीं मिली थी, हम जाल में फँस गए थे, और मुझे यह मानना पड़ेगा कि उन सभी लोगों ने हमारे साथ बहुत ही तहज़ीब से पेश आए। बस, एक बार ही काफी था। मादाम द गुएरमांटेस—जो

अक्सर मुझसे सलाह लेने की कृपा नहीं करतीं—ने अगले हफ़्ते के दौरान एलिसी में अपना कार्ड छोड़ना अपना फ़र्ज़ समझा। गिल्बर्ट ने शायद इसे हमारे नाम पर एक धब्बा मानकर कुछ ज़्यादा ही सोच लिया हो। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि—राजनीति को एक तरफ़ रखते हुए—एम. कार्नोट, जिन्होंने वैसे तो अपना पद काफी अच्छे से संभाला था, उस 'रिवोल्यूशनरी ट्रिब्यूनल' के एक सदस्य के पोते थे, जिसने एक ही दिन में हमारे ग्यारह लोगों की जान ले ली थी।" "तो फिर, बेसिन, तुम हर हफ़्ते शैंटिली में खाना खाने क्यों जाते थे? ड्यूक डी'ओमाले भी तो उसी 'रिवोल्यूशनरी ट्रिब्यूनल' के सदस्य के पोते थे—बस फ़र्क इतना था कि कार्नोट एक बहादुर इंसान थे, जबकि फ़िलिप एगालिटे एक घटिया बदमाश।" "माफ़ करना, मैं तुम्हें बीच में ही रोककर यह बताना चाहता हूँ कि मैंने वह फ़ोटो भेज दी थी," स्वान ने कहा। "मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह तुम तक पहुँची क्यों नहीं।" "मुझे इससे ज़्यादा हैरानी नहीं हुई," डचेस ने कहा, "मेरे नौकर मुझे बस वही बातें बताते हैं जो उन्हें सही लगती हैं। शायद उन्हें 'ऑर्डर ऑफ़ सेंट जॉन' पसंद नहीं है।" और उसने घंटी बजा दी। "तुम्हें पता है, ओरियन, जब मैं शैंटिली जाता था, तो उसमें मेरा कोई उत्साह नहीं होता था।" "कोई उत्साह नहीं होता था—लेकिन फिर भी तुम अपने बैग में एक नाइटशर्ट (सोने का कुर्ता) ज़रूर रखते थे, इस उम्मीद में कि शायद प्रिंस तुम्हें रात रुकने के लिए कह दें—हालाँकि उन्होंने ऐसा बहुत ही कम किया, क्योंकि वह भी ओरलियंस परिवार के बाकी लोगों की तरह ही एक नंबर के घटिया इंसान थे। क्या तुम्हें पता है कि मादाम... के यहाँ और कौन-कौन लोग खाना खाने आने वाले हैं?" "डी सेंट-यूवर्ट के यहाँ?" मैडम डी गुएरमांटेस ने अपने पति से पूछा। "जिन लोगों को आप पहले से जानते हैं, उनके अलावा, उन्होंने आखिरी पल में राजा थियोडोसियस के भाई को भी बुलाया है।" इस खबर पर डचेस के चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभरे, लेकिन उनकी बातों में ऊब झलक रही थी। "ओह, हे भगवान, और भी राजकुमार!" "लेकिन वह वाला तो काफी सभ्य और समझदार है," स्वान ने सुझाव दिया। "पूरी तरह से नहीं, हालांकि," डचेस ने जवाब दिया; ऐसा लग रहा था कि वह ऐसे शब्द ढूंढ रही हैं जो उनके विचारों को और भी नयापन दे सकें। "क्या आपने कभी राजकुमारों के बारे में यह बात गौर की है कि उनमें से जो सबसे ज़्यादा सभ्य माने जाते हैं, वे असल में उतने सभ्य होते नहीं हैं? उन्हें हर चीज़ पर अपनी राय देनी ही होती है। फिर, क्योंकि उनके पास अपनी कोई राय होती नहीं, इसलिए वे अपनी

ज़िंदगी का पहला आधा हिस्सा हमसे हमारी राय पूछते हुए बिता देते हैं, और बाकी का आधा हिस्सा उसी राय को हमें ही 'सेकंड-हैंड' (किसी और के ज़रिए) परोसते हुए बिता देते हैं। उन्हें यह कहना ही होता है कि संगीत का यह टुकड़ा बहुत अच्छा बजा, और अगला वाला उतना अच्छा नहीं बजा। जबकि असल में दोनों में कोई फर्क होता ही नहीं। सुनो, उस छोटे थियोडोसियस जूनियर (मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा) ने मुझसे पूछा कि 'ऑर्केस्ट्रल मोटिफ' किसे कहते हैं। मैंने जवाब दिया," डचेस ने कहा; उनकी आँखें चमक रही थीं और उनके खूबसूरत लाल होंठों से हँसी फूट पड़ी: "'इसे ही तो 'ऑर्केस्ट्रल मोटिफ' कहते हैं।' मुझे नहीं लगता कि वह मेरे जवाब से बहुत ज़्यादा खुश हुआ होगा। ओह, मेरे प्यारे चार्ल्स," उन्होंने आगे कहा, "बाहर जाकर खाना खाना कितना उबाऊ हो सकता है! कई शामें तो ऐसी होती हैं जब इंसान मर जाना ही बेहतर समझेगा! यह सच है कि मरना भी शायद उतना ही उबाऊ हो सकता है, क्योंकि हमें पता ही नहीं कि वह कैसा होता है।" तभी एक नौकर वहाँ आया। वह वही युवा प्रेमी था जिसे पहले दरबान के साथ अक्सर दिक्कत होती थी; लेकिन बाद में डचेस ने अपने दिल की अच्छाई दिखाते हुए उन दोनों के बीच ऊपरी तौर पर सुलह करवा दी थी। "क्या आज शाम मुझे ऊपर जाकर मिस्टर ले मार्क्विस डी'ऑसमंड के बारे में पूछताछ करनी है?" उसने पूछा। "बिल्कुल नहीं, कल सुबह से पहले कुछ भी नहीं। असल में, मैं नहीं चाहती कि तुम आज रात घर में ही रुको। बस इतना होगा कि उनका नौकर—जो तुम्हें जानता है—तुम्हारे पास आएगा, तुम्हें उनकी सेहत की ताज़ा खबर देगा, और फिर तुम्हें हमारे पीछे-पीछे बाहर भेज देगा।" "जाओ, जहाँ मन करे वहाँ जाओ, किसी औरत के साथ समय बिताओ, बाहर सोओ, लेकिन कल सुबह से पहले मुझे यहाँ दिखाई मत देना।" नौकर के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। आखिरकार वह अपनी प्रेमिका के साथ लंबा समय बिता पाएगा—जिससे मिलना-जुलना उसने लगभग बंद ही कर दिया था; क्योंकि दरवाज़े पर तैनात चौकीदार के साथ हुई एक आखिरी कहा-सुनी के बाद, डचेस ने बड़ी समझदारी से उसे समझाया था कि आगे किसी भी तरह के झगड़े से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि वह घर से बाहर ही न निकले। आखिरकार एक पूरी शाम की आज़ादी मिलने के विचार से वह खुशी के मारे हवा में उड़ने लगा; डचेस ने उसकी इस खुशी को देखा और उसका कारण भी भाँप लिया। इस खुशी को देखकर—जिसे वह प्रेमी जोड़ा उसकी पीठ पीछे, उससे छिपकर हासिल कर रहा था—

डचेस को मानो अपने दिल में एक कसक सी महसूस हुई और उसके पूरे शरीर में एक अजीब सी बेचैनी होने लगी; इस बात ने उसे चिड़चिड़ा और ईर्ष्यालु बना दिया। "नहीं, बेसिन, उसे यहीं रहने दो; मैं कहती हूँ, वह घर से बाहर कदम भी नहीं रखेगा।" "लेकिन, ओरियन, यह तो सरासर बेतुकी बात है; घर पहले ही नौकरों से खचाखच भरा हुआ है, और बारह बजे कॉस्ट्यूम डिज़ाइनर के लोग भी आने वाले हैं ताकि हमें इस शो के लिए तैयार कर सकें। उसके पास करने के लिए यहाँ कुछ भी नहीं है, और वह अकेला ऐसा नौकर है जो माँ के नौकर का दोस्त है; मैं तो हज़ार गुना ज़्यादा यही चाहूँगी कि उसे फौरन घर से बाहर निकाल दिया जाए।" "सुनो, बेसिन, मुझे अपनी मर्ज़ी करने दो; शाम को मुझे उसके हाथों एक संदेश भिजवाना है—हालाँकि अभी मैं यह नहीं बता सकती कि ठीक किस समय। खैर, जो भी हो, तुम उसे बाहर नहीं भेजोगे।"

"एक पल के लिए भी घर से बाहर मत निकलना, सुना तुमने?" उसने उस हताश नौकर से कहा। अगर लगातार झगड़े होते थे, और अगर नौकर डचेस के पास ज़्यादा समय तक नहीं टिकते थे, तो इस 'गुरिल्ला युद्ध' (छिपे हुए झगड़ों) का दोष जिस व्यक्ति पर मढ़ा जाता था, उसे असल में हटाया नहीं जा सकता था; लेकिन वह व्यक्ति दरबान नहीं था। बेशक, ज़्यादा मुश्किल कामों के लिए—उन 'शहादतों' के लिए जिन्हें झेलना ज़्यादा थकाने वाला होता था, और उन झगड़ों के लिए जो मारपीट पर खत्म होते थे—डचेस ज़्यादा 'भारी औजारों' का इस्तेमाल उसी दरबान के ज़रिए करती थी; लेकिन तब भी वह अपनी भूमिका इस बात से पूरी तरह बेखबर होकर निभाता था कि उसे इस काम के लिए ही चुना गया है। घर के दूसरे नौकरों की तरह, वह भी डचेस के दिल की अच्छाई का कायल था; और कम समझ वाले जो नौकर डचेस की नौकरी छोड़ने के बाद फ्रांस्वा से मिलने वापस आते थे, वे अक्सर कहते थे कि अगर दरबान का कमरा (लॉज) न होता, तो ड्यूक का घर पूरे पेरिस में काम करने के लिए सबसे बेहतरीन 'जगह' होती। डचेस उन नौकरों के खिलाफ दरबान के कमरे को एक 'हथियार' की तरह इस्तेमाल करती थी—ठीक वैसे ही, जैसे अलग-अलग समय पर धर्मवाद, फ्रीमेसनरी या 'यहूदी खतरे' को आम जनता के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता रहा है। तभी एक और नौकर कमरे में आया। "वे वह पैकेट अब तक ऊपर क्यों नहीं लाए, जो एम. स्वान ने यहाँ भेजा था? और हाँ (चार्ल्स, तुमने सुना न कि माँ बहुत ज़्यादा बीमार हैं?), जूल्स एम. ले मार्किस

डी'ऑसमंड की तबीयत का हाल जानने ऊपर गया था—क्या वह वापस आ गया?" "वह अभी-अभी इसी पल वापस आया है, एम. ले ड्यूक। वे लोग तो बस पल-पल यह इंतज़ार कर रहे हैं कि एम. ले मार्क्विस की साँसें कब थम जाएँ।" "आह! वह अभी भी ज़िंदा है!" ड्यूक ने राहत की साँस लेते हुए कहा। "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया—शैतान फिर मात खा गया! जब तक साँस है, तब तक आस है," ड्यूक ने बड़े ही खुशमिजाज़ अंदाज़ में हमसे कहा। "वे तो उसके बारे में ऐसे बातें कर रहे थे, जैसे वह मर चुका हो और उसे दफना भी दिया गया हो। आज से एक हफ़्ते बाद वह मुझसे भी ज़्यादा तंदुरुस्त होगा।" "यह तो डॉक्टरों ने कहा था कि वह आज शाम तक भी ज़िंदा नहीं रह पाएगा। उनमें से एक डॉक्टर तो रात में दोबारा आकर उसे देखने वाला था। लेकिन मुख्य डॉक्टर ने कहा कि इसका कोई फ़ायदा नहीं है। तब तक तो एम. ले मार्क्विस की मौत हो चुकी होगी।" "उन्होंने उसे सिर्फ़ कपूर का तेल (camphorated oil) इंजेक्ट करके ही ज़िंदा रखा है।" "अपनी ज़बान बंद रखो, तुम मनहूस बेवकूफ़," ड्यूक ने गुस्से में चिल्लाते हुए कहा। "तुम्हें यह सब कहने के लिए किसने कहा था? उन्होंने तुमसे जो कुछ भी कहा, उसका एक शब्द भी तुम्हारी समझ में नहीं आया।" "उन्होंने मुझसे नहीं, जूल से कहा था।" "क्या तुम अपनी ज़बान बंद रखोगे!" ड्यूक दहाड़ा, और स्वान की तरफ़ मुड़ते हुए बोला, "कितनी अच्छी बात है कि वह अभी भी ज़िंदा है! उसकी ताक़त धीरे-धीरे वापस आ जाएगी, तुम्हें पता है न। इतनी नाज़ुक हालत में होने के बाद भी ज़िंदा रहना, यह अपने आप में एक बहुत अच्छा संकेत है। किसी को भी एक ही बार में सब कुछ मिलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। कपूर के तेल का थोड़ा सा इंजेक्शन, यह बिल्कुल भी बुरा नहीं हो सकता।" उसने अपने हाथ मले। "वह ज़िंदा है; और किसी को इससे ज़्यादा क्या चाहिए? उन सारी मुश्किलों से गुज़रने के बाद, जिनसे वह गुज़रा है, यह एक बहुत बड़ी कामयाबी है। सच कहूँ तो, मुझे उसके ऐसे मिज़ाज से जलन होती है। आह! ये बीमार लोग, तुम्हें पता है, लोग इनके लिए ऐसी-ऐसी छोटी-छोटी चीज़ें करते हैं जो वे हमारे लिए नहीं करते। अभी आज ही, एक ज़बरदस्त रसोइया था जिसने मेरे लिए बेर्नेज़ सॉस के साथ मटन की एक टांग भेजी थी—मुझे मानना पड़ेगा कि वह बिल्कुल सही पकी थी, लेकिन ठीक इसी वजह से मैंने उसे इतना ज़्यादा खा लिया कि वह अभी भी मेरे पेट में भारीपन पैदा कर रही है। फिर भी, इसकी वजह से लोग मेरा हाल-चाल पूछने नहीं आते, जैसा वे प्यारे अमानियन के लिए करते

हैं। हम लोग बहुत ज़्यादा पूछताछ करते हैं। इससे उसे बस थकान ही होती है। हमें उसे साँस लेने की थोड़ी जगह देनी चाहिए। वे बेचारे को हर समय उसके पास जाकर-आकर मार ही डाल रहे हैं।" "अच्छा," डचेस ने उस नौकर से कहा, जब वह कमरे से बाहर निकल रहा था, "मैंने आदेश दिया था कि वह लिफ़ाफ़ा, जिसमें वह फ़ोटो है जो मिस्टर स्वान ने मुझे भेजी थी, यहाँ ऊपर लाया जाए।" "मैडम डचेस, वह इतना बड़ा है कि मुझे समझ नहीं आया कि मैं उसे दरवाज़े से अंदर कैसे लाऊँ। हमने उसे हॉल में ही छोड़ दिया है। क्या मैडम डचेस चाहती हैं कि मैं उसे ऊपर ले आऊँ?" "ओह, अगर ऐसी बात है, तो नहीं;" "उन्हें मुझे बता देना चाहिए था, लेकिन अगर यह इतना बड़ा है, तो जब मैं नीचे आऊँगी, तो एक पल में ही इसे देख लूँगी।" "मैं मैडम ला डचेस को यह बताना भूल गई थी कि मैडम ला काउंटेस मोले आज सुबह मैडम ला डचेस के लिए अपना कार्ड छोड़ गई थीं।" "क्या, आज सुबह?" डचेस ने नापसंदगी भरे अंदाज़ में कहा; उन्हें लगा कि इतनी कम उम्र की महिला को सुबह-सुबह कार्ड छोड़ने की इतनी छूट नहीं लेनी चाहिए थी। "लगभग दस बजे, मैडम ला डचेस।" "मुझे कार्ड दिखाओ।" "खैर, ओरियन, जब तुम कहती हो कि मैरी का गिल्बर्ट से शादी करने का विचार अजीब था," ड्यूक ने बातचीत के मूल विषय पर लौटते हुए आगे कहा, "तो असल में इतिहास लिखने का तुम्हारा तरीका ही अजीब है। अगर उन दोनों में से कोई बेवकूफ़ था, तो वह गिल्बर्ट था; क्योंकि उसने सभी लोगों में से, बेल्जियम के राजा से इतनी करीबी रिश्ता रखने वाली महिला से शादी की—उस राजा से, जिसने 'ब्राबेंट' नाम पर कब्ज़ा कर लिया है, जो असल में हमारा है। संक्षेप में कहूँ तो, हम 'हेस' परिवार के ही खून हैं, और हमारी शाखा बड़ी (ज्येष्ठ) है। अपने बारे में बात करना हमेशा बेवकूफ़ी होती है," उन्होंने मुझसे माफ़ी मांगते हुए कहा, "लेकिन फिर भी, जब भी हम न केवल डार्मस्टेड में, बल्कि कैसल और पूरे 'इलेक्टोरल हेस' में रहे हैं, तो वहाँ के 'लैंडग्रेव' (शासकों) ने हमेशा—उन सभी ने—हमें 'ज्येष्ठ शाखा' का सदस्य मानते हुए, सबसे पहले सम्मान देने में बेहद शिष्टता दिखाई है।" "लेकिन सच में, बेसिन, तुम मुझसे यह तो नहीं कहना चाहते कि एक ऐसी महिला—जो अपने देश की हर रेजिमेंट में 'मेजर' रह चुकी थी, जिसकी सगाई स्वीडन के राजा से हुई थी..." "ओरियन, वह..."

"यह तो हद हो गई; कोई भी यही सोचेगा कि आपको यह पता ही नहीं है कि जब हम पूरे यूरोप में नौ सौ सालों से राज कर रहे थे, तब स्वीडन के राजा के दादा 'पाऊ' (Pau) में ज़मीन

जोत रहे थे।" "लेकिन इससे यह सच तो नहीं बदल जाता कि अगर कोई सड़क पर यह कहे: 'अरे, वह देखो स्वीडन के राजा जा रहे हैं,' तो हर कोई तुरंत उन्हें देखने के लिए 'प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड' (Place de la Concorde) तक दौड़ पड़ेगा; और अगर कोई यह कहे: 'वह देखो एम. डे गुएरमांटेस जा रहे हैं,' तो किसी को पता भी नहीं होगा कि एम. डे गुएरमांटेस कौन हैं।" "क्या ही दलील है!" "इसके अलावा, मुझे यह कभी समझ नहीं आता कि जब 'ड्यूक ऑफ़ ब्राबांट' का ख़िताब बेल्जियम के शाही परिवार के पास चला गया है, तो आप उस पर अपना दावा कैसे करते रह सकते हैं।"

नौकर कोम्टेस मोले का कार्ड लेकर लौटा, या यूँ कहें कि जो उन्होंने कार्ड की जगह छोड़ा था। यह कहते हुए कि उनके पास कोई कार्ड नहीं है, उन्होंने अपनी जेब से खुद के नाम का एक पत्र निकाला और उसकी सामग्री अपने पास रखते हुए वह लिफाफा सौंप दिया जिस पर लिखा था: 'ला कोम्टेस मोले'। उस समय प्रचलित नोटपैड के चलन के अनुसार लिफाफा काफी बड़ा था, इसलिए यह हस्तलिखित 'कार्ड' एक साधारण मुलाकात कार्ड से लगभग दोगुना बड़ा था। डचेस ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "इसे ही लोग श्रीमती मोले की 'सादगी' कहते हैं।" "वह हमें यह यकीन दिलाना चाहती है कि उसके पास कोई कार्ड नहीं था, और अपनी मौलिकता दिखाना चाहती है। लेकिन हम सब जानते हैं, है ना मेरे प्यारे चार्ल्स? हम इतने समझदार और इतने मौलिक हैं कि चार साल की इस नन्ही सी लड़की की चालों को समझ सकें। वह आकर्षक तो है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह इतनी 'बड़ी' है कि यह सोच सके कि कार्ड की जगह सिर्फ एक लिफाफा छोड़कर और उसे सुबह दस बजे छोड़कर वह दुनिया को चौंका सकती है। उसकी बूढ़ी माँ उसे सबक सिखाएगी कि उसे भी इस बारे में कुछ पता है।" स्वान को यह सोचकर मुस्कुराए बिना नहीं रह सका कि डचेस, जो संयोगवश मैडम मोल की सफलता से थोड़ी ईर्ष्या करती थी, अपने मेहमान को कोई अभद्र जवाब देना 'गुएरमांटेस की चतुराई' के अनुरूप ही समझेगी। “ड्यूक डी ब्राबेंट की उपाधि के बारे में, मैंने तुम्हें सौ बार बताया है, ओरियान...” ड्यूक ने अपनी बात जारी रखी, लेकिन डचेस ने बिना सुने ही उन्हें बीच में ही रोक दिया। “लेकिन, मेरे प्यारे चार्ल्स, मैं तुम्हारी तस्वीर देखने के लिए तरस रही हूँ।” “आह! एक्सटिंक्टर ड्रेकोनिस लैट्रेटर अनुबिस,” स्वान ने कहा। “हाँ, वेनिस में सेंट जॉर्ज की

तुलना करते समय आपने जो कहा था, वह बहुत ही आकर्षक था। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा: अनुबिस क्यों?" "वह कैसा दिखता है जो बाबल का पूर्वज था?" एम. डी गुएरमांटेस ने पूछा। "तुम उसका खिलौना देखना चाहते हो?" उसकी पत्नी ने रूखेपन से जवाब दिया, यह दिखाने के लिए कि वह खुद इस मज़ाक को तुच्छ समझती है। "मैं उन सभी को देखना चाहती हूँ," उसने आगे कहा। "सुनो, चार्ल्स, चलो नीचे इंतज़ार करते हैं जब तक गाड़ी नहीं आ जाती," ड्यूक ने कहा; "आप हॉल में आकर हमसे मिल सकते हैं, क्योंकि मेरी पत्नी आपकी तस्वीर देखे बिना हमें चैन से नहीं बैठने देगी। मैं तो अब उतना बेचैन नहीं हूँ," उसने संतुष्ट भाव से कहा। "मैं खुद तो आसानी से पिघलता नहीं, लेकिन वह हम सबको मरा हुआ देखना पसंद करेगी, पर यह मौका चूकना नहीं चाहेगी।" "मैं आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूँ, बेसिन," डचेस ने कहा, "चलिए हॉल में चलते हैं; कम से कम हमें यह तो पता चल जाएगा कि हम आपके अध्ययन कक्ष से नीचे क्यों आए हैं, जबकि हमें यह कभी पता नहीं चलेगा कि हम ब्राबेंट के काउंट्स के यहाँ से कैसे नीचे आए हैं।" "मैंने आपको सौ बार बताया है कि हेस्से के घराने को यह उपाधि कैसे मिली," ड्यूक ने कहा (जब हम तस्वीर देखने के लिए नीचे जा रहे थे, और मुझे वे तस्वीरें याद आ गईं जो स्वान मुझे कॉम्ब्रे में लाया करता था), "1241 में एक ब्राबेंट के विवाह के माध्यम से, थुरिंगिया और हेस्से के अंतिम लैंडग्रेव की बेटी के साथ, इसलिए वास्तव में यह हेस्से के राजकुमार की उपाधि है जो ब्राबेंट के घराने को मिली, न कि ब्राबेंट के ड्यूक की उपाधि। आपको याद होगा कि हमारा युद्धघोष ब्राबेंट के ड्यूकों का था: 'लिम्बर्ग अपने विजेता के लिए!' जब तक हमने ब्राबेंट के हथियारों को गुएरमांटेस के हथियारों से नहीं बदल दिया, जिसमें मुझे लगता है कि हम गलत थे, और ग्रामोंट्स का उदाहरण मुझे अपनी राय बदलने के लिए मजबूर नहीं करेगा।" "लेकिन," श्रीमती ने उत्तर दिया। डी गुएरमांटेस ने कहा, "क्योंकि बेल्जियम का राजा ही विजेता है... इसके अलावा बेल्जियम का युवराज खुद को ड्यूक डी ब्राबेंट कहता है।" "लेकिन, मेरे प्यारे बच्चे, तुम्हारा यह तर्क बिल्कुल भी टिक नहीं सकता। तुम भी मेरी तरह जानते हो कि ऐसे दावे भी हो सकते हैं, भले ही इलाका हथियाने वालों के कब्जे में हो। उदाहरण के लिए, स्पेन का राजा खुद को ड्यूक ऑफ ब्राबेंट कहता है, और दावा करता है कि उसका अधिकार क्षेत्र हमसे कम पुराना है, लेकिन बेल्जियम के राजा से अधिक पुराना है। वह खुद को ड्यूक ऑफ बरगंडी, पश्चिमी और पूर्वी इंडीज का

राजा और मिलान का ड्यूक भी कहता है। खैर, बरगंडी, इंडीज या ब्राबेंट पर उसका उतना ही अधिकार है जितना मेरा या हेस्से के राजकुमार का। स्पेन का राजा भी खुद को यरूशलेम का राजा घोषित करता है, जैसा कि ऑस्ट्रियाई सम्राट करता है, और यरूशलेम न तो किसी का है और न ही किसी और का।" यरूशलेम का ज़िक्र स्वान को 'मौजूदा हालात' को देखते हुए शायद शर्मिंदा कर देता, इस आशंका से वह एक पल के लिए रुक गया, लेकिन फिर तेज़ी से बोलने लगा: "जो तुमने अभी कहा, वह किसी के बारे में भी कहा जा सकता है। हम एक समय औमाले के ड्यूक थे, एक डची जो फ्रांसीसी राजघराने को उसी नियमित रूप से मिलती रही है जैसे जॉइनविले और शेवरूज़ अल्बर्ट राजघराने को। हम उन उपाधियों पर उतना ही दावा नहीं करते जितना कि मार्क्विस डी नोइरमौटियर्स की उपाधि पर, जो एक समय हमारी थी और पूरी तरह से नियमित रूप से ला ट्रेमोइल राजघराने की जागीर बन गई, लेकिन कुछ हस्तांतरण वैध हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि सभी वैध हैं। उदाहरण के लिए," वह मेरी ओर मुड़ते हुए बोला, "मेरी भाभी का बेटा प्रिंस डी एग्रीजेंट की उपाधि धारण करता है, जो हमें जोन द मैड से मिली है, जैसे प्रिंस डी टैरेंट की उपाधि ला ट्रेमोइल को मिली है। खैर, नेपोलियन ने जाकर एक सैनिक को टैरेंट की यह उपाधि दे दी।" जो शायद उच्च पदस्थ लोगों में प्रशंसनीय रहा हो, लेकिन ऐसा करके सम्राट ने नेपोलियन तृतीय से भी कम अपने अधिकार का हनन किया, जब उसने ड्यूक डी मोंटमोरेंसी की उपाधि दी थी, क्योंकि पेरिगोर्ड की कम से कम एक माँ मोंटमोरेंसी वंश की थी, जबकि नेपोलियन प्रथम के टैरेंटे में नेपोलियन की इच्छा के अलावा कोई और टैरेंटे गुण नहीं थे कि वह टैरेंटे बने। इससे चाइक्स डी'एस्ट-एन्ज को, हमारे चाचा कोंडे का जिक्र करते हुए, प्रोक्यूरर इंपीरियल से यह पूछने से नहीं रोका कि क्या उसने विन्सेन्स की खाई में ड्यूक डी मोंटमोरेंसी की उपाधि प्राप्त की थी।

"सुनो, बेसिन, मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं चाहिए कि मैं तुम्हारे साथ विन्सेनेस की खाइयों तक जाऊं, या यहाँ तक कि टारंटो तक भी। और चार्ल्स, इससे मुझे वह बात याद आ गई जो मैं तुमसे कहने वाली थी जब तुम मुझे वेनिस में अपने सेंट जॉर्ज के बारे में बता रहे थे। बेसिन और मैंने अगले वसंत में इटली और सिसिली में समय बिताने का विचार बनाया है। अगर तुम हमारे साथ आ जाओ, तो सोचो कितना फर्क पड़ेगा! मैं सिर्फ तुमसे मिलने की खुशी के बारे में नहीं सोच रही हूँ, लेकिन सोचो, तुमने मुझे नॉर्मन विजय के अवशेषों और प्राचीन इतिहास के बारे में

इतनी बार बताया है, तो सोचो अगर तुम हमारे साथ आ जाओ तो यह यात्रा कितनी शानदार हो जाएगी! मेरा मतलब है कि बेसिन—मैं क्या कह रही हूँ, गिल्बर्ट—को भी इससे फायदा होगा, क्योंकि मुझे लगता है कि नेपल्स के सिंहासन पर उसके दावे और इस तरह की सभी बातें मुझे दिलचस्प लगेंगी अगर तुम उन्हें पहाड़ियों पर बसे छोटे-छोटे गांवों में प्राचीन चित्रों की तरह दिखने वाले पुराने रोमनस्क चर्चों में समझाओ। लेकिन अब हम तुम्हारी तस्वीर देखने जा रहे हैं। लिफाफा खोलो," डचेस ने कहा। एक नौकर। "कृपया, ओरियन, आज शाम नहीं; आप इसे कल देख सकती हैं," ड्यूक ने विनती की, जो तस्वीर के विशाल आकार को देखकर पहले ही मेरे सामने चिंता के संकेत दे रहे थे। "लेकिन मुझे इसे चार्ल्स के साथ देखना अच्छा लगता है," डचेस ने एक बनावटी कामुक और मनोवैज्ञानिक रूप से सूक्ष्म मुस्कान के साथ कहा, क्योंकि स्वान के साथ मित्रता दिखाने की चाह में उन्होंने तस्वीर देखने के आनंद का वर्णन ऐसे किया जैसे किसी बीमार व्यक्ति को संतरा खाने में आनंद आता हो, या जैसे उन्होंने अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करने के साथ-साथ किसी जीवनी लेखक को अपने कुछ पसंदीदा शौक के बारे में जानकारी भी दे दी हो। "ठीक है, वह जानबूझकर आपसे मिलने फिर आएगा," ड्यूक ने कहा, जिसकी बात उनकी पत्नी को माननी पड़ी। "अगर आपको इसमें मज़ा आता है तो आप इसके सामने तीन घंटे बिता सकती हैं," उन्होंने व्यंग्य से कहा। "लेकिन इतने बड़े खिलौने को आप कहाँ रखेंगी?" "क्यों, मेरे कमरे में ही, बिल्कुल। मैं इसे अपनी आँखों के सामने रखना पसंद करता हूँ।" "ओह, जैसी आपकी मर्ज़ी; अगर यह आपके कमरे में है, तो शायद मैं इसे कभी देख ही न पाऊँ," ड्यूक ने बिना सोचे-समझे कहा, यह जानते हुए कि वह इस तरह अपने वैवाहिक संबंधों के नकारात्मक स्वरूप को उजागर कर रहे हैं। "ठीक है, आप इसे बड़ी सावधानी से खोलेंगे," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने स्वान के प्रति शिष्टाचारवश निर्देश बढ़ाते हुए नौकर से कहा। "और ध्यान रखना कि लिफाफे को भी न मोड़ो।" "तो लिफाफे का भी सम्मान करना होगा!" ड्यूक ने छत की ओर देखते हुए मुझसे बुदबुदाया। "लेकिन, स्वान," उन्होंने आगे कहा, "मैं, जो एक साधारण विवाहित पुरुष हूँ और बिल्कुल नीरस हूँ, मुझे आश्चर्य होता है कि आखिर तुमने इतने बड़े आकार का लिफाफा कहाँ से ढूँढा। तुमने इसे कहाँ से उठाया?" "ओह, फोटोग्राफर के पास; वे हमेशा ऐसी चीजें भेजते रहते हैं। लेकिन वह आदमी मूर्ख है, क्योंकि मैंने देखा कि उसने उस पर 'मैडम' के बजाय

'ड्यूशेस डी गुएरमांटेस' लिखा है।" "मैं उसे इसके लिए माफ कर दूंगी," डचेस ने लापरवाही से कहा; फिर, जैसे अचानक कोई विचार उनके मन में आया और उन्हें तरोताजा कर दिया, उन्होंने अपनी हल्की मुस्कान रोकी; लेकिन तुरंत स्वान की ओर लौटते हुए बोलीं: "अच्छा, आपने यह नहीं बताया कि आप हमारे साथ इटली आ रहे हैं या नहीं?" "मैडम, मुझे वास्तव में डर है कि यह संभव नहीं होगा।" "सचमुच! श्रीमती डी मोंटमोरेंसी ज़्यादा भाग्यशाली हैं। आप उनके साथ वेनिस और विसेंज़ा गए थे। उन्होंने मुझे बताया कि आपके साथ ऐसी चीज़ें देखने को मिलीं जो अन्यथा कभी नहीं देखी जा सकती थीं, ऐसी चीज़ें जिनका ज़िक्र पहले किसी ने नहीं किया था, आपने उन्हें ऐसी चीज़ें दिखाईं जिनके बारे में उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था, और यहाँ तक कि जानी-मानी चीज़ों में भी वे उन बारीकियों को समझ पाईं जिन्हें आपके बिना वे शायद दर्जनों बार बिना देखे ही गुज़र जातीं। ज़ाहिर है, उन्हें हम सबसे ज़्यादा सौभाग्य प्राप्त हुआ है... आप श्री स्वान की तस्वीर वाला बड़ा लिफ़ाफ़ा ले लीजिए," उन्होंने नौकर से कहा, "और इसे मेरी तरफ़ से आज शाम साढ़े दस बजे श्रीमती ला कोम्टेस मोले के घर पर जमा करा दीजिएगा।" स्वान हँसे। "फिर भी, मैं जानना चाहूँगी," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उनसे पूछा, "आप दस महीने पहले कैसे बता सकते हैं कि कोई चीज़ असंभव होगी?" "मेरी प्यारी डचेस, अगर आप ज़िद करेंगी तो मैं आपको बता दूँगा, लेकिन सबसे पहले तो आप देख सकती हैं कि मैं बहुत बीमार हूँ।" "जी हाँ, मेरे प्यारे चार्ल्स, मुझे नहीं लगता कि तुम बिल्कुल ठीक लग रहे हो। तुम्हारा रंग मुझे अच्छा नहीं लग रहा है, लेकिन मैं तुमसे अगले हफ्ते मेरे साथ आने के लिए नहीं कह रही हूँ, मैं तुमसे दस महीने बाद आने के लिए कह रही हूँ। दस महीने में ठीक होने का समय मिल जाता है, तुम्हें पता है।" इसी समय एक नौकर अंदर आया और बताया कि गाड़ी दरवाजे पर खड़ी है। "आओ, ओरियन, घोड़े पर बैठो," ड्यूक ने कहा, और वह बेसब्री से ज़मीन पर पैर पटकने लगा, मानो वह खुद बाहर इंतज़ार कर रहे घोड़ों में से एक हो। "ठीक है, मुझे एक शब्द में कारण बताओ कि तुम इटली क्यों नहीं आ सकते," डचेस ने स्वान से कहा और हमसे विदा लेने के लिए उठ खड़ी हुई। "लेकिन, मेरे प्रिय मित्र, ऐसा इसलिए है क्योंकि तब तक मुझे मरे हुए कई महीने हो चुके होंगे। पिछली सर्दियों में मैंने जिन डॉक्टरों से सलाह ली थी, उनके अनुसार, मुझे जो बीमारी है—जो किसी भी क्षण मेरी जान ले सकती है—उससे मुझे तीन-चार महीने से ज़्यादा जीने का समय नहीं मिलेगा, और यह भी

एक उदारतापूर्ण अनुमान है," स्वान ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, तभी नौकर ने डचेस को बाहर निकालने के लिए हॉल का शीशे वाला दरवाज़ा खोला। "आप क्या कह रहे हैं?" डचेस गाड़ी की ओर जाते हुए एक पल के लिए रुकी और अपनी सुंदर आँखें ऊपर उठाईं, उनकी उदासी भरी नीली आँखों में अनिश्चितता छाई हुई थी। अपने जीवन में पहली बार दो बिल्कुल विपरीत कर्तव्यों के बीच फंसी, एक तो अपनी गाड़ी में बैठकर रात के खाने पर जाना और दूसरा मरते हुए आदमी पर दया दिखाना, उसे रीति-रिवाजों में ऐसा कुछ नहीं मिला जिससे सही रास्ता पता चल सके। और यह न जानते हुए कि किसे चुनें, उसने बेहतर समझा कि वह दिखावा करे कि दूसरे विकल्प पर गंभीरता से विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है, ताकि वह पहले विकल्प का पालन कर सके, जिसमें उस समय कम मेहनत लगती थी, और उसने सोचा कि इस दुविधा को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि वह किसी दुविधा के अस्तित्व से ही इनकार कर दे। "तुम मज़ाक कर रहे हो," उसने स्वान से कहा। "यह तो बड़े ही अच्छे अंदाज़ का मज़ाक होगा," उसने व्यंग्य से जवाब दिया। “मुझे नहीं पता मैं आपको यह क्यों बता रहा हूँ; मैंने अपनी बीमारी के बारे में आपसे पहले कभी एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन जैसा कि आपने मुझसे पूछा है, और जैसा कि अब मैं किसी भी क्षण मर सकता हूँ... लेकिन मैं जो भी करूँ, आपको देर नहीं कर सकता; आपको बाहर खाना खाने जाना है, याद है ना,” उन्होंने आगे कहा, क्योंकि वह जानते थे कि अन्य लोगों के लिए अपने सामाजिक दायित्व एक मित्र की मृत्यु से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, और अपनी सहज विनम्रता के बल पर वह खुद को उनकी जगह पर रख सकते थे। लेकिन डचेस की विनम्रता ने उन्हें अस्पष्ट रूप से यह भी महसूस कराया कि जिस खाने पर वह जा रही थीं, वह स्वान के लिए उनकी अपनी मृत्यु से कम महत्वपूर्ण होगा। और इसलिए, गाड़ी की ओर बढ़ते हुए, उन्होंने अपने कंधे झुका लिए और कहा: “हमारे खाने की चिंता मत करो। यह कोई मायने नहीं रखता!” लेकिन इससे ड्यूक का मूड खराब हो गया और वे बोले: "आओ, ओरियान, इस तरह बकबक करना और स्वान के साथ अपनी शिकायतें करना बंद मत करो; तुम अच्छी तरह जानती हो कि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे ठीक आठ बजे भोजन पर बैठने की ज़िद कर रही हैं। हमें जानना होगा कि तुम क्या करने वाली हो; घोड़े पूरे पाँच मिनट से इंतज़ार कर रहे हैं। क्षमा करें, चार्ल्स," वे स्वान की ओर मुड़ते हुए बोले, "लेकिन आठ बजने में दस मिनट बाकी हैं। ओरियान

हमेशा देर से आती है, और हमें सेंट-यूवर्टे के घर पहुँचने में पाँच मिनट से ज़्यादा समय लगेगा।"

वी

श्रीमती डी गुएरमांटेस दृढ़ता से गाड़ी की ओर बढ़ीं और स्वान को अंतिम विदाई दी। "आप जानते हैं, हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं; मुझे आपकी किसी बात पर विश्वास नहीं है, लेकिन हमें इस पर चुपचाप चर्चा करनी चाहिए। मुझे लगता है कि उन्होंने आपको बहुत डरा दिया होगा, दोपहर के भोजन पर आइए, जिस दिन आप चाहें" (श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ हमेशा चीजें दोपहर के भोजन में ही समाप्त होती थीं), "आप मुझे अपना दिन और समय बता दीजिएगा," और अपनी लाल स्कर्ट उठाकर उन्होंने सीढ़ी पर पैर रखा। वह जैसे ही गाड़ी में चढ़ रही थीं, उनका पैर खुला देखकर ड्यूक ने भयानक स्वर में कहा: "ओरियान, तू क्या सोच रही थी, तू अभागी? तूने अपने काले जूते पहने रखे हैं! लाल पोशाक के साथ! जल्दी से ऊपर जा और लाल जूते पहन ले, या फिर," उन्होंने नौकर से कहा, "मालकिन से कह दे कि वह तुरंत लाल जूते नीचे लाए।" "लेकिन, मेरी प्यारी," डचेस ने धीरे से जवाब दिया, यह देखकर नाराज़ होकर कि स्वान, जो मेरे साथ घर से निकल रही थी लेकिन गाड़ी को आगे निकलने देने के लिए पीछे खड़ी थी, सुन सकती थी, "क्योंकि हम देर से आ रहे हैं।" "नहीं, नहीं, हमारे पास बहुत समय है। अभी दस बजने ही वाले हैं; हमें पार्क मोनसेउ पहुँचने में दस मिनट भी नहीं लगेंगे। और, वैसे भी, इससे क्या फर्क पड़ता है? अगर हम साढ़े आठ बजे भी पहुँचते तो उन्हें हमारा इंतज़ार करना पड़ता, लेकिन आप लाल पोशाक और काले जूतों में वहाँ नहीं जा सकतीं। इसके अलावा, मैं आपको बता सकती हूँ कि हम सबसे आखिर में नहीं होंगे; सैसेनाज परिवार आ रहा है, और आप जानती हैं कि वे पौने नौ बजे से पहले कभी नहीं आते।" डचेस अपने कमरे में चली गईं। "खैर," एम. डी गुएरमांटेस ने स्वान और मुझसे कहा, "हम बेचारे, दबे-कुचले पतियों पर लोग हँसते हैं, लेकिन फिर भी हम किसी काम के तो हैं ही। अगर मैं न होता, तो ओरियान काले जूतों में ही डिनर पर जाती।" "यह अशोभनीय नहीं है," स्वान ने कहा, "मैंने काले जूते देखे और उनसे मुझे जरा भी आपत्ति नहीं हुई।" "मैं यह नहीं कह रहा कि आप गलत हैं," ड्यूक ने उत्तर दिया, "लेकिन पोशाक से मेल खाने वाले ज़्यादा अच्छे लगते हैं। इसके अलावा, आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, वह वहाँ पहुँचते ही उन्हें देख लेती,

और मुझे घर आकर बाकी लोगों को लाना पड़ता। मुझे नौ बजे खाना खाना पड़ता। अलविदा, मेरे बच्चों," उन्होंने हमें धीरे से दरवाजे से बाहर धकेलते हुए कहा, "यहाँ से चले जाओ, इससे पहले कि ओरियन फिर से नीचे आ जाए। ऐसा नहीं है कि उसे तुम दोनों को देखना पसंद नहीं है। इसके विपरीत, उसे तुम्हारी संगति बहुत पसंद है। अगर वह तुम्हें अभी भी यहाँ देखती है तो वह फिर से बातें करना शुरू कर देगी, वह पहले से ही थकी हुई है, वह खाने की मेज पर बिल्कुल बेहाल होकर पहुँचेगी। इसके अलावा, मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूँ, मैं भूख से मर रहा हूँ। आज सुबह ट्रेन से आने पर मैंने बहुत ही घटिया दोपहर का भोजन किया। मैं मानता हूँ कि उसमें एक बहुत ही खराब बेयरनेज़ सॉस थी, लेकिन इसके बावजूद मुझे खाने पर बैठने में ज़रा भी अफ़सोस नहीं होगा, बिल्कुल भी नहीं। पाँच मिनट बाकी हैं। आठ! ओह, औरतें, औरतें! वो कल से पहले हम दोनों को बदहजमी दे देगी। वो उतनी ताकतवर नहीं है जितना लोग सोचते हैं।" ड्यूक को अपनी पत्नी और अपनी बीमारी के बारे में एक मरते हुए आदमी से इस तरह बात करने में कोई संकोच नहीं हुआ, क्योंकि उनकी पत्नी की बीमारी उन्हें ज़्यादा महत्वपूर्ण लग रही थी। और इसलिए, अच्छे संस्कार और सौहार्द के कारण ही, हमें शिष्टाचारपूर्वक विदा करने के बाद, उन्होंने बरामदे से ऊँची आवाज़ में स्वान को पुकारा, जो पहले से ही आँगन में था: "अब, डॉक्टरों की बकवास में मत फँसो, उन्हें धिक्कार है। वे गधे हैं। तुम पोंट नेउफ जितने मजबूत हो। तुम हम सबको दफ़नाने के लिए ज़िंदा रहोगे!"

sjeet